हिन्दी काव्य प्रवाह

मित्र प्रकाशन गौरव ग्रंथ माला—१०

हिन्दी काव्य प्रवाह

[सिद्ध सरहपा से गिरिधरदास तक]

संकलन एवं संचयन

श्रीमती पुष्पा स्वरूप

संपादक

श्रीकृष्ण दास

मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद—३

प्रकाशक :
मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद।

मूल्य
बीस रुपये
१९६४

मुद्रक :
वीरेन्द्रनाथ घोष,
माया प्रेस प्राइवेट लिमिटेड
इलाहाबाद।

बाबू को

सम्पादकीय वक्तव्य

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है, "सिद्धो में 'सरह' सवसे पुराने अर्थात् वि० सं० ६९० के हैं। अतः हिन्दी काव्य भाषा के पुराने रूप का पता हमें विक्रम की सातवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में लगता है।" महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने भी 'हिन्दी काव्य धारा' में प्रथम स्थान सिद्ध सरहपा को ही दिया है। लेकिन आचार्य शुक्ल का कथन है--

क—"प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव माना जा सकता है। उस समय जैसे 'गाथा' कहने से प्राकृत का बोध होता था वैसे ही 'दोहा' या 'दूहा' कहने से अपभ्रंश या प्रचलित काव्य भाषा का पद्य समझा जाता था। अपभ्रंश या प्राकृताभास हिन्दी के पद्यों का सबसे पुराना पता तांत्रिक और योगमार्गी बौद्धों की साम्प्रदायिक रचनाओं के भीतर विक्रम की सातवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में लगता है।"

ख—"सिद्धो और योगियों. . .की रचनाएँ तांत्रिक-विधान, योग-साधना, आत्म-निग्रह, श्वास-निरोध, भीतरी चक्रों और नाड़ियों की स्थिति, अन्तर्मुख साधना के महत्व इत्यादि की साम्प्रदायिक शिक्षा मात्र है; जीवन की स्वाभाविक अनुभूतियों और दशाओं से उनका सम्बन्ध नहीं। अतः वे शुद्ध साहित्य के अन्तर्गत नहीं आतीं। उनको उसी रूप में ग्रहण करना चाहिए जिस रूप में ज्योतिष, आयुर्वेद आदि के ग्रंथ।"

ग—"(सिद्धों और योगियों) की रचनाओं का जीवन की स्वाभाविक सरणियों, अनुभूतियों और दशाओं से कोई सम्बन्ध नहीं है। वे साम्प्रदायिक शिक्षा मात्र हैं, अतः शुद्ध साहित्य की कोटि में नहीं आ सकतीं। उन रचनाओं की परंपरा को हम काव्य या साहित्य की कोई धारा नहीं कह सकते।"

इन उपर्युक्त उद्धरणों से केवल दो बातें निकलती है—एक, सिद्ध सरह, सरहपा अथवा सरोजवज्र की रचनाओं से ही हिन्दी काव्य-भाषा के पुराने रूप का पता हमें चलता है। मगर—दो, सिद्धों नाथों की रचनाएँ मात्र साम्प्रदायिक शिक्षा हैं, वे शुद्ध साहित्य की कोटि में परिगणित नहीं हो सकतीं।

हिन्दी साहित्य के इतिहास के वैज्ञानिक अध्ययन-अनुशीलन की कठिनाइयां यहीं से आरम्भ होती हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन इस प्रकार किया है—

आदिकाल (वीर गाथा काल, संवत १०५०–१३७५)

पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल,१३७५–१७००)
उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल, १७००–१९००)
आधुनिक काल (गद्यकाल, १९००–१९८४)

यद्यपि आचार्य शुक्ल ने सिद्धों-योगियों के साहित्य को शुद्ध साहित्य के अन्तर्गत नही माना, परन्तु उन्होंने वाद के भक्ति-साहित्य का विभाजन जिस प्रकार किया है उससे यह पता चलता हे कि जिस साम्प्रदायिक अथवा धार्मिक आस्थापरक दोष का आरोपण उन्होंने सिद्धों के साहित्य पर किया है, भक्ति साहित्य पर उस आरोप के रहते हुए भी, उन्हे इससे कोई एतराज न था, वल्कि विवश होकर उस सम्पूर्ण साहित्य का उन्हे इसी आधार पर अनुशीलन भी करना पड़ा। पूर्व मध्यकाल (भक्ति काल) का विभाजन उन्होंने इस प्रकार किया है—

भक्तिकाल—निर्गुण धारा (१) ज्ञानाश्रयी शाखा; (२) प्रेममार्गी (सूफी) शाखा।

सगुण धारा (१) राम भक्ति शाखा (२) कृष्ण भक्ति शाखा।

यह विभाजन निश्चित रूप से साम्प्रदायिक अथवा धार्मिक आस्थापरक दृष्टि से ही किया गया है। इसके लिए आचार्य शुक्ल जी विवश भी थे। परन्तु इस प्रकार के परपरा-विभाजन का आधार वैज्ञानिक कैसे माना जाय? शुद्ध साहित्य की दृष्टि से अथवा उसकी कसौटी पर तो यह विभाजन उचित नही ठहरता।

आचार्य शुक्ल के इस इतिहास के वाद पिछले तीस-चालीस वर्षों में हिन्दी साहित्य के विभिन्न अंगो और कालों का जो शोध और अनुशीलन हुआ है, उससे शुक्ल जी की अनेक स्थापनाओं और मान्यताओं का खण्डन हो चुका है। सिद्ध, नाथ, सत और सूफी साहित्य पर विभिन्न दृष्टियों से महापण्डित राहुल सांकृत्यान, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, पण्डित परशुराम चतुर्वेदी और डा० रामकुमार वर्मा जैसे विद्वानों ने पर्याप्त मात्रा मे अनुसधान कार्य किया और कराया है। फलतः आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास की रचना जिस दृष्टि से की थी, उसमें भी मूलभूत परिवर्तन हो गया है। अव आवश्यकता यह है कि हिन्दी साहित्य का एक नवीन इतिहास लिखा जाय जिसमें विगत अर्धशती की सारी अनुसंधानात्मक उपलब्धियों को सम्मिलित किया जाय और वैज्ञानिक, तर्क-सम्मत, काव्य सिद्धान्तपरक निकषों पर कसकर ही साहित्य का मूल्यांकन किया जाय। जो लोग साहित्य की धर्मनिरपेक्षता पर वल देते है उनको संतोष इसी प्रणाली के अपनाने से होगा।

हिन्दी काव्य परंपरा का अनुशीलन हमे इस वात के लिए वाध्य करता है कि हम सिद्धों, नाथों, संतों, सूफ़ियों और भक्तों की धार्मिक मान्यताओं, स्थापनाओं, दर्शनों और उपदेशों का अनुशीलन करे। इसी अनुशीलन के माध्यम से हम उनके

साहित्य का मूल्यांकन कर सकते हैं। इसी के सहारे हम साहित्य में उनका स्थान निश्चित कर सकते हैं। कोई भी विवेकशील व्यक्ति इन धार्मिक अथवा आस्था-विश्वास-मूलक साम्प्रदायिक दृष्टिकोण की सर्वथा उपेक्षा करके इनके साहित्य का समुचित मूल्यांकन नहीं कर सकता। हिन्दी काव्य साहित्य को धर्म-निरपेक्ष अथवा साम्प्रदायिक मान्यता-निरपेक्ष साहित्य के रूप में हम ग्रहण नहीं कर सकते।

परन्तु उनकी यह विशेषता उनके साहित्य का गुण था, या दोष यह बात दूसरी है। उदाहरण स्वरूप, तुलसीदास की रामायण को ही ले लें। इस महाकाव्य को हम सर्वगुण, सर्वलक्षण संपन्न मानते हैं। इसकी लोक-प्रियता की भी कोई सीमा नहीं। मगर तुलसीदास ने 'स्वान्तःसुखाय' ही इसकी रचना की थी। उनको किसी अन्य बात में नहीं, केवल अपनी धार्मिक मान्यताओं की अभिव्यक्ति और उन के प्रचार में ही सुख मिलता था। वह अपने राम को, उनके आदर्श और व्यवहार को, उपदेश और कार्य को, उनके सन्देश को घर-घर पहुँचा देना चाहते थे। वह परब्रह्म की, मर्यादा पुरुषोत्तम, दाशरथी राम, रूप-शील-गुण संपन्न रघुवंशी राजकुमार और सम्राट की सगुणोपासना में विश्वास रखते थे। वह इससे भी अधिक राम के नाम की महिमा में आस्था रखते थे। इसलिए वह कहते थे—'राम न सकहिं नाम गुन गाईं' और 'कलियुग केवल नाम अधारा।' तुलसीदास की यही मूल प्रेरणा थी, यही आस्था थी और इसी का प्रचार करने के लिए उन्होंने अपने साहित्य की रचना की। इस बात से इनकार करना उचित न होगा।

मगर, इसके साथ ही यह भी स्वीकार करना होगा कि तुलसीदास ने अद्भुत, अलौकिक काव्य-प्रतिभा का परिचय दिया। आज उनका साहित्य उनके साम्प्रदायिक दायरे के बाहर निकल कर जन-जन का कण्ठहार बन गया है। धर्मप्राण जनता तो उसका रस और आनन्द लेती ही है, काव्य साहित्य का सामान्य प्रेमी भी उसे जीवन का अनिवार्य अंग मानता है। और, तुलसीदास किसी साम्प्रदायिक दृष्टिकोण के प्रचारक के रूप में नहीं, हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ, महानतम कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। यही बात विद्यापति, कबीर, सूरदास, जायसी, मीरा आदि के बारे में भी सत्य है।

ये सारे कवि अपने आराध्य अथवा अपनी आराध्या के माध्यम से, उनके ही बहाने, अपने उन सारे भावों, भावनाओं को प्रकट करते थे जो काव्य शास्त्र की दृष्टि से और सामान्य मानवीय रागात्मक संबंधों की दृष्टि से सर्वथा मनोहारी, हृदयग्राही, और तन मन प्राण को जुड़ा देने वाले, विगलित कर देने वाले थे। मानव हृदय जो कुछ चाह सकता है, जिस किसी भी परम तत्व की कल्पना कर सकता है, जैसा भी स्वप्न देख सकता है, जैसे भी सत्य को खोज कर सकता है, जिस किसी भी प्रेरणा स्त्रोत को रूपायित कर सकता है, जैसा भी आधार,

संवल ढूंढ सकता है, जैसे भी सर्वगुण संपन्न व्यक्तित्व की कामना कर सकता है, जैसा भी नायक प्रतिष्ठित कर सकता है—उन सब के मूर्त रूप ये देव पुरुष, अवतारी पुरुष थे जो इस संसार का परित्राण करने के लिए मानव शरीर धारण करके अवतीर्ण हुए थे। ऐसे कवि और द्रष्टा हुए जिन्होंने इनको अलख, अगोचर, अरूप, निर्गुण आदि कहा, मगर इनकी सत्ता को अस्वीकार नहीं किया। ऐसे भी कवि हुए जिन्होंने इन्हें राजकुमार, सम्राट, शिशु, बालक और युवक के रूप में, प्रेमी, सखा और पति के रूप में देखा, जाना, समझा, अनुभव किया। इनके माध्यम से, इनके ही बहाने इन कवियों ने अपनी सारी सहज भावनाएँ व्यक्त कीं; और वे वही भावनाएँ थीं जो हमारे हृदय में उन व्यक्तियों के लिए उत्पन्न होती है जिनसे हमारा रागात्मक सम्बन्ध होता है, जिन्हें हम प्यार करते है, जिनकी हम मंगल-कामना करते है, जिनके दुख में दुखी और सुख में हम सुखी रहते है, जो हमारे स्वजन है। आराध्य में समस्त सहज मानवीय गुणों को आरोपित करना ही सिद्ध, नाथ, संत, सूफ़ी और भक्त कवियों की मूल प्रवृत्ति रही है। यही रहस्य है जो हमें उनके काव्य साहित्य का भक्त और प्रशंसक बना देता है। अपने साहित्य में उन्होंने शुष्क, अकाव्यात्मक दार्शनिक तत्वों को भी सम्मिलित किया है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। मगर केवल इसी कारण उनके साहित्य में अन्य काव्यात्मक गुणों और लक्षणों को न देखना अथवा उनकी उपेक्षा करना सर्वथा अनुचित होगा। सत्य यह है और समीचीन भी कि हम नीर-क्षीर विवेक से काम लें और इस सम्पूर्ण साहित्य के धर्म निरपेक्ष, शुद्ध साहित्यिक—काव्यात्मक तत्वों का परिशीलन करते समय उन दार्शनिक, धार्मिक अथवा साम्प्रदायिक तत्वों का भी लेखा जोखा करें जिन्होने उन साहित्यिक तत्वों को बल प्रदान किया, उजागर किया। बिना दोनों तत्वों का समन्वित अनुशीलन किये हिन्दी काव्य साहित्य का सम्यक् मूल्यांकन संभव नही। अभी तक के मूल्यांकन में एक दोष यह रहा है कि आलोचकों, शोध छात्रों और इतिहासकारों पर इन कवियों का साम्प्रदायिक व्यक्तित्व छा जाता है और वे उनके कवि की उपेक्षा कर जाते है। इसका प्रमाण वे शोध प्रबन्ध है जो विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकृत किये जा चुके है और किये जा रहे है। फलतः हिन्दी काव्य के पाठकों विशेषतया अहिन्दी भाषा-भाषी तथा विदेशी शोध छात्रों और अनुशीलन कर्ताओं को बड़ी कठिनाई होती है और वे अनेक प्रकार के भ्रमों के शिकार हो जाते हैं।

एक दूसरी कठिनाई काल विभाजन की है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने स्वयं कहा है—"शिक्षित जनता की जिन-जिन प्रवृत्तियों के अनुसार हमारे साहित्य के स्वरूप में जो जो परिवर्तन होते आये हैं, जिन-जिन प्रभावों की प्रेरणा से काव्य धारा की भिन्न-भिन्न शाखाएँ फूटती रही है, उन सब के सम्यक् निरूपण तथा उनकी दृष्टि से किये हुए सुसंगत काल विभाग के बिना साहित्य के इतिहास

का सच्चा अध्ययन कठिन दिखायी पड़ता था"—(हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रथम संस्करण का वक्तव्य)। इसलिए शुक्ल जी ने काल विभाजन का काम अपने हाथ में लिया। शुक्ल जी ने बताया है कि "जिस काल खण्ड के भीतर किसी विशेष ढंग की रचनाओं की प्रचुरता दिखलायी पड़ी है, वह एक अलग काल माना गया है और उसका नामकरण उन्हीं रचनाओं के स्वरूप के अनुसार किया गया है। इस प्रकार प्रत्येक काल का एक निर्दिष्ट सामान्य लक्षण बताया जा सकता है। किसी एक ढंग की रचना की प्रचुरता से अभिप्राय यह है कि शेष दूसरे ढंग की रचनाओं में से चाहे किसी (एक) ढंग की रचना को लें वह परिणाम में प्रथम के बराबर न होगी। जैसे, यदि किसी काल में पाँच ढंग की रचनाएँ १०, ५, ६, ७ और २ के क्रम से मिलती है तो जिस ढंग की रचना की १० पुस्तकें हैं उसकी प्रचुरता कही जाएगी, यद्यपि शेष और ढंग की सब पुस्तकें मिल कर २० हैं। यह तो हुई पहिली बात। दूसरी बात है ग्रंथों की प्रसिद्धि। किसी काल के भीतर जिस एक ही ढंग के बहुत अधिक ग्रंथ प्रसिद्ध चले आते हैं, उस ढंग की रचना उस काल के लक्षण के अन्तर्गत मानी जाएगी, चाहे और दूसरे-दूसरे ढंग की प्रसिद्ध और साधारण कोटि की बहुत-सी पुस्तकें भी इधर-उधर कोनों में पड़ी मिल जाया करें।"

काल विभाजन के सम्बन्ध में आचार्य शुक्ल जी ने जो प्रणाली अपनायी उसे सर्वथा अस्वीकार नहीं किया जा सकता। शुक्ल जी के बाद भी जिन आचार्यों ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा उन्होंने इसी प्रणाली को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में स्वीकार किया। इस प्रकार आचार्य शुक्ल जी द्वारा प्रतिपादित काल विभाजन की परम्परा आज भी चलती चली जा रही है। मगर हमारा निवेदन है कि आचार्य महोदय के बाद जो शोध कार्य हुआ है और जो सामग्री प्राप्त हुई है, उसे ध्यान में रखकर काल विभाजन फिर से किया जाय। हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास जिन बन्धुर पंथों से हुआ, उसकी प्रेरणा के जो विभिन्न स्त्रोत रहे हैं, जिन धाराओं से उसे शक्ति मिली और उसमें प्राण का संचार हुआ उन सब को ध्यान में रखते हुए काल विभाजन और परंपरा विवेचन किया जाय।

यहाँ विशेष रूप से हम आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा निर्धारित रीति काल की बात कहना चाहते हैं। रीति कालीन साहित्य को केवल रीत्यानुसारी, परंपरावादी साहित्य कहकर टाल देना हमें उचित नहीं जँचता। आचार्य महोदय के इस कथन में कुछ सत्य है कि "रीतिकाल के भीतर रीतिबद्ध रचना की जो परंपरा चली है उसका उपविभाग करने का कोई संगत आधार मुझे नहीं मिला। रचना के स्वरूप आदि में कोई स्पष्ट भेद निरूपित किये बिना विभाग कैसे किया जा सकता है?" परन्तु इसमें संपूर्ण सत्य नहीं है। पहिली बात यह है कि रीतिकालीन काव्य में वस्तुविषय का मौलिक भेद आ गया

और आध्यात्मिक तत्वों के स्थान पर इहलोक-परक तत्वों का विशेष रूप से समावेश हुआ। इस युग में काव्य कला अपनी पराकाष्ठा को पहुँची और रचना सौष्ठव, लालित्य, भावाभिव्यंजना, सौन्दर्य बोध, सभी दृष्टियों से हिन्दी का काव्य साहित्य समृद्ध और संपन्न हुआ। इसलिए इस काल की रचनाओं को केवल परंपरावादी कह कर उनकी उपेक्षा करना ठीक नहीं है। इस काल की रचनाओं का पुनर्मूल्यांकन हुआ है और अब इसकी ओर लोगों का ध्यान अधिकाधिक मात्रा में जाने लगा है। जिस प्रकार सिद्धों, नाथों, संतों और सूफ़ियों के साहित्य का शोध और पुनर्मूल्यांकन पिछले वर्षों में हुआ है, उसी प्रकार अब रीतिकालीन साहित्य का अधिक वैज्ञानिक अनुशीलन हो रहा है। हिन्दी साहित्य की परंपरा राजस्थान में प्राप्त नवीन ग्रंथों और दक्खिनी हिन्दी की परंपरा के जुड जाने से अधिक समृद्ध हुई है। इन सब शोधों और उपलब्धियों को दृष्टि मे रखकर हिन्दी साहित्य का काल विभाजन और परंपरा विवेचन फिर से होना चाहिए।

● ● ●

'हिन्दी-काव्य प्रवाह' में सिद्ध सरहपा से लेकर गिरिधर दास तक की रचनाओं का संकलन किया गया है। यद्यपि आचार्य शुक्ल जी ने सिद्धों, योगियों की रचनाओं को मात्र साम्प्रदायिक कह कर उनकी उपेक्षा की है। मगर महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने 'हिन्दी काव्य-धारा' में इन कवियों को स्थान दिया है। यहाँ राहुल जी की ही परंपरा का अनुसरण करना उचित समझा गया। इन रचनाओं में शुद्ध काव्य तत्व बिल्कुल नही है, ऐसा मानना कठिन है। इन कवियों की भाषा कुछ अनगढ और अटपटी भले ही मालूम पड़ती हो, मगर जैन, बौद्ध, नाथपंथी और ऐहिक अपभ्रश साहित्य में ऐसी रचनाएँ उपलब्ध हो चुकी है और होती जा रही है कि अब उनकी उपेक्षा करना असम्भव है। प्रसिद्ध विद्वान् पिशेल, याकोबी, महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री, आचार्य प्रबोध चन्द्र बागची, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डा० रामसिंह तोमर आदि विद्वानों ने इस साहित्य का अध्ययन-अनुशीलन करके ऐसी सामग्री प्रस्तुत कर दी है जिससे आचार्य शुक्ल की मान्यताओं का पूर्णतया खण्डन हो चुका है और इस आदिकालीन हिन्दी साहित्य का महत्व स्थापित हो गया है। यह धारणा समाप्त हो चुकी है कि अपभ्रंश साहित्य केवल धार्मिक, साम्प्रदायिक उपदेशात्मक साहित्य है। परन्तु उस साहित्य की ऐहिकता, उसकी श्रृंगारपरकता, उसकी प्रेमाख्यान-मूलकता उसकी मांसलता और रसात्मकता से अब इन्कार नही किया जा सकता। सिद्धों की रहस्यमयी वाणियो से चाहे कुछ लोग भड़क भी जायँ परन्तु जैन कवियों के श्रृंगार प्रधान चरित काव्यों से प्रभावित न होना क्या सम्भव है? जैन अपभ्रंश

साहित्य में मुक्तक और प्रबन्ध दोनों प्रकार के काव्य उपलब्ध हैं। राजस्थान के जैन भाण्डारों में जो विपुल सामग्री है उसको अभी प्रकाश में नहीं लाया जा सका है। परन्तु उसके जिन अंशों का चर्चा आ चुका है, उसकी उपेक्षा असम्भव है। इस साहित्य में रहस्यवादी स्वर है, उपासना विधियों का वर्णन है, नीति सम्बन्धी उक्तियां हैं, धार्मिक उपदेशों के प्रकरण है, सयम, मर्यादा-पारिवारिक जीवन की पवित्रता सम्बन्धी चर्चाएँ है। प्रबन्ध काव्यों में रामायण अथवा पुराणों के आधार पर जैन दृष्टि से रचित अनेक ग्रथ हैं। अनेक प्रेम कथाएँ हैं जिनके माध्यम से जैन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। यह सही है कि इस साहित्य पर धार्मिकता का रंग गाढ़ा चढ़ा हुआ है, परन्तु इसका साहित्यिक मूल्य कम महत्वपूर्ण नहीं है। इन रचनाओ में शुद्ध साहित्यिक गुणों की कमी नही है। इनमें प्राकृतिक चित्रण, रूप वर्णन, शृंगार निरूपण, संवेदना एवं सहानुभूति, मनोवैज्ञानिक अध्ययन, सामान्य जीवन का विश्लेषण आदि सभी गुण वर्तमान है। स्वयंभू और पुष्पदन्त अपभ्रंश के दो महान् कवि हुए हे। इनकी रचनाओं की साहित्यिक महत्ता स्वयंसिद्ध है। इनकी रचनाएँ राम-कथा की ही परम्परा में हैं। स्वयंभू अपभ्रंश के महाकवि है। वस्तुतः वह हिन्दी के प्रथम महाकवि है, और पउम चरिउ (पद्म चरित्र) हिन्दी का प्रथम महाकाव्य।

अपभ्रंश के मुक्तक काव्यों का महत्व तो है ही, चरित काव्यों का भी महत्व अत्यधिक है। ये चरित काव्य धार्मिक अभिप्राय से ही लिखे गए है। मगर इनका स्वरूप प्रेम कथानकों का ही है। इनमें प्रेम, विरह, संयोग आदि का जो वर्णन मिलता है वह नितान्त रुचिकर और मनोहारी है। इन चरित काव्यों का प्रभाव मध्ययुगीन हिन्दी प्रेमाख्यानकों पर स्पष्ट ही दिखायी देता है। योगीन्दु, रामसिंह, कनकामर मुनि, देवसेन, जिनदत्त सूरि, सोमप्रभ सूरि, स्वयंभू, पुष्प-दन्त आदि अपभ्रंश के अनेक महत्वपूर्ण कवियो ने अपभ्रंश साहित्य के उपवन को सींचा, पल्लवित और पुष्पित किया। इस संग्रह में इनकी कुछ रचनाओं के चुने हुए अंश दिए गए हैं।

जैन आचार्यो और मुनियों की इन साहित्यिक रचनाओं के अतिरिक्त एक बहुत महत्वपूर्ण परम्परा रासों की रही है। अनेक रासों का अनुशीलन हो भी चुका है, परन्तु अभी रासों का बहुत बड़ा कोश वैसे ही पड़ा हुआ है। जब उस पुष्कल सामग्री का अनुशीलन होगा तो हिन्दी साहित्य की एक अस्पष्ट कड़ी सुस्पष्ट होकर सामने आएगी। साहित्य के इतिहास में भी एक नया अध्याय जुड़ेगा।

इस जैन धर्मपरक अपभ्रंश साहित्य के साथ ही बौद्ध तंत्रपरक सिद्ध साहित्य का भी स्थान अब विवाद-ग्रस्त नहीं रह गया है। सिद्ध तो कुल चौरासी हुए। मगर इनमें से तेइस सिद्धों की रचनाएँ प्राप्त हुई है। हमारे देश में इनका साहित्य प्रायः लुप्त हो गया है। इनका तिब्बती संस्करण प्राप्त है। राहुल जी ने इन में

से कुछ का हिन्दी रूपान्तर 'हिन्दी काव्य-धारा' में प्रकाशित भी किया है। राहुल जी कृत सिद्ध सरहपा का 'दोहा कोश' भी प्रकाशित हो चुका है। अनेक शोधार्थी इस साहित्य का पुनरुद्धार करने मे लगे हुए है। निकट भविष्य में ही सम्पूर्ण सिद्ध साहित्य का हिन्दीकृत रूप सामने आ जाएगा। तभी हिन्दी साहित्य के आदिकाल के साथ पूरा न्याय किया जा सकेगा और उस काल का सम्यक् इतिहास भी लिखा जा सकेगा। महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने इन सिद्धों की भाषा को प्रायः हजार वर्ष पूर्व की बंगला भाषा का एक स्वरूप बताया था, परन्तु राहुल जी ने अनेक प्रमाणों द्वारा सिद्ध कर दिया है कि यह भाषा हिन्दी का ही पूर्ववर्ती आदिकालीन रूप है।

सिद्ध साहित्य को दो वर्गो मे विभक्त किया जा सकता है। एक वर्ग के साहित्य मे तांत्रिक क्रियाओं और विश्वासो का उल्लेख है। दूसरे में, वाह्य कर्मकाण्डमूलक आडम्बर को त्यागने और आन्तरिक आध्यात्मिक तत्वों की खोज करने का प्रवल आग्रह है। इस साहित्य में सहजोपासना पर ही बल दिया गया है।

सिद्धों की वाणी में एक विचित्र प्रकार का अटपटापन है जिसके कारण उसकी दुरुहता वढ़ गई है। सर्वत्र एक विचित्र शैली का प्रयोग है और एक रहस्यवादी वातावरण वना रहता है। फलतः अर्थ खुलता नहीं और अध्येताओं को भ्रम हो जाता है। वाह्य अर्थ जो कि अक्सर असंगत, अमर्यादित और अश्लील होता है, साधारण पाठक को धोखे में डाल देता है। परन्तु गहराई से अध्ययन करने पर उसमे रहस्यमय योग और तंत्र के तत्वों का आभास मिल जाता है। बाद के संतों की वाणियों मे भी इस प्रकार की विशेषताएँ दिखायी देती हैं।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का कथन है—"अपभ्रंश के कवियों को विस्मरण करना हमारे लिए हानि की वस्तु है। यही कवि हिन्दी काव्य धारा के प्रथम स्रष्टा थे। वे अश्वघोष, भास, कालिदास और वाण की सिर्फ़ जूठी पत्तलें नहीं चाटते रहे, वल्कि उन्होंने एक योग्य पुत्र की तरह हमारे काव्य क्षेत्र में नया सृजन किया है, नए चमत्कार, नए भाव पैदा किए; यह स्वयंभू आदि की कविताओं से अच्छी तरह मालूम हो जाएगा। नए-नए छन्दों की सृष्टि करना तो इनका अद्भुत कृतित्व है। दोहा, सोरठा, चौपाई, छप्पय आदि कोई सौ नए-नए छन्दों की उन्होंने सृष्टि की, जिन्हें हिन्दी कवियों ने वरावर अपनाया है, यद्यपि सव को नहीं। हमारे विद्यापति, कवीर, सूर, जायसी और तुलसी के ये ही उज्जीवक और प्रथम प्रेरक रहे हैं। उन्हें छोड़ देने से वीच के काल में हमारी बहुत हानि हुई। और, आज भी उसकी संभावना है।"

आगे राहुल जी फिर कहते है, "हमारे मध्यकालीन कवियों ने अपभ्रंश कवियों को भुला दिया और प्रेरणा लेने लगे सिर्फ़ संस्कृत के कवियों से। स्वयंभू

आदि कवि अपनी पाँच शताब्दियों में सिर्फ घास नहीं छीलते रहे। उन्होंने काव्य निधि को और समृद्ध भाषा को और परिपुष्ट करने का जो महान् काम किया है, हमारे साहित्य को उनकी जो ऐतिहासिक देन है, उसे भुलाकर, कड़ी को छोड़ कर, सीधे संस्कृत के कवियों से सम्बन्ध स्थापित करना हमारे साहित्य और हिन्दी भाषा दोनों के लिए हानिकर सिद्ध हुआ है। हम संस्कृत कवियों से सम्बन्ध जोड़ने के विरोधी नहीं हैं। लेकिन हमें, इस बीच की कड़ी, जो अपनी ही कड़ी है, को लेते संस्कृत के प्राचीन कवियों के साथ सम्बन्ध जोड़ना होगा। तभी हम ऐतिहासिक विकास से पूरा लाभ उठा सकेंगे।"

इसी संदर्भ में हमें अपभ्रंश भाषा का अध्ययन करना चाहिए। यह भाषा कभी मुल्तान से गुजरात तक और गुजरात से बंगाल तक फली हुई थी और एक प्रकार से यह इतने बड़े क्षेत्र की राष्ट्र भाषा सरीखी थी। अब्दुर्रहमान मुल्तान के रहने वाले थे। सिद्ध सरहपा और शबरपा बिहार-बंगाल के निवासी थे। और स्वयंभू और कनकामर उत्तर प्रदेश के अवधी और बुन्देलखण्डी क्षेत्र के थे। हेमचन्द्र और सोमप्रभ गुजरात के निवासी थे। "इस प्रकार हिमालय से गोदावरी और सिंघ से ब्रह्मपुत्र तक ने इस साहित्य (अपभ्रंश साहित्य) के निर्माण में हाथ बँटाया।"

सिद्धों के साहित्य के सम्बन्ध में अनेक बातें कही जाती हे। उनकी भाषा पर अनगढ़पन का आरोप लगाया जाता है। परिमार्जन की कमी, रचाव और सँवार-सिंगार का अभाव सिद्ध कवियों की भाषा और शैली का दोष माना जाता है। अर्थ की दुर्बोधता और अस्पष्टता भी एक बड़े दोष के रूप में गिनायी जाती है। मगर सही यह है कि उनकी भाषा बिलकुल सहज और सरल तथा बोधगम्य है। राहुल जी के शब्दों में, "लाखों नर-नारियों को उनमें रस, एक तरह की आत्म-तृप्ति मिलती थी। और आज भी उस तरह की मनोवृत्ति रखने वाले कितने ही पाठकों को वह उतनी ही रुचिकर मालूम पड़ती है। इसलिए उन्हें कविता मानना ही पड़ेगा।"

ये सिद्ध कवि सारी पुरानी सामाजिक और नैतिक मान्यताओं को छिन्न-भिन्न कर डालना चाहते थे। वे लीक छोड़कर चलना चाहते थे, अपना रास्ता खुद बनाना चाहते थे। वे सहज जीवन के पक्षपाती थे। वे संघर्ष और आशावाद के कवि थे। वे स्वयं अपने व्यक्तिगत सुख-ऐश्वर्य को त्याग कर, विलास वैभव से मुँह मोड़कर अपने स्वच्छन्दतावादी विचारों के प्रचार के लिए अपना सर्वस्व होम कर देते थे। सरह नालन्दा विश्वविद्यालय के ब्राह्मण आचार्य थे। उन्होंने अत्यन्त साधारण कुल की अब्राह्मण कन्या को अपनी जीवन संगिनी बनाया। सरह ने सभी पंथों के और स्वयं अपने पंथ के पाखण्डों का खण्डन किया। वह आशावादी विचारक थे। वह योग-वैराग्य से लोगों को विमुख करना चाहते

थे और वह चाहते थे कि लोग सहज स्वाभाविक भोगमय जीवन व्यतीत करें। अतः उनके काव्य में इहलोकपरकता का प्रभाव अधिक है। यद्यपि उनमें मूल रूप से सादगी और सरलता थी, परन्तु बाद में उनके भक्तों ने उनकी रचनाओं मे नाना प्रकार के रहस्यो को ढूंढ़ना शुरु किया। इन भक्तों ने सचमुच इनकी भाषा को 'सध्या भाषा' बना डाला।

स्वयभू और पुष्पदन्त प्रणय और प्रलय के कवि थे। उन्होंने जो आदर्श रखा वह था ससार का सुख-दुख भोगना और मृत्यु को तिनके के समान समझना। हेमचन्द्र सूरि ने 'बाप की भूमड़ी' के लिए अपना सब कुछ मिटा देने के लिए आवाज़ लगायी। भले ही उनकी दृष्टि मे सम्पूर्ण जनता के हित और अधिकार की बात न रही हो, मगर उनके इस नारे मे पवित्र देश भक्ति की जो उदात्त भावना थी उससे इन्कार नही किया जा सकता।

स्वयभू के सम्बन्ध मे राहुल जी का कथन है कि "वस्तुतः वह भारत के एक दर्जन अमर कवियों मे एक था। स्वयभू के रामायण और महाभारत दोनों ही विशाल काव्य है।" स्वयंभू मे समस्त पदों की भरमार नही है। उनकी काव्य-कला श्रेष्ठ है। उनका शृंगार, वीर, करुणा सभी रसो का परिपाक तो चिर नवीन है। मीठे, मधुर पद्य, नपी-तुली शब्दावलियाँ, सहज प्रवाह और स्वाभाविक शैली सभी कुछ उत्कृष्ट है। स्वयंभू का प्रकृति चित्रण अद्वितीय है। सुन्दरी नारियों के सामूहिक सौन्दर्य का इतना सुन्दर वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। स्वयभू ने मन्दोदरी और विभीषण के विलापो का जो वर्णन किया है वह किसी को भी द्रवीभूत कर सकता है। "स्वयंभू ने सीता का जो रूप रावण को जवाब देते और अग्नि परीक्षा के समय चित्रित किया है, पीछे उसका कही पता नहीं चलता। मालूम होता है, तुलसी बाबा ने स्वयंभू रामायण को जरूर देखा होगा।...मैं समझता हूँ कि तुलसी बाबा ने 'क्वचिदन्यतोपि' से स्वयंभू-रामायण की ओर ही संकेत किया है।" राहुल जी के इस कथन मे निस्सन्देह पर्याप्त सार्थकता है। स्वयंभू निश्चित रूप से अपभ्रंश के महान् कवि हुए। अब उनकी रचनाएँ सुलभ हो गयी है। इससे उस युग की उत्कृष्टतम साहित्यिक रचनाओं पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

स्वयंभू की ही भांति पुष्पदन्त भी अत्यन्त महत्वपूर्ण कवि हुए। इनका फक्कड़पन, इनकी स्पष्टवादिता और इनका स्वाभिमान इनकी रचनाओं से पदे पदे झलकता है। इनका विरह वर्णन अत्यन्त प्रभावशाली और सफल है। ये गरीबी का भी चित्रण करने में नही चूके। इन्होने सामन्तों की भी खूब खबर ली। उन्होंने अपने देश "उत्तर कुरु की धनी-गरीब रहित, दास-राजा शून्य दिव्य मानव वाली भूमि" की मुक्त कण्ठ से प्रशसा की।

अब्दुर्रहमान मुल्तान निवासी हिन्दी के प्रथम मुस्लिम कवि के रूप मे प्रतिष्ठित है। इनकी मंजी हुई, साफ़-सुथरी प्राञ्जल भाषा, इनके मधुर-मीठे

शब्द, इनकी अत्यन्त सहज, स्वाभाविक भावाभिव्यक्ति सभी इनके काव्य की उत्कृष्टता के प्रमाण हैं।

इन सभी कवियों का विशद अध्ययन-अनुशीलन होना चाहिए। अपभ्रंश के कवियों का अलग-अलग अध्ययन तो हुआ है और हो भी रहा है, मगर न तो अपभ्रंश का सम्पूर्ण प्राप्त साहित्य अभी तक प्रकाशित हुआ है, न उसका सम्पूर्ण इतिहास ही अब तक सामने आया है।

नाथों की परंपरा प्रायः नवीं शताब्दी से ही मिलने लगती है। गोरक्षनाथ (गुरु गोरखनाथ) ही इस साहित्य के आदि रचयिता हैं। नाथों पर तांत्रिक बौद्ध सिद्धाचार्यों का तो प्रभाव है ही, साथ ही, शैव मत का भी गम्भीर प्रभाव है। नाथ पंथ में तंत्र का प्रावान्य निर्विवाद है। नाथों की रचनाओं की भाषा को एकदम अपभ्रंश कहना उचित न होगा। नवीं शताब्दी से चौदहवीं शताब्दी तक नाथों की जो पुष्ट परंपरा चली, उस कालावधि में उनके द्वारा प्रयुक्त भाषा का भी रूप निखर गया। उनकी भाषा अधिक मात्रा में लोकपरक थी। इनमें एक विचित्र प्रकार का फक्कड़पन, अक्खड़पन और तेजस्विता थी जो सामान्यतया सह्य नहीं मानी जाती थी। इनका प्रभाव कबीर, दादू आदि निर्गुण संतों पर तो था ही, सूफ़ी साधकों के प्रेमाख्यानों में बार-बार इनका वर्णन आता है। बाद के हिन्दी काव्य के स्वर में जो दृढ़ता और ओज मिलता है, उसका स्त्रोत एक बड़े अंश में यह नाथ साहित्य भी है।

हिन्दी साहित्य का यह आदि काल अभी घनाच्छादित है। अनेक ज्योति-रश्मियाँ अनेक दिशाओं से उस घनान्धकार को विदीर्ण कर रही हैं। जैन एवं बौद्ध धर्मपरक जिन साहित्यों का हमने यहाँ चर्चा किया, उनके साथ ही नाथ साहित्य का भी जब पूरा अनुशीलन हो लेगा तभी आदि कालीन हिन्दी साहित्य पर पूरा प्रकाश पड़ेगा और उसका इतिहास भी लिखा जा सकेगा।

हिन्दी साहित्य का यह आदि काल अब इस अर्थ में विवाद-ग्रस्त नहीं रह गया है, कि इस अपभ्रंश भाषा को हिन्दी का आदि कालीन स्वरूप माना जाय अथवा नहीं। इस साहित्य की भावधारा, काव्य रूप और परंपरा का अनुशीलन करने पर किसी भी प्रकार का संशय मन में नहीं रह जाता और हिन्दी साहित्य का यह आदि रूप आँखों के सामने जगमगा उठता है।

कतिपय विद्वान अपभ्रंश और हिन्दी के इस घनिष्ट सम्बन्ध को अब भी अस्वीकार करते हैं। ये विद्वान् यह मानने को तैयार नहीं है कि अपभ्रंश का ही विकसित एवं परिवर्तित रूप बाद की हिन्दी है। परन्तु इन विद्वानों को भाषा, भाव, काव्य रूप, सभी दृष्टियों से विचार करना चाहिए। यदि वे विचार करके देखेंगे तो उनको स्वीकार करना पड़ेगा कि अपभ्रंश साहित्य ही हिन्दी साहित्य का आदि रूप है और उस साहित्य की उपेक्षा करके हिन्दी साहित्य के

आदि-काल का इतिहास रचा ही नहीं जा सकता। जिस प्रकार अंग्रेजी अथवा फ्रेंच साहित्य का इतिहास लिखते समय प्राचीन अंग्रेजी अथवा प्राचीन फ्रेंच की उपेक्षा नहीं की जा सकती, उसी प्रकार हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखते समय अपभ्रंश साहित्य की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

अपभ्रंश साहित्य के बाद डिंगल और पिंगल भाषाओं में लिखे साहित्य का चर्चा आता है। चारणों ने डिंगल भाषा में रचनाएँ लिखीं और भाटों ने पिंगल में। रास ग्रंथों की रचना मूलतः पिंगल भाषा में हुई यद्यपि उनमें डिंगल के बहुत से शब्द व्यवहृत हुए है। इस युग को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने वीर गाथा काल कहा है और इसी काल को वह हिन्दी साहित्य का आदिकाल मानते हैं।

मगर वीरगाथाकालीन साहित्य की जो जाँच-परख पिछले वर्षो में हुई है उससे एक बात यह सिद्ध हुई कि उनमें से कौन-सा मूलतः शृंगार रस प्रधान है और कौन-सा वीर रस प्रधान हैं, यह निर्णय कठिन है। दूसरी बात यह कि इन रचनाओं की प्राचीनता संदिग्ध है। अधिकतर विद्वानों का मत है कि ये रचनाएँ बहुत बाद की है। अतः इस युग को वीर गाथा काल कहना उपयुक्त नहीं है। साथ ही, जब ये रचनाएँ प्राचीन नहीं है तो इन्हें हिन्दी साहित्य की आदि-कालीन रचना के रूप में भी स्थान नहीं मिलता। फिर, विवश होकर हिन्दी साहित्य के आदि काल के लिए हमें अपभ्रंश को ही मान्यता देनी पड़ेगी।

वीरगाथाकालीन साहित्य का पुनर्मूल्यांकन अध्ययन और अनुशीलन हो रहा है। जहाँ तक इस काल के सम्बन्ध में आचार्य शुक्ल की मान्यता का प्रश्न है, वह तो अब अस्वीकृत हो ही चुकी है, परन्तु यहाँ शून्य की सी,जो स्थिति पैदा हो जाएगी, उसका क्या होगा? इन तीन-चार सौ वर्षो के इतिहास की पुनर्रचना अनिवार्य हो उठी है। संवत् १००० से चौदहवीं शताब्दी विक्रमी (विद्यापति के काल) तक का इतिहास पुर्नरचित होकर सामने आ जाय तो यह शून्य समाप्त हो।

विद्यापति के बाद से तो हिन्दी साहित्य का क्रम बद्ध इतिहास मिलता है। परन्तु इस काल से रीति काल तक का जो मध्ययुगीन साहित्य है, उसका वर्गीकरण भी पूर्णतया वैज्ञानिक नहीं हुआ है। भक्ति साहित्य का स्थान तो किसी क़दर हिन्दी साहित्य के इतिहास में सुनिश्चित हो गया है, परन्तु सन्त और सूफ़ी साहित्य का जो कुछ अनुशीलन और मूल्यांकन हो चुका है उसको दृष्टि में रखते हुए इन साहित्यों को हिन्दी साहित्य में पुनर्प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता बनी हुई है। संत और सूफी साहित्य का गहन और विस्तृत एवं व्यापक अध्ययन हो चुका है। उसे संजोकर इतिहास के क्रम में रखा जाय, यह कार्य अब हो ही जाना जाना चाहिए।

भक्ति काल के साहित्य की उत्कृष्टता और महानता को देखकर उस काल

को स्वर्ण काल भी कहा जाता है। इस काल मे हमारा साहित्यिक उत्कर्ष अपनी सीमा तक पहुँच गया। इस काल में भक्ति साहित्य की सगुण और निर्गुण धाराओं और ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी शाखाओं का पूर्ण विकास हुआ। भक्ति, संत और सूफ़ी धाराओं की उच्छल तरंगें प्रवाहित हुई। कबीर, सूर, तुलसी, जायसी के नेतृत्व में हिन्दी काव्य प्रवाह को सुनिश्चित दिशा मिली, उसकी गुरुता, गम्भीरता से लोग परिचित हुए, उसके आध्यात्मिक, दार्शनिक, सामाजिक और कलात्मक पक्षों को संपूर्ण समृद्धि प्राप्त हुई। सामाजिक जीवन की पूर्ण अभिव्यक्ति आध्यात्मिक स्तर पर इसी युग में हुई। ज्ञान मार्गियों ने ईश्वर के निर्गुण रूप पर बल दिया और सामान्य जन को संसार के माया जाल की ओर से विमुख होकर परब्रह्म की ओर अभिमुख होने की प्रेरणा दी। संत साहित्य की यह परंपरा कितनी पुष्ट और गौरव गरिमापूर्ण थी, अब इसका अनुमान लोगों को हो गया है। प्रेम मार्गियों ने अत्यन्त मानवीय स्तर पर उतर कर प्रेम की बातें कहीं और अपने आख्यानों को लोक प्रचलित कथानकों का आधार लेकर निर्मित किया। उनकी आध्यात्मिकता अधिक सहज और बोधगम्य थी क्योंकि उसका आधार वह प्रेम था जिससे जनसामान्य परिचित था। सगुणोपासक भक्त कवियों ने राम और कृष्ण का आधार लेकर जिस साहित्य की सर्जना की वह अपनी उदात्तता, अपनी पावनता, अपनी गम्भीरता, अपनी प्रभावोत्पादकता, अपनी प्रयोजनशीलता, अपनी कलात्मकता, अपनी भावप्रवणता और अपने रचना-सौष्ठव के कारण इतना लोकप्रिय हुआ कि वह जन-जन का कण्ठहार बन गया। उसी साहित्य के कारण आज सारा देश राम-कृष्ण-मय हो गया है। भक्ति साहित्य जीवन का, जीवन के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक पक्ष का साहित्य है।

भक्ति साहित्य उन सारी विशेषताओं को अभिव्यक्त करता है, उन सारे मूल्यों की स्थापना और पुनर्स्थापना करता है जिनके आधार पर, जिनके सहारे हमारे जातीय जीवन का निर्माण हुआ है, रचना हुई है। हमारे जीवन में जो कुछ सत्य है, शिव है, सुन्दर है उसकी अन्यतम अभिव्यक्ति भक्ति साहित्य में हुई। वह केवल वार्धक्य का साहित्य नही है। वह प्रौढ़ता का, पूर्णता का, जीवन की महानतम उपलब्धियों का साहित्य है। वह ज्ञान का साहित्य है, भक्ति, श्रद्धा, स्नेह और प्रेम का साहित्य है, हार्दिक सहानुभूति, संवेदना और करुणा का साहित्य है, वह मनोरम कल्पनाओं की साकारता का साहित्य है, वह श्रेष्ठ, श्रेयस्कर साहित्य है।

इसी महान् साहित्य को उत्तराधिकार में प्राप्त करके, इसी समृद्धिशाली वैभव को आत्मसात् करके, इसी गौरवशाली परंपरा को सिर माथे चढ़ा कर रीतिकालीन साहित्य का सृजन हुआ। इस साहित्य को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा उनके जैसे अनेक विद्वानों ने रीति साहित्य कहा। आज भी विद्वानों का

एक वर्ग इस साहित्य को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है, हीन और हेय समझता है। परन्तु यह दृष्टि ग़लत है। यह मूल्यांकन निर्दोष नहीं है। विद्वानों और समर्थ, विवेकशील आलोचकों का बहुमत अब इस साहित्य की महानता और कलात्मकता को स्वीकार करने लगा है।

जिस प्रकार भक्ति साहित्य सामाजिक जीवन की आध्यात्मिक अभिव्यक्ति है, ठीक उसी प्रकार रीतिकालीन साहित्य सामाजिक जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति है। रीतिकाल को शृंगार काल, अलंकार काल आदि नामों से भी अभिहित किया गया है। मगर ये सारे नाम केवल आंशिक सत्य को ही अभिव्यक्त करते हैं। यदि इस काल के प्रशस्ति-मूलक एवं तथाकथित अश्लील अंशों को छोड़ दिया जाय तो भी उस लम्बे काल में रचित ऐसी विपुल काव्य सामग्री मिलती है जो किसी भी दृष्टि से भक्ति साहित्य से हीन अथवा निम्नस्तरीय नहीं है।

रीतिकालीन साहित्य में काव्य शास्त्रों के सिद्धान्तों का विवेकपूर्ण-प्रतिपालन है, उसमें अद्भुत् अलंकरण और रचाव है। उसमें भावों की सूक्ष्मता है, मनोवैज्ञानिक सत्यों की अनन्त, अनवरत खोज और प्राप्ति है। उसमें इहलौकिक जीवन की दिव्यतम झांकियाँ हैं। उसमें गंगा की लहरों की भाँति गतिशीलता और प्राञ्जलता और शीतलता है—ऐसी शीतलता जिसे प्राप्त कर हमारे तन मन प्राण जुड़ा जाते हैं। उसमें कौमार्य का, तारुण्य का निष्कलुष उल्लास, ओज और उद्दाम वेग है, उसमें यौवन-जनित शृंगारिकता और रंगीनी भी है। उसमें वह सब कुछ है जो हमारे इहलौकिक जीवन को सुखी, समृद्ध, संपन्न, सुन्दर बनाता है। जीवन की इहलौकिकता, जीवन की आध्यात्मिकता से हीन नहीं है। इहलौकिक जीवन को सौन्दर्य-मण्डित करने वाली, समृद्धिशाली, उत्कृष्ट और पुष्ट बनाने वाली कला भी हीन नहीं हो सकती। ऐसी विधा भी हीन नहीं हो सकती। ऐसा साहित्य अवश्य ही उन मर्यादाओं से मण्डित, अलंकारों से सुसज्जित और प्रेरणाओं से अनुप्राणित होगा जो हमारे सामाजिक जीवन को प्राणवन्त बनाती हैं। प्रस्तुत संग्रह में इस युग के कवियों की रचनाओं को अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत संग्रह में दक्खिनी हिन्दी के कुछ कवियों को छोड़कर बाक़ी सब की रचनाओं के चुने हुए अंश दे दिए गए है। दक्खिनी हिन्दी के कवियों को इतना स्थान देने का विशेष कारण है। दक्खिनी हिन्दी की भाषा कौरवी है। कौरवी से ही आधुनिक खड़ी बोली का विकास हुआ। अब तक अमीर खुसरो को खड़ी बोली का प्रथम कवि माना जाता था। परन्तु अब इस धारणा को बदल

देने के अनेक उपयुक्त कारण सामने आ गए हैं। दक्खिनी हिन्दी की काव्य धारा का अनुशीलन इनमें से एक मुख्य कारण है।

राहुल जी का कथन है, "दक्खिनी हिन्दी साहित्य की ऐसी कड़ी है, जिसको भुलाया नहीं जा सकता। खुसरो को खड़ी (कौरवी) हिन्दी का प्रथम कवि बतलाया जाता है, पर इसमें सन्देह है।...खड़ी हिन्दी के सर्वप्रथम कवि यही दक्खिनी के कवि थे। एक ओर उन्होंने बोल-चाल की कौरवी को साहित्य-भाषा का रूप दिया, तो दूसरी तरफ उनकी कृतियों ने उर्दू कविता का प्रारम्भ किया। हमारी हिन्दी उर्दू की, विशेष तौर से से गद्य की, ऋणी है।"

दक्खिनी का जो स्वरूप हमें दक्खिनी हिन्दी के कवियों की रचनाओं में मिलता है, वह निश्चय ही ऐसा है जिसके आधार पर आगे चल कर खड़ी हिन्दी का निर्माण हुआ। ये कवि अपनी भाषा को 'हिन्दी' ही कहते थे। अशरफ़ (१५०३ ई०) ने कहा है—

'बाचा कीना हिन्दवी में, क़िस्सा मक़तल शाह हुसेन।'

इसी प्रकार बुरहानुद्दीन जानम् (१५२२ ई०) ने लिखा है—

यह सब बोलूं हिन्दी बोल, पनतू अनभौ सेतीं खोल।
ऐब न राखे हिन्दी बोल, माने तू चख देखें खोल।
हिन्दी बोली किया बखान, जेकर फ़साद अथा मुज ज्ञान।

खड़ी बोली का यह प्रारम्भिक रूप हमें दक्खिनी हिन्दी के आरम्भिक कवियों की रचनाओं में मिलता है। बाद के कवियों में यह रूप अधिकाधिक मात्रा में निखरता गया है। दक्खिनी हिन्दी के इन कवियों की एक लम्बी परंपरा रही है और हिन्दी काव्य को इस परंपरा के कवियों से साहाय्य और बल मिला है। उत्तर में जिस समय व्रज और अवधी का विकास हो रहा था उस समय दक्षिण में खड़ी बोली के इस विशिष्ट रूप की रचना हो रही थी। इन कवियों में से अनेक ऐसे हुए जिनकी रचनाएँ निस्सन्देह उच्च कोटि की हुई और उनको स्थायी साहित्य में स्थान मिला। हिन्दी के चतुर्मुखी विकास में दक्खिनी हिन्दी की इस कड़ी के जुड़ जाने से जो व्यापकता आ गयी है, उसका महत्व स्वयंसिद्ध है।

इसीलिए दक्खिनी हिन्दी के अधिकांश कवियों की चुनी हुई रचनाओं को भी इस संग्रह में स्थान दिया गया है। इस दक्खिनी हिन्दी के साहित्य का महत्व अब सर्वत्र स्वीकारा जाने लगा है। मगर इन कवियों के साथ अभी तक पूरा न्याय नहीं हो पाया है। राहुल जी प्रभृति विद्वानों ने इनकी ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। इनकी रचनाओं का एक संग्रह भी राहुल जी ने प्रकाशित किया है। अब उस साहित्य का और अधिक विशद एवं गम्भीर अध्ययन, अनुशीलन हो रहा है। यह शुभ बात है।

प्रस्तुत काव्य प्रवाह मे 'ढोला मारु रा दूहा' के कुछ अंशों को भी सम्मिलित किया गया है। इन दूहो के मूल रचनाकार अथवा रचनाकारों का पता नही है। वाद मे संवत् १६०० के आसपास जेसलमेर के एक जैन कवि कुशललाभ ने तव तक प्राप्त दोहो को एकत्र किया और टूटी कड़ियो को जोड़कर कथासूत्र को ठीक कर देने की दृष्टि से वीच-वीच मे चौपाइयाँ पिरो दी। यह काव्य कम-से-कम पाँच सौ वर्ष प्राचीन अवश्य है।

डा० गौरीशंकर हीराचद ओझा के शव्दों में "ढोला मारु रा दूहा' राजस्थानी भाषा का एक प्रसिद्ध काव्य है।...यह काव्य भाषा एवं भाव दोनों की दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।...यह एक विचित्र (रोमांटिक) प्रेम गाथा है और इसमे मानव हृदय के कोमल मनोभावों एवं वाह्य प्रकृति के मनोहर चित्र अंकित किए गए है।" 'ढोला मारु रा दूहा' के कुछ अशों को काव्य प्रवाह में जोड़ देना आवश्यक प्रतीत हुआ। इन दोहो को पढ़ कर पाठक राजस्थानी जीवन की कोमल, सूक्ष्म, मनोहारी झांकियाँ देख सकेंगे।

इस संग्रह मे गुजरात और महाराष्ट्र तथा कई अन्य क्षेत्रों के कुछ कवियो की रचनाओ को स्थान नही दिया जा सका है। सामग्री की कमी तथा अन्य विवशताओं के कारण यह दोष रह गया है। अगले संस्करण मे जहाँ अन्य छूटे हुए कवियो को भी स्थान देने का प्रयास किया जाएगा, वही इन कवियों की भी उपलव्ध सामग्री का उपयोग किया जाएगा, ऐसा आश्वासन हमें मिल चुका है।

मैं शुभश्री पुष्पा स्वरूप को उनके अध्यवसाय, सहृदयता, सुरुचि, परिश्रम और नीर-क्षीर विवेक के लिए साधुवाद देता हूँ। उनका परिश्रम सफल हुआ और उनका यह ग्रंथ इस रूप मे प्रकाशित हो सका, यह उनके लिए संतोष और हमारे लिए गौरव की वात है।

—श्रीकृष्ण दास

आभार

'हिन्दी काव्यप्रवाह' के इस खण्ड में सिद्ध सरहपा से लेकर भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के पिता गिरिधर दास तक की रचनाओं के महत्वपूर्ण, आकर्षक, हृदय-ग्राही और प्रतिनिधि अंशों का संकलन किया गया है। यह संकलन इस अर्थ में असामान्य है कि इसमें कुछ ऐसी धाराओं के प्रतिनिधि कवियों की चुनी हुई रचनाओं का भी समावेश है जो प्रायः इस प्रकार के संकलनों में स्थान नहीं पाते रहे हैं। वास्तव में पिछले तीन-चार दशकों में हिन्दी काव्य साहित्य को समृद्ध करने वाली जिन परंपराओं, रचनाओं और रचनाकारों के सम्बन्ध में शोध हुआ है उनको ध्यान में रखते हुए हिन्दी साहित्य के अब तक के लिखित इतिहास प्रायः अपूर्ण से प्रतीत होते हैं। भारत के भिन्न भिन्न प्रदेशों और अंचलों में हिन्दी के बहुत से ऐसे कवि हुए हैं जिन्हें अभी तक हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्थान नहीं मिल सका, है, यद्यपि अलग अलग इनके सम्बन्ध में बहुत काम हुआ है। इन कवियों की रचनाओं को सम्मिलित करने से प्रस्तुत संग्रह की विशेषता बढ़ गयी है।

हिन्दी साहित्य का आदि काल अब भी विवाद का विषय बना हुआ है और अब भी विद्वानों का एक दल है जो अपभ्रंश में रचित सिद्ध, जैन या नाथ साहित्य को हिन्दी साहित्य का आदिकालीन रूप नहीं मानता। हिन्दी साहित्य के आदि काल के सम्बन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपनी लौह लेखनी से जो कुछ लिख गये हैं वह अब भी उनके लिए पत्थर की लकीर बनी हुई है।

परन्तु प्रसन्नता की बात है कि विद्वानों और साहित्य मर्मज्ञ इतिहासकारों का एक बहुत बड़ा दल अब आदरणीय शुक्ल जी की मान्यताओं को त्याग चुका है और सिद्ध, जैन एवं नाथ साहित्य हिन्दी साहित्य की आदिकालीन रचनाओं के रूप में स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

यह भी संतोष का विषय है कि जिस रीतिकालीन साहित्य की भर्त्सना करते लोग थकते न थे अब उस रीतिकालीन साहित्य का पुनर्मूल्यांकन हो रहा है। इसी तरह दक्खिनी हिन्दी काव्य साहित्य को भी हिन्दी काव्य परंपरा का अविभाज्य अंग मान लिया गया है। उधर राजस्थान के जैन भाण्डारों से भी बहुत सा साहित्य प्राप्त हुआ है और उनका अनुशीलन और शोध हो रहा है। गुजरात और महाराष्ट्र में भी ऐसे अनेक कवियों का पता चला है जिनकी जान-कारी हमें अब तक नहीं रही है। आदिकाल और भक्तिकाल के कवियों की रचनाओं के साथ ही हमने यथासंभव रीतिकाल के प्रायः सभी प्रतिनिधि

कवियों की चुनी हुई रचनाओं को इस संग्रह में सम्मिलित किया है। दक्खिनी हिन्दी के कवियों को भी हमने इस संग्रह में यथास्थान प्रतिष्ठित किया है। इस प्रकार यह संग्रह प्रायः पूर्ण सा हो गया है। हमें दुःख है कि स्थानाभाव तथा अनेक दूसरी कठिनाइयों और अनिवार्य कारणों से कुछ कवि इस संग्रह में सम्मिलित होने से रह गये हैं।

संकलन तैयार करते समय हमारे सामने पालग्रेव कृत 'दि गोल्डेन ट्रेजरी' का ही मानदण्ड और स्वरूप सदा बना रहा। कहाँ तक उस मानदण्ड को इस संग्रह में कायम रखने में मुझे सफलता मिली, यह मैं नहीं कह सकती।

इस संग्रह की त्रुटियों और कमियों की जानकारी मुझे भली भाँति है; फिर भी यथाशक्ति मैंने इस संग्रह को उत्कृष्ट बनाने का प्रयास किया। सुधी, विवेक-शील, मर्मज्ञ, रसज्ञ पाठकों को यदि मेरा यह संग्रह पसंद आया तो मुझे बहुत संतोष होगा।

संग्रह तैयार करने में अनेक ग्रन्थों से मुझे महत्वपूर्ण सहायता मिली है। मैं उन ग्रन्थों के प्रणेताओ को अपना विनम्र अभिवादन भेजती हूँ और उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। संग्रह में जिन प्रणम्य कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है उनको मैं अपनी विनीत श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड और उसके निदेशक श्री आलोक मित्र ने इस संग्रह को प्रस्तुत करके हिन्दी साहित्य की यत्किंचित सेवा करने का जो सुअवसर मुझे प्रदान किया इसके लिए मैं उनके प्रति अपना आभार प्रकट करती हूँ। रचनाओं का चुनाव करने में मुझे अनेक स्वजनों और गुरुजनों और सुरुचि-संपन्न साहित्य मर्मज्ञों का सहयोग मिला। पाण्डुलिपि तैयार करने में तो अनिवार्य रूप से मुझे अपने पति श्री बिशन स्वरूप से सहायता मिली। परन्तु इन स्वजनों के प्रति आभार कैसे, किन शब्दो में प्रकट करूँ ?

'हिन्दी काव्य प्रवाह' का कार्य करते समय मुझे अक्सर अप्रत्याशित बाधाओं, निराशा की घड़ियों और पराजय की भावना का सामना करना पड़ा। अक्सर ऐसा लगा कि अब आगे काम बढ़ न सकेगा। निराशा, और अवसाद की इन घड़ियों में यदि मुझे अपने बाबू जी से प्रेरणा न मिलती, शक्ति न मिलती तो यह कार्य पूरा न हो पाता। इस ग्रंथ का संपादन करके उन्होंने इसे जो भव्य रूप प्रदान कर दिया है, इसके लिए मैं उनके आगे प्रणत हूँ।

विजय और उल्लास के प्राणद वातावरण में यह अनुष्ठान पूरा हो रहा है। स्नेही, रसिक पाठकों की सेवा मे 'हिन्दी काव्य प्रवाह' उपस्थित है। इसे स्वीकार करके वे मेरा उत्साह बढाएंगे।

विजयादशमी
१५ अक्टूबर १९६४

—पुष्पा स्वरूप

अनुक्रम

क्रम संख्या	कवि		पृष्ठ संख्या

—:o:—

हिन्दी काव्य प्रवाह

सरहपा

पाखंड खंडन

ब्राह्मणहिं ना जानन्ता भेद। यों ही पढ़ेउ ये चारो वेद।
माटि पानि कुश लिए पढ़न्त। घरही बइठी अग्नि होमन्त।
कार्य विना ही हुतवह होमें। आंखि डहावै कड़ुए धूएँ।
एकदण्डि त्रिदण्डी भगवा वेसे। ना होइहि विनु हंस उपदेशे।
मिथ्यहि जग वाहेऊ भूले। धर्म अधर्म न जानेउ तुल्यें।
आचरियेहिं लपेटी छारा। सीसहिं ढोअत ये जट - भारा।
घरहीं वइसे · दीपक बारी। कोनहिं वइसे घन्टा चाली।
आंखि निवेशी आसन बाँधा। कर्णौं खुसखुसाय जन मंदा।
रंडी मुंडी अन्यहुँ भेसें। देखीयत दच्छिना उदेसें।
दीर्घनखा जो मलिने भेसे। नंगा होइ उपाड़िय केशे।
च्पणक- शान विडंवित भेसे। अपना वाहर मोच्च गवेषे।

सहज मार्ग

जरइ ,मरइ उपजइ बध्यायइ। तहँ लय होइ महासुख सिध्यइ।
सरहें गहन गहूवर मग कहिया। पशू - लोक निर्वोध जिमि रहिया।
ध्यान - रहित की कीजै ध्याने। जो अवाक् तेहि, काह वखाने।
भव-मुद्रहिं जग सकल वहायेउ। निज स्वभाव ना काहुहि साधेउ।
मंत्र न तंत्र न ध्येय न धारण। सर्वहु मूढ़ रे! विभ्रम कारण।
निर्मल चित्त न ध्याने खींचहु। शुभ अछते न आपन झगड़हु।

× × ×

नाद न विन्दु न रवि-शशि-मण्डल। चित्ता राग स्वभावे मुंचल।
ऋजु रे ऋजु छांडि ना लेहु वंक। नियरे बोधि न जाहु रे लंक।
हाथेहि कंकण ना लेहु दर्पण। अपने आपा वूझहु निज मन।
पारे - वारे सोई मादई। दुर्जन - संगे अवसर जाई।
वाम दहिन जो खाल - विखाला। सरह भनै वाप ऋज वाटे भइला।

गुरु महिमा

गुरू उपदेशे अमृत-रस, धाइ न पीयेउ जेहि ।
वहु - शास्त्रार्थ - मरूस्थलहिं, तृषिते मरेऊ तेहि ॥
चित्त अचित्तिहिं परिहरहु, तिमि होवहु जिमि बाल ।
गुरू-वचने दृढ़ भक्ति करु, ज्यों होइ सहज उलास ॥

भोग में निर्वाण

खाते पीते सुखहिं रमन्ते, नित्य पूर्ण चक्रहू भरन्ते ।
अइस धर्म सिध्यइ परलोका, नाथ पाइ दलिया भयलोका ॥
जहँ मन पवन न संचरइ, रवि शशि नाहिं प्रवेश ।
तहँ मूढ़ ! चित्त विश्राम करु, सरह कहेंउ उपदेश ॥
आदि न अन्त न मध्य नहिं, नहिं भव नहिं निर्वाण ।
एहु सो परम महासुख, नहिं पद नहिं अप्पान ॥

काया तीर्थ

एहिं सों सुरसरि जमुना, एहिं सो गंगा सागर ।
यहि प्रयाग वाराणसी, यहिं सो चन्द्र दिवाकर ॥
क्षेत्र - पीठ - उपपीठ, एहीं मैं भ्रमउँ बाहिरा ।
देहा सदृशा तीर्थ, नहीं मैं अन्यहि देखा ॥
वन - पद्मिनि - दल - कमल - गन्ध - केसर - वर - नाले ।
छाड़हु द्वैतहि न करहु शोषण, मूढ़ ! न लागहु आरे ॥
काय तीर्थ क्षय जाय, पूछहु कुल हीनहँ ।
ब्रह्म - विष्णु त्रैलोक्य, सकलहिं निलीन जहँ ॥
बुद्धि विनासै मन मरै, जहँ टूटै अभिमान ।
सो मायामय परम फल, तहँ की बांधिय ध्यान ॥

शबरपा

ऊँचा ऊँचा पर्वत, तहँ वसै शवरी वाली ।
मोर - पिच्छ पहिरले शवरी ग्रीवा गुंजा - माली ॥
उन्मत शवरो पागल शवरो ना करु गुली-गुहाडी ।
तोहार निज घरनी नामे सहज सुन्दरी ॥
नाना तरुवर मौरिल रे गगन ते लागल डारी ।
एकली शवरी यहि वन हीड़ै कर्ण कुंडल वज्रधारी ॥

त्रिधातु-खाटे पड़ल शबरो महासुखे सेज छाइल ।
शबर भुजंग निरात्मा दारी देखत राति विताइल ॥
चित्त ताँबूला महासुख कपूर खाई ।
शून्य-नैरात्मा कंठे लेई महासुखे राति बिताई ॥
गुरू - वाक् - पुंज धनुप निज - मन वाणे ।
एक शर संधाने बिन्धहु परम निर्वाणे ॥
उन्मत शबरा गुरूआ रोषे गिरिवर शिखरे सोंधी ।
पइठत शबरहिं लौटाइव कैसे ॥

स्वयंभू

रावण रामहु जुद्धे जो । सोइ सुनहु रामायण ॥
यदि लोग सुजन पंडित अहैं । शब्दार्थ - शास्त्र परिचित अहैं ॥
की चित्तेहिं ग्रहण न सक्कियाइँ । वासे हूँ होहिं न रंजियाइँ ॥
तो कौन ग्रहण हमरे सदृशहिं । व्याकरण - विहून एतादृशहिं ॥
कवि अहे अनेक - भेद - भरिया । जे सुजन स्वभावहिं आचरिया ॥
हौं किछुअ न जानउँ मूर्ख-मने । निज बुद्धि प्रकासेउँ तोउ जने ॥
जो सकलेहिं त्रिभुवनें विस्तरिऊ । आरंभेउ पुनि राघव - चरिऊ ॥

पावस

घत्ता--सीय स--लक्ष्मण दाशरथि, तरुवर-मूले वैठेउँ जबहीं ।
पसरे सुकविहिं काव्य जिमि, मेघ - जाल गगनंगणे जबहीं ॥
पसरे जिमि बुद्धी वहु-ज्ञानहँ । पसरै जिमि पापा पापिष्ठहँ ॥
पसरै जिमि धर्मा धर्मिष्ठहँ । पसरै जिमि ज्योत्स्ना मृगवाहहँ ॥
पसरै जिमि कीर्ती जगनाथहँ । पसरै जिमि चिन्ता धनहीनहँ ॥
पसरै जिमि कीर्ती सुकुलीनहँ । पसरै जिमि किलेश निहीनहँ ।
पसरै जिमि शब्दा सुर तूर्यहँ । पसरै जिमि राशि नभे सूरहँ ॥
पसरै जिमि दावाग्नि बनांतरैं । पसरेउ मेघ-जाल तिमि अंबरे ॥
तड़ि तड़ तड़ै पड़ै घन गरजै । जानकि रामहँ शरणहिं व्रजै ॥
घत्ता--अमर महाधनु गहि करी, मेघ गयंदे चढ़ेउ यशलुब्धा ।
ग्रीष्म नराधिप कहँ ऊपर, पावस-राज केर दल सज्जा ॥

वसंत

कुब्बर नगर · पहुँचेउ जब्बहिं । फागुन-मास प्रवोलेउ तब्बहिं ।
पइसु वसंत - राव आनन्दे । कोइल-कलकल मंगल - शब्दे ।

अलि-मिथुनेहिं वन्दीहिं पढ़न्तेहिं। वर्हिन वामनेहिं नाचंतेहिं।
आन्दोलित - शत - तोरणवारेहिं। ढुक्कु वसंत अनेक - प्रकारहिं।
कहिं कहिं आम्रवनहिं पल्लवितहिं। नव-किसलय - फल फुलुद्धवितहिं।
कहिं कहिं गिरिशिखरा विच्छाया। खल - मुख इव मसि वर्णहिं लाया।
कहिं कहिं माधव-मासहि मेदिनि। प्रिय विरहेहिं जनु श्वसही कामिनि।
कहिं कहिं गावै बाजै माँदर। नर मिथुनेहिं प्रचानेउँ गोंदल।
सो तेहिं नगरहिं उत्तर पासें। जन मनहर योजन उद्देशें।
दीख वसंत - तिलक उद्याना। सज्जन हियहि यथा अप्रमाणा।

संध्या वर्णन

उपहसै सन्ध्या - राग सुख बंधुर। विद्रुमक - अधर, मौक्तिक दंतुर।
छुवइ इव मस्तक मेरु महीधर। तुम्हरेउ हमरेउ कवन पती घर।
जनु चंद्रकान्त सलिलाभिषिक्त। अभिषेक-प्रणालि' व स्पृशित-चित्त।
जनु विद्रुम-मरकत-कान्तियाहि। रहु गगन इव सुरधनु पंक्तियाहि।
जनु इन्द्रनील - माला - मसीहि। आलिखइ बन्द भित्तीहि ताहि।
जहँ पद्मराग-प्रभु-तनु विभाहिं। रहु अभिनव संध्या राग न्याइँ।
जहँ सूर्य कान्ति छीइज्जमान। गउ उत्तर - देसहिं न्याइँ भानु।
जहँ चन्द्रकान्तमणि चन्द्रियाव। नव चन्द्राभासे चन्द्रिकाव।
अँचरजेउ कुमार च्यवंत एव। वहु चन्द्रीभूतउ गगन केम।
पेखियवउ मुक्ताफल - निभाय। गिरि निर्भर भनि धोवन्त पाय।

वन-वर्णन

तँह तेहिहि सुन्दर सु - प्रभो। आरण्य महागज - युक्त रहो।
धुर लक्ष्मण रथवरे दाशरथी। सुर लीलहिं पुनि विहरंत मही।
सो कृष्ण-वेण-नदि मृग-सहिता। वन कहउँ निहारिय मत्तगजा।
कहिं कहिं पंचानन गिरि-गुहाहिं। मुक्तावलि यहिं विकिरंति नभहिं।
कहिं कहिं उड्डाएउ शकुन - शता। जनु अटविहिं उड्डै वियद-गता।
कहिं कहिं कलापि नाचंत वने। न्याइँ नाट्या वा जुवति जने।
कहिं कहिं हरिना भय - भीताइँ। संसारहु जिमि पापहि जाइँ।
कहिं कहिं नानाविध वृच्छराजि। जनु महि-कुलवधुवहि रोमराजि।

मातृभूमि वन्दना

धूवंत धवल - ध्वज - वट - प्रवरू, प्रिये! पेखु अयोध्यापुरि नगरू।
घत्ता—फुर जन्म-भूमि जननीहिं सम, आन विभूषित जिनवरेहिं।
पुरि वंदि सिर स्वयंभू करेहि, जनकतनय - हरि - हलधरेहिं॥

सीता

हरि प्रहरंत प्रशंसेउ जन्ने। जानकि नयन कटाक्षेउ तन्ने।
सुकवि-सुकाव्य सुसंधि संधिया। सुपद-सुवचन-सुशब्द-सुबंधिय।
थिर-कलहंस-गमन गति मंथर। कृश मंझारे नितंव सुविस्तर।
रोमावली मकरधर तोनी। जनु पिपीलिका पंक्ति-विलीनी।
अभिनव हूड-पिंड पीनस्तन। जनु मदकल-उरु-खंभ-निजीतन।
राजै वदन-कमल अकलंकउ। जनु मानससर विकसेउ पंकज।
सुललित-लोचन ललित-प्रसन्ना। जनु वरियात मिलेउ वर-कन्या।
डोलै पीठिहिं वेणि महाइनि। चन्दन-लतहिं ललै जनु नागिनि।
घत्ता—का वहु जल्पनेहिं तिहुँ, भवनहि जो जो चंगा।
सो सो मिलाईया जनु, दैवें निरमेउ अंगा।
संचल्लेउँ विंध्या पथनयेहिं। लक्खिज्जै जानकि रामएहिं।
प्रप्फुल्लित-धवल-कमल-वदनी। इंदीवर-दल-दीरघ नयनी।
माँझे खीण नितम्ब-वद्द गरुआ। जो नयन कटाक्षिय जनक सुता।
उन्मादन मदनीहें मोदनेहिं। वाणेहिं संदीपन शोषणेहिं।
आक्रमिया सालिय मूर्छियऊ। पुनि 'दुःख दुःख' उन्मूर्छियऊ।
कर मोड़े अंग कंपै हँसई। आश्वसे श्वसे पुनि निःश्वसई।
घत्ता—मकरध्वज-शर-जर्जरित-तनु, प्रभु ईमि प्रजल्पेउ कुपित-मना।
वलवंतए मवसं वन वसहू, उद्दारे जानहु यासु ममा॥

जलक्रीड़ा

घत्ता—तहँ सर-नभ-तले स्व स्व-कलत्रेहिं हरि-हलधरा।
रोहिणि रानिहिं जनु प्र-रमेउ चंद्र-दिवाकरा॥
तहँ तेहि हि सर सलिल तरंता। संचरहीं चामीकर-यंत्रा।
नारि-विमाना स्वर्गहँ पड़िया। वर्ण-विचित्र-रत्न-वीजडिया।
नाहि रतन जहिं जंतु न गढ़ियउ। नाहि जंतु जहिं मिथुन न चढ़ियउ।
नाहि मिथुन जहँ नेह न वढियउ। नाहि नेह जहँ सुरत न वढियउ।
तहँ नर-नारि-युवति जलक्रीडैं। क्रीडंती नहाइँ सुरलीलैं।
सलिल कराग्रहिं उच्छालन्तैं। मुरज-वाद्य थापा दरसन्तैं।
स्खलितहिं वलितहिं अभिनव-गीतेहिं। वद्धैं सुरत-समन्वित तेजहिं।
छन्देहिं तालहिं वहुलय-भंगहिं। करुण-क्षेपी नाना-भंगहिं।
घत्ता—चक्खु सरागउ *शृङ्गार*-हार-दरसावन।
पुष्परज्जु युध्यंत, जलक्रीडनउ सलखावन।
जले जय-जय-शब्देहिं नहाएँ नर। पुनि निकसे हल-सारंगधर।

प्रेमावस्था

सीता देह ऋद्धि पावंतिह । एक दिवस दर्पण जोयंतिह ।
प्रतिमा छलेइ महाभयकारू । ऐसो वेस निहारेउ न्या० ।
जनकतनया सहसाही भागी । सिंहागमनैं कुरंगिव लागी ।
"हा हा माइ" भनंतिहिं सखियहिं । कलकल किगेउ, भागु गहिगहियहिं ।
आमरखी क्रोधेऊ ! किंकर । उत्क्षिप इव करवाल भयंकर ।
मिलव तेहि कहँ कहउँ न मारिउ । लेवि अर्धचंद्रेंहि निस्सारिउ ।
घत्ता--गउ सव रावव-देव-ऋषि, पटे प्रतिम लिखव सीता तनिया ।
दरसायेंउ भामंडलहुँ, युक्ति नारि नर धारणिया ।
देखु जोहि प्रति-प्रतिम कुमारा । पंचहिं शरहि वेधु जन मारा ।
सुखेउ वदन घूमिया ललाटउ । कँपेउ अंग मोडेंउ भुजडालउ ।
बंधेउ केश मरोड़िय वत्था । दरसायेउ दश कामावस्था ।
चित्त प्रथम स्थानंतरैं लागै । दुसरे प्रियमुख दर्शन मांगै ।
तिसरे श्वसै दीर्घ-निःश्वसै । कँदै चतुर्थे करविन्यासैं ।
पंचम दाहै अंग, न वोलइ । छठयें मुखहिं न काहुहि देखइ ।
सतयें थान न ग्रास लईजै । अठयें गमनोन्मादे भिज्जै ।
नवयें प्राणसंदेहहु ढूकै । दसयें मरव न कथमपि चूकै ।
घत्ता--कहेउ नरेन्द्रहिं किंकरिन्ह, प्रभु ! दुष्कर जीवै पुत्र तव ।
हा ताहिहिं कन्यहिं कारणे, सो दसई कामावस्थ गउ ।।

मिलन

"अहो अहो परमेश्वर ! दाशरथी । पाछे लंकापुरी पइसैही ।
मिलु तव भट्टारक जानकिहीं । तरु दुस्तर विरह महानदिहीं ।
चढ़ु त्रिजग विभूषण कुंभतले । मद-परिमल मेलायेउ भसले" ।
घत्ता--सो सुनयहि हलधर चक्रधरु, सीतहिं पास समुच-चलिया ।
अभिषेक समय श्रीदेवियहूँ, दोउ दिग्गज न्याईं आमिलिया ।।
वैदेहि दीख हरि हलधरेहिं । जनु चंद्रलेख विधु जलधरेहिं ।
जनु शरद - लच्छिम पंकज - सरेहिं । जनु पूर्णो विधु पत्नांतरेहिं ।
जनु सुरसरि हिमगिरि सागरेहिं । जनु नभश्री चंद्र दिवाकरेहिं ।
परिपूर्ण मनोरथ जानकीहिं । तरें इव लावण्य महानदीहिं ।
निज-नयन-शरासने संध इव । प्रिय-प्रगुण-गुणेहिं निवंध इव ।
यश-कर्दमे जनु जग लेप इव । हंसियेउ प्रवाहे सीप इव ।
विद्या इव करतल-पल्लवेहिं । अर्चैं इव नखकुसुमेहिं नवेहिं ।
प्रतिसर इव हियइ हलायुधहँ । कर इव उज्जोतु निशा-मुखहँ ।

घत्ता—मेहरिहिं मिलंते रघुपतिहिं, सुख उत्पन्नउ जेत्तनऊ।
इन्द्रहँ इन्द्रत्व-प्राप्ति समये, हुयउ न होइहि तेत्तनऊ।
स-कलत्रउ लक्ष्मण प्रणत-शिरा। प्रभनै जलधर-गंभीर-गिरा।
"जो किउ खर-दूषण-त्रिशिर-वधा। जो हंसद्वीपे जितु हंसरथा।
जो शक्ति प्रतीच्छेउ समर-मुखे। जो लाग विशल्य करंबुरुहे।
जो रणे उत्पन्न चक्ररत्ना। जो निविड वलुद्धर दशवदना।
सो देवि! प्रसादे तवतनऊ। कुल धवलेउ जाइ सतित्वनऊ।"
अभिवादन किउ लक्ष्मणेहिं यथा। सुग्रीव प्रमुख-नरवरेहिं तथा।
सकलेहिं निज-निज वाहने थितउ। पर-पुर-प्रवेश-सामग्रि कियउ।
जयमंगल-तूर्या ताड़िया। रिपु-घरिणिहिं चित्ता पाडिया।

सीता (विरहावस्था)

राम वियोगे दुर्मनिया, अश्रु जलोल्लित लोचनिया।
मुक्कहु केश कपोलें भुजा, देखु विसंस्थुल जनकसुता॥
जानकि वदन कमल अलभंतिउ। मुख न देति फुल्ल'न्धुक पंक्तिउ।
हनैं तो उ न करंति निवारेउ। करतलेहीं लागंति निरालेउ।
ऐस शिलीमुख सासनयंता। अन्यें वियोग शोक संतप्ता।
वने वसंति दीखु परमेश्वरि। शेष सरिहिं मध्ये (जनु) सुरसरि।
हरषेउ आंजनेय एहि अवसरे। धन्यउ एक राम भुवनंतरे।
जो तिय एहु अहै मानंतिउ। रावण मरे सतिहिं अलभंतउ।
निरलंकार होति जो सोहै। यदि मंडित तो त्रिभुवन मोहै।
सीयहिं केर रूप वर्णेविउ। आपुहँ नभे प्रच्छन्न करेविउ।
घत्ता—जो प्रेषेउ राघवचंद्रेण, सो डारेउ अंगुष्ठि लिऊ।
उत्संगे पडिउ वैदेहिकहँ, मानो हर्षहँ पोट्टलिऊ॥
लक्खेउ सीत ऐसु किमि। विकसिउ सरिता होइ जिमि।
जनु मृगलांछन शशि ज्योत्स्ना इव। तृप्ति-विरहित ग्रीष्म-तृष्णा इव।
निर्विकार जिनवर-प्रतिमा इव। रतिपतिहिं जनु निज गढ़िया इव।
अभयकर् अच्छ जीवदया इव। अभिनव-कोमल-वर्णलता इव।
स-पयधर पावस-शोभा इव। अविचल सर्वसह वसुधा इव।
कांति-समुज्ज्वल तडिमाला इव। सुट्ठि सलोन उदधि-वेला इव।
निर्मल कीर्त्ति इव रामहिं केरी। त्रिभुवनहूँहि परिस्थिय सेरी।

रावण-सीता संवाद

रावण—"हले हले सीते सीते! का मूढ़ि। रहहि दुःख महार्णवे छूटि।
हले हले सीते सीते! महि भोगहु। मनुष्य जन्महँ फल अनु-भोगहु।

घत्ता--प्रिय इच्छहिं पट्ट प्रतीच्छहु, यदि सद्भावें हसिउ तैं।
तो लेहु मम एहु प्रसाधन, अभ्यर्थेंउँ एत्तना मैं॥"
सो सुनिया वैदेह सुता। प्रभणइ पुलक विसट्टभुजा।
सीता—सांचे इच्छउँ दशवदनू।
इच्छउँ यदि मम मुख न निहारे।
यदि पुनि नयनानंदनहिं, न समपेंउ रघुनंदनहिं।
तो हौं इच्छउँ एहु हले, पुरि फेंकंती उदधि-जले।.......
इच्छउँ नन्दन-वन मज्जंता। इच्छउँ पट्टन पातल जंता।
इच्छउँ दशमुख-तरु छियन्ता। तिल-तिल राम-शरेहिं भिद्यन्ता।
इच्छउँ दसहु शिरा निपतंता। सरे हंसाहत इव शतपत्रा।
इच्छउँ अन्तःपुर रोवंती। केश-विसंस्थुल ढाल भरंती।
इच्छउँ छियन्ता ध्वज-चिन्हा। इच्छउँ नाचंता कावंधा।
इच्छउँ धूमा धारिज्जंता। चौदिशि सुहडी चिता वलंता।
जो जो इच्छउँ सो सो साँचय। जनु तो करऊँ मैं फले प्रत्यय।

राम का विलाप

घत्ता--सौमित्र शोकपरितापेहिं, रघुपतिनंदन मूर्छियउ।
जल-चंदन-चमर डुलावनहूँ, दुःख दुःखउ मूर्छियउ॥
"हा लक्ष्मण कुमार एकोदर! हा भद्रिय उपेन्द्र दामोदर!
हा माधव मधुमथ मधुसूदन! हा हरि कृष्ण विष्णु नारायण!
हा केशव अनंत लक्ष्मीधर! हा गोविंद जनार्दन महिधर!
हा गंभीर-महानदि रुंधन! हा सिंहोदर-दर्प-निनाशन!
हा हा रुद्र भुकित विनिवारण! हा हा वालिखिल्य-संहारण!
हा हा कपिल-(कु) दर्प-विमर्दन! हा वनमाली नयनानंदन!
हा अरिदमन-गर्व-वी-भंजन! हा जितपद्म सोम-मन-रंजन!
हा महा ऋषि उपसर्ग विनाशन! हा आरण्य-हस्ति-संतापन!
हा करवाल-रतन-उद्दारण! शांवकुमार-विलास-निहारण!
हा खर-दूषण-वल-मुसमूरण! हा सुग्रीव-मनोरथ-पूरण!
हा हा कोटिशिला-संचालन! हा हा मकरधरो उत्तारन!
घत्ता—कहँ तुहुँ कहिहौं का पियहिं, कहँ जनेरि कहँ जनक गउ।
हत-विधि! विछोह कराइय, कवन मनोरथ पूर्ण तव॥"
हरि-गुण संवदंत विद्राणउ। रोवइ सदुःखउ राघव-राणउ।
वरु प्रहरो पर-नरवर-चक्रउ। वरु क्षयकाल ढुक्कु अरथक्कउ।
वरु सो कालकूट विष भक्षिउ। वरु यमशासन-नयनकटाक्षउ।

वरु असिपंजरे ठिउ थोडंतर। वरु सेउव कृतान्त-दंतान्तर।
झंप देउव वरु ज्वलन जलंते। वरु वगलामुखे भ्रमिव भ्रमंते।
वरु वज्रासने शिरहिं प्रतीच्छिव। वरु ढुक्कंत भवित्ति समीच्छिव।
वरु विसहव यम-महिप-भड़क्कउ। भीषण-काल-दृष्टि अभिडंक्कउ।
वरु विसहव केसरि-नख पंजर। वरु जोयव कलिकल-शनिश्चर।
घत्ता--वरु दंतिदंते मुसलग्रे हिं, विनि-भिंदाविउ आपनहुँ।
वरु नरक-दुःख आगामिउ, नहिं वियोग भाइहिंतनउ॥

मंदोदरि विलाप

तार-चक्र रव थानहिं चूकउ। दुःख दःख मर्छहिं आमंचुउ।
लागु रोइवा तहँ मन्दोदरि। उर्व्वशि - रंभ-तिलो--चंदरि।
चंद्रवदनि श्रीकांत तनूदरी। कमलानन गंधारि 'व सुंदरी।
मालति-चंपक-माल मनोहरी। जयश्री - चंदन - लेख तनूदरी।
लक्ष्मि वसंत लेख मृगलोचन। योजन - गंधा गोरि गोरोचन।
रतनावलि मदनावलि सुप्रभ। कामलेख कामलता स्वयंप्रभ।
सुखद वसंत तिलक मलयावति। कुंकुम - लेख पद्म-पद्मावति।
उत्पल-माल-गुणावलि निरुपम। कीर्त्ति बुद्धि जय लक्ष्मि मनोरम।
घत्ता—आएहिं शोकार्त्तेहिं, अट्ठारहहिं वरयुवति सहस्सेंहिं।
नव घनमालाडंवरेहिं, छाइ विज्जु जेम चौपासेंहिं॥
रोवै लंकापुर परमेश्वरि, "हा रावण! त्रिभुवन - जन - केसरि।
तुम विनु समर-तूर्य कहँ वाजै। तुम विनु वालक्रीड कहँ छाजै।
तुम विनु नवग्रह एकीकरणउ। को पहिरावै कंठाभरणउ।
तुम विनु को विद्या आराधै। तुम विनु चंद्रहास को साधै।
को गंधर्व - वापि आडोभै। कर्णहु छवि - सहस्र संखोभै।
तुम विनु को कुवेर भंजीहै। त्रिजगविभूष केहि वश होइहै।
तुम विनु को यम विनिवारीहै। को कैलाशोद्धरण करीहै।
सहसकिरण-नलकूवर-शक्रहु। को अरि होइहै शशि वरुणउ कहँ।
को निधान रतनहि पालीहै। को वहुरूपिन विद्या लीहै।
घत्ता—स्वामी! तुमहि भये विनु, पुष्पविमान चढवि गुरु-भक्तिय।
मेरु शिखरें जिनमंदिरैं, को मोहिं लेइसै वंदन हाथिय॥"
पुनि पुनि गगनंगण-गोचरी। करुणाक्रंदन कर मंदोदरी।
"नंदनवने दीयंत मनोहरि। सुमिरौं पारियात्र-तरु-मंजरि।
डुब्बन-वापिहिं स्तन-परिवर्त्तन। सुमिरौं तनिक तनिक आलिंगन।
शयन-भवने नख-निकर-विदारन। सुमिरौं लीलापंकज-ताडन।

प्रणय-रोप-समये मम बंधन। सुमिरौं रसनादाम - निवंधन।
सुमिरौं दीयमान दनु-दानव। धरणींद्रहु केरहु चूडामणि।
सुमिरौं स्वामि-कुमारहु केरउ। वहिन निच्छहु कर्णपूरउ।
सुमिरौं सुर-करि-मदमल श्यामल। हारे ठपीयमान मुक्ताफल।
घत्ता—सुमिरौं सकृत-सुरत-आरोहण, नूपुर-वरझंकार-विलास।
तोउ हमारौ वज्र-मय, हृदय न दो-दल होइ निराश॥"
पुनिहु पुनिहु मंदोदरि जल्पै। "उठु भट्टारक चेतक सुत्तै।
यदिउ अवश्यहि निद्रा भुक्तउ। तऊ न सोहै महितल-सुत्तउ।
स्वामी! को अपराध हमारउ। सीतहिं दूति गई शतवारउ।
तेहँ अकारणीय ओरुढेउ। जंते पोरें-स्थित-पारा-उट्ठउ।"
तेहिँ अवसरे प्रिय पेखव धाइउ। कोइ करेइ अलीकै साइउ।
आलिंगेवि न सर्वायामे। कोइ निवंधै रसना-दामे।
कोइ वरंशुकेहिं कोइ हारें। कोइ सुगंध कुसुम-प्राग्भारें।
कोइ उर ताडवि लीलाकमलेहिं। प्रभनै मुकुलितेहिं मुखकमलेहिं।

भूसुकुपा (शान्तिदेव)

निशि अंधियारी मूसा करै सँचारा। अमृत-भक्ष्य मूसा करै अहारा॥
मारु रे जोगिया! मूसा पवना। जासे टूटै अवना - गवना॥
भव विदारै मूसा खनै गाती। चंचल मूसा खाइ नाशै थाती॥
काला मूसा रोम न वर्ण। गगने उठि करै अमिय पान॥
तब्बै मूसा अंचल - चंचल। सद्गुरू - बोवे करहु सो निश्चल॥
जब्बै मूस - सँचारा टूटै। भुसुक भनै तब्बै बन्धन छूटै॥

× × ×

यदि तुमे भूसुक अहेरे जइवा, मरिहो पाँच जना।
नलिनी वन पइठन्ते, होइहा एक मना॥
जीवत न हनिहा मरल न अनिहा।
न विनु माँस भुसुक पदुमवन पइठिहा॥
माया - जाल पसारी वधिहा माया - हरिनी।
सतगुरू-बोधें वुझि रे कासु (एहु) कहनी॥

× × ×

करुणा - मेघ निरंतर फारी। भावाभाव द्वन्दहीं दारी॥
उयेउ गगन माँझ अद्भूता। पेख रे भूसुक सहज स्वरूपा॥

जासु सुनत टूटे इन्द्रजाल। नि-धुए निजमन देइ उलास ॥
विषय विशुद्धे मैं बूझेउँ आनंदा। गगनहिं जिमि उजाला चंदा ॥
एहि तिलोके एहुहि, सारा। जोइ भुसुक फटै अंधियारा ॥

× × ×

सहज महातरु स्फुरै त्रिलोके। ख–सम स्वभावे वन्ध मुक्त कोइ ॥
जिमि जले पानी डाले भेद न जान। तिमि मन रतन समरस गगन समान ॥
जासु न आपा तासु पराया काह। आदि अन्त न जन्म-मरण भव नाहि ॥
भूसुक भनै मूढ़, राउत भनै मूढ़, सकल एह स्वभाव ॥
जाइ न आवै रे नातहँ भावाभाव ॥

लुईपा

काया तरुवर पाँचउ डाल। चंचल चित्ते पइठा काल ॥
दृढ़ करि महासुख परिमान। लुई भनै गुरु पूछिय जान ॥
सकल समाधिहिं काह करिज्जै। सुख-दुःखनतें निचित मरिज्जै।
छाड़ि छन्द-वन्ध कर ना कपट की आश। शून्य - पक्ष भीडि लेहु रे पाश।
भनै लुई मैं ध्याने दीठा। धमन-चमन दोउहि ऊपर बैठा।

× × ×

भाव न होइ अभाव न होइ। ऐस संबोधिहिं को पतियाइ।
लुई भनै मूढ़ ! दुर्लख विशाना। त्रिधातुहिं विलसै ऊह लागै ना।
जाहि-वर्ण चिन्ह-रूप न जानी। से कैसे आगम - वेद बखानी।
काहे रे कैसे भनि मैं देवों पूछा। उदक-चंद जिमि साँच न मिथ्या।
लुई भनै मैं भावौं कैसे। जे लेइ रहौ तेहि ऊह न दीसै ॥

विरूपा

एक से सूँडिन दुइ घरे सांधै। चीअ न बाकल वारुणी वांधै।
सहजे थिर करि वारुणि सांधा। जे अजरामर होइ (न) दृढ़ स्कंधा।
दशम दुवारे चिन्ह देखि कहँ। आयउ ग्राहक अपन लेन कहँ।
चौंसठ-घड़िया देल पसारा। पइठु गराहक नाहि निसारा।
एक घडुल्ली स्वरूपी नाल। भनै विरूपा थिर करु चाल।

प्रभा वहन्ता निज मन, बंधन कियेऊ जेहिं।
त्रिभुवन सकलउ फारिया, पुनि संहारिय तेहिं॥
सहजे निश्चल जेहिं किय, सम रस निज मन राग।
सिद्धा सो पुनि तत्तणे, न जरामरणहँ भाग॥

× × ×

नारी शक्ति दृढ़ धरिके खाटे। अनहद डमरू बजै वीर-नादे॥
काण्ह कपाली जोगी पइठो आचारे। देह-नगरी विहरै एकाकारे॥
आली-काली-घण्टा-नूपुर चरणे। रवि-शशि-कुंडल कियउ आभरणे॥
राग - द्वेष - मोहे लाई छार। परम - मोक्ष लिए मुक्ताहार॥
मारे उसासु-ननद घरे साली। मातु मारि काण्ह भइल कपाली॥

× × ×

भव निर्वाणे पटह मॉंदला। मन-पवन दोऊ करौं कशाला॥
जय 'जय' दुंदुभि शब्द उचरिला। काण्हे डोम्बि - विवाहे चलिला॥
डोम्बि वियाहि अहारेउ जन्म। जौतुक कियउ अनुत्तर - धर्म॥
अहनिशि सुरत - प्रसंगे जाय। जोगिनि - जाले रजनि बिताय॥
डोम्बी संग जोउ रक्त। क्षण ना छाड़ै सहजुन्मत्त॥

× × ×

मन तरु पाँच इन्द्रि तसु साखा। आशा बहुल पत्र - फल - वाहा॥
वरगुरु - वचन कुठारेहिं छीजै। काण्ह भनै तरू पुनि न उपजै॥
बढ़ै सो तरु शुभाशुभ पानी। छेवै विदु-जन गुरु परिमाणी॥
जो तरु छेवै भेद न जानै। सड़ पड़यो मूढ़! न भव मानै॥
शून्या तरूवर गगन - कुठार। छेवै सो तरु मूल न डार॥

× × ×

शून्य वाहे तथता प्रहारिय। मोह-भंडार लेइ सकल अहारी॥
सुतै न चिन्तै स्व-पर-विभंगा। सहज - निद्रालु काण्हिला नंगा॥
चेतन न वेदन भर नीदि गेला। सकल मुक्त करि सुखे सुतेला॥
स्वप्ने मैं देखउ त्रिभुवन शून्य। घोरि के आवागमन - विहून॥
साखि करब जालंधरपाद। पास न देखौ मोर पंडिताचार॥

गोरक्षपा (गोरखनाथ)

हबकि न बोलिबा ठबकि न चालिबा धीरै धोला पॉव।
गरब न करिबा सहजै रहिबा भणत गोरष राव॥

सहज पलांण पवन करि घोड़ा, लै लगाम चित चबका।
चेतनि असवार ग्यान गुरू करि, और तजौ सब ढबका॥
जिहि घर चन्द - सूर नहिं ऊगै, तिहि घरि होसी उजियारा।
तिहाँ जे आसण पूरौ तौ सहजका भरौ पियाला मेरे ज्ञानी॥
सहज गोरखनाथ वणिजे कराई, पंच वलद नौ गाई।
सहज सुभावै बाषर ल्याई, मोरे मन उड़ियानी आई॥
गिरही सो जो गिरहै काया। अभि-अन्तर की त्यागै माया।
सहज-सील का धरै सरीर। सो गिरही गंगा का नीर॥

× × ×

काया गढ़ लेबा जुगे जुगे - जीवा।
काया गढ़ भीतरि नौ लष खाई, जंत्र फिरै गढ़ लिया न जाई।
ऊँचे नीचे पर्वत झिलमिल षाई, कोठड़ी का पाणी पूरनगढ़ जाई।
इहाँ नहीं उहाँ नहीं त्रिकुटी - मंझारी, सहज - सुनि मैं रहनि हमारी।
आदिनाथ नाती मंछिन्दर नाथ पूता, कायागढ़ जीति ले गोरख अवधूता॥

× × ×

मारौं स्वपर्णीं जगाई ल्यौ भौंरा,
जिनि मारी स्वपर्णीं ताकौं कहा करै जौरा।
स्वपर्णीं कहै मैं अवला वलिया,
ब्रह्मा विस्न महादेव छलिया।
माती माती स्वपनीं दसौ दिसि धावै,
गोरखनाथ गारुड़ी पवन वेगि ल्यावै।

× × ×

सिष्टि-उतपती वेली प्रकास, मूल न थी, चढ़ी आकास।
उरध गोढ़ कियौ विसतार, जाणै जोसी करै विचार॥
भणत गोरखनाथ मछिन्द्रना पूता, मारयौ मृघ भया अवधूता।
याहि हियाली जो कोई बूझै, ता जोगी को त्रिभुवन सूझै॥

× × ×

गुरू जी ऐसा करम न कीजै, ताथैं अमी-महारस छीजै।
दिवसे वाघणि मन मोहै राति सरोवर सोषै।
जाणि बूझि रे मूरिष लोया घरि-घरि बाघणि पोषै॥
नदी तीरै विरषा नारी संगै पुरषा अलप-जीवन की आशा।
मनथैं उपज मेर षिसि पड़ई ताथैं कंध विनासा॥

गोड़ भये डगमग पेट भया ढीला, सिर बगुला की पंखियाँ।
अमी-महारस बाघणी सोष्या घोर मथन जैसी अँखिया॥

बाघिनी को निंदिलै बाघनी को बिंदिलै बाघनी हमारी काया।
बाघनी घोषि घोषि सुन्दर पाये भणत गोरखराया॥

× × ×

बैठा अवधू लोकी घूँटी, चलता अवधू पवन की मूठी।
सोवता अवधू जीवता मूवा, बोलता अवधू प्यंजरै सूवा॥

दृष्टि अग्रे दृष्टि लुकाइवा, सुरति लुकाइवा कान।
नासिका अग्रे पवन लुकाइवा, तब रहि गया पद निर्वान॥

उलट्या पवना गगन समोइ, तब बाल रूप परतषि होइ।
उदै ग्रहि अस्त हेम ग्रहि पवन मेला, बधिलै हस्तिया निज साल भेला॥

अहंकार तूटिवा निराकार फूटिवा, सोषीला गंग-जमन का पानी।
चंद सूरज दोऊ सनमुषि राखीला, कहो हो अवधू तहाँ की सहिनाणी॥

× × ×

नैण महारस फिरौ जिनि देस। जटा भार बँधौ जिनि केस।
रूष-बिरष - बाड़ी जिनि करौ। कूवा-निवाण पोदि जिनि मरौ।

छोड़ौ बैद - वणज - व्यौपार। पढ़िवा गुणिवा लोकाचार।
पूजा - पाठ जपौ जिनि जाप। जोग मांहि विटंबौ आप।

जड़ी - बूटी भूलै मति कोइ। पहली राँड़ बैद की होइ।
जड़ी - बूटी अमर जे करे। तौ बैद धनवन्तर काहे को मरै।

सोनै रूपै सीझै काज। तौ कत राजा छोड़ै राज।
पसुवा दोइ जपै नहिं जाप। सो पसुवा भोंपि क्यों जात।

× × ×

निसपती जोगी जानिवा कैसा। अगनी पाणी लोहा माने जैसा।
राजा-परजा सम करि देष। तब जानिवा जोगी निसपति का भेष॥

टेंटण (तंति) पा

नगर-माँझ मोर घर, नाहिं पड़ोसी।
हाँड़ी ते भात नाहीं नित्य आवेशी॥

बेगेहिं साँप बधिल जाय।
कच्छू दूध कि मेंटे समाय॥

वरध बियाइल गैया बाँझी।
मेंटहि दुहिय तीनों साँझी॥
जो जो बुद्धी सोइ निर्बुद्धी।
जो सो चोर सोई साहु॥
नित्य सियारा सिंह से जूझै।
टेंटणपा के गीति विरलै बूझै॥

मही (महीधर) पा

तीन पाटे लागल अनहद-स्वन घन गाजै।
तेहि सुनि मार भयंकर विषय-मंडल सकल भाजै॥
मातल चित्त-गयन्दा धावै, निरंतर गगनते तुष (रवि शशि) घोलै।
पाप-पुण्य द्वैत तोड़ि साँकल मरोड़ी खम्भा-थान।
गगन टकटकी लागलि रे चित्त पइठ निर्वाण॥
महारस पाने मातल रे त्रिभुवन सकल उपेक्षी।
पंच विषय-नायकरे विपख काहु न देखी॥
खर-रवि किरण संतापेहिं गगनांगण जाइ पइठा।
भणै महीआ मैं एहि बूड़त किछू न दीठा॥

भादे (भद्र) पा

एतन काल हौं रलों स्वमोहे।
अब मैं बुझलों सद्गुरू-बोधे॥
अब चित्त-राग मोरा नष्टा।
गगन-समुद्रे टलिके पइठा॥
पेखौं दश-दिशि सर्वहि शून्य।
चित्त-विहूने पाप पुण्य॥
बाजुल ने दीलो मोहिं लक्ष्य भानी।
मैं आहारिल गगन से पानी॥
भादे भनै अभागे लियेउ।
चित्त-राग मैं आहार कियेउ॥

धाम (धर्म) पा

कमल-कुलिश माँझे भमई लेली।
समता-योगेहि ज्वलिल चँडाली॥

डाह डोम्बि - घरे लागलि आगी।
शशधर लेइ सींचहु पानी॥
नहिं खरे ज्वाल धूम न दीसै।
मेरु - शिखर लेइ गगन पईसै॥
डाहै हरि - हर - ब्रह्म भट्टा।
डाहै नव - गुण - शासन पट्टा॥
भनै धाम फुर लेहु रे जानी।
पंच नालेंहि उठि गइल पानी॥

देवसेन

यदि गृहस्थ दानहि विना, जग में भणियत कोइ।
तो गृहस्थ पंछिहु इवै, जे घर ताहउ होइ॥
धर्म करौ यदि होइ धन, एहु दुर्वचन न बोल।
हंकारउ जम - भटनते, आवइ आज कि कालि॥
काह वहूतहिं संपदहिं, यदि कृपणहिं घर होइ।
उदधि - नीर खारे भरेउँ, पानिउ पियै न कोइ॥

× × ×

धर्महि सुख ।पापहि दुख, एह प्रसिद्धउ लोक।
ताते धर्म समाचरहु, जे हिय-वांछित होइ॥
काइ वहूते जल्पने, जो अपने प्रतिकूल।
काहू दुख सो ना करइ, एहु जे धर्म को मूल॥

× × ×

धर्म विशुद्ध सोइ पर, जो कीजइ कामेन।
अथवा सो धन उज्ज्वल, जो आवइ न्यायेन॥
रूपहि ऊपर रति न करु, नयन् विवारहु जांत।
रूपासक्त पतंगडा, पेखहु दीप पडन्त॥
गुणवानैं सह संग करु, भल्लो पावइ जेमु।
सुमन - सुपत्रन - वर्जितउ, वर तस कहियतु केमु॥
अन्याये आवइ यदि, आवइ घरेउ न जाइ।
उन्मार्गे चल्लन्त कहँ, कंटक भंजइ पाउ॥
कूट - तुला - मानादि कहँ, हरि-करि-खर-विष - मेष।
जो नाचइ नट प्रेक्षणउ, सो गृण्हइ वहु - वेष॥

दुर्लभ लहि मनुजत्व कहँ, भोगेहि प्रेरेउ येन।
लोह-लाइं दुस्तर तरणि, नाव बिगाड़ेउ तेन॥

तिलोपा

सहजे भावाभाव न पूछिय। शून्य-करुण-तहँ समरस इच्छिय॥
मारहु चित्त निर्वाणे हनिया। त्रिभुवन शून्य निरंजन पेलिया॥
आदि-रहित एहु अन्त-रहित। वर-गुरू-पाद अद्वय कथित॥
मूढ़-जन लोग-अगोचर तत्व। पण्डित लोग अगम्य॥
जो गुरू पाद प्रसन्न हो। तेहि की चित्त-अगम्य॥

× × ×

तीर्थ तपोवन न करहु सेवा। देह शुची ना होवै पापा॥
ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर-देवा। बोधिसत्व ना करहु रे सेवा॥
देव न पूजहु तीर्थ न जावा। देव पूजतें मोक्ष न पावा॥
बुद्ध अराधहु अ-विकल चित्ते। भव-निर्वाणे न करहु स्थित्वे॥

× × ×.

जिमि विष भक्षै विषहि प्रलुप्ता।
तिमि भव भोगै भवहि न युक्ता॥
क्षण आनन्द भेद जो जानै। सोएहि जन्महिं जोगि भनीजै॥
हौ शून्य जग शून्य त्रिभुवन शून्य। निर्मल-सहजे न पाप न पुण्य॥
जहँ इच्छै तहँ जाउ मन, एहिं न कीजै भ्रान्ति।
अधो उघारिं अवलोकने, ध्याने होइ रे स्थित्ति॥

पुष्पदन्त

संध्या वर्णन

अस्तमे दिनेश्वरे जिमि शकुना। तिमि पंथिक ठिउ माणिक शकुना।
जिमि फुरियेउ दीपक-दीसियऊ। तिमि कान्ताभरणहि दीसियऊ।
जिमि सन्ध्या-रागे रंजियऊ। तिमि वेशा-रागे रंजियऊ।
जिमि भुवनल्लउ संतापियऊ। तिमि चक्कुल्लौ संतापियऊ।
जिमि दिशि-दिशि तिमिरहिं मिलियाई। तिमि दिशि-दिशि जारहि मिलियाईं।
जिमि रजनिहिं कमलहिं मुकुलिताई। तिमि विरहिनि-वदनइं मुकुलिताईं।
जिमि घरह कपाटउ दिन्नाइँ। तिमि वल्लभ सम्पति दिन्नाइँ।
जिमि चंदेहिं निज-कर-प्रसर कियेउ। तिमि पिय केशहि कर-प्रसर कियेउ।

जिमि कुवलय - कुसुमा विकसियऊ। तिमि कीरय मिथुना विकसियऊ।
जिमि पीयैं पानहिं मधुराई। तिमि अधरइ मधुरस मधुराई।
जिमि जिमि वीतै यामिनि - प्रहरा। तिमि तिमि विकीर्ण मृदु-रति-प्रहरा।
जिमि नहिं शुक्रोदया दरसियऊ। तिमि चिड़ि शुक्रोदगम दरसियऊ।
तो चक्रकुलहँ पंकजहँ ताम्रकिरणपूरित भुवनोदर।
विरही नर-नारीजनहू जीवन देत सम ऊगेउ दिनकर।

× × ×

स्कंधावरँह ऊपर अहनिश। तो नादहिं विकारिया पावस।
मृगकुल त्रसै रसै वरसैघन। पीयल श्यामल विलसै सुरधनु।
महिं नीखरिउ हरित बाढ़े तनु। प्रवसित - प्रियहिं तप्पै मन।
फुल्लु कदंव ताम्र दीसै वन। तीमै तामै मणि भूरै जनु।
तड़ि तड़तड़ै पड़ै रागै हरि। तरु कड़कड़ै फुटै विहरै गिरि।
जल परिचलै घुरै घूमै दरि। अतिरय सरै भरै पूरै सरि।
जल-थल सकल जलहि सं-जायेउ। मार्ग-अमार्ग न कछुअहु जानेउ।
शर-कुसुम-सर नितान्त सॉधै। विरहे पंथिक पंथिय बिंधै॥

हिमालय वर्णन

शीतल्ल - वेलि तरुवर-गहना। हिमवंतहु दक्षिण-गिरि-गहना।
जहँ व्याघ्र-सिंह-गज गैंड आईं। मृग दुर्ग्रह करि-भालू-शताइँ।
सॉभर वेकुल्ला रोहिताईं। एणी जहँ पुलकित कूदियाईं।
जहँ संचरई वहु मूँगुसाईं। गर्त्ताईं जहाँ निर घर्षसाइँ।
जहँ परडा कोक्कंता भ्रमंति। झिल्ली खन्चेल्ले गुमगुमंति।
जहँ भील - पुलिन्दा नाहराईं। वीनंता तरु - वल्ली - फलाईं।
जहँ कुक्करंति शाखामृगाईं। झूलंता तरु - शाखा - गताईं।
उब्बुन-शीला ताम्बूल - लागु। जहँ हरि खादंता कतहुँ भागु।
जहँ घुरघरंति दाठा - कराल। शूलाचहिं सँग जूझंति कोल।
कंदुल्ल-गहर गर्दभा जहाँ। हरि हुल्लहिं जहँ दूषियेउ पंथ।
पंचासहु थूने विदारिताइँ। जहँ भीली हरिनहिं मारियाइँ।
जहँ गहिरै धारैं परिभ्रंमति। नित बादल-कुलहीं चुमचुमंति।
जहँ वेलो-वेष्टित तरुवराईं। जनु क्रीडै अवगुंठन पराईं।

देश विजय

सुरसिन्धु-सरिहिं देहलिय धरव, प्रति सरन करवी,
पूर्वावरेहिं परिसंस्थिताईं, वैरस्थिताईं।

वेताढ़ गिरिहिं ओइल्लयाइँ, सुधनिल्लयाइँ,
चंडाइँ म्लेच्छ-खंडाइँ ताइँ, दुःसाधियाइँ।
करवालें जीतेउ आर्यखण्ड, प्रस्थापि दण्ड।
मालव - मगध - वंग'ङ्ग - गंग कालिंग - कोंग।
पारस - बर्बर - गुर्जर, वराड - कर्नाट - लाट।
आभीर - कीर - गंधार - गौड़ नेपाल - चोल।
चेदीशं - चेरु - मरू - दर्दुरंडि पंचाल - पंडि।
कोंकण - केरल - करु-कामरूप, सिंहल प्रभूय।
जालंधर - यादव - पारियात्र, जीतेहू राय।
प्रत्यन्तवासि निःशेप लेइ, निज मुद्रा देइ।
हेलहिं तिरखंडा,वनि हरेइ, असि करे करेइ।

रानियों का जीवन

कोइ मलय-तिलक देविहिं करई। कोइ आरसिहीं आगे धरई।
कोई अर्पे वर - रत्नाभरना। कोई लेपै कुंकुमहीं चरणा।
कोई नाचै गावै मधुर-स्वरा। कोई प्रारम्भै विनोद अपरा।
कोई परि-रचै निशिता-सि करी। कोइ द्वारे परिट्ठिउ दण्डधरी।
आख्यानहु कोइ किछू कहई। दीनेउ कनइल्लु कोइ वहई।
कोइ बार बार विनये नमई। कोइ सुरसरि-सर सलिलेहिं स्नपई।
कोइ मालउ चोलिउ उज्ज्वलऊ। धोवै सब लहण सुपरिमलऊ।

नारी सौन्दर्य

ताहि घरनि मरुदेवि भटारी। जाहि रूपश्री अति गुरुकारी।
अमरन् पंकिहिं पद - प्रणमंतिइ। लंघायक हमरो नख - पंक्तिइ।
कमतल राये काह गवेषिउ। एहि न्याइँ नूपुरेहि प्रघोषिउ।
पर्ष्णिहिं रक्तऊ चित्त प्रदर्शेउ। अंगुलियहिं सरलत्व प्रकाशिउ।
अंगुठ-उन्नति ही जिमि गूढ़ा। गुल्फउ सो फुर पिशना मूढ़ा।
नी-रोमउ विसिरिउ वर्त्तुलियउ। मसृणउ सोहियाउ अंगुलियउ।
जंघउ क्रमहानी अवधरियऊ। दीसेउ जनु खल-मित्रहँ किरियउ॥

शान्तिपा

स्वसंवेदन स्वरूप विचारे। अलख लख्यो ना जाई।
जो जो ऋजुवाटे गइला, अन्य वाटे भइला सोई॥

कायारूप ना बूझै मूढे ऋजु वाटा संसारा।
मधु-करहिं एक भद्य, राजहिं कनकधारा॥
मायामोह समुद्रहि अन्त न बूझसि थाहा।
आगे (न) नाव नभेला दीसे, भ्रान्तिहिं पूछसि न नाहा॥
शून्य-प्रान्तर कह न दीसे भ्रान्ति न वासने जाये।
एही अष्ट महासिद्धि सिद्धै, ऋजुवाटे' हीं जाये॥
वायँ दहिन दो वाट छाड़ो शान्ति बोलेउ सकेरिय।
घाटे न शुल्क खरतरी न होइ, आँखि बुयझिवाट जाइय॥

× × ×

तुला धुनि धुनि रेशहि रेशू। धुनि धुनि निरवर शेषू।
तउ सो हेतु न पाइयइ। शान्ति भनै की सो भवियइ।
तुल धुनि धुनि शून्ये धारेउ। पुनि लेइय आप चट्टारिउ।
बहुत मूढ़! दुइ भाग न दीसै। शान्ति भनै वालाग्र न पइसै।
कार्य न कारण न एहु जुगती। स्वक-संवेदन बोलै शान्ती॥

योगीन्दु

ज्ञान समाधि

जे जायेउ ध्यानाग्नियेहिं, कर्म कलंक डहाइ।
नित्य-निरंजन ज्ञानमय, ते परमात्म नमामि॥
तिन हौं वन्दौ सिद्धगण, रहें जोउ होवन्त।
परम समाधि महाग्नियेहिं, कर्मेन्धनहिं होमन्त॥
भावहि प्रणवों पंचगुरू, श्री योगीन्दु जिनाव।
भट्ट प्रभाकर वीनवेउ, निर्मल करिके भाव॥
गयउ संसार वसंतहीं, स्वामी काल अनन्त।
पर मैं किछु पायउँ न सुख, दुःखइ पायउँ महन्त॥

आत्मा

हौं गोरो हौं सामलो, हौ हिं विभिन्नउ वर्ण।
हौं तनु-अंगौ स्थूल हौं, ऐसो मूढै मन्व॥
हौं वर-ब्राह्मण वैश्य हौं, हौं क्षत्रिय हौं शेष।
पुरुष नपुंसक इस्त्रि हौ, मानै मूढ विशेष॥
आत्मा गोरा कृष्ण नहिं, आत्मा रक्त न होइ।
आत्मा सूक्ष्महु स्थूल नहिं, ज्ञानी ज्ञाने जोइ॥

आत्मा पंडित मूर्ख नहिं, नहिं ईश्वर न अनीश।
तरुण बूढ़ बालहु नहीं, अन्यहु कर्म विशेष॥
पुण्यउ पापउ काल नभ, धर्मा धर्महु काय।
एकहु आत्मा होइ नहिं, छाड़ि एक चेतन भाव॥
अन्यहिं तीर्थ न जाहिं जिय, अन्य गुरुहिं न सेव।
अन्यहिं देव न चित तुहुँ छाड़ि एक विमलात्माहि॥
आत्मा निज मन निर्मले नियमेहिं बसै न जासु।
शास्त्र-पुराणहु तप-चरण, मोक्ष कि करिहै तासु॥

पंथ पोथी-पत्रा की निन्दा

देव शास्त्र - मुनिवरन की, भक्तिहिं पुण्य हवेइ।
कर्मक्षय पुनि होय नहिं, आरज शान्ति भनेइ॥
देव निरंजन यों भनै, ज्ञानेहिं मोक्ष न भ्रान्ति।
ज्ञान विहीना जीवड़ा, चिर संसार भ्रमन्ति॥
शास्त्र पढ़ंतौ होइ जड़, जो न हनेइ विकल्प।
देह वसंतउ निर्मलउ, नहिं भानै परमात्म॥
तीर्थहिं तीर्थ भ्रमन्त कहिं, मूढ़हिं मोक्ष न होइ।
ज्ञानविवर्जित जो कि जिव, मुनिवर होइ न सोइ॥
चेला - चेली - पोथियहिं, तूषै मूढ़ निभ्रान्त।
एतहि लज्जै ज्ञानियउ, बन्धन हेतु बुझन्त॥
भलन करेहू नशैं गुण, जहँ संसर्ग खलेहिं।
वैश्वानर लोहहिं मिल्लेउ, तेहि पिट्टियइ घनेहिं॥
रूपे पतंगा शब्दे मृग, गज स्पर्शे नाशंति।
अलिकुल गन्धे, मत्स्य रसे, किमि अनुराग करंति॥
देवल देवउ शास्त्र गुरू, तीर्थहु वेदहु काव्य।
वृक्ष जो दीसै कुसुमित, इंधन होइहै सर्व॥

सभी देव सम्मानीय

सो शिव शंकर विष्णु सो, सो रुद्रहु सो बुद्ध।
सो जिन ईश्वर ब्रह्म सो, सो अनंत सो सिद्ध॥
ऐसे लक्षण - लक्षितउ, जो पर निष्कल देव।
देह-मध्य ही सो बसै, तासु नहीं है भेद॥

रामसिंह

व्याख्यानड़ा करन्त वहु, आत्महिं दियउ न चित्त ।
कणहिउँ रहित पुआल जिमि, पर संग्रहउ वहुत्त ॥
पंडित पंडित पंडिता, कण छाड़ेउँ तुष कूटिया ।
अर्थहिं ग्रन्थहिं तुष्टोसि, परमार्थ न जानइ मूढोसि ॥
अक्खरडेहिं जे गर्विया, कारण ते न जानंत ।
वांस विहूनो डोम जिमि, पर हाथडा धुनंत ॥
वहुतहि पढ़िया मूढ़ पर, तालू सूखइ जेहिं ।
एकहि अक्षर सो पढ़हु, शिवपुर जावे जेहिं ॥
हौं सगुणी प्रिय निर्गुण, निर्लक्षण, निस्संग ।
एकइ अंक वसंतहु, मिलेउ न अंगहि अंग ॥
मूल छोड़ि जो डाल चढ़ि, कहँ तेहि योगाभ्यास ।
चीर न वीनेउ जाइ मुढ़, विनु ओटिया कपास ॥
खट दर्शन धन्धे पड़ी, मर्तहि न टूटी भ्रान्ति ।
एक देव छ भेद किय, ताते मोक्ष न यान्ति ॥

× × ×

हे सखि ! काह करिय सो दर्पण । अहै प्रतिबिम्ब न दीसइ आपन ॥
धंधवाल मोहि जग प्रतिभासइ । घर अछते ण घरपति दीसइ ॥

जासु जीवनहि मनु मुयो, पंचेन्द्रियहिं समान ।
सो जानीयइ मोचलउ, लाहेउ पथ निर्वाण ॥
मुंडिया - मुंडिया-मुंडिया, सिर मूडेउ चित्त न मूडिया ।
चित्तहि मुंड़ न जिन कियउ, संसारहि खंडन तिन कियो ॥
पोथा पढ़नी मोक्षकहँ, मनहि असुद्धउ जात ।
बध - कारक लुब्बक नवै, मूले ठिय हरिणास ॥
भल न काह नाशइ गुण, जहँ लह संग खलेहिं ।
वैश्वानर लोहहि मिलेउ, पिट्टीयत सुधनेहिं ॥
मूँड मुँडाइवि सीख धरि, धर्महि वाँधी आस ।
न निक कुटुम्बहि छोड़ियह, छोड़ फँकान पराश ॥
जे पढ़िया, जे पंडिया, जेहि कि मान मर्याद ।
ते मेहरी पिंडहि पड़ी, भ्रमियत जेम घरट्ठ ॥
देवल पाहन तीर्थ जल, पोथिहि सर्वहि काव्य ।
वस्तु जो दीसइ कुसुमित, इंधन होइहै सर्व ॥

तीर्थहि तीर्थ भ्रमन्तयहँ, किछु नाही फल होत ।
वाहिर सुद्धो पानियहँ, अभ्यन्तर किमि होत ॥
तीर्थहिं तीर्थ भ्रमेउ मूढ़, धोयेउ चाम जलेहि ।
एहु मन किमि धोयेसि तुहूँ, मइलउ पाप मलेहि ॥

जंत्र मंत्र

मंत्र न तंत्र न ध्येय न धारण ।
नापि उछासहि कीजिय कारण ।
इमिहि परम सुख मुनि सोवह । एही गडवड कासु न रूचइ ।
दो पंथहि न गमियइ पंथा, दो मुँह सुई सीइय कंथा ।
दोउ न होहिं अजाना । इन्द्रिय - सुख - अरू मोक्खहू ।
वाद - विवाद जे करहिं, जाह न फाटी भ्रान्ति ।
जे रक्ता गोपायित, ते गोप्यन्त भ्रमन्ति ।
कालहि पवनहि रविशशिहिं, चहु एकठेइ वास ।
हउँ तोहि पूँछउ जोगिया, पहिले कासु विनाश ॥

गुरु महिमा

जे लिखेउ न पूछेउ कहुँपि जाय, कहियउ काहुपि न चित्त ठाइ ।
अथ गुरु - उपदेसे चित्तु ठाइ, सो तिमि धारंतोहि कहुँपि ठाइ ॥
दो भंजाविय एक किय, मनहि न चारी वेलि ।
तेहि गुरुवहि हउँ शिष्यणी, अन्यहिं करउँ न लाल ॥
आगेहि पाछेहि, दस दिसिहि, जहँ जोवउँ तहँ सोइ ।
सो मम काटी भ्रान्तडी, अवश न पूछिय कोइ ॥
मूढ़ा ! जोवइ देवलहँ, लोगहिं जाहिं कियाह ।
देह न पेखइ आपणी, जहँ शिव संत थिताह ॥
आत्मा परहि न मेलियउ, आवागमन न भाग ।
तुष कूटंते काल गउ, तंदुल हाथ न लाग ॥
उज्जड वसिया जो करइ, वसिया करइ जो सुन्न ।
वलिहारी तेहि जोगियहिं, जासु न पाप न पुन्न ॥

धनपाल

वसंत वर्णन

घत्ता—इतहू मधु मासह आगमनू । इतहू प्रिय पुत्र समागमनू ।
परमोत्सवे रोमांचित - भुजहू । मुह विकसिउ धनदत्तह सुतहू ॥

जिम तीर्थ तेमि पंचहु शतेहिं । कियउ भवन सहि निर्वतिगतेहिं ।
घर घर मंगलइ प्रघोषिताइँ । घर घर मिथुने परितोषिताइ ॥
घर घर तोरणे प्रसाधिताइँ । घर घर स्वजने अल्पाधिकाइँ ।
घर घर बहुचन्दन - छटा दीन । मरु-कुन्द-वनय-दवना - प्रकीर्ण ॥
घर घर स-रेणु-रज - पिन्जरीउ । सोहंति चूत तरू मंजरीउ ।
घर घर चर्चरि कौतूहलाइँ । घर घर अन्दोलै सोहलाइँ ॥
घर घर कृत-वस्त्राभरण सोह । घर घर आरब्ध महायशोघ ।
घर घर स्वरूप - रंजित-मनाइँ । युवती जोवै मुँह दर्पणाइँ ॥
घत्ता–घर घर जल मंगल-कलश-किय । घर घर देवय अवतदिणा ।
घर घर शृङ्गार वेष धरेऊ । नाचेउ वरयुवतिहिं उच्छलिया ॥
सो गजपुर सो पौरसमागम । सो सित-पक्ष वसंतहँ आगम ।
सोइँ निरन्तराइँ चूत वनइँ । सोइ धवल पुंजवियइँ भवनइँ ॥
सो बहु परिमलाढ्य, वन-तूर्यउ । प्रिय सुख शीतल दक्षिण मारुत ।
सो-पुर - शोभा कासु पमिज्जै । जा पंखिय सुर अचरज दिज्जै ॥
जहँ उद्यानपुरे सुख - संचित । दक्षिण-पवन - प्रहत - कुसुमंचित ।
जहँ मरुकुन्दकुसुम संचलियउ । दवना - मंजरीउ नव-हिलियउ ॥
जहँ आताम्रहु फुल्लपलाशउ । सोहै न्याइँ प्रदीप्त – हुताशउ ।
जहँ वहु रसविशेष-शव कमलइँ । वह कुसुमै धुनंति भ्रमर कुलइँ ॥
घत्ता–जहँ मालति कुसुमामोदरत । चुवंत भ्रमैं वने मधुकरऊ ।
अतिमुक्तएउ जहँ रति करई । सो वर - वसंत को न स्मरई ॥

नारी सौन्दर्य

दीख कुमारि विजने सोवनघरे । लक्ष्मि न्याइँ नव कमल दलंतरे ।
जिन-शासने छै जीव दया इव । पंडित मरने सुगति-वरिमा इव ।
मुख-मारुते मलय वन राजि'व । सिंघलद्वीपे रतन विख्याति'व ।
सोहै दर्पणे क्रीडा करंती । चिकुर - तरंग - भंग विवरंती ।
सो स्फटिकांतरेहिं तहिं पेखइ । सापि तासु आगमन न लक्खई ।
घत्ता– जनु मन्मथ - भल्ल - विधान शील युवान जने ।
ताहि पेखिय कान्ति, विस्मेउ भट्ट कुमार मने ॥
उत्पलदल - दीरघ - पायहिं । नख-मणि-किरण-करंवित–छायहिं ।
जंघ - उरू गुह्यान्तर - पासइँ । सुनि वसितैं भीन परिवासइँ ।
पोतान्तर - उद्भिन्न - प्रयासइँ । तेहिं वह संति पिहित - परिहासैं ।
विकट-नितंव-बिम्ब - सोहिल्लउ । राजै अर्धोअर्ध कटिल्लउ ।
रोमावलि वलि अंगे विभावै । पिउ पिपीलि - रेखा इव नावै ।

रसना दाम निबंधन सोहै। किंकिणि रण-भणंत तन छोभै।
सम-चक्कर कटितट कृश-मध्यउ। आवे करतल - मुष्टिहु ग्राह्यउ।
त्रिवलि - तरंगइ नाभीमंडल। ननु आवंता ऋद्धि - महाजल।
पीनोन्नत- निविडइँ स्तन बट्टैं। निर्भिदै हारावलि ठट्ठैं।
मालति-माला-कोमल - बाहउ। रतन कटक - केयूर - सनाथउ।
सरलांगुलि-सुरेख कोमल कर। सन्ध्या वयव न्याइ नभ तामर।
रतनाभरण - विभूषित कंठे। वेला श्रीव। उदधि - उपकंठे।
किउ अपमान अनूप मखल्लउ। अधरउ नावइ दाडिम - फुल्लउ।
उत्तंगे तीक्ष्णाग्रे नासें। प्रच्छन्नेहिं व अशात श्वासें।
कर्णें कुण्डल-युग गण्डस्थले। नयनेहिं दीर्घ - कृष्ण - चल-धवले।
भौंहा युगलएहिं सुविभक्ते। भाल तलेहिं अर्ध शशि पत्रे।
मधु-प्रिय-पेशल - मधुरालापें। शिर आछादिय केश कलापें।
सो पेखिया अनूपम रूपा। अप्सराँई विभ्रम संभूता।
बोलेरू नागर परिहासइँ। मनहर - कामु - त्कोपन भाषइँ।
"हे मालूर प्रवर पीवर थनि। आछेहि का इहाँ विर्जित जने।
कारन काई नगर जो सूना। मठ - विहार देवलहिं रमन्ना।
राना कवन आसि एहि राउले। ध्वज-तोरण-मणि खंभ समाकुले।"
सो सुनियाउ सलज्जिय वदनी। थिउ हेट्ठामुख पघरियनयनी।
मइल-कपोल कज्जला-मिश्रिय। निज कुल देवताई जनु भीषिय।

घत्ता—वरयात पुत्रियह तवकेरउ, मुख-कमल निहारहिं करि विनय।
लेइ जल पक्खारै लोचनइँ, जनु चिर करि दुःखुत्कोचनई॥

शिक्षा

घत्ता—चिन्हैं दर्शन्त महत्तरहिं, सज्जन-जन-हृदयउ भरै।
आनंदनंदि - कलकल-रवेहिं, पाध्या - शाला पईसरै॥

तहाँ तेहिं गुरु वचन-नियुक्ते। परमागम-कला - गुण संयुक्ते।
पुनि अक्षर - संकेत - कृतार्थे। बहु व्याकरण शब्द - शास्त्रार्थे।
सकल-कला - कलाप-परिजानिय। अवगाहन शक्तिए बहु जानिय।
ज्योतिष - मंत्र - तंत्र बहु भेदइँ। धनु - विज्ञान बाण-गुण छेदइँ।
विविध आयुधई विविध संवरणेँ। रणे हस्तापहस्त व्यापरणेँ।
दीनु प्रहर प्रति प्रहर प्रमुँचइँ। लक्षण-चलन - चंचला हुक्कइँ।
मल्लयुद्ध आवलगन संचइँ। ढोक्कर कर्तरि करन प्रपंचई।
गज - तुरंग - परिवाहन संज्ञइँ। सारासार - परीक्षण गिन्नइँ।

घत्ता-एताइँ विशिष्टइँ, अन्यहँऊ अंगउँ, गुरोहि तासु वरिऊ।
जिन - महिम - पूज दानोत्सवेहिं, पाध्याशालहिं नीसरिऊ।

अज्ञात कवि (१०१० ई०)

सुखी कुटुम्ब

भोली मुग्धे ! न गर्व करु, पेखेवि प्रति - रूपाइँ।
चौदह सै छेहत्तरा, मुंजह गजह गताइँ॥
चारि वइल्ला धेनु दुइ, मिट्ठा - बोली नारि।
काह मुंज ! कुटुम्बियइँ, गज वर बांधे द्वारि॥

नीति वाक्य

जे याके गोदा नदी, हौं बलि कीजौं ताह।
मुंज न देखेउ विहरियउ, ऋद्धि न दीसु खलाहँ॥
जा मति पाछे ऊपजै, सा मति पहिले होइ।
मुंज भनै मृणालवति, विघन न वाढ़ै कोइ॥

दासी प्रेम

दासिहि स्नेह न होइ, नाना निरंखी जानिषइ।
राव मुंजेश्वर जोइ, घर घर भीख भ्रमावई॥
वेसा छाड़ि वडायती, जे दासिहिं रंजंति।
ते नर मुंज-नरेन्द्र जिमि, परिभव घना सहंति॥

वैराग्य

कासु कर रे पुत्र-कलत्र-धी, कासु कर रे कर्षण-वाड़ी।
एकले आइव एकले जाइब हाथ-पग दोनों झाड़ी॥

मुंज का पश्चाताप

एहि राजहिं नहिं काज, भोज गुणागर ताहि बिनु।
काठ दिवारउ आज, जिमि जाई भोजहँ मिलौं॥
स्वामिय अतिहि अजान, जो इन पर बोलै हिय।
जान्या एहु प्रमाण, कीधौ जो न कदर्थियइ॥

अब्दुर्रहमान

ग्रीष्म

"नव - ग्रीष्मागमे पथिक ! नाथ जब प्रवसितऊ,
करव करांजलि सुख - समूह मम निवसितऊ।
तसु पाछहीं लउट्टि विरह - अगि - तपित - तना,
तन्नहिं आइ निजभवन विसंस्थुल - विकल - मना।"
तिमि अनरति – रणरणक – असुख असहंतियहीं,
दुस्सह मलय – समीरण मदनाक्रान्तियहीं।
विषमज्वाल झलकंत ज्वलंतिय तीव्रतरा,
महियल वन - तृण - दहन तपंते तरणिकरा॥

वर्षा

इमि तपिअउ बहु ग्रीष्म सकौं कस बोलियऊ।
पथिक ! आव पुनि पावस ढीठ न आव पियऊ।
चौदिसि घोरंधार छाय गउ गरूअ - भरो।
गगन - कुहर घुरघुरै सरोषउ अंबुधरो॥
वक छाड़िय सलिल - ह्रद तरू शिखरहिं चढ़ेऊ।
तांडव करिय शिखंडिहि वर शिखरे रटेऊ।
सलिलेहिं वर शालूरेंहि परसेउ रसेउ स्वरे।
कल कल किउ कल कंठहिं चढ़ि आमहि शिखरे॥
मच्छरभय आ - पड़ेउ ठाँव गाई - गणहीं।
मनहर रमिअइ नाथ रंगे गोपागंनहीं।
हरियावल धरावलय कदम्बन महमहिऊ।
कियउ भंग अंगांग अनंगेहिं मम अतिहू।
झाँपी तम बद्दलो दसहु दिशि छाई अम्बर।
उट्ठविउ घुरघुरा घोर घन कृष्णाडम्बर।
नभहि मार्ग नभवल्ली तरल तड़तड़ै तड़क्कै।
दर्दुर रटन कठोर शब्द कोइ सहउ न सक्कै।
निपट निरन्तर नीरधर दुर्धर - धर - धारौघभर।
किमि सहौं पथिक ! शिखरस्थितहं कोइल रसै स्वर।
यामिनि ! जो वचनीय तुव, सों त्रिभुवन न अमाइ।
दुक्खिहिं होई चौगुनी, छीजै सुख संगाहि।

शरद्

इमि विलपंति पछिम दिन पायउ,
गीति गयंत पढंतहु प्राकृत।
प्रिय - अनुरागि रजनि रमणीया,
गीयइ पथिक ! जानि अरमणीया ॥
दच्छिण - मार्ग देखन्ती भक्तिहिं,
देखें अगस्त्य ऋषी मैं झट्टिहिं।
जानेउ सो पावसहिं गमायउ,
प्रिय परदेश रहेउ ना रमियउ ॥
गउ फाटियइ वलाहक गगनेहिं,
मनहर तारक लोकिय रजनिहिं।
हुयो वास भूमितले फणीन्द्रा,
फुरिय जुन्ह निशि निर्मल चन्द्रा ॥

हेमन्त

तिमि उत्कंठि निरन्तर पेखै दिशि पसरी,
ले ढूकेउ चातुरिहिं हिमंतु तुषार भरी।
हुयउ अनादर - शीतल भवने पथिक ! जल,
अपसारिय सत्थरेहिं सकल पद्मनउ दल।
सरैन्ध्री घनसार न चन्दन पीसैही,
अधर कपोलालंकृत मदन समिश्रैही।
श्रीखंडेहिं विवर्जित कुम्कुम लेपियही।
चम्प तैल भृग नाभि सह से विर्चाही।
धूँइज्जै तहँ अगर कुम्कुम ले पियहीं,
चम्प - तैल मृगनाभि सह से वियहीं।
धूँइज्जै तहँ अगर कुम्कुम तन लाइयई।
गाढउ निपटा-लिंगन अंगे सुहाइयई।
अन्यहिं दिवसहि सन्निधि अंगुलिमात्र हुआ।
मै एक्कै पर पथिक ! निवेशिय व्रह्मयुगा।
हेमन्ते कन्त ! विलपंतिय, यदि न लवटि आश्वासिही।
तालेहीं मूर्ख ! खल ! पापि ! मोही, मरे वैद्य कि आइयही।

शिशिर

इमि कष्टेहिं मम गयउ, पथिक ! हेमन्त - ऋतू,
शिशिर पहूँचेउ धूर्त्त, नाथ दूरन्तरितू।

उठेउ झखड़ गगनैं, खर-परुष पवन - हतेउ,
तेहिं छूटेउ झरि करि अशेष तहँ रूप मिटेउ ॥
छाय - फूल - फल - रहित असेवित शकुनि - जनेहिं,
तिमिरान्तरित दिशाहिं तुहिन - धूँआ - भरिया।
मार्ग भागु पथिकन न प्रवसहिं हिमडरिया,
उद्यानहु ढंखर - सम सूखेउ कुसुम - वन ॥

वसंत

गउ शिशिर वन - तृण - दहंत, मधुमास मनोहर इहाँ प्राप्त।
गिरिमलय-समीरण बहु बहंत, मदनाग्नि वियोगिहिं विस्फुरंत ॥
बहु विविध राग घन मन हरेहि, सित सर्व रक्त पुष्पांबरेहिं।
पंगुरणेहिं चर्चित तनु विचित्र, मिलि सखियाँ गावै गीत नित्य ॥
महमहेउ अंगे बहु गंधमोद, जिमि तरणि प्रमुंचेउ शिशिर शोक।
सो पेखिय मैं मध्ये सखीन, लंकोडउ पढ़ेउ नव वल्लभीन ॥
किंशुकहि कृष्ण घनरक्तवर्ण, प्रत्यक्ष परासै धुत परास।
सब दुःसह हुआ प्रभंजनेहिं, संजनेउ अमुख ही सुहंजनेहिं ॥
भुइँ पड़ती रेणू पिंजरीहिं, अधिकतर तपी नवमंजरीहिं।
मरु शितल बहे महि शीतलंत, न होइ शीत न नशै ताप ॥
जसु नाम अलीकै कहै लोक, ना हरै क्षणार्ध अशोक शोक।
कंदर्प - दर्प संतपित अंग, साहारै नायान सहकार अंग ॥
क्षण बुझेउ दुसह यम-कालपाश, वर कुसुमहिं सोहै दश दिशासु।
गये निविड़-निरन्तर गगने चूअ, नव मंजरि तहाँ वसंत हूअ ॥
जल - रहित मेघ संतपै काय, किमि कोइल कलरव सहेउ जाय।
रमणी-गण रथ्येहिं परिभ्रमन्ति, तूरी - रव त्रिभुवन बधिरयंति ॥
चाचरिहिं गीत ध्वनि-करिय ताल, नाचीय अपूर्व वसंतकाल।
घन - निविड - हार परिवेष्टितेहि, रुनझुन-रव मेखल-किंकिणीहि ॥

× × ×

यदि अनन्तर कहेउ पथिक ! मैं।
घन दुःखपूर्ण मदनाग्नि विरहेहिं प्रलिप्ता।
सो पुरुष छोड़ि विनयमार्ग मत भणियहु।
तिमि बोलेहु जिमि कोपु नाहि सो बोलेउ जो युक्त।
आशे प्रिय वर कामिनिहिं बटोही विनियुक्त ॥
तेहिं पठाइ चली दीर्घाक्षि अति तुरतैं,
एंहि बिच दिश दक्षिण तेहि याम दरसी,

पास रोकि पथ दीठेउ नाथ (तिय) झट हर्षिय ।
जिमि अचिंतहू कार्य तसु सिझेउँ त्तरणार्ध मह्न्त ।
तैस पढ़न्त सुनन्तयहूँ, जयतु अनादि अनन्त ॥

वव्वर

गरीबी का जीवन

शीत वृष्टो कीजिय, जीवा लीजिय, बाला बूढ़ा कंपंता ।
वह पछुआँ वाता, लागे कायहँ, सर्वा दिशा झाँपता ।
यदि जाड़ा रूपै, चिता हवासे, पेटे अग्नी थप्पीया ।
कर-पादा संहरि, कीजे भीतरि, आपा-अप्पो लुक्कीया ॥

तौ लौं बुद्धी तौ लौं शुद्धो, तौ लौं दाना तो लौं माना, तो लौं गर्वा ।
जौलौं जौलौं हाथे नाचै, विज्जूरेखारंगा न्याई एक द्रव्या ।
एही बीच आत्म दोषे, दैव रोषे होइ नष्ट, सोइ सर्व ।
कोई बुद्धि कोई शुद्धि, कोई दान, कोई मान, को गर्व ।

सुखी जीवन

पुत्र पवित्र वहूत धना, भक्ताँ कुटुम्बिनि शुद्ध मना ।
हांके त्रसई भृत्य - गणा, को करे वव्वर स्वर्गे मना ॥
स्वधर्म-चित्ता गुणवन्त पुत्रा, सुकर्म रक्ता विनता कलत्रा ।
विशुद्ध-देहा धनवंत-गेहा, करंति के वव्वर स्वर्ग नेहा ॥

सो मानिय पुणवंत, जासु भक्त पंडिस तनय ।
जासु घरनि गुणवंति, सोउ पुहुमि स्वंगह निलय ॥
ऊँचो छाजन वि-मल घरा, तरुणी घरनी विनयपरा ।
वित्तके यूरल मूँदघरा, वर्षा समया सुक्खकरा ॥

प्रिय भक्त प्रिया गुणवंत सुता ।
धनवंत घरा, वहु सक्ख करा ॥
गुणा जासु शुद्दा वधू रूप-मुग्धा ।
घरे वित्त जग्गा, मही तासु स्वंगा ॥

कमल - नयनि, अमिय - वयनि ।
तरुणि घरनि, मिलै सुपुणि ॥
गुरुजन - भक्तउ, बहुगुण - युक्तउ ।
जसु जिय पुत्रउ, सोइ गुणवंतउ ॥

ओगर-भत्ता रंभा-पत्ता, गाय के घीवा दुग्ध-संयुक्ता।
माँगुर-मच्छा नालिय-शाका, दीजै कांता खाइ पुणवंता।

कुलक्षणा स्त्री

भौंहा कपिला ऊँच लिलारा। मांझे पियरा नेत्रा युगला।
रूखा वदना दंताविरला। कैसे जीविय ताका प्रियला।

ग्रीष्म

तरुण - तरणि तपै धरणि, पवन बहै खरा।
लाग नाहिं जल बड़ मरुथल, जन-जीवन-हरा।
दिश चलै हृदय डुलै, हम एँकली बधू।
घरे नहिं पिय सुनहि पथिक! मन-इच्छै कहू।

पावस

वरिस जल भ्रमै घन गगन, शीतल पवन मन-हरन।
कनक - पियरि नचै बिजुरि, फूलिया निम्वा।
पत्थर - विस्तर - हियरा पियरा, नियर न आवई।
नाचै चंचल विज्जुरिया सखि! जाइ।
मन्मथ खङ्ग धरसै जलधर शानै।
फुल्ल कदंवक अम्बर डम्बर दीसै।
पावस आउ घनाघन सुमुखि! वरीसै।
फुल्ला निम्वा भ्रम भ्रमरा, दिट्ठा मेघा जल-श्यामला।
नाचै विज्जू प्रिय सखिया, आवे कंता कहु कहिया।
जो नाचै बिज्जू मेघंधारा, प्रफ्फुल्ला निम्वा शब्दइ मोरा।
बीजंता मंदा शीता वाता, कंपता काया कन्त न आया।

शरद

नेत्रा नन्दा ऊगो चन्द्रा, धवल-चमर-सम सित-अरविन्दा।
ऊगे तारा तेजस् सारा, विकसु कुमुद-वन-परिमल कन्दा।
भासै काशा सर्वा आशा, मधुर पवन लहलहिय करंता।
हंसा शब्दै फूला वन्धू, शरद-समय सखि! हिय हहरंता।

शिशिर

जो फूलु कमल-वन वहै लघु पवन, भ्रमै भ्रमर-कुल दिशि विदिशं।
झंकार परै वन रवै कोइल-गण विरहिय-हिय हुओ डर-विरसं॥

आनंदिय युवजन हुलस उठिय मन, सरस-नलिनि-दल कृत-शयना।
वीतउ शिशिरउ दिवस दिरघ भउ, कुसुम समय अवतरिय वना।

वसंत वर्णन

भ्रमै मधुकर फुल्ल अरविन्द, नव किंशु कानन ज्वालिया।
सर्वदेश - पिक राव चुल्लिय, शीतल - पवन लघु वहै।
मलय - कुहर नव - वेलि पेरिय।
चित्ते मनोभव - शर हनै, दूर - दिगंतर कंत।
किमि परि अपहि धारिहउ, इमि परि-पडिय दुरंत।

कनकामर मुनि

पति विरह

हल्ला हल हूयो सकल जन, अपरा पर जाने संचलहीं।
हा हा रवउठेउ करुण-स्वर, पुनि शोके नरवर कलकलहीं॥
जो नर - पंचानन विकसित - आनन जले पड़ेऊ।
तो सकलहिं लोकहिं प्रसरित शोकहिं अति डरेऊ॥
रति - वेग सुभामिनि जनु फणि - कामिनि विमन - भया।
सर्वांगे कंपिय चित्ते चमक्किय मूर्छगता॥
कृत चमर सुवातें सलिल सहायें गुण - भरिया।
उट्ठाइय रमणिहिं मुनिमन - दमनिहि मणहरिया॥
सा करतल कमलहिं सुललित सरलहिं उर हनई।
उद् - व्याकुल - नयनी गदगद - वदनी पुनि भनई॥
"हा बैरी वीवस पाप—मलीमस की कियऊ।
मम अहेयु वराकियु रमण परायउ की हियऊ॥
हा दैव! पराङ्मुख दुर्नय दुर्मुख तुहुँ भयऊ।
हा स्वामि! सलक्षण सुष्ट विचक्षण कहँ गयऊ॥
मम उपर भटारा नरवर सारा करुण करो।
दुख - जलधि - पडंती प्रलयहँ जांती नाथ धरो॥
हौं नारि वराकी आपति आये को सुमिरऊँ।
पर छाडिय तुम्हहिं जीवौं एवं की मरऊँ॥
इमि शोक - विमुग्धइ लपियहुँ लुब्धहिं जो हियई।
हौं बोलेसु तइयहुँ मिलिहैं जइहउँ मोर पती॥

पत्नी विरह

आवासहो आवई जाव राव। मदनावलि ना पेखेउ ताव।
जोइयै चुतुर्दिश हृदयहीन। उद्वेगिर हिंडै महिहे दीन॥
तो शंकेउ नरवरे गलित-गर्व। कहँ गउ कलग सर्वाङ्ग-भव्य।
मदनावलि जा आनंद भूअ। सा एवं की विपरीत हूअ।
तब प्रेषेउ किंकर वद नृपेहिं। अवलोकहु स्वामिनि दिशि पथेहि।
जोयउ दिसीहिं आगत वलेइ। पुक्कारहिं ऊँचा कर करेइ।
तव राय देखियउ ते सोवंत। परि मुंच अश्रु नयनहिं तुरंत।
"हे प्रजापति तुहुँ श्रवणानुवंध। मोहि आखहु सुन्दर नेहबंधु।
हा मुग्धे मुग्धे तुहुँ केहिं नीउ। की एवं छुक्किय कतहुँ ठीय।
हा कुंजर! की तुहुँ यमहँ दूत। की दोअहिं मोहि प्रतिकूल हूअ।
घत्ता--चिर मोह वहंतउ कोउ हियहिं, सुन्दर रूप अग्रे हुयउ।
विद्याधर आयउ सोक तहिं, विद्यासागर पार गउ।

तुच्छ संसार

सो सुनिय वचन राजाधिराव। संसारहँ उपर विरक्त भाव।
धिक धिक असोहावउ मर्त्यलोक। दुख-कारण मनोरथ अंगभोग।
रतनाकर - तुल्यउ यत्र दुःख। मधु विन्दु समानो भोग सुक्ख।
घत्ता--हा मानव दुःखइँ स्तब्ध-तन, विरस हसंतउ जहँ मरै।
भन निर्घृण विषयासक्त मन, सो छाडिय को तहँ रति करै।
कर्मेहि परिट्-ठिउ जो उवरे, यमराजेहिं सो लेउ निजय-पुरे।
जो वाल्येहिं वालउ लालियऊ, सो विधिना निजपुरे चालियऊ।
नवयौवन चढ़िमउ जो प्रवरू। यम जाइ लिवावन सोउ नरू।
जो बूढउ व्याधिशतेंहि कलिऊ। यमदूतहिं सो पुनि परिमार्दिऊ।
वलभद्रहु सम हरि अतुल - वलू। सो विधिना लीपउ करिय छलू।
छै खंड वसुन्धर जेउ जिया। चक्रेश्वर ते कालेहिं लिया।
विद्याधर किन्नर जे खचरा। वलवन्ता यम - मुखे पड़ेउ सुरा।
फणिनाथै सरिस अमर - पती। यम लेतउ कवन नु ना मुवई।

सिंहल द्वीप

ता एकहिं दिन करकंडएहिं। पुनि दिन्न प्रयाणहिं तूर्ययेहिं।
गउ सिंहलद्वीपहु निवसमान। करकंड नराधिप नर प्रधान।
जहँ पावस पिल्लइ मनहरंति। सुर-खेचर-किन्नर जहँ रमंति।
गज लीलहिं महिलउ जहँ चलंति। निज रूपे प्रति रूपहँ खलंति।

जहँ देखिय लोकहँ केर भोग। वीसरियउ देवहँ देवलोक।
आवासेउ नगरहँ वहि प्रदेशे। आरि शंका वाढी ताहि देशे।
आवास छाड़ि सहचर समेत। करकंड गयेउ रमणिहिं अमेय।
तहँ गरुअउ लवण शतेहिं भरिउ। जनु कल्पवृत्त देवेहिं धरिउ।
दलवंतहि पत्रहिं परिचरिऊ। वट देखु राव सम - विस्तरिऊ।
घत्ता--करकंडेहिं दीखेउ सो वट, दीरघ सुण्ट सुकोमलह।
तो लेइय गोली धनु हडिया, वेधउ अशेषहँ शाद्वलइ।

जिनदत्त-सूरि

वेश्या निन्दा

यौवनार्थ जो नाचै दारी। सो लागै श्रावकहँ पियारी।
तेहि निमित श्रावक श्रुत - फाडै। जाते दिवसे धर्महि फोडै।
वहुत लोग रागांध सो पेखहिं। जिन-मुख-पंकज विरला वांछहिं।
जन जन भवने शुभार्थ जो आयउ। मरै सो तीक्ष्ण कटाक्षे घायलु।

दुर्लभ मानुष जन्म

लाभेउ मानुष जन्म महारवु। आपे भव समुद्र तें तारहु।
आपु न अर्पहु रागहँ रोषहँ। काहु निधान न सर्वहँ दोषहँ।

गुरु सब कुछ

दुर्लभ मानुष जन्म जो पायउ। सह लघु करहु तुम्म सुनिरुक्तउ।
शुभ गुरु दर्शन विनु सो सहलउ। होइ न करते वहलउ वहलउ।
सु-गुरु सो उच्चै सच्चै भाषै। पर परिवादि निकर जसु नाशै।
सर्व जीव जिव आपउ राखै। मुख्य मार्ग पूछियउ जो आखै।
इहँ विषमी गुरु गिरहिं सम्-उट्ठिय। लोक प्रवाह सरित को पइट्ठिय।
जाँस गुरु पाद नाहि श्रवणिज्जै। तासु प्रवाहे पडिय परिखिज्जै।
पर न मानै तदार्थ जो अच्छै। लोक प्रवाहि पडिय सोउ गच्छै।
यदि गेयार्थ कोउ तेहिं कारै। सो तेहिं उड्डिय लगुडहिं मारै।
तिमि तिमि धर्म कहंति सयाना। जिमि ते मरि होहि सुरराना।
चिन्ता शोक करंता थाइय। जन तहँ कृत भवंति नष्टा हित।

धर्मोपदेश

विक्रम संवत्सर शत - वारह। होई प्रनष्टउ सुख - घरबारह।
इति संसारे स्वभावे शांतेहि। वर्त्तें सुम्मति सुक्खु वसंतेहि।

तहँ बात न पूछै धर्महँ। जिन गुरु मीलहि कार्यं दामहँ।
फल न पावै मानुष जन्मह। दूरे होंति त्याग शिव शर्मह।
मोह निद्र जनु सुत्तु न जागै। सो उट्ठिउ शिव मार्ग न लागै।
यदि शुभार्थ कोइ गुरु जगावै। तोउ तद्वचन तासु ना भावै।
परमार्थे ते सूतउ जागै। सुगुरु - वचने जे उठिया लागै।
राग द्वेष मोहउ जे गंजै। सिद्धि - पुरंध्रि ते निश्चय भुंजै।
बहुत लोग लुंचित शिर दीसै। पर राग द्वेषहि संग विलसै।
पढ़ै गुनै शास्त्रहि बखानै। पर परमार्थ - तीर्थ सो न जानै।
दुग्ध होइ गो-यकुलउ धवलउ। पर पीवंते अंतर बहलऊ।
एक शरीर सुक्खु सं - पातै। अवर पियउ पुनि मांसउ स्वादै।
ईश्वर-धर्म प्रमत्त जे आछहिं। पाप करिय ते कुगतिहिं गच्छहि।
धार्मिक धर्म करंत जे मर्पहि। ते सुख सकल मनोच्छित लभिहैं।
कार्य करै (जो) बुहारी बुद्धी। सोहै गेह करेइ समृद्धी।
यदि पुनि सोउ युग युग कीजै। ता का कार्य होय सा भीजै।
इति जिनदत्त-उपदेश जे सुनहीं। पढ़ै गुनै परिज्ञान जे करहीं।
ते निर्वाण रमणि-संग विलसहिं। बलेउ न संसारे संग मिलिसहिं।

हेमचन्द्र-सूरि

कुनारी

जसु अंगहिं घन नसा-जाल, जसु पिंगल-नयन-युग।
जसु दन्त प्रविरल - त्रिकटोन्नत।
न धरीजै दुख-करिणि मत्त-करिणि इव घरिणि दुर्नय।
गाँव पाटन हाट चौहट, रावल देवल पुर जो दीसै।
सुंदरागी विरहेन्द्रजालकेहिं, तेहिं सा एकउ कृत-बहुरूप-कलिता।

शृंगार रस

विप्रियकारक यदपि पिउ, तउ तेहिं आनहु आज।
आगिहिं डाहा यदपि घर, तउ तेहिं आगीं काज।
जिमि जिमि वंकिम लोचनहँ, बहु साँवारि सीखाय।
तिमि तिमि मन्मथ विजय शर, खर - पाथर तीखाय।

× × ×

तुच्छ मध्ये तुच्छ जल्पने।
तुच्छ अच्छ रोमावलिहें। तुच्छ राग तुच्छतर हासे।
प्रियवचन अलभंतियहँ, तुच्छकाय मन्मथ निवसहे।

अन्य जो तुच्छउ तेहिं धनिहिं, सो आपनउ न जाइ।
कटरि थनंतर मुर्धडहिं, जो मन-बीच न माइ।

पावस

राजै अरुण-कांति धरणीतले इन्द्रगोपका,
पावस-श्री न्याइँ पद यावक-विन्दु लग्गया।
ईहउ विज्जु-लेग्न कल-कंतिय वहुल-कंतिया,
लक्खीजे जातरूप-निर्मितव्य कंठिया।

शरद्

तरुणी किलकिंचितैं विसट्टे, शशि ज्योत्स्न-समुज्ज्वल-रातड़ी।
मल्ली फुल्लै परिमल सारैं, जो तो गय भागहु वातड़ी।
तव मुख-लावण्य-तरंगिणिएँ, झलकंतउ कांति करंबितश्रो।
सोहै निर्मल-वर्त्तुल-मंडल, जल माँझ न्याइँ शशि-बिम्बश्रो।

हेमन्त

मधु-रस घोंटिउ जेहिं यथेच्छइँ, ते अलि दिसत भ्रमन्त।
मालति-श्रोलहनउ करति, की साधिउ तैं हेमन्त।

वसंत वर्णन

की न फूलै पाटल पर-परिमल महमहे न माधवि अविरल।
नव-मल्लिक की न दलै पहर्पिया। की उच्छलै कुसुम भरे मल्लिय।
दीघी तलाव-सर - तालडिहिं। की न प्रसाधि पद्मिनि फूटइ।
तहु जाति! जात-गुण-संभरण ध्यान। की भ्रमरहु मणि खूटई।

नीति वाक्य

सागर ऊपर तन धरै, तले घालै रतनाइँ।
स्वामि सुभृत्यहँ परिहरै, सम्मानेइ खलाइँ।
गुणहिं न संपति कीर्ति पर, फल लिखिया भंजंति।
केसरि न लहै कौडियउ, गज लक्खहे घेप्पंति।
जीविउ कासु न वल्लभउ, धन पुनि कासु न इप्ट।
दोउहिं अवसर आपड़े, तृण-सम गनै विशिष्ट।
व्यास महाऋषि इमि भनै, यदि श्रुति-शास्त्र प्रमाण।
मातह चरण नमन्तहँ, दिने दिने गंग-नहान।
ब्रह्म! सो विरला कोउ नर, जो सर्वाङ्ग छइल्ल।
जो वंका सो वंचकर, जो ऋजुका सो बइल्ल।

गयउ सो केसरि पियहु जल, निश्चिन्ते हरिनाइँ।
जासु केर दहूहाडये, मुखइँ पडंति तृणाइँ।
शिर चढ़िया खावइँ फलहिं, पुनि डालिहिं मोडंति।
तऊ महाद्रुत शकुनहीं, अपराधी न करंति।

वीर रस

भल्ला हुआ जो मारिया, बहिनि! हमारा कन्त।
लज्जिज्जेहु वयस्ययहि, यदि भागा घर एन्त।
जहँ काटिज्जै शरहि शर, छिद्यै खङ्गहि खङ्ग।
तहँ तेही भटघट - निवहे, कंत प्रकाशै मग्ग।
कंत हमारो रे सखिय, निश्चै रूसै जासु।
अस्त्रहि - शस्त्रहि हाथियहि ठावहि फोड़ै तासु।
हम हैं थोड़े रिपु वहुत, कायर एम भनंति।
मूढ निहारै गगन तल, कवि जन जोन्ह करंति।
खङ्ग वेसाहिव जहँ लहउ, प्रिय! तहँ देशहिं जाहु।
रण - दुर्भिक्षे भागई, विनु युद्धेहिं बलाहु।

× × ×

करहत - स्तन - धर गलिय लोल मनोहर हारय।
गंडस्थले लुलित मइल - जटिल - कुंतल भारय।
अनवरत - वाहनि - वट - प्रसून शोण - विलोचन।
तव हुअ नरपति - तिलक संप्रति वैरि-वधू-जन।

हरिभद्र सूरि

वसंत

पाणि-सं-ठिय मंजु सिजंत भ्रमरावलि श्यामलिय, दले कुसुम, सहकार-मंजरि।
पसरंत हर्षिल सित - पुलक - भरें राजंत शिरवरे।
विरचिय कर - संपुट भने उद - जानिय आगंत।
जिमि प्रभु हर्षिय भुवन जन, संप्रति आउ वसंत।
जो एहि पसरेउ दयित - संग इव मलयानिल अंग - सुख प्राप्तविभव पुनि कुसुम-परिमल।
संचारिय तूर्य - रव रम्य फुरेउ कलकंपि - कलकल।

पद्मारुण कंकेलि - तरु - कुसुमा नयन - सुखाइँ।
तपनीय ज्वल कुसुंभ भर हुग्र कोरिंट वनाइँ।
यत्र माधवि लतिक तोमरिय-शेफालिक कुंतलिय जालकित लघु, सुरभि-लइयउ।
भुर्जद्रुम मंजरिय बहु गुल्म - पादप अशोकउ,
आलिंगिज्जै पूग फले तरू कामुक सर्वाङ्ग।
नागवल्लि तरुणिहिं जनहँ, उज्जीवियहि अनंग।
जिमि प्रवालांकुरेहिंकृत शोभ डिंभाइव तिलककृत गरुव - महिम कामिनि गुणाइव।

बहु लक्षण-चित्र शत - मनहरा नरपति - गृहा इव।
उत्तम जाति प्रसवकृत, महि मंडना बनाइँ।
विलसै भुवनानन्द कर, जनु नर नाथ कुलाइँ।
जाहि फुल्लिय सित - कुसुम कर्णिकार - वन - राजि कंचन - मृदउ करै पथिक-हृदयाहँ विभ्रम।

अभिकाङ्क्षै भुवनतले सकल-मिथुन निज-दयित-संगम।
गाइज्जै रासहि चर्चरिउ, पीइज्जै वर - मदिराव।
मानिज्जै तुंग - स्तनिउ, किज्जै जल क्रीडाव।

कृष्ण सौन्दर्य

नीलकुंतल कमल-नयनिल्ल, बिंबाधर सित-दशन कंबुग्रीव, पुर-अरर उरतल।
युग-दीरघ-भुज-युगल-वदन सीस जिमि कमल-उत्पल।
पद्मदलारुण कर - चरण तप्तकनक गोरंग।
आठ वर्ष वय प्रभु हयेउँ, समधिक - विजित - अनंग।

विवाहोत्सव

तव प्रभूतइ लग्न समये मिलितेहिं सुहृद्-साजनहितैपि, कुमर कुमरीह दोनउ।
प्रारब्ध विवाह-विधि तपनः खचर प्रभ दुहित अन्यउ।
निज निज जनकानुग्रहेउ, कृत - सादर - शृङ्गार।
लाग कुमारह पाणितले, फुरिय मलय पहूहार।
तो कुमार - कृत - विवाहे पसरंत महोत्सवे, नगर लोग सकलउ संहर्षेउ।
आशीषहँ शत - सहस देइ करै मंगलिय प्रकर्षउ।
अथ नरनाथैं विस्तरैं निज नगर ही अशेषे।
प्रारंभेउ वधावनउ, तेहिं विवाह विशेषे॥

वाजंत गाजंत वहु भेद-अरं । लभिजंत दीयंतकर्पूर पूरं ।
प्रा-नचंत नाचंत वेश्या - समूहं, द्रशिज्जंत हिंडंत वामन - समूहं ।
जांत आवंत तिट्ठंत वहु सज्जनं । लेत विवरंत सुप्रशान्त जनरंजनं ।
खात पीयन्त दीयन्त वहु भक्षणं । लोक उल्लसिय वहु भेद मनसुक्खयं ।
धावन्त क्रीडन्त वल्गंत कुब्जक-गणं । वांत उट्ठंत निपतंत वालकजनं ।

नारी विलाप

हरिन-नयनिय चम्पक-छाय शशि सौम्य वदनांवुरूह,
कुंदकलिय - सित - दंत - पंक्तिया ।
परिदेवेउ रव-भरिय धरणि - गगन - अंतरमय इव ॥
कूटैं शिर कर मुद्गरिहिं, पीडैं उरु पादाहँ ।
ताड़ै वक्षोरुह विकट निज निज कर शाखाहिं ॥
रोवैं गावैं ललैं मूर्छैं सीत्कारैं पुक्कारैं, सखिहि गहिउ उरहार तोड़हीं ।
उल्लूरै चिकुर - भर कनक - रतन - वलयालि मोड़हीं ।
सुमिर सुमिर निज प्रियहँ महा गुण-गण तहँ विलपंति ।
जिमि स-तिरस्कृत - तरु विहग, नितरुअ रोआपंति ॥

अज्ञात कवि (११६०)

कालहिं वोर जो वीनती, आज न जानै कक्ख ।
पुनरपि अटविहिं करिसु घर, नां सँग एह अनक्ख ॥
भूमि गुणेहीं यदि कहवि, तुंगिमा तुज्झ होउ ता होउ ।
तिमि तव फलाहँ ऋद्धी होही वीजानुसारेहीं ।

आमभट्ट

रे राखै लघु जीव वडउ रणे मदक गल मारै ।
न पिउ अनर्गल नीर हेरि राजहँ संहारै ।
अवर न वांधै कोइ स - घर रतनाकर वांधै,
परनारी परिहरै लक्ष्मि पर - राजहँ रुंधै ।
कुमरपाल कोपी चढ़ेउ फोडै सतकडाहि जिमि ।
जो निज धर्म न मानिहैं, तेहहिं चाढिसु ताम तिमि ।

× × ×

गर्जति गगन कवि आम भन, सुर-मणि फणि-मणि एक हुअ ।
मागहि हिम गहि मम गहि मगहि मुंच मुंछ जयसिंह तुव ।

विद्याधर

चन्दा कुन्दा काशा हारा हीरा त्रिलोचना कैलाशा ।
जेत्ता जेत्ता श्वेता, तेत्ता काशीश जीतिया तव कीर्ति ।
विमुख चलिय रणे अचल, परिहरिय हय-गज-बल ।
हलहलिय मलय नृपति, यासु यश त्रिभुवन पिवई ।
वनरसि - नरपति तुलिय सकल - उपरि यश फुरिया ।

× × ×

जेहिं कीजिय धारा जित्तु नेपाला, भोट्टंता पिट्टंत चले ।
भंजावेउ चीना दर्पहि हीना, लोहावले 'हा' क्रंदि पड़े ॥
ओड्डा उड्डापेउ कीर्ती पायेउ, मोड़िय मालव - राज बले ।
तेलंगा भागेउ पुनहुँ न लागेउ काशी-राजा जबहिं चले ।
भट्ट पत्ति-पाद भूमि कंपिया, टाप खूंदि खेह सूर झंपिया ।
गौड-राज जित्तु मान मोड़िया, कामरूप-राज बंदि छोड़िया ।

शालिभद्र सूरि

पेखेउ पुरहँ प्रवेश, दूत बहूतउ राजघरे ।
स्वयं प्रतिहार प्रवेश, पाइय नरवर पद नमें ।
चउकी माणिक थंभ माँझ बईठउ बाहु बल ।
रूपे जैसी रम्भ चमरधारि चालें चमर ।
मंडित मणिमय दण्ड, मेघाडम्बर पशर धरिय ।
जसु प्रकटे भुजदण्ड, जयवंती जयश्री वसिय ।
जिमि उदयाचल सूर, तिमि शिर सोहै मणि-मुकुट ।
कस्तुरि - कुसुम कपूर कच्चूमर महमह - महइ ।
झलकै कुंडल कान, रवि शशि मंडित जनु अवर ।
गंगा - जल गजदान, ग्रंथित गुण - गज गुडगुडै ।
उरवरे मोती हार, वीर वलय वरे झलझलै ।
नवल अंग शृङ्गार, खलकतो टोडर वामए ।
पहिरन चादर चीर, कंकोलह करि भाल करे ।
गुरुओ गुण - गम्भीर, दीसेउ अपर कि चक्रधर ।

× × ×

रवि उद्गमे पूरब दिशहिं पहिलेइ चालिय चक्र।
धूनिय धरतल थरथरै, चलिय कुलाचल - चक्र ॥
पीछे प्रयाणा तब दियो, भुजबलि भरत नरेन्द्र।
पिडि पंचानन परदलहँ, धर - दल अपर सुरेन्द्र ॥
वाजिय समभेरि संचरिय, सेनापति सामन्त।
मिलिय महाधर मंडलिय, ग्रन्थित गुण गर्जन्त।

× × ×

एक उतारा करिय तुरग हयसारे बाधै।
एक रगड़ घोड़ा हँ खान एक चारा रांधै।
एक पकड़ नदनीर तीर सो स्त्रिय बोलावै।
एक बार असवार सार साधन वेलावै।
एक आकुलिया तापे तरल तड़ि चढ़िय झँपावै।
एक गूदर सावान सुभट चौरा देवरावै।

सोमप्रभ

विरह वर्णन

पिय ! हउँ रहिया सकल दिन, तब विरहाग्नि किलान्त।
थोड़इ जले जिमि माछुरी, तल्लोविल्ल करंत।
मै जानेउँ पिय विरहियह, कोइ धरा होइ विकाल।
नतरु मयंकउ तिमि तपै, तिमि दिनकर त्तय काल।

नरक भय

तहँ नरकवास जो परवशेहिं। मैं नरकपाल - मुदगर - हतेहिं।
लिपटिया वज्रकंटक सँनाह। सेमलतरु जनित शरीर वाध ॥
क्रंदन्त करुण जो हठेहि धरवि। खाइय निज मास भक्ता करावि।
जो वेदन - विफुरिय सर्व गात्र। हौ पादेउँ तड़पेउँ ताम्र तप्त ॥
जो पूत रुधिरवश वाहिनीइ। मज्जावेउ वैतरणी नदीइ।
जो तप्त पुलिने चलताहु भोग। जो शूलवेध दुख पाव दुर्ग ॥

इन्द्रिय शत्रु

नागम्य अगम्यउ किछुउ गने। अब्रह्म कलुष अभिलाप करे।
सकलत्रहु होतेउ चहै वेश। पररमणि-गमन प्रकटेउ किलेश।
शिशिरेहिं नि-वात घरेऽग्नि सिगडि। घन-धुसृण-तेल बहु वस्त्र सँपड़ि।

चंदन - रस - कुसुम जलावगाह । धरागृहे ग्रीष्मे चहै न्हाय ।
पावस पदपंक प्रसंग स्तब्ध । वांछै अच्छिद्र भवनतल लब्ध ।

वसंत

पुनि आव कदाचि - वसंत समय । संजनिय सकल चित्त प्रमद ।
उल्लासिय वृत्त - प्रवाल - जाल । प्रसरंत चारु चर्चरिव माल ।।
जहँ वनलता प्रकटिय कुसुम-वर्ष । मधुकान्त समागत - जनित हर्ष ।
पवमान चलिय नव पल्लवेहिं । नाचंति न्याइँ कोमल करेहिं ।।
नव पल्लव रक्त अशोक विटप । मधु लक्ष्मिहिं संगे परिणयइँ-करव ।
जहँ राजै नारि कुसुंभ - रक्त । वस्त्रेहिं आच्छादिय सकल-गात्र ।।
हसई इव फुल्ल मल्लीगणेहिं । नचाइव पवन - कंपरि - वनेहिं ।
गावै भ्रमरावलि - रवहिं न्याइँ । जो स्वयमपि मदनोन्मत्त भाइ ।।

नीति वाक्य

वसइ कमल कलहंसी, जीव दया जसु चित्त ।
तसु प्रक्षालन जलहीं, होइह अशिव निवृत्ति ।।
आभरण-किरण दीप्यंत देह । अधरीकृत सुरवधु - रूपरेख ।
घन कुंकुम-कर्दम घर-दुवार । लिपटन्त चरण नाचंति नारि ।।
तीयहँ तीन पियारई, कलि काजल सिन्दूर ।
अन्यउ तीन पियारई, दूध जमाई तूर्य ।।
वेशविशिष्ट-हिं वारियत, यदपि मनोहर गात्र ।
गंगा जल प्रक्षालियउ, सुनह कि होइ पवित्र ।।
नयने रावै मन हँसे, जनु जाने सव तत्व ।
वेश विशिष्टहँ सो करै, जो काटहँ करपत्र ।।
रावण जायेउँ जसु दिनहिं, दशमुख एक शरीर ।
चिंतविया तहिया जननि, कौन पियाअउँ क्षीर ।।

जिनपद्म सूरि

झिर झिर झिर झिर झिर झिर ए मेघा बरसंति ।
खल खल खल खल खल खल ए वादला वहंति ।
झब झब झब झब झब झब ए बीजुली झबक्कै ।
थर थर थर थर थर थर ए विरहिनि मन कंपै ।
मधुर गभीर स्वरे मेघ जिमि जिमि गाजंते ।
पंच बाण निज कुसुम बाण तिमि तिमि साजंते ।

जिमि जिमि केतकि महृ महंत परिमल विहसावै।
तिमि तिमि कामिय चरण लागि निज रमणि मनावै।
शीतल कोमल सुरभि वायु, जिम जिमि वायंते।
मान-मडफ्फर माननिय तिमि तिमि नाचंते।
जिमि जिमि जलधर भरिय, मेघ गगनांगने मिलिया।
तिमि तिमि कामीकेर नयन नीरहिं झलझलिया।
भास—मेघारव भर उलसिय, जिमि जिमि नाचै मोर।
तिमि तिमि माननि खलवलै, साहीता जिमि चोर।

शृंगार

अति शृङ्गार करेइ वेष मोटै मन ऊलटि।
रचित रंग बहुरंग चंग चंदन रस ऊवटि।
चंपक केतकि जाति कुसुम शिर खोंप भरेई।
अति आछत सुकुमार चीर पहिरन पहिरेई।
लहलह लहलह लहलहए उर मोतिय हारो।
रणरण रणरण रणरणइ पग नूपुर सारो।
जगमग जगमग जगमगै कानहि वर-कुण्डल।
झलमल झलमल झलमलै आभरणहँ मण्डल।
मदन खड्ग जिमि लउलहंत जसु वेणी-दण्डो।
सरलउ तरलउ श्यामलउ रोमावलि दण्डो।
तुंग पयोधर उल्लसै शृङ्गार स्तवक्का।
कुसुम वाण निज अमृत कुम्भ. जनु थापन रक्खा।

हावभाव

नयन कटाक्षहँ आ हनई वाको जोयंती।
हाव भाव शृङ्गार-भंगि नव-नविय करंती।
तवउ न बींधे मुनि-प्रवरो तव बोलावै।
"तपन तुल्य देह नाथ! मम तनु संतापै।
वारह वर्षहँ केर नेह केहिं कारण छड्डिउ।
एवड निठुरपनइ का मोसे तुम मण्डिउ।"
थूलि भद्र प्र-भनेइ "वेश! इह खेद न कीजै।
लोहेहिं गठियउ हृदय मोर, तुव वचन न विंधे।"
"मम विलपंतिय उपर नाथ! अनुराग धरीजै।
ऐसो पावस-काल सकल मो सो मानीजै।"

मुनिपति जल्पै "वेश, सिद्धि-रमणी परिणेवा।
मन लीनउ संयम श्री सो भोग रमेवा।

विनय चन्द्र सूरि

भादों

भादों भरिया सर पेखेइ। सकरुण रोवै राजल-देइ।
"हा एकलड़ी मैं निराधार। का उवेखिउ करुणासार।"
भनै सखी राजल मन रोइ। नीठुर नेमि न आपन होइ।
सिंचिय तरुवर परि प्लवंति। गिरिवर पुनि करडेरा होंति।
सींचउ सखि! वारि गिरि भिंचति। काइ न भिंज्यै श्यामल कांति।
घन वर्षन्ते सर फूटंति। सागर पुनि घन ओत्र हुलंति।

कातिक

कातिक क्षितिग उगै सॉझ। छीजेउ होइ अति झाझ।
राति-दिवस आछै विलपंत, "वलि-वलि दयाँ करु दयाँ करु कंत।"
नेमि केर सखि मुँचउ आश। कायर भागेउ सों घर वास।
एहुँ ऐसहि सनेहल नारि। जाइ कोइ छाडिय गिरिनार।
कायर का सखि! नेमि जिनेन्द्र। जिन रणों जीतेउ लाख नरेन्द्र।
फुरै श्वास जौ आगल नास। तौ लो न छोड़उँ नेमिहिं आश।

पूस

"पूस रोष सव छाड़हु नाह। राखु राखु मोहिं पद-नह-पाँह।
पड़ै शीत ना रजनि विहाइ। लहिय छिद्र सव दुःख अमाइ।"
"नेमि नेमि तू करती मुग्धे। यौवन जाइ न जानसि शुद्ध।
पुरुष - रतन भरियउ संसार। परनहुँ अन्य कोई भर्तार।"
"भोली तैं सखि! खरी गॅवारि। वर अच्छंते नेमि कुमार।
अन्य पुरुष कोइ आपन नहई। गज-वर लहे को रासभ चढ़ई।"

माघ

माघ मास मातै हिम राशि। देवि भनै "मोहिं प्रिय लेउँ पास।
तव विनु स्वामिय! दहै तुषार। नव नव मारहिं मारै मार।"
"एहुँ सखि रोवसि जिमि आरण्ये। हाथ कि जोये धरियौ कर्णे।
तौ न पतीजसि हम्मर, माइ। सिद्धि रमणि रातो नेमि जाइ।"
कंत वसंतै हियरा मांहि। वात पहीजौ किमिहि लसाइ।
सिद्धि जाइ तोहि कोई भीय। ओहि संग जाऊ उगसे न धीय।"

फागुन

फागुन पवना पर्ण पड़ंति। राजल दुःख कि तरु रोवंति।
"गर्भ गलिय हौं काह न मूय"। भनै विहव्वल धारणि धूय।
अजउ भनेउ कर सखी विमर्षि। अछै भलो वर नेमिह-पास।
"पुनि सखि! मोदक यदि ना होंति। छुधितें सो हारी किन रुच्चंति।"
"मनह पास यदि जल्दी होइ। नेमिहिं पास तेतनउ ना कोइ।
यदि सखि! वरौं त श्यामल-धीर। घन विनु पियै कि चातक नीर।"

वैशाख

वैशाखह विहसिय वनराजि। मदनमित्र मलयानिल वाइ।
फुट्टिय हियरा माँझ वसंत। विलपै राजल पेखिय कंत।
सखी दुःख बीसरिवा भनई। सुनु सुनु भ्रमरउ का रुनझुनई।
"दिवस पंच थिर यौवन होइ। खाहु पियहु विलसहु सब कोइ।"
रमण प्रशंसिय राजल-कन्य। "जाहि कंत वशे तें पर धन्य।
जसु पिय न करै किछुउ पुछारी। सों हौं एकइ फूट-लिलारी।"

लक्खण

काव्य महिमा

सो सुनिय भनेउ साहुल-सुतेहिं। जिन-चारणार्चन-प्रसरिय-भुजेहिं।
"हे लंबकंचु-कुल-कमल-सूर। कुल मानव चित्ताशा-प्रपूर।
घत्ता—तुहुँ कवि-मन-रंजन, पाप-विभंजन, गुण-गण-मणि-रतनाकरऊ।
उच्छेदि कुवर्त्तन-सुनयउ मार्जउ, निखिल-कलामल-नागरऊ।
तुहुँ धन्य जासु ऐसहू चित्त। त्रिपदार्थ रसोज्ज्वल मति-पवित्र।
शयनासना स्तंबेरम तुरंग। ध्वज छत्र चमर वालावरंग।
धन-कण-कंचन-धन द्रविण-कोश। झंपान-यान-भूषण संतोष।
घर पुर नगरागर देश ग्राम। पट्टोल-अम्बर-पट्टन समान।
संसारसार पद-वस्तु भाव। जो जो दीसै नाना स्वभाव।
सो सो सुखेहिं पाइयै सर्व। लभियै न काव्य-माणिक्य भव्य।

× × ×

इहँ यमुना नदि उत्तर तटस्थ। महनगरि रायभा (है) प्रशस्त।
धन-कण-कंचन-वन-सरि-समृद्ध। दानोन्नत कर-जन ऋद्धि-वृद्ध।

किर्मीर कर्म निर्मिय रमरय। स'ऽट्टल स-त्तोरण विविधवर्ण।
पांडुर प्राकार- उन्नति समेत। जहँ रहँ निरंतर श्रीनिकेत।
चौहट्ट चर्चर - ेद्दाम यत्र। मॉगन - गण-कोलाहल-समर्थ।
जहँ विपणि विपणि घन क्रूप्यभाड। जहँ कसियैं नित्य पिषंग-खंड।
निश्चित यान सम्मान सोह। जहँ वसैं महाजन शुद्ध-बोध।
व्यवहार चारु श्री शुद्धलोक। विहरैं प्रसन्न चौवर्ण लोक।

मंत्री की प्रशंसा

अहमल्लराय महामंत्रि शुद्ध। जिन - शासन-परिणय-गुण प्रवद्ध।
कान्हड-कुल - कैरव - श्वेतभानु। प्रभुहूँ समाज सर्व्वहिं प्रधान।
गंजोल्लिय मन लक्षण वहूव। स्वीकारिउ काव्य - करणा नुरूप।
निज-घरे आयउ वन गंध-हस्ति। मदमत्त फुरिय मुखरुह-गभस्ति।
वश हुयउ स्व स्वर दशदिशि-भरंत। मन कोन प्रतीच्छै तह तुरंत।
सुप्रसन्न राव घरई तवेइ। भनु कौंन दुवार - किवाड़ देइ।
जानीय वचन लिन चातुरंग। धन-कन - कंचन - सम्पूर्ण चंग।
घर समुँह आइ पेखेवि सवार। भनु कौन वप्प झंपइ दुवार।

मंत्रि पत्नी की प्रशंसा

प्रियातासु सुल्लक्षणा लक्षणाढ्या। गुरूणां पदे भक्ति-करणे विदग्धा।
स्वभर्त्तार पादारविन्दानुगामी। घरारंभ व्यापार सम्पूर्ण कामी।
शुभाचार चारित्र चीरांकयुक्ता। सुचेतन्न गंधोदकेही पवित्रा।
स्वप्रसाद-कासार-सारा मराली। कृपादान-संतोषिया वंदिताली।
प्रसन्ना सुवाचा अचंचल्ल-चित्ता। रमा राम रम्या मदेवाल-नेत्रा।
खलों-को मुखाम्भोज संपूर्ण ज्योत्सना। पुराग्रोमहासाहु सोढ़ाको सुन्हा।
दया - वल्लरी - मेघ - मुक्तांबुधारा। सतीत्वत्तने शुद्ध - सीत - प्रकारा।
यथा चन्द्रचूड़ानुगामी भवानी। यथा सर्व वेदेहिं सर्वाङ्ग वाणी।
यथा गोत्र निर्दारिणहरंभा रामा। रमा दानवारी कि संपूर्ण कामा।
यथा रोहिणी ओषधीशाह संगो। महाढ्या सँपूर्णाहु साराहु रानी।
यथा सूरि की मुक्ति वेदो मनीषा। कृशानार्क स्वाहा यथा रूप मीसा।

जज्जल

ढोला मारिय दिल्लि महँ मूर्छिय म्लेच्छ शरीर।
पुर जज्जल्ला मंत्रिवर चलिय वीर हम्मीर।

चलिय वीर हम्मीर पाद - भर मेदनि कंपै,
दिग - मग - नभ अंधार धूलि सूरज - रथ झंपै।
दिग - मग - नभ अंधार आनि खुरसान के ओल्ला।
दर मरि दमसि विपच्छ मार दिल्ली महँ ढोल्ला।

× × ×

घर लागै आग जलै धह-धह।
करि दिग-मग नभ-पथ अनल-भरे।
सब दीस पसरि पाइक्क चलै।
घनि थन-भर - जघन दियेउ करे।
भय लुक्किय थाकिय वैरि तरुणि—
जन भैरव - भेरिय शब्द पड़ै।
महि लोटै - पोटै रिपु - शिर टुट्टै।
जखन वीर हम्मीर चलै।

× × ×

खुर-खुर खुदि-खुदि महि घघर रव करे।
न न न नगिदि करि तुरग चले।
ट ट ट गिदि परे टाप धँसै धरणि वपु।
चकमक करि बहु दिशि चमरे।
चलु दमकि दमकि बल चलै पइक बल।
घुलुकि घुलुकि करि करि चलिया।
वर मनुष दल कमल विपख हृदय सल,
हमिर वीर जब रण चलिया।

× × ×

यथा भूत - वेताल नाचंत गावंत खाएँ कवंधा।
शिवाकार फेक्कार हक्का रवंता फोड़ैं कर्ण-रंध्रा।
कॉया टुट फोड़इ मत्था कवंधा नचंता हसंता,
तथा वीर हम्मीर संग्राम-मध्ये तुरंता जुझंता।

अज्ञात कवि

जेहि वेद धरिज्जै महितल लिज्जै पीठहिं दंतहिं ठावं धरा।
रिपु-वच्छ विदारे छल-तनु धारे, वंधिय शत्रु स्वराज्य हरा।

कुल-क्षत्रिय तापे दशमुख कप्पे, कंशय केशि विनाश करा।
करुणा प्रकटे म्लेच्छहँ विदले, सो देउ नरायण तुम्ह वरा।

राम

वापह उक्ति शिरे जिनि लिज्जिउ। त्यागिय राज्य वनंत चलेविउ।
सोदर सुन्दरि संगहि लग्गिय। मार विराध कवंध तथा हन।
मारुति मेल्लिय वालि विघट्टिय, राज सुग्रीवहिं दिज्ज अकंटक।
वंध समुद्र विनाशिय रावण, सो तोहुँ राघव दिज्जिउ निर्भय।

कृष्ण

अरे रे वालहि कान्ह नाव, छोटि डगमग कुगति न देहि।
तैं एहि नदिहि संतार देइ, जो चाहि सो लेहि॥

जिन कंस विनाशिय कीर्ति प्रकाशिय, मुष्टि अरिष्ट विनाश करे, गिरि हाथ धरे।
यमलार्जुन भंजिय पदभर गंजिय, कालिय-कुल-संहार करे, यश भुवन भरे।
चाणूर विखंडिय निज-कुलमंडिय, राधामुख मधु-पान करे, जिमि भ्रमरवरे।
सो तुम्ह नारायण, विप्र-परायण, चित्ते चिंतित देहु वरे, भय-भीति-हरे।
भुवन - अनंदा त्रिभुवन कंदा। भ्रमर - सर्वणा स जयतु कृष्णा।

परिणत - शशिधर - वदनं, विमल-कमल-दल - नयनं।
विहित - असुरकुल - दलनं, प्रणमहु श्री मधुमथनं।

शंकर

जेहि अर्धंगे पार्वती, शीशे गंगा जासु।
जो लोकन कर वल्लभ, वंदे पादहँ तासु।

जसु सीसहि गंगा गौरि अधंगा, ग्रिव पहिरिय फणि हारा।
कंठे ठिय वीषा पहिरन दीशा, संतारिय संसारा।
किरणावलि कन्दा वंदिय चन्दा, नयनहिं अनल फुरंता।
सो सम्पति दिज्जउ वहु - सुख किज्जउ, तुम्ह भवानी कंता।
रण-दच्छ दच्छ हनुं, जित्तु कुसुम धनु अंध क-अंध विनाश करो।
सो रच्छउ शंकर असुर - भयंकर, गिरि नागरि अर्धाङ्ग धरो।
जो वंदिय शिर गंग हनिय अनंग, अर्धंगहि परिकर धरणू।
सो योगि-जन - मित्र हरहु दुरित्त, शंकाहर शंकर - चरणू।

× × ×

जयति जयति हर वलयित-विषधर, तिलकित सुन्दर चंद्रं मुनि-आनंदं जनकंदं।
वृषभ-गमन कर त्रिशुल-डमरु-धर, नयनहिं डाहु अनंगं शिर गंगं गौरि अधंगं।

जयति-जयति हरि भुज युग धरु गिरि, दशमुख-कंस-विनाशा-प्रियवासा सुन्दर-हासा ।
बलि छलु महि धरु असुर - विलय करु, मुनि-जन-मानस-हंसा प्रिय भापा उत्तम वंशा ।

× × ×

सेर एक यदि पावउ धृत्ता, मण्डा बीस पकावउँ नित्ता ।
टंक एक यदि सेंधा पाया, जो हौं रंकउ सो हौं राजा ।
राजा लुब्ध समाज खल, वधु कलहारिनि सेवक धूर्त्तउ ।
जीवन चाहसि सुक्ख यदि, परिहर घर यदि बहु-गुण-युक्तउ ।
पांडव - वंशहि जन्म धरीजे, सम्पति अर्जिय धर्म को दीजै ।
सोउ युधिष्ठर संकट पावा, देवके लिक्खल कौन मिटावा ।
सो जन जनमेंउ सो गुणवंतउ । जो कर पर - उपकार हसंतउ ।
जो पुनि पर-उपकार विरुद्धउ । ताकि जननि किनु थाकेउ बाँझउ ।

हरि ब्रह्म

यथा शरद-शशि - विम्ब यथा हर - हार-हँस ठिय ।
यथा फुल्ल-सित-कमल, यथा श्रीखण्ड-खण्ड किय ।
यथा गंग - कल्लोल, यथा रोपाणित रूपै ।
यथा दुग्धवर - शुद्ध - फेन फंफाइ तलप्पै ।
प्रियपाद प्रसादे दृष्टि पुनि, निभृत हसै जिमि तरुणि जन ।
वर मंत्रि चन्डेश्वर कीर्ति तव, तत्र पेखु हरिब्रह्म भन ।

अंबदेव सूरि

समर सिंह की प्रशंसा

जिन दिनं दिन दद्धाउ, समर सिंह जिनधर्म-वणि ।
तसु गुण करउँ उजोअ, जिमि अंधारैं फटिकमणि ।
सरणी अमियतनीय, जिन वहाइ मरु मण्डलहिं ।
किउ कृत युग अवतार, कलियुग जीतेउ बाहुबल ।
ओसवाल कुल - चन्द्र, उदयेउ एउ समान नहिं ।
कलियुग कालइ पाश, छेदीयऊ सचराचरहिं ।

रतनकुक्षि कुल निर्मलीय भोली पुतु जाया।
सहजउ साधन समरसीह वहु पुण्यहिं आया।
लहु अलगइ सुविचार चतुर सुविवेक सुजाना।
रतन-परीक्षा रंजवई राजा अरु राना।
तौ देसल निज कुलप्रदीप एहु पुत्र सधन्या।
रूपवन्त अरु शीलवन्त परिनाविय कन्या।
गोसल-सुत आवास कियउ अनहिल पुर नगरे।
पुण्य लहै जिमि रतन माझ नर समुदह लहरे।

तीर्थ यात्री सेना

आगे मुनिवर संघ श्रावक-जना। तिल न खिड़ै तिमि मिलिय लोग घना।
मादल-वंश-वीणा धुनि वाजई। गहिर भेरीरव अंबरे गाजई।
नवक पाटन नवउ रंग अवतारेउ। सुखेहिं देवालय शंखारी संचारेऊ।
घरे वइसवि करि कोइ समाहिया। समर-गुण-रंजित विरलउ राहिया।
जयतु कान्ह दुइ संघपति चालिया। हरिपालो लंढुको महाधर दृढ़ ठिया।

अज्ञात कवि (१३०० ई०)

कहाँ वास कुवलय-नयन, शालिभद्र सुकुमार।
भद्रा प्र-भनै देव तुहु, कहँ रहु एत्तिय वार।
खरउ कुड्डु ता पुत्र कहँ, का देशन किउ वीर।
कौन अर्थ वर-वाणिइउ, कंचन गौर शरीर।
खार समुद्रहँ आगलउ, मा इर कढेउ संसार।
संयम-प्रवहण-हीन तसु, किये न लब्भै पार।
गमय-मत्त वीर्य प्रवर, जे जग पुरुष प्रधान।
शालिभद्र भद्रा भनै, संयम सोहै तान।
घनकुंकुम चन्दन रसेहिं, तव तन वासेउ वत्स।
व्रतहँ परीसह किमि सहिसि, मुनि गंगाजल स्वच्छ।
नववय छीजै तरुणपन, शालिभद्र सुकुमार।
मम कुल-मण्डन कुल-तिलक, कुलप्रदीप कुलपाल।

× × ×

कीर्ति सा सलहिज्जै जा सुनीय आपनेहि कानेहिं।
पाछे मुए प'सुंदरि! सा कीर्ती होहु न होहु।
यश-सहित जो नर हुआ रवि पहिला ऊगंत।
युग्गों जाते दीहड़े गिरि-पत्थरा ढुलंति।

राजशेखर सूरि

श्यामल कोमल केशपाश जनु मोरकलाप।
अर्धचन्द्रसम भाल मदनपोसै भउवाहँ।
वाकंडिया लिय भोंहडियहँ भर भुवन भ्रमाडइ।
लारी लोचन लह कुडले सुस्वर्गह पातै।
जनु शशिविम्व कपोल कर्ण हिंडोल फुरन्ता।
नासावंशा गरुड़-चंचु, दाडिमफल दन्ता।
अधर प्रवालहँ रेख, कण्ठ राजल सर रुडऊ।
जनु-वीणा रणरणै, जान कोइलटहकलऊ।
सरल तरल भुजवल्लरीय, थन-पीन-तुंग।
उदर-देशे लंका सोहै त्रिवली तरङ्ग।
कोमल विमल नितंव ब्रिम्ब जनु गंगापुलिना।
करि-कर उरुयुग हरिन-जंघ पल्लव कर-चरणा।
मलपति चालति वेलीइव हंसला हरावै।
सन्ध्याराग अकाल वाल नखकिरण करावै।
सहजैं सुन्दर-राजमति, सुलखन सुकुमारा।
घनउ घनेरउ गहगहे, नवयौवन वाला।
भंत्रलभोली नेमि जिन वीवाह सुनेइ।
नेह गहिल्ली गोरडी हियरेई विहसेइ।
श्रावण शुक्ल छट्ठ दिन, वीई सवउँ जिनेन्द्र।
चल्लै राजल परिणयन, कामिनि नयनानन्द।

× × ×

किमि किमि राजलदेवि केर श्रृङ्गार भनेवउ।
चम्पकगोरी अतीवौत अंग चन्दन लेपेवउ।
खोंप भरावेउ जाति-कुसुम कस्तूरी सारी।
सीमन्तें सिन्दूर-रेख मोतीसर सारी।
नवरंग कुंकुम तिलक किय रतन तिलक तसु भाले।
मोती कुण्डल कर्णे ठिय विम्बालिय कर जाले।
नरतिय कज्जल-रेख नयने मुख कमल तँबूलो।
नागोदर कण्ठलउ कंठ अनुहार विरोलो।
मरगत-जादर कंचुकहउ फुर फूलहँ माला।
करहीं कंकण-मणिवलय चूड़ खड़कावै वाला।

रुनझुन - रुनझुन - रुनझुनै कटि घाघरियाली ।
रिमझिम - रिमझिम - रिमझिमै पद नूपुर युगली ।
नखे अलक्तक बलबलउ श्वेतांशु - विमिश्रित ।
अंखड़ियाली राजमति प्रिय जोवै मन रसि ।

चन्दबरदाई

साटक

आदि देव प्रनम्य नम्य गुरयं, वानीय वन्दे पयं ॥
मिष्टं धारन धारयं वसुमती, लच्छीस चरनाश्रयं ॥
तंगु तिष्टति ईश दुष्ट दहनं, सुरनाथ सिद्धिश्रयं ॥
थिर चर जंगम जीव चन्द नमयं, सर्वेस वर्दामयं ॥

अरिल्ल

तर्क वितर्क उतर्क सुजत्तिय । राज सभा सुभ भासन भत्तिय ।
कवि आदर सादर बुध चाहौ । पढ़ि करि गुन रासौ निर्वाहौ ।
धर्म्म अधर्म्म न बुद्धि विचारौ । नयन नारि निय नेह निहारौ ।
कोल कला कल केलि प्रकासौं । अरथ करौं गुन रासौं भासौं ।
पारासर जो पुत्त विहासह । सतवन्ती भ्रम्मं गुर भासह ।
प्रव्व अठरि सवा लप लष्षै । तौ भारथ गुर तत्त विसष्षै ।

साटक

मुक्ताहार विहार सार सुबुधा, अब्धा बुधा गोपिनी ।
सेत चीर सरीर नीर गहिरा, गौरी गिरा जोगिनी ।
वीना पानि सुबानि जानि दधिजा, हँसा रसा आसिनी ।
लंबोजा चिहुरार भार जघना, विघ्ना घना नासिनी ।
छत्रंजा मद गंध राग रुत्रयं, अलि भूव आच्छादिता ।
गुंजाहार अथार सार गुनजा, झंझा पया भासिता ।
अग्रेजा श्रुति कुण्डलं करि, करस्तुछीरं उच्छारयं ।
सोयं पातु गनेस सेस सफलं, पृथ्राज काव्यं कृतं ।

कवित्त

नयन सुकज्जल रेष, तष्षि तिष्षिन छवि कारिय ।
श्रवनन सहज कटाच्छ, चित्त कर्षन नर नारिय ।

भुज मृनाल कर कमल, उरज अम्वुज कल्लिय कल।
जंघ रंभ कटि सिंघ, गमन द्रुति हंस करी छुल।
देव अरु जष्षि नागिन नरिय, गरहि गर्व दिष्षत नयन।
इंछिनी इष्षि लज्जा सहज, कितक सक्ति कव्विय वयन।
दर्पन दल नष जोति, सुरग महदी रुचि रुरिय।
एडी इंगुर रंग—, उपम ओपियै सु संचिय।
सो तिन सकल सुहाग, भाग जावक तल वंधिय।
विकसित अंग अंग अंग, चारु मुसकनि वै संधिय।
दिष्षंत नैन दंपति कजहि, हर्ष सोम वर्षंत अकल।
जेहरि नूपुर नद्द, सद्द घूघर कोतूहल।
विछिय निसाल, सद्द भिंगुर कल कूहल।
अगुठनि जटित अनोट। पोंट कुंदन नग मंडित।
निरषद द्रप्पन नैन। वदन वीरी रद पंडित।
हाव अरु भाव संभ्रम विभ्रम। वड पुन्य करि प्रभु पिथ्य लहि।
इंछनिय इच्छ अच्छर अवनि। सुनिय सोम ससि कव्वि कहि।
जरकस घुघर घमण्ड। जांनु रवि छिन्न कदलि ग्रह।
कसंभु लरे नीसार। रंग छवि छंडि हंड हर।
पीत कंचकी संचि। पंडि कस अंग उपट्टिय।
आलोल नैन गति बचन बहु। सषिन सोम मण्डिय तनह।
फुल्ली सुसाँझ कवि चन्द कहि। मनहु बीजु घरकी घनह।

नाराच

चली अली धनं वनं। सुमंत सथ्थ संघनं।
विहंग भंगयो पुरं। चलंत सोभ नोपुरं।
अलीन जुथ्थ आवरं। मनो विहंग सावरं।
जुवंत पत्त रत्त जा। उवंत जानि अंबजा।
कलिन्द सीस केसयं। अनंग अंग लोभयं।
उठंत कुम्भ कुच्चयं। उपंव कव्वि सुच्चयं।
मनो जरंत वालकी। धरी सु-आनि लालकी।
मनोज कूप नाभिका। चलंत लोभ आलिका।
सुरंग सोभ पिंडुरी। परादि काम पिंडुरी।
नितंब तुंग सोभए। अनंग अंग लोभए।
मनौ कि रथ्थ रंभ के। सुरंभ चक्क संभ के।
नषादि आदि अच्छनं। मनो कि इन्द्र द्रप्पनं।

ढरंत रत्त एडियं। उपम्म कब्वि टेरियं।
मनौ कि रत्त रत्तजा। चिकंत पत्र अम्बुजा।

चंद्रायना

गहत बाल पिय पानि। सुन्गुर जन संभरे।
लोचन मोचि सुरंग। सु, अंसु वहे परे।
अपमंगल जिय जानि। सु नेन मुप वही।
मनो पंजन मुप मुत्ति। भरक्कत नंपही।
दुहु कपोल कल भेद। सुरंग ढरक्कही।
सज्जन बाल विसाल। सु उरज परक्कही।
सो ओपम कवि चन्द। चित्त में वस रही।
मनु कनक कसौटी मंटि। म्रग्ग मद कस रही।

कवित्त

कुमुद उबरि मूंदिय। सुवंधि सतपत्र प्रकारय।
चक्किय चक्क विच्छुरहि। चक्कि शशि वृत्त निहारय।
जुवती जन चढ़ि काम। जांहि कोतर तर पंपी।
अवृत वृत्त सुंदरिय। काम वढ्ढिय वर अंषी।
नव नित्त हंस हंसहि मिलै। विमल चंद उग्यौ सुनम।
सामंत सूरन्नप रष्षि कै। करहि वीर वीश्राम सम।

× × ×

सरस काव्य रचना रचौं। खल जन सुनिन हसंत।
जैसे सिंधुर देखि मग। स्वान सुभाव भुसंत।
तौ पनि सुजन निमित्त गुन। रचिये तन मन फूल।
जू का भय जिय जानि कै। क्यों डारिए दुकूल।
पूरन सकल विलास रस। सरस पुत्र फल दान।
अंत होइ सहगामिनी। नेह नारि को मान।
समदरसी ते निकट है। भुगति भुगति भरपूर।
विषम दरस वा नरन तें। सदा सरवदा दूरि।

काव्यं

वंभे कंड कमंडले कलिमले कांतिहरः कः कविः।
तं तुष्टां त्रैलोक्य तुंग गहनी तुं गीयसे सांमवी॥
अधं विष्णु अगामिनि अविञले अस्टए ज्वालाहवी।
जंजाले जग मार पार करनी दरसाइ सा जाह्नवी॥

त्रोटक

त्रिप थिक्कति गंगजि अंग सिता।
मुनि मंजन नीर जि अंग हिता॥
तट मंडज जा भमरे भमरं।
भव संगति जे अमरे अमरं॥
गुन ग्रंभ्रव ग्रंभ्रव नीति सुनी।
दिवि भूमि पयालह दिव्व धुनी॥
तल ताल तमालह साल वटी।
विचि अंब गंभीर जंभीर वटी॥
कल केलि स जंबु स निंबवरा।
गत पाप स आपस मे सियरा॥
सुभ वाय तरंग सुरंग धरे।
उर हार तु मुत्तिय जासु हरै॥
दिन दुल्लभ जा वरमं चरनं।
भइ बंभ कमंडल आभरनं॥
गिरि तुंग तुखार सदा धरनं।
नर पाप विमाप न तो सरनं॥
सुर ईस सु दीस सु सादरनं।
मिलि अंभसु रंभसु सागरनं॥
सुभ ट्रट्ठिय मग्ग जु मग्ग।
जसु दंसन जंवुयदीप हलं।
किस मंगन जाथइ पाप मलं॥

हर गंगे हर गंगे हर गंगे।
तमि तरल तरंगे अघ क्रितभंगे क्रितचंगे॥
हर सिर परसंगे जटन विलंगे अरधंगे।
गिरि तुंग तरंगे विहरित दंगे जल गंगे॥
गन गंध्रव छंदे जग जस कंदे मुख चंदे।
मति उच गति मंदे वरसत नंदे गत वंदे।
वपु अप विलसंदे जमभ्रित जंदे कह गंदे॥
छिति मति उरमालं मुकति विसालं सहसालं।
सुर नर टट चालं कुसुमति लालं अलिजालं।
हिम रिम प्रति पालं हरि चर नालं विधिवालं॥
दरसन रस राजं जय जुग काजं भय भाजं।

अमरच्छरि करजं चामर वरजं लुव राजं ॥
अमलत्तिन मंजरि निय तन जंजरि चग्न पंजरि ।
करुणा रस रंजरि नतम पुनंजरि सा संकरि ॥
करिमल हरि मंजन जनहित सज्जन अरिगंजन ॥
उभय कमल सोभा भ्रिंग कंठाव लीला ।
पुनर पुहप पूजा वंदते विप्रराज ॥
उरिल मुतिय हारं सब्द गंठी ति वंब ।
मुकति मुकति भारं नंग रंग त्रिवल्ली ॥

चन्द्रायणी

दिल्लिय नयर सुभाइ न कवियन यूँ कहइ ।
है मनु अच्छि पुरंदर दंदुज इह रहइ ॥
चल चंचल तन सुद्धि ति सिद्धिहु मनु हरिह ।
कंचन करस झकोलति गंगह जलु भरहि ॥

नाराच छन्द

भरन्ति नीर सुंदरी ति पान पत्त अंगुरी ।
कनंक वक्क जज्जुरी ति लग्गि कड्ढि जे हरी ॥
सहज्ज सोभ पंडुरी सु मीन चित्र ही भरी ।
सकोल लोज जंघया ति लीन कच्छ रंभया ॥
करिब्न सोभ सेसरी मनो जुवान केसरी ।
अनेक छब्बि छत्तिया कहूँ तु चंद रत्तिया ॥
दुराइ कुच्च उच्छरे मनो अनंग ही भरे ।
हरंत हार सोहए विचित्र चित्त मोहए ॥
उठंति हत्थ अंचलं रुरंति मुत्ति सुज्जलं ।
कपोल उच्च उज्जले लहंति मोल सिंघले ॥
अधर अद्ध रत्तए सुकील कीर वद्धए
सोहंत दंत-आलमी कहंत वीय दालमी ॥
गहग्ग कंठ नासिका विनान राग सासिका ।
सुभाइ मुत्ति सोहए दुभाइ गंज लग्गए ॥
दुराइ कोई लोचने प्रतख्ख काम मोचने ।
अवद्ध ओर भौंह ही चलंत सोह सोहही ॥
लिलाट लाट लग्गए सरद्द चंदु लग्गए ॥

दूहा

ढिल्लिय जुहि अलकै लता स्रवन सुनै चहुवान ।
मनु भुवंग साम्हो चढ़ै कंचन खंभ प्रमान ॥
रहहि चंद मम कव्व करि करहित कव्व विचार ।
जि तुम नयरि सुंदरि कही सवि दीठी पनिहार ॥
जांह नदी तट पिक्खियहि रूव रासि वै दासि ।
नगर ति नागर नर घरनि रहहिं अवासि अवासि ॥
दंसन दिनयर दुल्लही निय मंडन भरतार ।
सहु कारन विहि निम्मयी दुह कत्तिज करतार ॥
कुवलय रवि लज्जा रहनि रहि भजि भंग सरन्नि ।
सरसइ सुध वरनन कियो दुल्लह तरुन तरन्नि ॥

छंद

पुनरजन्म जेते जानि जग्गं ।
मोहिन्नि ले मुत्ति वानी ।
मनो धार आहार कहं दुद्ध तानी ॥
तिलक नग निरखि जगि जोति जग्गी ।
मनो रोहिनी रूव उर इंदु लग्गी ॥
रूप भुव देखि अवरेख ढग्यो ।
मनो काम करि चंपि उडि अप्पु लग्ग्यो ॥
पंगुरे अैन ते नैन दीसं ।
विच्चे जोति सारंग निर्वात दीसं ॥
तेज ताटंक ता स्रवन डोलं ।
मनो अर्क राका उदै अस्त लोलं ॥
जलद जंभीर भइ मध्य जोलं ।
दिव्य दरसी तिहां ढील बोलं ॥
अधर आरत्त तारत्त साई ।
चंद विय बीय अरुनै बनाई ॥
कपोलं कलंगी कलिंदीव सोहं ।
अलक्कं अरोहं प्रवाहे खिमोहं ॥
सिता स्वाति छुट्टै जितेहार भारं ।
उभै ईस सीसं मनो गंग धारं ॥
करं कोक नंदं न कन्चू समज्झं ।
मनो तित्थराया त्रिवल्ली अलुज्झं ॥

उप्पमे पानि अंगून लब्भं।
लज्जि दुर केलि कुल मज्झ गब्भं॥
नखं निम्मलं दप्पनं भाव दीसं।
समीपं समीवं कियं मान रीसं॥
नितंबं उतंगं जुरे वे गयंदं।
मध्य रिपु खीन रक्ख्यो मयंदं॥
सक्कि सोवन्न मोहन्न थंभं।
सीत उसनेह रितु दोख रंभं॥
नारंग रंगीय पींडी छछोरी।
कनक कुंडीनु कुकुम्भ लोरी॥
रोहि आरोहि मंजीर सद्दे।
मंद म्रिदु तेज प्राकार वद्दे॥
एडि इग आडंबरं खीन वानी।
फिरै कच्च रच्चीन मुदरत पानी॥
अंबरं रत्त नीलं सु पीतं।
मनो पावसे धनुख सुरपत्ति कीतं॥
सुकीवं समीपं न वे सामि जानं।
पंग रवि दरिस अरविंद मानं॥

दूहा

हय गय दल सुंदर सुहर जे वरनह बहुवारि।
यह चरित्त कव लगि गिनै चलउ संदेह दुवार॥

नरपति नाल्ह

उडीसा अभियान

गवरी को नन्दन आव्यो छइ भाव। दोय कर जोड़े लागु हो पाय॥
'नाल्ह' रसायण रस भणइ। भूलों अखिर आणजो ठाई॥
एकदंतों! करूं वीनती। रास प्रगासुं वीसल-दे-राई॥
गरब करि ऊभो छई साभंर्यो-राव। मो सरीखा नही ऊर भुवाल॥
म्हा घरि साभर उगहइ। चिंहु दिस थाण जेसलमेर॥
लाख तुरी पाषर पड़इ। राजिकउ थानिक गढ़ अजमेर॥
गरब न बोलो हो मो भरतार। बाजा-बाजे राजा असिय हजार॥
लंकापति रावण धणी। सात समंद बिच वस्ती फेर॥

"लंक बिधुसी वांनरां। थे काई सराहो राजा गठ अजमेर ॥
गरभि न बोलो हो सांभरया-राव। तो सरीखा घणा और भुवाल ॥
एक उड़ीसा को धणी। वचन हमारइ तुं मानु जु मानि ॥
ज्युं थारइ सांभर उगहइ। राजा उणि घरि उगहइ हीरा खान ॥
"धणक बोल वस्यो मन मांहि। चित चमकियउ बीसलराय ॥
हूं वीसद्धयो तें वेदिठा। म्हा तु वरस वारइ की लांव ॥
कहं म्हारइ हीरा ऊगहई। नहीं तो गोरी! तिजूहूँ पराण ॥"
"हूँ बराकी धणी! मोकियउ रोस। पांव की पाणही सु कियउ रोस ॥
मे य हसंती बोलीयो। आपणइ मान हतौं मानस छइ साँस ॥
उभी मेल्है चालीयौ। जल विण राजा क्युं जीवइ हाँस?"
"जनमी गोरी तुं जेसलमेर। परणी आवी गठ अजमेर ॥
वार [ह] वरस की गोरड़ी। कूं समरयो उड़सिय जगनाथ ॥
अन मेल्हुँ पाणी तिजुं। कहित[ो]गोरी थारा जनम की वात ॥
"जइ तुं पूछइहो धरह नरेस!। वन खंड रहती हरिणि कइ वेस ॥
निरजला करती एकादसी। एक अहेड़ी वनह मंझारी ॥
ले वांणां उरहु हणी। जनम दीज्यो जगंनाथ दुवार ॥
हरिणी मणि संभरया जगनाथ। संख - चक्र - गदा - धरीय ॥
मांगिहै हरणली मनह विचार। तो तुंठा त्रिभुवन धणी ॥
पूरब देस म्हारो जनम निवारि" ॥

"क्यु वीसरायो गोरी पूरब देस?। पाप तणउ तिहां नहीं प्रवेस ॥
अति चतुराई दीसइ धणी। गङ्गा गया छै तीरथ योग ॥
वाणारसी तिहाँ परसजे। तिणि दरसण जाई पतिग न्हासि ॥"
"पूरब देस को पूरब्या लो। पान फूलाँ तरुण तु लहइ भोग ॥
कण संग्रइ कुकस भखइ। अति चतुराई राजा गठ ग्वालेर ॥
गोरड़ी जेसलमेर की। भोगो लोक दखण को देस ॥
जनम हुवउ थारउ मारू कइ देस। राज कुंवरि अति रूप असेस ॥
रूप नीरोपमी मेदनी। आछा कापड़ झीणइ लंक ॥
ललयांगी घन कूंवली। अहिरघ वाला, निर्मल दंत ॥
कूंवर कहई "सुणों! साभरयाराव। काई स्वामी तु उलगई जाई? ॥
कह्यउ हमारुउ जइ सुणउ। थारइ छइ साठि अंतेवरी नारि ॥"
कर जोडे धन वीनवइ। "राजकुंवरी निति भोगवि राय ॥"
रावइ कहइ "सुणी! राजकुमारि। दूमनी काई हीयउइ वर नारि ॥
कह्यउ हमारो जउ सुणइ। आंणिसु कोड़ि - टकाउल - हार ॥
देस उड़ीसइ गम करूँ। जाई जुहारूँ जादवराई ॥"

मह धणी ! थार मिल्हीय आस । भइला राजा थारउ कीसउ हो वेसास ॥
तो हूँ दासी करि मीणी । सगा सुणी जी मांहि ना गमीमा ॥
जीवत ही मुआँ वइइ । वालूँ लोभी हूँ थारा दाम ॥"
"कड़वा बोल न बोलीस नारि ! । तुं मो मेल्हसी चित विसारि ॥
जीभ न जीभ विगोयनो । दव का दाधा कुपली मेल्ही ॥
जीभ का दाधा नु पांगूरई । 'नाल्ह' कहइ सुणाजइ सब कोई ॥
पंच सखी मीली बइठी छई आई । "निगुणी ! गुण छोई तो प्रीव क्युं जाई ॥
फूल पगर जू गाहजइ । थारउ आँचल वंध्यो नाह कुंजाई ? ॥
राव कहइ "सुणि राजकुंमार । दूमनी काई हीयड़इ वरनारि ॥
कह्यो हमारउ जै सुणइं । येक बार रहस्युं खटमास ॥
देव जुहारे आवस्युं । ते छइ त्रिभुवन - मुगति - दातार ॥"
राई कुंवरि बोलइ ईक चिंत । वीप्र हुँकारे वेग तुरंत ॥
आवीयो प्रोहित राव को । "पाड्या ! हु थारे गुणदास ॥
देई सचा वर वइसणइं । मुहूरत देई वीर ! कातिग मास ॥"
"पांड्या ! वीरा ! हूँ थारी गुणदास । दिन दस महूरत मौड़उ परगास ॥
मास एक बीलंबावज्यो । दूजइ फेरई प्रथि समझाई ॥
देइस हाथ कउ मुंदड़उ । सोवन - सिंगी नई कपिला गाई ॥"
पाड्या ! तोहि बोलावइ छइ राय । ले पतड़ो जोसी वेगो आई ॥
सूदन कहै रूड़ा जोईसी । वाचइ पतड़ो बोलइ छइ साँच ॥
"मास एकां लगी दिन नहीं । तिथि तेरस वार सोमवार ॥
चन्द्रई ग्यारमौ देव है । तीसरो चन्द्र छइ खोडीला जोगि ॥
काल जोगणी भद्रा नहीं । पुष नक्षत्र नई कातिक मास ॥
जीण दिन स्वामी थे गम करउ । ज्युं घणी आगइ पूरइ हो आस ॥"
"पाड्यो कहु कइ परतिष (इ) भांड । झूठ कहइ छइ नै बोलइ छइ मांड ॥
राज - कुली महूरत कीसउ ? । हां तो ओलग चालस्याँ आज ॥
कह्यो हमारउ जोसी ! जइ सुणई । जाइ उडसिई पूजं जगनाथ ॥
पाड्यां हूँ तो ओलग जाऊँ । जाई उड़ीसेइ वात कहाँउ ॥
कह्यो हमारो जइ सूणइं । मो हइ घर की गोरड़ी कह्यो कुबोल ॥
मोहि न मन्दिर आलिगइ । जाइ उड़ीसइ तइ राखस्युं बोल ॥
"आव दमोदर वइसि नु पाट । कहि न वीरा म्हाँ का पीउ की बात ॥"
"प्रौ हो अयाँणउ उफिरई । आठमो ठाँव रवि बारमो राहु ॥
ग्रह गणतो अतिहि वीरा" । सिर धुणी मूका छइ धाह ॥
"दासी होई करि निरखहुँ । पाय पषारसुं ठोलसुं वाई ॥
पुहर पुहर प्रति जागसु । इण हर सेवस्युं आपणउ नाह" ॥

"गहिली है त्री तोहइ लागी छई वाय। असीय ते कोई उलगि जाई ! ॥
गहिली मुंधउ तुं वावली। चन्द क्यु कूडइ ढाँकाणउ जाई ! ॥
रतन छिपायों क्यु रहई ! । आगहं बाचा को हीणो छइ पूरव्यो राइ" ॥
उलगी जाँण सजौ समदाव। हंसि कर गोरी पूछइ राव ॥
"सात बरस पेहलो रह्यो। चीरी जणह न मोकल्यै कोई ॥
लाहो लेता जनम गौ। तुय करै तिंसी तोथी होई" ॥
अंचल गह तिय बइसाड़ी छइ आणी। हंसि गल-लाई भोजी सो काण ॥
आज ऊलंभउ भोंजवा। "या धनवीरा! थारइ हिये न समाई ॥
कै या वोल को आकरी। कौणे दुख देवर! उलग जाई" ॥
उभी भावज दइ छइ सीष। "रतन कचौलौ राय सांभजै भीष ॥
ते नाउं पगसूं ठेलीजै। इसीन रायां तणौ नहीच अबास ॥
ईसीय न देवल पूतली। नयण सलूँणां वचन सुमीत ॥
ईसीय न खाती कौ घड़इ। इसी अस्त्री नहीं रवि तलै दीठ" ॥
"रही! रही! भावज वचन तूं बोल। राज-कुंवर मोहइ कह्यो हो कुबोल ॥
मोहि रयणी दिन [न] विसरइ। राज कुंवर आवे जो साथ ॥
तो विस खाये मरूँ। वारइ वरस पूजूँ जगनाथ" ॥
आज सखी मोहि विहाँण। पीड़वा कइ दिन कहइ छइ जाण ॥
"आज नीरालइ सीय पड्यो। च्यारि पहूर माँही नू मीली अंख ॥
उछइ पाँणो ज्यु माछली। जिव जागु तिव उठुछुं झंपि ॥
बीज अंध्यारी नइ सुक्रजोवार। महूरत नहीया कहइ वर-नार ॥
महा —— उपग्रह उपजइ। जै नर उलग ईण महूरत जाई ॥
आवण का साँसा पड़ई। जाणि हीमालइ राजा गलीया हो जाई ॥
तीजें घरि घरि मंगलचार। चिहुँ दिसी कामनी करई हो सयंगार ॥
रमइं सहेली काजली। धरि धरि कामिनी मड़इ छइं खेल ॥
चन्द्र वदन विलखी फिरई। स्नेह-तुठी राजा औलगी मेलही ॥
"चउथ अंधारी [दि] नई मंगलवार। चन्द उजालउ घरि घरि वारि ॥
वरति करह घरि आपणइँ। चउथ जुहारउ सांमरया—राव ॥
वचन हमारउ मानज्यो। हरिष के पूजो ईणी ठाई ॥
पंचम कउ दिन पहूतो छइ आई। अउत होइ घरि छौड़ो हो राय ॥
तु अजमेराँ राजीयो। पुत्र कलत्र सहू परिवार ॥
सईभंर यांणउ वइसणइं। राई चहुवांण! औलगि नीवार ॥
"रही [रही] कांमणी अंचल छोड़ी। औलग जाऊँ हूँ अंक न वहोड़ी ॥
देस उड़ीसइ गम करूँ।" ये वचन बोल्या तिणि ठाई ॥
छइ सातम दिन आवीयो। निहचइ औलगि चालण-हार ॥

पूरी सभा वइठो सांभर्यो - राव । चउरास्या सहू लीयो बोलाई ॥
माई तेड़ावी राव की । सवी मिलि मंत्र कियो तिणि ठाई ॥
कहेउ हमारउ जइ सुणो । "कोक भतीजो सूंपजए राज" ॥
राइ कहई "भली हुई आजि" । "कोकि भतीजो सौंप्यौउ राज ॥
थाप्या साहण वर जरी । थाप्या मंदिर घरि कविलास ॥
थाप्या चौरा चउखंडि । थाप्या साँभरि का रीणवास ॥
राजा चाल्यो उलगइं । सहू अंतेवरी मेल्ही नीसास ॥
ओलग चाल्यो धन कउ नाह । सहू अंतेवरी झूरई राउँ ॥
झूरई सहोवर राव का । कुली छतीसइ झूरइ सोही ॥
धार झूरई राजा भोज सूं । साँभरया राव सो पड़यो विछोह ॥
झूरई राइ वइहनंडी अंकन कुंवार । महाजन झूरई राई साँधार ॥
माता झूरइ राव की । झूरइ बंभण भाँट बीयास ॥
येकइं बोल कइ करिणाइं । चाल्यो राजा मेल्ही निसास ॥
राव उड़ीसइं पहुँतउ जाई । देव जुहारे लागुं पाय ॥
धन दिहाड़उ आज कउ । देव उठि दीयो चउगिणउ मान ॥
मेल्ही चावर बइसणइ । राव उडीसा को परधान ॥
राई प्रधानपणइं रह्यो जाई । चउरास्या सहू लागइ पाय ॥
देश देसां का राजिया । देव कहइ "राजा ! म्हारो तु वीर" ॥
मेल्ही चाँवर वइसणइ । मनवांछित भोजन अरु चीर ॥
जे नर सूनइ संवाद संजूत । अविचल लिपमी धरे राजा वहूत ॥
'नाल्ह' रसायण नर भणइ । जू राणी सूं पड़इ विजोग ॥
वीघन - हरण जो वर दीयो । पणिहु वहोड़ू करूँ संजोग ॥
दूजौ षंड चय्यो परिमाण । जे नर सूणइ ते गंगा न्हाण ॥
'नाल्ह' नसायण नर भणइ । राजा रह्यो उड़ीसई जाय ॥
बाग - वाणी मो वर दीयो । अत्री रसायण करूँ वखाण ॥

विद्यापति

(१)

नन्द क नन्दन कदम्बेरि तरू तरे,
धिरे धिरे मुरलि वजाव ।
समय संकेत निकेतन वइसल,
वेरि वेरि बोलि पठाव ॥

सामरि, तोरा लागि,
अनुखने विकल मुरारि ॥
जमुनाक तिर उपवन उद्वेगल,
फिरि फिरि ततहि निहारि ॥
गोरस बिके निके अवइते जाइते,
जनि जनि पुछ वनवारि ॥
तोंहि मतिमान, सुमति मधुसूदन,
वचन सुनह किछु मोरा ।
भनइ विद्यापति सुन बरजौवति,
वन्दह नन्द किसोरा ॥

(२)

नव वृन्दावन नव नव तरुगन,
नव नव विकसित फूल ।
नवल वसंत नवल मलयानिल,
मातल नव अलिकूल ॥
विहरइ नवल किसोर ।
कालिन्दी पुलिन-कुंज वन सोभन ।
नव नव प्रेम विभोर ॥
नवल रसाल-मुकुल-मधु मातल ।
नव कोकिल कुल गाय,
नव जुवती गन चित उमता अई—
नव रस कानन धाय ॥
नव जुवराज नवल वर नागरि,
मीलए नव नव भांति ।
निति निति ऐसन नव नव खेलन,
विद्यापति मति भाति ॥

(३)

सहजहि आनन सुन्दर रे,
भउँह सुरेखलि आंखि ।
पंकज मधु-पिवि मधुकर,
उड़ए पसारए पांखि ॥

ततहि धाओल दुहु लोचन रे,
जतहि गेलि वर नारि।
आसा - लुबुधल न तेजए रे,
कृपन क पाछु भिखारि॥
इंगित नयन तरंङ्गित देखल,
वाम भउँह भेल भङ्ग।
तखने ना जानल तेसरे,
गुपुत मनोभव रङ्ग॥
चन्दने चरचु पयोधर,
गृम गज मुक्ता हार।
भसमे भरल जनि शङ्कर,
सिर सुरसरि जल धार॥
वाम चरण आगुसारल,
दाहिन तेजइते लाज।
तखन मदन सरे पूरल,
गति गञ्जए गजराज॥
आज जाइते पथ देखलि रे,
रूप रहल मन लागि।
तेहि खन सयँ गुन गौरव रे,
धैरज गेल भागि॥
रूप लागि मन धाओल रे,
कुच कंचन गिरि सांधि।
ते अपराधे मनोभव रे,
ततहि धएल जनि बांधि॥
विद्यापति कवि गाओल रे,
रस बुझ रसमन्ता।
रूप नारायन नागर रे,
लखिमा देविक सकुन्ता।

(४)

विरह व्याकुल वकुल तरुतर,
पेखल नन्द कुमार रे।
नील नीरज नयन सयँ सखि,
ढरइ नीर अपार रे॥

पेखि मलयज पंक मममद,
ताम रस घनसार रे।
निज - पानि पल्लव मूदि लोचन,
धरनि पड़ असम्भार रे॥
वहइ मन्द सुगन्ध सीतल,
मन्द मलय समीर रे।
जानि प्रलय कालक प्रबल पावक,
दहइ सून सरीर रे॥
अधिक वेपथ टूटि पड़ु खिति,
मसृन मुकुता - माल रे।
अनिल - तरल तमाल तरुवर,
मुंच सुमनस जाल रे॥
मान-मनि तेजि सुदति चलु जहि,
राए रसिक सुजान रे।
सुखद सुति अति सरस दण्डक
कवि विद्यापति भान रे॥

(५)

मधु सम वचन कुलिस सम मानस,
प्रथमहि जानि न भेला।
अपन चतुरपन पिसुन हाथ देल,
गरुअ गरब दूर गेला॥
सखि हे, मन्द पेम परिनामा,
बड़ कए जीवन कएल पराधिन।
नहिं उपचर एक ठामा॥
झाँपल कूप देखहि नहि पारल,
आरति चल लहु धाई।
तखन लघु गुरु किछु नहि गूनल,
अब पछतावेक आई॥
एत दिन अछलहु आन भान हम,
अब बूझल अवगाहि।
अपन सुर अपने हम चाँछल,
दोख देवि गए काहि॥

भनइ विद्यापति सुन बर जौवति,
चिते गनव नहि आने।
पेमक कारन जीउ उपेखिए,
जग जन के नहि जाने॥

(६)

एत दिन छलि नव रीति रे।
जल मिन जेहन प्रीति रे॥
एकहिं वचन भेल बीच रे।
हास पहु उतरो न देल रे॥
एकहिं पलँग पर कान्ह रे।
मोर लेख दूर देस भान रे॥
जाहि वन केओ न डोल रे।
ताहि अन पिया हास बोल रे॥
धर जोगिनिआक भेस रें।
करब में पहुक उदेस रे॥
भनहिं विद्यापति भान रे।
सुपुरुष न करे निदान रे॥

(७)

करतल कमल नयन ढरे नीर।
न चेतए सभरन कुन्तल चीर॥
तुअ पथ हेरि हेरि चित नहिं थीर।
सुमिरि पुरुष नेहा दगध सरीर॥
कत पर माधव साधव मान।
विरही जुबति माँग दरसन दान॥
जल - मध कमल गगन मध सूर।
आँतर चान कुमुद कत दूर॥
गगन गरज मेघ सिखर मयूर।
कत जन जानसि नेह कत दूर॥
भनइ विद्यापति विपरित मान।
राधा वचन जलायल कान॥

(८)

आएल रितुपति - राज वसंत ।
धाओल अलिकुल माधवि पंथ ॥
दिनकर - किरण भेल पौगंड ।
केसर कुसुम धएल हेमदण्ड ॥
नृप आसन नव पीठल पात ।
काँचन कुसुम छत्र धरू माथ ॥
मौलि - रसाल - मुकुल भेल ताय ।
समुख हि कोकिल पंचम गाय ॥
सिखिकुल नाचत अलिकुल जन्त्र ।
द्विज कुल-आन पढ़ आसिख मन्त्र ॥
चन्द्रातप उड़े कुसुम - पराग ।
मलय - पवन सह भेल अनुराग ॥

(९)

मधु रितु मधुकर पांति । मधुर कुसुम मधुमाति ॥
मधुर वृन्दावन माझ । मधुर मधुर रसराज ॥
मधुर जुवति जन संग । मधुर मधुर रस रंग ॥
मधुर मृदंग रसाल । मधुर मधुर करताल ॥
मधुर नटन गति भंग । मधुर नटिनी नटसंग ॥
मधुर मधुर रस गान । मधुर विद्यापति भान ॥

(१०)

मोर पिया सखि गेल दूर देस ।
जौवन दए गेल साल सनेस ॥
मास असाढ उनत नव मेघ,
पिया विसलेख रहओं निरथेघ ।
कौन पुरुष सखि कौन से देस,
करब मोयँ तहाँ जोगिनी भेस ॥
साओन मास वरसि घन वारि,
पंथ न सूझे निसि अँधिआरि ।
चौदिस देखिए बिजुरी रेह,

हे सखि कामिनि जीवन संदेह ॥
भादव मास वरिस घन घोर,
समादिसि कुहुकए दादुल मोर।
चेहुँकि चेहुँकि पिया कोर समाय,
गुनमति सूतलि अंक लगाय ॥
आसिन मास आस घर चीत,
नाह निकारुन न भेलाह हीत।
सरवर खेलए चकवा हास,
विरहिन वैरि भेल असिन मास ॥
कातिक कंत दिगम्बर वास,
पिय पथ हेरि हेरि भेलहु निरास।
सुख सखराति सबहु का भेल,
हमे दुख साल सोआमि दय गेल ॥
अगहन मास जीव के अन्त,
अबहु न आयेल निरदय कंत।
एकसरि हम धनि सूतओ जागि,
नाहक आअति खाएत मोहि आग ॥
पूस खीन दिन दीघरि राति।
पिआ परदेस मलिन भेल कांति ॥
हेरओं चौदिस अँखओं रोय।
नाह विछोह काहु जन होय ॥
माघ मास घन उड़ए तुसार।
झिलमिल केचुआँ उनत थन हार।
पुनमति सूतलि पियतम कोर।
विधि वस दैव बाम भेल मोर ॥
फागुन मास धनि जीव उचाट,
विरह विखिन भेल हेरओ बाट।
आयल मत्त पिक पंचम गाव,
से सुनि कामिनि जीवहु सताव ॥
चैत चतुरपन पिय पर वास,
माली जाने कुसुम विकास।
भमि भमि भमरा करु मधुपान,
नागर भइ पहु भेल असयान ॥
वैसाख तवेखर मरन समान,

कामिनि कंत हनय पंचबान।
नहिं जुड़ि छाहरि न वरसि वारि,
हम जे अभागिनि पापिन नारि॥
जेठ मास अजर नव रंग,
कंत चहए खलु कामिनि संग।
रूप नारायन पूरथु आस,
भनइ विद्यापति बारह मास॥

× × ×

उधसल केसपास लाजे गुपुत हास
रजनि उजागरे मुख न उजला,
नखपद सुन्दर पीन पयोधर
कनकसंभु जनि केसु पूजला॥
न न न न कर सखि परिनत ससिमुखि
सकल चरित तोर बुझल विसेखी॥
अलस गमन तोर वचन बोलसि भोर
मदन मनोरथ मोहगता।
जृम्भसि पुनु पुनु जासि अरस तनु
आतपे छुइलि मृणाल लता॥
वेस पिन्धु विपरित तिलक तिरोहित
नयन कजर जले अधर भरू।
एत सब लछ्छन संग विचछ्छन
कपट रहत कतखन जे धरू॥
भनै कवि विद्यापति अरे वर यौवति
मधुकरे पावलि मालति फुलली॥
हासिनि देवपति देवसिंह नरपति
गरुड़ नरायन संगे भुलली॥

× × ×

दए गेलि सुन्दरि दए गेली रे दए गेलि दुइ दिठे मेरा।
पुनु मन कर ततहि जाइअ देखिअ दोसरि बेरा॥
सार चुनि चुनि हार जे गाँथल केवल तारा जोती।
अधर रूप अनुपम सुन्दर चान्दे परीहलि मोती॥
भमर मधु पिवि पिवि मातल शिशिरे भीजल पाँखी।
अलप काजरे नयन आँजल ननूमि देखिअ आँखी।

कत जतने दूती पठाओल आनय गुआ पान।
गगर रजनी बइसि गमाओल हृदय तासु पखान ॥
भनइ विद्यापति सुनह नागर ओनहि ओरस जान।
राजा शिवसिंह रूपनरायण लखिमा देवि रमान ॥

× × ×

ससन-परस खसु अम्बर रे देखल धनि देह।
नव जलधर तर चमकए रे जानि बीजुरि रेह ॥
आज देखलि धनि जाइते रे मोहि उपजल रंग।
कनकलता जनि संचर रे महि निरअवलम्ब ॥
ता पुन अपरुब देखल रे कुच जुग अरविन्द।
विगसित नहि किछु कारन रे सोभा मुखचन्द ॥
विद्यापति कवि गाओल रे रस बुझए रसमन्त।
देवसिंह नृप नागर रे हासिनि देवि कन्त ॥

× × ×

कमल मिलल दल मधुप चलल घर विहग गइल निज ठामे।
अरे रे पथिक जन थिर रे करिअ मन बड़ पाँतर दुर गामे ॥
ननदि रूसिए रहु परदेस बस पहु सासुहि न सुझ समाजे।
निठुर समाज पुछार उदासीन आओर कि कहब वेआजे ॥
चन्दन चारू चम्प घन चामर अगर कुङ्कम घरवासे।
परिमल लोभे पथिक नित संचर तँइ नहि बोलय उदासे ॥
विद्यापति भन पथिक वचन सुन चिते बुझि कर अवधाने।
राजा शिवसिंह रूपनारायण लखिमा देई रमाने ॥

× × ×

नील कलेवर पीत वसन धर चन्दन तिलक धवला।
सामर मेघ सौदामिनी मंडित तथिहि उदित ससिकला ॥
हरिहरि अनतए जनु परचार सपने मोए देखल नन्दकुमार ॥
पुरुब देखल पथ सपने न देखिअ ऐसनि न करवि बुधा।
रस सिंगार पार के पाओत अमोल मनोभव सिधा ॥
भनइ विद्यापति अरे वर जौवति जानल सकल मरमे।
सिवसिंघ राय तोरा मन जागल कान्ह कान्ह करसि भरमे ॥

× × ×

सरस बसन्त समय भल पाओलि दखिन पवन बहु धीरे।
सपनहुँ रूप वचन एक भाखिए मुख सो दूरि करु चीरे।

तोहर वदन सम चान होअथि नहि जइओ जतन विहि देला।
कए वेरि काटि वनाओल नव कए तइओ तुलित नहि भेला।
लोचन तुअ कमल नहि भए सक से जग के नहि जाने।
से फेरि जाए नुकेलाइ जल-भय पंकज निज अपमाने।
भनइ विद्यापति सुनु वर यौवति ई सव लछमी समाने।
राजा शिवसिंघ रूपनारायन लखिमा देइ पति भाने।

× × ×

दहए वुलिए भमरि करुना कर आहा दइ आइ की भेल।
कोर सुतल पिया आन्तरो न देअ हिया के जान कओन दिग गेल॥
अरे कैसे जीउव मञे रे सुमरि वालभू नव नेह॥
एकहि मन्दिर वसि पिया न पुछए हसि मोरे लेखे समुदक पार।
इ दुइ जौवना तरुन लाख लह से आवे परस गमार॥
पट सुति बुनि बुनि मोति सरि किनि किनि मोरे पियाञें गाथल हार।
लाख लेखि तन्हि हम हरवा गाथल से आवे तोलत गमार॥
अरेरे पथिक भइआ समाद लए जइह जाहि देस वस मोर नाह।
हमर से दुख सुख तन्हि पिया कहिह सुन्दरि समाइलि वाह॥
भनइ विद्यापति अरे रे जुवति अवे चिते करह उछाह।
राजा सिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि वर नाह॥

× × ×

सरसिज विनु सर सर विनु सरसिज की सरसिज बिनु सूरे।
जौवन बिनु तन तन विनु जौवन की जौवन पिय दूरे॥
सखि हे मोर वड़ दैव विरोधी।
मदन वेदन वड़ पिया मोर बोल छड़ अबहु देहे परवोधी॥
चौदिस भमर भम कुसुमे कुसुमे रम नीरसि माजरि पिवइ।
मन्द पवन वह पिक कुहु कुहु कह सुनि विरहिनि कइसे जीवइ॥
सिनेह अछल जत हम भेल न टूटत वड़ वोल जत सवेइ थीरे॥
अइसन कए वोलदहु निअसिम तेजि कहु उछल पयोनिधि नीरे॥
भनइ .विद्यापति अरेरे कमलमुखि गुन गाहक पिया तोरा।
राजा सिवसिंघ रुपनरायन सहजे एको नहि भोरा॥

× × ×

माधव मास तीथि छल माधव अवधि करिये पहु गेला।
कुचयुग शंभु परसि हसि कहललि तेंह परतीति मोहि भेला॥

अवधि ओर भेल समय वेयापति जीवन वहि गेल आशे।
तखनुक विरह युवती नहि जीउति कि करत माधव मासे॥
छुन छुन कचकइ दिवस गमाओलि दिवस दिवस कय मासे।
मास मास कइ वरस गमाओलि आव जीवन कोन आशे॥
आम मजर धरु मन मोर गहर कोकिल शवद भेल मन्दा।
एहन वयस तेजि पहु परदेश गेल कुसुम पिउलि मकरन्दा॥
कुमकुम चानन आगि लगाओलि केओ कहे शीतल चन्दा।
पहु परदेश अनेक कइ राघखि विपति चिन्हिये भलमन्दा॥
भनहि विद्यापति सुन वर यौवती हरिक चरण करु सेवा।
परल अनाइत तेँइ छथि अन्तर वालभु दोष न देवा॥

× × ×

सखि हे मोरे वोले पुछ्व कन्हाइ।
हमर सपथ थिक विसरि न हलवे गए तेजि अवसर पाइ॥
हुन्हि सयँ पेम हठहि हमे लाओल हित उपदेस न लेला।
तृनतरुअर छायातर वैसलाहु जइसन उचित से भेला॥
एक हमे नारि गमारि सवहु तह दोसरे सहज मतिहीनी।
अपनुक दोष दैवके कि कहव ओ नहि भेलाहे चिन्ही॥
अकुलिन वोल नहि ओड़ धरि निरवह धरए अपन वेवहारे।
आगिल दुर कर पाहिल चित धर जइसन वड़ि कुसियारे॥
भनइ विद्यापति सुन वर जौवति चिते जनु मानह आने।
राजा सिवसिंघ रुपनारायन सकल कलारस जाने॥

× × ×

करे कुचमण्डल रहलिहुँ गोए।
कमले, कनक-गिरि झांपि न होए॥
हरख सहित हेरलन्हिं मुखं - कांति।
पुलकित तनु मोर धर कत भांति॥
तखने हरल हरि अञ्चल मोर।
रस भरे ससरू कसनिकेर डोर॥
सपना एकि सखि देखल मोयँ आज।
तखनुक कौतुक कहइते लाज॥
आनन्दे नोरे नयन भरि गेल।
पेमक आँकुरे पल्लव देल॥
भनइ विद्यापति सपना सरूप।
रस वुझ रुपनरायन भूप॥

× × ×

कि आरे! नव जौवन अभिरामा।
जत देखल तत कहए न पारिअ छओ अनुपम एक ठामा॥
हरिन इन्दु अरविन्द करिनि हेम पिक बुझल अनुमानी।
नयन रयन परिमल गति तनु-रुचि अओ अति सुललित बानी।
कुच-युग पर चिकुर फुजि पसरल ता अरुझायल हारा।
जनि सुमेरु उपर मिलि ऊगल चाँद विहिन सब तारा।
लोल कपोल ललित मनि-कुण्डल अधर विम्ब अध जाई।
भौंह भ्रमर, नासापुट सुन्दर से देखि कीर लजाई।
भनइ विद्यापति से वर नागरि आन न पावए कोई।
कंसदलन नारायन सुन्दर तसु रंगिनी पए होई।

× × ×

सबहु सखि परबोधि कामिनि आनि देलि पिया पास।
जनु बांधि ब्याधा विपिन सयँ मृग तेज तीख निसास॥
बैठलि सयन समीपे सुवदनि जतने समूहि न होइ।
भेल मानस बुलए दहोदिस देल मनमथे फोइ॥
सकल गात दुकूल दृढ़ अति कतहु नहि अवकास।
पानि परस परान परिहर पूरति की रति आस॥
कठिन काम कठोर कामिनि मान नहि परबोध।
निविड़ नीविबन्ध कठिन कंचुक अधरे अधिक निरोध॥
करब की परकार आवे हमे किछु न पर अवधारि।
कोपे कौसले करए चाहिअ हठहि हल हिअ हारि॥
दिवस चारि गमाए माधव करब रति समधान।
वड़हिक वड़ होय धैरज सिंघ भूपति भान॥

× × ×

माधव सिरिस कुसुम सम राही।
लोभित मधुकर कौसल अनुसर नव रस पिबु अवगाही॥
पहिल वयस धनि प्रथम समागम पहिलुक जामिनि जामें।
आरति पति परतीति न मानथि कि करथि केलक-नामें॥
अंकम भरि हरि सयन सुतायल हरल वसन अविसेखे।
चोंपल रोस जलज जनि कामिनि मेदनि देल उपेखे॥
एक अधर कै नीवि निरोपलि दू पुनि तीनि न होई।
कुच-जुग पाँच पाँच ससि उगल कि लय धरथि धनि गोई॥
अकुल अलप बेआकुल लोचन आँतर पूरल नीरे।
मनमथि मीन बनसि लय वेधल देह दसो दिसि फीरे॥

भनहिं विद्यापति दुहुक मुदित मन मधुकर लोभित केली।
असह सहथि कत कोमल कामिनि जामिनि जिव दय गेली ॥

× × ×

आज पुनिमा तिथि जानि मोय ऐलिहु उचित तोहर अभिसार।
देह-जोति ससि-किरन समाइति के विभिनावए पार ॥
सुन्दरि अपनहु हृदय विचारे।
आंखि पसारिल जगत हम देखलि के जग तुअ सम नारि ॥
तोहें जनु तिमिर हीत कए मानल आनन तोर तिमिरारि।
सहज विरोध दूर परिहरि धनि चल उठि जतए मुरारि ॥
दूती वचन हीत कए मानल चालक भेल पँचवान।
हरि-अभिसार चललि वर कामिनि विद्यापति कवि भान ॥

× × ×

कि कहव अगे सखि मोर अगेयाने।
सगरिओ रयनि गमाओल माने ॥
जखने मोर मन परसन भेला।
दारुन अरुन तखन उगि गेला ॥
गुरुजन जागल कि करव केली।
तनु झपइत हमे आकुल भेली ॥
अधिक चतुरपन भेलाहुँ अयानी ॥
लाभके लोभे मुलहु भेल हानी ॥
भनइ विद्यापति निअमति दोसे।
अवसर काल उचित नहि रोसे ॥

× × ×

कतए अरुन उदयाचल उगल कतए पछिम गेल चन्दा।
कतए भ्रमर कोलाहलें जागल सुखे सुतथु अरविन्दा ॥
कामिनि जामिनि कँहा गेली।
चिर समय आगत हरि भेल पाहुन आधेउ केलि न भेली ॥
पंक्क पात अतापे न पओले झामर न भेले देहा।
कृपन संचित धन रहल अखण्डित काजर सेन्दुर रेहा ॥
अरुनक जोति अधरे नहि छड़ले पलटि न गँथले हारा।
आनहुँ बोलव सखि तो जे अचेतनि की तोर नाह गमारा ॥
विद्यापति भन मन नहि परसन हिय चिन्ता विस्तारा।
पलटि रचव केलि पिय संग हिलमेलि दम्पति उचित विहारा ॥

× × ×

मानिनि आव उचित नहिं मान ।
एखनुक रंग एहन सन लगइछि जागल पय पचोवान ॥
जुड़ि रयनि चकमक कर चानन एहन समय नहिं आन ।
एहि अवसर पहु मिलन जेहन सुख जकरहिं होए से जान ॥
रभसि रभसि अलि विलसि विलसि करि जेकर अधर मधु पान ।
अपन अपन पहु सवहु जेमाओलि भूखल तुअ जजमान ॥
त्रिवलि तरंग सितासित संगम उरज सम्भु निरमान ।
आरति पति परतिग्रह मगइछि करु धनि सरवस दान ।
दीप दिपक देखि थिर न रहय मन दृढ़ करु अपन गेआन ।
संचित मदन वेदन अति दारुन विद्यापति कवि भान ॥

× × ×

त्रिवलि-तरंगिनी पुर पुर दुग्गम जनि मनमथे पत्र पठाउ ।
जौवन - दलपति समर तोहर ऋतुपति - दूत पठाउ ॥
माधव, आवे साजिए दहु वाला ।
तसु सैसव तोहें जे सन्तापलि से सब आओति बाला ॥
कुण्डल चक्क तिलक अंकुस कए चन्दन कवच अभिरामा ।
नयन कटाख वान गुनधनु साजि रहल अछि रामा ॥
सुन्दरि साजि खेत चलि अइलि विद्यापति कवि भाने ।

× × ×

दृढ़ परिरम्भन पीड़लि मदने ।
उबरि अएलहुँ सखि पूरब पुने ॥
टूटि छिड़िआएल मोतिन हार ।
सिन्दूर लोटायल सुरंग पॅवार ॥
सुन्दर कुचजुग नख - खत भरी ।
जनि राजकुम्भ विदारल हरी ॥
अधर दसन देखि जिउ मोरा कांपे ।
चाँदमण्डल जनि राहुक झांपे ॥
समुद्र ऐसन निसि न पारिए उर ।
कखन उगत मोर हित भए सूर ॥
मोय नहि जाएव सखि तन्हि पिया ठाम ।
वरु जिव मारि नड़ावथि काम ।
भनइ विद्यापति तेज भय लाज ॥
आगि जारिये पुनु आगिक काज ॥

× × ×

कि कहब ए सखि केलि विलासे ।
विपरीत सुरत नाह अभिलासे ॥
कुचजुग चारु धराधर जानी ।
हृदय परत तैं पहु देल पानी ॥
मातलि मनमथे दुर गेल लाजे ।
अविरल किङ्किनी कङ्कन बाजे ॥
घाम बिन्दु मुख सुन्दर जोती ।
कनक कमल जनि फरि गेल मोती ॥
कहहि न परिअ परिअ पिय मुख भासा ।
समुहु निहारि दूहु मने हासा ॥
भनइ विद्यापति रसमय वाणी ।
नागरि रम पिय अभिमत जानी ॥

× × ×

सजनी भल कए पेखल न भेल ।
मेघ-माल सयँ तड़ित लता जनि हिरदये सेल दई गेल ॥
आध आँचर खसि आध वदन हसि आधहिं नयन-तरङ्ग ।
आध उरज हेरि आध आँचर भरि तब धरि दगधे अनंग ॥
एक तनु गोरा कनक-कटोरा अतनु काँचला उपाम ।
हारल हरल मन जनि बुझि ऐसन फाँस पसारल काम ॥
दसन मुकुता-पाति अधर मिलायल मृदु मृदु कहतहिँ भासा ।
विद्यापति कह अतए से दुख रह हेरि हेरि न पुरल आसा ॥

× × ×

सहि हे मन्दप्रेम - परिनामा ।
बराक जीवन कयल पराधीन नाहि उपकार एकठामा ॥
झाँपल कूप लखइ न पारल जाइत पड़लहुँ धाइ ।
तखनुक लघु-गुरु कछु ना विचारलुँ अब पाछु तरइते चाइ ॥
मधु सम वचन प्रेम सम मानुख पहिलहुँ जानन न भेला ।
अपन चतुरपन पर हाते सोपलुं हृदिसे गरब दूरे गेला ॥
एत दिन आज भाने हम आछलुँ अब बुझलु अवगाहि ।
अपन सूल हम आपहि चाँछल दोख देयब अब काहि ॥
अनये विद्यापति सुन वरजुवति चिते नाहि गूनबि आने ।
प्रेमक कारन जीउ उपेखिअ जगजन को नाहि जाने ॥

× × ×

सखि अवलम्बन चलवि नितम्बिनि थम्भवि थम्भ समीपे।
जब हरि करे धरि कोर वइसाओव आँचरे चोरायबि दीपे॥

सखि मान न रहत उदासे।
सत सम्भासने वचन न परगासव जेहन कृपन असोयासे॥
लहु लहु हसि हसि मुख मोड़वि दसन देखाओव हासे।
वदन आध विनु साध न पूरव कुच दरसाओव पासे॥
वहुविध आदरे पहुक कातर लखि विमुखि वइसब वामे।
करे कर ठेलब आलिंगन वारव सेज तेजि वइसव ठामे॥
करे कर जोरि मोरि तनु उठव अम्बर सम्बरि पीठे।
भनइ विद्यापति उतकट संकट उपजायव दीठे॥

× × ×

विगलित चिकुर मिलित मुखमण्डल चाँद वेढ़ल घनमाला।
मनिमय-कुण्डल स्रवणे दुलित भेल घामे तिलक वहि गेला॥

सुन्दरि तुआमुख मंगल-दाता।
रति-विपरीत-समय-यदि राखवि कि करब हरि हर धाता॥
किंकिनी किनि किनि कंकन कनकन कलरव नूपुर वाजे।
निज मरे मदन पराभव मानल जय जय डिंडिम वाजे।
तिल एक जघन सघन रव करइत होयल सैनक भंग।
विद्यापति पति ओ रस गाहक जामुने मिललो गंग तरंग॥

× × ×

कि कहव हे सखि रातुक वात।
मानिक पड़ल कुवानिक हात॥
काँच कंचन न जानइ मूल।
गुंजा रतन करए समतूल॥
जे किछु कभु नहि कलारस जान।
नीर खीर दुहू करए समान॥
तन्हि सौं कहाँ पिरीत रसाल।
वानर-कण्ठ कि मोतिम माल॥
भनइ विद्यापति इह रस जान।
वानर मुँह की सोभए पान॥

× × ×

फुटल कुसुम नव कुंज कुटिर वन कोकिल पंचम गाओइ रे।
मलयानिल हिमसिखरे सिधारल पिया निज देसन आओइ रे॥

चाँद चन्दन तनु अधिक उतापए उपवने अलि उतरोल।
समय वसन्त कन्त रहु दुरदेस जानल विहि प्रतिकूल॥
आनमिख नयने नाह मुख निरखइते तिरपति न होये नयान।
इ सुख समय सहए एत संकट अबला कठिन परान॥
दिने दिने खिन तनु हिम कमलिनि जनि न जानि कि जिव परजन्त।
विद्यापति कह धिक धिक जीवन माधव निकरुन अन्त॥

× × ×

सजनि, के कह आओब मधाई।
विरह-पयोधि पार किए पाओब मझु मने नहिं पतिआई॥
एखन-तखन करि दिवस गोङायलु दिवस दिवस करि मासा।
मास मास करि वरस गमाओल छोड़लुँ जीवनक आसा॥
वरखि वरखि कर समय गोङ्यालुँ खोयालुँ कानुक आशे।
हिमकर-किरणे नलिनि जदि जारव कि करब माधव-मासे॥
अंकुर तपन - ताप जदि जारव कि करब बारिद मेहे।
इह नवजौवन विरह गोङायब की करब से पिया नेहे॥
भनइ विद्यापति सुन वर युवति अब नहि होइ निराश।
सो व्रजनन्दन हृदय - आनन्दन झटिति मिलव तुअ पाश॥

× × ×

माधव सो अब सुन्दरि वाला।
अविरत नयने वारि झरु निर्झर जनु घन-साओन माला॥
पुनमिक इन्दु निन्दि मुख सुन्दर से भेल अब ससि-रेहा।
कलेवर कमल कांति जिनि कामिनी दिने दिने खीन भेल देहा॥
उपवन हेरि मुरछि पड़ु भूतले चिन्तित सखीगन संग।
पद अंगुलि देइ खिति पर लिखइ पानि कपोल अवलम्ब॥
ऐमन हेरि तुरिते हम आओलुँ अब तुहुँ करह विचार।
विद्यापति कह निकरुन माधव बुझलु कुलिसक सार॥

× × ×

माधव ओ नवनायरि वाला।
तुहूँ विछुरलि विहि कटावलि भेलि निमालिक माला॥
से जे सोहागिनी खेदे दिन गिनि पन्थ निहारइ तोरा।
निचल लोचन ना शुने वचन ढरि ढरि पड़ु लोरा॥
तोहरि मुरली से दिग छोड़लि झामर झामर देहा।
जनु से सोनारे कसि कसटिक तेजल कनह रेहा॥

फुयल कबरि न बान्धे सम्बरि धनि जे अवस एता।
रुखलि भुखलि दुखलि देखलि सखिनि-सङ्ग समेता॥
उससि उससि पड़ु खसि खसि आलि-आलिगन चाहे।
याकर वेयाधि पराधिन औखधि ताकर जीवन काहे॥
भनइ विद्यापति करिये शपति आर अपरुप कथा।
भ'वित भावित तोहारि चरित भरम होइल यथा॥

× × ×

अनुखन माधव माधव सोङरिते सुन्दरि भेलि मधाई।
ओ निज भाव सभावहि विसरल आपन गुन लुबुधाई॥
माधव, अपरूप तोहारि सिनेह।
अपने विरह अपन तनु जरजर जिवइते भेल सन्देह॥
भोरहि सहचरि कातर दिठि हेरि छल छल लोचन पानि।
अनुखन राधा राधा रटइत आधा आधा कहु वानि॥
राधा सयें जब पुनतहि माघव माधव सयें जब राधा।
दारुन प्रेम तबहि नहि टूटत बाढ़त विरहक बाधा॥
दुहु दिशे दारुदहने जैसे दगधइ आकुल कीट परान।
ऐसन वल्लभ हेरि सुधामुखि कवि विद्यापति भान॥

ढोला-मारूरा दूहा

गाहा

पूगळि पिंगळ राऊ, नळ राजा नरवरे नयरे।
अदिठा दूरिट्ठा ये, सगाई दईय संजोगे॥

दोहा

पूगळ देस दुकाळथियुँ, किणहीं काळ विसेसि।
पिंगळ ऊचाळउ कियउ, नळ नरवरचइ देसि॥
नळराजा आदर दियउ, जउ राजवियाँ जोग।
देस वास सवि रावळा, अइ घोड़ा अइ लोग॥
नरवर नळराजा-तणउ, ढोलउ कुँवर अनूप।
राणि राउ पिंगळ-तणी, रीझी देखे रूप॥
पिंगळ-पुत्री पदमिणी, मारवणी तिणि नाँम।
जोड़ी जोइ विचारियउ, धन्न विधाता - काँम॥

सारीखी जोड़ी जुड़ी, आ नारी अउ नाह।
रॉणी राजासूँ कहइ, कीजइ अउ वीमाँह ॥
राजा राँणीनूँ कहइ, वात विचारउ जोइ।
आज विखइ द्याँ दीकरी, हाँसउ हसिसी लोइ ॥
अंब तजइ नहि कोइलाँ, सरवर सालूराह।
राज हिवइ मा पाँतरउ, आ धण द्यउ अवराँह ॥
ज्यूँ थे जाणउ त्यूँ करउ, राजा आइस दीध।
राणी राजानूँ कहइ, ओ म्हाँ नातरउ कीध ॥
ढोलउ-मारू परणिया, वरदळ हुवउ उछाह।
आ पूगळची पदमिणी, अउ नरवरचउ नाह ॥
पिंगल पूगल आवियउ, देसे थयउ सुगाळ।
तेणि न राखी सासरइ, अजे स मारू बाळ ॥
जिम जिम मन अमले किअइ, तार चढंती जाइ।
तिम तिम मारवणी-तणइ, तन तरणापउ थाइ ॥
हंस चलण, कदळीह जँघ, कटि केहर जिम खीण।
मुख सिसहर खंजर नयण, कुच श्रीफळ, कँठ वीण ॥
असइ आरखइ मारुवी सूती सेज विछाइ।
साल्हकुँवर सुपनइँ मिल्यउ, जागि निसासउ खाइ ॥
ऊलंवे सिर हथ्थड़ा, चाहंदी रस - लुध्ध।
विरह-महाधण ऊमट्यउ, थाह निहाळइ मुध्ध ॥
उक्कंवी सिर हथ्थड़ा, चाहंती रस - लुध्य।
ऊँची चढि चातृंगि जिउँ मागि निहालइ मुध्ध ॥
थाह निहालइ, दिन गिणइ, मारू आसा-लुध्ध।
परदेसे घाँघल घणा, विखउ न जाणइ मुध्ध ॥
ऊनमियऊ उत्तर दिसइँ, गाज्यउ गुहिर गँभीर।
मारवणी प्रिउ संभर्यऊ, नयणे वूठउ नीर ॥
मारूनूँ आखइ सखी; आज स काँइ उदास।
काँम-चित्राँम जु दिट्ठ मइँ, रूप न भूलइ तास ॥
अम्हाँ मन अचरिज भयउ, सखियाँ आखइ एम।
तइँ अणदिट्ठा सज्जणाँ किउँ करि लग्गा पेम ॥
जे जीवण तिन्हाँ-तणा तन ही माँहि वसंत।
धारइ दूध पयोहरे बाळक किम काढंत ॥

ससनेही समदाँ परइ, वसत हिया मंझार ।
कुसनेही घर आँगणई, जाँण समंदाँ पार ॥
सखिए सज्जण वल्लहा, जइ अणदिट्ठा तोइ ।
खिण खिण अंतर संभरइ, नहीं विसारइ सोइ ॥
मारूनूँ आखइ सखी, एह हमारी बुज्झ ।
साल्हकुंवर सुहिणइ मिल्यउ, सुंदरि, सउ वर तुज्झ ॥
सखी-वयण सुंदरि सुण्या, उठी मदन की झाळ ।
सुंदरिनूँ सज्जण-विरह ऊपन्नउ ततकाळ ॥
हे सखिए, परदेस प्री, तनह न जावइ ताप ।
वावहियउ आसाढ जिम विरहणि करइ विलाप ॥
वाबहियउ नइ विरहणी, दुहुवाँ एक सहाव ।
जब ही वरसइ घण घणउ, तबही कहइ प्रियाव ॥
वावहिया, चढि गउखसिरि, चढि ऊँचइरी भीत ।
मत ही साहिब वाहुड़इ, कउ गुण आवइ चीत ॥
वावहिया, चढि डूगरे, चढि ऊँचइरी पाज ।
मत ही साहिब वाहुड़इ, सुणि मेहाँरी गाज ॥

सोरठा

वावहिया, तूँ चोर, थारी चाँच कटाविसूँ ।
राति ज दीन्ही लोर, मइँ जाण्यउ प्री आवियउ ॥

दोहा

वावहिया निल-पंखिया, मगर ज काली रेह ।
मति पावस सुणि विरहणी तळफि तळफि जिउ देह ॥
वावहिया तर-पंखिया, तइँ किउँ दीन्ही लोर ।
मइँ जाण्यउ प्रिउ आवियउ ससहर चंद चकोर ॥
वावहिया निल-पंखिया, वाढत दइ दइ लूण ।
प्रिउ मेरा मइँ प्रीउकी, तूँ प्रिउ कहइ स कूण ॥
वाबहिया रत - पंखिया, बोलइ मधुरी वांणि ।
काइ लवंतउ माठि करि, परदेसी प्रिउ आंणि ॥
वावहिया प्रिउ प्रिउ न कहि, प्रिउ को नाम न लेह ।
काइक जागइ विरहणी, प्रीउ कह्याँ . जिउ देह ॥

बाबहिया डूँगर-दहण, छांडि हमारउ गाँम।
सारी रात पुकारियउ लइ लइ प्रिउकउ नाँम॥
[चहुँ दिसि दामिनि सघन घन, पीउ तजी तिण वार।
मारू मर चातग भए, पिउ पिउ करत पुकार॥
पावस आयउ साहिबा, बोलर लागा मोर।
कंता, तूँ घरि आव नवि, जोवन कीयउ जोर॥
गिरिवर मोर गहक्किया, तरवर मँक्या पात।
धणियाँ धण सालण लगा, वूठैतौ बरसात॥
राजा, परजा, गुणिय-जण, कवि-जण, पंडित, पात।
सगळाँ मन ऊछव हुअउ, वूठैतौ बरसात॥
ऊनमि आई बद्दळी, ढोलउ आयउ चित्त।
यो बरसइ रितु आपणी, नइण हमारे नित्त॥
ऊनमीयऊ उत्तर दिसइँ मेड़ी ऊपर मेह।
ते विरहिणि किम जीवसे, ज्याँरा दूर सनेह॥
ऊनमीयऊ उत्तर दिसइँ काळी कंठळि मेह।
हूँ भीजूँ घर-अंगणइ, पिउ भीजइ परदेह॥
वीजुळियाँ चहलावहलि आभइ आभइ एक।
कदी मिलूँ उण साहिवा कर काजळ की रेख॥]
वीजुळियाँ चहलावहलि आभइ आभइ च्यारि।
कद रे मिलउँली सजना लाँबी बाँह पसारि॥
वीजुळियाँ चहलावहलि आभय आभय कोडि।
कद रे मिलउँली सज्जना कस कंचूकी छोडि॥
गिरह पखालण, सर भरण, नदी हिंडोलणहारि।
सूती सेजइँ एकली, हइ हइ दइव म मारि॥
दादुर-मोर टवक्क घण, बीजलड़ी तरवारि।
सूती सेजइँ एकली, हइ हइ दइव म मारि॥
जळ थळ, थळ जळ हुइ रह्यउ, बोलइ मोर किँगार।
सावण दूभर हे सखी, किहाँ मुझ प्राण-अधार॥
बिज्जुळियाँ नीळज्जियाँ जळहर तूँ ही लज्जि।
सूनी सेज़, विदेस प्रिय, मधुरइ मधुरइ गज्जि॥
राति सखी इणि ताल मइँ काइ ज कुरळी पंखि।
उवै सरि, हूँ घरि आपणइ, बिहूँ न मेळी अंखि॥

ए सारस कहिजइ, पसू पंखी केरा राव।
उवै बोल्या सर ऊपरइ थाँ कीधी अणुराव ॥
राति जु सारस कुरळिया, गुंजि रहे सब ताल।
जिणकी जोड़ी बीछड़ी, तिणका कवण हवाल ॥
कूँझड़ियाँ करळव कियउ घरि पाछिले वणेहि।
सूती साजण संभरथा, द्रह भरिया नयणेहि ॥
कूँझड़ियाँ कळरव कियउ घरि पाछिले दरंगि।
सूती साजण संभरथा, करवत बूही अंगि ॥
कूँझड़ियाँ कुरळाइयाँ ओलइ बइसि करीर।
सारहली जिउँ सल्हियाँ सज्जण मंझ सरीर ॥
मंझि समंदा वींट घर, जळसूँ जामोपत्त।
किणहीं अवगुण कूँझड़ी, कुरली मांझिम रत्त ॥
कुंझड़िया कळिअळ कियउ, सुणी उ पंखइ वाइ।
ज्याँकी जोड़ी बीछड़ी त्याँ निसि नींद न आइ ॥
कूँझड़ियाँ कळिअळ कियउ, सरवर पइलइ तीर।
निसिभरि सज्जण सल्लियाँ, नयणे वूहा नीर ॥

सोरठा

मारवणी मनि रंगि, वाटइ तिणि आवी वहइ।
कुँझी एकणि संगि, तालि चरंती दिट्ठियाँ ॥

दोहा

आडा डूँगर, दूरि घर, वणइ न जाणइ भत्त।
सज्जण-सन्दइ कारणइ हियउ हिलूसइ नित्त ॥
कुंझा, द्यउ नइ पंखड़ी, थाकउ विनउ वहेसि।
सायर लंबी प्री मिलउँ, प्री मिलि पाछी देसि ॥
म्हे कुरझाँ सरवर-तणा पाँखाँ किणहिँ न देस।
भरिया सर देखी रहाँ, उड़ आघेरि वहेस ॥
उत्तर दिसि उपराठियाँ, दक्षिण साँमहियाँह।
कुरझाँ एक सँदेसड़उ ढोलानइ कहियाँह ॥
माणस हवाँ त मुख चवाँ, म्हे छाँ कूँझड़ियाँह।
प्रिउ संदेसउ पाठविसु, लिखि दे पंखड़ियाँह ॥

पाँखे पाँणी थाहरइ, जळि काजळ गळिलाइ ।
सयणाँ-तणाँ संदेसड़ा, मुख वचने कहवाइ ॥

तालि चरंती कुंझड़ी, सर संधियउ गँमार ।
कोइक आखर मनि वस्यउ, ऊडी पंख सँमार ॥

जिम जिम सज्जण-संभरइ, तिम तिम लग्गइ तीर ।
पंख हुवइ तो जाइ मिलि, मनाँ बँधाँड़ाँ धीर ॥

आडा डूँगर, वन घणा, खरा पियारा मित्त ।
देह विधाता, पंखड़ी, मिलि मिलि आवउँ नित्त ॥

आडा डूँगर, भुइ घणी, सज्जण रहइ विदेस ।
माँगी-ताँगी पंखुड़ी केती वार लहेस ॥

पाँखड़ियाँ ई किउँ नहीँ, दैव अवाहू ज्याँह ।
चकवीकइ हइ पंखड़ी, रयणि न मेळउ त्याँह ॥

आडा डूँगर, भुइँ घणी, तियाँ मिळीजइ एम ।
मनिहूँ खिणहि न मेल्हियइ, चकवी दिणियर जेम ॥

ज्यूँ ए डूँगर संमुहा, त्यूँ जइ सज्जण हुंति ।
चंपावाड़ी भमर ज्यउँ, नयण लगाइ रहंति ॥

जिणि देसे सज्जण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाउ ।
उआँ लगे मो लग्गसी, ऊ ही लाख पसाउ ॥

कउआ, दिउँ वधाइयाँ, प्रीतम मेळइ मुज्झ ।
काढि कळेजउ आपणउ भोजन दिउँली तुज्झ ॥

जव सोऊँ तव जागवइ, जव जागूँ तव जाइ ।
मारू ढोलउ संभरइ, इणि परि रयण विहाइ ॥

सखियाँ रॉणीसूँ कहइ, मारू-मन, भाँणी ।
साल्हकुँमर पासइ विना, पदमिणि कुँमलाँणी ॥

सखियाँ रॉणीसूँ कहइ, तनह न जावइ ताप ।
साल्ह-विरह तिल तिल मइँ, मारू करइ विलाप ॥

इणि परि ऊमा देवड़ी जाणी मारू-वत्त ।
सु प्रभाति कहिवाभणी, पिंगळ पासि पहुत्त ॥

आखय ऊमा देवड़ी, संभळि पिंगळ राइ ।
विरह-वियापी मारुई, नहिँ राखणकउ दाइ ॥

नितु नितु नवला सांढ़िया, नितु नितु नवला साजि ।
पिंगळ राजा पाठवइ, ढोला तेड़न काजि ॥

न को आवइ पूगळइ, सहु को नरवर जाइ।
मारू-तणा संदेसवा वगड़ विचाहू खाइ॥
एक दिवस पूगळ सहर, सउदागर आवंत।
तिणपइ घोड़ा अति घणा, वेच्या लाख लवंत॥
पिंगळ राजानूँ मिल्यउ, सउदागर तिणि वार।
राज-दुवारइ तेड़ियउ, आदर करे अपार॥
सउदागर पिंगळ मिल्यउ, बहुत दियउ सनमाँन।
रात-दिवस प्रेमइ मिल्यउ, इम पिंगल राजाँन॥
सउदागर राजा तिहाँ बइठा मंदिर मंझ।
मारू दीठी अउभकइ, जांणि खिवी घण संझ॥
सुंदरि, सोवन वर्ण तसु, अहर अलत्ता रंगि।
केसरि लंकी, खीण कटि, कोमल नेत्र कुरंगि॥
सउदागर खवासनूँ पूछइ, लइ तिण मन्न।
दीसइ रायंगणमहीँ कुँवरी कंचन-व्रन्न॥
ते देखी, तिणि पूछियउ, कुण ए राजकुमारि।
किह पीहर, किह सासरउ, विगतइ कहइ विचारि॥
कुँवरी पिंगळ रायनी, मारुवणी तसु नाँम।
नरवरगढ़ ढोलइ भणी परणी पुहकर ठाँम॥
दउढ वरसरी मारुवी, त्रिहुँ वरसाँरउ कंत।
बाळपणइ परणयाँ पछइ, अंतर पड़्यउ अनंत॥
सउदागर राजा कन्हे अरज करइ एकंति।
साल्हकुँवर सूँ वीनती कहि किण दाखूँ भंति॥
सल्हकुवर सुरपति जिसउ रूपे अधिक अनूप।
लाखाँ वगसइ माँगणा, लाख भड़ाँ सिर भूप॥
माळवगढ़ राजा सुधू, कुँवरी माळवणीह।
ढोलइ तिण वहु प्रीति छइ अति रंग नेह घणीह॥
मइँ घोड़ा वेच्या घणा, रहियउ मास चियारि।
राति दिवस ढोलइ कन्हइ, रहतउ, राज दुवारि॥
राजा, कउ जण पाठवइ, ढोलइ निरति न होइ।
माळवणी मारइ तियउ, पूगळ पंथ जिकोइ॥
सउदागर राजसुँ कह, सुणउ हमारी कथ्थ।
मारवणी छानी रही, से माळवणी तथ्थ॥

सही समाँणी साथि करि, मंदिरकूँ मल्हपंत ।
सउदागर-नेड़ी वहइ, सुणिवा प्रीतम-वत्त ॥
सउदागर संदेसड़ा, साँभळिया स्रवणेहि ।
मारुवणी ते मन दहइ, मूक्यउ जळ नयणेहि ॥
सउदागर राजा कन्हइ, कहियउ एह विचार ।
राँणी राय विमासियउ, तेड़इ, साल्हकुमार ॥
राजा प्रोहित तेड़ियउ, तूँ जाइ ढोलउ ल्याव ।
सखियाँ मारूनूँ कहइ, हुवउ अणंद उछाव ॥
राँणी राजानूँ कहइ, मेल्हउ माँगणहार ।
माँगणगारा रीझवइ, ल्यावइ साल्हकुमार ॥
राजा प्रोहित राखिजइ, जिण की उत्तिम जाति ।
मोकलि धररा मंगता, विरह जगावइ राति ॥
पाछइ प्रोहित राखियउ, तेड़या माँगणहार ।
जे भेदक गीताँ-तणा, वात करइ सुविचार ॥
ढाढी गुणी बोलाविया राजा तिणही ताळ ;
नरवरगढ़ ढोलइ-कन्हइ जावउ वागरवाळ ॥
सीख करे पिंगळ कन्हाँ, घर आया तिणि वार ।
मेल्हि सखी तेड़ाविया मारू माँगणहार ॥
मारू सनमुख तेड़िया, दियण संदेसा कज्ज ।
कहउ कदे थे चालिस्यउ, काँइ विहाणइ अज्ज ॥
आज निसह म्हे चालिस्याँ, वहिस्याँ पंथी-वेस ।
जउ जीव्या तउ आविस्याँ, मुया त उणिहिज देस ॥
मारुवणी भगताविया मारू राग निपाइ ।
दूहा संदेसाँ - तणाँ दीया तियाँ सिखाइ ॥
नरवर देस सुहाँमणउ, जइ जावउ पहियाह ।
मारू - तणा संदेसड़ा ढोलइनूँ कहियाह ॥
संदेसा ही लख लहइ, जउ कहि जाणइ कोइ ।
ज्यूँ धणि आखइ नयण भरि, ज्यँउ जइ आखइ सोइ ॥
ढाढी, एक संदेसड़उ प्रीतम कहिया जाइ ।
सा धण बलि कुइला भई, भसम ढँढोलिसि आइ ॥
ढाढो, जे प्रीतम मिलइ, यूँ कहि दाखवियाह ।
पंजर नहिं छइ प्राणियउ, थाँ दिस झळ रहियाह ॥

पंथी, एक संदेसड़उ, भल माणसनइ भख्ख ।
आतम तुझ पासइ अछइ, ओळग रूड़ा रख्ख ॥
ढाढी, जे राज्यँद मिलइ, यूँ दाखविया जाइ ।
जोवण-हस्ती मद चढ्यउ, अंकुस लइ घरि आइ ॥
ढाढी, जे साहिब मिलइ, यू दाखविया जाइ ।
आँख्याँ-सीप विकासियाँ, स्वाति ज बरसउ आइ ॥
ढाढी, एक संदेसड़उ कहि ढोला समझाइ ।
जोवण-आँबउ फल रह्यउ, साख न खाअउ आइ ॥
ढाढी, जइ प्रीतम मिलइ, यूँ दाखविया जाइ ।
जोवण छत्र उपाड़ियउ, राज न बइसउ काइ ॥
ढाढी, जइ साहिब मिलइ, यूँ दाखविया जाइ ।
जोवण-कमळ विकासियउ, भमर न। वइसइ आइ ॥
ढाढी, एक संदेसड़उ ढोलइ लगि लइ जाइ ।
जोवन चाँपउ मउरियउ, कळी न चुट्टइ आइ ॥
ढाढी, एक संदेसड़उ ढोलइ लगि लइ जाइ ।
कण पाकउ, करसण हुअउ, भोग लियउ घरि आइ ॥
ढाढी, एक संदेसड़उ ढोलइ लगि लइ जाइ ।
जोवण फट्टि तलावड़ी, पाळि न बंधउ काँइ ॥
पंथी, एक संदेसड़उ लग ढोलउ पैहचाइ ।
विरह-महादव जागियउ, अगिन बुझावउ आइ ॥
पही, भमंता जइ मिलइ, तउ प्री आखे भाय ।
जोवण बंधन तोड़सइ, बंधण घातउ आय ॥
पंथी, एक संदेसड़उ लग ढोलइ पैहचाइ ।
निकस वेणी-सापणी, स्वात न वरसउ आइ ॥
पंथी, एक संदेसड़उ लग ढोलइ पैहचाइ ।
तन मन उत्तर बाळियउ, दख्खिण वाजइ आइ ॥
पंथी, एक संदेसड़इ लग ढोलइ पैहचाइ ।
विरह-महाविस तन वसइ, ओखद दियइ न आइ ॥
पंथी, एक संदेसड़इ लग ढोलइ पैहचाइ ।
विरह-वाघ वनि तनि वसइ, सेहर गाजइ आइ ॥
पंथी, एक संदेसड़इ लग ढोलइ पैहचाइ ।
धँण कँमलाँणी, कमलणी, सिसहर ऊगइ आइ ॥

पंथी, एक संदेसड़इ लग ढोलइ पैहच्याइ ।
धॅण कॅमलाँणी कॅमलणी, सूरिज ऊगइ आइ ।।

पंथी, एक संदेसड़उ लग ढोलइ पैहच्याइ ।
जोबन खीर समुंद्र हुइ, रतन ज काढइ आइ ।।

पंथी, एक संदेसड़इ लग ढोलइ पैहच्याइ ।
जंघा-केळिनि फळि गई, स्वात जु वरसउ आइ ।।

पंथी, एक संदेसड़उ लग ढोलइ पैहच्याइ ।
सावज संबल तोड़स्यइ, वैसासणइ न जाइ ।।

पंथी, एक संदेसड़उ लग ढोलइ पैहच्याय ।
जोबन जायइ प्राहुणउ वेमइरउ घर आय ।।

पही, भमंतउ जउ मिलइ, कहे अम्हीणी वत्त ।
धण कॅणयररी कंब ज्यउँ, सूकी तोइ सुरत्त ।।

पंथी, एक संदेसड़उ कहिज्यउ सात सलॉम ।
जबथी हमतुम वीछड़े, नयणे नींद हरॉम ।।

पंथी - हाथ संदेसड़इ, धण विललंती देह ।
पगसूॅ काढइ लीहटी, उर आँसुआँ भरेह ।।

ढोला, ढीलो हर किया, मूॅक्या मनह विसारि ।
संदेसउ हन पाठवइ, जीवाँ किसइ अधारि ।।

ढोला, ढीली हर मुझ दीठउ घणो जणेह ।
चोल - वरन्ने कप्पड़े, सावर धन अणेह ।।

कागळ नहीं, क मस नहीं, नहीं क लेखणहार ।
संदेसा ही नाविया, जीवुॅ किसइ आधार ।।

कागळ नहीं, क मसि नहीं, लिखतॉं आळस थाइ ।
कइ उण देस संदेसड़ा, मोलइ वड़इ विकाइ ।।

सोरठा

वायस वीजउ नॉम, ते आगलि लल्लउ ठवइ ।
जइ तू हुई सुजोॅड़, तउ तूॅ वहिलउ मोकळे ।।

दोहा

संदेसउ जिन पाठवइ, मरिस्यउँ हीया फूटि ।
पारेवाका भूल जिउँ, पड़िनइँ आँगणि त्रूटि ।।

संदेसा मति मोकळउ, प्रीतम, तूँ आवेस।
आँगलड़ी ही गळि गयाँ, नयण न वाँचण देस॥

फागुण मासि वसंत रुत आयउ जइ न सुणेसि।
चाचरिकइ मिस खेलती, होळी झंपावेसि॥

जइ तूँ ढोला नावियउ, कइ फागुण कइ चेत्रि।
तउ म्हे घोड़ा बांधिस्याँ, काती कुड़ियाँ खेत्रि॥

जउ साहिव तू नावियउ, मेहाँ पहलइ पूर।
विचइ वहेसी वाहळा, दूर स दूरे दूर॥

सज्जणिया, सावण हुया, धड़ि उलटी भंडार।
विरह - महारस ऊमटइ, के ताकहूँ सँभार॥

जउ तूँ साहिब, नावियउ सावण पहिली तीज।
बीजळ - तणइ झबूकड़इ मूँध मरेसी खीज॥

जइ तूँ ढोला, नावियउ काजळियारी तीज।
चमक मरेसी मारवी, देख खिवंताँ वीज॥

बीजुलियाँ जालउमिल्याँ, ढोला, हूँ न सहेसि।
जउ आसाढ़ि न आवियउ, सावण समकि मरेसि॥

वीज, न देख चहड्डियाँ प्री परदेस गयाँह।
आपण लीय झबुक्कड़ा, गळि लागी सहराँह॥

वीजुळियाँ पारोकियाँ नीठ ज नीगमियाँह।
अजइ न सज्जन वाहुड़े, वळि पाछी वळियाँह॥

जउ तूँ ढोला, नावियउ मेहाँ नीगमताँह।
किया करायइ सज्जणा, दाधा मांहि घणाँह॥

वहिलउ आए वल्लहा, नागर चतुर सुजाँण।
तुझविण धणविलखी फिरइ, गुणविन लाल कमाण॥

राति ज रूँनी निसह भरि, सुणी महाजनि लोइ।
हाथळी छाला पड़या, चीर निचोइ निचोइ॥

ढोला, मिलिसिमवीसरिसि, नवि आविसि, नालेसि।
मारू - तणइ करंकडइ वाइस ऊडावेसि॥

हियड़इ भीतर पइसि करि ऊगउ सज्जण रूँख।
नित सूकइ नित पल्हवइ, नित नित नवला दूख॥

अकथ कहाणी प्रेमकी किणसूँ कही न जाइ।
गूँगाका सुपना भया, सुमर सुमर पिछताइ॥

प्रीतम, तोरइ कारणइ ताता भात न खाहि।
हियड़ा भीतर प्रिय वसइ, दाझणती डरपाहि॥
चंदण - देह कपूर - रस सीतळ गंग - प्रवाह।
मन - रंजण, तन - उल्हवण, कदे मिलेसी नाह॥
मत जाणे प्रिउ, नेह गयउ दूर विदेस गयाँह।
विवणउ वाधइ सज्जणाँ ओछउ ओहि खळाँह॥
हूँ कुँमलाणी कंत विण, जळह विहूणी वेल।
विणजारारी भाइ जिउँ गया धुकंती मेलह॥
आडा डूँगर, वन घणा, आडा घणा पलास।
सो साजण किम वीसरइ, वहु गुणतणा निवास॥
आँखड़ियाँ डंवर हुई, नयण गमाया रोय।
से साजण परदेसमइँ ल्ह्या विटाणा होय॥
मुख नीसाँसाँ मूँकती, नयणे नीर प्रवाह।
सूळी सिरखी सेझड़ी तो विण जाणे नाह॥
वालँभ, एक हिलोर दे आइ सकइ तउ आइ।
वाँहड़ियाँ वे थक्कियाँ काग उडाइ उडाइ॥
जिम सालूराँ सरवराँ, जिम धरणी अर मेह।
चंपावरणी वालहा, इम पाळीजइ नेह॥
वालिभ गरथ वसीकरण, वीजा सहु अकयथ्थ।
जिए चड्या दळ उत्तरइ, तरुणि पसारइ हथ्थ॥
वासर चित्त न वीसरइ, निसिभरि अवर न कोइ।
जइ निद्रा-भरि भोगवूँ, तउ सुपनंतरि सोइ॥

सोरठा

जेती जउ मनमाहि, पंजर जइ तेती पुळइ।
मनि वइराग न थाइ, वालँभ वीछुड़ियाँ तणी॥

दोहा

फूलाँ फळाँ निघट्टियाँ, मेहाँ धर पड़ियाँह।
परदेसाँका सज्जणा, पत्तीजूँ मिळियाँह॥
सालूरा पाँणी विना रहइ विलक्खा जेम।
ढाढी, साहिवसूँ कहइ, मो मन तो विण एम॥

पावस मास, विदेस प्रिय घरि तरुणी कुळसुध्ध।
सारँग सिखर, निसद्द करि, मरइ स कोमळ मुध्ध ॥
तुँही ज सज्जण, मित्त तूँ, प्रीतम तूँ परिवाँण।
हियड़इ भीतरि तूँ वसइ, भावइँ जाँण म जाँण ॥
हूँ बळिहारी सज्जणाँ, सज्जण मो बळिहार।
हूँ सज्जण पग पानही, सज्जण मो गळहार ॥
लोभी ठाकुर, आवि घरि, काँई करइ विदेसि।
दिन दिन जोवण तन खिसइ, लाभ किसाकउ लेसि ॥
बहु धंधाळू आव घरि, काँसू करइ वदेस।
संपत सघळी संपजे, आ दिन कदी लहेस ॥
अवसर जे नहिं आविया, वेळा जे न पहुत्त।
सज्जण तिण संदेसड़इ करिज्यउ राज बहुत्त ॥

सोरठा

संभारियाँ सँताप, वीसारिया न वीसरइ।
काळेजा विचि काप, परहर तूँ फाटइ नहीं ॥

दोहा

यहु तन जारी मसि करूँ, धूँआ जाहि सरग्गि।
मुझ प्रिय बद्दल होइ करि, बरसि बुझावइ अग्गि ॥
भरइ, पळट्टइ, भी भरइ, भी भरि, भी पळटेहि।
ढाढी-हाथ संदेसड़ा धण विललंती देहि ॥
दूहा संदेसा मिसइँ दीधा तिणा सिखाइ।
प्रीतम आगळि वीनती करिया इणि विधि जाइ ॥
स्रवण संदेसा साँभळे ढाढी किया प्रयाँण।
मागरवाळ जु आविया देसे साल्ह सुजाँण ॥
पूगळहूँताँ पुहकरइ ढाढी कीध प्रयाँण।
माळवणीका माणसाँ आए मिल्या अजाँण ॥
ढाढी रात्यूँ ओळग्या, गाया बहु बहु भंत।
माँगण-पंथी जांणि कइ, तव छंडिया निचंत ॥
वागरवाळ विचारियउ, ए मति उत्तिम कीध।
साल्ह-महलहूँ ढूकड़ा ढाढी डेरउ लीध ॥

ढाढी गाया निसह भरि राग मल्हार निवाज।
च्यार पहर झड़ मंडियउ, घण गुहिरइ सुरगाज॥

सिंधु परइ सउ जोयणाँ खिवियाँ वीजुळियाँह।
ढोलउ नरवर सेरियाँ, धण पूगळ गळियाँह॥

सिंधु परइ सत जोअणे खिवियाँ वीजळियाँह।
सुरहउ लोद्र महक्कियाँ, भीनी टोवड़ियाँह॥

सिंधु परइ सउ जोअणे नीवी खिवइ निहल्ल।
उर भेदंती सज्जणाँ, ऊचेड़ंती सल्ल॥

ढाढी गाया निसह भरि, सुणियउ साल्ह सुजाँण।
ओळइ पाँणी मच्छ ज्यउँ वेलत थयउ विहाँण॥

दुख-वीसारण, मनहरण, जउ ई नाद न हुँति।
हियड़उ रतन-तळाव ज्यउँ फूटी दह दिसि जंति॥

मंदिरहूँताँ ऊतर्‌यउ रवि ऊगंतइ वार।
माँगणहार बोलाविया पूछण तास विचार॥

कवण देसतइँ आविया, किहाँ तुम्हारउ वास।
कुँण ढोलउ, कुँण मारुवी, राति मल्हाया जास॥

पूगळहुँता आविया, पूगळ म्हाँकउ वास।
पिंगळ राजा तास धू मेल्ह्या थाँकइ पास॥

मारुवणी पिंगळ सुधू, अपछररइ उणिहार।
बाळपणइ परणी पछइ, भूल न कीन्ही सार॥

दुज्जण वयण न संभरइ, मनाँ न वीसारेह।
कूँझाँ लाल बचाँह ज्यउँ खिण खिण चीतारेह॥

सजण, दुज्जण के कहे भड़िक न दीजइ गालि।
हळिवइ हळिवइ छंडियइ जिम जळ छंडइ पाळि॥

संदेसे ही घर भरयउ कइ अंगणि कइ वार।
अवसि ज लग्गा दीहड़ा, सेई गिणइ गँवार॥

जळमंहि वसइ कमोदणी, चंदउ वसइ अगासि।
ज्यउ ज्याँहीकइ मनि वसइ, सउ त्याँही कइ पासि॥

चुगइ, चितारइ, भी चुगइ, चुगि चुगि चित्तारेह।
कुरझी बच्चा मेल्हिकइ, दूरि थकाँ पाळेह॥

चीतारंती बुगतियाँ कुंझी रोवहियाँह।
दूराहुँता तउ पलइ, जऊ न मेल्ह हियाँह॥

दिसि चाहंती सज्जणा, नेहाळंदी मुंध।
सा धण कुझि-अचाह ज्यउँ, लंबी थई तु कंध॥

चीतारंती सज्जणा, नीहाळंती मग्ग।
धण कुझाह - अचाहि, जिउँ लाँबा हूया पग्ग॥

आसालुध्धी हूँ न मुइय, सज्जन - जंजाळेइ।
मारू सेकइ हथ्थड़ा, झीणे अंगारेइ॥

चंदमुखी, हंसा - गमणि, कोमळ दीरघ केस।
कंचन-वरणी कामनी, वेगउ आवि मिलेस॥

ढोलइ मनि आरति हुई, सांभळि ए विरतंत।
जे दिन मारू विण गया, दई न ग्याँन गिणंत॥

माँगणहारा सीख दी, ढोलइ तिणहि ज ताळ।
सोवन-जड़ित सिंगार दे, नाँख्यउ दळिद उलाळ॥

माँगणहाराँ सीख दी, आयउ मंदिर मांहि।
ढोलइ मन आणँद भयउ, मारूतणइ उछाहि॥

मन सींचाणउ जइ हुवइ, पाँखाँ हुवइ त प्राँण।
जाइ मिलीजइ साजणाँ, डोहीजइ म्हिराँण॥

आडा डूँगर वन घणा, ताँह मिलीजइ केम।
कनाळीजइ मूँठ भरि, मन सींचाणउ जेम॥

इहाँ सु पंजर मन उहाँ, जय जाणइला लोइ।
नयणा आडा वींझ वन, मनह न आडउ कोइ॥

जिउँ मन पसरइ चिहुँ दिसइ, जिम जउ कर पसरंति।
दूरि थकाँ ही सज्जणाँ, कंठा ग्रहण करंति॥

मालवणी सिणगार सझि, आई वालॅभ पास।
मन संकोची पदमिणी, प्रीतम देखि उदास॥

जेहा सज्जण काल्ह था, तेहा नाँहीं अज्ज।
माथि त्रिभूळउ, नाक सळ, कोइ विणट्ठा कज्ज॥

मनह सँकाणी माळवणि, प्रियु कांई चलचित्त।
कइ मारुवणी सुधि सुणी, कइ का नवली वित्त॥

साहिब हँसउ न बोलिया, मुझसूँ रीस ज आज।
अंतरि आमणदूमणा, किसउ ज इवड़उ काज॥

चिंता डाइणि ज्याँ नराँ, त्याँ दृढ अंग न थाइ।
जइ धीरा मन धीरवइ, तउ तन भीतर खाइ॥

चिंता बंध्यउ सयळ जग, चिंता किणहि न बिध्ध ।
जे नर चिंता वस करइ, ते माणस नहि सिध्ध ॥

माळवणी, तूँ मन-समी, जाणइ सहू विवेक ।
हिरणाखी, हसिनइ कहइ, करउँ दिसाउर एक ॥

गढ नरवर अति दीपता, ऊँचा महल अवास ।
घरि कामिण हरणाखियाँ, किसउ दिसावर तास ॥

तंती-नाद तँबोळ-रस, सुरहि सुगंधउ जाँह ।
आसण तुरि घरि गोरड़ी, किसउ दिसाउर त्याँह ॥

ईडरकी धर अउळगउँ, जइ तूँ कहइ तु जाँह ।
अउथि घड़ाकँ आभरन माल्हवणी, मेलाँह ॥

ईडरकी धर अउलगण, हूँ तउ जाण ण देसि ।
घरि वइठाही आभरण, मोल मुहंगा लेसि ॥

मुळताणी धर मन वसी, सुहँगा नइ सेलार ।
हिरणाखी, हसि नइ कहइ, आणउँ हेडि तुखार ॥

घरि वइठा ही आविस्यइ, लाखे-लियाँ लडंग ।
तिणिमइँ लेस्याँ टाळिमा, वाँकड़ मुहाँ विडंग ॥

काछी करह विथूँभिया, घड़ियउ जोइण जाइ ।
हरणाखी, जउ हसि कहइ, आणिसि एथि विसाइ ॥

साहिब, कछ्छ न जाइयइ, तिहाँ परेरउ द्रंग ।
भीभळ नयण सुवंक धण, भूलउ जाइसि संग ॥

सउ सहसे एकोतरे, सिरि मोतीहरि सुध्ध ।
नदी निवासउ उत्तरइ, आणूँ एक अविंध ॥

मरजीवउ पाँणी तणउ, साल्ह, उघटनइ खाइ ।
दुख सहणा, पुहरा दियण, कंत, दिसाउर जाइ ॥

गयगमणी, गूजर धरा आणाँ दखणी चीर ।
मनह सँकोडी माळवी, सोहइ तुझ्झ सरीर ॥

सहसे लाखे साटविसु, परिघळ आणाँ वेसि ।
घरि वइठा ही पीतमा, पट्टोळा पहिरेसि ॥

गाहा

दीसइ विवहचरीयं, जाणिज्जइ सयण दुज्जण सहावो ।
अप्पाणं च कळिज्जइ, हंडिज्जइ तेण पुहवीए ॥

साहिब, रहउन राखिया कोड़ि प्रकार कियाह।
का थाँ कांमिण मन वसी, का म्हाँ दूहवियाह ॥
वळि माळवणी वीनवइ हुँ प्री, दासी तुझ्झ।
का चिंता चित अंतरे सा प्री, दाखउ मुझ्झ ॥
ढोला आमण दूमणउ, नख ती खूदइ भीति।
हमथी कुण छइ आगळी, वसी तुहारइ चीति ॥
सुणि सुंदरि, सच्चउ चवाँ, भाँजइ मनची भ्रंति।
मो मारू मिळिवातणी, खरी विलग्गी खंति ॥
माळवणीकउ तन तप्यउ, विरह पसरियउ अंगि।
ऊभी थी खड़हड़ पड़ी, जाणे डसी भुयंगि ॥
छाँटी पाँणी कुमकुमइँ, वीझण वीझया वाइ।
हुई सचेती माळवी, प्री आगलि विललाइ ॥
थळ तत्ता लू साँमुही, दाझोला पहियाह।
म्हाँकउ कहियउ जउ करउ घरि वइठा रहियाह ॥
कहिए माळवणी तणइ, रहियउ साल्ह विमास।
ऊन्हाळउ ऊतारियउ, प्रगट्यउ पावस-मास ॥
गउखे वइठा एकठा, माळवणी नइ ढोल।
अंवर दीठउ ऊनयउ, तिम संभाय्यउ वोल ॥
पगि पगि पाँणी पंथसरि, ऊपरि अंवर-छाँह।
पावस प्रगट्यउ पदमिणी, कहउ त पूगळ जाँह ॥
लागे साद सुहाँमणउ, नस भर कुंझड़ियाँह।
जळ पोइणिए छाइयउ, कहउ त पूगळ जाँह ॥
जिण रुति वग पावस लियइ धरणि न मेल्हइ पाइ।
तिण रुति साहिव वल्लहा, कोइ दिसावर जाइ ॥
जिण रुति वहु पावस झरइ, वावहियउ वोलंत।
तिण रुति साहिव वल्लहा, को मंदिर मेल्हंत ॥
प्रीतम कामणगारियाँ थळ थळ वादळियाँह।
घण वरसंतइ सूकियाँ, लूसूँ पाँगुरियाँह ॥
कप्पड़, जीण, कमाण गुण भीजइ सव हथियार।
इण रुति साहिव ना चलइ, चालइ तिके गिमार ॥
वाजरियाँ हरियाळियाँ, विचि विचि वेलाँ फूल।
जउ भरि वूठउ भाद्र वउ, मारू देस अमूल ॥

धर नीली, धण पुंडरी, धरि गहगहइ गमार।
मारू-देस सुहामणउ, साँवणि साँझी वार॥

बावहियउ पिउ पिउ करइ, कोयल सुरँगइ साद।
प्रिय, तिण रुति आळिंग रह्याँ, ताह सुं किसउ सवाद॥

डूँगरिया हरिया हुआ, वणे झिंगोर्‌या मोर।
इणि रिति तीनइ नीसरइ, जाचक, चाकर, चोर॥

चोर मन आलस करि रहइ, जाचक रहइ लुभाइ।
राज्यँद, जे नर क्यउँ रहइ, माल पराया खाइ॥

फौज घटा, खग दाँमणी, बूँद लगइ सर जेम।
पावस पिउ विण वल्लहा, कहि जीवीजइ केम॥

नदियाँ, नाळा, नीझरण, पावस चढिया पूर।
करहउ कादिम तिलकस्यइ, पंथी पूगळ दूर॥

अति घण ऊनिमि आवियउ, झाझी रिठि झड़वाइ।
वग ही भला त वप्पड़ा, धरणि न मुक्कइ पाइ॥

पावस-मास प्रगट्टिउं, जगि आणंद विहाय।
बग ही भला जु वापड़ा, धरण न मेल्हइ पाय॥

जिण रुति वहु बादळ झरइ, नदियाँ नीर प्रवाह।
तिण रुति साहिव वल्लहा, मो किम रयण विहाय॥

च्यारइ पासइ घण घणउ, बीजलि खिवइ अगास।
हरियाली रुति तउ भली, घर संपति, पिउ पास॥

जिण दीहे पावस झरइ, बावीहउ, कुरळाइ।
तिणि दिनकउ दुख वल्लहा, मइँ क्यउँ सहणउ जाइ॥

जिण दीहे पावस झरइ, समनेहाँ सुख होइ।
तिणि दिन वयरी वल्लहा, सेज न मुक्कइ कोइ॥

महि मोराँ मंडव करइ, मनमथ अंगि न माइ।
हूँ एकलड़ी किम रहउँ, मेह पधारउ माइ॥

मेहाँ वूठाँ अन वहळ, थळ ताढा जळ रेस।
करसणपाका, कण खिरा, तद कउ वलण करेस॥

जिण दाहे वण हर धरइ, नदी खळक्कइ नीर।
तिण दिन ठाकुर किम चलइ, धण किम बाँधइ धीर॥

जिण दीहे पावस झरइ, वाजइ ताढो वाय।
तिण रिति मेल्हे माळविण, प्री परदेस म जाय॥

काळी कंठळि बादळी, वरसि ज मेल्हइ वाउ।
प्री विण लागइ बूँदड़ी, जांणि कटारी घाउ॥
ऊँचउ मंदिर अति घणउ, आवि सुहावा कंत।
बीजळि लियइ झबूकड़ा, सिहराँ गळि लागंत॥
सावण आयउ साहिबा, पगइ विलंबी गार।
ब्रच्छ विलंबी वेलड़्याँ, नराँ विलंबी नार॥
पावस-मास प्रगट्टियउ, पगइ विलंबइ गारि।
धण की आही बीनती, पावस पंथ निवारि॥
आज धरा-दस ऊनम्यउ, काली घड़ सखराँह।
उवा धण देसी ओळंबा, कर कर लाँबी बाँह॥
आज धरा-दस ऊनम्यउ, महलाँ ऊपर मेह।
बाहर थाजइ ऊगरइ, भीगा माँझ घरेह॥
ढोला, रहिसि निवारियउ, मिलिसि दई कइ लेखि।
पूगळ हुइस ज प्राहुणउ, दसराहा लग देखि॥
दसराहा लग भी रह्यउ, मालवणीरी प्रीत।
वरिखा-रुति पाछी वळी, आवी सरद सुचीत॥
वयणे माळवणी-तणइ, रहियउ साल्हकुमार।
प्रेमइ बंध्यउ, प्री रहइ, जउ प्री चालणहार॥
माळवणी, ढोलउ कहइ, हिव म्हाँ सीख करेह।
ऊन्हाळउ, वरखा विन्हे, रहिया तुझ सनेह॥
सीयाळइ तउ सी पड़इ, ऊन्हाळइ लू वाइ।
वरसालइ भुइँ चीकणी, चालण रुत्ति न काइ॥
मालवणी, म्हे चालिस्याँ, म करि हमारा तात।
का हसि करि म्हाँ सीख दे, खड़िस्याँ माँझिम रात॥
जिणि दीहे पाळउ पड़इ, टापर तुरी सहाइ।
तिणि रिति बूढ़ी ही झुरइ, तरुणी केम रहाइ॥
जिणि दीहे पाळउ पड़इ, टापर पड़ तुरियाँइ।
तियाँ दिहाँरी गोरड़ी, दिन दिन लाख लहाँइ॥
जिणि रिति मोती नीपजइ, सीप समंदाँ माहिं।
तिणि रिति ढोलउ ऊमह्यउ, ईंम को माणस जाहि॥
जिणि दीहे तिल्ली त्रिड़इ, हिरणी झालइ गाभ।
ताँह दिहाँरी गोरड़ी, पड़तउ झालइ आभ॥

जिण दीहे पाळउ पड़इ, गायउ त्रिड़इ तिलाँह ।
तिण दिन जाए प्राहुणउ, कळियळ कुरझड़ियाँह ॥
जिण रित नाग न नीसरइ, दाझइ वनखँड दाह ।
जिण रित मालवणी कहइ, कुँण परदेसाँ जाइ ॥
दिन छोटा, मोटी रयण, थाडा नीर पवन्न ।
तिण रित नेह न छांडियइ, हे वालम वडमन्न ॥
उत्तर आज स उत्तरउ, सही पड़ेसी सीह ।
वालँभ, घरि किमि छंडियइ, जाँ नित चंगा दीह ॥
उत्तर आज स उत्तरउ, पड़सी वाहळियाँह ।
उर ओले प्रो राखियइ, मूँधा काहळियाँह ॥
उत्तर आज स वज्जियउ, सीय पड़ेसी पूर ।
दहिसी गात निरध्धणाँ, धण चंगी घर दूर ॥
उत्तर आज स उत्तरउ, पल्लांणियाँ दरक्क ।
दहिसी गात कुँवारियाँ, थळ जाळी, वळि अक्क ॥
उत्तर आज स उत्तरउ, सीय पड़ेसी थट्ट ।
सोहागिण घर आँगणइ, दोहागिणरइ घट्ट ॥
उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़िसी रीठ ।
दोहागिण-घट साँमुहउ, साहागिणरी पीठ ॥
उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़इ असेस ।
दहिसी गात जु विरहिणी, जाका प्री परदेस ॥
उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़इ तरंत ।
माळवणी इम वीनवइ, हूँ किम जीवूँ कंत ॥
उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़इ खंद ।
का वासंदर सेवियइ, कइ तरुणी कइ मंद ॥
उत्तर आज स उत्तरउ, ऊकटिया सारेह ।
वेलाँ वेलाँ परहरइ, एकल्लाँ मारेह ॥
उत्तर आज स उत्तरइ, ऊपड़िया सी कोट ।
काय दहेसइ पोयणी, काय कुँवारा घोट ॥
उत्तर आज स वज्जियउ, ऊकठियइ केकाँण ।
कांमिण काँम-कमेड़ि ज्यउँ, हइ लागउ सींचाण ॥
उत्तर आज स उतरइ, वाजइ लहर असाधि ।
संजोगणी सोहामणइ, विजोगणी अँग दाधि ॥

उत्तरदी भुइँ ऊगु उपड़इ, पाळउ, पवन घणाँह।
हरणाखी, इस नइ कहइ, साँम्हो साले जाह॥

माह महारस समय सब, अति ऊलहइ अनंग।
मो मन लागो मारवण, देखल पूगळ द्रंग॥

उत्तर आज न जाइयइ, जिहाँ स सीत अगाध।
ता भइ सूरिज डरपतउ, ताकि चलइ दखिणाध॥

फागण मास सुहामणउ, फाग रमइ नव वेस।
मो मन खरउ उमाहियउ, देखण पूगळ देस॥

आवी सब रस आँमली, त्रिया करइ सिणगार।
जिका हिया न फाटही, दूर गया भरतार॥

ढोलउ हल्लाणउ करइ, धण हल्लिवा न देह।
झबझब झूँबइ पागड़इ, डबडब नयण भरेह॥

हल्लउँ हल्लउँ मत करउ, हियड़इ साल म देह।
जे साचे ई हल्लस्यउ, सूताँ पल्लाँणेह॥

थाँ सूताँ म्हे चालिस्याँ, एह निचिंती होइ।
रइवारी, ढोलइ कहइ, करहउ आछउ कोइ॥

ढोलइ चित्त विमासियउ, मारू देस अळग्ग।
आपण जाए जोइयउ, करहा हुंदउ वग्ग॥

पलाणियउ उपवने मिलइ, घड़िए जोइण जाय।
रइवारी, ढोलउ कहइ, सो मो आवइ दाय॥

दूजा दोवड़ - चोवड़ा, ऊँटकटाळउ - खाँण।
जिण मुखि नागरवेलियाँ, सो करहउ के काँण॥

नागरवेली नित चरइ, पाँणी पीवइ गंग।
ढोला, रयवारी कहइ, करहउ एक सुचंग॥

जिण मुख नागरबेलड़ी, करहउ एह सुरंग।
माँगळोर वाड़ी चरइ, पाणी पीवइ गंग॥

किणि गळि घालूँ घूघरा, किण मुखि वाहूँ लज्ज।
कवण भलेरउ करहलउ मूँध मिलावइ अज्ज॥

मो गळि घालउ घूघरा, मो मुखि वाहउ लज्ज।
हूँ ज भलेरउ करहलउ, मूँध मिलाऊँ अज्ज॥

सुणि करहा, ढोलउ कहइ, साची आखे जोइ।
अगर जेहा झूँपड़ा, तउ आसंगे मोइ॥

सुणि ढोला, करहउ कहइ, सांमि-तणउ मो काज ।
सरढी - पेट न लेटियइ, मूँध न मेळूँ आज ॥

माळवणी मनि दूमणी, आवी वरग विमासि ।
रइवारी पूछी करी, आई करहा पासि ॥

माळवणी करहइ कन्हइ, ए वीनती करेह ।
साहिव मारू ऊमह्या, खोड़उ होइ रहेह ॥

खोड़उ हुँ तउ डांभिज्यउँ, बाँध्यउ भूख मरेसि ।
थे विहुं सजण रळि मिल्यउ, हूँ विच दुक्ख सहेसि ॥

खोड़उ हउँ तउ डाभिज्यउँ, बँधियउ भूख मरूँह ।
जाउँ ढोला-रइ सासरइ, सफळा मूँग चरूँह ॥

बाँधउँ बड़री छाँहड़ी, नीरूँ नागरवेल ।
डाँभ सँभाळूँ करहला, चोपड़िसूँ चंपेल ॥

रह रह, सुंदरि, माठ करि, हळफळ लगी काइ ।
डाँभ दिरावइ करहलउ, सेकंतां मरि जाइ ॥

करहा, तूँ मनि रूअड़उ, वेध्याँ करइ विछोह ।
अजइ कुआरउ बप्पड़ा, नहीं ज कांमिण मोह ॥

अबही मेली हेकली, करही करइ कलाप ।
कहियउ लोपाँ सांमि-कउ, सुंदरि, लहाँ सराप ॥

सुंदरि, मो सारउ नहीं, कुँअर वहेसी मग्ग ।
साहिब चित्त उपाड़ियउ, जिम केकाँणाँ वग्ग ॥

करहा सुणि, सुंदरि कहइ, मिहर करउ मो आज ।
साहिब म्हारउ ऊमह्यउ, हिव सगळी तो लाज ॥

भाई कहि बतळावसूँ, नागरवेल निरेस ।
हउ हउ करहा, कुँवर-नइ, मत ले जाय विदेस ॥

करहा, माळवणी कहइ, खोड़उ होइ रहेस ।
जे ढोलउ राखण करइ, डाँभण तुज्झ न देस ॥

सुंदर, थाँके ही कहइ, खोड़उ होय रहेस ।
जउ ढोलउ डाँभण करइ, डाँभण मुज्झ न देस ॥

करहाँनूँ समझाइ कइ, घर आई बहु जाँण ।
करहउ साल्ह मँगावियउ, आणयउ मांडि पलाँण ॥

करहउ मन कूड़इ, थयउ राखे यूँ ही पग्ग ।
ढोलइ मन चिंता हुई, दीजइ केइक दग्ग ॥

रइबारी तेड़ावियउ, दाग दियउ दुइ च्यारि।
करहइ तउ पग राखियउ, दूती मेल्हइ नारि॥

राखउ करहउ डॉंभस्यउँ, रे मूरखाँ अजाँण।
नरवर-कउ जाँणइ नहीं, करहा-तणउ सँधाण॥

साहिब, म्हाँका बापकइ, छइ करहाँकउ वग्ग।
जइ करहउ खोड़उ हुवइ, गादह दीजइ दग्ग॥

तव बोली चंपावती, साल्हकुँवररी मात।
रे बाजारण, छोहरी, काँइ खेलाड़इ घाति॥

गादह दाध्यउ दग्ग करि, सासू कहइ वचन्न।
करहउ ए कूड़इ मनइ, खोड़उ करइ यतन्न॥

करहउ कूड़इ मनि थकइ, पग राखीयउ जाँण।
ऊकरड़ी डोका चुगइ, अपस डँभायउ आँण॥

साइधर हल्लण साँभळइ, ऊभी आँगण छेह।
काजळ जळ भेळा करी, नाँखी नाँख भरेह॥

डूँगर - केरा वाहळा, ओछा - केरा नेह।
वहता वहइ उतामळा, झटक दिखावइ छेह॥

पिय खोटाँरा एहवा, जेहा काती मेह।
आडंबर अति दाखवइ, आस न पूरइ तेह॥

थे सिध्धावउ, सिध करउ, वहु-गुणवंता नाह।
सा जीहा सतखंड हुइ, जेण कहीजइ जाह॥

हिव माळवणी वीनवइ, हूँ प्रिय, दासी तोहि।
हिव थे चढिस जु चालिया, सूती मेल्हे मोहि॥

पनरह दिनहूँ जागती, प्रीसूँ प्रेम करंत।
एक दिवस निद्रा सवळ, सूती जांणि निचंत॥

ढोलउ करहउ सज कियउ, कसवी घाति पलाँण।
सोवन - वानी घूघरा, चालण - रइ परियाँण॥

सगुणी तणा संदेसड़ा, कही जु दीन्हा आंणि।
ससिवदनी-कइ कारणइ, हुई पलांणि पलांणि॥

घाती टापर वाप मुखि, झेक्यउ राजदुआरि।
करहइ किया टहूकड़ा, निद्रा जागी नारि॥

सजि कसणा, करि लाज ग्रहि, चढियउ साल्ह कुमार।
करह करंकउ श्रवण सुणि, निद्रा जागी नार॥

ढोलइ करह चलावियउ, करि सिणगार अपार।
आस्याँ तउ मिळस्याँ वळे, नरवर कोट जुहार॥
धावउ धावउ हे सखी, दो दाँवणि, को लाज।
साहिब म्हाँकउ चालियउ, जइ कउ राखइ आज॥
ढोलउ चाल्यउ हे सखी, वाज्या विरह-निसाँण।
हाथे चूड़ी खिस पड़ी, ढीला हुआ सँधाण॥
सखि हे, राजिंद चालियउ, पल्लांणियाँ दमाज।
किहिं पुनमंती साँमुहउ, म्हाँ उपराठउ आज॥
सज्जण चाल्या हे सखी, पड़हउ वाज्यउ द्रंग।
काँही रळी-वधाँमणाँ, काँदी अँवळउ अंग॥
सज्जण चाल्या हे सखी, वाज्या विरह-निसाँण।
पालंखी विसहर भई, मंदिर भयउ मसाँण॥
ढोलउ चाल्यउ हे सखी, वज्या दमाँमा-ढोल।
माळवणी तीने तज्या, काजळ, तिलक, तँबोळ॥
सज्जण चाल्या हे सखी, पाछे पीळी पज्ज।
नव पाड़ा नग्गर वसइ, मो मन सूँनउ अज्ज॥
सज्जण चाल्या हे सखी, दिस पूगळ दोड़ेह।
सायधण लाल कवाँण ज्यउँ, ऊभी कड़ मोड़ेह॥
सज्जण चाल्या हे सखी, वाजइ वाजारंग।
जिण वाटइ सज्जण गया, सा वाटड़ी सुरंग॥
सज्जण चाल्या हे सखी, नयणे कीयो सोग।
सिर साड़ी, गळि कंचुवउ, हुवउ निचोवण जोग॥
सज्जण चाल्या हे सखी, सूना करे अवास।
गळेय न पाणी ऊतरइ, हिये न मावइ सास॥
चाल, सखी, तिण मंदिरइँ, सज्जण रहियउ जेंण।
कोइक मीठउ बोलड़इ, लागो होसइ तेंण॥
ढोल वळाव्यउ हे सखी, झीणी ऊडइ खेह।
हियड़उ बादळ छाइयउ, नयण टबूकइ मेह॥
ढोलइ चढि पड़ताळिया, डूँगर दीन्हा पूठि।
खोजे वावू हथ्थड़ा, धूड़ि भरेसी मूठि॥
साल्ह चलंतउ हे सखी, गउखे चढ़ि मइँ दीठ।
हियड़उ उवाँहीसूँ गयउ, नयण वहोड़्या नीठ॥

ढोलइ करह पलांणिया, सुँदरि सलूणी कज्ज।
प्री मारुवणी सामुहउ, म्हाँ उपराठउ अज्ज॥

सयणाँ, पाँखों प्रेम की, तइँ अब पहिरी तात।
नयण कुरंगउ ज्यँ बहइ, लगइ दीह नइँ रात॥

प्रिव माळवणी परहरे, हाल्यउ पुंगळ देस।
ढोला म्हाँ बिच मोकळा, वासा घणा वसेस॥

साल्ह चलंतइ परठिया, आँगण वीखड़ियाँह।
सो मइँ हियइ लगाड़ियाँ, भरि भरि मूठड़ियाँह॥

साल्ह चलंतइ परठिया, आँगण वीखड़ियाँह।
कूवा-केरी कुहड़ि ज्यूँ, हियड़इ हुइ रहियाँह॥

ढोला, जाइ वळि आविज्यउ, आसा सहि फळियाँह।
सावण-केरी वीज ज्यउँ, झाबूकइ मिळियाँह॥

वीछुड़ताँ ई सज्जणाँ, राता किया रतन्न।
वाराँ विहुँ चिहुँ नांखिया, आँसू मोती बन्न॥

प्रीतम - हूती वाहिरी, कवड़ी हो न लहाँइ।
जब देखूँ घर-आँगणइ, लाखे मोल लहाँइ॥

सजणियाँ वउळाइ कइ, मंदिर बइठी आइ।
मंदिर काळउ नाग जिउँ, हेलउ दे दे खाइ॥

सजणिया ववळाइ कइ, गउखे चढ़ी लहक्क।
भरिया नयण कटोर ज्यउँ, मुंधा हुई डहक्क॥

हइ रे जीव, निळज्ज तूँ, निकस्यू जात न तोहि।
प्रिय विछुड़त निकस्यउ नहीं, रह्यउ लजावण मोहि॥

सजण वल्ले, गुण रहे, गुण भी वल्लणहार।
सूकण लागी वेलड़ी, गया ज सींचणहार॥

खूँटइ जीण न मोजड़ी, कड़्याँ नहीं केकाँण।
साजनिया सालइ नहीं, सालइ आही ठाँण॥

सजण, गुणे समुद्द तूँ, तर तर थक्की तेण।
अवगुण एक न साँभरइ, रहूँ बिलंबी जेण॥

साई दे दे सज्जना, रातइ इंणि परि रून।
उरि ऊपरि आँर ढळइ, जांणि प्रवाळी चन॥

सोरठा

सूती पड़ी रणेहि, जोयइ दिसि जातां-तणी ।
जागी हाथ मळेहि, विलखी हूई, वल्लहा ।।
रूनी रड़ी चड़ेहि, जोई दिसि जातां-तणी ।
ऊभी हाथ, मळेहि, विलखी हूई, वल्लहा ।।
गया गळंती राति, परजळती पाया नहीं ।
से सजण परभाति, खड़हड़िया खुरसांण ज्यूं ।।

दोहा

वीछड़तां ही सज्जणा, क्योंही कहण न लब्ध ।
तिण वेळां कँठ रोकियउ, जोंणक सिंघी खब्ध ।।
सज्जण ज्यूं ज्यूं संभरइ, देख्यां आही टाँण ।
झुरि झुरि नइ पंजर हुई, समर समर सहिनांण ।।
ए वाड़ी, ए बावड़ी, ए सर-केरी पाळ ।
वै साजण, वै दोहड़ा, रही सँभाल सँभाळ ।।
छोटी वीख न आपड़ां, लाँबी लाज मरेहि ।
सयण वटाऊ वालरे, लंवउ साद करेहि ।।
साद करे किम दुदुर है, पुळि पुळि थक्के पाँव ।
सयणे घाटा वउळिया, वटरि जु हूआ वाव ।।
आवा, वाळूं देसड़उ, जिहां डूँगर नहिं कोइ ।
तिणि चढि मूकउं धाहड़ी, हीयउ उरळउ होइ ।।
उर मेहां पवनांहि ज्यऊं, करह उडंदउ जाइ ।
पूगळ जाइ प्रगडउ करइ, करइ मारवणि दाइ ।।
भूली सारस - सद्दड़इ, जाणइ करहउ थाय ।
धाई धाई थळ चढ़ी, पग्गे दाधी माय ।।
सारसड़ी मोती चुणइ, चुणइ त कुरळइ कांइ ।
सगुण पियारा जउ मिलइ, मिलइ त बिछुड़इ कांइ ।।
थळ-मथ्थइ जळ-बाहिरी, कांइ लबूकी बूरि ।
मीठा—बोला घण-सहा, सज्जण मूक्या दूरि ।।
थळ-मथ्थइ जळ बाहिरी, तूं कांइ नीली जाळ ।
कँइ तूं सींची सज्जणे, कँइ बूठउ अग्गाळि ।।
ना हूं सींची सज्जणे, ना बूठउ अग्गाळि ।
तो ताळि ढोलउ वहि गयउ, करहउ बाँध्यउ डाळि ।।

ढोला, हूँ तुझ वाहिरी, झीलण गइय तळाइ।
ऊ जळ काळा नाग जिउँ, लहिरी ले ले खाइ॥

सुंदर सोळ सिंगार सजि, गई सरोवर-पाळ।
चंद मुळक्कयउ, जळ हँस्यउ, जळहर कंपी पाळ॥

चंदा तो किण खंडियउ, मो खंडी किरतार।
पूनिम पूरउ ऊगसी, आवंतइ अवतार॥

चंपा-केरी पाँखड़ी, गूँथूँ नवसर हार।
जउ गळ पहरूँ पीव विन, तउ लागे अंगार॥

सुणि सूड़ा, सुंदरि कहय, पंखी, पड़गन पाळि।
प्रीतम पूगळ-पंथ-सिरि, किमि ही पाछउ वाळि॥

सूवा एक संदेसड़उ, वार सरेसी तुझ्झ।
प्रीतम वाँसइ जाइ नइँ, मुई सुणावे मुझ्झ॥

ढोलउ चलताँ परिठव्यउ, अगणि मोजाँ सल्ल।
ढोलउ गयउ न वाहुड़इ, सुया मनावण चल्ल॥

चंदेरी वँदी विची, सरवर-केरइ तीर।
ढोलइ दाँतण फाड़ताँ, आइ पुहत्तउ कीर॥

कहि सूवा, किम आवियउ, किहींक कारण कथ्थ।
तूँ माळवणी मेल्हियउ, किनाँ अम्हीणइ सथ्थ॥

साल्ह कुँअर, सूड़उ कहइ, माळवणी मुख जोइ।
आँगण तजेसी पदमणी, लंछण देस्यइ लोइ॥

प्रीतम वीछुड़ियाँ पछइ, मुई न कहिजइ काइ।
चोली-केरे पाँन ज्यूँ, दिनदिन पीली थाइ॥

वोलि न सक्कूँ वीहतउ, हेक ज वात हुई।
राजि अपूठा वाहुड़उ, माळवणी मूई॥

सूड़ा, सगुण ज पंखिया, म्हाँकउ कह्यउ करे ज।
नव मण चंदण, मण अगर, माळवणी दागे ज॥

सूड़ा, सगुण ज पंखिया, म्हाँकउ कह्यउ करेह।
साई देज्यो सजणाँ म्हाँ साम्हाँ जोएह॥

थे सिध्धावउ, सिध करउ, पूजउ थाँकी आस।
वीछुड़ताँ ही माणसाँ, मेळउ दियउ उल्हास॥

थे सिध्धावउ सिध करउ, पूजउ थाँकी आस।
मत वीसारउ मन-थकी, उवा छइ थाँकी दास॥

ढोलइ सूवउ सीख दइ, जा पंछी, अह वास ।
उडियर पाछउ आवियउ, माळवणी-कइ पास ॥
लाँबी काँब चटक्कड़ा, गय लंबावइ जाळ ।
ढोलउ अजे न वाहुड़इ, प्रीतम मो मन साल ॥
रहि नीमाँणी, माठ करि, सयणाँ वयण न कथ्थ ।
ज्याँ पग दीधा पागड़इ, वाग उवाँही हथ्थ ॥
प्यारा, पाखर पेम की, काँइ ज पहिरी अंगि ।
वयण खटक्कइ बाण ज्यूँ, कोइ न लागइ अंगि ॥
साहिब, तुम्झ सनेहड़इ, प्रीति-तणी पति जाइ ।
जळ खिण ही जाणइ नहीं, मच्छ मरइ खिणमाँइ ॥
बाँवळि काँइ न सिरिजियाँ, मारू मंझ थळाँह ।
प्रीतम वाढ़त काँवड़ी, फळ सेवंत कराँह ॥
साँवळि काँइ न सिरजियाँ, अंबर लागि रहंत ।
वाट चलंताँ साल्ह प्रिव, ऊपर छाँह करंत ॥
सोंगण काँइ न सिरजियाँ, प्रीतम हाथ करंत ।
काठी साहँत मूठि-माँ, कोडी कासी संत ॥
हित विण प्यारा सज्जणाँ, छळ करि छेतरियाह ।
पहिली लाड लडाइ कइ, पाछइ परहरियाह ॥
आवि विदेसी वल्लहा, छळ करि छेतरियाह ।
मतवाळा रो वतक ज्यउँ, पिय नइँ परहरियाह ॥
आडा वनखँड दे गया, परवत दीन्हा पूठ ।
हियड़ा ऊपर राखती, कदे न कहती ऊठ ॥
सज्जण अळगा ताँ लगइ, जाँ लग नयणे दिट्ठ ।
जव नयणाँहूँ वीछुड़े, तव उर मंझ पइट्ठ ॥
सज्जण देसंतर हुवा, जे दीसंता नित्त ।
नयणे तो वीसारिया, तूँ मत विसरे चित्त ॥
कुसळ विहावउ सज्जणाँ, पर मंडले थयाँह ।
जउ विह हिया न हारिस्यइ, वळे मिळेवउ त्याँह ॥
माळवणी इणि विधि घणउ विकळ विलपंति ।
ढोलउ पूगळ पंथ सिरि, आणँद अधिक खड़ंति ॥
अति आणँद ऊमाहियउ, वहइ ज पूगळ वट्ट ।
त्रीजइ पुहरि उलांघियउ, आडवळारउ घट्ट ॥

करहउ पांणि तिसाइयउ, आयउ पुहकर तीर ।
ढोलइ ऊतर पाइयउ, निरमळ सरवर नीर ।।
करहा, पाणी खंच पिउ, आसा घणा सहेसि ।
छीलरियउ ढूकिसि नहीं, भरिया केथि लहेसि ।।
देस विरंगउ ढोलणा, दुखी हुया इहाँ आइ ।
मनगमता पाम्या नहीं, ऊँटकटाळा खाइ ।।
करहा, नीरूँ जउ चरइ, कंटाळउ नइ फोग ।
नागरवेलि किहाँ लहइ, थारा थोवड़ जोग ।।
करहा, नीरूँ सोइ चर, वाट चलंतउ पूर ।
द्राख विजउरा नीरती, सो धण रही स दूर ।।
करहा, इण कुळिगाँमड़इ, किहाँ स नागरवेलि ।
करि कइराँ ही पारणउ, अइ दिन यूँ ही ठेलि ।।
सुणि ढोला, करहउ कहइ, मो मनि मोटी आस ।
कइराँ कूँपळ नवि चरूँ, लंघण पड़इ पचास ।।
करहा, देस सुहामणउ, जे मूँ सासरवाड़ि ।
आँव सरीखउ आक गिणि, जाळि करीराँ झाड़ि ।।
करहा लंब-कराड़िआ, बे - बे अंगुळ कन्न ।
राति ज चीन्हो वेलड़ी, तिण लाखीणा पन्न ।।
करहा, चरि चरि म चरि चरि चरि चरि मचरि मझूर ।
जे वन कालिह विरोळियउ, ते वन मेल्हे दूर ।।
ढोलइ करह विमासियउ, देखे बीस वसाळ ।
ऊँचे थळइ ज एकलो, वच्चाळइ एवाळ ।।
उजळ-दंता घोटड़ा, करहइ चढ़ियउ जाहि ।
तइँ घर मुंध कि नेहवी, जे कारणि सी खाहि ।।
जइ रूँखाँ मारू हुई, छवडउ पड़ियउ तास ।
तइ हुंती चन्दउ कियइ, लइ रचियउ आकास ।।
ढोला, खील्यौरी कहइ, सुणे कुढंगा वैण ।
मारू म्हाँजी गोठणी, सै मारूँदा सैण ।।
आडवळे आघोफरइ, एवड़ माँहि असन्न ।
तिण अजाँण ढोलइ तणइ मूरख भागइ मन्न ।।
क्रम-क्रम, ढोला, पंथ कर, ढाण म चूके ढाळ ।
आ मारू बीजी महल, आखइ झूठ एवाळ ।।

चारण एक ऊँमर तणउ, मिलियउ एह असन्न ।
ढोलउ जातउ देखि कइ, मूरख भागउ मन्न ।।
जिण धण कारण ऊमह्यउ, तिण धण संदा वेस ।
तिण मारुरा तन खिस्या, पंडर हुवा ज केस ।।
ढोला, मोड़ो आवियउ, गर बाळापण वेस ।
अब धण होई खोरड़ी, जाए कहा करेस ।।
ढोलइ मन चिंता हुई, चारण-वचन सुणेह ।
हिव आव्यउ पाछउ वळइ, करहा केम करेह ।।
करहा, कहि कासूँ करों, जो ए हुई जकाह ।
नरवर - केरा माणसाँ, कागूँ कहिस्याँ जाह ।।
दुरजण-केरा बोलड़ा, मत पाँतरजउ कोय ।
अणहुंती हुंती कहइ, सकळी साच न होय ।।
ढोलउ म चलपत थयउ, ऊभउ साहइ लाज ।
साम्हउ वीसू आवियउ, आइ कियउ सुभराज ।।
वीसू सुणि, ढोलउ कहइ, एकइ कहियउ एम ।
मारवणी बूढ़ी हुई, कहि साँचो तूँ केम ।।
जे तइँ दीठी मारवी, कहि सहिनाँण प्रगट्ट ।
साँच कहे तूँ दाखवइ, वहाँ ज पूगळ-वट्ट ।।
दउढ वरसरी मारुवी, त्रिहुँ वरसांरिउ कंत ।
उणरउ जोवन वहि गयउ, तूँ किउँ जोवनवंत ।।
गति गंगा, मति सरसती, सीता सीळ सुभाइ ।
महिलाँ सरहर-मारुई अवर न दूजी काइ ।।
नमणी, खमणी, बहुगुणी, सुकोमळी जु सुकच्छ ।
गोरी गंगा-नीर ज्यूँ, मन गरवी, तन अच्छ ।।
रूप अनूपम मारुवी, सुगुणी नयण सुचंग ।
सा धण इण परि राखिजइ, जिम सिव-मसतक गंग ।।
गति गयंद, जँघ केळिग्रभ, केहरि जिम कटि लंक ।
हीर डसण, विद्रम अधर, मारू-भ्रकुटि मयंक ।।
मारू-घूँघटि दिट्ठ मइँ, एता सहित पुणिंद ।
कीर, भमर, कोकिल, कमळ, चंद, मयंद, गयंद ।।
नमणी, खमणी, बहुगुणी, सगुणी अनइ सियाइ ।
जे धण एही संपजइ, तउ जिम ठल्लउ जाइ ।।

मारू - देस उपन्नियाँ, ताँहका दंत सुफेत।
कूँझ - बचाँ गोरंगियाँ, खंजर जेहा नेत॥
खंजर नेत विसाल, गय चाही लागइ चख्ख।
एकण साटइ मारुवी, देह एराकी लख्ख॥
तीखा लोयण, कटि करल, उर रत्तड़ा विवीह।
ढोला, थाँकी मारुई जांणि विलूधउ सीह॥
डींभू लंक, मराळि गय, पिक-सर एही वांणि।
ढोला, एही मारुई, जेहा हंभ निवांणि॥
मारू-लँक दुइ अंगुळाँ, वर नितंब उस मंस।
मल्हपइ माँभ सहेलियाँ, माँन-सरोवर हंस॥
चंपा-वरनी, नाक सळ, उर सुचंग, विचि हीण।
मंदिर बोली मारुवी, जांणि भणक्की वीण॥
आदीताहूँ कजळो, मारवणी - मुख - व्रन्न।
भीणा कप्पड़ पहिरणइ, जांणि भँखइ सोव्रन्न॥

सोरठा

मारुवणी मुँह - वंन्न, आदित्ताहूँ उजळी।
सोइ भाँखउ सोवंन्न, जो गळि पहिरउ रूपकउ॥

दोहा

भुमुहाँ ऊपरि सोहलो परिठिउ जांणि क चंग।
ढोला, एही मारुवी, नव नेही, नव रंग॥
मृगनयणी, मृगपति-मुखी, मृगमद तिलक निलाट।
मृगरिपु-कटि सुंदर वणी, मारू अइहइ घाट॥
पर-मन-रंजन कारणइ, भरम म दाखिस कोइ।
जेही दीठी मारुवी, तेहा आखे मोइ॥
थळ भूरा, वन भंखरा; नहीं सु चंपउ जाइ।
गुणे सुगंधी मारवी, महकी सहु वणराइ॥
लखण वतीसे, मारुवी, निधि, चंद्रमा निलाट।
काया कूँकूँ जेहवी, कटि केहरि सै घाट॥
अहर, पयोहर, दुइ नयण, मीठा जेहा मख्ख।
ढोला, एही मारुई, जाणे मीठी दख्ख॥

अंगि अभोखण अन्छियउ, तन सोवन सगळाइ।
मारू अंबा-मउर जिम, कर लग्गइ कुँमळाइ॥
अहर अभोखण ढंकियउ, सो नयणे रँग लाय।
मारू पक्का अंब ज्यूँ, भरइ ज लग्गे वाय॥
जंघ सुपत्तळ, करि कुँअळ, भीणी लंब-प्रलंब।
ढोला, एही मारुई जांणि क कणयर-कंब॥
उरि गयवर, नइ पग भमर, हालंती गय हंभ।
मारू पारेवाह ज्यूँ, अंखी रत्ता मंभ॥
मारू मारइ पहियड़ा, जउ पहिरइ सोवन्न।
दंती, चूड़इ, मोतियाँ, त्रीयाँ हेक वरन्न॥
कसतूरी कड़ि केवड़ो मसकत जाय महक्क।
मारू दाड़म-फूल जिम, दिन दिन नवी डहक्क॥
ढोला, सायधण माँणने, भीणी पाँसळियाँह।
कइ लाभे हर पूजियाँ, हेमाळे गळियाँह॥
मारू सी देखी नहीं, अण मुख दोय नयणाँह।
थोड़ो सो भोळे पड़इ, दणयर उगहंताँह॥
चंदवदण, मृगलोयण, भीसुर ससद्ळ भाल।
नासिका दीप-सिखा जिसी, केळ-गरभसुकमाळ॥
दंत जिसा दाड़म-कुळी, सीस फूल सिणगार।
काने कुंडळ भळहळइ, कंठ टँकावळ हार॥
वाहे सुंदरि वहरखा, चासू चुड़ स वचार।
मनुहरि कटि-थळ मेखळा, पग भांभर भणकार॥
वाँहड़िया रूँआळियाँ, धण वंके नयणेह।
जण-जण साथ मं वोलही, मारू वहुत गुणेह॥
मारू-देस उपन्नियाँ, नड़ जिम नीसरियाँह।
साइ धण, ढोला, एहवी, सरि जिम पध्धरियाँह॥
मारू-देस उपन्नियाँ, सर ज्यऊँ पध्धरियाँह।
कड़ुआ वोल न जाणही, मीठा वोलणियाँह॥
देस सुहावउ, जळ सजळ, मीठा वोला लोइ।
मारू काँमण भुइँ दखिण, जइ हरि दियइ त होइ॥
गह छुंडइ गहिलउ हुअउ, पूछइ वळि पूछंत।
मारू-तणाद संदेसड़इ, ढोलउ नहु धापंत॥

तेता मारू मांहि गुण, जेता तारा अभ्भ ।
उन्चळचित्ता साजणाँ, कहि क्यउँ दाखउँ सभ्भ ॥

एकणि जीभ किसा कहूँ, मारू-रूप अपार ।
जे हरि दियइ त पांमियइ, उदियइ इण संसार ॥

वीसू कहिया दूहड़ा, मारू रूप विचार ।
ऊतर मुहर पसाउ करि, दीन्ही साल्हकुमार ॥

वीसू, सुणि, ढोलउ कहइ, हिव खड़ि पूगळ जात ।
देह वधाई दिन थकइ, म्हे आएस्याँ रात ॥

दीह गयउ डर डंबरे, नीले नीझरणेहि ।
काली-जाया करहला, वोल्यउ किसे गुणेंहि ॥

सड़-सड़ वाहि म कंबडी, राँगाँ देह म चूरि ।
बिहुँ दीपाँ विचि मारूई, मो-थी केती दूरि ॥

करहा, तो वेसासड़उ, मो विण-सारथा काज ।
अंतरि जउ वासउ हुवउ, मारू न मिळइ आज ॥

ढोला, वाहिम कंबड़ी, दसिए एकणि पूरि ।
जे साजण वीहंगडे, वीहंगड़उ न दूरि ॥

विहाँगड़े ज उदाध्धयाँ, सर ज्यउँ, पंडुरियाँह ।
कालर काम्हा कमळ ज्यउँ, ढळि-ढळि ढेर थियाह ॥

करहा काछी काळिया, भुइँ भारी, घर दूर ।
हथड़ा काँइ न खंचिया, राह गिलंतइ सूर ॥

करहा, वामन रूप करि, चिहुँ चलणे पग पूरि ।
तूँ थाकउ, हूँ ऊसनउ, भुइँ भारी, घर दूरि ॥

करहा, लंबी वीख भरि, पवनाँ ज्यूँ वहि जाह ।
झंभ वळंतइ दीवळइ, धण जागंती जाँह ॥

करहा, काछी काळिया, चाली गइ किरणाँह ।
संझ वळंतइ दीवळइ, धण जागंती जाँह ॥

सकती वांधे वीटुळी, ढीली मेल्हे लज्ज ।
सरढी पेट न लौटियउ, मूँध न मेळउँ अज्ज ॥

जिण दिन ढोलउ आवियउ, तिण अगलूणी रात ।
मारू सुहिणाऊ लहि कह्यउ, सखियाँ सूँ परभात ॥

सुपनइ प्रीतम मुझ मिळया, हूँ लागी गळि रोइ ।
डरपत पलक न खोलही, मतिहि विछोहउ होइ ॥

सुपनइ प्रीतम मुझ मिळ्या, हूँ गळि लग्गी धाइ।
डरपत पलक न छोड्ही, मति सुपनउ हुइ जाइ॥
आज ज सूती निसह भरि, प्रीय जगाई आइ।
विरह-भुयंगम की डसी, लवयवती गळ लाइ॥

सोरठा

मोती - जड़ी ज हाथि, सुरह - सुगंधी वाटली।
सूती मांझिम राति, जागूँ ढोलूँ जागवी॥

दोहा

धर नेगुल दीवइ सजळ, छाजइ पुणग न माइ।
मारू सूती नींद्र भरि, साल्ह जगाई आइ॥

सोरठा

सुरह सुगंधी वास, मोती काने झुळकते।
सूती मंदिर खास, जागूँ ढोलइ जागवी॥

दोहा

राति ज बादळ सघण घण, वीज-चमंकउ होइ।
इण समईयइ, हे सखी, साल्ह जगाई मोइ॥
हुंता सजण - हीयड़े, सयणाँ - हंदा हत्त।
जउ सोहणो साचइ होअइ, सोहणो वड़ी वसत्त॥
सोहण याई फर गया, मइँ सर भरिया रोइ।
आव सोहागण नींदड़ी, वळि प्रिय देखूँ सोइ॥
जद जागूँ तद एकली, जब सोऊँ तब वेल।
सोहणा, थे मने छेमरी, वीजी भीजी हेल॥
सुहिणा, हूँ तइ दाहवी, तोनइ दहियउ अग्गि।
सव जोयण साजण वसइ, सूती थी गलि लग्गि॥
जिम सुपनंतर पामियउ, तिम परतख पामेसि।
सज्जन मोतीहार ज्यूँ, कंठा - ग्रहण करेसि॥
सुहिणा, तोहि मराविसूँ, हियइ दिराऊँ छेक।
जद सोऊँ तद होइ जण, जद जागूँ तद हेक॥
सहिए फिरि समझावियउ, सुहिणइ दोस न कोइ।
सउ जोयण साहिव वसइ, आँण मिळावइ तोइ॥

आज फरूकइ अंखियाँ, नाभि, भुजा, अहराँह।
सही ज घोड़ा सजणाँ, साम्हाँ किया घरॉह॥
अहर फुरक्कइ, तन फुरइ, तन फुर नयँण फुरंत।
नाभी-मंडळ सहु फुरइ, साँभइ नाह मिळंत॥
आज उमाहल मो घणउ, ना जाणूँ किव केण।
पुरुख परायउ वीर वड, अहर फुरक्कइ केण॥
सहिए; साहिब आविस्यइ, मो मन हुई सुजाँण।
आगम - वाधाऊ हुया, अंग - तणा अहिनाँण॥
आंखि निमाँणी क्या करइ, कउवा लवइ निलज्ज।
सउ जोइन साहिब वसइ, सो किम आवइ अज्ज॥
काली-कंठळि वीजुळी नीची खिवइ निहल्ल।
उर भेदंती सज्जणां, ऊचेड़ंती सल्ल॥
सांभी वेळा सामहलि, कंठळि थई अगासि।
ढोलह करह कँवाइयउ, आयउ पूगळ पासि॥
ऊँडा पाणी कोहरइ, थल चढीजइ निट्ठ।
मारवणी - कइ कारणइ, देस अदीठा दिट्ठ॥
ऊँडा पाणा कोहरे, दीसइ तारा जेम।
ऊसारंता थाकिस्यइ, कहउ, काढिष्यइ केम॥
तुम्हइ जावउ घर आपणइ, न्हाँरी केही तात।
दीहे - दीह उसारिस्याँ, भरिस्याँ मांझिम रात॥
एण समईयइ आवियउ, वीसू तिणहीं वार।
पिंगळ - राजानूँ कहइ, आयउ साल्हकुमार॥
राजा-राँणी हरखिया, हरख्यउ नगर अपार।
साल्हकुँवर पध्यारिउ, हरखी मारू नार॥
साहिब आया, हे सखी, कज्जा सहु सरियाँह।
पूनिम-केरे चंद ज्यूँ, दिसि च्यारे फळियाँह॥
सखिए; साहिब आविया, जाँहकी हूँती चाइ।
हियड़उ हेमांगिर भयउ, तन-पंजरे न माइ॥
संपहुता सज्जण मिल्या, हूँता मुझ हीयाह।
आजूणई दिन ऊपरइ, वीजा वळि कीयाह॥
आजूणउ धन दीहड़उ, साहिब-कउ मुख दिट्ठ।
माथा भार उळाथियउ, आँख्याँ अमी पयट्ठ॥

सखिए, साहिब आविया, मन चाहंदी मोद।
वाड़ी हुआ वधाँमणा, सजण मिळिया सोइ॥
सखी, सु सजण आविया, हुंता मुझ्झ हियाह।
सूका था सू पाल्हव्या, पाल्हविया फळियाह॥
सजण मिळिया सजणाँ, तन मन नयण ठरंत।
अणपीयइ पाणग ज्यूँ, नयणे छाक चचंत॥
सखिए ऊगट मांजिणउ, खिजमति करइ अनंत।
मारू-तन मंडप रच्यउ, मिलण सुहावा कंत॥
मारवणी सिणगार करि, मंदिर कूँ मल्हपंति।
सखी सुरंगी साथ करि, गयगयणी गय गंति॥
घम्मघमन्तइ घाघरइ, उलट्यउ जाँणि गयंद।
मारू चाली मंदिरे, झीणे वादळ चंद॥
मारू चाली मंदिराँ, चन्दउ वादळ मांहि।
जांणे गयँद उलट्टियउ, कज्जळ-वन महँ जाहि॥
घम्म घमंतइ घूघरइ, पग सोनेरी पाळ।
मारू चाली मंदिरे, जांणि छुटो छंछाळ॥
बोली वीणा, हंस गत, पग वाजंती पाळ।
रायजादी - घर - अंगणइ, छुटे पटे छंछाळ॥
सोई सजण आविया, जाँहकी जोती वाट।
थाँभा नाचइ, घर हँसइ, खेलण लागी खाट॥
सखि वउळावी फिरि गई, प्री मिळियउ एकंत।
मुळकत ढोलउ चमकियउ, वीजळ खिवी क दंत॥
ढोलइ जाँण्यउ वीजळी, मारू जाँण्यउ मेह।
च्यारि आँख एकठि हुई, सयणे वध्यो सनेह॥
ढोलउ मिळियउ मारवी, दे आलिंगण चित्त।
कर ग्रह आँणी अंक-मइँ, सेज सुणेसी वत्त॥
मारू वइठी सेज-सिर, प्री मुख देखइ तास।
पूनिम - केरे चंद ज्यूँ, मंदिर हुवउ उजास॥
काया झबकइ कनक जिम, सुंदर, केहे सुख्ख।
तेह सुरंगा जिम हुवइँ, जिण वेहा बहु दुख्ख॥
मनि संकाणी मारवी, खुणसउ राखइ कंत।
हँसताँ पीसूँ वीनवइ, सांभळि, प्री, विरतंत॥

पहुर हुवउ ज पधारियाँ, मो चाहंती चित्त।
डेडरिया खिण-मद्द हुवइ, घँण बूठइ सरजित्त॥

पहिली होय दयामणउ, रवि आथमणउ जाइ।
रवि ऊगइ विहसइ कँमळ, खिण इक विमणउ थाइ॥

ढोलउ मन आणंदियउ, चतुर तणे वचनेह।
मारू-मुख सोरंभियउ, आवि भमर भणकेह॥

कंठ विलग्गी मारवी, करि कंचूवा दूर।
चकवी मनि आणँद हुवउ, किरण पसारया सूर॥

आसालूँध उतारियउ, धण कुंचुवउ गळाँह।
घूमइ पड़िया हंसड़ा, भूला माँनसराँह॥

मन मिळिया, तन गड्डिया, दोहग दूरि गयाह।
सज्जण पाणी-खीर ज्यूँ, खिल्लोखिल्ल थयाह॥

पंचाइण नइ पाखरयउ, मइँगळ नइ मद कीध।
मोहण वेली मारुई, कंत पेम-रस पीध॥

ढोलउ मारू एकठा, करइ कतूहळ केळि।
जाँणे चंदन-रूँखड़इ, विळगी नागर-वेळि॥

लहरी सायर-संदियाँ, बूठउ-संदउ वाव।
वीछुड़ियाँ साजण मिळइ, वळि किउँ ताढउ ताव॥

हियमाँ करइ वधाँमणाँ, सही त सीधा काज।
जे सुपनंतर दीखता, नयणे मिळिया आज॥

जिणनूँ सुपनैं देखती, प्रगट भए प्रिव आइ।
डरती आँख न मूँदही, मत सुपनउ हुय जाइ॥

आजे रळी-वधाँमणाँ, आजे नवला नेह।
सखी, अम्हीणी गोठमइँ, दूधे वूठा मेह॥

सजण मिल्या, मन ऊमग्यउ, अउगुण सहि गाळयाह।
सूका था सू पाल्हव्या, पाल्हविया फळियाह॥

सेज रमंताँ मारुवी, खिण मेल्हणी म जाइ।
जाँणि क विकसी केतकी, भमर वयट्ठउ आइ॥

जिम मधुकर नइ कमलणी, गंगासागर वेळ।
लुवधा ढोलउ-मारुवी, काम-कतूहल-केळ॥

धरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि।
मजीठाँ जिम रच्चणाँ, दई, सु सज्जण मेळि॥

ज्यूँ सालूराँ सरवराँ, ज्यूँ धरतीसूँ मेह।
चंपक - वरणउ वालहउ, चंदमुखीसूँ नेह॥

चन्द्रायणा

वेऊँ चतुर सुजाँण पेम - रँग - रस पिया।
वरखा-रुति घण वरस जांणि कु हरखिया॥
भी सिणगार सँवारि क आई सेज परि।
(परिहाँ) जाँणे अपछर इंद्र क बैठा आप घरि॥
दोउ मयमंत सुजाँण सेज दिखि चाहुड़इ।
जाँणे धरती - काज असप्पति आहुड़इ॥
अहरे अहर लगाइ तने तन मेळिया।
(परिहाँ) जांणि क गाँधी-हाट जुवांने भेळिया॥

दोहा

मारवणी इम वीनवइ, घनि आजूणी राति।
गाहा - गूढ़ा - गीत - गुण, कहि का नवली वाति॥
गाहा - गीत - विनोद - रस, सगुणाँ दीह लियंति।
कइ निद्रा, कइ कळह करि, मूरिख दीह गमंति॥
विरह वियापी रयण भरि, प्रीतम विणु तन खीण।
वीण अलापी देखि ससि, किस गुण मेल्ही वीण॥
वीण अलापी देखि ससि, रयणी नाद सलीण।
ससिहर-मृगरथ मोहियउ, तिण हसि मेल्ही वीण॥
सुंदरि चोरे संग्रही, सब लीया सिणगार।
नक-फूली लीधी नहीं, कहि सखि, कवण विचार॥
अहर-रंग रत्तउ हुवइ, मुख काजळ मसि वन्न।
जाँणयउ गुंजाहळ अछइ, तेण न ढूकउ मन्न॥
परदेसाँ प्री आवियउ, मोती आँण्या जेण।
धण कर-कँवळाँ झालिया, हसि करि नाँख्या केण॥
कर रत्ता मोती नृमळ, नयणे कांजल-रेह।
धण भूली गुंजाहळे, हसिकरि नाँख्या तेह॥

गाहा

तरुणी पुणोवि गहियं परयन्चय भिंतरेण पिउ दिट्ठं।
कारण कवण सयाणे दीपक्को धूणए सीसं॥

दोहा

वालँभ, दीपक पवन-भय, अंचळ-सरण पयट्ठ ।
कर - हीणउ धूणइ कमळ, जाँण पयोहर दिट्ठ ॥

गाहा

वनिता-पति विदेस गय, मंदिर-मझे अद्धरयणीए ।
वाळा लिहइ भुयंगो, कहि सुंदरि, कवण बुजे ण ॥

दोहा

सा वाळा प्री चिंतवइ, खिणखिण रयणि विहाइ ।
तिण हर-हार परट्ठव्यउ, ज्यूँ दीवळउ बुझाइ ॥
वहु दिवसे प्री आविवउ, सझिया त्री सिणगार ।
निजरि दिखाई आदिरस, किम सिणगार उतार ॥
इन्द्राँ - वाहण - नासिका, तासु तणइ उणिहार ।
तस भख हूवउ प्राहुणउ, तिणि सिणगार उतार ॥
ससनेही सज्जण मिल्या, रयण रही रस लाइ ।
चिहुँ पहुरे चटकउ कियउ, वैरणि गई बिहाइ ॥
पहिलइ पोहरे रैणकै, दिवला अम्बर झूल ।
धण कसतूरी हुइ रही, प्रिव चंपारौ फूल ॥
दूजै पोहरे रयणकै, मिळियत गुफ्फागुध्ध ।
धण पाळी, पिव पाखरयौ, विहूँ भला भड़ जुध्ध ॥
त्रीजै प्रहरै रैणकै, मिळिया तेहा-तेह ।
धन नहिं धरती हुइ रही, कंत सुहावौ मेह ॥
चौथै प्रहरै रैणकै, कूकड़ मेल्ही राळि ।
धण संभाळै कंचुवौ, प्री मूँछाँरा वाळि ॥
पँचमै प्रहरै दीहरै, सायधण दियै बुहारि ।
रिमझिम रिमझिम हुई रही, हुइ धण-त्री जौहारि ॥
छट्ठै प्रहरैं दिवसकै, हुई ज जीमणवार ॥
मन चावळ, तन लापसी, नैंण ज घीकी धार ॥
सत्तम प्रहरैं दिवसकै, धण जु वाड़ियाँ जाइ ।
आँणै द्राख-विजोरियाँ, धण छोलइ, प्रिउ खाइ ॥
आठम प्रहर संझा समै, धण ठव्वै सिणगार ।
पान कजळ पाखर करै, फूलाँकौ गळि हार ॥

प्रहरे - प्रहर ज ऊनर्युं, दिवला साल भरेह ।
धण जीती, प्रिव हारियउ, पेल्हा मिलण करेह ॥

म्हेने ढोलो भूँझिया, लूँगे - लवकड़ियेह ।
म्हाने प्रिउजी मारिया, चंपारै कळियेह ॥

म्हंने ढोलो भूंविया, म्होंनूँ आवी रीस ।
चोवा - केरै कूँपळे, ढोळी साहिब - सीस ॥

राति-दिवसि रंगइँ रमइ, विलसइ नवरस भोग ।
जोड़ी सारीखी जुड़ी, केसव - तणइ सँजोग ॥

पनरह दिन लग सासरइ, रहियउ साल्हकुमार ।
पूगळ भगतों नव-नवी, कीधी हरख अपार ॥

सोवँन - जड़ित सिंगार बहु, मारुवणी मुकलाइ ।
गय, हैंवर, दासी बहुत, दीन्हीं पिंगळ-राइ ॥

साथे दीन्ही छोकरी, दीन्हो पिंगळ-राव ।
ढोलउ नरवरनूँ खड़इ, आणँद अधिक उछाव ॥

कबीर

साधो भजन भेद है न्यारा ।
कर माला मुद्रा के पहिरै चंदन घसे लिलारा ।
मूड़ मुड़ाये जटा रखाये अंग लगाये छारा ।
का पानी पाहन के पूजै कंद मूल फरहारा ।
कहा नेम तीरथ व्रत कीन्हें जो नहीं तत्त विचारा ।
का गोये का पढ़ि दिखलाये का भरमे संसारा ।
का संध्या तरपन के कीन्हें का पटकर्म अचारा ।
जैसे वधिक ओट टाटी के हाथ लिये विष चारा ।
ज्यों बक ध्यान धरै घट भीतर अपने अंग विकारा ।
दै परचै स्वामी होई बैठे करै विषय व्यवहारा ।
ज्ञान ध्यान को मरम न जानै वाद करै निःकारा ।
फूके कान कुमति अपनी से बोझ लियो सिर भारा ।
बिन सतगुरु गुरु केतिक बहिगे लोग लहर की धारा ।
गहिर गंभीर पार नहिं पावै खंड अखंड से न्यारा ।
दृष्टि अपार चलन को सहजै करै भस्म के जारा ।

निर्मल दृष्टि आतमा जाकी साहेब नाम अधारा।
कहत कबीर वही जन आवै तैं मैं तजे विकारा।

× × ×

संतो, राह दोऊ हम दीठा।
हिन्दू तुरक हटा नहिं माने स्वाद सवन को मीठा।
हिन्दू बरत एकादसि साधै दूध सिंघाड़ा सेती।
अन को त्यागै मन नहिं हटकै पारन करै स गोती।
रोजा तुरक नमाज गुजारै विसमिल बाँग पुकारै।
उनको भिस्त कहाँ तो होइहै सांझै मुरगी मारै।
हिन्दू दया मेहर को तुरकन दोनों घट सों त्यागी।
वे हलाल वे झटका मारैं आगि दुनों घर लागी।
हिन्दू तुरक की एक राह है सतगुरु इहैं बताई।
कहहि कबीर सुनो हो संतों राम कहेउ खोदाई।

× × ×

बाबा अगम अगोचर कैसा।
ताते कहि समझाऊँ ऐसा।

जो दीसै सो तो है नाहीं, है सो कहा न जाई।
सैना-बैना कहि समझाऊँ, गूँगे का गुर भाई।
दृष्टि न दीसै मुष्टि न आवै, विनसै नाहिं नियारा।
ऐसा ज्ञान कथा गुरु मेरे, पंडित करै विचारा।
बिन देखे परतीत न आवै, कहे न कोउ पतियाना।
समझा होइ सो सब है चीन्हो, अचरज होय अयाना।
कोई ध्यावै निराकार को, कोइ ध्यावै साकारा।
वह तो इन दोउन ते न्यारा, मानै जानन हारा।
काजी कथै कतेब कुराना, पंडित वेद पुराना।
वह अच्छर तो लखो न जाई, माला लगै न काना।
नादी वादी पढ़ना गुनना, बहु चतुराई खोना।
कह कबीर सो परै न परलै, नाम भक्ति जिन चीना।

× × ×

माया महा ठगिनि हम जानी।
तिरगुन फाँस लिये कर डोलै बोलै मधुरी बानी।

केशव के कमला ह्वै बैठी शिव के भवन भवानी।
पंडा के मूरति ह्वै बैठी तीरथ में भई पानी।
योगी के योगिन ह्वै बैठी राजा के घर रानी।
काहू के हीरा ह्वै बैठी काहु के कौड़ी कानी।
भक्तन के भक्तिनि ह्वै बैठी ब्रह्मा के ब्रह्मानी।
कहे कबीर सुनो हो संतो यह सब अकथ कहानी।

× × ×

कौन ठगवा नगरिया लूटल हो।
चंदन खाट कै बनल खटोलना तापर दुलहिन सूतल हो॥
उठो सखी मोर माँग सँवारो दुलहा मोसे रूसल हो॥
आये जमराज पलँग चढ़ि बैठे नैनन आँसू टूटल हो॥
चारि जने मिलि खाट उठाइन चहुँ दिसि धू धू ऊठल हो॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो जग से नाता टूटल हो॥

× × ×

रमैया तोर दुलहिन लूटा बाजार।
सुरपुर लूटा नागपुर लूटा तीन लोक मचा हाहाकार॥
ब्रह्मा लूटे महादेव लूटे नारद मुनि के परी पिछार।
स्रिंगी की मिंगी करि डारी पारासर के उदर विदार॥
कनफूँका चिरकासी लूटे लूटे जोगेसर करत विचार।
हम तो बचिगे साहब दया से शब्द डोर गहि उतरे पार॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो इस ठगनी से रहो हुसिआर।

× × ×

जब हम रहल रहा नहिं कोई। हमर माँह रहल सब कोई॥
कहहु सो राम कौन तोर सेवा। सो समुझाय कहो मोहिं देवा॥
फुर फुर कहो मारू सब कोई। झूठे झूठा संगति होई॥
आँधर कहै सबै हम देखा। तहँ दिठियार पैठि मुँह पेखा॥
एहि विधि कहौं मानु सब कोई। जस मुख तस जो हृदया होई॥
कहत कबीर हंस मुकुताई। हमरे कहले छूटिहौ भाई॥
हम न मरैं मरिहैं संसारा। हमको मिला जिआवन-वारा।
अब ना मरौं मोर मन माना। सोइ मुवा जिन राम न जाना।
साकत मरैं संत जन जीवै। भरि भरि राम रसायन पीवैं।
हरि मरिहैं तो हमहूँ मरिहैं। हरि न मरैं हम काहे को मरिहैं।
कह कबीर मन मनहिं मिलावा। अमर भए सुख सागर पावा।

× × ×

संतो देखउ जग बौराना।
साँच कहो तो मारन धावै झूठे जग पतियाना।
नेमी देखे धरमी देखे प्रात करहिं असनाना।
आतम मारि पखानहिं पूजैं उनमें कछू न ज्ञाना।
बहुतक देखे पीर औलिया पढ़ैं किताब कुराना।
कै मुरीद तदबीर बतावै उनमें उहै गिआना।
आसन मारि डिंभ धरि बैठे मन में बहुत गुमाना।
पीतर पाथर पूजन लागे तीरथ गरब भुलाना।
माला पहिरे टोपी दीन्हें छाप तिलक अनुमाना।
साखी सबदै गावत भूले आतम खबरि न जाना।
कह हिन्दू मोहिं राम पियारा तुरक कहै रहिमाना।
आपस में दोउ लरि लरि मूए मरम न काहू जाना।
घर घर मंत्र जे देत फिरत हैं महिमा के अभिमाना।
गुरुवा सहित शिष्य सब बड़े अंतकाल पछताना।
कहत कबीर सुनो हो संतो ई सब भरम भुलाना।
केतिक कहौं कहा नहि मानैं आपहिं आप समाना।

× × ×

मन फूला फूला फिरे जगत में कैसा नाता रे।
माता कहै यह पुत्र हमारा बहिन कहै बिर मेरा।
भाई कहै यह भुजा हमारी नारि कहै नर मेरा॥
पेट पकरि के माता रोवै बाँह पकरि के भाई।
लपटि झपटि के तिरिया रोवै हंस अकेला जाई॥
जब लगि माता जीवै रोवै बहिन रोवै दस मासा।
तेरह दिन तक तिरिया रोवै फेर करै घर बासा॥
चार गजी चरगजी मँगाया चढ़ा काठ की घोड़ी।
चारों कोने आग लगाया फूँक दियो जस होरी॥
हाड़ जरै जस लाह कड़ी को केस जरै जस घासा।
सोना ऐसी काया जरि गई कोई न आयो पासा॥
घर की तिरिया ढूँढन लागी ढूँढ़ि फिरी चहुँ देसा।
कहै कबीर सुनो भइ साधो छोड़ो जग की आसा॥

× × ×

आई गवनवाँ की बेला उमिरि अबहीं मोरी बारी॥
साज समाज पिया लै आये और कहरिया चारी।

देखत चढ़ै सुनत हिय लागै सुरत किये तन देत घुमाई।
पियत पियाला भये मतवाला पायो नाम मिटी दुचिताई॥
जो जन नाम अमल रस चाखा तर गइ गनिका सदन कसाई।
कह कबीर गूँगे गुड़ खाया बिन रसना का करै बड़ाई॥

× × ×

साधो शब्द साधना कीजै।
जासु शब्द ते प्रगट भए सब शब्द सोई गहि लीजै॥
शब्दहिं गुरू शब्द सुनि सिख भे शब्द सो बिरला बूझै।
साइ सिष्य और गुरू महातम जेहि अंतरगत सूझै॥
शब्दे वेद पुरान कहत है शब्दे सब ठहरावै।
शब्दै सुर मुनि संत कहत हैं शब्द भेद नहिं पावै॥
शब्दै सुनि सुनि भेख धरत हैं शब्द कहै अनुरागी।
षट दरशन सब शब्द कहत हैं शब्द कहै बैरागी॥
शब्दै माया जग उतपानी शब्दै केर पसारा।
कह कबीर जहँ शब्द होत है तवन भेद है न्यारा॥

× × ×

अवधू अंध कूप अँधियारा।
या घट भीतर सात समुन्दर याहि में नद्दी नारा।
या घट भीतर काशि द्वारिका याहि में ठाकुरद्वारा॥
या घट भीतर चंद सूर है याहि में नौ लख तारा।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो याहि में सत करतारा॥

× × ×

साधो एक आपु जगमाही।
दूजा करम भरम है किरतिम ज्यों दरपन में छाहीं।
जल तरंग जिमि जल ते उपजै फिर जल माहिं रहाई॥
काया झाईं पाँच तत्त की बिनसे कहाँ समाई॥
या विधि सदा देह गति सबकी या विधि मनहिं विचारो।
आया होय न्याव करि न्यारो परम तत्व निरवारो॥
सहजै रहै समाय सहज में ना कहुँ आया न जावै।
धरै न ध्यान करै नहिं जप तप राम रहीम न गावै।
तीरथ बरत सकल परित्यागै सुन्न डोर नहि लावै॥
यह धोखा जब समुझि परै तब पूजै काहि पुजावै।
जोग जुगत में भरम न छूटै जब लग आप न सूझै।
कह कबीर सोइ सतगुरु पूरा जो कोइ समुझै बूझै॥

× × ×

साधो सहजै काया सोधो।
करता आपु आप में करता लख मन को परमोधो॥
जैसे वट का बीज ताहि मैं पत्र फूल फल छाया।
काया मद्धे बुन्द बिराजै बुन्दै मद्धे काया॥
अग्नि पवन पानी पिरथी नभ ता बिन मेला नाहीं।
काजी पंडित करो निवेरा काके माहिं न सांई॥
साँचे नाम अगम की आसा है वाही में साँचा।
करता बीज लिये है खेतै त्रिगुन तीन तत पाँचा॥
जल भरि कुंभ जलै बिच धरिया बाहर भीतर सोई।
उनको नाम कहन को नाँही दूजा धोखा होई॥
कठिन पंथ सतगुरु को मिलना खोजत खोजत पाया।
इक लग खोज मिटी जब दुबिधा ना कहुँ गया न आया॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो सत्त शब्द निज सारा।
आपा मद्धे आपै बोलै आपै सिरजनहारा॥

× × ×

मन तू मानत क्यों न मना रे।
कौन कहन को कौन सुनन को दूजा कौन जना रे॥
दरपन में प्रतिबिंब जो भासे आप चहूँ दिसि सोई।
दुविधा मिटै एक जब होवै तौ लख पावै कोई॥
जैसे जल ते हेम बनत है हेम धूप जल होई।
तैसे या तत वाहू तत सों फिर यह अरु वह सोई॥
जो समझै तो खरी कहन है ना समझै तो खोटी।
कहै कबीर दोऊ पख त्यागै ताकी मति है मोटी॥

× × ×

ना मैं धरमी नाहिं अधरमी ना मैं जती न कामी हो।
ना मैं कहता ना मैं सुनता ना मैं सेवक स्वामी हो॥
ना मैं बंधा ना मैं मुक्ता ना निरबंध सरबंगी हो।
ना काहू से न्यारा हुआ ना काहू को संगी हो॥
ना हम नरक लोक को जाते ना हम सरग सिधारे हो।
सब ही कर्म हमारा कीया हम कर्म्मन ते न्यारे हो॥
या मत को कोइ बिरला बूझै सो सतगुरु हो बैठे हो।
मत कबीर काहू को थापे मत काहू को मेटे हो॥

× × ×

अपनपो आप ही बिसरो।
जैसे सोनहा काँच मँदिर में भरमत भूँकि मरो।
ज्यों केहरि वपु निरखि कूप जल प्रतिमा देखि परो।
ऐसेहि मदगज फटिक शिला पर दसननि आनि अरो।
मरकट मुठी स्वाद ना बिसरै घर घर नटन फिरो।
कह कबीर ललनी के सुवना तोहि कौने पकरो॥

× × ×

ऐसो भरम बिगुरचन भारी।
वेद किताब दीन औ दोजग को पुरुषा को नारी॥
माटी के घर साज बनाया नादे बिंदु समाना।
घट बिनसे क्या नाम धरहुगे अहमक खोज भुलाना॥
एकै हाड़ त्वचा मल मूत्रा रुधिर गुदा एक मुद्रा।
एक बिंदु ते सृष्टि रच्यो है को ब्राह्मण को शुद्रा॥
रजगुण ब्रह्म तमोगुण शंकर सतोगुणी हरि सोई।
कहै कबीर राम रमि रहिया हिंदू तुरुक न कोई॥

× × ×

तोको पीव मिलैंगे घूँघट को पट खोल रे।
घट घट मैं वह साँई रमता कटुक वचन मत बोल रे॥
धन जोबन को गरब न कीजै झूठा पँचरँग चोल रे।
सुन्न महल में दियना बारि ले आसा सों मत डोल रे॥
जाग जुगुत सों रंग महल में पिय पायो अनमोल रे।
कहै कबीर अनन्द भयो है बाजत अनहद ढोल रे॥

× × ×

पायो सतनाम गरे के हरवा।
साँकर खटोलना रहनि हमारी दुबरे दुबरे पाँच कँहरवा।
ताला कुंजी हमें गुरु दीन्ही जब चाहों तब खोलौं किवरवा॥
प्रेम प्रीति की चुनरी हमारी जब चाहौं तब नाचौं सहरवा।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो बहुर न ऐबै एही नगरवा॥

× × ×

मिलना कठिन है, कैसे मिलौंगो पिय जाय।
समुझि सोच पग धरौं जतन से बार बार डिग जाय॥
ऊँची गैल राह रपटीली पाँव नहीं ठहराय।
लोक-लाज कुल की मरजादा देखत मन सकुचाय।
नेहर वास बसा पीहर में लाज तजी नहि जाय।

अधर भूमि जहँ महल पिया का हम पै चढ़ो न जाय ॥
धन भई बारी पुरुख भये भोला सुरत झकोरा खाय।
दूती सतगुरु मिलै बीच में दीन्हों भेद बताय।
साहब कबिरा पिया सों भैंट्यो सीतल कंठ लगाय ॥

× × ×

दुलहिन गावो मंगलचार।
हमरे घर आये राम भतार।
तन रति कर मैं मन रति करिहौं पाँचों तत्व बराती।
रामदेव मोहिं ब्याहन आए मैं जोवन मदमाती।
सरिर सरोवर वेदी करिहौं ब्रह्मा वेद उचारा।
रामदेव सँग भाँवर लैहौं धन धन भाग हमारा।
सुर तैंतीसो कौतुक आए मुनिवर सहस अटासी।
कह कबीर मोहिं ब्याहि चले हैं पुरुष एक अबिनासी ॥

× × ×

साँई के सँग सासुर आई।
संग न सूती स्वाद न जानी जोबन गो सपने की नाँई।
जना चारि मिलि लगन सोचाई जना पाँच मिलि मंडप छाई।
सखी सहेली मंगल गावैं दुख सुख माथे हरदि चढ़ाई ॥
नाना रूप परी मन भाँवरि गाँठी जोरि भई पति आई।
अरघ देइ देइ चली सुवासिनी चौकहिं राँड़ भई सँग साईं।
भयो बियाह चली बिन दूलह बाट जात समधी समुझाई।
कहै कबीर हम गौने जैबै तरब कंत ले तूर बजाई ॥

× × ×

बालम आओ हमारे गेह रे।
तुम बिन दुखिया देह रे ॥
सब कोइ कहै तुमारी नारी मोको यह संदेह रे।
एकमेक है सेज न सोवै तब लग कैसे नेह रे ॥
अन्न न भावे नींद न आवे गृह बन धरे न धीर रे।
ज्यों कामी को कामिनि प्यारी ज्यों प्यासे को नीर रे ॥
है कोइ ऐसा पर-उपकारी पिय से कहै सुनाय रे।
अब तो बेहाल कबीर भए हैं बिन देखे जिउ जाय रे ॥

× × ×

सतगुरु हो महाराज, मोपै साईं रँग डारा।
शब्द की चोट लगी मेरे मन में बेध गया तन सारा ॥

औषध मूल कछू नहिं लागे क्या करे बैद बिचारा।
सुर नर मुनि जन पीर औलिया कोइ न पावे पारा।
साहब कबिर सर्व रंग रँगिया सब रंग से रंग न्यारा॥

× × ×

कैसे दिन कटिहै जतन बताये जइयो।
एहि पार गंगा वोही पार जमुना बिचवाँ मँड़इया हमकाँ छवाये जइयो।
अँचरा फारि के कागद बनाइन अपनी सुरतिया हियरे लिखाये जइयो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो बहियाँ पकरि के रहिया बताये जइयो॥

× × ×

तलफै बिन बालम मोर जिया।
दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया तलफ तलफ के भोर किया॥
तन मन मोर रहँट अस डोलै सून सेज पर जनम छिया।
नैन थकित भए पंथ न सूझै साँई बेदरदी सुध न लिया।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हरो पीर दुख जोर किया॥

× × ×

डर लागै हाँसी आवे है अजब जमाना आया रे।
धन दौलत ले माल खजाना बेस्या नाच नचाया रे॥
मुट्ठी अन्न साध कोई माँगै कहै नाज नहिं आया रे।
कथा होय तहँ स्त्रोता सोवैं वक्ता मूँड़ पचाया रे॥
होय जहाँ कहिं स्वाँग तमासा तनिक न नींद सताया रे।
भंग तमाखू सुलफा गाँजा सूखा खूब उड़ाया रे।
गुरु चरनामृत नेम न धारै, मधुवा चाखन आया रे।
उलटी चलन चली दुनियाँ में, तातें जिय घबराया रे।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, फिर पाछे पछताया रे॥

× × ×

मैं केहि समझावों यह जग अंधा।
इक दुइ होय उन्हे समझावों, सब ही भुलाना पेट के धंधा॥
पानी के घोड़ा पवन असवरवा, ढरकि परै जस ओस कै बुन्दा।
गहिरी नदिया अगम बहै धरवा, खेवनहारा पड़िगा फन्दा।
घर की वस्तु निकट नहिं आवत, दियना बारिके ढूँढत अंधा।
लागी आग सकल बन जरिगा, बिन गुर ज्ञान भटकिगा बन्दा।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, इक दिन जाय लँगोटी झार बन्दा॥

× × ×

चली है कुलबोरनी गंगा नहाय ।
सतुवा कराइन बहुरी भुँजाइन घूँघट ओटे भसकत जाय ॥
गठरी बाँधिन मोटरी बाधिन, खसम के मूड़े दिहिन धराय ।
बिछुवा पहिरिन औंठा पहिरिन, लात खसम के मारिन जाय ।
गंगा न्हाइन जमुना न्हाइन, नौ मन मैल हैं लिहिन चढ़ाय ॥
पाँच पचीस कै धक्का खाइन, घरहुँ की पूँजी आई गँवाय ।
कहत कबीर हेत करु गुरु सौं नहिं तोर मुकती जाइ नसाय ॥

× × ×

पंडित बाद बदौ सो झूठा ।
राम के कहे जगत गति पावै खाँड़ कहे मुख मीठा ॥
पावक कहे पाँव जो दाहै जल कहे तृखा बुझाई ।
भोजन कहे भूख जो भागै तो दुनिया तरि जाई ॥
नर के संग सुवा हरि बोलै, हरि प्रताप नहिं जानै ।
जो कबहूँ उड़ि जाय जंगल को तौ हरि सुरति न आनै ॥
बिनु देखे बिनु अरस परस बिनु नाम लिये का होई ।
धन के कहे धनिक जो होतो निरधनं रहत न कोई ॥
साँची प्रीति विषय माया सौं हरि भगतन की हाँसी ।
कह कबीर एक राम भजे बिन बांधे जमपुर जासी ॥

× × ×

पंडित देखा मन मों जानी ।
कहु धौं छूत कहाँ ते उपजी तबहिं छूत तुम मानी ॥
नादरु बिंद रुधिर एक संगे घटही में घट सज्जै ।
अष्ट कमल को पुहुमी आई कहँ यह छूत उपज्जै ॥
लख चौरासी बहुत बासना सो सब सरि भो माटी ।
एकै पाट सकल बैठारे सींचि लेत धौं काटी ॥
छूतहि जेवन छूतहि अचवन छूतहि जग उपजाया ।
कह कबीर ते छूत बिबर्जित जाके संग न माया ॥

× × ×

पंडित देखो हृदय बिचारी कौन पुरुप को नारी !
सहज समाना घट घट बोलै वाको चरित अनूपा ।
वाको नाम कहा कहि लीजै ना ओहि बरन न रूपा ॥
तैं मैं काह करे नर बौरे क्या तेरा क्या मेरा ।
राम खोदाय शक्ति शिव एकै कहुवौं काहि निवेरा ॥

वेद पुरान कुरान कितेबा नाना भाँति बखानी।
हिंदू तुरुक जैन औ जोगी एकल काहु न जानी॥
छ दरशन में जो परवाना तासु नाम मनमाना॥
कह कवीर हमहीं हैं बौरे ई सब खलक सयाना॥

× × ×

नैनन आगे ख्याल घनेरा।
अरध उरध बिच लगन लगी है क्या संध्या रैन सवेरा।
जेहि कारन जग भरमत डोलैं सौ साहब घट लिया बसेरा॥
पूरि रह्यो असमान धरनि में जित देखो तित साहब मेरा।
तसबी एक दिया मेरे साहब कह कबीर दिलही बिच फेरा॥

× × ×

जागु रे जिव जागु रे अब क्या सोवै जिय जागु रे।
चोरन को डर बहुत रहत है उठि उठि पहिरे लागु रे॥
ररो खोलि ममो करि भीतर ज्ञान रतन करि जागु रे।
ऐसे जो अजरायल मारै मस्तक आवै भागु रे।
ऐसी जागनि जो कोइ जागे तो हरि देह सोहागु रे।
कह कबीर जागोई चहिए क्या गिरही बैरागु रे॥

× × ×

फिरहु का फूले फूले फूले।
जो दस मास उरध मुख झूले सो दिन काहें भूले।
ज्यों माखी स्वादै लहि बिहरै सोचि सोचि धन कीन्हा।
त्योंही पीछे लेहु लेहु करि भूत रहनि कुछ दीन्हा।
देहरी लौं वर नारि संग है आगे संग सहेला।
मृतक थान सँग दियो खटोला फिरि पुनि हंस अकेला।
जारे देह भसम ह्वै जाई गाड़े माटी खाई।
कांचे कुंभ उदक ज्यों भरिया तन की इहै बड़ाई।
राम न रमसि मोह में माते परस्यो काल बस कूवा।
कह कबीर नर आप बँधायो ज्यों नलिनी भ्रम सूवा।

× × ×

अल्लह राम जीव तेरी नाईं,
जन पर मेहर करहु तुम साईं।
क्या मूँड़ो भीमहिं सिर नाए क्या जल देह नहाए।
खून करे मसकीन कहावै गुन को रहै छिपाए।

क्या भो उज्जू मज्जन कीने क्या मसजिद सिर नाए।
हृदये कपट नेवाज गुजारे का भो मक्का जाए।
हिन्दू एकादशि चौबिस रोजा मुसलिम तीस बनाए।
बारह मास कहो क्यों टारो ये केहि माहँ समाए।
पूरव दिसि में हरि को बासा पच्छिल अलह मुकामा।
दिल में खोज दिले में देखो यहै करीमा रामा।
जो खोदाय मसजिद में बसतु है और मुलुक केहि केरा।
तीरथ मूरत राम निवासी दुइ महँ किनहुँ न हेरा।
वेद किताब कीन किन झूठा झूठा जो न बिचारै।
सब घट माहिं एक करि लेखै भै दूजा करि मारै।
जेते औरत मर्द उपाने सो सब रूप तुम्हारा।
कबिर पोगड़ा अलह राम का सो गुरु पीर हमारा।

× × ×

बहुर नहिं आवना या देस।
जो जो गए बहुर नहिं आए, पठवत नाहिं सँदेस॥
सुर नर मुनि औ पीर औलिया देवी देव गनेस।
धरि धरि जनम सबै भरमे हैं ब्रह्मा विष्णु महेस॥
जोगी जंगम और सन्यासी दीगंबर दरवेस।
चुंडित मुंडित पंडित लोई सरग रसातल सेस॥
ग्यानी गुनी चतुर औ कविता राजा रंक नरेस।
कोइ रहीम कोइ राम बखाने कोइ कहै आदेस।
नाना भेख बनाय सबै मिलि ढूँढि फिरे चहुँदेस।
कहैं कबीर अंत ना पैहो बिन सतगुरु उपदेस॥

× × ×

वा दिन की कछु सुध कर मन माँ।
जा दिन लै चलु लै चलु होई, ता दिन संग चलै नहिं कोई॥
तात मात सुत नारी रोई, माटी के संग दियो समोई।
सो माटी काटेगी तन माँ।
उलफत नेहा कुलफत नारी, किसकी बीबी किसकी बाँदी।
किसका सोना किसकी चाँदी, जा दिन जम ले चलिहै बाँधी॥
डेरा जाय परै बहि बन माँ।
टाँड़ा तुमने लादा भारी, बनिज किया पूरा ब्योपारी।
जूआ खेला पूँजी हारी, अब चलने की भई तयारी॥
हित चित मात तुम लाओ धन माँ।

जा कोइ गुरु से नेह लगाई। बहुत भाँति सोई सुख पाई।
माटी में काया मिलि जाई। कह कबीर आगे गोहराई।
सॉच नाम साहिब को सँग मों॥

× × ×

ना जाने तेरा साहिब कैसा।
महजिद भीतर मुल्ला पुकारै क्या साहिब तेरा बहिरा है।
चिउँटी के पग नेवर बाजे सो भी साहब सुनता है॥
पंडित होय के आसन मारै लम्बी माला जपता है।
अंतर तेरे कपट कतरनी सो भी साहब लखता है॥
ऊँचा नीचा महल बनाया गहरी नेव जमाता है।
चलने का मनसूबा नाहीं रहने को मन करता है॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी गाड़ि जमीं में धरता है।
जेहि लहना है सो लै जैहै पापी वहि वहि मरता है॥
सतवंती को गजी मिलै नहिं वेश्या पहिरे खासा है।
जेहि घर साधू भीख न पावै भँडुआ खात बतासा है॥
हीरा पाय परख नहिं जाने कौड़ी परखन करता है।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो हरि जैसे को तैसा है॥

× × ×

मुखड़ा क्या देखै दरपन में, तेरे दया धरम नहिं मन में।
आम की डार कोइलिया बोलै सुवना बोलै बन में॥
घरबारी तो घर में राजी फक्कड़ राजी वन में।
ऐंठी धोती पाग लपेटी तेल चुआ जुलफन में॥
गली गली की सखी रिझाईं दाग लगाया तन में।
पाथर की इक नाव बनाई उतरा चाहै छन में।
कहत कबीर सुनो भाई साधो वे क्या चढ़िहैं रन में॥

× × ×

मोरे जियरा बड़ा अँदेसवा, मुसाफिर जैहो कौनी ओर।
मोह का सहर कहर नर नारी दुइ फाटक घन घोर॥
कुमती नायक फाटक रोकै, परिहो कठिन झँझोर।
संसय नदी अगाड़ी बहती बिषम धार जल जोर॥
क्या मनुवाँ तू गाफिल सोवै, इहाँ मोर और तोर।
निसि दिन प्रीति करो साहब से, नाहिन कठिन कठोर।
काम दिवाना क्रोध है राजा बसै पचीसो चोर॥

सत्त पुरुख इक बसै पच्छिम दिसि तासों करो निहोर।
आवै दरद, राह तोहि लावै तब पैहो निज ओर॥
उलटि पाछिलो पैंड़ा पकड़ो पसरा मना बटोर।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो तब पैहो निज ठोर॥

× × ×

नाम सुमिर, पछतायगा।
पापी जियरा लोभ करत है आज काल उठि जायगा।
लालच लागी जनम गँवाया माया भरम भुलायगा।
धन जोवन का गरब न कीजै कागद ज्यों गलि जायगा।
जब जम आइ केस गहि पटकै ता दिन कछु न बसायगा।
सुमिरन भजन दया नहि कीन्हीं तो मुख चोटा खायगा।
धरमराय जब लेखा मागे क्या मुख लेके जायगा।
कहत कबीर सुनो भाई साधो साध सग तरि जायगा।

× × ×

जाके नाम न आवत हिए।
काह भए नर कासि बसे से का गगा-जल पिए॥
काह भए नर जटा बढ़ाए का गुदरी के लिए।
काह भयो कंठी के बाँधे काह तिलक के दिये॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो नाहक ऐसे जिए।

× × ×

सुमिरो सिरजनहार, मनुख तन पाय के।
काहे रहो अचेत कहा यह अवसर पैहो।
फिर नहि मानुख जनम बहुरि पीछे पछतैहो॥
लख चौरासी जीव जन्तु में मानुख परम अनूप।
सो तन पाय न चेतहू कहा रंक का भूप॥
गरभ बास में रह्यो कह्यो मैं भजिहौं तोहीं।
निसि दिन सुमिरौं नाम कष्ट से काढ़ौ मोहीं॥
इक मन इक चित ह्वै रहौं रहौं नाम लव लाय।
पलक न तुमैं विसारिहौं यह तन रहै कि जाय॥
इतना कियो करार तबै प्रभु बाहर कीना।
बिसर गयो वह ठाँव भयो माया आधीना॥
भूली बात उदर की यहाँ तो मत भइ आन।
बारह बरस ऐसही बीते डोलत फिरत अजान॥

विखया पवन समान तबै ज्वानी मदमाते।
चलत निहारे छाँह तमक के बोलै बातें॥
चोवा चन्दन लाइ के पहिरे वसन बनाय।
गलियों में डोलत फिरै परतिय लख मुसुकाय॥
गा तरुनापा बीत बुढ़ापा आइ तुलाना।
कंपन लागे सीस चलत दोउ पाँव पिराना॥
नैन नासिका चूवन लागे करन सुनै नहि बात।
कंठ माहिं कफ घेरि लियो है विसर गए सब नात॥
मात पिता सुत नारि कहौ काके सँग लागी।
तन मन भजि लो नाम काम सब होयँ सुभागी॥
नहि तो काल गरासिहैं परिहौ जम के जार।
बिन सतगुरु नहिं बाँचिहौ हिरदय करहु विचार॥
सुफल होय यह देह नेह संतगुरु से कीजे।
मुक्ती मारग यही संत चरनन चित दीजै॥
नाम जपो निरभय रहो अंग न व्यापै पीर।
जरा मरन बहु संसय मेटे गावैं दास कबीर॥

× × ×

तोरी गठरी में लागे चोर, बटोहिया का रे सोवै।
पाँच पचीस तीन हैं चोरवा, यह सब कीन्हा सोर।
जाग सवेरा बाट अनेरा, फिर नहिं लागे जोर।
भव सागर एक नदि बहत है, बिन उतरे जीव बोर॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, जागत कीजै भोर।

× × ×

का सोवो सुमिरन की बेरिया।
जिन सिरजा तिन की सुधि नाहीं,
झकत फिरो झकझलनि झलरिया।
गुरु उपदेस संदेस कहत हैं,
भजन करो चढ़ि गगन अटरिया।
नित उठि पाँच पचिसकै झगरा,
व्याकुल मोरी सुरनि सुँदरिया।
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
भजन विना तोरी सूनि नगरिया॥

× × ×

सुमिरन बिन गोता खाओगे ।
मुट्ठी बाँधि गर्भ से आए हाथ पसारे जाओगे ।
जैसे मोती फरत ओस के बेर भए झर जाओगे ।
जैसे हाट लगावै हटवा सौदा बिन पछताओगे ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो सौदा लेकर जाओगे ।।

× × ×

अरे मन समझ के लादु लदनियाँ ।
काहे क टट्टुवा काहे क पाखर काहे क भरी गौनियाँ ।
मन के टट्टुवा सुरति कै पाखर भर पुन पाप गौनियाँ ।।
घर के लोग जगाती लागे छीन लेयँ करधनियाँ ।
सौदा करु तो यहिं करु भाई आगे हाट न बनियाँ ।
पानी पी तो यहीं पी भाई आगे देस निपनियाँ ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो सत्त नाम का बनियाँ ।।

× × ×

दिवाने मन भजन बिना दुख पैहो ।
पहिले जनम भूत का पैहो सात जनम पछितैहो ।
काँटा पर कै पानी पैहो प्यासन ही मरि जैहो ।।
दूजा जनम सुवा का पैहो बाग बसेरा लइहो ।
टूटे पंख बाज मँड़राने अधफड़ प्रान गँवइहो ।।
बाजीगर के बानर होइहौ लकड़िन नाच नचैहो ।
ऊँच नीच से हाथ पसरिहो मांगे भीख न पैहो ।।
तेली के घर बैला होइहो आंखिन ढाँप ढँपैहो ।
कोस पचास घरै में चलिहो बाहर होन न पैहो ।।
पँचवाँ जनम ऊँट कै पैहो बिन तौले बोझ लदैहो ।
बैठे से तो उठै न पैहो घुरच घुरच मरि जैहो ।।
धोबी घर के गदहा होइहौ कटी घास ना पैहो ।
लादी लादि आपु चढ़ि बैठे लै घाटे पहुँचैहो ।।
पच्छी माँ तो कौवा होइहो करर करर गुहरैहो ।
उड़ि के जाइ बैठि मैले थल गहिरे चोंच लगैहो ।
सत्त नाम की टेर न करिहौ मन ही मन पछितैहो ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो नरक निसानी पैहो ।।

× × ×

साधो यह तन ठाठ तँबूरे का ।
ऐंचत तार मरोरत खूँटी निकसत राग हजूरे का ।

टूटे तार बिखरि गई खूँटी हो गया धूरम धूरे का ॥
या देही का गरब न कीजै उड़ि गया हंस तंबूरे का ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो अगम पंथ कोइ सूरे का ।

× × ×

गगन घटा घहरानी,
साधो गगन घटा घहरानी ।
पूरब दिसि से उठी बदरिया रिमझिम बरसत पानी ।
आपन आपन मेंड़ सम्हारो बह्यो जात यह पानी ॥
मन के बैल सुरत हरवाहा जोत खेत निरवानी ।
दुविधा दूब छोल करु बाहर बोव नाम की धानी ॥
जोग जुगुत करि करु रखवारी चरन जाय मृगधानी ।
बाली झार कूट घर लावै सोई कुसल किसानी ॥
पाँच सखी मिल कीन रसोइया एक से एक सयानी ।
दूनों थार बराबर परसे जेवैं मुनि अरु ज्ञानी ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो यह पद है निरवानी ।
जो या पद को परिचै पावे ता को नाम बिज्ञानी ॥

× × ×

नैहर में दाग लगाय आई चुनरी ।
ऊ रँगरेजवा कै मरम न जानै नहिं मिलै धोबिया कवन करै उजरी ।
तन कै कूँड़ी ज्ञान कै सउँदन साबुन महँग बिकाय या नगरी ।
पहिरि ओढ़ि के चली ससुररिया गाँवों के लोग कहैं बड़ी फुहरी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो बिन सतगुरु कबहूँ नहिं सुधरी ॥

× × ×

मोरी चुनरी में परि गयो दाग पिया ।
पाँच तत्त कै बनी चुनरिया सोरह सै बँद लागे जिया ।
यह चुनरी मोरे मैके ते आई ससुरे में मनुआ खोय दिया ॥
मलि मलि धोई दाग न छूटै ज्ञान को साबुन लाय पिया ।
कहत कबीर दाग तब छुटि है जब साहब अपनाय लिया ॥

× × ×

पिया ऊँची रे अटरिया, तोरी देखन चली ।
ऊँची अटरिया जरद किनरिया लगी नाम की डोरिया ।
चाँद सुरज सम दियना बरतु हैं ता बिच भूली डगरिया ॥
पाँच पचीस तीन घर बनिया मनुआँ है चौधरिया ।
मुंशी है कोतवाल ज्ञान को चहुँ दिस लगी बजरिया ॥

आठ मरातिब दस दरवाजा नौ में लगी किवरिया।
खिरकि बैठ गोरी चितवन लागी उपराँ झाँप झोंगरियाँ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो गुरु चरनन बलिहरिया।
साध संत मिलि सौदा करिहैं झीखै मुरुख अनरिया॥

× × ×

का लै जैबो ससुर घर ऐबो।
गाँव के लोग जब पूछन लगिहैं तब हम का रे बतैबो॥
खोल घुँघट जब देखन लगिहैं तब हम बहुत लजैबो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो फिर सासुर नहिं पैबो॥

× × ×

जेहि कुल भगत भाग बड़ होई।
अवरन वरन न गनिय रंक धनि बिमल बास निज सोई॥
बाम्हन छत्री बैस सूद्र सब भगत समान न कोई।
धन वह गाँउ ठाँव असथाना है पुनीत सँग लोई॥
होत पुनीत जपै सतनामा आपु तरे तारे कुल दोई।
जैसे पुरइन रह जल भीतर कह कबीर जग में जन सोई॥

× × ×

ये अँखियाँ अलसानी, पिय हो सेज चलो।
खंभा पकरि पतंग अस डोलै बोलै मधुरी बानी।
फूलन सेज बिछाइ जो राख्यो पिया बिना कुम्हलानी।
धीरे पाँव धरो पलँगा पर जागत ननद जिठानी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो लोक लाज बिछलानी॥

× × ×

आयो दिन गौने कै हो, मन होत हुलास।
पाँच भीट कै पोखरा हो, जामें दस द्वार।
पाँच सखी बैरिन भई हो, कस उतरब पार।
छोट मोट डोलिया चन्दन कै हो, लागे चार कहार।
डोलिया उतारै बीच बनवाँ हो, जहँ कोइ न हमार।
पइयाँ तोरी लागो कहरवा हो, डोली धर छिन बार।
मिल लेउ सखिया सहेलर हो, मिलो कुल परिवार।
साहब कबीर गावै निरगुन हो, साधो करि लो बिचार॥
नरम गरम सौदा करि लो हो, आगे हाट न बजार॥

× × ×

खेल ले नैहरवाँ दिन चारि ।
पहिली पठौनी तीन जन आए नौवा वाम्हन वारि ।।
वावुल जी मैं पैयाँ तोरी लागों अब की गवन दे टारि ।
दुसरी पठानी आपे आए लेके डोलिया कहार ।।
धरि वहियाँ डोलिया बैठारिन कोउ न लागे गोहार ।
ले डोलिया जाइ वन उत्तारिन कोइ नहिं संगी हमार ।।
कहैं कवीर सुनो भाइ साधो इक घर हैं दस द्वार ।।

× × ×

करो जतन सखी साँईं मिलन की ।
गुड़िया गुड़वा सूप सुपेलिया, तज दे बुध लरिकैयाँ खेलन की ।।
देवता पित्तर भुइयाँ भवानी, यह मारग चौरासी चलन की ।
ऊँचा महल अजव रँग रँगला साँईं सेज वहाँ लागी फुलन की ।।
तन मन धन सब अपरन कर वहाँ सुरत सम्हारु परु पैयाँ सजन की ।
कह कवीर निरभय होय हंसा कुंजी वता देउँ ताला खुलन की ।।

× × ×

साधो सो सतगुरु मोहिं भावै ।
सत्त नाम का भर भर प्याला आप पिवे मोहिं पिलावे ।।
मेले जाय न महँत कहावै पूजा भेंट न लावै ।
परदा दूरि करे आंखिन का निज दरसन दिखलावै ।।
जाके दरसन साहव दरसैं अनहद शब्द सुनावै ।
माया के सुख दुख कर जानै संग न सुपन चलावै ।।
निसि दिन सत-संगति में राचै शब्द में सुरत समावै ।
कह कवीर ताको भय नाहीं, निरभय पद परसावै ।।

× × ×

अरे इन दोउन राह न पाई ।
हिंदू अपनी करै वड़ाई गागर छुवन न देई ।
वेश्या के पायन तर सोवै यह देखो हिंदुआई ।।
मुसलमान के पीर औलिया मुरगी मुरगा खाई ।
खाला केरी वेटी व्याहैं घरहि में करैं सगाई ।
वाहर से इक मुर्दा लाए धोय धाय चढ़वाई ।
सव सखियाँ मिलि जेवन वैठीं घर भर करैं वड़ाई ।।
हिंदुन को हिन्दुआई देखी तुरकन की तुरकाई ।।
कहैं कवीर सुनो भाई साधौ कौन राह है जाई ।।

× × ×

अवधू भजन भेद है न्यारा।
क्या गाए क्या लिखि बतलाए क्या भरमे संसारा।
क्या संध्या तरपन के कीन्हे जो नहिं तत्त विचारा॥
मूँड़ मुड़ाए जटा रखाए क्या तन लाए छारा।
क्या पूजा पाहन की कीन्हे क्या फल किए अहारा॥
बिन परचै साहब होइ बैठे करे विषय व्योपारा।
ज्ञान ध्यान का मरम न जाने वाद करै हंकारा॥
अगम अथाह महा अति गहिरा बीजन खेत निवारा।
महा सो ध्यान गगन है बैठे काट करम की छारा॥
जिनके सदा अहार अंतर में केवल तत्त विचारा।
कहत कबीर सुनो हो गोरख तरैं सहित परिवारा॥

× × ×

मन न रंगाए रँगाए जोगी कपरा।
आसन मारि मंदिर में बैठे नाम छांड़ि पूजन लगै पथरा।
कनवा फड़ाय जोगी जटवा बढ़ौलै दाड़ी बढ़ाय जोगी होइ गैलै बकरा।
जंगल जाय जोगी धुनिया रमौलै काल जराय जोगी बनि गैलै हिजरा।
मथवा मुड़ाय जोगी कपड़ा रँगौलै गीता बाँच के होइ गैलै लबरा।
कहत कबीर सुनो भाई साधो जम दरवजवा बाँधल जैबे पकरा॥

× × ×

रहना नहिं देस बिराना है।
यह संसार कागद की पुड़िया बूँद पड़े घुल जाना है।
यह संसार काँट की बाड़ी उलझ पुलझ मरि जाना है॥
यह संसार झाड़ औ झाँखर आगि लगे बरि जाना है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो सतगुरु नाम ठिकाना है॥

× × ×

जियरा जावगे हम जानी।
पाँच तत्त को बनो पींजरा जामें वस्तु बिरानी।
आवत जावत कोइ न देखो डूबि गयो बिन पानी॥
राजा जैहैं रानी जैहैं औ जैहैं अभिमानी।
जोग करंते जोगी जइहैं कथा सुनंते ज्ञानी॥
पाप पुन्न की हाट लगी है धरम दन्ड दरवानी।
पाँच सखी मिलि देखन आईं एक से एक सयानी॥

चंदा जइहैं सुरजौ जइहैं जइहैं पवनो पानी।
कह कबीर इक भक्त न जइहैं जिनकी मति ठहरानी ॥

× × ×

सुगवा पिंजरवा छोरि भागा।
इस पिंजरे में दस दरवाजा दस दरवाजे किवरवा लागा ॥
ऑखियन सेती नीर बहन लाग्यो अब कस नाहिं तू बोलत अभागा।
कहत कबीर सुनो भाई साधो उड़िगो हंस टूटि गयो तागा ॥

× × ×

झीनी झीनी बीनी चदरिया।
काहे कै ताना काहे कै भरनी कौन तार से बीनी चदरिया।
इँगला पिंगला ताना भरनी सुखमन तार से बीनी चदरिया।
आठ कँवल दल चरखा डोलै पाँच तत्त गुन तीनी चदरिया ॥
साँई को सियत मास दस लागे ठोक ठोक के बीनी चदरिया।
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़े ओढ़ि के मैली कीनी चदरिया।
दास कबीर जतन से ओढ़ी ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया ॥

× × ×

तोर हीरा हेराइल वा कचरे में।
कोइ पूरब कोइ पच्छिम ढूंढ़े कोइ ढूंढ़े पानी पथरे में।
सुर नर मुनि अरु पीर औलिया सब भूलल बाड़े नखरे में ॥
साहब कबीर हिरा यह परखैं बाँध लिहलैं लँगोटी के अँचरे में ॥

× × ×

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागौं पायँ।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय ॥
सतगुरु दीनदयाल है, दया करो मोहि आय।
कोटि जनम का पंथ, था, पल में पहुँचा जाय ॥
गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़े खोट ?
अंतर हाथ सहार दे, बाहर बाहै चोट ॥
सब धरती कागद करूँ, लेखनि सब बन राय।
सात समुँद की मसि करूँ, गुरु गुन लिखा न जाय ॥
कबिरा ते नर अंध हैं, गुरू को कहते और।
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरू रूठे नहीं ठौर ॥
तीन लोक नौ खंड में, गुरु तैं बड़ा न कोइ।
करता करै न कर सके, गुरू करै सो होइ ॥

दुख में सुमिरन सब करैं, सुख में करै न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय ।।
सुमिरन सों मन लाइये, जैसे नाद कुरंग ।
कह कबीर बिसरे नहीं, प्रान तजै तेहि संग ।।
माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर ।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर ।।
कबिरा माला काठ की, बहुत जतन का फेर ।
माला स्वाँस उसाँस की, जामें गाँठ न मेर ।।
माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माहिं ।
मनुवाँ तो चहुँ दिसि फिरे, यह तो सुमिरन नाहिं ।।
आज कहै कल भजूँगा, काल कहै फिर काल ।
आज काल के करत ही, औसर जासी चाल ।।
बाजीगर का बन्दरा, ऐसा जिउ मन साथ ।
नाना नाच नचाय के, राखै अपने हाथ ।।
बहुतक पीर कहावते, बहुत करत हैं भेस ।
यह मन कहर खुदाय का, मारै सो दरवेस ।।
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।
परमातम को पाइये, मनही के परतीत ।।
मन पाँचों के बस परा, मन के बस नहिं पाँच ।
जित देखूँ तित दौं लगी, जित भागूँ तित आँच ।।
गो-धन, गज धन, बाजि-धन, और रतन-धन-खान ।
जब आवै संतोष-धन, सब धन धूरि समान ।।
तेरा सांई तुज्झ में, ज्यों पुहुपन में बास ।
कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिरि फिरि ढूँढै घास ।।
यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान ।
सीस दिये जो गुरु मिलैं, तौ भी सस्ता जान ।।
बहे बहाये जात थे, लोक बेद के साथ ।
पैंड़ा में सत गुरु मिले, दीपक दीन्हा हाथ ।।
ऐसा कोई ना मिला, सत्त नाम का मीत ।
तन मन सौंपे मिरग ज्यौं, सुनै बधिक का गीत ।।
सतगुरु साँचा सूरमा, नख सिख मारा पूर ।
बाहर घाव न दीसई, भीतर चकनाचूर ।।

सुख के माथे सिलि परै, (जो) नाम हृदय से जाय।
वलिहारी वा दुक्ख की, पल पल नाम रटाय॥

लेने को सतनाम है, देने को अन दान।
तरने को आधीनता, बूड़न को अभिमान॥

सुमिरन की सुधि यों करै, ज्यों गागर पनिहार।
हालै डोलै सुरति में, कहै कबीर विचार॥

गगन मँडल के बीच में, जहाँ सोहंगम डोरि।
सब्द अनाहद होत है, सुरत लगी तहँ मोरि॥

कबीर गर्ब न कीजिये, काल गहे कर केस।
ना जानौं कित मारि है, क्या घर क्या परदेस॥

हाड़ जरै ज्यों लाकड़ी, केस जरै ज्यों घास।
सब तन जरता देखि कर, भये कबीर उदास॥

झूठे सुख को सुख कहैं, मानत हैं मन मोद।
जगत चबेना काल का, कुछ मुख में कुछ गोद॥

पानी केरा बुद बुदा, अस मानुष की जात।
देखत ही छिप जायगी, ज्यों तारा परभात॥

रात गँवाई सोय करि, दिवस गँवायो खाय।
हीरा जन्म अमोल था, कौड़ी बदले जाय॥

आछे दिन पाछे गये, गुरु से किया न हेत।
अब पछतावा क्या करै, चिड़िया चुग गई खेत॥

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पलमें परलै होयगी, बहुरि करैगा कब्ब॥

कबीर नौबत आपनी, दिन दस लेहु बजाय।
यह पुर पट्टन यह गली, बहुरि न देखौ आय॥

पाँचो नौबत बाजती, होत छतीसों राग।
सो मन्दिर खाली पड़ा, बैठन लागे काग॥

कहा चुनावै मेड़ियाँ, लम्बी भीति उसारि।
घर तो साढ़े तीन हथ, घना तो पौने चारि॥

माटी कहै कुम्हार को, तू क्या रूंधे मोहिं।
इक दिन ऐसा होइगा, मैं रूँधूगी तोहिं॥

यह तन काँचा कुम्भ है, लिये फिरै था साथ।
टपका लागा फूटिया, कछु नहिं आया हाथ॥

आये हैं सो जाँयगे, राजा रंक फकीर।
एक सिंघासन चढ़ि चले, एक बंधे जँजीर॥
आसपास जोधा खड़े, सभी बजावैं गाल।
मंझ महल से लै चला, ऐसा काल कराल॥
या दुनिया में आय के, छाड़ि देइ तू ऐंठ।
लेना होय सो लेइ, लै उठी जात है पैंठ॥
कविरा आप ठगाइये, और न ठगिये कोय।
आप ठगे सुख ऊपजै, और ठगे दुख होय॥
ऐसी गति संसार की, ज्यों गाड़र की ठाट।
एक पड़ा जेहि गाड़ में, सबै जाहिं तेहि वाट॥
तू मत जाने बावरे, मेरा है सब कोय।
पिंड प्रान से बंधि रहा, सो अपना नहिं कोय॥
इक दिन ऐसा होयगा, कोउ काहू का नाहिं।
घर की नारी को कहै, तन की नारी जाहिं॥
नाम भजो तो अब भजो, बहुरि भजोगे कब्ब।
हरियर हरियर रूखड़े, ईंधन हो गये सब्ब॥
माली आवत देखि कै, कलियाँ करी पुकार।
फूली फूली चुनि लिये, कालिह हमारी बार॥
हम जानैं थे खाहिंगे, बहुत जमी बहु माल।
ज्यों का त्यों ही रहि गया, पकरि लै गया काल॥
भक्ति भाव भादों नदी, सबै चलीं बहराय।
सरिता सोई सराहिये, जो जेठ मास ठहराय॥
जब लगि भक्ति सकाम है, तब लगि निष्फल सेव।
कह कबीर वह क्यों मिले, निःकामी निज देव॥
लागी लागी क्या करे, लागी बुरी बलाय।
लागी सोई जानिये, जो वार पार ह्वै जाय॥
लागी लगन छुटै नहीं, जीभ चोंच जरि जाय।
मीठा कहा अँगार में, जाहि चकोर चबाय॥
सोओं तो सुपने मिलै, जागों तो मन माहिं।
लोचन राता सुधि हरी, बिछुरत कबहूँ नाहिं॥
ज्यों तिरिया पीहर बसे, सुरति रहै पिय माहिं।
ऐसे जन जग में रहैं, हरि को भूलैं नाहिं॥

कबिरा हँसना दूर करु, रोने से करु चीत।
बिन रोये क्यों पाइये, प्रेम पियारा मीत॥

हँसौ तो दुख ना बीसरै, रोवौं बल घटि जाय।
मनहीं माहिं बिसूरना, ज्यों घुन काठहिं खाय॥

हँस हँस के तन पाइया, जिन पाया तिन रोय।
हाँसी खेले पिउ मिलै, तो कौन सुहागिनि होय॥

सुखिया सब संसार है, खावै औ सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै औ रोवै॥

माँस गया पिञ्जर रहा, ताकन लागे काग।
साहिब अजहुँ न आइया, मंद हमारे भाग॥

हवस करै पिय मिलन की, औ सुख चाहै अंग।
पीर सहे बिनु पदमिनी, पूत न लेत उछंग॥

बिरहिनि ओदी लाकड़ी, सपचे औ धुँधुआय।
छूटि पड़ौं या बिरह से, जो सिगरो जरि जाय॥

पावक रूपी नाम है, सब घट रहा समाय।
चित चकमक चहुँटै नहीं, धूवाँ ह्वै ह्वै जाय॥

जो जन बिरही नाम के, तिनकी गति है येह।
देही से उद्यम करैं, सुमिरन करैं बिदेह॥

बिरहा बिरहा मत कहो, बिरहा है सुल्तान।
जा घट बिरह न संचरै, सो घट जान मसान॥

आगि लगी आकास में, झरि झरि परै अँगार।
कबिरा जरि कंचन भया, काँच भया संसार॥

कबिरा बैद बुलाइया, पकरि के देखी बाहिं।
बैद न वेदन जानई, करक करेजे माहिं॥

जाहु बैद घर आपने, तेरा किया न होय।
जिन या वेदन निर्मई, भला करैगा सोय॥

सीस उतारै भुइँ धरै, तापर राखै पाँव।
दास कबीरा यों कहै, ऐसा होय तो आव॥

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जेहि रुचै, सीस देइ लै जाय॥

छिनहिं चढ़ै छिन ऊतरै, सो तो प्रेम न होय।
अघट प्रेम पिञ्जर बसै, प्रेम कहावै सोय॥

प्रेम प्रेम सब कोइ कहै, प्रेम न चीन्हे कोय।
आठ पहर भीना रहै, प्रेम कहावै सोय॥
जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु हैं हम नाहिं।
प्रेम गली अति साँकरी, ता में दो न समाहिं॥
जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की, साँस लेत बिन प्रान॥
प्रेम तो ऐसा कीजियो, जैसे चंद चकोर।
घींच टूटि भुइँ माँ गिरै, चितवै वाही ओर॥
जहाँ प्रेम तहँ नेम नहिं, तहाँ न बुधि व्यौहार।
प्रेम मगन जब मन भया, कौन गिनै तिथि वार॥
प्रेम छिपाया ना छिपै, जा घट परघट होय।
जो पै मुख बोलै नहीं, नैन देत हैं रोय॥
पीया चाहै प्रेम रस, राखा चाहै मान।
एक म्यान में दो खड़ग, देखा सुना न कान॥
कबिरा प्याला प्रेम का, अन्तर लिया लगाय।
रोम रोम में रमि रहा, और अमल क्या खाय॥
नैनों की करि कोठरी, पुतली पलँग बिछाय।
पलकों की चिक डारि के, पिय को लिया रिझाय॥
जल में बसै कमोदिनी, चन्दा बसै अकास।
जो है जाको भावता, सो ताही के पास॥
प्रीतम को पतियाँ लिखूँ, जो कहुँ होय बिदेस।
तन में मन में नैन में, ताको कहा संदेस॥
साईं इतना दीजिये, जा में कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय॥
बिनवत हौं करि जोरि कै, सुनिये कृपा-निधान।
साधु सँगति सुख दीजिये, दया गरीबी दान॥
क्या मुख लै बिनती करौं, लाज आवत है मोहिं।
तुम देखत औगुन करौं, कैसे भावौं तोहिं॥
अवगुन मेरे बाप जी, बकसु गरीब निवाज।
जो मैं पूत कपूत हौं, तऊ पिता को लाज॥
साहिब तुमहि दयाल हौ, तुम लगि मेरी दौर।
जैसे काग जहाज को, सूझै और न ठौर॥

सिख तो ऐसा चाहिये, गुरु को सब कछु देय।
गुरु तो ऐसा चाहिये, सिख से कछु नहिं लेय॥

सिंहों के लेहँड़े नहीं, हंसों की नहिं पाँत।
लालों की नहिं बोरियाँ, साधु न चलैं जमात॥

साधु कहावन कठिन है, ज्यों खाँड़े की धार।
डगमगाय तो गिरि परे, निःचल उतरै पार॥

गाँठी दाम न बाँधई, नहिं नारी से नेह।
कह कबीर ता साधु के, हम चरनन की खेह॥

साधु हमारी आतमा, हम साधुन के जीव।
साधुन मद्धे यों रहौं, ज्यों पय मद्धे घीव॥

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिये ज्ञान।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥

कबीर संगत साधु की हरै, और की व्याधि।
संगत बुरी असाधु की, आठों पहर उपाधि॥

कबीर संगत साधु की, जौ की भूसी खाय।
खीर खाँड़ भोजन मिले, साकट संग न जाय॥

कबीर संगत साधु की, ज्यों गंधी का वास।
जो कुछ गंधी दे नहीं, तो भी वास सुवास॥

कबीर संगत साधु की, निष्फल कभी न होय।
होसी चंदन वासना, नीम न कहसी कोय॥

संगति भई तो क्या भया, हिरदा भया कठोर।
नौ नेजा पानी चढ़े, तऊ न भीजै कोर॥

हरियर जानै रूखड़ा, जो पानी का नेह।
सूखा काठ न जानही, केतहु बूड़ा मेह॥

मारी मरै कुसंग की, ज्यों केले ढिग बेर।
वह हालै वह चीरई, साकट संग निवेर॥

केला तबहिं न चेतिया, जब ढिग जामी बेरि।
अब के चेते क्या भया, काँटों लीन्हा घेरि॥

समदृष्टी सतगुरु किया, मेटा भरम विकार।
जहँ देखों तहँ एक ही, साहिब का दीदार॥

सहज मिलै सो दूध सम, माँगा मिलै सो पानि।
कह कबीर वह रक्त सम, जा में ऐंचातानि॥

साधू ऐसा चाहिये, जैसा सूप सुभाय।
सार सार को गहि रहै, थोथा दई उड़ाय॥

आटा तजि भूसी गहै, चलना देखु निहार।
कबीर सारहि छांड़ि कै, करै असार अहार॥

उततें कोई न बाहुरा, जातें बूझूँ धाय।
इततें सब ही जात हैं, भार लदाय लदाय॥

उततें सत गुरु आइया, जा की बुधि है धीर।
भवसागर के जीव को, खेइ लगावैं तीर॥

जो आवै तो जाय नहिं, जाय तो आवै नाहिं।
अकथ कहानी प्रेम की, समझ लेहु मन माहिं॥

सूली ऊपर घर करै, विष का करै अहार।
ताको काल कहा करै, जो आठ पहर हुसियार॥

नाँव न जानौं गाँव का, विन जाने कित जाँव।
चलता चलता जुग भया, पाव कोस पर गाँव॥

चलन चलन सब कोई कहै, मोहिं अंदेसा और।
साहिब से परिचय नहीं, पहुँचैंगे केहि ठौर॥

कबीर का घर सिखर पर, जहाँ सिलहली गैल।
पाँव न टिकै पिपीलिका, पंडित लादे बैल॥

मरिये तो मरि जाइये, छूटि परै जंजार।
ऐसा मरना को मरै, दिन में सौ सौ बार॥

कस्तूरी कुन्डल बसै, मृग ढूंढ़ै बन माहिं।
ऐसे घट में पीव है, दुनियाँ जानै नाहिं॥

द्वार धनी के पड़ि रहै, धका धनीका खाय।
कबहूँक धनी निवाजई, जो दर छाड़िन जाय॥

जरा मीच व्यापै नहीं, मुआ न सुनिये कोय।
चलु कबीर वा देश को, जहँ बैद साइयाँ होय॥

साध सती औ सूरमा, ज्ञानी औ गज-दन्त।
एते निकसि न बहुरैं, जो जुग जाहि अनन्त॥

सिर राखे सिर जात है, सिर काटे सिर सोय।
जैसे बाती दीप की, कटि उजियारा होय॥

जूझैंगे तब कहैंगे, अब कछु कहा न जाय।
भीड़ पड़े मन मसखरा, लड़ै किधौं भगि जाय॥

अगिनि आँच सहना सुगम, सुगम खड़ग की धार।
नेह निभावन एकरस, महा कठिन व्यौहार ॥

सूरा नाम धराइ के, अब का डरपै वीर।
माँडि रहना मैदान में, सन्मुख सहना तीर ॥

पतिवरता को सुख घना, जाके पति है एक।
मन मैली बिभिचारनी, ताके खसम अनेक ॥

पतिबरता पति को भजै, और न आन सुहाय।
सिंह बचा जो लंघना, तौ भी घास न खाय ॥

नैनों अंतर आव तूँ, नैन झांपि तोहि लेव।
ना मैं देखो और को, ना तोहिं देखन देवँ ॥

मैं सेवक समरत्थ का, कबहुँ न होय अकाज।
पतिवरता नाँगी रहै, तो वाही पति को लाज ॥

सब आये उस एक में, डार पात फल फूल।
अब कहो पाछे क्या रहा, गहि पकड़ा जब मूल ॥

चन्दन गया विदेसड़े, सब कोइ कहै पलास।
ज्यों ज्यो चूल्हे झोकिया, त्यों त्यों अधिकी बास ॥

लाली मेरे लाल की, जित देखों तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल ॥

हम बासी वा देस जहँ, बारह मास बिलास।
प्रेम झिरै बिगसे कँवल, तेज पुंज परकास ॥

कबीर जब हम गावते, तब जाना गुरु नाहिं।
अब गुरु दिल में देखिया, गावन को कछु नाहि ॥

ज्ञानी से कहिये कहा, कहत कबीर लजाय।
अंधे आगे नाचते, कला अकारथ जाय ॥

जो तोको काँटा बुवै, ताहि बोव तू फूल।
तोहिं फूल को फूल है, वाको है तिरसूल ॥

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
बिना जीवकी स्वास से, लोह भसम होजाय ॥

ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय ॥

हस्ती चढ़िये ज्ञान की, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रुप संसार है, भूकन दे झख मारि ॥

आवत गारी एक है, उलटत होय अनेक ।
कह कबीर नहिं उलटिये, वही एक की एक ॥

कथा कीरतन रात दिन, जाके उद्यम येह ।
कह कबीर ता साधु की, हम चरनन की खेह ॥

बन्दे तू कर वन्दगी, तौ पावै दीदार ।
औसर मानुष जनम का, बहुरि न बारम्बार ॥

साधु भया तो क्या भया, बोलै नाहिं विचार ।
हतै पराई आतमा, जीभ बांधि तरवार ॥

मधुर वचन है औषधी, कटुक बचन है तीर ।
स्रवन द्वार ह्वै संचरै, सालै सकल सरीर ॥

बोलत ही पहिचानिये, साहु चोर को घाट ।
अन्तर की करनी सबै, निकसै मुख की बाट ॥

जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ, गहिरे पानी पैठि ।
जो बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठि ॥

पढ़ना गुनना चातुरी, यह तो बात सहल ।
काम दहन मन वसि करन, गगन चढ़न मुस्कल ॥

भय बिनु भाव न ऊपजै, भय बिनु होय न प्रीति ।
जब हिरदे से भय गया, मिटी सकल रस रीति ॥

कथनी मीठी खाँड़ सी, करनी विष की लोय ।
कथनी तजि करनी करै, तौ विष से अमृत होय ।

लाया साखि बनाय करि, इत उत अच्छर काट ।
कह कबीर कब लग जिये, जूठी पत्तल चाट ॥

पानी मिलै न आपको, औरन बकसत छीर ।
आपन मन निस्चल नहीं, और बँधावत धीर ॥

मारग चलते जो गिरै, ताको नाहीं दोस ।
कह कबीर बैठा रहै, ता सिर करड़े कोस ॥

रोड़ा होइ रहु बाटका, तजि आपा अभिमान ।
लोभ मोह तृस्ना तजै, ताहि मिलै निज नाम ॥

रोड़ा भया तो क्या भया, पंथी को दुख देइ ।
साधू ऐसा चाहिये, ज्यों पैंड़े की खेह ॥

खेह भई तो क्या भया, उड़ि उड़ि लागै अंग ।
साधू ऐसा चाहिये, जैसे नीर निपंग ॥

नीर भया तो क्या भया, ताता सीरा जोय।
साधू ऐसा चाहिये, जो हरि ही जैसा होय॥

हरी भया तो क्या भया, जो करता हरता होय।
साधू ऐसा चाहिये, जो हरि भज निरमल होय॥

निरमल भया तो क्या भया, निरमल माँगे ठौर।
मल निरमल ते रहित हैं, ते साधू कोई और॥

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे साँच है, ताके हिरदे आप॥

साँचे साप न लागई, साँचे काल न खाय।
साँचा को साँचा मिले, साँचे माहिं समाय॥

साँचे कोइ न पतीजई, झूठे जग पतियाय।
गली गली गोरस फिरे, मदिरा बैठि बिकाय॥

साँचे को साँचा मिले, अधिक बढ़े सनेह।
झूठे को साँचा मिले, तड़दे टूटे नेह॥

जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप॥

बुरा जो देखन मैं चला बुरा, न मिलिया कोय।
जो दिल खोजौं आपना, मुझसा बुरा न कोय॥

दाया दिल में राखिये, तू क्यों निरदइ होय।
साईं के सब जीव हैं, कीड़ी कुंजर सोय॥

कोटि करम लागे रहैं, एक क्रोध की लार।
किया कराया सब गया, जब आया हंकार॥

दसो दिसा से क्रोध की, उठी अपरबल आगि।
सीतल संगति साधु की, तहाँ उबरिये भागि॥

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर॥

जहँ आपा तहँ आपदा, जहँ संसय तहँ सोग।
कह कबीर कैसे मिटैं, चारों दीरघ रोग॥

कबीर जोगी जगत गुरु, तजै जगत की आस।
जो जग की आसा करे, तो जगत गुरु वह दास॥

तन तुरंग असवार मन, कर्म पियादा साथ।
त्रिस्ना चली सिकार को, विषै बाज लिये हाथ॥

चलौ चलौ सब कोई कहै, पहुँचे बिरला कोय।
एक कनक अरु कामिनी, दुरगम घाटी दोय॥

पर नारी पैनी छुरी, मत कोइ लावो अंग।
रावन के दस सिर गये, पर नारी के संग॥

सब सोने की सुन्दरी, आवै बास सुबास।
जो जननी है आपनी, तऊ न बैठे पास॥

छोटी मोटी कामनी, सब ही विष की बेल।
बैरी मारै दाँव दै, यह मारै हँसि खेल॥

जागत में सोवन करै, सोवन में लो लाय।
सुरति डोर लागी रहै, तार टूटि नहिं जाय॥

निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय॥

तिनका कबहुँ न निन्दिये, जो पाँवन तर होय।
कबहूँ उड़ि आंखिन परै, पीर घनेरी होय।

दोष पराये देख करि, चले हसंत हसंत।
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत॥

माखी गुड़ में गड़ि रही, पंख रह्यो लिपटाय।
हाथ मलै औ सिरधुनै, लालच बुरी बलाय॥

औगुन कहौं सराब का, ज्ञानवंत सुनि लेय।
मानुष से पसुआ करै, द्रव्य गांठि को देय॥

रूखा सूखा खाइ कै, ठंढा पानी पीव।
देखि बिरानी चूपड़ी, मत ललचावे जीव॥

कबीर साईं मुझको, रूखी रोटी देय।
चुपड़ी माँगत मैं डरूँ, रूखी छीनि न लेय॥

सत्त नाम को छांड़ि कै, करै और को जाप।
वेस्या केरे पूत ज्यों, कहै कौन को बाप॥

एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाय।
जो गहि सेवै मूल को, फूलै फलै अघाय॥

पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पुजौं पहार।
तातैं ये चाकी भली, पीसि खाय संसार॥

कॉंकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चुनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय॥

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित हुआ न कोय।
ढाई अच्छर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥
सपने में साईं मिले, सोवत लिया जगाय।
आंखि न खोलूँ डरपता, मति सुपना ह्वै जाय॥
साँझ पड़े दिन बीतवै, चकवी दीन्हा रोय।
चल चकवा वा देस को, जहाँ रैन ना होय।
चातक सुतहिं पढ़ावही, आन नीर मति लेय।
मम कुल यही स्वभाव है, स्वाति बूँद चित देय॥
जूआ चोरी मुखबिरी, ब्याज घूस पर नार।
जो चाहै दीदार को, एती वस्तु निवार॥
अछै पुरुष इक पेड़ है, निरंजन वाकी डार।
तिरदेवा साखा भये, पात भया संसार॥

नानक देव

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार।
चुपै चुपि न होवई जे लाइ रहा लिवतार॥
भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार।
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि॥
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि।
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि॥

× × ×

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई।
हुकमि होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई॥
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि।
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि॥
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ।
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ॥

× × ×

गावै को ताणु होवै किसै ताणु। गावै को दाति जाणै नीसाणु॥
गावै को गुण वडिआईआ चार। गावै को विदिआ विखमु विचारु॥
गावै को साजि करे तनु खेह। गावै को जीअ लै फिरि देह॥

गावै को जापै दिसै दूरि। गावै को वेखै हादरा हदूरि॥
कथना कथी न आवै तोटि। कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि॥
देदा दे लैदे थकि पाहि। जुगा जुगंतरि खाही खाहि॥
हुकमी हुकमु चलाहे राहु। नानक विगसै वेपरवाहु॥

× × ×

साचा साहिवु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु।
आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु॥
फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु।
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु॥
अंमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु।
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु॥
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु॥

× × ×

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी।
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई।
मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी।
गुरा इक देहि बुझाई।
सभना जीआ का इकु दाता सो मैं विसरि न जाई॥

× × ×

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ।
नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ॥
चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ।
जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै केइ॥
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे।
नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे।
तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे॥

× × ×

असंख नाव असंख थाव। अगंम अगंम असंख लोअ॥
असंख कहहि सिरि भारु होइ।
अखरी नामु अखरी सालाह। अखरी गिआनु गीत गुण गाह॥
अखरी लिखणु बोलणु वाणि। अखरा सिरि संजोगु बखाणि॥
जिनि एहि लिखे तिसु सिर नाहि। जिव फुरमाए तिव तिव पाहि॥
जेता कीता तेता नाउ। विणु नावै नाही को थाउ॥

कुदरति कवरण कहा वीचारु। वारिआ न जावा एक वार॥
जो तुधु भावै साई भली कार। तू सदा सलामति निरंकार॥

× × ×

तीरथु तपु दइआ दतु दान। जे को पावै तिल का मानु॥
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ। अंतरगति तीरथि मलि नाउ॥
सभि गुण तेरे मैं नाही कोइ। विणु गुण कीते भगति न होइ॥
सुअसति आथि बाणी बरमाउ। सति सुहाणु सदा मनि चाउ॥
कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु।
कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होवा आकारु॥
वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु।
वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु॥
थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई।
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई॥
किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा।
नानक आखणि सभु को आखै इकदू इकु सिआणा॥
वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै।
नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै॥

× × ×

अंतु न सिफती कहणि न अंतु। अंतु न करणै देणि न अंतु॥
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु। अंतु न जापै किआ मनि मंतु॥
अंतु न जापै कीता आकारु। अंतु न जापै पारावारु॥
अंत कारणि केते बिललाहि। ता के अंत न पाए जाहि॥
एहु अंतु न जाणै कोइ। बहुता कहीऐ बहुता होइ॥
वडा साहिबु ऊचा थाउ। ऊचे उपरि ऊचा नाउ॥
एवडु ऊचा होवै कोइ। तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ॥
जेवडु आपि जाणै आपि आपि। नानक नदरी करमी दाति॥

× × ×

अमुल गुण अमुल वापार। अमुल वापारीए अमुल भंडार॥
अमुल आवहि अमुल लै जाहि। अमुल भाइ अमुला समाहि॥
अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु। अमुलु तुलु अमुलु परवाणु॥
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु। अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु॥
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ। आखि आखि रहे लिव लाइ॥
आखहि वेद पाठ पुराण। आखहि पड़े करहि वखिआण॥

आखहि वरमे आखहि इंद । आखहि गोपी तै गोविंद ॥
आखहि ईसर आखहि सिध । आखहि केते कीते बुध ॥
आखहि दानव आखहि देव । आखहि सुर नर मुनि जन सेव ॥
केते आखहि आखहि पाहि । केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥
एते कीते होरि करेहि । ता आखि न सकहि केई केइ ॥
जेवडु भावै तेवडु होइ । नानक जाणै साचा सोइ ॥
जे को आखै बोलुविगाडु । ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥

× × ×

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ।
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ।
गावहि तुहनो पउणु पाणी वैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥
गावहि चितुगुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥
गावहि ईसरु वरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥
गावहि इंद इंदासणि वैठे देवतिआ दरि नाले ।
गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥
गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ।
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥
गावनि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ।
गावनि रतनि उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥
गावहि जोध महावल सूरा गावहि खाणी चारे ।
गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥
सेई तुधनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसारे ।
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ।
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ।
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥
जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ।
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥

× × ×

पवणु गुरु पाणी पिता माता धरति महतु ।
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥

चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ।
करमी आपा आपणी के नेड़े के दूरि ॥
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ।
नानक ते मुख उजले केती छूटी नालि ॥

× × ×

मोती त मंदर ऊसराहि रतनी त होहि जड़ाउ ।
कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ ।
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥
हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ ।
मैं आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ ॥
धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ ।
मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ ।
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥
सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ ।
गुपतु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥
सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ ।
हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ ।
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥

× × ×

कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ ।
चंदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥
साचा निरंकारु निज थाइ ।
सुणि सुणि आखणु आखणा जे भावै करै तमाइ ॥
कुसा कुटीआ वार-वार पीसणि पीसा पाइ ।
अगी सेती जालीआ भसम सेती रलि जाउ ॥
भी तेरी कीमती ना पावै हउ केवडु आखा नाउ ॥
पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ ।
नदरी किसै न आवऊ ना किछु पीआ न खाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥
नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ ।

मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥

× × ×

लबु कुता कूड़ु चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु ॥
पर निंदा पर मलु मुखसुधी अगनि क्रोधु चंडालु ॥
रस कस आपु सलाहणा ए करम मेरे करतार ॥
बाबा बोलीऐ पति होइ ।
ऊतम से दरि ऊतम कहीअहि नीच करम बहि रोइ ॥
रसु सुइना रसु रुपा कामणि रसु परमल की वासु ।
रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ।
एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ॥
जितु बोलिऐ पति पाईऐ सो बोलिआ परवाणु ।
फिका बोलि विगुचणा सुणि मूरख मन अजाण ।
जो तिसु भावहि से भले होरि कि कहण वखाण ॥
तिन मति तिन पति तिन धनु पलै जिन हिरदै रहिआ समाइ ।
तिनका किआ सालाहणा अवर सुआलिउ काइ ।
नानक नदरी बाहरे राचहि दानि न नाइ ॥

× × ×

सभि रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे ।
खट तुरसी मुखि बोलणा मारण नाद कीए ।
छतीह अंमृत भाउ एकु जा कउ नदरि करेइ ॥
बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ।
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥
रता पैनणु मनु रता सुपेदी सतु दानु ।
नीली सिआही कदा करणी पहिरणु पैर धिआनु ।
कमरबंदु संतोख का धनु जोबनु तेरा नामु ॥
बाबा होरु पैनणु खुसी खुआरु ।
जितु पैधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥
घोड़े पाखर सुइने साखति बूझणु तेरी वाट ।
तरकस तीर कमाण सांग तेगबंद गुण धातु ॥
वाजा नेजा पति सिउ परगटु करमु तेरा मेरी जाति ॥
बाबा होरु चड़ना खुसी खुआरु ॥

जितु चड़िऐ तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥
घर मंदर खुसी नाम की नदरि तेरी परवारु ॥
हुकमु सोई तुधु भावसी होरु आखणु बहुतु अपारु ।
नानक सचा पातिसाहु पूछि न करे वीचारु ॥
बाबा होरु सउणा खुसी खुआरु ।
जितु सुतै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥

× × ×

गुणवंती गुण वीथरै अउगुणवंती झूरि ।
जे लोड़हि वरु कामणी नह मिलीऐ पिर कूर ॥
ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना पाईऐ पिरु दूरि ॥
मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु ।
गुरमुखि पूरा जे करे पाईऐ साचु अतोलु ॥
प्रभु हरिमंदरु सोहणा तिसु महि माणक लाल ।
मोती हीरा निरमला कंचन कोट रीसाल ॥
बिनु पउड़ी गड़ि किउ चड़उ गुर हरि धिआन निहाल ॥
गुरु पउड़ी बेड़ी गुरू गुरु तुलहा हरि नाउ ।
गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथ दरीआउ ॥
जे तिसु भावै ऊजली सतसरि नावणु जाउ ॥
पूरो - पूरो आखीऐ पूरै तखति निवास ।
पूरै थानि सुहावणै पूरै आस निरास ॥
नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुणतास ॥

× × ×

आवहु भैणे गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ।
मिलि कै करह कहाणीआ संम्रथ कंत कीआह ।
साचे साहिब सभि गुण अउगुण सभि असाह ॥
करता सभु को तेरै जोरि ।
एकु सबदु वीचारीऐ जा तू ता किआ होरि ॥
जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणी ।
सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥
पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी ॥
केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दाति ।
केते तेरे जीअ जंत सिफति करहि दिन राति ॥

केते तेरे रूप रंग केते जाति अजाति ।।
सचु मिलै सचु ऊपजै सच महि साचि समाइ ।।
सुरति होवै पति ऊगवै गुरवचनी भउ खाइ ।
नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाइ ।।

× × ×

तनु जलि वलि माटी भइआ मनु माइआ मोहि मनूरु ।
अउगुण फिरि लागू भए कूरि वजावै तूरु ।।
विनु सवदै भरमाईऐ दुविधा डोवे पूरु ।।
मन रे सवदि तरहु चितु लाइ ।
जिनि गुरमुखि नामु न बूझिआ मरि जनमै आवै जाइ ।।
तनु सूचा सो आखीऐ जिसु महि साचा नाउ ।
भै सचि राती देहुरी जिहवा सचु सुआउ ।।
सची नदरि नीहालीऐ वहुड़ि न पावै ताउ ।।
साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ ।
जल ते त्रिभवणु साजिआ घटि-घटि जोति समोइ ।।
निरमलु मैला ना थीऐ सबदि रते पति होइ ।।
इहु मनु साचि संतोखिआ नदरि करे तिसु माहि ।
पंच भूत सचि भै रते जोति सची मन माहि ।।
नानक अउगुण वीसरे गुरि राखे पति ताहि ।।

× × ×

मरणै की चिंता नही जीवण की नहीं आस ।
तू सरब जीआ प्रतिपालही लेखै सास गिरास ।।
अंतरि गुरमुखि तू वसहि जिउ भावै तिउ निरजासि ।।
जीअरे राम जपत मनु मानु ।
अंतरि लागी जलि बुझी पाइआ गुरमुखि गिआन ।।
अन्तर की गति जाणीऐ गुर मिलीऐ संक उतारि ।
मुइआ जितु घरि जाईते तितु जीवदिआ मरु मारि ।।
अनहद सबद सुहावणे पाईऐ गुर वीचारि ।।
अनहद वाणी पाईऐ तह हउमै होइ विनासु ।
सतगुरु सेवे आपणा हउ सद कुरवाणै तासु ।।
खड़ि दरगह पैनाईऐ मुखि हरिनाम निवासु ।।
जह देखा तह रवि रहे सिव सकती का मेलु ।
त्रिहु गुण बंधी देहुरी जो आइआ जगि सो खेलु ।।

विजोगी दुखि वीछड़े मनमुखि लहहि न मेलु ॥
मनु वैरागी घरि वसै सच भै राता होइ ।
गिआन महारसु भोगवै बाहुड़ि भूख न होइ ॥
नानक इहु मनु मारि मिलु भी फिरि दुखु न होइ ॥

× × ×

एहु मनो मूरख लोभीआ लोभे लगा लोभानु ।
सबदि न भीजै साकता दुरमति आवनु जानु ॥
साधू सतगुरु जे मिलै ता पाईऐ गुणी निधानु ॥
मन रे हउमै छोड़ि गुमानु ।
हरिगुरु सरवरु सेवि तू पावहि दरगह मानु ॥
रामनामु जपि दिनसु राति गरमुखि हरि धनु जानु ॥
सभि सुख हरि रस भोगणे संत सभा मिलि गिआनु ॥
निति अहिनिसि हरि प्रभु सेविआ सतगरि दीआ नामु ॥
कूकर कूडु कमाईऐ गरनिंदा पचै पचानु ।
भरमे भूला दुखु घणो जमु मारि करै खुलहानु ॥
मनमुखि सुखु न पाईऐ गुरमुखि सुखु सुभानु ॥
एथै धंधु पिटाईऐ सचु लिखत परवानु ॥
हरि सजणु गुरु सेवदा गुर करणी परधानु ॥
नानक नामु न वीसरै करमि सचै नीसाणु ॥

× × ×

भरमै भाहि न विझवै जे भवै दिसंतर देसु ।
अंतरि मैलु न उतरै ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वेसु ॥
होरु कितै भगति न होवई विनु सतगुर के उपदेस ॥
मन रे गुरमुखि अगिनि निवारि ।
गुर का कहिआ मनि वसै हउमै तृसना मारि ॥
मनु माणकु निरमोलु है रामनामि पति पाइ ।
मिलि सतसंगति हरि पाईऐ गुरमुखि हरि लिव लाइ ॥
आपु गइआ सुखु पाइआ मिलि सललै सलल समाइ ॥
जिनि हरि हरि नामु न चेतिओ सु अउगुणि आवै जाइ ।
जिसु सतगुरु पुरखु न भेटिओ सु भउजल पचै पचाइ ॥
इहु माणुक जीउ निरमोलु है इउ कउडो बदले जाइ ॥
जिना सतगुरु रसि मिलै से पूरे पुरख सुजाणु ।

गुर मिलि भउजलु लंघीऐ दरगह पति परवाणु ॥
नानक ते मुख उजले धुनि उपजै सबदु नीसाणु ॥

× × ×

धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि ।
पवणि केरे पत जिउ ढल डुलि जुंमणहार ॥
रंगु माणि लै पिआरिआ जा जोबनु नउहुला ॥
दिन थोड़ड़े थके भइआ पुराणा चोला ॥
सजण मेरे रंगुले जाइ सुवे जीराणि ।
हंभी वंञा डुंमणी रोवा झीणी बाणि ॥
की न सुणही गोरीए आपन कंनी सोइ ।
लगी आवहि साहुरै नित न पेईआ होइ ॥
नानक सुती पेईऐ जाणु विरती संनि ।
गुणा गवाई गंठड़ी अवगुड़ चली बंनि ॥

× × ×

एका सुरति जेते है जीअ । सुरति विहूणा कोइ न कीअ ॥
जेही सुरति तेहा तिन राहु । लेखा इको आवहु जाहु ॥
काहे जीअ करहि चतुराई । लेवै देवै ढिल न पाई ॥
तेरे जीअ जीआ का तोहि । कित कउ साहिब आवहि रोहि ॥
जे तू साहिब आवहि रोहि । तू ओना का तेरे ओहि ॥
असी बोलविगाड़ विगाड़ह बोल । तू नदरी अंदरि तोलहि तोल ॥
जह करणी तह पूरी मति । करणी बाझहु घटे घटि ॥
प्रणवति नानकु गिआनी कैसा होइ । आपु पछाणै बूझै सोइ ॥
गुर परसादि करै बीचारु । सो गिआनी दरगह परवाणु ॥

× × ×

आपे गुण आपे कथै आपे सुणि वीचारु ।
आपे रतनु परखि तूं आपे मोलु अपारु ॥
साचउ मानु महतु तूं आपे देवणहारु ॥
हरि जीउ तूं करता करतारु ।
जिउ भावै तिउ राखु तूं हरिनामु मिलै आचारु ॥
आपे हीरा निरमला आपे रंगु मजीठ ।
आपे मोती ऊजलो आपे भगत बसीठु ॥
गुर के सबदि सलाहणा घटि घटि डीठु अडीठु ॥

आपे सागरु बोहिथा आपे पारु अपारु ।
साची वाट सुजाणु तूं सबदि लघावणहारु ।
निडरिआ डरु जाणीऐ बाझु गुरू गुबारु ॥
असथिरु करता देखीऐ होरु केती आवै जाइ ।
आपे निरमलु एक तूं होर बंधी धंधै पाइ ।
गुरि राखे से उबरे साचे सिउ लिव लाइ ॥
हरि जीउ सबदि पछाणीऐ साचि रते गुर वाकि ।
तितु तनि मैलु न लगई सच घरि जिसु ओताकु ।
नदरि करे सचु पाईऐ बिनु नावै किआ साकु ॥
जिनी सचु पछाणिआ से सुखीए जुग चारि ।
हउमै तृसना मारि कै सचु रखिआ उरधारि ॥
जगु महि लाहा एकु नामु पाईऐ गुर वीचारि ॥
साचउ वखरु लादीऐ लाभु सदा सचु रासि ।
साची दरगह बैसई भगति सची अरदासि ॥
पति सिउ लेखा निबड़ै रामु नामु परगासि ॥
ऊचा ऊचउ आखीऐ कहउ न देखिआ जाइ ।
जह देखा तह एक तूं सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥
जोति निरंतरि जाणीऐ नानक सहजि सुभाइ ॥

× × ×

मछुली जालु न जाणिआ सरु खारा असगाहु ।
अति सिआणी सोहणी किउ कीतो वेसाहु ।
कीते कारणि पाकड़ी कालु न टलै सिराहु ॥
भाई रे इउ सिरि जाणहु कालु ।
जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जालु ॥
सभु जगु बाधो काल को बिनु गुर कालु अफारु ।
सचि रते से उबरे दुबिधा छोड़ि विकार ।
हउ तिन कै बलिहारणै दरि सचै सचिआर ॥
सीचाने जिउ पंखीआ जाली बधिक हाथि ।
गुरि राखे से उबरे होरि फाथे चोगै साथि ॥
बिनु नावै चुणि सुटीअहि कोइ न संगी साथि ॥
सचो सचा आखीऐ सचे सचा थानु ।
जिनी सचा मंनिआ तिन मनि सचु धिआनु ॥
मनि मुखि सूचे जाणीअहि गुरमुखि जिना गिआनु ॥

सतिगुरि अगै अरदासि करि साजनु देइ मिलाइ ।
साजनि मिलिऐ सुखु पाइआ जमदूत मुए बिखु खाइ ॥
नावै अंदरि हउ वसां नाउ वसै मनि आइ ॥
बाझु गुरू गुबारु है बिनु सबदै बूझ न पाइ ।
गुरमती परगासु होइ सचि रहै लिव लाइ ॥
तिथै कालु न संचरै जोती जोति समाइ ॥
तूं है साजनु तूं सुजाणु तूं आपे मेलणहारु ।
गुर सबदी सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥
हुकमी सभे ऊपजहि हुकमी कार कमाहि ।
हुकमी काले वसि है हुकमी साचि समाहि ॥
नानक जो तिसु भावै सो थीऐ इना जंता वसि किछु नाहि ॥

× × ×

मनि जूठै तनि जूठि है जिहवा जूठी होइ ।
मुखि झूठै झूठु बोलणा किउकरि सूचा होइ ॥
बिनु अभ सबद न मांजीऐ साचे ते सचु होइ ॥
मुंधे गुणहीनी सुखु केहि ।
पिरु रलीआ रसि माणसी साचि सबदि सुखु नेहि ॥
पिरु परदेसी जे थीऐ धन वाढ़ी झूरेइ ॥
जिउ जलि थोड़ै मछुली करण पलाव करेइ ॥
पिर भावै सुखु पाईऐ जा आपे नदरि करेइ ॥
पिरु सालाही आपणा सखी सहेली नालि ।
तनि सोहै मनु मोहिआ रती रंगि निहालि ।
सबदि सवारी सोहणी पिरु रावै गुण नालि ॥
कामणि कामि न आवई खोटी अवगणिआरि ।
ना सुखु पेईऐ साहुरै झूठि जली वेकारि ॥
आवणु वंञणु डाखड़ो छोडी कंति विसारि ॥
पिर की नारि सुहावणी मुती सो कितु सादि ।
पिर कै कामि न आवई बोले फादिलु बादि ॥
दरि घरि ढोई ना लहै छूटी दूजै सादि ॥
पंडित वाचहि पोथीआ ना बूझहि वीचारु ।
अन कउ मती दे चलहि माइआ का वापारु ॥
कथनी झूठी जगु भवै रहणी सबदु सु सारु ।
केते पंडित जोतकी वेदा करहि बीचारु ॥

वादि विरोधि सलाहरणे वादे आवरणु जारणु ॥
विनु गुर करम न छुटसी कहि सुणि आखि वखारणु ॥
सभ गुणवंती आखीअहि मैं गुणु नाही कोइ ।
हरि वरु नारि सुहावरणी मैं भावै प्रभु सोइ ।
नानक सबदि मिलावड़ा ना वेछोड़ा होइ ॥

× × ×

सतिगुरु पूरा जे मिलै पाईऐ रतनु वीचारु ।
मनु दीजै गुर आपरणे पाईऐ सरब पिआरु ॥
मुकति पदारथु पाईऐ अवगरण मेटरणहारु ॥

भाई रे गुर विनु गिआनु न होइ ।
पूछउ ब्रहमे नारदै वेदविआसै कोइ ॥
गिआनु धिआनु धुनि जारणीऐ अकथु कहावै सोइ ।
सफलिओ विरखु हरीआवला छाव घरणेरी होइ ॥
लाल जवेहर मारणकी गुर भंडारै सोइ ॥
गुर भंडारै पाईऐ निरमल नाम पिआरु ।
साचो वखर संचीऐ पूरै करमि अपारु ॥
सुखदाता दुख मेटरणो सतिगुरु असुरु संघारु ॥
भवजलु विखमु डरावरणो ना कंधी ना पारु ।
ना वेड़ी ना तुलहड़ा ना तिसु वंझु मलारु ॥
सतिगुरु भै का बोहिथा नदरी पारि उतारु ॥
इकु तिलु पिआरा विसरै दुखु लागै सुखु जाइ ।
जिहवा जलउ जलावरणी नामु न जपै रसाइ ।
घटु विनसै दुखु अगलो जमु पकड़ै पछुताइ ॥
मेरी-मेरी करि गए तनु धनु कलतु न साथि ।
विनु नावै धनु वादि है भूलो मारग आथि ॥
साचउ साहिबु सेवीऐ गुरमुख अकथो काथि ॥
आवै जाइ भवाईऐ पइऐ किरति कमाइ ।
पूरवि लिखिआ किउ मेटीऐ लिखिआ लेखु रजाइ ।
बिनु हरिनाम न छुटीऐ गुरमति मिलै मिलाइ ॥
तिसु बिनु मेरा को नही जिस का जीउ परानु ।
हउमै ममता जलि वलउ लोभु जलउ अभिमानु ॥
नानक सबदु वीचारीऐ पाईऐ गुणी निधानु ॥

× × ×

रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल कमलेहि ।
लहरी नालि पछाड़ीऐ भी विगसै असनेहि ।
जल महि जीअ उपाइ कै विनु जल मरणु तिनेहि ॥
मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर ।
गुरमुखि अंतरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार ॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछुली नीर ।
जिउ अधिकउ तिउ सुखु घणो मनि तनि सांति सरीर ॥
बिनु जल घड़ी न जीवई प्रभु जाणै अभ पीर ॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चात्रिक मेह ।
सर भरि थल हरीआवले इक बूंद न पवई केह ।
करमि मिलै सो पाईऐ किरतु पइआ सिरि देह ॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल दुध होइ ।
आवटणु आपे खवै दुध कउ खपणि न देइ ॥
आपे मेलि विछुंनिआ सचि वडिआई देइ ॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चकवी सूर ।
खिनु पलु नीद न सोवई जाणै दूरि हजूरि ॥
मनमुखि सोझी ना पवै गुरमुखि सदा हजूरि ॥
मनमुखि गणत गणावणी करता करे सु होइ ।
ता की कीमति ना पवै जे लोचै सभु कोइ ॥
गुरमति होइ त पाईऐ सचि मिलै सुखु होइ ॥
सचा नेहु न तुटई जे सतिगुरु भेटै सोइ ।
गिआन पदारथु पाईऐ त्रिभवण सोझी होइ ॥
निरमलु नामु न वीसरै जे गुण का गाहकु होइ ॥
खेलि गए से पंखणूं जो चुगदे सर तालि ।
घड़ी कि मुहति कि चलणा खेलणु अजु कि कलि ॥
जिसु तूं मेलहि सो मिलै जाइ सचा पिड़ु मलि ॥
विनु गुर प्रीति न ऊपजै हउमै मैलु न जाइ ।
सोहं आपु पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआइ ॥
गुरमुखि आपु पछाणीऐ अवर कि करे कराइ ॥
मिलिआ का किआ मेलीऐ सबदि मिले पतीआइ ।
मनमुख सोझी न पवै वीछुड़ि चोटा खाइ ॥
नानक दरु घरु एकु है अवरु न दूजी जाइ ॥

× × ×

तृसना मइआ मोहणी सुत बंधप घर नारि।
धनि जोबनि जगु ठगिआ लबि लोभि अहंकारि॥
मोह ठगउली हउ मुई सा वरतै संसारि॥
मेरे प्रीतमा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ।
मै तुझ बिनु अवरु न भावई तूं भावहि सुखु होइ॥
नामु सालाही रंग सिउ गुर कै सबदि संतोखु।
जो दीसै सो चलसी कूड़ा मोहु न वेखु॥
वाट वटाऊ आइआ नित चलदा साथु देखु॥
आखणि आखहि केतड़े गुर बिन बूझ न होइ।
नामु वडाई जे मिलै सचि रपै पति होइ॥
जो तुधु भावहि से भले खोटा खरा न कोइ॥
गुर सरणाई छुटीऐ मनमुख खोटी रासि।
असट धातु पतिसाह की घड़ीऐ सबदि विगासि॥
आपे परखे पारखू पवै खजानै रासि॥
तेरी कीमति ना पवै सभ डिठी ठोकि वजाइ।
कहणै हाथ न लभई सचि टिकै पति पाइ॥
गुरमति तूं सालाहणा होर कीमति कहणु न जाइ॥
जितु तनि नामु न भावई तितु तनि हउमै वादु।
गुर बिनु गिआनु न पाईऐ बिखिआ दूजा सादु॥
आसा अंदरि जंमिआ आसा रस कस खाइ।
आसा बंधि चलाईऐ मुहे मुहि चोटा खाइ॥
अवगणि बधा मारीऐ छूटै गुरमति नाइ॥
सरबे थाई एकु तूं जिउ भाव तिउ राखु।
गुरमति साचा मनि वसै नामु भलो पति साखु॥
हउमै रोगु गवाईऐ सबदि सचै सचु भाखु॥
आकासी पातालि तूं त्रिभवणि रहिआ समाइ।
आपे भगती भाउ तूं आपे मिलिहि मिलाइ॥
नानक नामु न वीसरै जिव भावै तिवै रजाइ॥

× × ×

राम नामि मनु वेधिआ अवरु कि करी वीचारु।
सबद सरति सुखु ऊपजै प्रभ रातउ सुख सारु॥
जिउ भावै तिउ राखु तूं मै हरिनामु अधारु॥
मन रे साची खसम रजाइ।
जिनि तनु मनु साजि सीगारिआ तिसु सेती लिव लाइ॥

तनु बैसंतरि होमीऐ इक रती तोलि कटाइ।
तनु मनु समधा जे करी अनदिनु अगनि जलाइ ॥
हरिनामै तुलि न पुजई जे लख कोटी करम कमाइ ॥
अरध सरीरु कटाईऐ सिरि करवतु धराइ।
तनु हैमंचलि गालीऐ भी मन ते रोगु न जाइ ॥
हरिनामै तुलि न पुजई सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥
कंचन के कोट दतु करी वहु हैवर गैवर दानु।
भूमि दानु गऊआ घणी भी अंतरि गरबु गुमानु ॥
रामनामि मनु वेधिआ गुरि दीआ सचु दानु ॥
मन हट बुधी केतीआ केते वेद बिचार।
केते बंधन जीअ के गुरमुखि मोखदुआरु ॥
सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥
सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइ।
इकनै भांडे साजिऐ इकु चानणु तिहु लोइ ॥
करमि मिलै सचु पाईऐ धुरि बखस न मेटै कोइ ॥
साधु मिलै साधू जनै संतोखु वसै गुर भाइ।
अकथ कथा वीचारीऐ जे सतिगुर माहि समाइ ॥
पी अंमृतु संतोखिआ दरगहि पैधा जाइ ॥
घटि घटि वाजै किंगुरी अनिदिनु सबदि सुभाइ।
विरले कउ सोझी पई गुरमुखि मनु समझाइ ॥
नानक नामु न बीसरै छूटै सबदु कमाइ ॥

× × ×

मुंद्रा ते घट भीतरि मुंद्रा कांइआ कीजै खिथाता।
पंच चेले वस कीजहि रावल इहु मनु कीजै डंडाता ॥
जोग जुगति इव पावसिता।
एकु सबदु दूजा होरु नासति कंद मूलि मनु लावसिता ॥
मूंडि मुंडाइऐ जे गुरु पाईऐ हम गुरु कीनी गंगाता।
त्रिभवण तारणहारु सुआमी एकु न चेतसि अंधाता ॥
करि पटंबु गली मनु लावसि संसा मूलि न जावसिता।
एकसु चरणी जे चितु लावहि लबि लोभि की धावसिता ॥
जपसि निरंजनु रचसि मना। काहे बोलहि जोगी कपटु घना ॥
काइआ कमली हंसु इआणा मेरी मेरी करत बिहाणीता।
प्रणवति नानकु नागी दाझै फिरि पाछै पछुताणीता ॥

× × ×

अउखध मंत्र मूलु मन एकै जे करि दृढ़ु चितु कीजै रे।
जनम जनम के पाप करम के काटन हारा लीजै रे॥

मन एको साहिबु भाई रे।
तेरे तीनि गुणा संसारि समावहि अलखु न लखणा जाई रे॥
सक्कर खंडु माइआ तनि मीठी हम तउ पंड उचाई रे।
राति अनेरी सूझसि नाही लजु टूकसि मूसा भाई रे॥
मनमुखि करहि तेता दुखु लागै गुरमुखि मिलै वडाई रे।
जो तिनि कीआ सोई होवा किरतु न मेटिआ जाई रे॥
सुभर भरे न होवहि ऊणे जो राते रंगु लाई रे।
तिनकी पंक होवै जे नानकु तउ मूड़ा किछु पाई रे॥

× × ×

कत की माई बापु कत केरा किदू थावउ हम आए।
अगनि विंब जल भीतरि निपजे काहे कंमि उपाए॥
मेरे साहिबा कउणु जाणै गुण तेरे।
कहे न जानी अउगुण मेरे॥
केते रुख विरख हम चीने केते पसू उपाए।
केते नाग कुली महि आए केते पंख उड़ाए॥
हट पटण बिज मंदर भंनै करि चोरी घरि आवै।
अगहु देखै पिछहु देखै तुझ ते कहा छपावै॥
तट तीरथ हम नव खंड देखे हट पटण बाजारा।
लै कै तकड़ी तोलणि लागा घट ही महि वणजारा॥
जेता समुंदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे।
दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे॥
जीअड़ा अगनि बरावर तपै भीतरि वगै काती।
प्रणवति नानकु हुकमु पछाणै सुख होवै दिनु राती॥

× × ×

हरणी होवा वनि वसा कंद मूल चुणि खाउ।
गुर परसादी मेरा सहु मिलै वारि वारि हउ जाउ जीउ॥
मै बनजारनि राम की। तेरा नामु वखरु वापारु जी॥
कोकिल होवा अंबि बसा सहजि सबद बीचारु।
सहजि सुभाइ मेरा सहु मिलै दरसनि रूपि अपारु॥
मछुली होवा जलि बसा जीअ जंत सभि सारि।
उरवारि पारि मेरा सहु वसै हउ मिलउगी बाह पसारि॥

नागनि होवा धर वसा सवहु वसै भप जाइ ।
नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ ॥

× × ×

ना मनु मरै न कारजु होइ । मनु वसि दूता दुरमति दोइ ॥
मनु मानै गुर ते इकु होइ ॥
निरगुण रामु गुणह वसि होइ । आपु निवारि वीचारे सोइ ॥
मनु भूलो वहु चितै विकारु । मनु भूलो सिरि आवै भारु ॥
मनु मानै हरि एकंकारु ।
मनु भूलो माइआ घरि जाइ । कामि विरूधउ रहै न ठाइ ॥
हरि भजु प्राणी रसन रसाइ ॥
गैवर हैवर कंचन सुत नारी । वहु चिंता पिड़ चालै हारी ॥
जूऐ खेलणु काची सारी ॥
संपउ संची भए विकार । हरख सोग उभे दरवारि ॥
सुखु सहजे जपि रिदै मुरारि ॥
नदरि करे ता मेलि मिलाए । गुण संग्रहि अउगण सवदि जलाए ॥
गुरमुखि नामु पदारथु पाए ॥
विनु नावै सभ दूख निवासु । मनमुख मूड़ माइआ चित वासु ॥
गुरमुखि गिआनु धुरि करमि लिखिआसु ॥
मनु चंचलु धावतु फुनि धावै । साचे सूचे मैलु न भावै ॥
नानक गुरमुखि हरिगुण गावै ॥

× × ×

मुंध रैणि दुहेलड़ीआ जीउ नीद न आवै ।
सा धन दुवलीआ जीउ पिर कै हावै ॥
धन थीई दुवलि कंत हावै केव नैणी देखए ।
सीगार मिठ रस भोजन भोजन सभु झूठु कितै न लेखए ॥
मैमत जोवनि गरवि गाली दुधा थणी न आवए ॥
नानक साधन मिलै मिलाई विनु पिर नीद न आवए ॥
मुंध निमानड़ीआ जीउ विनु धनी पिआरे ।
किउ सुखु पावैगी विनु उरधारे ॥
नाह विनु घर वासु नाही पुछहु सखी सहेलीआ ।
विनु नाम प्रीति पिआरु नाही वसहि साचि सहेलीआ ॥
सचु मनि सजन संतोखि मेला गुरमती सहु जाणिआ ।
नानक नामु न छोडै सा धन नामि सहजि समाणीआ ॥

मिलु सखी सहेलड़ीहो हम पिरु रावेहा ।
गुर पुछि लिखिउगी जीउ सवदि सनेहा ॥
सवदु साचा गुर दिखाइआ मनमुखी पछुताणीआ ।
निकसि जातउ रहै असथिरु जामि सचु पछाणिआ ॥
साच की मति सदा नउतन सवदि नेहु नवेलओ ।
नानक नदरी सहजि साचा मिलहु सखी सहेलीहो ॥
मेरी इछ पुनी जीउ हम घरि साजनु आइआ ।
मिलि वरु नारी मंगलु गाइआ ।
गुण गाइ मंगलु प्रेमि रहसी मुंध मनि ओमाहओ ।
साजन रहसे दुसट विआपे साचु जपि सचु लाहओ ॥
कर जोड़ि साधन करै विनती रैणि दिनु रसि भिनीआ ।
नानक पिरु धन करहि रलीआ इछ मेरी पुंनीआ ॥

× × ×

सुणि नाह प्रभू जीउ एकलड़ी वन माहे ।
किउ धीरैगी नाह विना प्रभ वेपरवाहे ॥
धन नाह बाझहु रहि न सकै विखम रैणि घणेरीआ ।
नह नीद आवै प्रेमु भावै सुणि वेनंती मेरीआ ॥
बाझहु पिआरे कोइ न सारे एकलड़ी कुरलाए ।
नानक सा धन मिलै मिलाई विनु प्रीतम दुखु पाए ॥
पिरि छोडिअड़ी जीउ कवणु मिलावै ।
रसि प्रेमि मिली जीउ सवदि सुहावै ॥
सवदे सुहावै ता पति पावै दीपक देह उजारै ।
सुणि सखी सहेली साचि सुहेली साचे के गुण सारै ॥
सतिगुरि मेली ता पिरि रावी विगसी अंमृत वाणी ।
नानक सा धन ता पिरु रावै जा तिस कै मति भाणी ॥
माइआ मोहणी नीघरीआ जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे ।
किउ खूलै गल जेवड़ीआ जीउ विनु गुर अति पिआरे ॥
हरि प्रीति पिआरे सवदि वीचारे तिस ही का सो होवै ।
पुंन दान अनेक नावण किउ अंतर मलु धोवै ॥
नाम बिना गति कोइ न पावै हठि निग्रह वेबाणै ।
नानक सच घरु सवदि सिञापै दुविधा महलु कि जाणै ॥
तेरा नामु सचा जीउ सवदु सचा वीचारो ।
तेरा महलु सचा जीउ नामु सचा वापारो ॥

नाम का वापारु मीठा भगदि लाहा अनदिनो।
तिसु वाफ़ु वखरु कोइ न सूझै नामु लेवहु खिन खिनो ॥
परखि लेखा नदरि साची करमि पूरै पाइआ।
नानक नामु महा रसु मीठा गुरि पूरै सचु पाइआ ॥

× × ×

इस दम दा मैनूँ कीवे भरोसा,
आया आया न आया न आया।
या संसार रैन दा सुपना,
कहि दीखा कहि नाहिं दिखाया।
सोच विचार करे मत मन में,
जिसने ढूँढा उसने पाया ॥
नानक भक्तन के पद परसे,
निस दिन राम चरन चित लाया ॥

× × ×

सब कछु जीवत को व्योहार।
मात पिता भाई सुत बाँधव अरू पुन गृह की नार ॥
तन ते प्रान होत जब न्यारे टेरत प्रेत पुकार ॥
आध घरी कोऊ नाहीं राखै घर ते देत निकार ॥
मृग तृश्ना ज्यों जग रचना यह देखो हृदय विचार ॥
कहु नानक भज राम नाम नित जाते होत उधार ॥

× × ×

मन की मन ही माहिं रही।
ना हरि भजे न तीरथ सेये चोटी काल गही।
दारा मीत पूत रथ संपति धन जन पूर्न मही।
और सकल मिथ्या यह जानो भजना राम सही।
फिरत फिरत बहुते जुग हारयो मानस देह लही।
नानक कहत मिलन की विरिया सुमिरत कहा नही ॥

× × ×

जो नर दुख में दुख नहिं मानै।
सुख सनेह अरू भय नहिं जाके कंचन माटी जानै।
नहिं निन्दा नहिं अस्तुति जाके लोभ मोह अभिमाना।
हर्ष शोक ते रहे नियारो नाहिं मान अपमाना।

आसा मनसा सकल त्यागि कै जगते रहै निरासा।
काम क्रोध जेहिं परसै नाहिन तेहि घट ब्रह्म निवासा।
गुरु किरपा जेहि नर पै कीन्ही तिन यह जुगति पिछानी।
नानक लीन भयो गोविन्द सो ज्यों पानी सँग पानी।

× × ×

रे मन कौन गत होइहै तेरी।
गहि जग में राम नाम सो तो नहिं सुन्यो कान।
विषयन सों अति लुभान मति नाहिन फेरी।
मानस को जनम लीन्ह सिमरन नाहिं विषय कीन्ह।
दारा सुत भयो दीन, पगहूँ परी वेरी।
नानक कह जन पुकार, सुपने ज्यों जग पसार।
सुमिरत नहिं क्यों मुरार माया जाकी चेरी॥

× × ×

कलियाँ थी धड़ले भये, धड़ लियो भये सुपैदु।
नानक मता मतो दियाँ, उजरि गइया गेडु॥
जागोरे जिन जागना, अब जागनि की वारि।
फेरि कि जागो नानका, जब सोवउ पाँव पसारि॥
मित्राँ दोस्त माल धन, छड्डि चले अति भाइ।
संगि न कोई नानका, उड़ि हंस अकेला जाइ॥
जेही पिरीति लगंदिया तोड़ निवाहू होइ।
नानक दरगह जानियाँ, तुक न सक्के कोइ॥
मन की दुविधा न मिटै, मुक्ति कहाँ ते होइ।
कउड़ी वदले नानका, जन्म चला नर खोइ॥
हिरदे जिनके हरि बसे से जन कहियहि सूर।
कही न जाई नानका पूरि रहया भरपूर॥

सूरदास

चरन-कमल बंदौं हरि-राइ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाइ।
बहिरौ सुनै, गूँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार बार बंदौं तिहिं पाइ॥

× × ×

प्रभु कौ देखौ एक सुभाइ।
अति-गंभीर-उदार-उदधि हरि, जान-सिरोमनि राइ।
तिनका सौं अपने जनकौ गुन मानत मेरु-समान।
सकुचि गनत अपराध-समुद्रहिं बूँद तुल्य भगवान।
वदन-प्रसन्न कमल सनमुख ह्वै देखत हौं हरि जैसें।
विमुख भए अकृपा न निमिषहूँ, फिरि चितयौं तौ तैसें!
भक्त-बिरह-कातर करुनामय, डोलत पाछैं लागे।
सूरदास ऐसे स्वामी कौं देहिं पीठि सो अभागे॥

× × ×

काहू के कुल तन न विचारत।
अविगत की गति कहि न परति है, व्याध अजामिल तारत।
कौन जाति अरु पांति विदुर की, ताही कैं पग धारत।
भोजन करत मागि घर उनकैं, राज मान-मद टारत।
ऐसे जनम-करम के ओछे, ओछनि हूँ व्यौहारत।
यहै सुभाव सूर के प्रभु कौ, भक्त-बछल-पन पारत॥

× × ×

सरन गए को को न उबार्‌यौ।
जब जब भीर परी संतनि कौ, चक्र सुदरसन तहाँ सँभार्‌यौ।
भयौ प्रसाद जु अंबरीष कौं, दुरवासा कौ क्रोध निवार्‌यौ।
ग्वालनि हेत धर्‌यौ गोवर्धन, प्रकट इंद्र कौ गर्व प्रहार्‌यौ।
कृपा करी प्रहलाद भक्त पर, खंभ फारि हिरनाकुस मार्‌यौ।
नरहरि रूप धर्‌यौ करुनाकर, छिनक माहिं उर नखनि बिदार्‌यो।
ग्राह ग्रसत गज कौं जल बूड़त, नाम लेत वाकौ दुख टार्‌यौ।
सूर स्याम बिनु और करै को, रंग भूमि मैं कंस पछार्‌यौ॥

× × ×

स्याम गरीबनि हूँ के गाहक।
दीनानाथ हमारे ठाकुर, सांचे प्रीति-निवाहक।
कहा बिदुर की जाति पांति, कुल, प्रेम-प्रीति के लाहक।
कह पांडव कैं घर ठकुराई? अरजुन के रथ-वाहक।
कहा सुदामा कैं धन हौ? तौ सत्य-प्रीति के चाहक।
सूरदास सठ, तातैं हरि भजि आरत के दुख-दाहक॥

× × ×

जैसै तुम गज कौ पाउँ छुड़ायौ।
अपने जन कौं दुखित जानि कै पाउँ पियादे धायौ।

जहँ जहँ गाढ़ परी भक्तनि कौं, तहँ तहँ आपु जनायौ।
भक्ति हेत प्रह्लाद उबार्यौ, द्रौपदि-चीर बढ़ायौ।
प्रीति जानि हरि गए बिदुर कैं, नामदेव-घर छायौ।
सूरदास द्विज दीन सुदामा, तिहि दारिद्र नसायौ॥

× × ×

जापर दीनानाथ ढरै।
सोइ कुलीन, बड़ौ सुंदर सोइ, जिहिं पर कृपा करै।
कौन बिभीषन रंक-निसाचर, हरि हंसि छत्र धरै।
राजा कौन बड़ौ रावन तैं, गर्बहिं-गर्ब गरै।
रंकव कौन सुदामाहूँ तैं, आप समान करै।
अधम कौन है अजामील तैं, जम तहँ जात डरै।
कौन बिरक्त अधिक नारद तैं, निसि-दिन भ्रमत फिरै।
जोगी कौन बड़ौ संकर तैं, ताकौं काम छरै।
अधिक कुरूप कौन कुबिजा तैं, हरि पति पाइ तरै।
अधिक सुरूप कौन सीता तैं, जनम बियोग भरै।
यह गति-मति जानै नहिं कोऊ, किहिं रस रसिक ढरै।
सूरदास भगवंत-भजन बिनु फिरि फिरि जठर जरै॥

× × ×

हमारे निर्धन के धन राम।
चोर न लेत, घटत नहिं कबहूँ, आवत गाढ़ैं काम।
जल नहिं बूड़त, अगिनि न दाहत, है ऐसौ हरि नाम।
बैकुँठनाथ सकल सुख-दाता, सूरदास-सुख-धाम।

× × ×

बंदौं चरन-सरोज तिहारे।
सुंदर स्याम कमल-दल-लोचन, ललित त्रिभंगी प्रान-पियारे।
जे पद-पदुम सदा सिव के धन, सिंधु-सुता उर तैं नहिं टारे।
जे पद-पदुम तात-रिसु-त्रासत, मन-बच-क्रम प्रह्लाद सँभारे।
जे पद-पदुम-परस-जल-पावन, सुरसरि-दरस कटत अघ भारे।
जे पद-पदुम-परस रिषि-पतिनी बलि, नृग, ब्याध, पतित बहु तारे।
जे पद-पदुम रमत बृंदावन अहि-सिर धरि, अगनित रिपु मारे।
जे पद-पदुम परसि ब्रज-भामिनि सरबस दै, सुत-सदन बिसारे।
जे पद-पदुम रमत पांडव-दल दूत भए, सब काज सँवारे।
सूरदास तेई पद-पंकज त्रिबिध-ताप-दुख-हरन हमारे।

× × ×

अब कैं राखि लेहु भगवान ।
हौं अनाथ बैठ्यौ द्रुम-डरिया, पारधि साधे बान ।
ताकैं डर मैं भाज्यौ चाहत, ऊपर ढुक्यौ सचान ।
दुहूँ भांति दुख भयौ आनि यह, कौन उबारै प्रान ।
सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधी, कर छूट्यौ संधान ।
सूरदास सर लग्यौ सचानहिं, जय जय कृपानिधान ।

× × ×

आजु हौं एक-एक करि टरिहौं ।
कै तुमहीं, कै हमहीं माधौ, अपने भरोसैं लरिहौं ।
हौं तो पतित सात पीढ़िनि कौ, पतितै ह्वै निस्तरिहौं ।
अब हौं उघरि नच्यौ चाहत हौं, तुम्हैं विरद बिन करिहौं ।
कत अपनी परतीति नसावत, मैं पायौ हरि हीरा ।
सूर पतित तबहीं उठिहैं, प्रभु जब हंसि दैहौ बीरा ॥

× × ×

अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल ।
काम-क्रोध कौ पहिरि चोलना, कंठ विषय की माल ।
महामोह के नूपुर बाजत, निंदा - सब्द - रसाल ।
भ्रम-भोयौ मन भयौ पखावज, चलत असंगत चाल ।
तृष्ना नाद करति घट भीतर, नाना विधि दे ताल ।
माया कौ कटि फेंटा बाँध्यौ, लोक-तिलक दियौ भाल ।
कोटिक कला काछि दिखराई, जल-थल सुधि नहि काल ।
सूरदास की सबै अविद्या, दूरि करौ नंदलाल ।

× × ×

हमारे प्रभु, औगुन चित न धरौ ।
समदरसी है नाम तुम्हारौ, सोई पार करौ ।
इक लोहा पूजा मैं राखत, इक घर बधिक परौ ।
सो दुविधा पारस नहिं जानत, कंचन करत खरौ ।
इक नदिया इक नार कहावत, मैलौ नीर भरौ ।
जब मिलि गए तब एक बरन ह्वै, गंगा नाम परौ ।
तन माया, ज्यों ब्रह्म कहावत, सूर सु मिलि बिगरौ ।
कै इनकौ निरधार कीजियै, कै प्रन जात टरौ ॥

× × ×

मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै ।
जैसें उड़ि जहाज को पंछी, फिरि जहाज पर आवै ।

कमल-नैन कौ छांड़ि महातम, और देव कौं ध्यावै ॥
परम गंग कौं छांड़ि पियासौ, दुरमति कूप खनावै।
जिहि मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यौं करील-फल भावै।
सूरदास-प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै ॥

× × ×

हमैं नँदनंदन मोल लिये।
जम के फंद काटि मुकराए, अभय अजाद किये।
भाल तिलक, स्रवननि तुलसीदल, मेटे अंक बिये।
मूँड्यौ मूँड़, कंठ वनमाला, मुद्रा-चक्र दिये।
सब कोउ कहत गुलाम स्याम कौ, सुनत सिरात हिये।
सूरदास कौं और बड़ौ सुख, जूठनि खाइ जिये ॥

× × ×

राखौ पति गिरिवर गिरि-धारी!
अब तौ नाथ, रह्यौ कछु नाहिन, उघरत माथ अनाथ पुकारी।
बैठी सभा सकल भूपनि की, भीषम-द्रोन-करन व्रतधारी।
कहि न सकत कोउ बात बदन पर, इन पतितनि मो अपति बिचारी।
पांडु-कुमार पवन से डोलत, भीम गदा कर तैं महि डारी।
रही न पैज प्रबल पारथ की, जब तैं धरम-सुत धरनी हारी।
अब तौ नाथ न मेरौ कोई, बिनु श्रीनाथ-मुकुंद-मुरारी।
सूरदास अवसर के चूकैं फिरि पछितैहौ देखि उघारी ॥

× × ×

करी गोपाल की सब होइ।
जो अपनी पुरुषारथ मानत, अति झूठौ है सोइ।
साधन, मंत्र, जंत्र, उद्यम, बल, ये सब डारौ धोइ।
जो कछु लिखि राखी नँदनंदन, मेटि सकै नहिं कोइ।
दुख-सुख, लाभ-अलाभ समुझि तुम, कतहिं मरत हौ रोइ।
सूरदास स्वामी करुनामय, स्याम-चरन मन पोइ ॥

× × ×

भावी काहू सौं न टरै।
कहँ वह राहु, कहाँ वै रवि ससि, आनि सँयोग परै!
मुनि वसिष्ट पंडित अति ज्ञानी, रचि-पचि लगन धरै।
तात-मरन, सिय-हरन, राम बन बपु धरि बिपति भरै।
रावन जीति कोटि तैंतीसौ, त्रिभुवन राज करै।
मृत्युहिं बांधि कूप मैं राखै, भावी-बस सो मरै।

अरजुन के हरि हुते सारथी, सोऊ बन निकरे।
द्रुपद-सुता कौ राजसभा, दुस्सासन चीर हरे।
हरीचंद सो को जगदाता, सो घर नीच भरे।
जौ गृह छांड़ि देस बहु धावै, तउ संग फिरे।
भावी कैं बस तीन लोक हैं, सुर नर देह धरे।
सूरदास प्रभु रची सु ह्वैहै, को करि सोच मरे॥

× × ×

किते दिन हरि-सुमिरन बिनु खोए।
पर-निंदा रसना के रस करि, केतिक जनम बिगोए।
तेल लगाइ कियौ रुचि-मर्दन, बस्तर मलि-मलि धोए।
तिलक बनाइ चले स्वामी ह्वै, विषयिनि के मुख जोए।
काल बली तैं सब जग काँप्यौ, ब्रह्मादिक हूँ रोए।
सूर अधम की कहौ कौन गति, उदर भरे, परि सोए॥

× × ×

सब तजि भजिऐ नंद कुमार।
और भजे तैं काम सरै नहिं, मिटै न भव जंजार।
जिहिं जिहिं जौनि जन्म धारयौ, बहु जोरयौ अघ कौ भार।
तिहिं काटन कौं समरथ हरि कौ तीछन नाम-कुठार।
वेद, पुरान, भागवत, गीता, सब कौ यह मत सार।
भव समुद्र, हरि-पद-नौका बिनु कोउ न उतारै पार।
यह जिय जानि, इही छिन भजि, दिन बीते जात असार।
सूर पाइ यह समौ लाहु लहि, दुर्लभ फिरि संसार॥

× × ×

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं।
ता दिन तेरे तन-तरुवर के सबै पात झरि जैहैं।
या देही कौ गरब न करियै, स्यार-काग-गिध खैहैं।
तीननि मैं तन कृमि, कै बिष्टा, कै ह्वै खाक उड़ैहैं।
कहँ वह नीर, कहाँ वह सोभा, कहँ रँग-रूप दिखैहैं।
जिन लोगनि सौं नेह करत है, तेई देखि घिनैहैं।
घर के कहत सबारे काढ़ौ, भूत होइ धर खैहैं।
जिन पुत्रनिहिं बहुत प्रतिपाल्यौ, देवी-देव मनैहैं।
तेई लै खोपरी बाँस दे, सीस फोरि बिखरैहैं।
अजहूँ मूढ करौ सतसंगति, संतनि मैं कछु पैहैं।

नर-वपु धारि नाहिं जन हरि कौं, जम की मार सो खैहै।
सूरदास भगवंत-भजन बिनु वृथा सु जनम गंवैहै॥

× × ×

भक्ति कब करिहौ, जनम सिरानौं।
बालापन खेलतहीं खोयौ, तरुनाई गरबानौ।
बहुत प्रपंच किए माया के, तऊ न अधम अघानौ।
जतन जतन करि माया जोरी, लै गयौ रंक न रानौ।
सुत-वित-वनिता-प्रीति लगाई, झूठे भरम भुलानौ।
लोभ-मोह तैं चेत्यौ नाहीं, सुपनैं ज्यौं डहकानौ।
बिरध भएं कफ कंठ बिरोध्यौ, सिर धुनि धुनि पछितानौ।
सूरदास भगवंत-भजन-बिनु, जम कैं हाथ बिकानौ॥

× × ×

तजौ मन, हरि बिमुखनि कौ संग।
जिनकैं संग कुमति उपजति है, परत भजन में भंग।
कहा होत पय पान कराएं, बिष नहिं तजत भुजंग।
कागहिं कहा कपूर चुगाएं, स्वान न्हावएं गंग।
खर कौं कहा अरगजा-लेपन, मरकट भूषन-अंग।
गज कौं कहा सरित अन्हवाएं, बहुरि धरै वह ढंग।
पाहन पतित बान नहिं बेधत, रीतौ करत निषंग।
सूरदास कारी कामरि पै, चढ़त न दूजौ रंग॥

× × ×

रे मन मूरख जनम गँवायौ।
करि अभिमान विषय-रस गीध्यौ स्याम-सरन नहिं आयौ।
यह संसार सुवा-सेमर ज्यौं, सुंदर देखि लुभायौ।
चाखन लाग्यौ रुई गई उड़ि, हाथ कछू नहिं आयौ।
कहा होत अब के पछिताएं, पहिलैं पाप कमायौ।
कहत सूर भगवंत-भजन बिनु, सिर धुनि-धुनि पछितायौ॥

× × ×

चकई री, चलि चरन-सरोवर, जहाँ न प्रेम वियोग।
जहँ भ्रम-निसा होति नहिं कबहूँ, सोइ सायर सुख जोग।
जहाँ सनक-सिव हंस, मीन मुनि, नख रवि-प्रभा प्रकास।
प्रफुलित कमल, निमिष नहिं ससि-डर, गुंजत निगम सुवास।

जिहिं सर सुभग - मुक्ति-मुक्ताफल, सुकृत-अमृत-रस पीजै।
सो सर छाड़ि कुबुद्धि विहंगम, इहाँ कहा रहि कीजै।
लक्ष्मी सहित होति नित क्रीड़ा, सोभित सूरजदास।
अब न सुहात विषय-रस-छीलर, वा समुद्र की आस॥

× × ×

सुवा, चलि ता बन को रस पीजै।
जा बन राम-नाम अम्रित-रस, स्रवन पात्र भरि लीजै।
को तेरौ पुत्र, पिता तू काकौ, घरनी, घर कौ तेरौ।
काग सृगाल-स्वान कौ भोजन, तू कहै मेरौ मेरौ!
बन बारानिसि मुक्ति क्षेत्र है, चलि तोकौं दिखराऊँ।
सूरदास साधुनि की संगति, बड़े भाग्य जो पाऊँ।

× × ×

अचंभौ इन लोगनि कौ आवै।
छाँड़ैं स्याम-नाम-अम्रित फल, माया-विष-फल भावै।
निंदक मूढ़ मलय चंदन कौ, राख अंग लपटावै।
मानसरोवर छांड़ि हंस तट काग - सरोवर न्हावै।
पग तर जरत न जानै मूरख, घर तजि घूर बुझावै।
चौरासी लख जोनि स्वाँग धरि, भ्रमि-भ्रमि जमहिं हँसावै।
मृगतृस्ना आचार-जगत जल, ता सँग मन ललचावै।
कहत जु सूरदास संतनि मिलि हरि जस काहे न गावै॥

× × ×

भजन बिनु कूकर-सूकर जैसौ।
जैसे घर विलाव के मूसा, रहत विषय-बस वैसौ।
बग-बगुली अरु गीध-गीधिनी, आइ जनम लियौ तैसौ।
उनहूँ कैं गृह, सुत, दारा हैं, उन्हैं भेद कहु कैसौ।
जीव मारि कै उदर भरत हैं, तिनकौ लेखौ ऐसौ।
सूरदास भगवंत-भजन विनु, मनौ ऊँट-वृष-भैंसौ॥

× × ×

जौ लौं मन-कामना न छूटै।
तौ कहा जोग-जज्ञ व्रत कीन्हैं, विनु कन तुस कौं कूटै।
कहा सनान कियैं तीरथ के, अंग भस्म जट जूटै?
कहा पुरान जु पढ़ैं अठारह, ऊर्ध्व धूम के घूटैं।

जग सोभा की सकल बड़ाई, इनतैं कछू न खूटै।
करनी और, कहै कछु औरै, मन दसहूँ दिसि टूटै।
काम, क्रोध, मद, लोभ सत्रु है, जो इतननि सौं छूटै।
सूरदास तबहीं तम नासै, ज्ञान-अगिनि-झर फूटै॥

× × ×

अपुनपौ आपुन हीं बिसर्‌यौ।
जैसें स्वान काँच-मंदिर मैं, भ्रमि-भ्रमि भूकि पर्‌यौ।
ज्यौं सौरभ मृग-नाभि बसत है, द्रुम तृन सूँघि फिर्‌यौ।
ज्यौं सपने मैं रंक भूप भयौ, तसकर अरि पकर्‌यौ।
ज्यौं केहरि प्रतिबिंब देखि कै, आपन कूप पर्‌यौ।
जैसैं गज लखि फटिकसिला मैं, दसननि जाइ अर्‌यौ।
मर्कट मूँठि छाँड़ि नहीं दीनी, घर-घर-द्वार फिर्‌यौ।
सूरदास नलिनी कौ सुवटा, कहि कौनैं पकर्‌यौ॥

× × ×

अपुनपौ आपुन ही मैं पायौ।
सब्दहि सब्द भयौ उजियारौ, सतगुरु भेद बतायौ।
ज्यौं कुरंग-नाभी कस्तूरी, ढूँढ़त फिरत भुलायौ।
फिरि चितयौ जब चेतन ह्वै करि, अपनैं ही तन छायौ।
राज-कुमारि कंठ-मनि-भूषन, भ्रम भयौ कहूँ गँवायौ।
दियौ बताइ और सखियनि तब, तनु कौ ताप नसायौ।
सपने माहिं नारि कौं भ्रम भयौ, बालक कहूँ हिरायौ।
जागि लख्यौ, ज्यौं कौ त्यौं ही है, ना कहुँ गयौ न आयौ।
सूरदास समुझे की यह गति, मनहीं मन मुसुकायौ।
कहि न जाइ या सुख की महिमा, ज्यौं गूँगैं गुर खायौ॥

× × ×

आजु नंद के द्वारैं भीर।
इक आवत, इक जात बिदा ह्वै, इक ठाढ़े मंदिर कै तीर।
कोउ केसरि कौ तिलक बनावति, कोउ पहिरति कंचुकी सरीर।
एकनि कौं भूषन पाटंबर, एकनि कौं जु देत नग हीर।
एकनि कौं पहुपनि की माला, एकनि कौं चंदन घसि नीर।
एकनि माथैं दूब-रोचना, एकनि कौं बोधति दै धीर।
सूरदास धनि स्याम सनेही, धन्य जसोदा पुन्य-सरीर॥

× × ×

जसोदा हरि पालनैं झुलावै।
हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोइ - सोई कछु गावै।
मेरे लाल कौं आउ निंदरिया, कहैं न आनि सुवावै।
तू काहैं नहिं वेगहिं आवै, तोकौं कान्ह बुलावै।
कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि-करि सैन बतावै।
इहिं अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरैं गावै।
जो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ, सो नँद भामिनि पावै।।

× × ×

कर पग गहि, अँगुठा मुख मेलत।
प्रभु पौंढ़े पालनैं अकेले, हरपि-हरपि अपनैं रंग खेलत।
सिव सोचत, विधि बुद्धि विचारत, बट बाढ़्यौ सागर-जल झेलत।
बिडरि चले घन प्रलय जानि कै, दिगपति दिग दंतीनि सकेलत।
मुनि मन भीत भए, भुव कंपित सेप सकुचि सहसौ फन पेलत।
उन ब्रज-बासिनि बात न जानी, समुझे सूर सकट पग ठेलत।।

× × ×

हरि किलकत जसुमति की कनियाँ।
मुख मैं तीनि लोक दिखराए, चकित भइ नँद-रनियाँ।
घर-घर हाथ दिखावति डोलति, बाँधति गरैं बघनियाँ।
सूर स्याम की अदभुत लीला नहिं जानत मुनिजनियाँ।।

× × ×

लाल हौं वारी तेरे मुख पर।
कुटिल अलक, मोहनि-मन बिहँसनि, भृकुटी बिकट ललित नैननि पर।
दमकति दूध-दँतुलिया बिहँसत, मनु सीपज घर कियौ वारिज पर।
लघु-लघु लट सिर घूँघरवारी, लटकन लटकि रह्यो माथैं पर।
यह उपमा कापै कहि आवै, कछुक कहौं सकुचित हौं जिय पर।
नव-तन-चंद्र रेख-मधि राजत, सुरगुरु सुक्र - उदोत परसपर।
लोचन लोल कपोल ललित अति, नासा कौ मुकता रदछद पर।
सूर कहा न्यौछावर करिये अपने लाल ललित लरखर पर।।

× × ×

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुनि चलत रेनु तन-मंडित, मुख दधि लेप किये।

चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन - तिलक दिये।
लट-लटकनि मनु मत्त मधुप-गन मादक मधुहिं पिये।
कठुला-कंठ, वज्र केहरि-नख, राजत रुचिर हिये।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सत कल्प जिये॥

× × ×

किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नंद कैं आँगन, बिंब पकरिवैं धावत।
कबहुँ निरखि हरी आपु छाँह कौं, कर सौं पकरन चाहत।
किलकि हँसत राजत द्वैदतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत।
कनक-भूमि पर कर-पग छाया, यह उपमा इक राजति।
करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि वसुधा, कमल बैठकी साजति।
बाल दसा-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नन्द बुलावति।
अँचरा तर लै ढांकि, सूर के प्रभु को दूध पियावति॥

× × ×

सिखवति चलन जसोदा मैया।
अरबराइ कर पानि गहावत, डगमगाइ धरनी धरे पैया।
कबहुँक सुन्दर बदन विलोकति, उर आनँद भरि लेत बलैया।
कबहुँक कुल देवता मनावति, चिरजीवहु मेरौ कुँवर कन्हैया।
कबहुँक बल कौं टेरि बुलावति, इहिं आँगन खेलौ दोउ भैया।
सूरदास स्वामी की लीला, अति प्रताप विलसत नँदरैया॥

× × ×

कहन लागे मोहन मैया-मैया।
नंद महर सों बाबा बाबा, अरु हलधर सों भैया।
ऊँचे चढ़ि चढ़ि कहति जसोदा, लै लै नाम कन्हैया।
दूरि खेलन जनि जाहु लला रे, मारेगी काहु की गैया।
गोपी ग्वाल करत कौतूहल, घर-घर बजति बधैया।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं, चरननि की बलि जैया।

× × ×

मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वै है लाँबी - मोटी।
काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै नागिन सी भुइँ लोटी।
काचौ दूध पियावति पचि-पचि, देति न माखन रोटी।
सूरज चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी॥

× × ×

जागौ, जागौ हो गोपाल।
नाहिं न इतौ सोइयत सुनि सुत, प्रात परम सुचि काल।
फिर-फिर जात निरखि मुख छिन, सब गोपनि के बाल।
बिन बिकसे कल-कमल कोष ते मनु मधुपनि की माल।
जो तुम मोहिं न पत्याहु सूर प्रभु, सुन्दर स्याम तमाल।
तौ तुमही देखौ आपुन तजि, निद्रा नैन बिसाल॥

× × ×

कमल-नैन हरि करौ कलेवा।
माखन-रोटी, सद्य जम्यौ दधि, भाँति-भाँति के मेवा।
खारिक, दाख, चिरौंजी, किसमिस, उज्ज्वल गरी बदाम।
सफरी, सेव, छुहारे, पिस्ता, जे तरबूजा नाम।
अरु मेवा बहु भाँति-भाँति हैं, षटरस के मिष्ठान्न।
सूरदास प्रभु करत कलेवा, रीझे स्याम सुजान॥

× × ×

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायौ।
मोसौं कहत मोल कौ लीन्हौ, तू जसुमति कब जायौ।
कहा करौं इहि रिस के मारैं, खेलन हौं नहिं जात।
पुनि-पुनि कहत कौन है माता, को है तेरौ तात।
गोरे नंद, जसोदा गोरी, तू कत स्यामल गात।
चुटकी दै-दै ग्वाल नचावत, हँसत सबै मुसकात।
तू मोहिं कौं मारन सीखी, दाउहिं कबहुँ न खीझै।
मोहन मुख रिस की ये बातैं, जसुमति सुनि-सुनि रीझै।
सुनहु कान्ह, बलभद्र चबाई, जनमत ही कौ धूत।
सूर स्याम मोहिं गोधन की सौं, हौं माता तू पूत।

× × ×

मैया री, मोहिं माखन भावै।
जो मेवा पकवान कहति तू, मोहिं नहीं रुचि आवै।
ब्रज जुवती इक पाछै ठाढ़ी, सुनत स्याम की बात।
मन-मन कहति कबहु अपनैं घर, देखौं माखन खात।
बैठे जाइ मथनियाँ कैं ढिग, मैं तब रहौं छपानी।
सूरदास प्रभु अंतरजामी, ग्वालिनि मन की जानी॥

× × ×

मैया मैं नहिं माखन खायौ।
ख्याल परैं ये सखा सबै मिलि, मेरैं मुख लपटायौ।

देखि तुही सींके पर भोजन, ऊँचैं धरि लटकायौ।
हौं जु कहत नान्हे कर अपनैं मैं कैसैं करि पायौ।
मुख दधि पोंछि, बुद्धि एक कीन्ही, दोना पीठि दुरायौ।
डारि सांटि, मुसुकाइ जसोदा, स्यामहिं कंठ लगायौ।
बाल-बिनोद मोद मन मोह्यो, भक्ति-प्रताप दिखायौ।
सूरदास जसुमत कौ यह सुख, सिव बिरञ्चि नहिं पायौ॥

× × ×

ऐसी रिस मैं जौ धरि पाऊँ।
कैसे हाल करौं धरि हरि के, तुमकौं प्रगट दिखाऊँ।
संटिया लिए हाथ नँदरानी, थरथरात रिस गात।
मारे बिना आजु जौ छाँड़ौं, लागै मेरैं तात।
इहिं अंतर ग्वारिनि इक औरे, धरे बाँह हरि ल्यावति।
भली महरि सूधौ सुत जायौ, चोली-हार बतावति।
रिस मैं रिस अतिहीं उपजाई, जानि जननि अभिलाष।
सूर स्याम भुज गहे जसोदा, अब बाँधौं कहि माष॥

× × ×

बाँधौं आजु कौन तोहिं छोरैं।
बहुत लँगरई कीन्हौ मोसौं, भुज गहि रजु ऊखल सौं जोरैं।
जननी अति रिस जानि बँधायौ, निरखि बदन, लोचन जल ढोरैं।
यह सुनि ब्रज-जुवतीं सब धाईं कहतिं कान्ह अब क्यौं नहिं छोरैं।
ऊखल सौं गहि बांधि जसोदा, मारन कौं साँटी कर तोरैं।
साँटी देखि ग्वालि पछितानी, बिकल भई जहँ-तहँ मुख मोरैं।
सुनहु महरि ऐसी न बूझिए सुत बाँधति माखन दधि थोरैं।
सूर स्याम कौं बहुत सतायौ, चूक परी हम तैं यह भोरैं॥

× × ×

यह सुनि कै हलधर तहँ धाए।
देखि स्याम ऊखल सौं बांधे, तबहीं दोउ लोचन भरि आए।
मैं बरज्यौ कै बार कन्हैया, भली करी दोउ हाथ बँधाए।
अजहूँ छाँड़ौगे लँगराई, दोउ कर जोर जननि पै आए।
स्यामहिं छोरि मोहि बांधै बरु, निकसत सगुन भले नहिं पाए।
मेरे प्रान-जिवन-धन कान्हा, तिनके भुज मोहिं बंधे दिखाए।
माता सौं कह करौं ढिठाई, सो सरूप कहि नाम सुनाए।
सूरदास तब कहति जसोदा, दोउ भैया तुम इक मत पाए॥

× × ×

ब्रह्मा बालक-बच्छ हरे।
आदि अंत प्रभु अंतरजामी, मनसा तैं जु करे।
सोइ रूप वे बालक गो-सुत, गोकुल जाइ भरे।
एक बरप निसि बासर रहि सँग, काहु न जानि परे।
त्रास भयौ अपराध आपु लखि, अस्तुति करति खरे।
सूरदास स्वामी मनमोहन, तामैं मन न धरे।

× × ×

अब कैं राखि लेहु गोपाल।
दसहूँ दिसा दुसह दावागिनि, उपजी है इहिं काल।
पटकत बाँस, काँस कुस चटकत, लटकत ताल तमाल।
उचटत अति अंगार, फुटत फर, झपटत लपट कराल।
धूम धुँधि बाढ़ी धर अंबर, चमकत बिच-बिच ज्वाल।
हरिन, बराह, मोर, चातक, पिक, जरत जीव बेहाल।
जनि जिय डरहु, नैन मूँदहु सब, हंसि बोले नँदलाल।
सूर अगिनि सब बदन समानी, अभय दिये ब्रज-बाल॥

× × ×

बन तैं आवत धेनु चराए।
संध्या समय साँवरे मुख पर, गो-पद-रज लपटाए।
बरह मुकुट कैं निकट लसति लट, मधुप मनौ रुचि पाए।
विलसत सुधा जलज-आनन पर, उड़त न जात उड़ाए।
विधि वाहन-भच्छन की माला, राजत उर पहिराए।
एक बरन बपु नहिं बड़ छोटे, ग्वाल बने इक धाए।
सूरदास बलि लीला प्रभु की, जीवत जन जस गाए॥

× × ×

मैया बहुत बुरो बलदाऊ।
कहन लग्यो बन बड़ो तमासौ, सब मौड़ा मिलि आऊ।
मोहूँ कौं चुचकारि गयौ लै, जहाँ सघन बन झाऊ।
भागि चलौ कहि गयौ उहाँ तैं, काटि खाइ रे हाऊ।
हौं डरपौं, कापौं अरु रोवौं, कोउ नहिं धीर धराऊ।
थरसि गयौं नहिं भागि सकौं, वै भागे जात अगाऊ।
मोसौं कहत मोल कौ लीनो, आपु कहावत साऊ।
सूरदास बल बड़ौ चवाई, तैसेहिं मिले सखाऊ॥

× × ×

मैया हौं न चरैहौं गाइ ।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसौं, मेरे पाइ पिराइ ।
जौ न पत्याहि पूछि बलदाउहिं, अपनी सौंह दिवाइ ।
यह सुनि माइ जसोदा ग्वालनि, गारी देत रिसाइ ।
मैं पठवति अपने लरिका कौं, आवै मन बहराइ ।
सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ ॥

× × ×

धनि यह वृंदावन की रेनु ।
नंद-किसोर चरावत गैयाँ, मुखहिं बजावत बेनु ।
मन-मोहन कौ ध्यान धरै जिय, अति सुख पावत चैनु ।
चलत कहाँ मन और पुरी तन, जहँ कछु लेन न दैनु ।
इहाँ रहहु जहँ जूठनि पावहु, ब्रजवासिनि कैं ऐनु ।
सूरदास ह्याँ की सरवरि नहिं, कल्पवृच्छ सुर-धेनु ॥

× × ×

जागि उठे तब कुंवर कन्हाई ।
मैया कहाँ गई मो ढिग तैं, संग सोवति बल भाई ।
जागे नंद, जसोदा जागी, बोलि लिए हरि पास ।
सोवत झझकि उठे काहे तैं, दीपक कियौ प्रकास ।
सपनैं कूदि पर्‌यौ जमुना दह, काहूँ दियौ गिराइ ।
सूर स्याम सौं कहति जसोदा, जनि हो लाल डराइ ॥

× × ×

मैं बरज्यौ जमुना-तट जात ।
सुधि रहि गई न्हात की तेरैं, जनि डरपौ मेरे तात ।
नंद उठाय लियौ कोरा करि, अपनैं संग पौढ़ाइ ।
वृंदावन मैं फिरत जहाँ तहँ, किहिं कारन तू जाइ ।
अब जनि जैहौ गाइ चरावन, कहँ को रहति बलाइ ।
सूर स्याम दंपति बिच सोए, नींद गई तब आइ ।

× × ×

जसुमति टेरति कुँवर कन्हैया ।
आगैं देखि कहत बलरामहिं, कहाँ रह्यौ तुव भैया ।
मेरौ भैया आवत अबहीं, तौहिं दिखाऊँ मैया ।
धीरज करहु, नैंकु तुम देखहु, यह सुनि लेति बलैया ।

पुनि यह कहति मोहिं परमोधत, धरनि गिरी मुरझैया।
सूर बिना सुत भई अति व्याकुल, मेरौ बाल नन्हैया ॥

× × ×

अति कोमल तनु धर्यौ कन्हाई।
गए तहाँ जहँ काली सोवत, उरग-नारि देखत अकुलाई।
कह्यौ कौन कौ बालक है तू, बार बार कही; भागि न जाई।
छिनकहि मैं जरि भस्म होइगौ, जब देखे उठि जाग जम्हाई।
उरग-नारि की बानी सुनि कै, आपु हंसे मन मैं मुसुकाई।
मौकौं कंस पठायौ देखन, तू याकौं अब देहि जगाई।
कहा कंस दिखरावत इनकौं, एक फूँकही में जरि जाई।
पुनि-पुनि कहत सूर के प्रभु कौ, तू अब काहे न जात पराई ॥

× × ×

जब हरि मुरली अधर धरत।
थिर चर, चर थिर, पवन थकित रहैं, जमुना जल न बहत।
खग मोहैं, मृग-जूथ भुलाहीं, निरखि मदन-छबि छरत।
पसु मोहैं, सुरभी बिथकित, तृन दंतनि टेकि रहत।
सुक सनकादि सकल मुनि मोहैं, ध्यान न तनक गहत।
सूरजदास भाग हैं तिनके, जे या सुखहिं लहत ॥

× × ×

मुरली तऊ गुपालहिं भावति।
सुनि री सखी जदपि नँदलालहिं, नाना भांति नचावति।
राखति एक पाइ ठाढ़ौ करि, अति अधिकार जनावति।
कोमल तन आज्ञा करवावति, कटि टेढ़ौ ह्वै आवति।
अति आधीन सुजान कनौड़े, गिरिधर नार नवावति।
आपुन पौढ़ि अधर सज्जा पर, कर पल्लव पलुटावति।
भृकुटी कुटिल, नैन नासा-पुट, हम पर कोप करावति!
सूर प्रसन्न जानि एकौ छिन, धर तैं सीस डुलावति ॥

× × ×

अधर-रस मुरली लूटन लागी।
जा रस कौं षट रितु तप कीन्हौ, सो रस पियति सभागी ॥
कहाँ रही, कहँ तैं इह आई, कौनैं याहि बुलाई?
चकित भई कहति ब्रजबासिनि, यह तौ भली न आई।

सावधान क्यों होति नहीं तुम, उपजी बुरी बलाइ।
सूरदास प्रभु हम पर ताकौं, कीन्हो सौति बजाइ॥

× × ×

अवहीं तैं हम सवनि विसारी।
ऐसे वस्य भये हरि वाके, जाति न दसा विचारी॥
कबहूँ कर पल्लव पर राखत, कबहुँ अधर लै धारी।
कबहुँ लगाइ लेत हिरदै सौं, नैं कहुँ करत न न्यारी॥
मुरली स्याम किए वस अपनैं, जे कहियत गिरिधारी।
सूरदास प्रभु कैं तन-मन-धन, बाँस बँसुरिया प्यारी॥

× × ×

मुरली की सरि कौन करे।
नंद-नँदन त्रिभुवन-पति नागर सो जो वस्य करे॥
जबहीं जब मन आवत तब तब अधरनि पान करे।
रहत स्याम आधीन सदाई आयसु तिनहिं करे॥
ऐसी भई मोहिनी माई मोहन मोह करे।
सुनहु सूर याके गुन ऐसे ऐसी करनि करे॥

× × ×

काहें न मुरली सौं हरि जोरै।
काहें न अधरनि धरैं जु पुनि-पुनि, मिली अचानक भोरैं॥
काहें नहीं ताहि कर धारैं, क्यौं नहिं ग्रीव नवावैं।
काहें न तनु त्रिभंग करि राखैं, ताके मनहिं चुरावैं॥
काहें न यौ आधीन रहैं है, वै अहीर वह बेनु।
सूर स्याम कर तैं नहिं टारत, बन-बन चारत धेनु॥

× × ×

मुरलिया कपट चतुरइ ठानी।
कैसैं मिलि गई नंद-नँदन कौं, उन नाहिंन पहिचानी॥
इक वह नारि, बचन मुख मीठे, सुनत स्याम ललचाने।
जाति-पांति की कौन चलावै, वाकैं रंग भुलाने॥
जाकौ मन मानत है जासौं, सो तहँई सुख मानै।
सूर स्याम वाके गुन गावत, वह हरि के गुन गानै॥

× × ×

स्यामहिं दोष कहा कहि दीजै।
कहा बात मुरली सौं कहियै, सब अपनेहिं सिर लीजै॥

हमहीं कहति बजावहु मोहन, यह नाहीं तब जानी।
हम जानी यह बाँस बँसुरिया, को जानै पटरानी॥
बारे तैं मुँह लागत-लागत, अब ह्वै गई सयानी।
सुनहु सूर हम भोरी-भोरी, याकी अकथ कहानी॥

× × ×

मुरली स्याम बजावन दै री।
स्रवननि सुधा पियति काहैं नहिं, इहिं तू जनि बरजै री॥
सुनति नहीं वह कहति कहा है, राधा राधा नाम।
तू जानति हरि भूल गए मोहिं, तुम एकै पति बाम॥
वाही कै मुख नाम धरावत, हमहिं मिलावत ताहि।
सूर स्याम हमकौं नहिं बिसरे, तुम डरपति हौ काहि॥

× × ×

मुरलिया मोकौं लागति प्यारी।
मिली अचानक आइ कहूँ तैं, ऐसी रही कहाँ री॥
धनि याके पितु मातु, धन्य यह, धन्य-धन्य मृदु बोलनि।
धन्य स्याम गुन गुनि कै ल्याए, नागरि चतुर अमोलनि॥
यह निरमोल मोल नहिं याकौ, भली न यातैं कोई।
सूरदास याके पटतर कौ, तौ दीजै जौ होई॥

× × ×

जमुना तट देखे नँद नंदन।
मोर-मुकुट मकराकृत-कुंडल, पीत-बसन तन चंदन॥
लोचन तृप्त भए दरसन तैं, उर की तपनि बुझानी।
प्रेम-मगन तब भई सुंदरी, उर गदगद मुख-बानी॥
कमल-नयन तट पर हैं ठाढ़े, सकुचहिं मिलि ब्रज-नारी।
सूरदास प्रभु अन्तरजामी, ब्रत - पूरन पगधारी॥

× × ×

नीकै तप कियौ तनु गारि।
आपु देखत कदम पर चढ़ि, मानि लियौ मुरारि॥
वर्ष भर ब्रत - नेम - संजम, स्रम कियौ मोहि काज।
कैसे हूँ मोहिं भजै कोऊ, मोहिं बिरद की लाज॥
धन्य ब्रत इन कियौ पूरन, सीत तपति निवारि।
काम - आतुर भजीं मोकौं, नव तरुनि ब्रज-नारि॥

कृपा-नाथ कृपाल भए तब, जानि जन की पीर।
सूर प्रभु अनुमान कीन्हौ, हरौं इनके चीर॥

× × ×

हमरे अंबर देहु मुरारी।
ले सब चीर कदम चढ़ि बैठे, हम जल-माँझ उघारी॥
तट पर बिना वसन क्यौं आवैं, लाज लगति है भारी।
चोली हार तुमहिं कौं दीन्हौं, चीर हमहिं द्यौ डारी॥
तुम यह बात अचंभौ भाषत, नाँगी आवहु नारी।
सूर स्याम कछु छोह करौ जू, सीत गई तनु मारी॥

× × ×

लाज ओट यह दूरि करौ।
जोइ मैं कहौं करौ तुम सोई, सकुच बापुरिहिं कहा करौ॥
जल तैं तीर आइ कर जोरहु, मैं देखौं तुम बिनय करौ।
पूरन व्रत अब भयौ तुम्हारौ, गुरुजन संका दूरि करौ॥
अब अन्तर मोसौं जनि राखहु, बार-बार हठ बृथा करौ।
सूर स्याम कहै चीर देत हौं, मो आगैं सिगार करौ॥

× × ×

मेरौ कह्यौ सत्य करि जानौ।
जौ चाहौ ब्रज की कुसलाई, तौ गोबर्धन मानौ॥
दूध दहीं तुम कितनौ लेहौ, गोसुत बढ़ैं अनेक।
कहा पूजि सुरपति सैं पायौ, छांड़ि देहु यह टेक॥
मुँह मागे फल जौ तुम पावहु, तौ तुम मानहु मोहिं।
सूरदास प्रभु कहत ग्वाल सौं, सत्य बचन करि दोहि॥

× × ×

गिरिवर स्याम की अनुहारि।
करत भोजन अधिक रुचि यह, सहस भुजा पसारि॥
नंद कौ कर गहे ठाढ़े, यहै गिरि कौ रूप।
सखी ललिता राधिका सौं, कहति देखि स्वरूप॥
यहै कुंडल, यहै माला, यहै पीत पिछौरि।
सिखर सोभा स्याम की छवि, स्याम-छवि गिरि जोरि॥
नारि बदरौला रही, वृषभानु - घर रखवारि।
तहाँ तैं उहिं भोग अरप्यौ, लियौ भुजा पसारि॥

राधिका-छवि देखि भूली, स्याम निरखैं ताहिं।
सूर प्रभु बस भई प्यारी, कोर - लोचन चाहि ॥

× × ×

गिरि पर बरषन लागे बादल।
मेघवर्त्त, जलवर्त्त, सैन सजि, आए लै लै आदर ॥
सलिल अखंड धार धर टूटत, किये इंद्र मन सादर।
मेघ परस्पर यहै कहत हैं, धोइ करहु गिरि खादर ॥
देखि देखि डरपत व्रजबासी, अतिहिं भए मन कादर।
यहै कहत व्रज कौन उबारै, सुरपति कियैं निरादर ॥
सूर स्याम देखैं गिरि अपनैं, मेघनि कीन्हौ दादर।
देव आपनौ नहीं सम्हारत, करत इंद्र सौं ठादर ॥

× × ×

स्याम लियौ गिरिराज उठाइ।
धीर धरौ हरि कहत सबनि सौं, गिरि गोवर्धन करत सहाइ ॥
नंद गोप ग्वालनि के आगैं, देव कह्यौ यह प्रगट सुनाइ।
काहे कौं व्याकुल भएँ डोलत, रच्छा करै देवता आइ ॥
सत्य वचन गिरि-देव कहत हैं, कान्ह लेहि मोहिं कर उचकाइ।
सूरदास नारी-नर व्रज के, कहत धन्य तुम कुँवर कन्हाइ ॥

× × ×

गिरि जनि गिरै स्याम के कर तैं।
करत विचार सबै व्रजवासी, भय उपजत अति उर तैं ॥
लै लै लकुट ग्वाल सब धाए, करत सहाय जु तुरतैं।
यह अति प्रबल, स्याम अति कोमल, रवकि रवकि हरवर तैं ॥
सप्त दिवस कर पर गिरि धारयौ, बरसि थक्यौ अंबर तैं।
गोपी ग्वाल नंद सुत राख्यौ, मेघ धार जलधर तैं ॥
जमलार्जुन दोउ सुत कुबेर के, तेउ उखारे जर तैं ॥
सूरदास प्रभु इंद्र - गर्व हरि, व्रज राख्यौ करवर तैं ॥

× × ×

घरनि घरनि व्रज होति बधाई।
सात बरष कौ कुँवर कन्हैया, गिरिवर धरि जीत्यौ सुरराई ॥
गर्व सहित आयौ व्रज बोरन, वह कहि मेरी भक्ति घटाई।
सात दिवस जल बरषि सिरान्यौ, तब आयौ पाइनि तर धाई ॥

कहाँ कहाँ नहिं संकट मेटत, नर-नारी सब करत बड़ाई।
सूर स्याम अब कै ब्रज राख्यौ, ग्वाल करत सब नंद दोहाई ॥

× × ×

मातु पिता इनके नहिं कोइ।
आपुहिं करता, आपुहिं हरता, त्रिगुन रहित हैं सोइ ॥
कितिक बार अवतार लियौ ब्रज, ये हैं ऐसे ओइ।
जल-थल, कीट-ब्रह्म के व्यापक, और न इन सरि होइ ॥
वसुधा - भार उतारन काजै, आपु रहत तनु गोइ।
सूर स्याम माता हित कारन, भोजन माँगत रोइ ॥

× × ×

मानौ माई घन घन अंतर दामिनि।
घन दामिनि दामिनि घन अंतर, सोभित हरि-ब्रज भामिनि ॥
जमुन पुलिन मल्लिका मनोहर, सरद - सुहाई - जामिनि।
सुन्दर ससि गुन रूप-राग-निधि, अंग - अंग अभिरामिनि ॥
रच्यौ रास मिलि रसिक राइ सौं, मुदित भई गुन ग्रामिनि।
रूप निधान स्याम सुन्दर तन, आनँद मन बिस्रामिनि ॥
खंजन - मीन - मयूर - हंस-पिक, भाइ - भेद गज-गामिनि।
को गति गनै सूर मोहन सँग, काम बिमोह्यौ कामिनि ॥

× × ×

कृपा सिंधु हरि कृपा करौ हो।
अनजाने मन गर्व बढ़ायौ, सो जिनि हृदय धरौ हो ॥
सोरह सहस पीर तनु एकै, राधा जिव, सब देह।
ऐसी दसा देखि करुनामय, प्रगटौ हृदय - सनेह ॥
गर्व-हर्यौ तनु, बिरह प्रकास्यौ, प्यारी व्याकुल जानि।
सुनहु सूर अब दरसन दीजै, चूक लई इनि मानि ॥

× × ×

पनघट रोके रहत कन्हाई।
जमुना-जल कोउ भरन न पावै, देखत हीं फिर जाई ॥
तबहिं स्याम इक बुद्धि उपाई, आपुन रहे छपाई।
तट ठाढ़े जे सखा संग के, तिनकौं लियौ बुलाई ॥
बैठार्यौ ग्वालिनि कौं द्रुम-तर, आपुन फिर-फिर देखत।
बड़ी बार भई कोउ न आई, सूर स्याम मन लेखत ॥

× × ×

जुवति इक आवत देखी स्याम ।
द्रुम कै ओट रहे हरि आपुन, जमुना तट गई वाम ॥
जल हलोरि गागरि भरि नागरि, जबहीं सीस उठायौ ।
घर कौं चली जाइ ता पाछैं, सिर तैं घट ढरकायौ ॥
चतुर ग्वालि कर गह्यौ स्याम कौ, कनक लकुटिया पाई ।
औरनि सौं करि रहे अचगरी, मोसौं लगत कन्हाई ॥
गागरि लै हंसि देत ग्वारि-कर, रीतौ घटि नहि लेहौं ।
सूर स्याम ह्याँ आनि देहु भरि तबहि लकुट कर देहौं ॥

× × ×

घट भरि दियौ स्याम उटाइ ।
नैकु तन की सुधि न ताकौं, चली ब्रज समुहाइ ॥
स्याम सुन्दर नैन - भीतर, रहे आनि समाइ ।
जहाँ-जहाँ भरि दृष्टि देखै, तहाँ - तहाँ कन्हाइ ॥
उतहिं तै इक सखी आई, कहति कहा भुलाइ ।
सूर अबहीं हँसत आई, चली कहा गवाँइ ॥

× × ×

ग्वारिनि जब देखे नँद-नंदन ।
मोर मुकुट पीतांबर काछे, खौरि किए तन चंदन ॥
तब यह कह्यौ कहाँ अब जैहौ, आगैं कुँवर कन्हाई ।
यह सुनि मन आनंद बढ़ायौ, मुख कहैं, बात डराई ॥
कोउ-कोउ कहति चलौ री जैयै, कोउ कहै घर फिर जैयै ।
कोउ-कोउ कहति कहा करिहैं हरि, इनसौं कहा परैयै ॥
कोउ-कोउ कहति कालिहीं हमकौं, लूटि लई नँद लाल ।
सूर स्याम के ऐसे गुन हैं, घरहिं फिरीं ब्रज-बाल ॥

× × ×

हमहिं और सो रोकै कौन ।
रोकनहारौ नंदमहर सुत, कान्ह नाम जाकौ है तौन ॥
जाकैं बल है काम नृपति कौ, टगत फिरति जुवतिनि कौं जौन ।
टोना डारि देत सिर ऊपर, आपु रहत ठाढ़ौ ह्वै मौन ॥
सुनहु स्याम ऐसी न बूझियै, बानि परी तुमकौं यह कौन ।
सूरदास प्रभु कृपा करहु अब, कैसेंहु जाहिं आपनै भौन ॥

× × ×

राधा सौं माखन हरि माँगत।
औरनि की मटुकी कौ खायौ, तुम्हरौ कैसौ लागत॥
ले आई वृषभानु - सुता, हंसि सद लवनी है मेरौ।
ले दीन्हों अपने कर हरि-मुख, खात अल्प हंसि हेरौ॥
सबहिनि तै मीठौ दधि है यह, मधुरैं कह्यौ सुनाइ।
सूरदास प्रभु सुख उपजायौ, व्रज ललना मन भाइ॥

× × ×

गोपी कहति धन्य हम नारी।
धन्य दूध, धनि दधि, धनि माखन, हम परुसति जैंवत गिरधारी॥
धन्य घोष, धनि दिन, धनि निसि वह, धनि गोकुल प्रगटे बनवारी।
धन्य सुकृत पाछिलौ, धन्य धनि नंद, धन्य जसुमति महतारी॥
धनि धनि ग्वाल, धन्य वृन्दावन, धन्य भूमि यह अति सुखकारी।
धन्य दान, धनि कान्ह मंगैया, धन्य सूर त्रिन द्रुम वन डारी॥

× × ×

रीती मटुकी सीस धरैं।
बन की घर की सुरति न काहूँ, लेहु दही यह कहति फिरैं॥
कबहुँक जाति कुंज भीतरि कौं, तहाँ स्याम की सुरति करैं।
चौंकि परतिं, कछु तन सुधि आवति, जहाँ तहाँ सखि सुनति ररैं॥
तब यह कहतिं कहौ मैं इनसौं, भ्रमि भ्रमि बन मैं वृथा मरैं।
सूर स्याम कै रस पुनि छाकतिं, वैसैं हीं ढँग बहुरि ढरैं॥

× × ×

तरुनी स्याम रस मतवारि।
प्रथम जोबन-रस चढ़ायौ, अतिहि भई खुमारि॥
दूध नहिं, दधि नहीं, माखन नहीं, रीतौ माट।
महा-रस अँग-अंग पूरन, कहाँ घर, कहँ बाट॥
मातु-पितु गुरुजन कहाँ के, कौन पति, को नारि।
सूर प्रभु के प्रेम पूरन, छकि रहीं व्रज नारि॥

× × ×

कोउ माई लेहै री गोपालहिं।
दधि कौ नाम स्याम सुन्दर-रस, विसरि गयौ व्रज-बालहिं॥
मटुकी सीस, फिरत व्रज-वीथिनि, बोलति वचन रसालहिं।
उफनत तक्र चहुँ दिसि चितवत, चित लाग्यौ नँद-लालहिं॥

हँसति, रिसाति, बुलावति, बरजति, देखहु इनकी चालहिं।
सूर स्याम बिनु और न भावै, या बिरहिनि बेहालहिं ॥

× × ×

लोक-सकुच कुल-कानि तजी।
जैसैं नदी सिंधु कौं धावै, वैसैंहि स्याम भजी ॥
मातु पिता बहु त्रास दिखायौ, नैकुँ न डरी, लजी।
हारि मानि बैठे, नहिं लागति, बहुतै बुद्धि सजी ॥
मानति नहीं लोक मरजादा, हरि कैं रंग मजी।
सूर स्याम कौं मिलि, चूनौ-हरदी ज्यौं रंग रँजी ॥

× × ×

कहा कहति तू मोहिं री माई।
नंद-नँदन मन हरि लियौ मेरौ, तब तैं मोकौं कछु न सुहाई ॥
अब लौं नहिं जानति मैं को ही, कब तैं तू मेरैं ढिग आई।
कहाँ गेह, कहँ मातु पिता हैं, कहाँ सजन, गुरुजन कहँ भाई ॥
कैसी लाज, कानि है कैसी, कहा कहति ह्वै ह्वै रिसहाई ?।
अब तौ सूर भजी नँद-लालहिं, की लघुता की होइ बड़ाई ॥

× × ×

मेरे कहे मैं कोउ नाहिं।
कह कहौं, कछु कहि न आवै, नैंकुहूँ न डराहिं ॥
नैन ये हरि-दरस-लोभी, स्रवन सब्द-रसाल।
प्रथमहीं मन गयौ तन तजि, तब भई बेहाल ॥
इंद्रियनि पर भूप मन है, सबनि लियौ बुलाइ।
सूर प्रभु कौं मिले सब ये, मोहिं करि गए बाइ ॥

× × ×

अब तौ प्रगट भई जग जानी !
वा मोहन सौं प्रीति निरंतर, क्यौंऽब रहैगी छानी ॥
कहा करौं सुन्दरि मूरति, इन नैननि माँझ समानी।
निकसति नहीं बहुत पचि हारी, रोम रोम अरुझानी ॥
अब कैसैं निरवारि जाति है, मिली दूध ज्यौं पानी।
सूरदास प्रभु अन्तरजामी, उर अन्तर की जानी ॥

× × ×

नंदलाल सौं मेरौ मन मान्यौ, कहा करेगौ कोउ ।
मैं तौ चरन-कमल लपटानी, जो भावै सो होउ ॥
बाप रिसाइ, माइ घर मारै, हंसैं बिराने लोग ।
अब तौ स्यामहिं सौं रति बाढ़ी, बिधना रच्यौ सँजोग ॥
जाति महति पति जाइ न मेरी, अरु परलोक नसाइ ।
गिरिधर वर मैं नैंकु न छाँड़ौं, मिली निसान बजाइ ॥
बहुरि कबहिं यह तन धरि पैहौं, कहँ पुनि श्रीबनवारि ।
सूरदास स्वामी के ऊपर, यह तन डारौं वारि ॥

× × ×

करन दे लोगनि कौं उपहास ।
मन क्रम वचन नंद-नंदन कौ, नैकु न छाड़ौं पास ॥
सब या ब्रज के लोग चिकनियाँ, मेरे भाएं घास ।
अब तौ यहै बसी री माई, नहिं मानौं गुरु त्रास ॥
कैसैं रह्यौ परै री सजनी, एक गाँव कै वास ।
स्याम मिलन की प्रीति सखी री, जानत सूरजदास ॥

× × ×

देखौ माई सुन्दरता कौ सागर ।
बुधि-विवेक बल पार न पावत, मगन होत मन नागर ॥
तनु अति स्याम अगाध अंबु-निधि, कटि पत पीत तरंग ।
चितवत चलत अधिक रुचि उपजति, भँवर परति सब अंग ॥
नैन - मीन, मकराकृत कुंडल, भुज सरि सुभग भुजंग ।
मुक्ता - माल मिलीं मानौ, द्वै सुरसरि एकै संग ॥
कनक खचित मनिमय आभूषण, मुख, स्रम-कन सुख देत ।
जनु जल-निधि मथि प्रगट कियौ ससि, श्री अरु सुधा समेत ॥
देखि सरूप सकल गोपी जन, रहीं विचारि-विचारि ।
तदपि सूर तरि सकीं न सोभा, रहीं प्रेम पचि हारि ॥

× × ×

स्याम अँग जुवती निरखि भुलानी ।
कोउ निरखति कुंडल की आभा, इतनेहिं माँझ बिकानी ॥
ललित कपोल निरखि कोउ अटकी, सिथिल भई ज्यौं पानी ।
देह-गेह की सुधि नहिं काहूँ, हरषति कोउ पछितानी ॥
कोउ निरखति रही ललित नासिका, यह काहू नहिं जानी ।
कोउ निरखति अधरनि की सोभा, फुरति नहीं मुख बानी ॥

कोउ चकित भई दसन-चमक पर, चकचौंधी अकुलानी।
कोउ निरखति द्युति चिबुक चारु की, सूर तरुनि बितताानी ॥

× × ×

मैं बलि जाउँ स्याम-मुख-छबि पर।
बलि-बलि जाउँ कुटिल कच बिथुरे, बलि भृकुटी लिलाट पर ॥
बलि-बलि जाउँ चारु अवलोकनि, बलि बलि कुंडल-रवि की।
बलि-बलि जाउँ नासिका सुललित, बलिहारी वा छबि की ॥
बलि-बलि जाउँ अरुन अधरनि की, बिद्रुम - बिंब लजावन।
मैं बलि जाउँ दसन चमकनि की, वारौं तड़ितनि सावन ॥
मैं बलि जाउँ ललित ठोड़ी पर, बलि मोतिनि की माल।
सूर निरखि तन - मन बलिहारौं, बलि बलि जसुमति-लाल ॥

× × ×

स्याम-कमल पद-नख की सोभा।
जे नख चंद्र इंद्र-सिर परसे, सिव बिरंचि मन लोभा ॥
जे नख चंद्र सनक मुनि ध्यावत, नहिं पावत भरमाहीं।
ते नख चंद्र प्रगट ब्रज-जुवती, निरखि निरखि हरषाहीं ॥
जे नख चंद्र फनिंद - हृदय तैं, एकौ निमिष न टारत।
जे नख चंद्र महा मुनि नारद, पलक न कहूँ बिसारत ॥
जे नख चंद्र भजन खल नासत, रमा हृदय जे परसति।
सूर स्याम नख-चंद्र बिमल-छबि, गोपी जन मिलि दरसति ॥

× × ×

नैन न मेरे हाथ रहे।
देखत दरस स्याम सुंदर कौ, जल की ढरनि बहे ॥
वह नीचे कौं धावत आतुर, वैसेहि नैन भए।
वह तौ जाइ समात उदधि मैं, ये प्रति अंग रए ॥
वह अगाध कहुँ-वार पार नहिं, येउ सोभा नहिं पार।
लोचन मिले त्रिवेनी ह्वै कै, सूर समुद्र अपार ॥

× × ×

इन नैननि मोहिं बहुत सतायौ।
अब लौं कानि करी मैं सजनी, बहुतै मूँड़ चढ़ायौ ॥
निदरे रहत गहे रिस मोसौं, मोहीं दोष लगायौ।
लूटत आपुन श्री-अँग-सोभा, ज्यौं निधनी धन पायौ ॥

निसिहूँ दिन ये करत अचगरी, मनहिं कहा धौं आयौ ।
सुनहु सूर इनकों प्रतिपालत, आलस नैकु न लायो ॥

× × ×

नैननि सौं झगरौ करिहौं री ।
कहा भयौ जो स्याम-संग हैं, बांह पकरि सम्मुख लरिहौं री ॥
जन्महिं तें प्रतिपालि बड़े किये, दिन-दिन कौ लेखौ करिहौं री ।
रूप-लूट कीन्ही तुम काहैं, अपने बाटे कौ धरिहौं री ॥
एक मातु-पितु भवन एक रहे, मैं काहैं उनकौ डरिहौं री ।
सूर अस जो नहीं देहिगे, उनकैं रँग मैं हूँ ढरिहौं री ॥

× × ×

नैना घूँघट मैं न समात ।
सुन्दर वदन नंद-नंदन कौ, निरखि-निरखि न अघात ॥
अति रस लुब्ध महा मधु लंपट, जानत एक न बात ।
कहा कहौं दरसन-सुख माते, ओट भएं अकुलात ॥
बार बार बरजत हौं हारी, तऊ टेव नहिं जात ।
सूर तनक गिरिधर बिनु देखै, पलक कलप सम जात ॥

× × ×

ये नैना मेरे ढीठ भए री ।
घूँघट-ओट रहत नहिं रोकैं, हरि-मुख देखत लोभि गए री ॥
जउ मैं कोटि जतन करि राखे, पलक-कपाटनि मूँदि लए री ।
तउ ते उमंगि चले दोउ हठ करि, करौ कहा मैं जान दए री ॥
अतिहिं चपल, बरज्यौ नहिं मानत, देखि बदन तन फेरि नए री ।
सूर स्याम सुन्दर-रस अटके, मानहुँ लोभी उहँइ छए री ॥

× × ×

अंखियाँ हरि के हाथ बिकानी ।
मृदु मुसुकानि मोल इनि लीन्ही, यह सुनि सुनि पछितानी ॥
कैसैं रहति रहीं मेरैं बस, अब कछु औरै भांति ।
अब वै लाज मरतिं मोहिं देखत, बैठीं मिलि हरि-पांति ॥
सपने की सी मिलनि करति हैं, कब आवतिं कब जाति ।
सूर मिली ढरि नंद-नंदन कौं, अनत नही पतियाति ॥

× × ×

बूझत स्याम कौन तू गोरी ।
कहाँ रहति, काकी है बेटी, देखी नहीं कहूँ ब्रज खोरी ॥

काहे कौं हम ब्रज-तन आवतिं, खेलति रहतिं आपनी पौरी।
सुनत रहतिं स्रवननि नँद-ढोटा, करत फिरत माखन-दधि-चोरी॥
तुम्हरौ कहा चोरि हम लैहैं, खेलन चलौ संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि, बातनि भुरइ राधिका भोरी॥

× × ×

बड़ौ मंत्र कियौ कुँवर कन्हाई।
बार-बार ले कंठ लगायौ, मुख चूम्यौ दियौ घरहिं पठाई॥
धन्य कोषि वह महरि जसोमति, जहाँ अवतर्यौ यह सुत आई।
ऐसौ चरित तुरतहीं कीन्हौं, कुँवरि हमारी मरी जिवाई॥
मनहीं मन अनुमान कियौ यह, विधिना जोरी भली बनाई।
सूरदास प्रभु बड़े गारुड़ी, ब्रज घर-घर यह धैरु चलाई॥

× × ×

तुम सौं कहा कहौं सुन्दर घन।
या ब्रज मैं उपहास चलत है, सुनि सुनि स्रवन रहति मनहीं मन॥
जा दिन सवनि पछारि, नोइ करि, मोहि दुहि नई धेनु बंसीवन।
तुम गही बाहँ सुभाइ आपनै हौं, चितई हंसि नैकु बदन तन॥
ता दिन तै घर मारग जित तित, करत चवाव सकल गोपीजन।
सूर स्याम अब साँच पारिहौं, यह पतिव्रत तुम सौं नँद-नंदन॥

× × ×

मोसौं कहा दुरावति राधा।
कहाँ मिली नँद-नंदन कौं, जिनि पुरई मन की साधा॥
व्याकुल भई फिरहि अबहीं, काम - बिथा तनु बाधा।
पुलकित रोम रोम गद गद, अब अँग अँग रूप अगाधा॥
नहिं पावत जो रस जोगी जन, जप तप करत समाधा।
सुनहुँ सूर तिहिं रस परिपूरन, दूरि कियौ तनु दाधा॥

× × ×

स्याम कौन कारे की गोरे।
कहाँ रहत काके पै ढोटा, वृद्ध, तरुन की धौं हैं भोरे॥
रहँई रहत कि और गाउँ कहुँ, मैं देखे नाहिं न कहुँ उनको।
कहै नहीं समुझाइ बात यह, मोहिं लगावति हौ तुम जिनकौं॥
कहाँ रहौं मैं, वैं धौं कहँके, तुम मिलवति हो काहँ ऐसी।
सुनहु सूर मोसी भोरी कौं, जोरि जोरि लावति हौ कैसी॥

× × ×

खेलन कौं मैं जाउँ नहीं।
और लरिकिनी घर घर खेलहिं, मोहीं कौं पै कहत तुहीं॥
उनके मातु पिता नहिं कोई, खेलत डोलति जहीं तहीं।
तोसीं महतारी वहि जाइ न, मैं रैहौं तुमहीं विनुहीं॥
कवहूँ मोकौं कछू लगावति, कवहुँ कहति जनि जाहु कही।
सूरदास वातें अनखौहीं, नाहिंन मौ पै जातिं सही॥

× × ×

मनहीं मन रीझति महतारी।
कहा भई जौ वाढ़ि तनक गई, अवहीं तौ मेरी है वारी॥
झूठें हीं यह वात उड़ी है, राधा-कान्ह कहत नर-नारी।
रिस की वात सुता के मुख की, सुनत हँसति मनहीं मन भारी॥
अव लौं नहीं कछू इहिं जान्यौ, खेलत देखि लगावै गारी।
सूरदास जननी उर लावति, मुख चूमति पोंछति रिस टारी॥

× × ×

चितवनि रोके हूँ न रही।
स्याम सुंदर सिंधु-सनमुख, सरित उमंगि वही॥
प्रेम-सलिल प्रवाह भँवरनि, मिति न कवहुँ लही।
लोभ - लहर - कटाच्छ, घूँघट - पट - करार ढही॥
थके पल पथ, नाव धीरज परति नहिंन गही।
मिली सूर सुभाव स्यामहिं, फेरिहू न चही॥

× × ×

राधा परम निर्मल नारि।
कहति हौं मन कर्मना करि, हृदय-दुविधा टारि॥
स्याम कौं इक तुहीं जान्यौ, दुराचारिनि और।
जैसे घट पूरन न डोले, अध भरौ डगडौर॥
धनी धन कवहूँ न प्रगटे, धरै ताहि छपाइ।
तै महानग स्याम पायौ, प्रगटि कैसै जाइ॥
कहति हौं यह वात तोसौं, प्रगट करिहौ नाहिं।
सूर सखी सुजान राधा, परसपर मुसुकाहिं॥

× × ×

राधा स्याम की प्यारी।
कृष्न पति सर्वदा तेरे, तू सदा नारी॥

सुनत बानी सखी-मुख की, जिय भयौ अनुराग।
प्रेम-गदगद, रोम पुलकित, समुझि अपनौ भाग॥
प्रीति परगट कियौ चाहै, वचन बोलि न जाइ।
नंद - नंदन काम - नायक, रहे नैननि छाइ॥
हृदय तैं कहुँ टरत नाहीं, कियौ निहचल वास।
सूर प्रभु रस भरी राधा, दुरत नहीं प्रकास॥

× × ×

जा दिन तैं हरि दृष्टि परे री।
ता दिन तैं मेरे इन नैननि, दुख सुख सब बिसरे री॥
मोहन अंग गुपाल लाल के, प्रेम - पियूष भरे री।
बसे उहाँ मुसुकनि-बाँह ले, रचि रुचि भवन करे री॥
पठवति हौं मन तिनहिं मनावन, निसिदिन रहत अरे री।
ज्यौं ज्यौं जतन करति उलटावति, त्यौं त्यौं उठत खरे री॥
पचिहारी समुझाई ऊँच-निच, पुनि-पुनि पाइ परे री।
सो मुख सूर कहाँ लौ बरनौं, इक टक तैं न टरे री॥

× × ×

स्याम करत हैं मन की चोरी।
कैसे मिलत आनि पहिले ही, कहि-कहि बतियाँ भोरी॥
लोक-लाज की कानि गँवाई, फिरति गुड़ी बस डोरी।
ऐसे ढंग स्याम अब सीख्यौ, चोर भयौ चित कौ री॥
माखन की चोरी सहि लीन्ही, बात रही वह थोरी।
सूर स्याम भयौ निडर तबहिं तै, गोरस लेत अँजोरी॥

× × ×

तुम जानति राधा है छोटी।
चतुराई अँग-अंग भरी है, पूरन-ज्ञान, न बुद्धि की मोटी॥
हमसौं सदा दुराव कियौ इहिं, बात कहै मुख चोटी-पोटी।
कबहुँ स्याम तै नै कुन बिछुरति, किये रहति हमसौ हठ ओटी॥
नँद-नंदन याही के बस हैं, बिवस देखि बेंदी छबि-चोटी।
सूरदास प्रभु वै अति खोटे, यह उनहूँ ते अतिहीं खोटी॥

× × ×

कुल की लाज अकाज कियौ।
तुम बिनु स्याम सुहात नहीं कछु, कहा करौं अति जरत हियौ॥

आपु गुप्त करि राखी मोकौं, मैं आयसु सिर मानि लियौ।
देह-गेह-सुधि रहसि बिसारे, तुम तैं हितु नहिं और बियौ॥
अब मोकौं चरननि तर राखौ, हंसि नँद नँदन अंग छियौ।
सूर स्याम श्रीमुख की बानी, तुम पै प्यारी बसत जियौ॥

× × ×

सुंदर स्याम कमल-दल लोचन।
बिमुख जननि की संगति कौ दुख, कब धौं करिहौ मोचन॥
भवन मोहिं भाठी सौ लागत, मरति सोचहीं सोचन।
ऐसी गति मेरी तुम आगे, करत कहा दिय दोचन॥
धिक वै मातु-पिता, धिक भ्राता, देत रहत मोहिं खोंचन।
सूर स्याम मन तुमहिं लगान्यौ, हरद - चून-रँग-रोचन॥

× × ×

कुल की कानि कहाँ लगि करिहौं।
तुम आगै मैं कहौं जु साँची, अब काहू नहिं डरिहौं॥
लोग कुटुंब जग केजे कहियत, पेला सबहिं निदरिहौं।
अब यह दुख सहि जात न मोपै, बिमुख बचन सुनि मरिहौं॥
आपु सखी तौ सब नीके हैं, उनके सुख कह सरिहौं।
सूरदास प्रभु चतुर-सिरोमनि, अबकै हौं कछु लरिहौं॥

× × ×

राधा डर डरति घर आई।
देखत हीं कीरति महतारी, हरषि कुँवरि उर लाई॥
धीरज भयौ सुता-माता जिय, दूरि गयौ तनु-सोच।
मेरी कौं मैं काहैं त्रासी, कहा कियौ यह पोच॥
लै री मैया हार मोतिसारी, जा कारन मोहिं त्रासी।
सूर राधिका के गुन ऐसे, मिलि आई अविनासी॥

× × ×

मैं अपनी सी बहुत करी री।
मोसौं कहा कहति तू माई, मन कै सँग मैं बहुत लरी री॥
राखौं हटकि उतहिं कौ धावत, वाकी ऐसियै परनि परी री।
मोसौं बैर करै रति उनसौं, मोकौं राख्यौ द्वार खरी री॥
अजहूँ मान करौं, मन पाऊँ, यह कहि इत-उत चितै डरी री।
सुनहुँ सूर पाँचननि मत एकै, मैं ही मोही रही परी री॥

× × ×

स्याम भए राधा बस ऐसै।
चातक स्वाति, चकोर चंद ज्यौं चक्रवाक रवि जैसै॥
नाद कुरंग, मीन जल की गति, ज्यौं तनु कै बस छाया।
इकटक नैन अंग-छबि मोहे, थकित भए पति जाया॥
उठै उठत, बैठै बैठत हैं, चलैं चलत सुधि नाहीं।
सूरदास बड़भागिनि राधा, समुझि मनहि मुसुकाहीं॥

× × ×

निरखि पिय-रूप तिय चकित भारी।
किधौं वै पुरुष मैं नारि, की वै नारि, मैं ही हौं तन सुधि बिसारी॥
आपु तन चितै सिर मुकुट, कुंडल स्रवन, अधर मुरली, मालबन बिराजै।
उतहिं पिय रूप सिर माँग बेनी सुभग, भाल बेंदी-बिंदु महा छाजै॥
नागरी हठ तजौ, कृपा करि मोहिं भजौ, परी कह चूक सो कहौ प्यारी।
सूर नागरी प्रभु बिरह रस मगन भई, देखि छबि हँसत गिरिराज धारी॥

× × ×

स्यामा स्याम कुंज बन आवत।
भुज भुज-कंठ परस्पर दीन्हे, यह छबि उनहीं पावत॥
इततै चंद्रावली - जाति ब्रज, उततै ये दोउ आए।
दूरिहि तै चितवति उनहीं तन, इक टक नैन लगाए॥
एक राधिका दूसरि को है, याकौं नहि पहिचानौं।
ब्रज वृषभानु-पुरा जुवतिनि कौं, इक-इक करि मैं जानौं॥
यह आई कहुँ और गाँव तै, छबि साँवरी सलोनी।
सूर आजु यह नई बतानी, एकौ अँग न बिलोनी॥

× × ×

इनकौं ब्रजहीं यों न बुलावहु।
की वृषभानु पुरा, की गोकुल, निकटहिं आनि बसावहु॥
येऊ नवल, नवल तुमहूँ हौ, मोहन कौ दोउ भावहु।
मोकौ देखि कियौ अति घूँघट, काहैं न लाज छुड़ावहु॥
यह अचरज देख्यौ नहिं कबहूँ, जुवतिहिं जुवति दुरावहु।
सूर सखी राधा सौं पुनि पुनि, कहति जु हमहिं मिलावहु॥

× × ×

ऐसी कुँवरि कहाँ तुम पाई।
राधा हूँ तै नख-सिख सुंदरि, अब लौं कहाँ दुराई॥

काकी नारि, कौन की बेटी, कौन गाउँ तै आई।
देखी सुनी न ब्रज, वृंदावन, सुधि-बुधि हरति पराई॥
धन्य सुहाग भाग याकौ, यह जुवतिनि की मनभाई।
सूरदास प्रभु हरषि मिले हंसि, लै उर कंठ लगाई॥

× × ×

अविगत गति कछु कहत न आवै।
ज्यौं गूँगें मीठे फल कौ रस अंतरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सु निरंतर अमित तोष उपजावै।
मन-बानी कौं अगम-अगोचर, सो जानै जो पावै।
रूप-रेख-गुन-जाति जुगति-बिनु निरालंब कित धावै।
सब विधि अगम विचारहिं तातैं सूर सगुन-पद गावै॥

× × ×

चलौ किन मानिनि कुंज-कुटीर।
तुव बिनु कुँवर कोटि बनिता तजि, सहत मदन पीर॥
गदगद स्वर संभ्रम अति आतुर, स्रवत सुलोचन नीर।
क्वासि क्वासि वृषभानु नंदनी, बिलपत विपिन अधीर॥
बंसी विसिष, माल व्यालावलि, पंचानन पिक कीर।
मलयज गरल, हुतासन मारुत, साखामृग रिपु चीर॥
हिय मैं हरषि प्रेम अति आतुर, चतुर चली पिय तीर।
सुनि भयभीत बज्र के पिंजर, सर सुरति - रनधीर॥

× × ×

स्याम नारि कैं बिरह भरे।
कबहुँक बैठत कुँज द्रुमनि तर, कबहुँक रहत खरे॥
कबहुँ तन की सुरति बिसारत, कबहुँक तनु सुधि आवत।
तब नागरि के गुनहि विचारत, तेई गुन गनि गावत॥
कहूँ मुकुट, कहुँ मुरलि रही गिरि, कहूँ कटि पीत पिछौरी।
सूर स्याम ऐसी गति भीतर, आई दूतिका दौरी॥

× × ×

नैकु निकुज कृपा करि आइयै।
अति रिस कृस ह्वै रही किसोरी, करि मनुहारी मनाइयै॥
कर कपोल अंतर नहिं पावत, अति उसास तन ताइयै।
छूटे चिहुर बदन कुम्हिलानौ, सुहथ सँवारि बनाइयै॥

इतनौ कहा गांठि कौ लागत, जौ बातनि सुख पाइयै।
रूठेहिं आदर देत सयाने, यहै सूर जस गाइयै॥

× × ×

रहि री मानिनि कान न कीजै।
यह जोवन अँजुरी कौ जल है, ज्यौं गुपाल मांगै त्यौं दीजै॥
छिनु छिनु घटति, बढ़ति नहिं रजनी, ज्यों ज्यों कलाचंद्र की छीजै।
पूरब पुन्य सुकृत फल तेरौ, काहैं न रूप नैन भरि पीजै॥
सौंह करति तेरे पाँइनि की, ऐसी जियनी दसौ दिन जीजै।
सूर सु जीवन सफल जगत कौ, बैरी बांधि बिवस करि लीजै॥

× × ×

यह ऋतु रूसिवे की नाहीं।
बरषत मेघ मेदिनी कै हित, प्रीतम हरषि मिलाहीं॥
जेती बेलि ग्रीष्म ऋतु डाहीं, ते तरवर · लपटाहीं।
जे जल बिनु सरिता ते पूरन, मिलन समुद्रहिं जाहीं॥
जोवन धन है दिवस चारि कौ, ज्यों बदरी की छाहीं॥
मैं दंपति-रस-रीति कही है, समुझि चतुर मन माहीं।
यह चित धरि री सखी राधिका, दै दूती कौं बाहीं॥
सरद उठि चली री प्यारी, मेरैं सँग पिय पाहीं॥

× × ×

तोहि किन रूठन सिखई प्यारी।
नवल वैस नव नागरि स्यामा, वे नागर गिरिधारी॥
सिगरी रैनि मनावति बीती, हा हा करि हौं हारी।
एते पर हठ छाँड़ति नाहीं, तू बृषभानु - दुलारी॥
सूरदास-समय-ससि-दरस समर सर, लागे उन तन भारी।
मेटहु त्रास दिखाइ वदन-विधु, सूर स्याम हितकारी॥

× × ×

हरि-मुख राधा-राधा बानी।
धरिनी परे अचेत नहीं सुधि, सखी देखि अकुलानी॥
वासर गयौ, रैनि इक बीती, बिनु भोजन बिनु पानी।
बाहँ पकरि तब सखिनि जगायौ, धनि-धनि सारँगपानी॥
ह्याँ तुम बिबस गए हौ ऐसे, ह्वाँ तौ वे बिवसानी।
सूर बने दोउ नारि पुरुष तुम, दुहुँ की अकथ कहानी॥

× × ×

झूलत स्याम स्यामा संग।
निरखि दंपति अंग सोभा, लजत कोटि अनंग॥
मंद त्रिविध समीर सीतल, अंग अंग सुगंध।
मचत उड़त सुबास सँग, मन रहे मधुकर बंध॥
तैसियै जमुना सुभग कहँ, रच्यौ रंग हिंडोल।
तैसियै बृज-बधू बनि, हरि चितै लोचन कोर॥
तैसोई बृंदा-विपिन-घन-कुँज-द्वार बिहार।
बिपुल गोपी, विपुल बन गृह, रवन नंदकुमार॥
नित्य लीला, नित्य आनँद, नित्य मंगल गान।
सूर सुर मुनि मुखनि अस्तुति, धन्य गोपी कान्ह॥

× × ×

हरि सँग खेलति हैं सब फाग।
इहिं मिस करति प्रगट गोपी, उर-अंतर कौ अनुराग॥
सारी पहिरि सुरँग, कसि कंचुकि, काजर दै-दै नैन।
बनि-बनि निकसि-निकसि भई ठाढ़ी, सुनि माधौ के बैन॥
डफ, बाँसुरी रुंज अरु महुअरि, बाजत ताल मृदंग।
अति आनंद मनोहर बानी, गावत उटत तरंग॥
एक कोध गोबिंद ग्वाल सब, एक कोध ब्रज-नारि।
छांड़ि सकुच सब देतिं परस्पर, अपनी भाई गारि॥
मिलि दस पाँच अली चली कृष्नहिं, गहि लावतिं अचकाइ।
भरि अरगजा अबीर कनक-घट, देतिं सीस तैं नाइ॥
छिरकति सखी कुमकुमा केसरि, भुरकतिं बंदन धूरि।
सोभित है तनु साँझ-समै-घन, आए हैं मनु पूरि॥
दसहूँ दिसा भयौ परिपूरन, सूर सुरंग प्रमोद।
सुर-बिमान कौतूहल भूले, निरखत स्याम-बिनोद॥

× × ×

आजु रैनि नहिं नींद परी।
जागत गिनत गगन के तारे, रसना रटत गोविंद हरी॥
वह चितवनि, वह रथ की बैठनि, जब अक्रूर की बाँह गही।
चितवति रही ठगीसी ठाढ़ी, कहि न सकति कछु काम दही॥
इते मान ब्याकुल भइ सजनी, आरजपंथहुँ तैं बिडरी।
सूरदास प्रभु जहाँ सिधारे, कितिक दूर मथुरा नगरी॥

× × ×

जसुदा कान्ह कान्ह कै बूझै।
फूटि न गईं तुम्हारी चारौ, कैसैं मारग सूझै॥
इक तौ जरी जात विनु देखै, अब तुम दीन्हौ फूँकि।
यह छतिया मेरे कान्ह कुँवर विनु, फटि न भई द्वै टूक॥
धिक तुम धिक ये चरन अहौ पति, अध बोलत उठि धाए।
सूर स्याम बिछुरन की हम पै, दैन बधाई आए॥

× × ×

नंद हरि तुमसौं कहा कह्यौ।
सुनि सुनि निठुर वचन मोहन के, कैसे हृदय रह्यौ॥
छाड़ि स्नेह चले मंदिर कत, दौरि न चरन गह्यौ।
दरकि न गई वज्र की छाती, कत यह सूल सह्यौ॥
सुरति करत मोहन की बातैं, नैननि नीर बह्यौ।
सुधि न रही अति गलित गात भयौ, मनु डसि गयौ अह्यौ॥
उन्हैं छांड़ि गोकुल कत आए, चाखन दूध दह्यौ।
तजे न प्रान सूर दसरथ लौं, हुतौ जन्म बिवह्यौ॥

× × ×

कहाँ रह्यौ मेरौ मन-मोहन।
वह मूरति जिय तैं नहिं बिसरति, अंग अंग सब सोहन॥
कान्ह बिना गौवैं सब व्याकुल, को ल्यावै भरि दोहन।
माखन खात खवावत ग्वालनि, सखा लिए सब गोहन॥
जब वै लीला सुरति करति हौ, चित चाहत उठि जोहन।
सूरदास प्रभु के बिछुरे तैं, मरियत है अति छोहन॥

× × ×

वै कह जानैं पीर पराई।
सुंदर स्याम कमल-दल लोचन, हरि हलधर के भाई॥
मुख मुरली सिर मोर पखौवा, वन बन धेनु चराई।
जे जमुना जल रंग रंगे हैं, अजहुँ न तजत कराई॥
वहई देखि कूवरी भूले, हम सब गईं बिसराई।
सूरज चातक बूँद भई है, हेरत रहे हिराई॥

× × ×

लै आवहु गोकुल गोपालहिं।
पाइंनि परि क्यौं हूँ विनती करि, छल बल बाहु बिसालहि॥
अब की बार नैकु दिखरावहु, नंद आपने लालहिं।
गाइनि गनत ग्वार गोसुत सँग, सिखवत बैन रसालहिं॥

जद्यपि महाराज सुख संपति, कौन गनै मनि लालहिं।
तदपि सूर वै छिन न तजत हैं, वा घुँघुची की मालहिं॥

× × ×

करि गए थोरे दिन की प्रीति।
कहँ वह प्रीति कहाँ यह बिछुरनि, कहँ मधुबन की रीति॥
अब की बेर मिलौ मनमोहन, बहुत भई बिपरीति।
कैसे प्रान रहत दरसन बिनु, मनहु गए जुग बीति॥
कृपा करहु गिरिधर हम ऊपर, प्रेम रह्यौ तन जीति।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु, भई भुस पर की भीति॥

× × ×

प्रीति करि दीन्ही गरैं छुरी।
जैसे बधिक चुगाइ कपट-कन, पाछैं करत बुरी॥
मुरली मधुर चेप कौंपा करि, मोर चंद्र फँदवारि।
बंक बिलोकनि लगी, लोभ बस, सकी न पंख पसारि॥
तरफत छांड़ि गए मधुबन कौं, बहुरि न कीन्ही सार।
सूरदास प्रभु संग कल्पतरु, उलटि न बैठी डार॥

× × ×

नाथ अनाथनि की सुधि लीजै।
गोपी, ग्वाल, गाइ, गोसुत सब, दीन मलीन दिनहिं दिन छीजैं॥
नैननि जलधारा बाढ़ी अति, बूड़त ब्रज किन करि गहि लीजै।
इतनी बिनती सुनहु हमारी, बारक हूँ पतिया लिखि दीजै॥
चरन कमल दरसन नव नवका, करुनासिधु जगत जस लीजै।
सूरदास प्रभु आस मिलन की, एक बार आँविन ब्रज लीजै॥

× × ×

अब वै बातें उलटि गईं।
जिन बातनि लागत सुख आली, तेऊ दुसह भईं॥
रजनी स्याम स्याम सुंदर सँग, अह पावस की गरजनि।
सुख समूह की अवधि माधुरी, पिय रस बस की तरजनि॥
मोर पुकार गुहार कोकिला, अलि गुंजार सुहाई।
अब लागति पुकार दादुर सम, बिनही कुँवर कन्हाई॥
चंदन चंद समीर अगिन सम, तनहिं देत दव लाई।
कालिंदी अरु कमल कुसुम सब, दरसन ही दुखदाई॥

सरद बसंत सिसिर अरु ग्रीषम, हिम-रितु की अधिकाई।
पावस जरैं सूर के प्रभु बिनु, तरफत रैनि बिहाई॥

× × ×

मधुबन तुम क्यों रहत हरे।
बिरह वियोग स्याम सुंदर के, ठाढ़े क्यों न जरे॥
मोहन बेनु बजावत तुम तर, साखा टेकि खरे।
मोहे थावर अरु जड़ जंगम, मुनि जन ध्यान टरे॥
वह चितवनि तू मन न धरत है, फिरि फिरि पुहुप धरे।
सूरदास प्रभु बिरह दवानल, नख सिख लौं न जरे॥

× × ×

बहुरौ देखिबौ इहि भांति।
असन बाँटत खात बैठे, बालकन की पांति॥
एक दिन नवनीत चोरत, हौं रही दुरि जाइ।
निरखि मम छाया भजे, मैं दौरि पकरे धाइ॥
पोंछि कर मुख लई कनियाँ, तब गई रिसि भागि।
वह सुरति जिय जाति नाहीं, रहे छाती लागि॥
जिन घरनि वह सुख बिलोक्यौ, ते लगत अब खान।
सूर बिनु ब्रजनाथ देखे, रहत पापी प्रान॥

× × ×

फिरि ब्रज बसौ गोकुलनाथ।
अब न तुमहिं जगाइ पठवैं, गोधननि के साथ॥
बरजै न माखन खात कबहूँ, दह्यौ देत लुठाइ।
अब न देहिं उराहनौ, नँद-घरनि आगैं जाइ॥
दौरि दावरि देहि नहिं, लकुटी जसोदा पानि।
चोरी न देहिं उघारि कै, औगुनन कहिहैं आनि॥
कहिहैं न चरननि देन जावक, गुहन बेनी फूल।
कहिहैं न करन सिंगार कबहूँ, बसन जमुना कूल॥
कहिहैं न कबहूँ मान हम, हठिहैं न माँगत दान।
कहिहैं न मृदु मुरली बजावन, करन तुमसौं गान॥
देहु दरसन नंद - नंदन, मिलन की जिय आस।
सूर हरि के रूप कारन, मरत लोचन प्यास॥

× × ×

बारक जाइयौ मिलि माधौ ।
को जानै तन छूटि जाइगौ, सूल रहै जिय साधौ ॥
पहुँनहु नंद बबा के आवहु, देखि लेउँ पल आधौ ।
मिलेँ ही मैं विपरीत करी बिधि, होत दरस कौ बाधौ ॥
सो सुखसिव सनकादि न पावत, जो सुख गोपिन लाधौ ।
सूरदास राधा बिलपति है, हरि कौ रूप अगाधौ ॥

× × ×

सखी इन नैननि तैं घन हारे ।
बिनहीं रितु बरषत निसि बासर, सदा मलिन दोउ तारे ॥
ऊरध स्वास समीर तेज अति, सुख अनेक द्रुम टारे ।
बदन सदन करि बसे बचन खग, दुख पावस के मारे ॥
दुरि दुरि बूँद परत कंचुकि पर, मिलि अंजन सौं कारे ।
मानौ परनकुटी सिव कीन्ही, बिबि मूरति धरि न्यारे ॥
घुमरि घुमरि बरषत जल छाँड़त, डर लागत अँधियारे ।
बूड़त ब्रजहिं सूर को राखै, बिनु गिरिवरधर प्यारे ॥

× × ×

निसि दिन बरषत नैन हमारे ।
सदा रहति बरषा रितु हम पर, जब ते स्याम सिधारे ॥
दृग अंजन न रहत निसि बासर, कर कपोल भए कारे ।
कंचुकि-पट सूखत नहिं कबहूँ, उर बिच बहत पनारे ॥
आँसू सलिल सबै भइ काया, पल न जात रिस टारे ।
सूरदास प्रभु यहै परेखौ, गोकुल काहैं बिसारे ॥

× × ×

हरि दरसन को तरसति अँखियाँ ।
झाँकति झखति झरोखा बैठी, कर मीड़ति ज्यौं मखियाँ ॥
बिछुरीं बदन-सुधानिधि-रस तैं, लागति नहीं पल पंखियाँ ।
इकटक चितवति उड़ि न सकति जनु, थकित भईं लखि सखियाँ ॥
बार-बार सिर धुनतिं बिसूरतिं, बिरह-ग्राह जनु भखियाँ ।
सूर सुरूप मिले तै जीवहिं, काट किनारे नखियाँ ॥

× × ×

(मेरे) नैना बिरह की बेलि बई ।
सींचत नैन-नीर के सजनी, मूल पताल गई ॥
बिगसित लता सुभाई आपने, छाया सघन भई ।
अब कैसे निरवारौं सजनी, सब तन पसरि छई ॥

को जानै काहू के जिय की, छिन छिन होत नई।
सूरदास स्वामी के बिछुरे, लागी प्रेम जई॥

× × ×

हो, ता दिन कजरा मैं दैहौं।
जा दिन नंदनँदन के नैननि, अपने नैन मिलैहौं॥
सुनि री सखी यहै जिय मेरे, भूलि न और चितैहौं।
अब हठ सूर यहै व्रत मेरौ, कौकिर खै मरि जैहौं॥

× × ×

लिखि नहिं पठवत हैं द्वै बोल।
द्वै कोड़ी के कागद मसि कौ, लागत है बहु मोल?
हम इहि पार, स्याम पैले तट, बीच बिरह कौ जोर।
सूरदास प्रभु हमरे मिलन कौ, हिरदै कियौ कठोर॥

× × ×

पिय बिनु नागिनि कारी रात।
जौ कहुँ जामिनि उवति जुन्हैया, डसि उलटी ह्वै जात॥
जंत्र न फुरत मंत्र नहिं लागत, प्रीति सिरानी जात।
सूर स्याम बिनु बिकल बिरहिनी, मुरि-मुरि लहरैं खात॥

× × ×

मोकौं माई जमुना जम ह्वै रही।
कैसे मिलौं स्यामसुंदर कौं, बैरिनि बीच बही॥
कितिक बीच मथुरा अरु गोकुल, आवत हरि जु नही।
हम अबला कछु मरम न जान्यौ, चलत न फेंट गही॥
अब पछिताति प्रान दुख पावत, जाति न बात कही।
सूरदास प्रभु सुमिरि-सुमिरि गुन, दिन-दिन सूल सही॥

× × ×

प्रीति करि काहू सुख न लह्यौ।
प्रीति पतंग करी पावक सौं, आपै प्रान दह्यौ॥
अलि-सुत प्रीति करी जल सुत सौं, संपुट माँज गह्यौ।
सारंग प्रीति करी जु नाद सौं, सन्मुख बान सह्यौ॥
हम जौ प्रीति करी माधव सौं, चलत न कछू कह्यौ।
सूरदास प्रभु बिनु दुख पावत, नैननि नीर बह्यौ॥

× × ×

प्रीति तौ मरिबौऊ न बिचारै।
निरखि पतंग ज्योति-पावक ज्यो, जरत न आपु सँभारै॥

प्रीति कुरंग नाद मन मोहित, बधिक निकट ह्वै मारै।
प्रीति परेवा उड़त गगन तैं, गिरत न आपु सँभारै॥
सावन मास पपीहा बोलत, पिय पिय करि जु पुकारै।
सूरदास प्रभु दरसन कारन, ऐसी भांति विचारै॥

× × ×

जनि कोउ काहू कैं बस होहि।
ज्यों चकई दिनकर बस डोलत, मोहि फिरावत मोहि॥
हम तौ रीझि लट्टू भई लालन, महा प्रेम तिय जानि।
बंधन अवधि भ्रमति निसि-बासर, को सुरझावत आनि॥
उरझे संग अंग अंगनि प्रति, विरह बेलि की नाईं।
मुकुलित कुसुम नैन निद्रा तजि, रूप सुधा सियराई॥
अति आधीन हीन-मति ब्याकुल, कहँ लौं कहौं बनाई।
ऐसी प्रीति-रीति रचना पर, सूरदास बलि जाई॥

× × ×

ये दिन रूसिबे के नाहीं।
कारी घटा पौन झकझोरै, लता तरुन लपटाहीं॥
दादुर मोर चकोर मधुप पिक, बोलत अंमृत बानी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, बैरिन रितु नियरानी॥

× × ×

बहुरि हरि आवहिंगे किहि काम।
रितु वसंत अरु ग्रीषम बीते, बादर आए स्याम॥
छिन मंदिर छिन द्वारैं ठाढ़ी, यौं सूखति है घाम।
तारे गनत गगन के सजनी, बीतैं चारौ जाम॥
औरौ कथा सबै बिसराईं, लेत तुम्हारौ नाम।
सूर स्याम ता दिन तैं बिछुरे, अस्थि रहे कै चाम॥

× × ×

किधौं घन गरजत नहिं उन देसनि।
किधौं हरि हरषि इंद्र हठि बरजे, दादुर खाए सेषनि॥
किधौं उहिं देस बगनि मग छाँड़े, धरनि न बूँद प्रवेसनि
चातक मोर कोकिला उहिं बन, बधिकनि बधे बिसेषनि॥
किधौं उहिं देस बाल नहिं झूलतिं, गावतिं सखि न सुदेसनि।
सूरदास - प्रभु पथिक न चलहीं, कासौं कहौं संदेसनि॥

× × ×

आजु घन स्याम की अनुहारि।
आए उनइ साँवरे सजनी, देखि रूप की आरि॥
इंद्र धनुष मनु पीत वसन छबि, दामिनि दसन विचारि।
जनु बगपाँति माल मोतिनि की, चितवत चित्त निहारि॥
गरजत गगन गिरा गोबिंद मनु, सुनत नयन भरे वारि।
सूरदास गुन सुमिरि स्याम के, विकल भईं ब्रजनारि॥

× × ×

हमारे माई मोरवा बैर परे।
घन गरजत बरज्यौ नहिं मानत, त्यों त्यों रटत खरे॥
करि करि प्रगट पंख हरि इनके, लै लै सीस धरे।
याही तैं न वदत विरहिनि कौं, मोहन ढीठ करे॥
को जानै काहे तैं सजनी, हमसौं रहत अरे।
सूरदास परदेस बसे हरि, ये बन तैं न टरे॥

× × ×

सखी री चातक मोहिं जियावत।
जैसेहिं रैनि रटति हौं पिय पिय, तैसेहिं वह पुनि गावत॥
अतिहिं सुकंठ, दाह प्रीतम कैं, तारू जीभ न लावत।
आपुन पियत सुधा-रस अमृत, बोलि विरहिनी प्यावत॥
यह पंछी जु सहाइ न होतौ, प्रान महा दुख पावत।
जीवन सुफल सूर ताही कौ, काज पराए आवत॥

× × ×

कोकिल हरि कौ बोल सुनाउ।
मधुबन तैं उपटारि स्याम कौं, इहिं ब्रज कौ लै आउ॥
जा जस कारन देत सयाने, तन मन धन सब साज।
सुजस विकात वचन के बदलैं, क्यों न बिसाहतु आज॥
कीजै कछु उपकार परायौ, इहै सयानो काज:
सूरदास पुनि कहँ यह अवसर, बिनु बसंत रितुराज।

× × ×

माई मोकौ चंद लग्यौ दुख देन।
कहँ वै स्याम कहाँ वै बतियाँ, कहँ वै सुख की रैन।
तारे गनत गनत हैाँ हारी, टपकत लागे नैन
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, विरहिनि कौं नहिं चैन॥

× × ×

अब या तनहिं राखि कह कीजे।
सुनि री सखी स्याम सुंदर बिनु, बांटि विषम विष पीजे॥
कै गिरिऐ गिरि चढ़ि सुनि सजनी, सीस संकरहि दीजे।
कै दहिऐ दारुन दावानल, जाइ जमुन धंसि लीजे॥
दुसह वियोग बिरह माधौ के, को दिन ही दिन छीजे।
सूर स्याम प्रीतम बिनु राधे, सोचि सोचि कर मींजे॥

× × ×

सबै सुख ले जु गए ब्रजनाथ।
बिलखि बदन चितवतिं मधुबन तन, इन न गईं उठि साथ॥
वह मूरनि चित तै बिसरति नहिं, देखि साँवरे गात।
मदन गोपाल ठगौरी मेली, कहत न आवे बात॥
नंद-नँदन जु बिदेस गवन कियौ, बैसी मींजतिं हाथ।
सूरदास प्रभु तुम्हरै बिछुरे, हम सब भईं अनाथ॥

× × ×

कबहुँ सुधि करत गुपाल हमारी।
पूछत पिता नंद ऊधौ सौं, अरु जसुदा महतारी॥
बहुतै चूक परी अनजानत, कहा अबकैं पछिताने।
बासुदेव घर भीतर आए, मैं अहीर करि जाने॥
पहिलै गर्ग कह्यौ हुतौ हमसौं, संग दुःख गयौ भूल।
सूरदास स्वामी के बिछुरैं, राति दिवस भयौ सूल॥

× × ×

ऊधौ कहा करैं लै पाती।
जौ लौं मदनगुपाल न देखैं, बिरह जरावत छाती॥
निमिष निमिष मोहि बिसरत नाहीं सरद सुहाइ राती।
पीर हमारी जानत नाहीं, तुम हौ स्याम सँघाती॥
यह पाती लै जाहु मधुपुरी, जहँ वे बसैं सुजाती।
मन जु हमारे उहाँ लै गए, काम कठिन सर घाती॥
सूरदास प्रभु कहा चहत हैं, कोटिक बात सुहाती।
एक बेर मुख बहुरि दिखावहु, रहैं चरन रज-राती॥

× × ×

इहि अंतर मधुकर इक आयौ।
निज स्वभाव अनुसार निकट ह्वै, संदर सब्द सुनायौ॥

पूछन लागीं ताहि गोपिका, कुबिजा तोहिं पठायौ।
कीधौं सूर स्याम सुंदर कौ, हमें संदेसौ लायौ॥
× × ×

(मधुप तुम) कहौ कहाँ तैं आए हौ।
जानति हौं अनुमान आपनै, तुम जदुनाथ पठाए हौ॥
वैसेइ बसन, बरन तन सुंदर, वेइ भूषन सजि ल्याए हौ।
लै सरवसु सँग स्याम सिधारे, अब का पर पहिराए हौ॥
अहो मधुप एकै मन सबकौ, सु तौ उहाँ लै छाए हौ।
अब यह कौन सयान बहुरि ब्रज, ता कारन उठि धाए हौ॥
मधुवन की मानिनी मनोहर, तहीं जात जहँ भाए हौ।
सूर जहाँ लौं स्याम गात हैं, जानि भले करि पाए हौ॥
× × ×

रहु रे मधुकर मधु मतवारे।
कौन काज या निरगुन सौं, चिर जीवहु कान्ह हमारे॥
लोटत पीत पराग कीच मैं, बीच न अंग सँम्हारे।
बारंबार सरक मदिरा की, अपरस रटत उघारे॥
तुम जानत हौ वैसी ग्वारिनि, जैसे कुसुम तिहारे।
घरी पहर सबहिनि बिरमावत, जेते आवत कारे॥
सुंदर बदन कमल-दल लोचन, जसुमति नंद-दुलारे।
तन मन सूर अरपि रहीं स्यामहि, कापै लेहिं उधारे॥
× × ×

मधुकर हम न होहिं वे बेलि।
जिन भजि तजि तुम फिरत और रंग, करन कुसुम-रस केलि॥
बारे तैं वर बारि बढ़ी हैं, अरु पोषी पिय पानि।
बिनु पिय परस प्रात उठि फूलत, होति सदा हित हानि॥
ये बेली बिरहीं बृंदाबन, उरझीं स्याम तमाल।
प्रेम-पुहुप-रस-बास हमारे, बिलसत मधुप गोपाल।
जोग समीर धीर नहिं डोलतिं, रूप डार दृढ़ लागीं।
सूर पराग न तजतिं हिए तैं, श्री गुपाल अनुरागीं॥
× × ×

प्रकृति जो जाकै अंग परी।
स्वान पूँछ कोउ कोटिक लागै, सूधी कहुँ न करी॥
जैसे काग भच्छ नहिं छाँड़ै, जनमत जौन घरी।
धोए रंग जात नहिं कैसेहुँ, ज्यौं कारी कमरी॥

ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत, ऐसी धरनि धरी।
सूर होइ सो होइ सोच नहिं, तैसेइ एऊ री॥

× × ×

ऊधौ हरि गुन हम चकडोर।
गुन सों ज्यों भावै त्यों फेरौ, यहै बात कौ ओर॥
पैड़ पैड़ चलियै तो चलियै, ऊबट रपटै पाइँ।
चकडोरी की रीति यहै फिरि, गुन हीं सौं लपटाइ॥
सूर सहज गुन ग्रंथि हमारैं, दई स्याम उर माहिं।
हरि के हाथ परै तौ छूटै, और जतन कछु नाहिं॥

× × ×

अंखियाँ हरि दरसन की प्यासी।
देख्यौ चाहति कमलनैन कौं, निसि-दिन रहति उदासी॥
आए ऊधौ फिरि गए आँगन, डारि गए गर फाँसी।
केसरि तिलक मोतिनि की माला, बृंदावन के वासी॥
काहू के मन की कोउ जानत, लोगनि के मन हाँसी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं, करवत लैहौं कासी॥

× × ×

जब तें सुंदर बदन निहार्यौ।
ता दिनतें मधुकर मन अटक्यौ, बहुत करी निकरै न निकार्यौ॥
मातु, पिता, पति, बंधु, सुजन नहिं, तिनहूँ कौ कहिबौ सिर धार्यौ।
रही न लोक लाज मुख निरखत, दुसह क्रोध फीकौ करि डार्यौ॥
ह्वैबौ होइ सु होइ कर्मबस, अब जी कौ सब सोच निवार्यौ।
दासी भई जु सूरदास प्रभु, भलौ पोच अपनौ न विचार्यौ।

× × ×

ऊधौ अंखियाँ अति अनुरागी।
इकटक मग जोवतिं अरु रोवतिं, भूलेहुँ पलक न लागी॥
बिनु पावस पावस करि राखी, देखत हौ बिदमान।
अब धौं कहा कियौ चाहत हौ, छाँड़ौ निरगुन ज्ञान॥
तुम हौ सखा स्याम सुंदर के, जानत सकल सुभाइ।
जैसे मिलैं सूर के स्वामी, सोई करहु उपाइ॥

× × ×

आए जोग सिखावन पांड़े।
परमारथी पुराननि लादे, ज्यों बनजारे टांड़े॥

हमरे गति-पति कमल-नयन की, जोग सिखैं ते रांड़े।
कहौ मधुप कैसे समाहिंगे, एक म्यान दो खांड़े॥
कहु षट्पद कैसें खैयतु है, हाथिनि कैं सँग गांड़े।
काकी भूख गई बयारि भषि, बिना दूध घृत मांड़े॥
काहे को झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाड़े।
सूरदास तीनौ नहिं उपजत, धनिया, धान कुम्हाड़े॥

× × ×

हमकौ हरि की कथा सुनाउ।
ये आपनी ज्ञान गाथा अलि, मथुरा ही लै जाउ॥
नागरि नारि भलैं समझैंगी, तेरौ बचन बनाउ।
पा लागौं ऐसी इन बातनि, उनही जाइ रिझाउ॥
जौ सुचि सखा स्याम सुंदर कौ, अरु जिय मैं सति भाउ।
तौ बारक आतुर इन नैननि, हरि मुख आनि दिखाउ॥
जौ कोउ कोटि करै कैसिहुँ विधि, बल विद्या व्यवसाउ।
तउ सुनि सूर मीन कौं जल बिनु, नाहिं न और उपाउ॥

× × ×

ऊधौ तुम ब्रज की दसा विचारौ।
ता पाछै यह सिद्धि आपनी, जोग कथा विस्तारौ॥
जा कारन तुम पठए माधौ, सो सोचौ जिय माहीं।
केतिक बीच विरह परमारथ, जानत हौ किधौं नाहीं॥
तुम परवीन चतुर कहियत हौ, संतत निकट रहत हौ।
जल बूड़त अवलंब फेन कौ, फिरि फिरि कहा कहत हौ॥
वह मुसकान मनोहर चितवनि, कैसे उर तैं टारौं।
जोग जुक्ति अरु मुक्ति परम निधि, वा मुरली पर वारौं॥
जिहिं उर कमल-नयन जु बसत हैं, तिहिं निरगुन क्यौं आवै।
सूरदास सो भजन बहाऊँ, जाहि दूसरौ भावै॥

× × ×

ऊधौ हरि काहे के अंतरजामी।
अजहुँ न आइ मिलत इहँ अवसर, अवधि बतावत लामी॥
अपनी चोप आइ उड़ि बैठत, अलि ज्यौं रस के कामी।
तिनकौ कौन परेखौ कीजौ, जे हैं गरुड़ के गामी॥
आई उघरि प्रीति कलई सी, जैसी खाटी आमी।
सूर इते पर अनखनि मरियत, ऊधौ पीवत मामी॥

× × ×

निरगुन कौन देस कौ बासी ?
मधुकर कहि समुझाइ सौंह दे, बूझतिं साँच न हाँसी ॥
को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, को दासी ।
कैसे बरन, भेष है कैसौ, किहिं रस मैं अभिलाषी ॥
पावैगौ पुनि कियौ आपनौ, जो रे करैगौ गाँसी ।
सुनत मौन ह्वै रह्यौ बावरौ, सूर सबै मति नासी ॥
× × ×
साँवरौ साँवरी रैनि कौ जायौ ।
आधी राति कंस के त्रासनि, वसुद्यौ गोकुल ल्यायौ ॥
नंद पिता अरु मातु जसोदा, माखन मही खवायौ ।
हाथ लकुट कामरि कांधे पर, बछरुन साथ डुलायौ ॥
कहा भयौ मधुपुरी अवतरे, गोपीनाथ कहायौ ।
ब्रज बधुअनि मिलि साँट कटीली, कपि ज्यौं नाच नचायौ ॥
अब लौं कहाँ रहे हो ऊधौ, लिखि-लिखि जोग पठायौ ।
सूरदास हम यहै परेखौ, कुबरी हाथ विकायौ ॥
× × ×
जा दिन तैं गोपाल चले ।
ता दिन तैं ऊधौ या ब्रज के, सब स्वभाव बदले ॥
घटे अहार विहार हरष हित, सुख सोभा गुन गान ।
ओज तेज सब रहित सकल बिधि, आरति असम समान ॥
बाढ़ी निसा, बलय आभूषन, उर-कंचुकी उसास ।
नैननि जल अंजन अंचल प्रति, आवन अवधि की आस ॥
अब यह दसा प्रगट या तन की, कहियौ जाइ सुनाई ।
सूरदास प्रभु सो कीजो जिहिं, बेगि मिलहिं अब आइ ॥
× × ×
हम तौ कान्ह केलि की भूखी ।
कहा करैं लै निर्गुन तुम्हरौ, बिरहिनि बिरह बिदूषी ॥
कहियै कहा यहै नहिं जानत, कहौ जोग किहि जोग ।
पालागौं तुमहीं से वा पुर, बसत बावरे लोग ॥
चंदन, अभरन, चीर चारु बर, नेकु आपु तन कीजै ।
दंड, कमंडल, भसम, अधारी, तब जुवतिनि कौं दीजै ॥
सूर देखि दृढ़ता गोपिन की, ऊधौ दृढ़ ब्रत पायौ ।
करी कृपा जदुनाथ मधुप कौं, प्रेमहिं पढ़न पठायौ ॥
× × ×

मधुकर स्याम हमारे ईस।
तिनकौ ध्यान धरैं निसि वासर, औरहिं नवै न सीस॥
जोगिनि जाइ जोग उपदेसहु, जिनके मन दस-बीस।
एकै चित एकै वह मूरति, तिन चितवतिं दिन तीस॥
काहें निरगुन ग्यान आपनौ, जित कित डारत खीस।
सूरदास प्रभु नंदनँदन विनु, हमरे को जगदीस।

× × ×

ऊधौ मन नहि हाथ हमारैं।
रथ चढ़ाइ हरि संग गए लै, मथुरा जबहिं सिधारे॥
नातरु कहा जोग हम छाँड़हि, अति रुचि कै तुम ल्याए।
हम तौ झँखतिं स्याम की करनी, मन लै जोग पठाए॥
अजहूँ मन अपनौ हम पावैं, तुम तैं होइ तौ होइ।
सूर सपथ हमैं कोटि तिहारी, कही करैंगी सोइ॥

× × ×

ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को अवराधै ईस॥
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहत तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस॥
तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारे नंद-नंदन विनु और, नहीं जगदीस॥

× × ×

मधुकर स्याम हमारे चोर।
मन हरि लियौ तनक चितवनि मैं, चपल नैन की कोर॥
पकरे हुते हृदय उर अन्तर, प्रेम प्रीति कैं जोर।
गए छँड़ाइ तोरि सब बंधन, दैं गए हँसनि अँकोर॥
चौंकि परीं जागत निसि बीती, दूर मिल्यौ इक भौंर।
सूरदास प्रभु सरबस लूट्यौ, नागर नवल-किसोर॥

× × ×

बिलग जनि मानौ ऊधौ कारे।
वह मथुरा काजर की ओबरी, जे आवैं ते कारे॥
तुम कारे सुफलक सुत कारे, कारे कुटिल सँवारे।
कमलनैन की कौन चलावै, सबहिंनि मैं मनियारे॥

मानौ नील माट तैं काढ़े, जमुना आइ पखारे।
तातैं स्याम भई कालिंदी, सूर स्याम गुन न्यारे॥

× × ×

बिलग हम मानैं ऊधौ काकौ।
तरसत रहे वसुदेव देवकी, नहिं हित मातु पिता कौ॥
काके मातु पिता को काकौं, दूध पियौ हरि जाकौ।
नंद जसोदा लाड़ लड़ायौ, नाहिं भयौ हरि ताकौ॥
कहियौ जाइ बनाइ बात यह, को हित है अबला कौ।
सूरदास प्रभु प्रीति है कासौं, कुटिल मीत कुबिजा कौ॥

× × ×

ऊधौ हमरी सौं तुम जाहु।
यह गोकुल पूनौ कौ चंदा, तुम हौ आए राहु॥
ग्रह के ग्रसे गुसा परगास्यौ, अब लौं करि निरबाहु।
सब रस लै नँदलाल सिधारे, तुम पठए बड़ साहु॥
जोग बेंनि कै तंदुल लीजै, बीच बसेरे खाहु।
सूरदास जबहीं उठि जैहौ, मिटिहै मन कौ दाहु॥

× × ×

प्रेम न रुकत हमारे बूतैं।
किहिं गयंद बाँध्यौ सुन मधुकर, पदुम नाल के कांचे सूतैं॥
सोवत मनसिज आनि जगायौ, पठै संदेस स्याम के दूतैं।
बिरह-समुद्र सुखाइ कौन बिधि, रंचक जोग अगिनि के लूतैं॥
सुफलक सुत अरु तुम दोऊ मिलि, लीजै मुकुति हमारे हूतैं
चाहति मिलन सूर के प्रभु कौं, क्यौं पतियाहिं तुम्हारे धूतैं।

× × ×

ऊधौ जोग जोग हम नाहीं।
अबला सार-ज्ञान कह जानैं, कैसैं ध्यान धराहीं॥
तेई मूँनद नैन कहत हौ, हरि मूरति जिन माहीं।
ऐसी कथा कपट की मधुकर, हमतैं सुनी न जाहीं॥
स्रवन चीरि सिर जटा बँधावहु, ये दुख कौन समाहीं।
चंदन तजि अँग भस्म बतावत, बिरह-अनल अति दाहीं॥
जोगी भ्रमत जाहि लगि भूले, सो तौ है आप माहीं।
सूरस्याम तैं न्यारी न पल छिन, ज्यौं घट तै परछाहीं॥

× × ×

ऊधौ कोकिल कूजत कानन।
तुम हमकौं उपदेस करत हौ, भस्म लगावन आनन॥
औरौ सिखी सखा सँग लै लै, टेरत चढ़े पखानन।
बहुरौ आइ पपीहा कै मिस, मदन हनत निज बानन॥
हमतौ निपट अहीरि बावरी, जोग दीजिऐ जानन।
कहा कथत मासी के आगै, जानत नानी नानन॥
तुम तौ हमैं सिखावन आए, जोग होइ निरवानन।
सूर मुक्ति कैसे पूजति है, वा मुरली के तानन॥

× × ×

ऊधौ जोग कहा है कीजतु।
ओढ़ियत है कि बिछैयत है, किधौं खैयत है किधौ पीजतु॥
कीधौं कछु खिलौना सुंदर, की कछु भूषन नीकौ।
हमरे नंद-नंदन जो चहियतु, मोहन जीवन जी कौ॥
तुम जु कहत हरि निगुन निरंतर, निगम नेति है रीति।
प्रगट रूप की रासि मनोहर, क्यों छाड़े परतीति॥
गाइ चरावन गए घोप तैं, अवहीं हैं फिरि आवत।
सोई सूर सहाइ हमारे, वेनु रसाल बजावत॥

× × ×

अपने स्वारथ के सब कोऊ।
चुप करि रहौ मधुप रस-लंपट, तुम देखे अरु ओऊ॥
जो कछु कह्यौ कह्यौ चाहत हौ, कहि निरवारौ सोऊ।
अब मेरैं मन ऐसियै षटपद, होनी होउ सु होऊ॥
तब कत रास रच्यौ वृंदावन, जौ पै ज्ञान हतोऊ।
लीन्हे जोग फिरत जुवतिनि मैं, बड़े सुपत तुम दोऊ॥
छुटि गयौ मान परेखौ रे अलि, हृदै हुतौ वह जोऊ।
सूरदास प्रभु गोकुल विसर्‌यौ, चित चिंतामनि खोऊ॥

× × ×

मधुकर प्रीति किये पछितानी।
हम जानी ऐसैहिं निवहैगी, उन कछु औरै ठानी॥
वा मोहन कौं कौन पतीजै, बोलत मधुरी बानी।
हमकौं लिखि लिखि जोग पठावत, आपु करत रजधानी॥
सूनी सेज सुहाइ न हरि बिनु, जागत रैनि बिहानी।
जब तैं गवन कियौ मधुबन कौं, नेननि बरषत पानी॥

कहियौ जाइ स्याम सुंदर कौं, अंतरगत की जानी।
सूरदास प्रभु मिलि कै बिछुरे, तातैं भई दिवानी॥

× × ×

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मनक्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी॥
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह - कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी॥
सु तौ व्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ सूर तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी॥

× × ×

मधुकर आपुन होहिं बिराने।
बाहर हेत हितू कहवावत, भीतर काज सयाने॥
ज्यौं सुक पिंजर माहिं उचारत, ज्यौं ज्यौं कहत बखाने।
छूटत हीं उड़ि मिलैं अपुन कुल, प्रीति न पल ठहराने॥
जद्यपि मन नहिं तजत मनोहर, तद्यपि कपटी जाने।
सूरदास प्रभु कौन काज कौं, माखी मधु लपटाने॥

× × ×

ऊधौ मन माने की बात।
दाख छुहारा छांड़ि अमृत-फल, बिषकीरा बिष खात॥
ज्यौं चकोर कौं देइ कपूर कोउ, तजि अंगार अघात।
मधुप करत घर कोरि काठ मैं, बँधत कमल के पात॥
ज्यौं पतंग हित जानि आपनौ, दीपक सौं लपटात।
सूरदास जाकौ मन जासौं, सोई ताहि सुहात॥

× × ×

ऊधौ सुधि नाहीं या तन की।
जाइ कहौ तुम कित हौ भूले, हमऽब भईं बन-बन की॥
इक बन ढूँढ़ि सकल बन ढूँढ़े, बन बेली मधुबन की।
हारी परीं बृंदाबन ढूँढ़त, सुधि न मिली मोहन की॥
किए विचार उपचार न लागत, कठिन बिथा भइ मन की।
सूरदास कोउ कहै स्याम सौं, सुरति करैं गोपिनि की॥

× × ×

बिनु गुपाल बैरिनि भई कुंजैं।
तब वै लता लगति तन सीतल, अब भईं विषम ज्वाल की पुंजैं॥

वृथा बहति जमुना, खग बोलत, वृथा कमल-फूलनि अलि-गुंजैं।
पवन पान, घनसार, सजीवन, दधि-सुत किरनि भानु भईं भुंजैं॥
यह ऊधौ कहियौ माधौ सौं, मदन मारि कीन्हीं हम लुंजैं।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं, मन-जोवत अंखियाँ भई छुंजैं॥

× × ×

ऊधौ इतनी कहियौ बात।
मदन गुपाल बिना या ब्रज मैं, होन लगे उतपात॥
तृनावर्त, बक, बकी, अघासुर, धेनुक फिरि-फिरि जात।
व्योम, प्रलंब, कंस केसी इत, करत जिअनि की घात॥
काली काल-रूप दिखियत है, जमुना जलहिं अन्हात।
वरुन फाँस फाँस्यौ चाहत है, सुनियत अति मुरझात॥
इंद्र आपने परिहँस कारन, बार - बार अनखात।
गोपी, गाइ, गोप, गोसुत सब, थर थर काँपत गात॥
अंचल फारति जननि जसोदा, पाग लिये कर तात।
लागौ बेगि गुहारि सूर प्रभु, गोकुल बैरिनि घात॥

× × ×

ऊधौ इतनी कहियौ जाइ।
अति कृस गात भई ये तुम बिनु, परम दुखारी गाइ॥
जल समूह बरषति दोउ अंखियाँ, हूँकति लीन्हें नाउँ।
जहाँ जहाँ गो दोहन कीन्हौ, सूँघति सोई ठाउँ॥
परति पछार खाइ छिन ही छिन, अति आतुर ह्वै दीन।
मानहु सूर काढ़ि डारी हैं, वारि मध्य तैं मीन॥

× × ×

ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
वृंदाबन गोकुल वन उपवन, सघन कुंज की छाहीं॥
प्रात समय माता जसुमति अरु, नंद देखि सुख पावत।
माखन रोटी दह्यौ सजायौ, अति हित साथ खवावत॥
गोपी ग्वाल बाल सँग खेलत, सब दिन हँसत सिरात।
सूरदास धनि-धनि ब्रजवासी, जिनसौं हित जदु-तात॥

× × ×

ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
हंस सुता की सुंदर कगरी, अरु कुंजनि की छाँहीं॥
वै सुरभी वै बच्छ दोहनी, खरिक दुहावन जाहीं।
ग्वाल-बाल मिलि करत कुलाहल, नाचत गहि गहि बाहीं॥

यह मथुरा कंचन की नगरी, मनि - मुक्ताहल जाहीं।
जबहिं सुरति आवति वा सुख की, जिय उमगत तन नाहीं ।।
अनगन भांति करी बहु लीला, जसुदा नंद निवाहीं।
सूरदास प्रभु रहे मौन ह्वै, यह कहि-कहि पछिताहीं ।।

× × ×

ऐसी प्रीति की बलि जाउँ।
सिंहासन तजि चले मिलन कौं, सुनत सुदामा नाउँ ।।
कर जोरे हरि विप्र जानि कै, हित करि चरन पखारे।
अंकमाल दै मिले सुदामा, अर्धासन बैठारे ।।
अर्धंगी पूछत मोहन सौं, कैसे हितू तुम्हारे।
तन अति छीन मलीन देखियत, पाउँ कहाँ तैं धारे ।।
संदीपन कैं हमऽरु सुदामा, पढ़े एक चटसार।
सूर स्याम की कौन चलावै, भक्तनि कृपा अपार ।।

× × ×

सुदामा मंदिर देखि डर्‌यौ।
इहाँ हुती मेरी तनक मड़ैया, को नृप आनि छर्‌यौ ।।
सीस धुनै दोउ कर मींड़ै, अंतर सोच पर्‌यौ।
ठाढ़ी तिया जु मारग जोवै, ऊँचै, चरन धर्‌यौ ।।
तोहिं आदर्‌यौ त्रिभुवन कौ नायक, अब क्यौं जात फिर्‌यौ ।
सूरदास प्रभु की यह लीला, दारिद दुःख हर्‌यौ ।।

× × ×

राधा नैन नीर भरि आए।
कब धौं मिलैं स्याम सुंदर सखि, जदपि निकट हैं आए ।।
कहा करौं किहिं भांति जाहुँ अब, पंखा नहीं तन पाए।
सूर स्याम सुंदर घन दरसैं, तन के ताप नसाए ।।

× × ×

पथिक, कहियौ हरि सौं यह बात।
भक्त बछल है विरद तुम्हारौ, हम सब किए सनाथ ।।
प्रान हमारे संग तिहारैं, हमहूँ हैं अब आवत।
सूर स्याम सौं कहत संदेसौ, नैनन नीर बहावत ।।

× × ×

राधा माधव भेंट भई।
राधा माधव, माधव राधा, कीट भृङ्ग गति ह्वै जु गई ।।

माधव राधा के रँग रांचे, राधा माधव रंग रई ।
माधव राधा प्रीति निरंतर, रसना करि सो कहि न गई ॥
बिहंसि कह्यौ हम तुम नहिं अंतर, यह कहिकै उन ब्रज पठई ।
सूरदास प्रभु राधा माधव, ब्रज-विहार नित नई नई ॥

× × ×

बैठी जननि करति सगुनौती ।
लछिमन-राम मिलैं अब मोकौं, दोऊ अमोलक मोती ॥
इतनी कहत सुकाग उहाँ तैं, हरी डार उड़ि बैठ्यो ।
अंचल गांठि दई, दुख भाज्यौ, सुख जु आनि उर पैठ्यौ ॥
जब लौं हौं जीवौं जीवन भर, सदा नाम तब जपिहौं ।
दधि-ओदन दोना भरि देहौं, अरु भाइनि मैं थपिहौं ॥
अब कैं जौ परचौ करि पावौं, अरु देखौं भरि आंखि ।
सूरदास सोने कै पानी मढ़ौं चोंच अरु पांखि ॥

× × ×

हमारी जन्मभूमि यह गाउँ ।
सुनहु सखा सुग्रीव-विभीषन, अवनि अजोध्या नाउँ ॥
देखत वन-उपवन-सरिता-सर, परम मनोहर ठाउँ ।
अपनी प्रकृति लिए बोलत हौं, सुरपुर मैं न रहाउँ ॥
ह्याँ के बासी अवलोकत हौं, आनँद उर न समाउँ ।
सूरदास जौ बिधि न सँकोचै, तौ बैकुंठ न जाउँ ॥

× × ×

बिनती किहि बिधि प्रभुहिं सुनाऊँ ।
महाराज रघुबीर धीर कौं, समय न कबहूँ पाऊँ !
जाम रहत जामिनि के बीतें, तिहिं औसर उठि धाऊँ ।
सकुच होत सुकुमार नींद मैं, कैसे प्रभुहिं जगाऊँ ॥
दिनकर - किरनि - उदित, ब्रह्मादिक-रुद्रादिक इक ठाऊँ ।
अगनित भीर अमर-मुनि गन की, तिहिं तैं ठौर न पाऊँ ॥
उठत सभा दिन मधि, सैनापति भीर देखि, फिरि आऊँ ।
न्हात-खात सुख करत साहिबी, कैसे करि अनखाऊँ ॥
रजनी-मुख आवत गुन गावत, नारद तुंबुर नाऊँ ।
तुमहीं कहौ कृपानिधि रघुपति, किहिं गिनती मैं आऊँ ?
एक उपाय करौं कमलापति, कहौ तौ कहि समुझाऊँ ।
पतित-उधारन नाम सूर प्रभु, यह रुक्का पहुंचाऊँ ॥

मलिक मोहम्मद जायसी

का सिंगार ओोहि बरनौं राजा । ओोहि क सिंगार ओोहि पै छाजा ॥
प्रथमहि सीस कस्तुरी केसा । बलि बासुकि को ओौरु नरेसा ॥
भँवर केस वह मालति रानी । बिसहर लुरहिं लेहिं अरघानी ॥
बेनी छोरि झारु जौ बारा । सरग पतार होइ अँधियारा ॥
कोंवल कुटिल केस नग कारे । लहरन्हि भरे भुअंग बिसारे ॥
बेधे जानु मलैगिरि बासा । सीस चढ़े लोटहिं चहुँ पासा ॥
घुंघुरवारि अलकैं बिख भरीं । सिंकरी पेम चहहिं गियँ परीं ॥
अस फँदवारे केस वै राजा परा सीस गियँ फाँद ।
अस्टौ कुरी नाग ओोरगाने भै केसन्हि के बाँद ॥

बरनौं माँग सीस उपराहीं । सेंदुर अबहिं चढ़ा तेहि नाहीं ॥
बिनु सेंदुर अस जानहुँ दिया । उजिअर पंथ रैनि महँ किया ॥
कंचन रेख कसौटी कसी । जनु घन महँ दामिनि परगसी ॥
सुरुज किरिन जस गगन बिसेखी । जमुना माँझ सरसुती देखी ॥
खाँडै धार रुहिर जनु भरा । करवत लै बेनी पर धरा ॥
तेहि पर पूरि धरे जौ मोती । जमुना माँझ गाँग कै सोती ॥
करवत तपा लेहिं होइ चूरू । मकु सो रुहिर लै देइ सेंदूरू ॥
कनक दुआदस बानि होइ चह सोहाग वह माँग ।
सेवा करहिं नखत औ तरईं उअै गगन निसि गाँग ॥

कहौं लिलाट दुइजि कै जोती । दुइजिहि जोति कहाँ जग ओती ॥
सहस करौं जो सुरुज दिपाई । देखि लिलाट सोउ छपि जाई ॥
का सरबरि तेहि देउं मयंकू । चाँद कलंकी वह निकलंकू ॥
औौ चाँदहि पुनि राहु गरासा । वह बिनु राहु सदा परगासा ॥
तेहि लिलाट पर तिलक बईठा । दुइजि पाट जानहुँ ध्रुव डीठा ॥
कनक पाट जनु बैठेउ राजा । सबै सिंगार अत्र लै साजा ॥
ओोहि आगे थिर रहै न कोऊ । दहुँ काकहँ अस जुरा सँजोऊ ॥
खरग धनुक औ चक्र बान दुइ जग मारन तिन्ह नाऊँ ।
सुनि कै पट मुतछि कै राजा मो कहँ भए एक ठाऊँ ॥

भौंहैं स्याम धनुकु जनु ताना । जासौं हेर मार बिख बाना ॥
उहै धनुक उन्ह भौंहन्ह चढ़ा । केइ हतियार काल अस गढ़ा ॥
उहै धनुक किरसुन पहँ अहा । उहै धनुक राघौ कर गहा ॥
उहै धनुक रावन संघारा । उहै धनुक कंसासुर मारा ॥

उहै धनुक वेधा हुत राहू । मारा ओहीं सहस्सर बाहू ॥
उहै धनुक मैं ओपहँ चीन्हा । धानुक आपु वेझ जग कीन्हा ॥
उन्ह भौंहन्हि सरि केउ न जीता । आछरिं छपीं छपीं गोपीता ॥
भौंह धनुक धनि धानुक दोसरि सरि न कराइ ।
गगन धनुक जो ऊगवै लाजन्ह सो छपि जाइ ॥

नैन बाँक सरि पूज न कोऊ । मान समुँद अस उलथहिं दोऊ ॥
राते कँवल करहिं अलि भवाँ । घूमहिं मांति चहहिं उपसवाँ ॥
उठहिं तुरंग लेहिं नहिं बागा । चाहहिं उलथि गगन कहँ लागा ॥
पवन झकोरहिं देहिं हलोरा । सरग लाइ भुइँ लाइ बहोरा ॥
जग डोलै डोलत नैनाहाँ । उलटि अड़ार चाह पल माहाँ ॥
जबहिं फिराव गँगन गहि बोरा । अस वै भँवर चक्र के जोरा ॥
समुँद हिंडोर करहि जनु झूले । खंजन लुरहि मिरिग जनु भूले ॥
सुभर समुँद अस नैन दुइ मानिक भरे तरंग ।
आवत तीर जाहि फिरि काल भँवर तेन्ह संग ॥

बरुनी का बरनौं इमि बनी । सांधे बान जानु दुइ अनी ॥
जुरी राम रावन कै सैना । बीच समुंद भए दुइ नैना ॥
बारहिं पार बनावरि साँधी । जासौं हेर लाग बिख बाँधी ॥
उन्ह बानन्ह अस को को न मारा । वेधि रहा सगरौं संसारा ॥
गँगन नखत जस जाहिं न गने । हैं सब बान ओहि के हने ॥
धरती बान वेधि सब राखी । साखा ठाढ़ि देहिं सब साखी ॥
रोवँ रोवँ मानुस तन ठाढ़े । सोतहि सोत वेधि तन काढ़े ॥
बरुनि बान सब ओपहँ वेधे रन बन ढंख ।
सउजन्ह तन सब रोवाँ पंखिन्ह तन सब पंख ॥

नासिक खरग देउँ केहि जोगू । खरग खीन ओहि बदन सँजोगू ॥
नासिक देखि लजानेउ सुआ । सूक आइ बेसरि होइ उआ ॥
सुआ सो पिअर हिरामनि लाजा । और भाउ का बरनौं राजा ॥
सुआ सो नाँक कठोर पँवारी । वह कोंवलि तिल पुहुप सँवारी ॥
पुहुप सुगंध करहिं सब आसा । मकु हिरगाइ लेइ हम बासा ॥
अधर दसन पर नासिक सोभा । दारिवँ देखि सुआ मन लोभा ॥
खंजन दुहुँ दिसि केलि कराहीं । दहुँ वह रस को पाव को नाहीं ॥
देखि अमिअ रस अधरन्हि भएउ नासिका कीर ।
पवन बास पहुँचावै अस रग छाँड़ न तीर ॥

अधर सुरंग अमिअ रस भरे। बिंब सुरंग लाजि बन फरे॥
फूल दुपहरी मानहुँ राता। फूल झरहिं जब जग कह बाता॥
हीरा गहै सो बिद्रुम धारा। बिहँसत जगत होइ उजियारा॥
भए मँजीठ पानन्ह रंग लागे। कुसुम रंग थिर रहा न आगे॥
अस कै अधर अमिअ भरि राखे। अबहिं अछूत न काहूँ चाखे॥
मुख तँबोल रँग धारहिं रसा। केहि मुख जोग सो अंब्रित बसा॥
राता जगत देखि रँग राते। रुहिर भरे आछहिं बिहँसाते॥
अमिअ अधर अस राजा सब जग आस करेइ।
केहि कहँ कँवल बिगासा को मधुकर रस लेइ॥

दसन चौक बैठे जनु हीरा। औ बिच बिच रँग स्याम गँभीरा॥
जनु भादौं निसि दामिनि दीसी। चमकि उठी तसि बीनि बतीसी॥
वह जो जोति हीरा उपराहीं। हीरा दीपहिं सो तेहि परिछाहीं॥
जेहि दिन दसन जोति निरमई। बहुतन्ह जोति जोति ओहि भई॥
रवि ससि नखत दीन्ह ओहि जोती। रतन पदारथ मानिक मोती॥
जहँ जहँ बिहंसि सुभावहिं हँसी। तहँ तहँ छिटक जोति परगसी॥
दामिनि दमकि न सरबरि पूजा। पुनि वह जोति और को दूजा॥
बिहँसत हँसत दसन तस चमके पाहन उठे झरक्कि।
दारिवँ सरि जो न कै सका फाटेउ हिया दरक्कि॥

रसना कहौं जो कह रस बाता। अंब्रित वचन सुनत मन राता॥
हरे सो सुर चात्रिक कोकिला। बीन बंसि वह बैनु न मिला॥
चात्रिक कोकिल रहहिं जो नाहीं। सुनि वह बैन लाजि छपि जाहीं॥
भरे पेम मधु बोलै बोला। सुनै सो माति घुमिं कै डोला॥
चतुर बेद मति सब ओहि पाहाँ। रिग जजु साम अथर्बन माहाँ॥
एक एक बोल अरथ चौगुना। इंद्र मोह बरम्हा सिर धुना॥
अमर भारथ पिंगल औ गीता। अरथ जूझ पंडित नहिं जीता॥
भावसती ब्याकरन सरसुती पिंगल पाठ पुरान।
वेद भेद सैं बात कह तस जनु लागहि बान॥

पुनि बरनौं का सुरंग कपोला। एक नारँग के दुऔ अमोला॥
पुहुप पंक रस अंब्रित सांधे। केइँ ये सुरँग खिरौरा बांधे॥
तेहि कपोल बाएँ तिल परा। जेइँ तिल देख सो तिल तिल जरा॥
जनु घुंघुची वह तिल करमुहाँ। बिरह बान साँधा सामुहाँ॥
अगिनि बान तिल जानहुँ सूझा। एक कटाख लाख दुइ जूझा॥
सो तिल काल मेंटि नहि गएऊ। अब वह गाल काल जग भएऊ॥
देखत नैन परी परिछाहीं। तेहितें रात स्याम उपराहीं॥

सो तिल देखि कपोल पर गँगन रहा धुव गाड़ि ।
खिनहि उठै खिन बूड़ै डोलै नहिं तिल छांड़ि ॥

स्रवन सीप दुइ दीप सँवारे । कुंडल कनक रचे उंजिश्रारे ॥
मनि कुंडल चमकहिं अति लोने । जनु कौंधा लौकहिं दुहुँ कोने ॥
दुहुँ दिसि चाँद सुरुज चमकाहीं । नखतन्ह भरे निरखि नहिं जाहीं ॥
तेहि पर खूँट दीप दुइ वारे । दुई धुव दुश्रौ खूँट बैसारे ॥
पहिरे खुंभी सिंघल दीपी । जानहुँ भरी कचपची सीपी ॥
खिन खिन जबहिं चीर सिर गहा । काँपत बीज दुहूँ दिसि रहा ॥
डरपहिं देव लोक सिंघला । परै न बीच टूटि एहि कला ॥

करहिं नखत सब सेवा स्रवन दिपहिं अस दोउ ।
चाँद सुरज अस गहने औरु जगत का कोउ ॥

बरनौं गीवँ कूँज के रीसी । कंज नार जनु लागेउ सीसी ॥
कुंदे फेरि जानु गिउ काढ़ी । हरी पुछारि ठगी जनु ठाढ़ी ॥
जनु हिय काढ़ि परेवा ठाढ़ा । तेहि तें अधिक भाउ गिउ बाढ़ा ॥
चाक चढ़ाइ साँच जनु कीन्हा । बाग तुरंग जानु गहि लीन्हा ॥
गिउ मँजूर तँवचुर जो हारा । वहै पुकारहिं साँझ सँकारा ॥
पुनि तिहि ठाउँ परी तिरि रेखा । घूँटत पीक लीक सब देखा ॥
धनि सो गीव दीन्हेउ बिधि भाऊ । दहुँ कासौं लै करै मेराऊ ॥

कंठ सिरी मुकुताहल माला सोहै अभरन गीवँ ।
को होइ हार कंठ ओहि लागै केइँ तपु साधा जीवँ ॥

कनक दंड दुइ भुजा कलाई । जानहुँ फेरि कुंदेरैं भाई ॥
कदलि खाँभ की जानहुँ जोरी । औ राती ओहि कँवल हथोरी ॥
जानहुँ रकत हथोरीं बूड़ीं । रवि परभात तात वह जूड़ीं ॥
हिया काढ़ि जनु लीन्हेसि हाथाँ । रकत भरी अँगुरी तेहि साथाँ ॥
औ पहिरें नग जरी अँगूठी । जग बिनु जीव जीव ओहि मूठी ॥
बाँहू कंगन टाड़ सलोनी । डोलति बाँह भाउ गति लोनी ॥
जानहुँ गति बेड़िनि देखराई । बाँह डोलाइ जीउ लै जाई ॥

भुज उपमा पँवनारि न पूजी खीन भई तेहि चिंत ।
ठाँवहिं ठाँव बेह भे हिरदै ऊभि साँस लेइ निंत ॥

हिया थार कुच कंचन लाडू । कनक कचोर उठे करि चाडू ॥
कुन्दन बेल साजि जनु कूँदे । अंब्रित भरे रतन दुइ मूँदे ॥
बेधे भँवर कंट केतुकी । चाहहिं बेध कीन्ह कँचुकी ॥
जोबन बान लेहि नहिं बागा । चाहहिं हुलसि हिएँ हठि लागा ॥

अगिनि बान दुइ जानहु सांधे। जग वेधहिं जौं होहिं न बांधे॥
उतंग जँभीर होइ रखवारी। छुइ को सकै राजा कै बारी॥
दारिवँ दाख फरे अनचाखे। अस नारँग दहुँ का कहँ राखे॥
राजा बहुत मुए तपि लाइ लाइ भुइँ माथ।
काहू छुऐ न पारे गए मरोरत हाथ॥

पेट पत्र चंदन जनु लावा। कुंकुह केसरि बरन सोहावा॥
खीर अहीर न कर सुकुवांरा। पान फूल के रहै अधारा॥
स्याम भुअंगिनि रोमावली। नाभी निकसि कँवल कहँ चली॥
आइ दुहूँ नारंग बिच भई। देखि मँजूर ठमकि रहि गई॥
जनहुँ चढ़ी भँवरन्हि कै पाँती। चंदन खाँभ बास कै माती॥
कै कालिंद्री बिरह सताई। चलि पयाग अरइल बिच आई॥
नाभी कुंडर बानारसी। सौंह को होइ मीचु तहँ बसी॥
सिर करवत तन करसी लै लै बहुत सीझे तेहि आस।
बहुत धूम घूँटत मैं देखे उतरु न देइ निरास॥

बैरिनि पीठि लीन्ह ओइँ पाछे। जनु फिरि चली अपछरा काछे॥
मलयागिरि कै पीठि सँवारी। बेनी नाग चढ़ा जनु कारी॥
लहरैं देत पीठि जनु चढ़ा। चीर ओढ़ावा कंचुकि मढ़ा॥
दहुँ का कहँ असि बेनी कीन्ही। चंदन बास भुअंगन्ह दीन्ही॥
किस्न कै करा चढ़ा ओहि माथें। तब सो छूट अब छूट न नाथें॥
कारी कँवल गहे मुख देखा। ससि पाछें जस राहु बिसेखा॥
को देखै पावै वह नागू। सो देखै माथें मनि भागू॥
पन्नग पंकज मुख गहे खंजन तहाँ बईठ।
छात सिंघासन राजधन ता कहँ होइ जो डीठ॥

लंक पुहुमि अस आहि न काहूँ। केहरि कहौं न ओहि सरि ताहूँ॥
बसा लंक बरनै जग झीनी। तेहि तें अधिक लंक वह खीनी॥
परिहँस पिअर भए तेहिं बसा। लीन्हे लंक लोगन्ह कहँ डँसा॥
जानहुँ नलिनि खंड दुइ भई। दुहूँ बिच लंक तार रहि गई॥
हिय सौं मोरि चलै वह तागा। पग देत कत सहि सक लागा॥
छुद्र घंटिका मोहहिं नर राजा। इंद्र अखार आइ जनु साजा॥
मानहुँ बीन गहे कामिनी। रागहिं सबै राग रागिनी॥
सिंघ न जीता लंक सरि हारि लीन्ह बन बासु।
तेहिं रिस रकत पिअै मनई कर खाइ मार कै मांसु॥

नाभी कुंडर मलै समीरू। समुँद भँवर जस भंवै गँभीरू॥
बहुतै भँवर बोंडरा भए। पहुँचि न सके सरग कहँ गए॥

चंदन माँझ कुरंगिनि खोजू। दहुँ को पाव को राजा भोजू॥
को ओहि लागि हिवंचल सीझा। का कहँ लिखी ऐस को रीझा॥
तीवइ कँवल सुगंध सरीरू। समुँद लहरि सोहै तन चीरू॥
झूलहिं रतन पाट के झोंपा। साजि मदन दहुँ काकहँ कोपा॥
अबहिं सो आहि कँवल कै करी। न जनौं कवन भँवर कहँ धरी॥
वेधि रहा जग बासना परिमल मेद सुगंध।
तेहि अरघानि भँवर सब लुबुधे तजहिं न नीवी-बंध॥

बरनौं नितँब लंक के सोभा। औ गज गवन देखि सब लोभा॥
जुरे जंघ सोभा अति पाए। केरा खाँभ फेरि जनु लाए॥
कँवल चरन अति रात विसेखे। रहहिं पाट पर पुहुमि न देखे॥
देवता हाथ हाथ पगु लेहीं। पगु पर जहाँ सीस तहँ देहीं॥
माँथें भाग को दहुँ अस पावा। कँवल चरन लै सीस चढ़ावा॥
चूरा चाँद सुरुज उजिआरा। पायल बीच करहिं झनकारा॥
अनवट बिछिआ नखत तराई। पहुँचि सकै को पावन्हि ताई॥
बरनि सिंगार न जानेउँ नखसिख जैस अभोग।
तस जग किछौं न पावौं उपमा देउँ ओहि जोग॥

सुनतहि राजा गा मुरुछाई। जानहुँ लहरि सुरुज कै आई॥
पेम घाव दुख जान न कोई। जेहि लागे जानै पै सोई॥
परा सो पेम समुँद अपारा। लहरहिं लहर होइ विसँभारा॥
विरह भँवर होइ भाँवरि देई। खिन खिन जीव हिलोरहिं लेई॥
खिनहि निसास बूड़ि जिउ जाई। खिनहि उठै निसंसै बौराई॥
खिनहि पीत खिन होइ मुख सेता। खिनहि चेत खिन होइ अचेता॥
कठिन मरन तें पेम वेवस्था। ना जिअँ जिवन न दसइँ अवस्था॥
जनु लेनिहारन्ह लीन्ह जिउ हरहिं तरासहिं ताहि।
एतना बोल न आव मुख करहि तराहि तराहि॥

जहँ लगि कुटुंब लोग औ नेगी। राजा राय आए सब वेगी॥
जाँवत गुनी गारुरी आए। ओझा बैद सयान बोलाए॥
चरचहिं चेष्टा परिखहिं नारी। निअर नाहि ओषद तेहि बारी॥
है राजहिं लछ्मन कै करा। सकति बान मोहा है परा॥
नहिं सो राम हनिवँत बड़ि दूरी। को लै आव सजीवनि मूरी॥
विनौ करहिं जेते गढ़पती। का जिउ कीन्ह कवनि मति मती॥
कहहु सो पीर काह बिनु खाँगा। समुँद सुमेरु आव तुम्ह माँगा॥
धावन तहाँ पठावहु देहिं लाख दस रोक।
है सो वेलि जेहि बारी आनहिं सबै बरोक॥

जौं भा चेत उठा बैरागा। बाउर जनहुँ सोइ अस जागा॥
आवत जगत बालक जस रोवा। उठा रोइ हा ग्यान सो खोवा॥
हौं तौ अहा अमरपुर जहाँ। इहाँ मरनपुर आएहुँ कहाँ॥
केइ उपकार मरन कर कीन्हा। सकति जगाइ जीउ हरि लीन्हा॥
सोवत अहा जहाँ सुख साखा। कस न तहां सोवत बिधि राखा॥
अब जिउ तहाँ इहाँ तन सूना। कब लगि रहै परान बिहूना॥
जौं जिउ घटिहि काल के हाथों। घटन नीक पै जीव निसाथों।

अहुठ हाथ तन सरवर हिया कँवल तेहि माँह।
नैनन्हि जानहु निअरें कर पहुँचत अवगाह॥

सबन्हि कहा मन समझहु राजा। काल सतें कै जूझि न छाजा॥
तासौं जूझि जात जौ जीता। जात न किरसुन तजि गोपीता॥
औ नहि नेहु काहु सौं कीजै। नाउँ मीठ खाएँ जिउ दीजै॥
पहिलेहिं सुक्ख नेहु जब जोरा। पुनि होइ कटिन निबाहत ओरा॥
अहुठ हाथ तन जैस सुमेरू। पहुँचि न जाइ परा तस फेरू॥
गँगन दिस्टि सौं जाइ पहूँचा। पेम अदिस्ट गँगन सौं ऊँचा॥
धुव तें ऊँच पेम धुव उवा। सिर दै पाउँ देइ सो छुवा॥

तुम्ह राजा औ सुखिया करहु राज सुख भोग।
एहि रे पंथ सो पहुँचै सहै जो दुक्ख बिओग॥

सुऔं कहा मन समुझहु राजा। करत पिरीत कठिन है काजा॥
तुम्ह अबहीं जेई घर पोई। कँवल न बैठि बैठहहु कोई॥
जानहिं भँवर जो तेहि पँथ लूटे। जीउ दीन्ह औ दिएँ न छूटे॥
कठिन आहि सिंघल कर राजू। पाइअ नाहिं राज के साजू॥
ओहिं पँथ जाइ जो होइ उदासी। जोगी जती तपा संन्यासी॥
भोग जोरि पाइत वह भोगू। तजि सो भोग कोइ करत न जोगू॥
तुम्ह राजा चाहहु सुख पावा। जोगहि भोगहि कत बनि आवा॥

साधन्ह सिद्धि न पाइअ जौ लहि साध न तप्प।
सोई जानहिं बापुरे जो सिर करहिं कलप्प॥

का भा जोग कहानी कथें। निकसै न घिउ बाजु दधि मथें॥
जौं लहि आपु हेराइ न कोई। तौ लहि हेरत पाव न सोई॥
पेम पहार कठिन बिधि गढ़ा। सो पै चढ़ै सीस सौं चढ़ा॥
पंथ सूरिन्ह कर उठा अँकूरू। चोर चढ़ै कि चढ़ै मंसूरू॥
तू राजा का पहिरसि कंथा। तोरें घटहिं माँह दस पंथा॥
काम क्रोध तिस्ना मद माया। पाँचौ चोर न छाड़हिं काया॥
नव सेंधैं ओहि घर मँझिआरा। घर मूसहिं निसि कै उजिआरा॥

अबहूँ जागु अयाने होत आव निसु भोर।
पुनि किछु हाथ न लागिहि मूसि जाहिं जब चोर॥

सुनि सो बात राजा मन जागा। पलक न मार, पेम चित लागा॥
नैनन्ह ढरहिं मोति औ मूँगा। जस गुर खाइ रहा होइ गूँगा॥
हिएँ की जोति दीप वह सूझा। यह जो दीप अँधिअर भा बूझा॥
उलटि दिस्टि माया सौं रूठी। पलटि न फिरी जानि कै झूठी॥
जौ पै नाहीं अस्थिर दसा। जग उजार का कीजै बसा॥
गुरू बिरह चिनगी पै मेला। जो सुलगाइ लेइ सो चेला॥
अब कै फनिग भृंगि कै करा। भँवर होउँ जेहि कारन जरा॥

फूल फूल फिरि पूछौं जौं पहुँचौं ओहि केत।
तन नेवछावर कै मिलौं ज्यौं मधुकर जिउ देत॥

× × ×

पदुमावति तेहि जोग सँजोगा। परी पेम बस गहें बियोगा॥
नींद न परै रैनि जौं आवा। सेज केवाँछ जानु कोइ लावा॥
दहै चाँद औ चंदन चीरू। दगध करै तन बिरह गँभीरू॥
कलप समान रैनि हठि बाढ़ी। तिल तिल मरि जुग जुग बर गाढ़ी॥
गहै बीन मकु रैनि बिहाई। ससि बाहन तब रहै ओनाई॥
पुनि धनि सिंघ उरेहै लागै। ऐसी बिथा रैनि सब जागै॥
कहाँ सो भँवर कँवल रस लेवा। आइ परहु होइ घिरिनि परेवा॥

सो धनि बिरह पतंग होइ जरा चाह तेहि दीप।
कंत न आवहु भृंगि होइ को चंदन तन लीप॥

परी बिरह बन जानहुँ घेरी। अगम असूझ जहाँ लगि हेरी॥
चतुर दिसा चितवै जनु भूली। सो बन कवन जो मालति फूली॥
कँवल भँवर ओही बन पावै। को मिलाइ तन तपनि बुझावै॥
अंग अनल अस कँवल शरीरा। हिय भा पियर पेम की पीरा॥
चहै दरस रवि कीन्ह बिगासू। भँवर दिस्टि मँह कै सो अकासू॥
पूँछै धाइ बारि कहु बाता। तूँ जस कँवल करी रँग राता॥
केसरि बरन हिया भा तोरा। मानहुँ मनहिं भएउ कछु फोरा॥

पवनु न पावै संचरै भँवर न तहाँ बईठ।
भूलि कुरंगिनि कसि भई मनहुँ सिंघ तुइ डीठ॥

धाइ सिंघ बरु खातेउ मारी। कै तसि रहति अही जसि बारी॥
जोबन सुनेउँ कि नवल बसंतू। तेहि बन परेउ हस्ति मैमंतू॥
अब जोबन बारी को राखा। कुंजर बिरह बिधासे साखा॥

मैं जाना जोवन रस भोगू। जोवन कठिन सँताप वियोगू॥
जोवन गरुअ अपेल पहारू। सहि न जाइ जोवन कर भारू॥
जोवन अस मैमंत न कोई। नवै हस्ति जौं आँकुस होई॥
जोवन भर भादौं जस गंगा। लहरैं देइ समाइ न अंगा॥
परी अथाह धाइ हौं जोवन उदधि गँभीर।
तेहिं चितवौं चारिउँ दिसि को गहि लावै तीर॥

पदुमावति तूँ सुबुधि सयानी। तोहिं सरि समुँद न पूजै रानी॥
नदी समाहिं समुँद महँ आई। समुँद डोलि कहु कहाँ समाई॥
अबहीं कँवल करी हिय तोरा। आइहि भँवर जो तो कहँ जोरा॥
जोवन तुरै हाथ गहि लीजै। जहाँ जाइ तहँ जाइ न दीजै॥
जोवन जो रे मतंग गज अहै। गहु गिआन जिमि आँकुस गहै॥
अबहिं वारि तूँ पेम न खेला। का जानसि कस होइ दुहेला॥
गँगन दिस्टि करु जाइ तराहीं। सुरुज देखि कर आवै नाहीं॥
जब लगि पीउ मिलै तोहिं साधु पेम कै पीर।
जैसें सीप सेवाति कहँ तपै समुँद मँझ नीर॥

दहै धाइ जोवन औ जीऊ। होइ न विरह अगिनि महँ घीऊ॥
करवत सहौं होत दोइ आधा। सही न जाइ विरह कै दाधा॥
विरहा सुभर समुंद असँ भारा। भँवर मेलि जिउ लहरन्हि मारा॥
बिरह नाग होइ सिर चढ़ि डसा। औ होइ अगिनि चंदन महँ बसा॥
जोवन पंखी विरह विआधू। केहरि भयो कुरंगिनि खाधू॥
कनक वान जोगन कत कीन्हा। औ तन कठिन बिरह दुख दीन्हा॥
जोबन जलहिं बिरह मसि छुवा। फूलहिं भँवर फरहिं भा सुवा॥
जोवन चाँद उवा जस विरह भएउ संग राहु।
घटतहि घटत खीन भा कहै न पारौं काहु॥

नैन जो चक्र फिरै चहुँ ओराँ। चरचै धाइ समाइ न कोराँ॥
कहेसि पेम जौं उपना वारी। बाँधु सत्त मन डोल न भारी॥
जेहि जिय महँ सत होइ पहारू। परै पहार न बांकै वारू॥
सती जो जरै पेम पिय लागी। जौं सत हिएँ तौ सीतल आगी॥
जोबन चाँद जो चौदिसि करा। बिरह कि चिनगि चाँद पुनि जरा॥
पवन बंध होइ जोगी जती। काम बंध होइ कामिनि सती॥
आउ बसंत फूल फुलवारी। देव वार सब जैहहिं वारी॥
पुनि तुम्ह जाहु वसंत लै पूजि मनावहु देव।
जिउ पाइअ जग जनमे पिउ पाइअ कै सेव॥

जब लगि अवधि चाह सो आई। दिन जुग बर बिरहिनि कहँ जाई॥
नींद भूख अह निसि गै दोऊ। हिएं माँझ जस कलपै कोऊ॥
रोवंहि रोवँ लागे जनु चांटे। सोतहि सोत बेधे विख कांटे॥
दगध कराह जरै सब जीऊ। बेगि न आउ मलैगिरि पीऊ॥
कवन देव कहँ जाय परासौं। जेहि सुमेरू हिय लाइ गरा सौं॥
गुपुत जो फल साँसहि परगटे। अब होइ सुभर चहहिं पुनि घटे॥
भए सँजोग जौं रे अस मरना। भोगी भएँ भोग का करना॥

जोबन चंचल ढीठ है करै निकाजहिं काज।
धनि कुलवंति जो कुल धरै करि जोबन महँ लाज॥

× × ×

तेहि वियोग हीरामनि आवा। पदुमावति जानहुँ जिउ पावा॥
कंठ लागि सो हीसुर रोई। अधिक मोह जो मिलै विछोई॥
आगि बुझी दुख हियँ जो गँभोरू। नैनन्ह आइ चुवा होइ नीरू॥
रही रोइ जब पदुमिनि रानी। हँस पूछहिं सब सखी सयानी॥
मिले रहस चाहिअ भा दूना। कत रोइअ जौं मिले विछूना॥
तेहि क उतर पदुमावति कहा। बिछुरन दुक्ख हिएँ भरि रहा॥
मिला जो आइ हिएँ सुख भरा। वह दुख नैन नीर होइ वहा॥

बिछुरंता जब भेंटिऔ सो जानै जेहि नेहु।
सुक्ख सुहेला उग्गवइ दुक्ख झरै जेउँ मेहु॥

पुनि रानी हंसि कूसल पूँछा। कत गवनेहु पिंजर कै छूँछा॥
रानी तुम्ह जुग जुग सुख पाटू। छाज न पंखिहि पिंजर ठाटू॥
जौं भा पंख कहाँ थिर रहना। चाहै उड़ा पंखि जौं डहना॥
पिंजर महँ जो परेवा घेरा। आइ मँजारि कीन्ह तहँ फेरा॥
देवसेक आइ हाथ पै मेला। तेहि डर बनोबास कहँ खेला॥
तहाँ बिआध आइ नर साँधा। छूट न पाव मीचु कर बाँधा॥
ओइँ धरि वेचा बाँभन हाथाँ। जंबू दीप गएउँ तेहि साथाँ॥

तहाँ चित्र गढ़ चितउर चित्रसेनि कर राज।
टीका दीन्ह पुत्र कहँ आपु लीन्ह सिव साज॥

बैठ जो राज पिता के ठाऊँ। राजा रतनसेनि ओहि नाऊँ॥
का बरनौं धनि देस दियारा। जहँ अस नग उपना उजियारा॥
धनि माता धनि पिता बखाना। जेहि कें बंस अंस अस आना॥
लखन बतीसो कुल निरमरा। बरनि न जाइ रूप औ करा॥
ओइँ हौं लीन्ह अहा अस भागू। चाहै सोनहि मिला सोहागू॥

सो नग देखि इंछा भै मोरी। है यह रतन पदारथ जोरी॥
है ससि जोग इहै पै भानू। तहाँ तुम्हार मैं कीन्ह बखानू॥
कहाँ रतन रतनाकर कंचन कहाँ सुमेरु।
दै जौं जोरी दुहुँ लिखी मिलै सो कवनेहु फेरु॥

सुनि कै बिरह चिनगि ओहि परी। रतन पाव जौं कंचन करी॥
कठिन पेम बिरहा दुख भारी। राज छांड़ि भा जोगि भिखारी॥
मालति लागि भँवर जस होई। होइ बाउर निसरा बुधि खोई॥
कहेसि पतंग होइ धँसि लेऊँ। सिंघल दीप जाइ जिउ देऊँ॥
पुनि होहि कोउ न छाड़ अकेला। सोरह सहस कुँवर भए चेला॥
औरु गनै को संग सहाई। महादेव मढ़ मेला जाई॥
सुरुज परस दरस की ताई। चितवै चाँद चकोर की नाई॥
तुम्ह बारीं रस जोग जेहि कँवलहि जस अरघानि।
तस सूरज परगासि कै भँवर मिलाएउँ आनि॥

हीरामनि जौं कही रस बाता। सुनि कै रतन पदारथ राता॥
जस सूरुज देखत होइ ओपा। तस भा बिरह काम दल कोपा॥
पै सुनि जोगी केर बखानू। पदुमावति मन भा अभिमानू॥
कंचन जौं कसिअै कै ताता। तब जानिअ दहुँ पीत की राता॥
कंचन करी काँचहि लोभा। जौं नग होइ पाव तब सोभा॥
नग कर मरम सो जरिया जाना। जरै जो अस नग हीर पखाना॥
को अस हाथ सिंघ मुख घाला। को यह बात पिता सौं चाला॥
सरग इंद्र डरि कांपै बासुकि डरै पतार।
कहाँ अैस बर प्रिथिमी मोहिं जाग संसार॥

तूँ रानी ससि कंचन करा। वह नग रतन सूर निरमरा॥
बिरह बजागि बीच का कोई। आगि जो छुवै जाइ जरि सोई॥
आगि बुझाइ ढोइ जल काढ़ै। यह न बुझाइ आगि असि बाढ़ै॥
बिरह की आगि सूर नहिं टिका। रातिहुँ दिवस जरा औ धिका॥
खिनहिं सरग खिन जाइ पतारा। थिर न रहै तेहि आगि अपारा॥
धनि सो जीव दगध इमि सहा। तैस जरे नहिं दोसर कहा॥
सुलुगि सुलुगि भीतर होइ स्यामा। परगट होइ न कहा दुख नामा॥
काह कहौं मैं ओहि कहँ जेइ दुख कीन्ह अमेंट।
तेहि दिन आगि करौं यह बाहर होइ जेही दिन भेंट॥

हीरामनि जौं कही रस बाता। पाएउ पान भएउ मुख राता॥
चला सुआ रानी तब कहा। भा जो परावा सो कैसें रहा॥

जो निति चलै सँवारै पाँखा । आजु जो रहा कालिह को राखा ॥
न जनौं आजु कहाँ दिन उवा । आएहु मिलैं चलेहु मिलि सुवा ॥
मिलि कैं विछुरन मरन की आना । कत आएहु जौं चलेहु निदाना ॥
अनु रानी हौं रहतेउ राँधा । कैसे रहौं वचा कर बाँधा ॥
ताकरि दिस्टि अैस तुम्ह सेवा । जैस कूँज मन सहज परेवा ॥
बसै मीन जल धरती अंवा बिरखि अकास ।
जौं रे पिरीति दुहन महँ अंत होहिं एक पास ॥
आवा सुवा बैठ जहँ जोगी । मारग नैन वियोग त्रियोगी ॥
आइ पेम रस कहा सँदेसू । गोरख मिला मिला उपदेसू ॥
तुम्ह कहँ गुरू मया बहु कीन्हा । लीन्ह अदेस आदि कहँ दीन्हा ॥
सबद एक होइ कहा अकेला । गुरु जस भृंगि फनिग जस चेला ॥
भृंगि ओहि पंखिहि पै लेई । एकहिं वार छुएँ जिउ देई ॥
ताकहँ गुरू करै असि माया । नव अवतार देइ नै काया ॥
होइ अमर अस मरि कै जिया । भँवर कँवल मिलि कै मधु पिया ॥
आवै रितू बसंत जव तव मधुकर तव वासु ।
जोगी जोग जो इमि करहि सिद्धि समापति तासु ॥

× × ×

पदुमावति सव सखीं बोलाईं । चीर पटोर हार पहिराईं ॥
सीस सवन्हि के सेंदुर पूरा । सीस पूरि सव अंग सेंदूरा ॥
चंदन अगर चतुरसम भरीं । नएँ चार जानहुँ अवतरीं ॥
जनहु कँवल सँग फूली कुईं । कै सौ चाँद सँग तरईं उईं ॥
धनि पदुमावति धनि तोर नाहूँ । जेहि पहिरत पहिरा सव काहूँ ॥
बारह अभरन सोरह सिंगारा । तोहि सोहइ यह ससि संसारा ॥
ससि सो कलंकी राहुहि पूजा । तोहि निकलंक न होइ सरि दूजा ॥
काहूँ बीन गहा कर काहूँ नाद म्रिदंग ।
सब दिन अनँद गँवावा रहस कोड एक संग ॥
भै निसि धनि जसि ससि परगसी । राजैं देखि पुहुम फिरि बसी ॥
भै कातिकी सरद ससि उवा । बहुरि गंगन रवि चाहै छुवा ॥
पुनि धनि धनुक भौहँ कर फेरी । काम कटाख टँकोर सो हेरी ॥
जानहुँ नहिं कि पैज पिय खाँचौ । पिता सपथ हौं आजु न बाँचौ ॥
कालिह न होइ रहे सह रामा । आजु करौ रावन संग्रामा ॥
सेन सिंगार महूँ है सजा । गज गति चाल अंचर गति धुजा ॥
नैन समुंद्र खरग नासिका । सरवरि जूझि को मो सौं ढिका ॥
हौं रानी पदुमावति मैं जीता सुख भोग ।
तूँ सरवरि करु तासो जस जोगी जेहिं जोग ॥

हौं अस जोगि जान सब कोऊ। वीर सिंगार जिते मैं दोऊ ॥
उहाँ त समुँह रिपुन दर माहाँ। इहाँ त काम कटक तुव पाहाँ ॥
उहाँ त कोपि बैरिंदर मंडौं। इहाँ त अधर अमिअ रस खंडौं ॥
उहाँ त खरग नरिंदन्ह मारौं। इहाँ त बिरह तुम्हार संघारौं ॥
उहाँ त गज पेलौं होइ केहरि। इहाँ त कामिनि करसि हहेहरि ॥
उहाँ त लूसौं कटक खंधारू। इहाँ त जितौं तुम्हार सिंगारू ॥
उहाँ त कुंभस्थल गज नावौं। इहाँ त कुच कलसन्ह कर लावौं ॥
परा बीचु धरहरिया पेम राज कै टेक।
मानहिं भोग छहूँ रितु मिलि दूनौं होइ एक ॥

प्रथम बसंत नवल रितु आई। सुरति चैत बैसाख सोहाई ॥
चंदन चीर पहिरि धनि अंगा। सेंदुर दीन्ह बिहंसि भरि मंगा ॥
कुसुम चीर औ परिमल बासू। मलयागिरि छिरिका कविलासू ॥
सौर सुपेती फूलन्ह डासी। धनि औ कंत मिले सुखवासी ॥
पिउ संजोग धनि जोवन वारी। भँवर पुहुप सँग करहिं धमारी ॥
होइ फागु भलि चाँचरि जोरी। बिरह जराइ दीन्ह जसि होरी ॥
धनि ससि सियरि तपै पिउ सूरू। नखत सिंगार होहिं सब चूरू ॥
जेहि घर कंता रितु भली आउ बसंता निचु।
सुख बहरावहि देवहरे दुक्ख न जानहिं किचु ॥

रितु ग्रीखम कै तपिन न तहाँ। जेठ असाढ़ कंत घर जहाँ ॥
पहिरें सुरँग चीर धनि झीना। परिमल मेद रहै तन भीना ॥
पदुमावति तन सियर सुवासा। नैहर राज कंत कर पासा ॥
अधर तँबोर कपूर भिवँसेना। चंदन चरचि लाव नित वेना ॥
ओबरि जूड़ि तहाँ सोवनारा। अगर पोति सुख नेत ओहारा ॥
सेत बिछावन सौर सुपेती। भोग करहिं निसि दिन सुखसेंती ॥
भा अनंद सिंघल सब कहूँ। भागिवंत सुखिया रितु छहूँ ॥
दारिवँ दाख लेहिं रस बेरसहिं आँब सहार।
हरियर तन सुवटा कर जो अस चाखनहार ॥

रितु पावस बिरसै पिउ पावा। सावन भादौं अधिक सोहावा ॥
कोकिल बैन पांति वग छूटी। धनि निसरी जेउँ बीर बहूटी ॥
चमकै बिज्जु बरिस जग सोना। दादर मोर सबद सुठि लोना ॥
रँग राती पिय सँग निसि जागै। गरजै चमकि चौंकि कँठ लागै ॥
सीतल बुंद ऊँच चौवारा। हरियर सब देखिअ संसारा ॥
मलै समीर बास सुख बासी। बेइलि फूल सेज सुख डासी ॥
हरियर भुम्मि कुसुंभी चोला। औ पिय संगम रचा हिंडोला ॥

पौन झरक्के हिय हरख लागै सियरि बतास।
धनि जानै यह पौनु है पौनु सो अपनी आस॥
आइ सरद रितु अधिक पियारी। नौ कुवार कातिक उजियारी॥
पदुमावति भै पूनिवँ कला। चौदह चाँद उए सिंघला॥
सोरह करा सिंगार बनावा। नखतन्ह भरे सुरुज ससि पावा॥
भा निरमर सब धरनि अकासू। सेज सँवारि कीन्ह फुल डासू॥
सेत बिछावन औ उजियारी। हंसि हंसि मिलहिं पुरुख औ नारी॥
सोने फूल पिरिथिमी फूली। पिउ धनि सो धनि पिउ सो भूली॥
चखु अंजन दै खँजन देखावा। होइ सारस जोरी पिउ पावा॥
एहि रितु कंता पास जेहि सुख तिन्हके हिय माँह।
धनि हंसि लागै पिय गलै धनि गल पिय कै बाँह॥
आइ सिसिर रितु तहाँ न सीऊ। अगहन पूस जहाँ घर पीऊ॥
धनि औ पिउ महँ सीउ सोहागा। दुहूँक अंग एक मिलि लागा॥
मन सौं मन तन सौं तन गहा। हिय सौं हिय बिच हार न रहा॥
जानहुँ चंदन लागेउ अंगा। चंदन रहै न पावै संगा॥
भोग करहिं सुख राजा रानी। उन्ह लेखे सब सिस्टि जुड़ानी॥
जूझै दुहूँ जोवन सौं लागा। बिच हुत सीउ जीउ लै भागा॥
दुइ घट मिलि एकै होइ जाहीं। ऐस मिलहि तबहूँ न अघाहीं॥
हंसा केलि करहिं जेउँ सरवर कुंदहि कुरलहिं दोउ।
सीउ पुकारै ठाढ़ भा जस चकई क बिछोउ॥
रितु हेवंत संग पीउ न पाला। माघ फागुन सुख सीउ सियाला॥
सौर सुपेती महँ दिन राती। दगल चीर पहिरहिं बहु भाँती॥
घर घर सिंघल होइ सुख भोगू। रहा न कतहूँ दुख कर खोजू॥
जहँ धनि पुरुख सीउ नहिं लागा। जानहुँ काग देखि सर भागा॥
जाइ इंद्र सौं कीन्ह पुकारा। हौं पदुमावति देस निकारा॥
एहि रितु सदा संग मैं सोवा। अब दरसन हुत मारि बिछोवा॥
अब हंसि कै ससि सूरहि भेंटा। अहा जो सीउ बीच हुत मेटा॥
भएउ इंद्र कर आएसु प्रस्थावा यह सोइ।
कबहुँ काहु के प्रभुता कबहुँ काहु कै होइ॥

× × ×

नागमती चितउर पँथ हेरा। पिउ जो गए फिरि कीन्ह न फेरा॥
नागरि नारि काहुँ बस परा। तेइँ बिमोहि मोसौं चितु हरा॥
सुवा काल होइ लै गा पीऊ। पिउ नहिं लेत लेत बरु जीऊ॥

भएउ नरायन बावन करा। राज करत बलि राजा छरा॥
करन बान लीन्हेउ कै छंदू। भारत भएउ झिलमिल आनंदू॥
मानस भोग गोपीचंद भोगी। लै उपसवा जलंधर जोगी॥
लै कान्हहि भा अकरुर अलोपी। कठिन बिछोउ जिअै किमि गोपी॥
सारस जोरी किमि हरी मारि गएउ किन खग्गि।
झुरि झुरि पाँजरि धनि भई बिरह कै लागी अग्गि॥

पिउ बियोग अस बाउर जीऊ। पपिहा तस बोलै पिउ पीऊ॥
अधिक कम दगधै सो रामा। हरि जिउ लै सो गएउ पिय नामा॥
बिरह बान तस लाग न डोली। रकत पसीज भीजि तन चोली॥
सखि हिय हेरि हार मैन मारी। हहरि परान तजे अब नारी॥
खिन एक आव पेट महँ स्वाँसा। खिनहि जाइ सब होइ निरासा॥
पौनु डोलावहिं सींचहिं चोला। पहरक समुझि नारि मुख बोला॥
प्रान पयान होत केइँ राखा। को मिलाव चात्रिक कै भाखा॥
आह जो मारी बिरह की आगि उठी तेहि हाँक।
हंस जो रहा सरीर महँ पाँख जरे तन थाक॥

पाट महादेइ हिएँ न हारू। समुझि जीउ चित चेतु सँभारू॥
भँवर कँवल संग होइ न परावा। संवरि नेह मालति पहँ आवा॥
पीउ सेवाति सौं जैस पिरीती। टेकु पियास बाँधु जिय थीती॥
धरती जैस गँगन के नेहा। पलटि भरे बरखा रितु मेहा॥
पुनि बसंत रितु आव नवेली। सो रस सो मधुकर सो बेली॥
जनि अस जीउ करसि तूँ नारी। दहि तरिवर पुनि उठहिं सँभारी॥
दिन दस जल सूखा का नंसा। पुनि सोइ सरवर सोई हंसा॥
मिलहिं जो बिछुरे साजना गहि गहि भेंट गहंत।
तपनि मिरगिसिरा जे सहहिं अद्रा ते पलुहंत॥

चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा॥
धूम स्याम धौरे घन आए। सेत धुजा बगु पांति देखाए॥
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा॥
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई॥
ओनै घटा आई चहुँ फेरी। कंत उबारु मदन हौं घेरी॥
दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहि बेझ घट रहै न जीऊ॥
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा॥
जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्ब।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्ब॥

सावन बरसि मेह अति पानी। भरनि भरइ हौं बिरह झुरानी॥
लागु पुनर्बसु पीउ न देखा। भै बाउरि कहँ कंत सरेखा॥
रकत क आँसु परे भुइँ टूटी। रेंगि चली जनु बीर बहूटी॥
सखिन्ह रचा पिउ संग हिंडोला। हरियर भुइं कुसुंभि तन चोला॥
हिय हिंडोल जस डोलै मोरा। बिरह झुलावै देइ झँकोरा॥
बाट असूझ अथाह गँभीरा। जिउ बाउर भा भवै भँभीरा॥
लग जल बूड़ि जहाँ लगि ताकी। मोर नाव खेवक बिनु थाकी॥

परवत समुंद अगम बिच बन बेहड़ घन ढंख।
किमि करि भेटौं चंत तोहि ना मोहि पाँव न पंख॥

भर भादों दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अंधियारी॥
मंदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग मै धै धै डसा॥
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी॥
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा॥
बरिसै मघा झंकोरि झंकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी॥
पुरवा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी॥
धनि सूखी भरि भादौ माहाँ। अबहूँ आइ न सींचति नाहाँ॥

जल थल भरे अपूरि सब गंगन धरति मिलि एक।
धनि जोबन औगाह महँ दे बूड़त पिय टेक॥

लाग कुआर नीर जग घटा। अबहुँ आउ पिउ परभुमि लटा॥
तोहि देखे पिउ पलुहै काया। उतरा चित्त फेरि करु माया॥
उए अगस्ति हस्ति घन गाजा। तुरै पलानि चढ़े रन राजा॥
चित्रा मित मीन घर आवा। कोकिल पीउ पुकारत पावा॥
स्वाति बुंद चातिक मुख परे। सीप समुंद्र मोंति लै भरे॥
सरवर सँवरि हंस चलि आए। सारस कुरुरहिं खँजन देखाए॥
भए अवगास कास बन फूले। कंत न फिरे बिदेसहि भूले॥

बिरह हस्ति तन सालै खाइ करै तन चूर।
बेगि आइ पिय बाजहु गाजहु होइ सदूर॥

कातिक सरद चंद उजियारी। जग सीतल हौं बिरहैं आरी॥
चौदह करा कीन्ह परगासू। जानहुँ जरैं सब धरति अकासू॥
तन मन सेज करै अगिडाहू। सब कहँ चाँद मोहिं होइ राहू॥
चहूँ खंड लागै अँधियारा। जौं घर नाहिंन कंत पियारा॥
अबहूँ निठुर आव एहिं बारा। परब देवारी होइ संसारा॥

सखि झूमक गावहिं अँग मोरी। हौं झुरौं बिछुरी जेहि जोरी॥
जेहि घर पिउ सो मुनिवरा पूजा। मो कहँ बिरह सवति दुख दूजा॥

सखि मानहिं तेवहार सब गाइ देवारी खेलि।
हौं का खेलौं कंत बिनु तेहिं रही छार सिर मेलि॥

अगहन देवस घटा निसि बाढ़ी। दूभर दुख सो जाइ किमि काढ़ी॥
अब धनि देवस बिरह भा राती। जरै बिरह ज्यों दीपक बाती॥
काँपा हिया जनावा सीऊ। तौ पै जाइ होइ संग पीऊ॥
घर घर चीर रचा सब काहूँ। मोर रूप रंग लै गा नाहूँ॥
पलटि न बहुरा गा जो बिछोई। अबहूँ फिरै फिरै रँग सोई॥
सियरि अगिनि बिरहिनि हिय जारा। सुलगि सुलगि दगधै भै छारा॥
यह दुख दगध न जानै कंतू। जोबन जरम करै भसमंतू॥

पिय सौं कहेहु संदेसरा ऐ भँवरा ऐ काग।
सो धनि बिरहैं जरि गई तेहिक धुआँ हम लाग॥

पूस जाड़ थरथर तन काँपा। सुरुज जड़ाइ लंक दिसि तापा॥
बिरह बाढ़ि भा दारुन सीऊ। कंपि कंपि मरौं लेहि हरि जीऊ॥
कंत कहाँ हौ लागौं हियरें। पंथ अपार सूझ नहि नियरें॥
सौर सुपेती आवै जूड़ी। जानहुँ सेज हिवंचल बूड़ी॥
चकई निसि बिछुरै दिन मिला। हौं निसि बासर बिरह कोकिला॥
रैनि अकेलि साथ नहिं सखी। कैसें जिऔं बिछोही पँखी॥
बिरह सेचान भंवै तन चाँड़ा। जीयत खाइ मुएं नहिं छाँड़ा॥

रकत ढरा माँसू गरा हाड़ भए सब संख।
धनि सारस होइ ररि मुई आइ समेटहु पंख॥

लागेउ माँह परै अब पाला। बिरहा काल भएउ जड़काला॥
पहल पहल तन रुई जो झांपै। हहलि हहलि अधिकौ हिय कांपै॥
आइ सूर होइ तपु रे नाहाँ। तेहि बिनु जाड़ न छूटै माहाँ॥
एहि मास उपजै रस मूलू। तूँ सो भँवर मोर जोबन फूलू॥
नैन चुवहिं जस माँहुट नीरू। तेहि जल अंग लाग सर चीरू॥
टूटहिं बुंद परहिं जस ओला। बिरह पवन होइ मारै झोला॥
केहिक सिंगार को पहिर पटोरा। गियँ नहिं हार रही होइ डोरा॥

तुम्ह बिनु कंता धनि हरुई तन तिनुवर भा डोल।
तेहि पर बिरह जराइ कै चहै उड़ावा झोल॥

फागुन पवन झँकोरै बहा। चौगुन सीउ जाइ किमि सहा॥
तन जस पियर पात भा मोरा। बिरह न रहै पवन होइ झोरा॥

तरिवर झरै झरै बन ढाँखा। भइ अनपत्त फूल कर साखा ॥
करिन्ह बनाफति कीन्ह हुलासू। मो कहँ भा जग दून उदासू ॥
फाग करहि सब चाँचरि जोरी। मोहिं जिय लाय दीन्हि जसि होरी ॥
जौं पै पियहि जरत अस भावा। जरत मरत मोहि रोस न आवा ॥
रातिहु देवस इहै मन मोरें। लागौं कंत थार जेउँ तोरें ॥

यह तन जारौं छार कै कहौं कि पवन उड़ाउ।
मकु तेहि मारग होइ परौं कंत धरै जहँ पाउ ॥

चैत बसंता होइ धमारी। मोहि लेखें संसार उजारी ॥
पंचम बिरह पंच सर मारै। रकत रोइ सगरौ बन ढारै ॥
बूड़ि उठे सब तरिवर पाता। भीज मंजीठ टेसू बन राता ॥
मोरैं आँब फरैं अब लागे। अबहुँ सँवरि घर आउ सभागे ॥
सहस भाव फूली बनफती। मधुकर फिरे सँवरि मालती ॥
मो कहँ फूल भए जस कांटे। दिस्टि परत तन लागहिं चाटे ॥
भर जोबन एहु नारँग साखा। सोवा बिरह अब जाइ न राखा ॥

घिरिनि परेवा आव जस आइ परहु पिय टूटि।
नारि पराएं हाथ है तुम्ह बिनु पाव न छूटि ॥

भा बैसाख तपनि अति लागी। चोला चीर चंदन भौ आगी ॥
सुरुज जरत हिवंचल ताका। बिरह बजागि सौहँ रथ हाँका ॥
जरत बजागिनि होउ पिय छाँहाँ। आइ बुझाउ अंगारन्ह माहाँ ॥
तोहि दरसन होइ सीतल नारी। आइ आगि सों करु फुलवारी ॥
लागिउँ जरे जरे जस भारू। बहुरि जो भूँजसि तजौ न बारू ॥
सरवर हिया घटत निति जाई। टूक टूक होइ होइ बिहराई ॥
बिहरत हिया करहु पिय टेका। दिस्टि दवँगरा मेरवहु एका ॥

कँवल जो बिगसा मानसर छारहिं मिलै सुखाइ।
अबहुँ बेलि फिरि पलुहै जौं पिय सींचहु आइ ॥

जेठ जरै जग बहै लुवारा। उठै बवंडर धिकै पहारा ॥
बिरह गाजि हनिवंत होइ जागा। लंक डाह करै तन लागा ॥
चारिहुँ पवन झँकोरै आगी। लंका डाहि पलंका लागी ॥
दहि भइ स्याम नदी कालिंदी। बिरह कि आगि कठिन असि मंदी ॥
उठै आगि औ आवै आँधी। नैन न सूझ मरौं दुख बाँधी ॥
अधजर भई माँसु तन सूखा। लागेउ बिरह काग होइ भूखा ॥
माँसु खाइ अब हाड़न्ह लागा। अबहूँ आउ ।आवत सुनि भागा ॥

परवत समुंद मेघ ससि दिनअर सहि न सकहिं यह आगि।
मुहमद सती सराहिऐ जरै जो अस पिय लागि॥

तपै लाग अब जेठ असाढ़ी। भै मोकहँ यह छाजनि गाढ़ी॥
तन तिनुवर भा झूरौं खरी। मैं विरहा आगरि सिर परी॥
सांठि नाहिं लगि बात को पूँछा। बिनु जिय भएउ मूँज तन छूँछा॥
बंध नाहि औ कंध न कोई। बाक न आव कहौं केहि रोई॥
ररि दूबरि भई टेक विहूनी। थंभ नाहि उठि सकै न थूनी॥
बरसहिं नैन चुवहि घर माहाँ। तुम्ह बिनु कंत न छाजन छाँहाँ॥
कोरे कहाँ ठाट नव साजा। तुम्ह बिनु कंत न छाजन छाजा॥

अबहूँ दिस्टि मया करु छान्हिन तजु घर आउ।
मंदिल उजार होत है नव कै आनि बसाउ॥

रोइ गँवाएउ बारह मासा। सहस सहस दुख एक एक साँसा॥
तिल तिल बरिस बरिस बरु जाई। पहर पहर जुग जुग न सिराई॥
सो न आउ पिउ रूप मुरारी। जासों पाव सोहाग सो नारी॥
साँझ भए झुरि झुरि पँथ हेरा। कौनु सो घरी करै पिउ फेरा॥
दहि कोइल भै कंत सनेहा। तोला माँस रहा नहिं देहा॥
रकत न रहा विरह तन गरा। रती रती होइ नैनन्हि ढरा॥
पाव लागि चेरी धनि हाहा। चूरा नेहु जोरु रे नाहा॥

बरसि देवस धनि रोइ कै हारि परी चित झांखि।
मानुस घर घर पूँछि कै पूँछै निसरी पांखि॥

भई पुछारि लीन्ह बनवासू। बैरिनि सवति दीन्ह चिल्हवाँसू॥
कै खर बान कसै पिय लागा। जौं घर आवै अबहूँ कागा॥
हारिल भई पंथ मैं सेवा। अब तहँ पठवौं कौनु परेवा॥
धौरी पंडुक कहु पिय ठाऊँ। जौ चित रोल न दोसर नाऊँ॥
जाहि बया गहि पिय कँठ लवा। करे मेराउ सोई गौरवा॥
कोइलि भई पुकारत रही। महरि पुकारि लेहु रे दही॥
पियरि तिलोरि आव जलहंसा। बिरहा पैठि हिएँ कत नंसा॥

जेहि पंखी कहँ अढ़वौं कहि सो बिरह कै बात।
सोई पंखि जाइ डहि तरिवर होइ निपात॥

कुहुकि कुहुकि जसि कोइलि रोई। रकत आँसु घुंघुची बन बोई॥
पै करमुखी नैन तन राती। को सिराव बिरहा दुख ताती॥
जहँ जहँ ठाढ़ि होइ बनबासी। तहँ तहँ होइ घुंघुचिन्ह कै रासी॥
बुंद बुंद महँ जानहुँ जीऊ। कुंजा गुंजि करहिं पिउ पिऊ॥

तेहि दुख डहे परास निपाते। लोहू बूड़ि उठे परभाते॥
राते विंब भए तेहि लोहू। परवर पाक फाट हिय गोहूँ॥
देखिअ जहाँ सोइ होइ राता। जहाँ सो रतन कहै को बाता॥

ना पावस ओहि देसरें ना हेवंत बसंत।
ना कोकिल न पपीहरा केहि सुनि आवहि कंत॥

× × ×

यह जो पदुमिनि चितउर आनी। कुंदन कया दुवादस बानी॥
कुंदन कनक न गंध न वासा। वह सुगंध जनु कँवल बिगासा॥
कुंदन कनक कठोर सो अंगा। वह कोवंलि रँग पुहुप सुरंगा॥
ओहि छुइ पवन बिरिख जेहि लागा। सो मलयागिरि भएउ सभागा॥
काह न मूँठि भरी ओहि खेही। असि मूरति कै देयँ उरेही॥
सबै चितेर चित्र कै हारे। ओहिक चित्र कोइ करै न पारे॥
कया कपूर हाड़ जनु मोती। तेहि तें अधिक दीन्ह बिधि जोती॥

सूरुज क्रांति करा जसि निरमल नीर सरीर।
सौहँ निरखि नहि जाइ निहारी नैनन्ह आवै नीर॥

कत हौं अहा काल कर काढ़ा। जाइ धौराहर तर भौ ठाढा॥
कत वह आइ झरोखें झाँखी। नैन कुरंगिनि चितवनि बाँकी॥
बिहँसी ससि तरई जनु परी। कै सो रैनि छूटी फुलझरीं॥
चमकि बीज जस भादौं रैनी। जगत दिस्टि भरि रही उड़ैनी॥
काम कटाख दिस्टि बिख बसा। नागिनि अलक पलक महँ डसा॥
भौहँ धनुक तिल काजर ठोड़ी। वह भै धानुक हौं हियँ ओड़ी॥
मारि चली मरतहि मैं हँसा। पाछे नाग अहा ओइँ डसा॥

पाछें घालि काल सो राखा मंत्र न गारुरि कोइ।
जहाँ मँजूर पीठि ओइँ दीन्हे कासु पुकारौं रोइ॥

बेनी छोरि झारु जौं केसा। रैनि होइ जग दीपक लेसा॥
सिर हुति सोहरि परहिं भुइँ बारा। सगरे देस होइ अँधियारा॥
जानहुँ लोटहिं चढ़े भुवंगा। बेधे बास मलैगिरि संगा॥
सगबगाहिं बिख भरे बिसारे। लहरिआहिं लहकहि अति कारे॥
लुरहिं मुरहिं मानहिं जनु केली। नाग चढ़ा मालति की बेली॥
लहरै देइ जानहुँ कालिंदी। फिरि फिरि भँवर भए चित फंदी॥
चवँर ढरत आछहिं चहुँ पासा। भवँर न उड़हिं जो लुबुधे बासा॥

होइ अँधियार बीजु खन लोकै जबहिं चीर गहि झाँपु।
केस काल ओइ कत मै देखे सँवरि सँवरि जिय काँपु॥

कनक माँग जो सेंदुर रेखा। जनु बसंत राता जग देखा॥
कै पत्रावलि पाटी पारी। औ रुचि चित्र बिचित्र सँवारी॥
भएउ उरेह पुहुप सब नामा। जनु बग बगरि रहे घन स्यामा॥
जमुँना माँझ सुरसती माँगा। दुहुँ दिसि चित्र तरंगहि गाँगा॥
सेंदुर रेख सो ऊपर राती। बीर बहूटिन्ह की जनु पाँती॥
बलि देवता भए देखि सेंदुरू। पूजै माँग भोर उठि सूरू॥
भोर साँझ रवि होइ जो राता। ओहीं सो सेंदुर राता गाता॥

बेनी कारी पुहुप लै निकसी जमुना आइ।
पूजा इंद्र अनंद सो सेंदुर सीस चढ़ाइ॥

दुइज लिलाट अधिक मनि करा। संकर देखि माँथ भुइँ धरा॥
एहि निति दुइज जगत महँ दीसा। जगत जोहारै देइ असीसा॥
ससि होइ छपी न सरबरि छाजै। होइ जो अमावस छपि मन लाजै॥
तिलक सँवारि जो चूनी रची। दुइज माहँ जानहुँ कचपची॥
ससि पर करवत सारा राहू। नखतन्ह भरा दीन्ह परदाहू॥
पारस जोति लिलाटहि ओती। दिस्टि जो करै होइ तेहि जोती॥
सिरी जो रतन माँग बैसारा। जानहुँ गँगन टूट निसि तारा॥

ससि औ सूर जो निरमल तेहि लिलाट की ओप।
निसि दिन चलहिं न सरबरि पावहिं तपि तपि होहिं अलोप॥

भौंहैं स्याम धनुक जनु चढ़ा। बेझ करै मानुस कहँ गढ़ा॥
चाँद कि मूँठि धनुक तहँ ताना। काजर पनच बरुनि बिख बाना॥
जा सहुँ फेर छोहाइ न मारे। गिरिवर टरहिं सो भौहँन्ह टारे॥
सेतबंध जेइँ धनुक बिडारा। उहौ धनुक भौहँन्ह सौं हारा॥
हारा धनुक जो बेधा राहू। औरु धनुक कोइ गनै न काहू॥
कत सो धनुक मैं भौहँन्हि देखा। लाग बान तेत आव न लेखा॥
तेत बानन्ह झाँझर भा हिया। जेहि अस मार सो कैसें जिया॥

सोत सोत तन बेधा रोवँ रोवँ सब देह।
नस नस महँ भै सालहिं हाड़ हाड़ भए बेह॥

नैन चतुर वै रूप चितेरे। कँवल पत्र पर मधुकर घेरे॥
समुँद तरंग उठहि जनु राते। डोलहिं तस घूमहिं जनु माते॥
सरद चंद महँ खंजन जोरी। फिरि फिरि लरहि अहोर बहोरी॥
चपल बिलोल डोल रह लागी। थिर न रहहिं चंचल बैरागी॥
निरखि अबाहि न हत्या हतें। फिरि फिरि स्रवनन्हि लागहिं मतें॥

अंग सेत मुख स्याम जो ओहीं । तिरिछ चलहि खिन सूध न होहीं ॥
सुर नर गंध्रप लालि कराहीं । उलटे चलहिं सरग कहँ जाहीं ॥
अस वै नैन चक्र दुइ भवँर समुँद उलथाहिं ।
जनु जिउ घालि हिडोरैं लै आवहिं लै जाहि ॥
नासिक खरग हरे धनि कीरू । जोग सिंगार जिते औ वीरू ॥
ससि मुख सौहँ खरग गहि रामा । रावन सौं चाहै संग्रामा ॥
दुहूँ समुंद्र रचा जेन्हँ वीरू । सेत बंध बांधेउ नल नीरू ॥
तिलक पुहुप अस नासिक तासू । औ सुगंध दीन्हेउ विधि बासू ॥
करन फूल पहिरें उजियारा । जानु सरद ससि सोहिल तारा ॥
सोहिल चाहि फूल वह गढ़ा । बिगसि फूल सब चाहहिं चढ़ा ॥
अस वह फूल वास कर आकर भा नासिक सनमंध ।
जेत फूल ओहि फूलहिं हिरगे ते सब भए सुगंध ॥
अधर सुरंग पान अस खीने । राते रंग अमिअ रस भीने ॥
आछहिं भीज तँबोर सों राते । जनु गुलाल दीसहिं बिहँसाते ॥
मानिक अधर दसन नग हेरा । बैन रसाल खाँड मकु मेरा ॥
काढ़े अधर डाभ सौं चीरी । रुहिर चुवैं जौं खंडहि वीरी ॥
धारे रसहिं रसहिं रस गीले । रकत भरे वै सुरंग रँगीले ॥
जनु परभात रात रबि रेखा । बिगसे वदन कवँल जनु देखा ॥
अलक भुवंगिनि अधरन्ह राखा । गहै जो नागिनि सो रस चाखा ॥
अधर धरहिं रस पेम का अलक भुअंगिनि बीच ।
तब अंब्रित रस पाउ पिउ ओहि नागिनि गहि खींचु ॥
दसन स्याम पानन्ह रँग पाके । बिहँसत कवँल भँवर अस ताके ॥
चमतकार मुख भीतर होई । जस दारिवँ औ स्याम मकोई ॥
चमके चौक बिहँसु जौं नारी । बीज चमक जस निसि अँधियारी ॥
सेत स्याम अस चमकै डीठी । स्याम हीर दुहुँ पांति बईठी ॥
केइँ सो गढ़े अस दसन अमोला । मारै बीज बिहँसि जौं बोला ॥
रतन भीज रँग मसि भै स्यामा । ओही छाज पदारथ नामा ॥
कत वह दरस देखि रँग भीने । लै गौ जोति नैन भौ खीने ॥
दसन जोति होइ नैन पँथ हिरदै माँझ बईठि ।
परगट जग अँधियार जनु गुपुत ओहि पै डीठि ॥
रसना सुनहु जो कह रस बाता । कोकिल बैन सुनत मन राता ॥
अंब्रित कौंप जीभ जनु लाई । पान फूल असि बात मिठाई ॥
चात्रिक बैन सुनत होइ सौंती । सुनै सो परै पेम मद मौंती ॥

बीरौ सूख पाव जस नीरू। सुनत बैन तस पलुह सरीरू ॥
बोल सेवाति बुंद जेंउ परहीं। स्रवन सीप मुख मोंती भरहीं ॥
धनि वह बैन जो प्रान अधारू। भूखे स्रवननि देहिं अहारू ॥
ओन्ह बैनन्ह कै काहि न आसा। मोहहिं मिरिग बिहँस भरि स्वाँसा ॥

कंठ सारदा मोहहिं जीभ सुरसती काह।
इंद्र चंद्र रवि देवता सबै जगत मुख चाह ॥

स्रवन सुनहु जो कुंदन सीपी। पहिरें कुंडल सिंघल दीपी ॥
चाँद सुरुज दुहुँ दिसि चमकाहीं। नखतन्ह भरे निरखि नहिं जाहीं ॥
खिन खिन करहिं बिज्जु अस कांपे। अंबर मेघ रहहिं नहिं झांपे ॥
सूक सनीचर दुहुँ दिसि मतें। होहिं निरार न स्रवनन्हि हुतें ॥
कॉपत रहहिं बोल जौं बैना। स्रवनन्हि जनु लागहिं फिरि नैना ॥
जो जो बात सखिन्ह सौं सुना। दुहुँ दिसि करहिं सीस वै धुना ॥
खूँट दुहूँ धुव तरई खूँटी। जानहुँ परहिं कचपचीं टूटी ॥

वेद पुरान ग्रंथ जत सबै सुने सिखि लीन्ह।
नाद विनोद राग रस विंदक स्रवन ओहि विधि दीन्ह ॥

कँवल कपोल ओहि अस छाजे। और न काहु दैयँ अस साजे ॥
पुहुप पंक रस अमिअ सँवारे। सुरंग गेंदु नारँग रतनारे ॥
पुनि कपोल बाएँ तिल परा। सो तिल बिरह चिनिगि कै करा ॥
जो तिल देख जाइ डहि सोई। बाईं दिस्टि काहु जनि होई ॥
जानहुँ भँवर पदुम पर टूटा। जीउ दीन्ह औ दिएहुँ न छूटा ॥
देखत तिल नैनन्ह गा गाड़ी। औरु न सूझै सो तिल छाँड़ी ॥
तेहि पर अलक मंजरी डोला। छुअै सो नागिनि सुरँग कपोला ॥

रख्या करै मँजूर ओहि हिरदैं ऊपर लोट।
केहि जुगुति कोइ छुइ सकै दुइ परवत की ओट ॥

गीवँ मँजूर केरि जनु ठाढ़ी। कुंदे फेरि कुंदेरैं काढ़ी ॥
धन्य गीवँ का बरनौं करा। बाँक तुरंग जानु गहि धरा ॥
घुरत परेवा गीवँ उँचावा। चहै बोल तवँचूर सुनावा ॥
गीवँ सुराही कै असि भई। अमिय पियाला कारन नई ॥
पुनि तिहि ठाउँ परी तिरि रेखा। नैन ठाँव जिउ होइ सो देखा ॥
सूरुज क्रांति करा निरमली। दीसै पीकि जाति हिय चली ॥
कंज नार सोहै गिवँ हारा। साजि कँवल तेहि ऊपर धारा ॥

नागिनि चढ़ी कवँल पर चढ़ि कै बैठ कमंठ।
जो ओहि काल गहि हाथ पसारै सो लागै ओहि कंठ ॥

कनक डंड भुज बनीं कलाई। डाँड़ी कँवल फेरि जनु लाई॥
चँदन गाभ की भुजा सँवारी। जनु सुमेल कौंवलि पौंनारी॥
तिन्ह डांड़िन्ह वह कँवल हथोरी। एक कँवल कै दूनौ जोरी॥
सहजहिं जानहुँ मेंहदी रची। मुकुता लै जनु घुँघुची पची॥
कर पल्लौ जो हथोरिन्ह साथाँ। वै सुठि रकत भरे दुहुँ हाथाँ॥
देखत हिए काढ़ि जिउ लेहीं। हिया काढ़ि लै जाहिं न देहीं॥
कनक अँगूठी औ नग जरी। वह हत्यारिनि नखतन्ह भरी॥

जैसनि भुजा कलाई तेहि विधि जाइ न भाखि।
कंगन हाथ होइ जहँ तहँ दरपन का साखि॥

हिया थार कुच कनक कचोरा। साजे जनहुँ सिरीफल जोरा॥
एक पाट जनु दूनौं राजा। स्याम छत्र दूनहुँ सिर साजा॥
जानहुँ लट्टू दुऔ एक साथाँ। जग भा लट्टू चढ़ै नहिं हाथाँ॥
पातर पेट आहि जनु पूरी। पान अधार फूल असि कोवँरी॥
रोमावलि ऊपर लट भूमा। जानहुँ दुऔ स्याम औ रूमा॥
अलक भुवंगिनि तेहि पर लोटा। हँगुरि एक खेल दुइ गोटा॥
बाँह पगार उठे कुच दोऊ। नाग सरन उन्ह नाव न कोऊ॥

कैसेहुँ नावहिं न नाएँ जोबन गरब उठान।
जो पहिलें कर लावै सो पाछें रति मान॥

भिंगि लंक जनु माँझ न लागा। दुइ खँड नलिनि माँझ जस तागा॥
जब फिरि चली देख मैं पाछे। आछरि इंद्र केरि जस काछें॥
उजहि चली जनु भा पछिताऊ। अबहूँ दिस्टि लागि ओहि भाऊ॥
ओहि के गवन छपि अछरीं गई। भई अलोप नहिं परगट भई॥
हंस लजाइ समुँद कहँ खेले। लाज गयंद धूरि सिर मेले॥
जगत इस्त्रीं देखी महूँ। उदै अस्त असि नारि न कहूँ॥
महि मंडल तौ अैस न कोई। ब्रह्म मँडल जौं होइ तो होई॥

बरनी नारि तहाँ लगि दिस्टि भरोखें आइ।
औरु जो रही अदिस्टि भै सो कछु बरनि न जाइ॥

राघौ जौं धनि बरनि सुनाई। सुना साह मुरुछा गति आई॥
जनु मूरति वह परगट भई। दरस देखाइ तवहिं छपि गई॥
जो जो मँदिल पदुमिनी लेखी। सुनत सो कवँल कुमुद जेउँ देखी॥
मालति होइ असि चित्त पईठी। औरु पुहुप कोइ आव न डीठी॥
मन हवै भवँर भँवै बैरागा। कँवल छांड़ि चित औरु न लागा॥
चाँद के रंग सुरुज जस राता। अब नखतन्ह सौं पूँछ न बाता॥
तब अलि अलाउदीन जग सूरू। लेउँ नारि चितउर कै चूरू॥

जौं वह मालति मानसर अलि न चलंथे जात।
चितउर महँ जो पदुमिनी फेरि वहै कहु बात॥

ए जग सूर कहाँ तुम्ह पाहाँ। और पाँच नग चितउर माहाँ॥
एक हंस है पंखि अमोला। मोती चुनै पदारथ बोला॥
दोसर नग जेहि अंम्रित बसा। सब बिख हरै जहाँ लगि डसा॥
तीसर पाहन परस पखाना। लोह छुवत होइ कंचन बाना॥
चौथ अहै सादूर अहेरी। जेहिं बन हस्ति धरे सब घेरी॥
पाँचौ है सोनहा लागना। राज पंखि पंखी कर जाना॥
हरिन रोझ कोइ बाँच न भागा। जस मैनान तीत उड़ि लागा॥

नग अमोल अस पांचौं मान समुँद ओहि दीन्ह।
इसकंधर नहि पाएउ जौं रे समुँद धँसि लीन्ह॥

पान दीन्ह राघौ पहिरावा। दस गज हस्ति घोर सौ पावा॥
औ दोसर कंगन कर जोरी। रतन लागि तेहि तीस करोरी॥
लाख दिनार देवाई जेंवा। दारिद हरा समुद कै सेवा॥
हौं जेहि देवस पदुमिनी पावौं। तोहि राघौ चितउर बैसावौं॥
पहिलें के पांचौं नग मूँठी। सो नग लेउँ जो कनक अँगूठी॥
मरजा सेर पुरुख बरियारू। ताजन नाग सिंघ असवारू॥
दीन्ह पत्र लिखि वेगि चलावा। चितउर गढ़ राजा पहँ आवा॥

पत्र दीन्ह लै राजहि किरिपा लिखी अनेग।
सिंघल की जो पदुमिनी सो चाहौं यहिं वेगि॥

× × ×

सखिन्ह बुझाई दगधि अपारा। गै गोरा बादिल के बारा॥
कँवल चरन भुइँ जरम न धरे। जात तहाँ लगि छाला परे॥
निसरि आए सुनि छत्री दोऊ। तस कांपे जस काँप न कोऊ॥
केस छोरि चरनन्ह रज झारे। कहाँ पाउ पदुमावति धारे॥
राखा आनि पाट सोनवानी। बिरह बियोग न बैठी रानी॥
चँवरिधारि होइ चँवर डोलावहिं। माथें छाहँ रजायसु पावहिं॥
उलटि बहा गंगा कर पानी। सेवक बार न आवै रानी॥

का अस कीन्ह कस्ट जिय जो तुम्ह करत न छाज।
अग्यों होइ वेगि कै जीव तुम्हारे काज॥

कहै रोइ पदुमावति बाता। नैनन्ह रकत देखि जग राता॥
उलथि समुँद जस मानिक भरे। रोई रुहिर आँसु तस ढरे॥
रतन के रंग नैन पै वारौं। रती रती कै लोहू ढारौं॥

कँवलन्ह ऊपर भवर उड़ावौं । सूरज जहाँ तहाँ लै आवौं ॥
हिय कै हरद बदन कै लोहू । जिउ बलि देउँ सो सँवरि बिछोहू ॥
परहिं आँसु सावन जस नीरू । हरियर भुइँ कुसुंभि तन चीरू ॥
चढ़े भुवंग लुरहिं लट केसा । भै रोवत जोगिनि के भेसा ॥

वीर बहूटी होइ चली तबहूँ रहहिं न आँसु ।
नैनन्हि पंथ न सूझै लागेउ भादवँ मासु ॥

तुम्ह गोरा बादिल खँभ दोऊ । जस भारथ तुम्ह औरु न कोऊ ॥
दुख बिरिखा अब रहै न राखा । मूल पतार सरग भइ साखा ॥
छाया रही सकल महि पूरी । बिरह बेलि होइ बाढ़ि खजूरी ॥
तेहि दुख केत बिरिख बन बाढ़े । सीस उघारें रोवहि ठाढ़े ॥
पुहुमी पूरि सायर दुख पाटा । कौड़ी भई बिहरि हिय फाटा ॥
बिहरा हिए खजूरि क बिया । बिहरै नहिं यह पाहन हिया ॥
पिय जहँ बंदि जोगिनि होइ धावौं । हौं होइ बंदि पियहि मोकरावौं ॥

सूरज गहन गरासा कवँल न बैठे पाट ।
महूँ पंथ तेहि गवनब कंत गए जेहि बाट ॥

गोरा बादिल दुवौ पसीजे । रोवत रुहिर सीस पाँ भीजे ॥
हम राजा सौं इहै कोहानें । तुम्ह न मिलहु धरियेहु तुरुकाने ॥
जो मत सुनि हम आइ कोंहाई । सो निआन हम माँथें आई ॥
जब लगि जियहिं न ताकहिं दोहू । स्यामि जिऔ कस जोगिनि होहू ॥
उऔ अगस्ति हस्ति घन गाजा । नीर घटा घर आइहि राजा ॥
का बरखा अगस्ति की डीठी । परै पलानि तुरंगम पीठी ॥
बेधौं राहु छड़ावौं सूरू । रहै न दुख कर मूल अँकूरू ॥

वह सूरज तुम्ह ससि सरद आदि मिलावहिं सोइ ।
तस दुख महँ सुख उपनै रैनि माँझ दिन होइ ॥

लेहु पान बादलि औ गोरा । केहि लै देउँ उपमा तुम्ह जोरा ॥
तुम्ह सावँत नहिं सरवरि कोऊ । तुम्ह अंगद हनिवँत सम दोऊ ॥
तुम्ह बलबीर जाज जगदेऊ । तुम्ह मुस्टिक औ मालकंडेऊ ॥
तुम्ह अरजुन औ भीम भुआरा । तुम्ह नल नील मेंड़ देनिहारा ॥
तुम्ह टारन भारन जग जाने । तुम्ह सो परसु औ करन बखाने ॥
तुम्ह मोरे बादिल औ गोरा । काकर मुख हेरौं बंदिछोरा ॥
जस हनिवँत राघौ बंदि छोरी । तस तुम्ह छोरि मिलावहु जोरी ॥

जैसें जरत लखा ग्रिहँ साहस कीन्हेउ भीवँ ।
जरत खंभ तस काढ़हु कै पुरुखारथ जीवँ ॥

गोरा बादिल बीरा लीन्हा । जस अंगद हनिवंत बर कीन्हा ।।
साजि सिंहासन तानहिं छातू । तुम्ह माँगे जुग जुग अहिवातू ।।
कवँल चरन भुइँ धरत दुखावहु । चढ़हु सिंघासन मंदिल सिधावहु ।।
सुनि सूरज कवंलहि जिय जागा । केसरि बरन बोल हियँ लागा ।।
जनु निसि महँ रवि दीन्ह देखाई । भा उदोत मसि गई बिलाई ।।
चढ़ि सो सिंघासन झमकत चली । जानहुँ दुइज चाँद निरमली ।।
औ संग सखी कमोद तराई । ढारत चवर मंदिल लै आई ।।

देखि सो दुइज सिंघासन संकर धरा लिलाट ।
कवँल चरन पदुमावति लै बैसारेन्हि पाट ।।

× × ×

पदुमावति मन अही जो झूरी । सुनत सरोवर हिय गा पूरी ।।
अद्रा महँ हुलास जस होई । सुख सोहाग आदर भा सोई ।।
नलिनि निकंदी लीन्ह अँकूरू । उठा कँवल उगवा सुनि सूरू ।।
पुरइनि पूरि सँवारे पाता । पुनि बिधि आनि धरा सिर छाता ।।
लागे उदै होइ जस भोरा । रैनि गई दिन कीन्ह बहोरा ।।
अस्तु अस्तु सुनि भा किलकिला । आगें मिलै कटक सब चला ।।
देखि चाँद असि पदुमिनि रानी । सखी कमोद सबै बिगसानी ।।

गहन छूट दिनकर कर ससि सौं होइ मेराउ ।
मंदिल सिंघासन साजा बाजा नगर बधाउ ।।

बिहंसि चंद दे माँग सेंदुरा । आरति करै चली जहँ सूरा ।।
औ गोहने सब सखीं तराई । चितउर की रानी जहँ ताईं ।।
जनु बसंत रितु फूली छूटी । कै सावन महँ बीरबहूटी ।।
भा अनंद बाजा पंच तूरा । जगत रात होइ चला सेंदूरा ।।
राजा जनहुँ सूर परगासा । पदुमावति मुख कँवल बिगासा ।।
कँवल पाय सूरुज के परा । सूरुज कँवल आनि सिर धरा ।।
दुंद मृदंग मुर ढोलक बाजे । इंद्र सबद सो सबद सुनि लाजे ।।

सेंदुर फूल तंबोर सिउँ सखी सहेलीं साथ ।
धनि पूजै पिय पाय दुइ पिय पूजै धनि माथ ।।

पूजा कवनि देउँ तुम्ह राजा । सबै तुम्हार आव मोहि लाजा ।।
तन मन जोबन आरति करेऊँ । जीउ काढ़ि नेवछावरि देऊँ ।।
पंथ पूरि कै दिस्टि बिछावौं । तुम्ह पगु धरहु नैन हौं लावौं ।।
पाय बुहारत पलक न मारौं । बरुनिन्ह सेंति चरन रज झारौं ।।
हिया सो मंदिल तुम्हारे नाहाँ । नैनन्हि पंथ आवहु तेहि माहाँ ।।

बैठहु पाट छत्र नव फेरी। तुम्हरें गरब गरुइ हौं चेरी ॥
तुम्ह जियं हौं तन जौं अति मया। कहै जो जीउ करे सो कया ॥
जौं सूरुज सिर ऊपर आवा तब सो कँवल सुख छात।
नाहिं तौ भरे सरोवर सूखै पुरइनि पात ॥

परसि पाय राजा के रानी। पुनि आरति बादिल कहँ आनी ॥
पूजे बादिल के भुजडंडा। तुरिअ के पाउ दाबि कर खंडा ॥
यह गज गवन गरब सिउं मोरा। तुम्ह राखा बादिल औ गोरा ॥
सेंदुर तिलक जो आँकुस अहा। तुम्ह माँथें राखा तब रहा ॥
काज रतन तुम्ह जिय पर खेला। तुम्ह जिय आनि मंजूसा मेला ॥
राखेउ छात चँवर औ ढारा। राखेउ छुद्रघंट झनकारा ॥
तुम्ह हनिवंत होइ धुजा बईठे। तब चितउर पिय आइ पईठे ॥
पुनि गज हस्ति चढ़ावा नेत बिछावा बाट।
बाजत गाजत राजा आइ बैठ सुख पाट ॥

निसि राजैं रानी कंठ लाई। पिय मरजिया नारि ज्यौं पाई ॥
रंग के राजैं दुख अगुसारा। जियत जीव नहिं करौ निनारा ॥
कठिन बंदि लै तुरुकन्ह गहा। जौं सँवरौं जिय पेट न रहा ॥
खनि गड़ ओबरी महँ लै मेला। साँकर औ अँधियार दुहेला ॥
राँध न तहँवा दोसर कोई। न जनौं पवन पानि कस होई ॥
खिन खिन जीव संडासिन्ह आँका। आवहिं डोंब छुवावहिं बाँका ॥
बीछी साँप रहहिं निति पासा। भोजन सोइ डसहिं हर स्वाँसा ॥
आस तुम्हारे मिलन की रहा जीव तब पेट।
नाहिं तो होत निरास जौं कत जीवन कत भेंट ॥

तुम्ह पिय भँवर परी अति बेरा। अब दुख सुनहु कँवल धनि केरा ॥
छांड़ि गएहु सरवर महँ मोहीं। सरवर सूखि गएउ बिनु तोहीं ॥
केलि जो करत हंस उड़ि गएऊ। दिनअर मीत सो बैरी भएऊ ॥
गई भीर तजि पुरइन पाता। मुइउँ धूप सिर रहा न छाता ॥
भइउँ मीन तन तलफै लागा। बिरहा आइ बैठ होइ कागा ॥
काग चोंच तस साल न नाहीं। जसि बंदि तोरि साल हिय माहीं ॥
कहेउँ काग अब लै तहँ जाही। जहँवाँ पिव देखै मोहि खाही ॥
काग निग्द्धि गीध अस का मारहिं हौं मंदि।
एहि पछताएँ सुठि मुइउँ गइउँ न पिय सँग बंदि ॥

तेहि ऊपर का कहौं जो मारी। बिखम पहार परा दुख भारी ॥
दूति एक देवपाल पठाई। बाँभनि भेस छरै मोहि आई ॥

कहै तोरि हौं आदि सहेली । चलु लै जाउँ भँवर जहँ बेली ।।
तब मैं ग्यान कीन्ह सतु बाँधा । ओहि के बोल लागु तिय साँधा ।।
कहेऊँ कँवल नहिं करै अहेरा । जौं है भँवर करिहि सै फेरा ।।
पाँच भूत आतमा नेवारेउँ । बारहि बार फिरत मन मारेउँ ।।
औ समुझाएउँ आपन हियरा । कंत न दूरि अहै सुठि नियरा ।।

बास फूल घिउ छीर जस निरमल नीर मंटाहँ ।
तस कि घटे घट पुरुख ज्यों रे अगिनि कटाहँ ।।

× × ×

पदुमावति नइ पहिरि पटोरी । चली साथ होइ पिय की जोरी ।।
सूरुज छपा रैनि होइ गई । पूनिवँ ससि सो अमावस भई ।।
छोरे केस मोति लर छूटे । जानहुँ रैनि नखत सब टूटे ।।
सेंदुर परा जो सीस उघारी । आगि लाग जनु जग अँधियारी ।।
एहि देवस हौं चाहति नाहाँ । चलौं साथ बाहौं गल बाँहाँ ।।
सारस पंखि न जियै निनारे । हौं तुम्ह बिनु का जियौं पियारे ।।
नेवछावरि कै तन छिरिआवौं । छार होइ संगि बहुरि न आवौं ।।

दीपक प्रीति पतंग जेउँ जनम निवाह करेउँ ।
नेवछावरि चहुँ पास होइ कंठ लागि जिउ देउँ ।।

नागमती पदुमावति रानीं । दुवौ महासत सती बखानीं ।।
दुवौ आइ चढ़ि खाट बईठीं । औ सिवलोक परा तिन्ह डीठीं ।।
बैठौ कोइ राज औ पाटा । अन्त सबै बैठिहि एहि खाटा ।।
चंदन अगर काढ़ि सर साजा । औ गति देइ चले लै राजा ।।
बाजन बाजहिं होइ अकूता । दुऔ कंत लै चाहहि सूता ।।
एक जो बाजा भएउ बियाहू । अब दोसरें होइ ओर निबाहू ।।
जियत जो जरहिं कंत की आसा । मुँए रहसि बैठहिं एक पासा ।।

आजु सूर दिन अँथवा आजु रैनि ससि बूड़ि ।
आजु नाँचि जिय दीजिअ आजु आगि हम जूड़ि ।।

सर रचि दान पुन्नि बहु कीन्हा । सात बार फिरि भाँवरि दीन्हा ।।
एक भँवरि भै जो रे बियाहीं । अब दोसरि दै गोहन जाहीं ।।
लै सर ऊपर खाट बिछाई । पौढ़ीं दुवौ कंत कँठ लाई ।।
जियत कंत तुम्ह हम कँठ लाईं । मुए कंठ नहिं छोंड़हिं साँई ।।
औ जो गांठि कंत तुम्ह जोरी । आदि अंत दिन्हि जाइ न छोरी ।।
एहि जग काह जो अछहि न आथी । हम तुम्ह नाहँ दुहूँ जग साथी ।।
लागीं कंठ आगि देइ होरी । छार भईं जरि अंग न मोरीं ।।

रातीं पिय के नेह गइँ सरग भएउ रतनार।
जो रे उवा सो अँथवा रहा न कोई संसार॥

ओइ सह गवन भई जब ताईं। पातसाहि गढ़ छेंका आईं॥
तब लगि सो औसर होइ बीता। भए अलोप राम औ सीता॥
आइ साहि सब सुना अखारा। होइ गा राति देवस जो वारा॥
छार उठाइ लीन्हि एक मूँठी। दीन्हि उड़ाइ पिरिथमी झूठी॥
जौ लगि ऊपर छार न परई। तब लगि नाहिं जो तिस्ना मरई॥
सगरैं कटक उठाई माटी। पुल बाँधा जहँ जहँ गढ़ घाटी॥
भा ढोवा भा जूझि असूझा। बादिल आइ पँवरि होइ जूझा॥

जौंहर भईं इस्तिरी पुरुख भए संग्राम।
पातसाहि गढ़ चूरा चितउर भा इसलाम॥

तुलसी दास

जो सुमिरत सिधि होय गन नायक करिवर वदन।
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥
मूक होइ वाचाल पंगु चढ़इ गिरिवर गहन।
जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन॥
नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन वारिज नयन।
करउ सो मम उर धाम सदा छीर सागर सयन॥
कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन।
जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन॥
बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रवि कर निकर॥

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा॥
अमिअ मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू॥
सुकृति संभु तन विमल बिभूती। मंजुल मंगल मोद प्रसूती॥
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी। किएँ तिलक गुन गन वस करनी॥
श्रीगुरु पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिव्य दृष्टि हियँ होती॥
दलन मोह तम सो सप्रकासू। बड़े भाग उर आवइ जासू॥
उघरहिं बिमल विलोचन ही के। मिटहिं दोष दुख भव रजनी के॥
सूझहिं राम चरित मनि मानिक। गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक॥

जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखत सैल वन भूतल भूरि निधान ॥

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन । नयन अमिअ दृग दोष बिभंजन ॥
तेहिं करि विमल विवेक बिलोचन । वरनउँ राम चरित भव मोचन ॥
बंदउँ प्रथम महीसुर चरना । मोह जनित संसय सब हरना ॥
सुजन समाज सकल गुन खानी । करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी ॥
साधु चरित सुभ चरित कपासू । निरस बिसद गुनमय फल जासू ॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । बंदनीय जेहिं जग जस पावा ॥
मुद मंगलमय संत समाजू । जो जग जंगम तीरथराजू ॥
राम भक्त जहँ सुरसरि धारा । सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा ॥
बिधि निषेधमय कलि मल हरनी । करम कथा रविनंदनि वरनी ॥
हरि हर कथा विराजति बेनी । सुनत सकल मुद मंगल देनी ॥
बटु बिस्वास अचल निज धरमा । तीरथराज समाज सुकरमा ॥
सबहि सुलभ सब दिन सब देसा । सेवत सादर समन कलेसा ॥
अकथ अलौकिक तीरथराऊ । देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ ॥

सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग ।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग ॥

मज्जन फल पेखिअ ततकाला । काक होहिं पिक बकउ मराला ॥
सुनि आचरज करै जनि कोई । सतसंगति महिमा नहिं गोई ॥
बालमीक नारद घटजोनी । निज निज मुखनि कही निज होनी ॥
जलचर थलचर नभचर नाना । जे जड़ चेतन जीव जहाना ॥
मति कीरति गति भूति भलाई । जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई ॥
सो जनाव सतसग प्रभाऊ । लोकहुँ वेद न आन उपाऊ ॥
बिनु सतसंग विवेक न होई । राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥
सतसंगत मुद मंगल मूला । सोइ फल सिधि सब साधन फूला ॥
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई । पारस परस कुधात सुहाई ॥
बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं । फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ॥
बिधि हरि हर कबि कोविद बानी । कहत साधु महिमा सकुचानी ॥
सो मो सन कसि जात न कैसें । साक बनिक मनि गुन गन जैसें ॥

बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ ॥

संत सरल चित जगत हित जानि सुभाउ सनेहु ।
बालबिनय सुनि करि कृपा राम चरन रति देहु ॥

बहुरि बंदि खल गन सतिभाएँ । जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ ॥
पर हित हानि लाभ जिन्ह केरें । उजरें हरष बिषाद बसेरें ॥
हरि हर जस राकेस राहु से । पर अकाज भट सहसबाहु से ॥
जे पर दोष लखहिं सहसाखी । पर हित घृत जिन्ह के मन माखी ॥
तेज कृसानु रोष महिषेसा । अघ अवगुन धन धनी धनेसा ॥
उदय केत सम हित सबही के । कुंभकरन सम सोवत नीके ॥
पर अकाजु लगि तनु परिहरहीं । जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं ॥
बंदउँ खल जस सेष सरोषा । सहस बदन बरनइ पर दोषा ॥
पुनि प्रनवउँ पृथुराज समाना । पर अघ सुनइ सहस दस काना ॥
बहुरि सक्र सम बिनवउँ तेही । संतत सुरानीक हित जेही ॥
बचन बज्र जेहि सदा पिआरा । सहस नयन पर दोष निहारा ॥

उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति ।
जानि पानि जुग जोरि जन बिनती करइ सप्रीति ॥

मै अपनी दिसि कीन्ह निहोरा । तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा ॥
बायस पलिअहि अति अनुरागा । होहि निरामिष कबहुँ कि कागा ॥
बंदउँ संत असज्जन चरना । दुखप्रद उभय बीच कछु बरना ॥
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं । मिलत एक दुख दारुन देही ॥
उपजहि एक संग जग माहीं । जलज जोंक जिमि गुन बिलगाही ॥
सुधा सुरा सम साधु असाधू । जनक एक जग जलधि अगाधू ॥
भल अनभल निज निज करतूती । लहत सुजस अपलोक बिभूती ॥
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू । गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू ॥
गुन अवगुन जानत सब कोई । जो जेहि भाव नीक तेहि सोई ॥

भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु ।
सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु ॥

खल अघ अगुन साधु गुन गाहा । उभय अपार उदधि अवगाहा ॥
तेहि तें कछु गुन दोष बखाने । संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने ॥
भलेउ पोच सब बिधि उपजाए । गनि गुन दोष बेद बिलगाए ॥
कहहिं बेद इतिहास पुराना । बिधि प्रपंचु गुन अवगुन साना ॥
दुख सुख पाप पुन्य दिन राती । साधु असाधु सुजाति कुजाती ॥
दानव देव ऊँच अरु नीचू । अमिअ सुजीवनु माहुरु मीचू ॥
माया ब्रह्म जीव जगदीसा । लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा ॥
कासी मग सुरसरि क्रमनासा । मरु मारव महिदेव गवासा ॥
सरग नरक अनुराग बिरागा । निगमागम गुन दोष बिभागा ॥

जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार॥

अस बिबेक जब देइ बिधाता। तब तजि दोष गुनहिं मनु राता॥
काल सुभाउ करम बरिआईं। भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाईं॥
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं। दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं॥
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू। मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू॥
लखि सुबेष जग बंचक जेऊ। बेष प्रताप पूजिअहिं तेऊ॥
उघरहिं अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू॥
किएहुँ कुबेषु साधु सनमानू। जिमि जग जामवंत हनुमानू॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहुँ बेद बिदित सब काहू॥
गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा। कीचहिं मिलइ नीच जल संगा॥
साधु असाधु सदन सुक सारीं। सुमिरहिं राम देहिं गनि गारीं॥
धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई॥
सोइ जल अनल अनिल संघाता। होइ जलद जग जीवन दाता॥

ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग॥

सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद बिधि कीन्ह।
ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह॥

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि॥

देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्ब।
बंदउँ किन्नर रजनिचर कृपा करहु अब सर्ब॥

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ बासी॥
सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥
जानि कृपाकर किंकर मोहू। सब मिलि करहु छाड़ि छल छोहू॥
निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं। तातें बिनय करउँ सब पाहीं॥
करन चहउँ रघुपति गुन गाहा। लघु मति मोरि चरित अवगाहा॥
सूझ न एकउ अंग उपाऊ। मन मति रंक मनोरथ राऊ॥
मति अति नीच ऊँचि रुचि आछी। चहिअ अमिअ जग जुरइ न छाछी॥
छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई। सुनिहहिं बाल बचन मन लाई॥
जौं बालक कह तोतरि बाता। सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता॥
हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी। जे पर दूषन भूषनधारी॥

निज कवित्त केहि लाग न नीका। सरस होउ अथवा अति फीका ॥
जे पर भनिति सुनत हरषाहीं। ते बर पुरुष वहुत जग नाहीं ॥
जग वहु नर सर सरि सम भाई। जे निज वाढ़ि वढ़हिं जल पाई ॥
सज्जन सकृत सिंधु सम कोई। देखि पूर बिधु वाढ़इ जोई ॥

भाग छोट अभिलाषु वड़ करउँ एक बिस्वास।
पैहहिं सुख सुनि सुजन सव खल करिहहिं उपहास ॥

खल परिहास होइ हित मोरा। काक कहहि कलकंठ कठोरा ॥
हंसहि बक दादुर चातकही। हँसहि मलिन खल विमल वतकही ॥
कबित रसिक न राम पद नेहू। तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू ॥
भाषा भनिति भोरि मति मोरी। हँसिवे जोग हँसें नहिं खोरी ॥
प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहि कथा सुनि लागिहि फीकी ॥
हरि हर पद रति मति न कुतरकी। तिन्ह कहुँ मधुर कथा रघुवर की ॥
राम भगति भूषित जियँ जानी। सुनिहहिं सुजन सराहि सुवानी ॥
कवि न होउँ नहि बचन प्रवीनू। सकल कला सव विद्या हीनू ॥
आखर अरथ अलंकृति नाना। छंद प्रबंध अनेक बिधाना ॥
भाव भेद रस भेद अपारा। कबित दोष गुन बिबिध प्रकारा ॥
कवित विवेक एक नहि मोरें। सत्य कहउँ लिखि कागज कोरें ॥

भनिति मोरि सब गुन रहित बिस्व विदित गुन एक।
सो विचारि सुनिहहि सुमति जिन्ह कें विमल बिवेक ॥

एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा ॥
मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥
भनिति विचित्र सुकवि कृत जोऊ। राम नाम विनु सोह न सोऊ ॥
विधुबदनी सब भांति सँवारी। सोह न बसन बिना बर नारी ॥
सब गुन रहित कुकवि कृत वानी। राम नाम जस अंकित जानी ॥
सादर कहहि सुनहि बुध ताही। मधुकर सरिस संत गुनग्राही ॥
जदपि कवित रस एकउ नाहीं। राम प्रताप प्रगट एहि माहीं ॥
सोइ भरोस मोरें मन आवा। केहि न सुसंग वड़प्पनु पावा ॥
धूमउ तजइ सहज करुआई। अगरु प्रसंग सुगंध वसाई ॥
भनिति भदेस वस्तु भलि बरनी। राम कथा जग मंगल करनी ॥

मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की।
गति कूर कविता सरसि की ज्यों सरिस पावन पाथ की ॥
प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी।
भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी ॥

प्रिय लागिहि अति सबहि मम भनिति राम जस संग।
दारु विचारु कि करइ कोउ बंदिअ मलय प्रसंग॥

स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान।
गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान॥

× × ×

कपिपति रीछ निसाचर राजा। अंगदादि जे कीस समाजा॥
बंदउँ सब के चरन सुहाए। अधम सरीर राम जिन्ह पाए॥
रघुपति चरन उपासक जेते। खग मृग सुर नर असुर समेते॥
बंदउँ पद सरोज सब केरे। जे बिनु काम राम के चेरे॥
सुक सनकादि भगत मुनि नारद। जे मुनिबर बिग्यान बिसारद॥
प्रनवउँ सबहि धरनि धरि सीसा। करहु कृपा जन जानि मुनीसा॥
जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की॥
ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ॥
पुनि मन बचन कर्म रघुनायक। चरन कमल बंदउँ सब लायक॥
राजिवनयन धरें धनु सायक। भगत बिपति भंजन सुख दायक॥

गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न।
बंदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न॥

बंदउँ नाम राम रघुबर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को॥
बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो॥
महामंत्र जोइ जपत महेसू। कासीं मुकुति हेतु उपदेसू॥
महिमा जासु जान गनराऊ। प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ॥
जान आदिकबि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू॥
सहस नाम सम सुनि सिव बानी। जपि जेईं पिय संग भवानी॥
हरषे हेतु हेरि हर ही को। किय भूषन तिय भूषन ती को॥
नाम प्रभाउ जान सिव नीको। कालकूट फलु दीन्ह अमी को॥

बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास।
राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ। बरन बिलोचन जन जिय जोऊ॥
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू। लोक लाहु परलोक निबाहु॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके। राम लखन सम प्रिय तुलसी के॥
बरनत बरन प्रीति बिलगाती। ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती॥
नर नारायन सरिस सुभ्राता। जग पालक बिसेषि जन त्राता॥
भगति सुतिय कल करन बिभूषन। जग हित हेतु बिमल बिधु पूषन॥

स्वाद तोष सम सुगति सुधा के । कमठ सेष सम धर वसुधा के ॥
जन मन मंजु कंज मधुकर से । जीह जसोमति हरि हलधर से ॥

एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब बरननि पर जोउ ।
तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दोउ ॥

समुझत सरिस नाम अरु नामी । प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी ॥
नाम रूप दुइ ईस उपाधी । अकथ अनादि सुसामुझि साधी ॥
को बड़ छोट कहत अपराधू । सुनि गुन भेद समुझिहहिं साधू ॥
देखिअहिं रूप नाम आधीना । रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना ॥
रूप बिसेष नाम बिनु जानें । करतल गत न परहि पहिचानें ॥
सुमिरिअ नाम रूप बिनु देखें । आवत हृदयँ सनेह बिसेषें ॥
नाम रूप गति अकथ कहानी । समुझत सुखद न परति बखानी ॥
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी । उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी ॥

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार ।
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर ॥

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी । बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी ॥
ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा । अकथ अनामय नाम न रूपा ॥
जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ । नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ ॥
साधक नाम जपहिं लय लाएँ । होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ ॥
जपहिं नामु जन आरत भारी । मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥
राम भगत जग चारि प्रकारा । सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥
चहूँ चतुर कहुँ नाम अधारा । ग्यानी प्रभुहि बिसेषि पिआरा ॥
चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ । कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ ॥

सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन ।
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद तिन्हहुँ किए मन मीन ॥

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा । अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥
मोरें मत बड़ नामु दुहू तें । किए जेहिं जुग निज बस निज बूतें ॥
प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की । कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की ॥
एकु दारुगत देखिअ एकू । पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू ॥
उभय अगम जुग सुगम नाम तें । कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें ॥
ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी । सत चेतन घन आनँद रासी ॥
अस प्रभु हृदयँ अछत अबिकारी । सकल जीव जग दीन दुखारी ॥
नाम निरूपन नाम जतन तें । सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें ॥

निरगुन तें एहि भाँति वड़ नाम प्रभाउ अपार।
कहउँ नामु वड़ राम तें निज विचार अनुसार॥
राम भगत हित नर तनु धारी। सहि संकट किए साधु सुखारी॥
नामु सप्रेम जपत अनयासा। भगत होहिं मुद मंगल वासा॥
राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी॥
रिषि हित राम सुकेतुसुता की। सहित सेन सुत कीन्हि विवाकी॥
सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नामु जिमि रवि निसि नासा॥
भंजेउ राम आप भव चापू। भव भय भंजन नाम प्रतापू॥
दंडक वनु प्रभु कीन्ह सुहावन। जन मन अमित नाम किए पावन॥
निसिचर निकर दले रघुनंदन। नामु सकल कलि कलुष निकंदन॥
सवरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ।
नाम उधारे अमित खल वेद विदित गुन गाथ॥
राम सुकंठ विभीषन दोऊ। राखे सरन जान सवु कोऊ॥
नाम गरीव अनेक नेवाजे। लोक वेद वर विरिद विराजे॥
राम भालु कपि कटकु वटोरा। सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा॥
नामु लेत भवसिंधु सुखाहीं। करहु विचारु सुजन मन माहीं॥
राम सकुल रन रावनु मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा॥
राजा रामु अवध रजधानी। गावत गुन सुर मुनि वर वानी॥
सेवक सुमिरत नामु सप्रीती। विनु श्रम प्रवल मोह दलु जीती॥
फिरत सनेहँ मगन सुख अपनें। नाम प्रसाद सोच नहिं सपनें॥
ब्रह्म राम ते नामु वड़ वर दायक वर दानि।
रामचरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि॥
नाम प्रसाद संभु अविनासी। साजु अमंगल मंगल रासी॥
सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी। नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी॥
नारद जानेउ नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू॥
नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत सिरोमनि भे प्रहलादू॥
ध्रुवँ सगलानि जपेउ हरि नाऊँ। पायउ अचल अनूपम ठाऊँ॥
सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने वस करि राखे रामू॥
अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ। भए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ॥
कहौं कहाँ लगि नाम वड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई॥
नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु॥
चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका। भए नाम जपि जीव विसोका॥
वेद पुरान संत मत एहु। सकल सुकृत फल राम सनेहू॥

ध्यानु प्रथम जुग मख विधि दूजें। द्वापर परितोषत प्रभु पूजें॥
कलि केवल मल मूल मलीना। पाप पयोनिधि जन मन मीना॥
नाम कामतरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जग जाला॥
राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता॥
नहिं कलि करम न भगति बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू॥
कालनेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू॥

राम नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल।
जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल॥

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिःसि दसहूँ॥
सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा। करउँ नाइ रघुनाथहि माथा॥
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती। जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती॥
राम सुस्वामि कुसेवकु मोसो। निज दिसि देखि दयानिधि पोसो॥
लोकहुँ वेद सुसाहिब रीती। विनय सुनत पहिचानत प्रीती॥
गनी गरीब ग्रामनर नागर। पंडित मूढ मलीन उजागर॥
सुकवि कुकवि निज मति अनुहारी। नृपहि सराहत सब नर नारी॥
साधु सुजान सुसील नृपाला। ईस अंस भव परम कृपाला॥
सुनि सनमानहिं सबहि सुबानी। भनिति भगति नति गति पहिचानी॥
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ। जान सिरोमनि कोसलराऊ॥
रीझत राम सनेह निसोतें। को जग मंद मलिन मति मोतें॥

सठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहिं राम कृपालु।
उपल किए जलजान जेहिं सचिव सुमति कपि भालु॥
हौंहु कहावत सबु कहत राम सहत उपहास।
साहिब सीतानाथ सो सेवक तुलसीदास॥

× × ×

रामकथा सुंदर कर तारी। संसय विहग उड़ावनिहारी॥
रामकथा कलि विटप कुठारी। सादर सुनु गिरिराजकुमारी॥
राम नाम गुन चरित सुहाए। जनम करम अगनित श्रुति गाए॥
जथा अनंत राम भगवाना। तथा कथा कीरति गुन नाना॥
तदपि जथा श्रुति जसि मति मोरी। कहिहहुँ देखि प्रीति अति तोरी॥
उमा प्रस्न तव सहज सुहाई। सुखद संतसंमत मोहि भाई॥
एक बात नहिं मोहि सोहानी। जदपि मोह बस कहेहु भवानी॥
तुम्ह जो कहा राम कोउ आना। जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना॥

कहहिं सुनहिं अस अधम नर ग्रसे जो मोह पिसाच।
पाषंडी हरि पद विमुख जानहिं झूठ न साच॥

अग्य अकोविद अंध अभागी। काई विषय मुकुर मन लागी॥
लंपट कपटी कुटिल बिसेषी। सपनेहुँ संतसभा नहिं देखी॥
कहहिं ते बेद असंमत बानी। जिन्ह कें सूझ लाभ नहिं हानी॥
मुकुर मलिन अरु नयन बिहीना। राम रूप देखहिं किमि दीना॥
जिन्ह कें अगुन न सगुन बिबेका। जल्पहिं कल्पित बचन अनेका॥
हरिमाया बस जगत भ्रमाहीं। तिन्हहि कहत कछु अघटित नाहीं॥
बातुल भूत बिबस मतवारे। ते नहिं बोलहिं बचन बिचारे॥
जिन्ह कृत महामोह मद पाना। तिन्ह कर कहा करिअ नहिं काना॥

अस निज हृदयँ बिचारि तजु संसय भजु राम पद।
सुनु गिरिराज कुमारि भ्रम तम रबि कर बचन मम॥

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा॥
अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई॥
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें। जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसें॥
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा। तेहि किमि कहिअ बिमोह प्रसंगा॥
राम सच्चिदानंद दिनेसा। नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा॥
सहज प्रकासरूप भगवाना। नहिं तहँ पुनि बिग्यान बिहाना॥
हरष बिषाद ग्यान अग्याना। जीव धर्म अहमिति अभिमाना॥
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना। परमानंद परेस पुराना॥

पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि प्रगट परावर नाथ।
रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहि सिवँ नायउ माथ॥

निज भ्रम नहिं समुझहिं अग्यानी। प्रभु पर मोह धरहिं जड़ प्रानी॥
जथा गगन घन पटल निहारी। झांपेउ भानु कहहिं कुबिचारी॥
चितव जो लोचन अंगुलि लाएँ। प्रगट जुगल ससि तेहि के भाएँ॥
उमा राम बिषइक अस मोहा। नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा॥
बिषय करन सुर जीव समेता। सकल एक तें एक सचेता॥
सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि अवधपति सोई॥
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू। मायाधीस ग्यान गुन धामू॥
जासु सत्यता तें जड़ माया। भास सत्य इव मोह सहाया॥

रजत सीप महुँ भास जिमि जथा भानु कर बारि।
जदपि मृषा तिहुँ काल सोइ न सकइ कोउ टारि॥

एहि बिधि जग हरि आश्रित रहई। जदपि असत्य देत दुख अहई॥
जौं सपनें सिर काटै कोई। बिनु जागें न दूरि दुख होई॥

जासु कृपाँ अस भ्रम मिटि जाई। गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई ॥
आदि अंत कोउ जासु न पावा। मति अनुमानि निगम अस गावा ॥
बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ बिधि नाना ॥
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी ॥
तन बिनु परस नयन बिनु देखा। ग्रहइ घ्रान बिनु बास असेषा ॥
असि सब भांति अलौकिक करनी। महिमा जासु जाइ नहिं बरनी ॥

जेहि इमि गावहिं वेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान।
सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान ॥

कासीं मरत जंतु अवलोकी। जासु नाम बल करउँ बिसोकी ॥
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी। रघुवर सब उर अंतरजामी ॥
बिवसहुँ जासु नाम नर कहहीं। जनम अनेक रचित अघ दहहीं ॥
सादर सुमिरन जे नर करहीं। भव वारिधि गोपद इव तरहीं ॥
राम सो परमातमा भवानी। तहँ भ्रम अति अविहित तव बानी ॥
अस संसय आनत उर माहीं। ग्यान विराग सकल गुन जाहीं ॥
सुनि सिव के भ्रम भंजन बचना। मिटि गै सब कुतरक कै रचना ॥
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती। दारुन असंभावना बीती ॥

पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि।
बोलीं गिरिजा बचन बर मनहुँ प्रेम रस सानि ॥

× × ×

बैठे सुर सब करहिं बिचारा। कहँ पाइअ प्रभु करिअ पुकारा ॥
पुर बैकुंठ जान कह कोई। कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई ॥
जाके हृदयँ भगति जसि प्रीती। प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहिं रीती ॥
तेहिं समाज गिरिजा मैं रहेऊँ। अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ ॥
हरि ब्यापक सर्बत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना ॥
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं। कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं ॥
अग जगमय सब रहित बिरागी। प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी ॥
मोर बचन सब के मन माना। साधु साधु करि ब्रह्म बखाना ॥

सुनि बिरंचि मन हरष तन पुलकि नयन बह नीर।
अस्तुति करत जोरि कर सावधान मतिधीर ॥

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता ॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई ॥

जय जय अविनासी सब घट बासी व्यापक परमानंदा।
अविगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगतमोह मुनिबृंदा।
निसि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुरजूथा॥
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना॥
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा॥

जानि सभय सुर भूमि सुनि बचन समेत सनेह।
गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा। तुम्हहि लागि धरिहउँ नर बेसा॥
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा। लेहउँ दिनकर बंस उदारा॥
कस्यप अदिति महातप कीन्हा। तिन्ह कहुँ मैं पूरब बर दीन्हा॥
ते दसरथ कौसल्या रूपा। कोसलपुरीं प्रगट नरभूपा॥
तिन्ह कें गृह अवतरिहउँ जाई। रघुकुलतिलक सो चारिउ भाई॥
नारद बचन सत्य सब करिहउँ। परम सक्ति समेत अवतरिहउँ॥
हरिहउँ सकल भूमि गरुआई। निर्भय होहु देव समुदाई॥
गगन ब्रह्मबानी सुनि काना। तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना॥
तब ब्रह्माँ धरनिहि समुझावा। अभय भई भरोस जियँ आवा॥

निज लोकहि बिरंचि गे देवन्ह इहइ सिखाइ।
बानर तनु धरि धरि महि हरि पद सेवहु जाइ॥

गए देव सब निज निज धामा। भूमि सहित मन कहुँ बिश्रामा॥
जो कछु आयसु ब्रह्माँ दीन्हा। हरषे देव बिलंब न कीन्हा॥
बनचर देह धरी छिति माहीं। अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीं॥
गिरि तरु नख आयुध सब बीरा। हरि मारग चितवहिं मतिधीरा॥
गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी। रहे निज निज अनीक रचि रूरी॥
यह सब रुचिर चरित मैं भाषा। अब सो सुनहु जो बीचहिं राखा॥
अवधपुरीं रघुकुलमनि राऊ। बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊँ॥
धरम धुरंधर गुननिधि ग्यानी। हृदयँ भगति मति सारँगपानी॥

कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरि पद कमल बिनीत ॥

एक बार भूपति मन माहीं। भै गलानि मोरें सुत नाहीं ॥
गुर गृह गयउ तुरत महिपाला। चरन लागि करि बिनय बिसाला ॥
निज दुख सुख सब गुरहि सुनयउ। कहि बसिष्ठ बहुबिधि समुझायउ ॥
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी ॥
सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम सुभ जग्य करावा ॥
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हें ॥
जो बसिष्ठ कछु हृदयँ बिचारा। सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा ॥
यह हबि बाँटि देहु नृप जाई। जथा जोग जेहि भाग बनाई ॥

तब अदृस्य भए पावक सकल सभहि समुझाइ।
परमानंद मगन नृप हरष न हृदयँ समाइ ॥

तबहिं रायँ प्रिय नारि बोलाईं। कौसल्यादि तहाँ चलि आईं ॥
अर्ध भाग कौसल्यहि दीन्हा। उभय भाग आधे कर कीन्हा ॥
कैकेई कहँ नृप सो दयऊ। रह्यो सो उभय भाग पुनि भयऊ ॥
कौसल्या कैकेई हाथ धरि। दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि ॥
एहि बिधि गर्भसहित सब नारीं। भईं हृदयँ हरषित सुख भारी ॥
जा दिन तें हरि गर्भहिं आए। सकल लोक सुख संपति छाए ॥
मंदिर महँ सब राजहिं रानी। सोभा सील तेज की खानीं ॥
सुख जुत कछुक काल चलि गयऊ। जेहिं प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ ॥

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल ॥

नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता ॥
मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक बिश्रामा ॥
सीतल मंद सुरभि बह बाऊ। हरषित सुर संतन मन चाऊ ॥
बन कुसुमित गिरिगन मनि आरा। स्रवहिं सकल सरिताऽमृतधारा ॥
सो अवसर बिरंचि जब जाना। चले सकल सुर साजि बिमाना ॥
गगन बिमल संकुल सुर जूथा। गावहिं गुन गंधर्ब बरूथा ॥
बरषहिं सुमन सुअंजुलि साजी। गहगहि गगन दुंदुभी बाजी ॥
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा। बहुबिधि लावहिं निज निज सेवा ॥

सुर समूह बिनती करि पहुँचे निज निज धाम।
जगनिवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक बिश्राम ॥

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप विचारी ॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी ।
भूषन वनमाला नयन विसाला सोभासिंधु खरारी ॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता ।
माया गुन ग्यानातीत अमाना वेद पुरान भनंता ॥
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ॥
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै ।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत विधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥

विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥

सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी । संभ्रम चलि आईं सब रानी ॥
हरषित जहँ तहँ धाईं दासी । आनँद मगन सकल पुरबासी ॥
दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना । मानहुँ ब्रह्मानंद समाना ॥
परम प्रेम मन पुलक सरीरा । चाहत उठन करत मति धीरा ॥
जाकर नाम सुनत सुभ होई । मोरें गृह आवा प्रभु सोई ॥
परमानंद पूरि मन राजा । कहा बोलाइ बजावहु बाजा ॥
गुर बसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा । आए द्विजन सहित नृपराजा ॥
अनुपम बालक देखेन्हि जाई । रूप रासि गुन कहि न सिराई ॥

नंदीमुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह ।
हाटक धेनु बसन मनि नृप विप्रन्ह कहँ दीन्ह ॥

ध्वज पताक तोरन पुर छावा । कहि न जाइ जेहि भांति बनावा ॥
सुमनबृष्टि अकास तें होई । ब्रह्मानंद मगन सब लोई ॥
बृंद बृंद मिलि चलीं लोगाईं । सहज सिंगार किएँ उठि धाईं ॥
कनक कलस मंगल भरि थारा । गावत पैठहिं भूप दुआरा ॥

करि आरति नेवछावरि करहीं। बार बार सिसु चरनन्हि परहीं॥
मागध सूत वंदिगन गायक। पावन गुन गावहिं रघुनायक॥
सर्बस दान दीन्ह सब काहू। जेहिं पावा राखा नहिं ताहू॥
मृगमद चंदन कुंकुम कीचा। मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा॥

गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुषमा कंद।
हरपवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृंद॥

कैकयसुता सुमित्रा दोऊ। सुंदर सुत जनमत भैं ओऊ॥
वह सुख संपति समय समाजा। कहि न सकइ सारद अहिराजा॥
अवधपुरी सोहइ एहि भाँती। प्रभुहि मिलन आई जनु राती॥
देखि भानु जनु मन सकुचानी। तदपि बनी संध्या अनुमानी॥
अगर धूप बहु जनु अँधिआरी। उड़इ अबीर मनहुँ अरुनारी॥
मंदिर मनि समूह जनु तारा। नृप गृह कलस सो इंदु उदारा॥
भवन वेदधुनि अति मृदु बानी। जनु खग मुखर समय जनु सानी॥
कौतुक देखि पतंग भुलाना। एक मास तेइँ जात न जाना॥

मास दिवस कर दिवस भा मरम न जानइ कोइ।
रथ समेत रवि थाकेउ निसा कवन बिधि होइ॥

× × ×

देखन बागु कुअँर दुइ आए। बय किसोर सब भांति सुहाए॥
स्याम गौर किमि कहौं बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी॥
सुनि हरषीं सब सखीं सयानी। सिय हियँ अति उतकंठा जानी॥
एक कहइ नृपसुत तेइ आली। सुने जे मुनि सँग आए काली॥
जिन्ह निज रूप मोहनी डारी। कीन्हे स्वबस नगर नर नारी॥
बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू। अवसि देखिअहिं देखन जोगू॥
तासु बचन अति सियहि सोहाने। दरस लागि लोचन अकुलाने॥
चली अग्र करि प्रिय सखि सोई। प्रीति पुरातन लखइ न कोई॥

सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत।
चकित बिलोकति सकल दिसि जनु सिसु मृगी सभीत॥

कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि॥
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही। मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही॥
अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा। सिय मुख ससि भए नयन चकोरा॥
भए बिलोचन चारु अचंचल। मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल॥
देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदयँ सराहत बचनु न आवा॥
जनु बिरंचि सब निज निपुनाई। बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई॥

सुंदरता कहुँ सुंदर करई। छबिगृहँ दीपसिखा जनु बरई ॥
सब उपमा कबि रहे जुठारी। केहिं पटतरौं बिदेहकुमारी ॥

सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि ॥

तात जनकतनया यह सोई। धनुषजग्य जेहि कारन होई ॥
पूजन गौरि सखीं लै आईं। करत प्रकासु फिरइ फुलवाईं ॥
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मनु छोभा ॥
सो सबु कारन जान बिधाता। फरकहिं सुभद अंग सुनु भ्राता ॥
रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ। मनु कुपंथ पगु धरइ न काऊ ॥
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी। जेहिं सपनेहुँ परनारि न हेरी ॥
जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी। नहिं पावहि परतिय मनु डीठी ॥
मंगन लहहि न जिन्ह कै नाहीं। ते नरबर थोरे जग माहीं ॥

करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लोभान।
मुख सरोज मकरंद छबि करइ मधुप इव पान ॥

चितवति चकित चहूँ दिसि सीता। कहँ गए नृपकिसोर मनु चिंता ॥
जहँ बिलोक मृग सावक नैनी। जनु तहँ बरिस कमल सित श्रेनी ॥
लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए ॥
देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचाने ॥
थके नयन रघुपति छबि देखें। पलकन्हिहूँ परिहरीं निमेषें ॥
अधिक सनेहँ देह भै भोरी। सरद ससिहि जनु चितव चकोरी ॥
लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी ॥
जब सिय सखिन्ह प्रेमबस जानी। कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी ॥

लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ ॥

सोभा सीवँ सुभग दोउ बीरा। नील पीत जलजात सरीरा ॥
मोरपंख सिर सोहत नीके। गुच्छ बीच बिच कुसुम कलीके ॥
भाल तिलक श्रमबिंदु सुहाए। श्रवन सुभग भूषन छबि छाए ॥
बिकट भृकुटि कच घूंघरवारे। नव सरोज लोचन रतनारे ॥
चारु चिबुक नासिका कपोला। हास बिलास लेत मनु मोला ॥
मुखछबि कहि न जाइ मोहि पाहीं। जो बिलोकि बहु काम लजाहीं ॥
उर मनि माल कंबु कल ग्रीवा। काम कलभ कर भुज बलसींवा ॥
सुमन समेत बाम कर दोना। सावँर कुअँर सखी सुठि लोना ॥

केहरि कटि पट पीत धर सुषमा सील निधान।
देखि भानुकुलभूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान ॥

धरि धीरजु एक आलि सयानी। सीता सन बोली गहि पानी ॥
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू। भूपकिसोर देखि किन लेहू ॥
सकुचि सीयँ तब नयन उघारे। सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे ॥
नख सिख देखि राम कै सोभा। सुमिरि पिता पनु मनु अति छोभा ॥
परबस सखिन्ह लखी जब सीता। भयउ गहरु सब कहहिं सभीता ॥
पुनि आउब एहि बेरिआँ काली। अस कहि मन बिहसी एक आली ॥
गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी। भयउ बिलंबु मातु भय मानी ॥
धरि बड़ि धीर रामु उर आने। फिरी अपनपउ पितुबस जाने ॥

देखन मिस मृग बिहग तरु फिरइ बहोरि बहोरि।
निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढ़इ प्रीति न थोरि ॥

जानि कठिन सिवचाप बिसूरति। चली राखि उर स्यामल मूरति ॥
प्रभु जब जात जानकी जानी। सुख सनेह सोभा गुन खानी ॥
परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही। चारु चित्त भीतीं लिख लीन्ही ॥
गई भवानी भवन बहोरी। बंदि चरन बोली कर जोरी ॥
जय जय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी ॥
जय गजबदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि दुति गाता ॥
नहिं तव आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना ॥
भव भव बिभव पराभव कारिनि। बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि ॥

पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष ॥

सेवत तोहि सुलभ फल चारी। बरदायनी पुरारि पिआरी ॥
देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे ॥
मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबही कें ॥
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं। अस कहि चरन गहे बैदेहीं ॥
बिनय प्रेम बस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी ॥
सादर सीयँ प्रसादु सिर धरेऊ। बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ ॥
सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी ॥
नारद बचन सदा सुचि साचा। सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा ॥

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

हृदयँ सराहत सीय लोनाई । गुर समीप गवने दोउ भाई ॥
राम कहा सबु कौसिक पाहीं । सरल सुभाउ छुअत छल नाहीं ॥
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही । पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही ॥
सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे । रामु लखनु सुनि भए सुखारे ॥
करि भोजनु मुनिबर बिग्यानी । लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥
बिगत दिवसु गुरु आयसु पाई । संध्या करन चले दोउ भाई ॥
प्राची दिसि ससि उयउ सुहावा । सिय मुख सरिस देखि सुखु पावा ॥
बहुरि बिचारु कीन्ह मन माहीं । सीय बदन सम हिमकर नाहीं ॥

जनमु सिंधु पुनि बंधु बिषु दिन मलीन सकलंक ।
सिय मुख समता पाव किमि चंदु बापुरो रंक ॥

घटइ बढ़इ बिरहिनि दुखदाई । ग्रसइ राहु निज संधिहिं पाई ॥
कोक सोकप्रद पंकज द्रोही । अवगुन बहुत चंद्रमा तोही ॥
बैदेही मुख पटतर दीन्हे । होइ दोषु बड़ अनुचित कीन्हे ॥
सिय मुख छबि बिधु ब्याज बखानी । गुर पहिं चले निसा बड़ि जानी ॥
करि मुनि चरन सरोज प्रनामा । आयसु पाइ कीन्ह बिश्रामा ॥
बिगत निसा रघुनायक जागे । बंधु बिलोकि कहन अस लागे ॥
उयउ अरुन अवलोकहु ताता । पंकज कोक लोक सुखदाता ॥
बोले लखनु जोरि जुग पानी । प्रभु प्रभाव सूचक मृदु बानी ॥

अरुनोदय सकुचे कुमुद उडगन जोति मलीन ।
जिमि तुम्हार आगमन सुनि भए नृपति बलहीन ॥

× × ×

सिय सोभा नहिं जाइ बखानी । जगदंबिका रूप गुन खानी ॥
उपमा सकल मोहि लघु लागीं । प्राकृत नारि अंग अनुरागीं ॥
सिय बरनिअ तेइ उपमा देई । कुकबि कहाइ अजसु को लेई ॥
जौं पटतरिअ तीय सम सीया । जग असि जुबति कहाँ कमनीया ॥
गिरा मुखर तन अरध भवानी । रति अति दुखित अतनु पति जानी ॥
बिष बारुनी बंधु प्रिय जेही । कहिअ रमासम किमि बैदेही ॥
जौं छबि सुधा पयोनिधि होई । परम रूपमय कच्छपु सोई ॥
सोभा रजु मंदरु सिंगारू । मथै पानि पंकज निज मारू ॥

एहि विधि उपजै लच्छि जब सुंदरता सुख मूल।
तदपि सकोच समेत कवि कहहिं सीय समतूल॥

चलीं संग लै सखीं सयानी। गावत गीत मनोहर बानी॥
सोह नवल तनु सुंदर सारी। जगत जननि अतुलित छबि भारी॥
भूषन सकल सुदेस सुहाए। अंग अंग रचि सखिन्ह बनाए॥
रंगभूमि जब सिय पगु धारी। देखि रूप मोहे नर नारी॥
हरषि सुरन्ह दुंदुभी बजाई। बरषि प्रसून अपछरा गाई॥
पानि सरोज सोह जयमाला। अवचट चितए सकल भुआला॥
सीय चकित चित रामहि चाहा। भए मोहबस सब नरनाहा॥
मुनि समीप देखे दोउ भाई। लगे ललकि लोचन निधि पाई॥

गुरजन लाज समाजु बड़ देख सीय सकुचानि।
लागि बिलोकन सखिन्ह तन रघुबीरहि उर आनि॥

राम रूपु अरु सिय छबि देखें। नर नारिन्ह परिहरीं निमेषें॥
सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं। बिधि सन बिनय करहिं मन माहीं॥
हरु बिधि बेगि जनक जड़ताई। मति हमारि असि देहि सुहाई॥
बिनु बिचार पनु तजि नरनाहू। सीय राम कर करै बिबाहू॥
जगु भल कहिहि भाव सब काहू। हठ कीन्हें अंतहुँ उर दाहू॥
एहिं लालसा मगन सब लोगू। बरु साँवरो जानकी जोगू॥
तब बंदीजन जनक बोलाए। बिरुदावली कहत चलि आए॥
कह नृपु जाइ कहहु पन मोरा। चले भाट हिय हरषु न थोरा॥

बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल।
पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिसाल॥

नृप भुजबलु बिधु सिवधनु राहू। गरुअ कठोर बिदित सब काहू॥
रावनु बानु महाभट भारे। देखि सरासन गवँहिं सिधारे॥
सोइ पुरारि कोदंडु कठोरा। राज समाज आजु जोइ तोरा॥
त्रिभुवन जय समेत बैदेही। बिनहिं बिचार बरइ हठि तेही॥
सुनि पन सकल भूप अभिलाषे। भटमानी अतिसय मन माखे॥
परिकर बांधि उठे अकुलाई। चले इष्टदेवन्ह सिर नाई॥
तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं। उठइ न कोटि भांति बलु करहीं॥
जिन्ह के कछु बिचारु मन माहीं। चाप समीप महीप न जाहीं॥

तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ।
मनहुँ पाइ भट बाहु बलु अधिकु अधिकु गरुआइ॥

भूप सहस दस एकहि बारा । लगे उठावन टरइ न टारा ॥
डगइ न संभु सरासनु कैसे । कामी बचन सती मनु जैसे ॥
सब नृप भए जोगु उपहासी । जैसें बिनु बिराग संन्यासी ॥
कीरति बिजय बीरता भारी । चले चाप कर बरबस हारी ॥
श्रीहत भए हारि हियँ राजा । बैठे निज निज जाइ समाजा ॥
नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने । बोले बचन रोष जनु साने ॥
दीप दीप के भूपति नाना । आए सुनि हम जो पनु ठाना ॥
देव दनुज धरि मनुज सरीरा । बिपुल बीर आए रनधीरा ॥

कुअँरि मनोहर बिजय बड़ि कीरति अति कमनीय ।
पावनिहार बिरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय ॥

कहहु काहि यहु लाभु न भावा । काहुँ न संकर चाप चढ़ावा ॥
रहउ चढ़ाउब तोरब भाई । तिलु भरि भूमि न सके छड़ाई ॥
अब जनि कोउ माखै भट मानी । बीर बिहीन मही मैं जानी ॥
तजहु आस निज निज गृह जाहू । लिखा न बिधि बैदेहि बिबाहू ॥
सुकृत जाइ जौं पनु परिहरऊँ । कुअँरि कुआरि रहै का करऊँ ॥
जौं जनतेउँ बिनु भट भुबि भाई । तौ पनु करि होतेउँ न हँसाई ॥
जनक बचन सुनि सब नर नारी । देखि जानकिहि भए दुखारी ॥
माखे लखनु कुटिल भइँ भौंहें । रदपट फरकत नयन रिसौंहें ॥

कहि न सकत रघुबीर डर लगे बचन जनु बान ।
नाइ राम पद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान ॥

रघुबंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई । तेहिं समाज अस कहइ न कोई ॥
कही जनक जस अनुचित बानी । बिद्यमान रघुकुल मनि जानी ॥
जौं तुम्हारि अनुसासन पावौं । कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं ॥
काचे घट जिमि डारौं फोरी । सकउँ मेरु मूलक जिमि तोरी ॥
तव प्रताप महिमा भगवाना । को बापुरो पिनाक पुराना ॥
नाथ जानि अस आयसु होऊ । कौतुकु करौं बिलोकिअ सोऊ ॥
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं । जोजन सत प्रमान लै धावौं ॥

तोरौं छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ ।
जौ न करौं प्रभु पद सपथ कर न धरौं धनु भाथ ॥

लखन सकोप बचन जब बोले । डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥
सकल लोग सब भूप डेराने । सिय हियँ हरषु जनकु सकुचाने ॥
गुर रघुपति सब मुनि मन माहीं । मुदित भए पुनि पुनि पुलकाहीं ॥
सयनहि रघुपति लखनु नेवारे । प्रेम समेत निकट बैठारे ॥

बिस्वामित्र समय सुभ जानी। बोले अति सनेहमय बानी॥
उठहु राम भंजहु भवचापा। मेटहु तात जनक परितापा॥
सुनि गुरु बचन चरन सिरु नावा। हरषु बिषादु न कछु उर आवा॥
ठाढ़ भए उठि सहज सुभाएँ। ठवनि जुबा मृगराजु लजाएँ॥

उदित उदयगिरि मंच पर रघुबर बालपतंग।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग॥

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवली न प्रकासी॥
मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने॥
भए बिसोक कोक मुनि देवा। बरिसहिं सुमन जनावहिं सेवा॥
गुर पद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन्ह सन आयसु मागा॥
सहजहिं चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु बर कुंजर गामी॥
चलत राम सब पुर नर नारी। पुलक पूरि तन भए सुखारी॥
बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे॥
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं। तोरहुँ रामु गनेस गोसाईं॥

रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ।
सीता मातु सनेह बस बचन कहइ बिलखाइ॥

सखि सब कौतुकु देखनिहारे। जेउ कहावत हितू हमारे॥
कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं। ए बालक असि हठ भलि नाहीं॥
रावन बान छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा॥
सो धनु राजकुअँर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं॥
भूप सयानप सकल सिरानी। सखि बिधि गति कछु जाति न जानी॥
बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवंत लघु गनिअ न रानी॥
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा। सोषेउ सुजसु सकल संसारा॥
रबि मंडल देखत लघु लागा। उदयँ तासु त्रिभुवन तम भागा॥

मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब।
महामत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्ब॥

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपनें बस कीन्हे॥
देबि तजिअ संसउ अस जानी। भंजब धनुषु राम सुनु रानी॥
सखी बचन सुनि भै परतीती। मिटा बिषादु बढ़ी अति प्रीती॥
तब रामहि बिलोकि बैदेही। सभय हृदय बिनवति जेहि तेही॥
मनहीं मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी॥
करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हितु हरहु चाप गरुआई॥

गननायक वरदायक देवा। आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा॥
बार बार बिनती सुनि मोरी। करहु चाप गुरुता अति थोरी॥

देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर।
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर॥

नीकें निरखि नयन भरि सोभा। पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा॥
अहह तात दारुनि हठ ठानी। समुझत नहिं कछु लाभु न हानी॥
सचिव सभय सिख देइ न कोई। बुध समाज बड़ अनुचित होई॥
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा। कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा॥
बिधि केहि भांति धरौं उर धीरा। सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा॥
सकल सभा कै मति भै भोरी। अब मोहि संभु चाप गति तोरी॥
निज जड़ता लोगन्ह पर डारी। होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी॥
अति परिताप सीय मन माहीं। लव निमेष जुग सय सम जाहीं॥

प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल॥

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी। प्रगट न लाज निसा अवलोकी॥
लोचन जलु रह लोचन कोना। जैसें परम कृपन कर सोना॥
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी। धरि धीरजु प्रतीति उर आनी॥
तन मन बचन मोर पनु साचा। रघुपति पद सरोज चितु राचा॥
तौ भगवानु सकल उर बासी। करिहि मोहि रघुबर कै दासी॥
जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू॥
प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना। कृपानिधान राम सब जाना॥
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसें। चितव गरुड़ लघु ब्यालहि जैसें॥

लखन लखेउ रघुबंसमनि ताकेउ हर कोदंडु।
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मांडु॥

दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरनि धरि धीर न डोला॥
रामु चहहिं संकर धनु तोरा। होहु सजग सुनि आयसु मोरा॥
चाप समीप रामु जब आए। नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए॥
सब कर संसउ अरु अग्यानू। मंद महीपन्ह कर अभिमानू॥
भृगुपति केरि गरब गरुआई। सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई॥
सिय कर सोचु जनक पछितावा। रानिन्ह कर दारुन दुख दावा॥
संभुचाप बड़ बोहितु पाई। चढ़े जाइ सब संगु बनाई॥
राम बाहुबल सिंधु अपारू। चहत पारु नहिं कोउ कड़हारू॥

राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि।
चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेषि॥

देखी विपुल बिकल बैदेही । निमिष बिहात कलप सम तेही ॥
तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा । मुएँ करइ का सुधा तड़ागा ॥
का बरषा सब कृषी सुखानें । समय चुकें पुनि का पछितानें ॥
अस जियँ जानि जानकी देखी । प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी ॥
गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा । अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा ॥
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ । पुनि नभ धनु मंडलसम भयऊ ॥
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें । काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें ॥
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा । भरे भुवन धुनि घोर कठोरा ॥

भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले ।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले ॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल बिचारहीं ।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं ॥

संकर चापु जहाजु सागरु रघुबर बाहुबल ।
बूड़ सो सकल समाजु चढ़ा जो प्रथमहिं मोह बस ॥

× × ×

रघुकुल तिलक जोरि दोउ हाथा । मुदित मातु पद नायउ माथा ॥
दीन्हि असीस लाइ उर लीन्हे । भूषन बसन निछावरि कीन्हे ॥
बार बार मुख चुंबति माता । नयन नेह जलु पुलकित गाता ॥
गोद राखि पुनि हृदयँ लगाए । स्रवत प्रेमरस पयद सुहाए ॥
प्रेम प्रमोदु न कछु कहि जाई । रंक धनद पदवी जनु पाई ॥
सादर सुंदर बदनु निहारी । बोली मधुर बचन महतारी ॥
कहहु तात जननी बलिहारी । कबहिं लगन मुद मंगलकारी ॥
सुकृत सील सुख सीवँ सुहाई । जनम लाभ कइ अवधि अघाई ॥

जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत एहि भांति ।
जिमि चातक चातकि तृषित बृष्टि सरद रितु स्वाति ॥

तात जाउँ बलि बेगि नहाहू । जो मन भाव मधुर कछु खाहू ॥
पितु समीप तब जाएहु भैआ । भइ बड़ि बार जाइ बलि मैआ ॥
मातु बचन सुनि अति अनुकूला । जनु सनेह सुरतरु के फूला ॥
सुख मकरंद भरे श्रियमूला । निरखि राम मनु भवँरु न भूला ॥
धरम धुरीन धरम गति जानी । कहेउ मातु सन अति मृदु बानी ॥
पिताँ दीन्ह मोहि कानन राजू । जहँ सब भांति मोर बड़ काजू ॥
आयसु देहि मुदित मन माता । जेहिं मुद मंगल कानन जाता ॥
जनि सनेह बस डरपसि भोरें । आनँदु अंब अनुग्रह तोरें ॥

बरष चारिदस बिपिन बसि करि पितु बचन प्रमान ।
आइ पाय पुनि देखिहउँ मनु जनि करसि मलान ॥
बचन बिनीत मधुर रघुबर के । सर सम लगे मातु उर करके ॥
सहमि सूखि सुनि सीतलि बानी । जिमि जवास परें पावस पानी ॥
कहि न जाइ कछु हृदय बिषादू । मनहुँ मृगी सुनि केहरि नादू ॥
नयन सजल तन थर थर काँपी । माजहि खाइ मीन जनु मापी ॥
धरि धीरजु सुत बदनु निहारी । गदगद बचन कहति महतारी ॥
तात पितहि तुम्ह प्रानपिआरे । देखि मुदित नित चरित तुम्हारे ॥
राजु देन कहुँ सुभ दिन साधा । कहेउ जान बन केहिं अपराधा ॥
तात सुनावहु मोहि निदानू । को दिनकर कुल भयउ कृसानू ॥
निरखि राम रुख सचिवसुत कारनु कहेउ बुझाइ ।
सुनि प्रसंगु रहि मूक जिमि दसा बरनि नहिं जाइ ॥
राखि न सकइ न कहि सक जाहू । दुहूँ भांति उर दारुन दाहू ॥
लिखत सुधाकर गा लिखि राहू । बिधि गति बाम सदा सब काहू ॥
धरम सनेह उभयँ मति घेरी । भइ गति साँप छुछुंदरि केरी ॥
राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू । धरमु जाइ अरु बंधु बिरोधू ॥
कहउँ जान बन तौ बड़ि हानी । संकट सोच बिबस भइ रानी ॥
बहुरि समुझि तिय धरमु सयानी । रामु भरतु दोउ सुत सम जानी ॥
सरल सुभाउ राम महतारी । बोली बचन धीर धरि भारी ॥
तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका । पितु आयसु सब धरमक टीका ॥
राजु देन कहि दीन्ह बनु मोहि न सो दुख लेसु ।
तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेसु ॥
जौं केवल पितु आयसु ताता । तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता ॥
जौं पितु मातु कहेउ बन जाना । तौ कानन सत अवध समाना ॥
पितु बनदेव मातु बनदेवी । खग मृग चरन सरोरुह सेवी ॥
अंतहुँ उचित नृपहि बनबासू । बय बिलोकि हियँ होइ हरासू ॥
बड़भागी बनु अवध अभागी । जो रघुबंसतिलक तुम्ह लागी ॥
जौं सुत कहौं संग मोहि लेहू । तुम्हरे हृदयँ होइ संदेहू ॥
पूत परम प्रिय तुम्ह सबही के । प्रान प्रान के जीवन जी के ॥
ते तुम्ह कहहु मातु बन जाऊँ । मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊँ ॥
यह बिचारि नहिं करउँ हठ झूठ सनेहु बढ़ाइ ।
मानि मातु कर नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ ॥
देव पितर सब तुम्हहि गोसाईं । राखहुँ पलक नयन की नाईं ॥
अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना । तुम्ह करुनाकर धरम धुरीना ॥

अस बिचारि सोइ करहु उपाई । सबहि जिअत जेहिं भेंटहु आई ।।
जाहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ । करि अनाथ जन परिजन गाऊँ ।।
सब कर आजु सुकृत फल बीता । भयउ कराल कालु बिपरीता ।।
बहुबिधि बिलपि चरन लपटानी । परम अभागिनि आपुहि जानी ।।
दारुन दुसह दाहु उर ब्यापा । बरनि न जाहिं बिलाप कलापा ।।
राम उठाइ मातु उर लाई । कहि मृदु बचन बहुरि समुझाई ।।

समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ ।
जाइ सासु पद कमल जुगि बंदि बैठि सिरु नाइ ।।

दीन्हि असीस सास मृदु बानी । अति सुकुमारि देखि अकुलानी ।।
बैठि नमित मुख सोचति सीता । रूप रासि पति प्रेम पुनीता ।।
चलन चहत बन जीवन नाथू । केहि सुकृती सन होइहि साथू ।।
की तनु प्रान कि केवल प्राना । बिधि करतबु कछु जाइ न जाना ।।
चारु चरन नख लेखति धरनी । नूपुर मुखर मधुर कबि बरनी ।।
मनहुँ प्रेम बस बिनती करहीं । हमहिं सीय पद जनि परिहरहीं ।।
मंजु बिलोचन मोचति बारी । बोली देखि राम महतारी ।।
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी । सास ससुर परिजनहि पिआरी ।।

पिता जनक भूपाल मनि ससुर भानुकुल भानु ।
पति रबिकुल कैरव बिपिन बिधु गुन रूप निधानु ।।

मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई । रूप रासि गुन सील सुहाई ।।
नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई । राखेउँ प्रान जानकिहिं लाई ।।
कलपबेलि जिमि बहुबिधि लाली । सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली ।।
फूलत फलत भयउ बिधि बामा । जानि न जाइ काह परिनामा ।।
पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा । सियँ न दीन्ह पगु अवनि कठोरा ।।
जिअनमूरि जिमि जोगवत रहऊँ । दीप बाति नहिं टारन कहऊँ ।।
सोइ सिय चलन चहति बन साथा । आयसु काह होइ रघुनाथा ।।
चंद किरन रस रसिक चकोरी । रबि रुख नयन सकइ किमि जोरी ।।

करि केहरि निसिचर चरहि दुष्ट जंतु बन भूरि ।
बिष बाटिका कि सोह सुत सुभग सजीवनि मूरि ।।

बन हित कोल किरात किसोरी । रचीं बिरंचि बिषय सुख भोरी ।।
पाहन कृमि जिमि कठिन सुभाऊ । तिन्हहि कलेसु न कानन काऊ ।।
कै तापस तिय कानन जोगू । जिन्ह तप हेतु तजा सब भोगू ।।
सिय बन बसिहि तात केहि भाँती । चित्रलिखित कपि देखि डेराती ।।

सुरसर सुभग बनज बन चारी। डावर जोगु कि हंसकुमारी ॥
अस बिचारि जस आयसु होई। मैं सिख देउँ जानकिहि सोई ॥
जौं सिय भवन रहै कह अंबा। मोहि कहँ होइ बहुत अवलंबा ॥
सुनि रघुबीर मातु प्रिय बानी। सील सनेह सुधा जनु सानी ॥
कहि प्रिय बचन बिबेकमय कीन्हि मातु परितोष।
लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगटि बिपिन गुन दोष ॥
मातु समीप कहत सकुचाहीं। बोले समउ समुझि मन माहीं ॥
राजकुमारि सिखावनु सुनहू। आन भांति जिय जनि कछु गुनहू ॥
आपन मोर नीक जौं चहहू। बचनु हमारि मानि गृह रहहू ॥
आयसु मोर सासु सेवकाई। सब बिधि भामिनि भवन भलाई ॥
एहि ते अधिक धरमु नहिं दूजा। सादर सासु ससुर पद पूजा ॥
जब जब मातु करिहि सुध मोरी। होइहि प्रेम बिकल मति भोरी ॥
तब तब तुम्ह कहि कथा पुरानी। सुंदरि समुझाएहु मृदु बानी ॥
कहउँ सुभायँ साथ सत मोही। सुमुखि मातु हित राखउँ तोही ॥
गुर श्रुति संमत धरम फलु पाइअ बिनहिं कलेस।
हठ बस सब संकट सहे गालव नहुष नरेस ॥
मैं पुनि करि प्रवान पितु बानी। बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी ॥
दिवस जात नहिं लागिहि बारा। सुंदरि सिखवनु सुनहु हमारा ॥
जौं हठ करहु प्रेम बस बामा। तौ तुम्ह दुखु पाउब परिनामा ॥
काननु कठिन भयंकरु भारी। घोर घामु हिम बारि बयारी ॥
कुस कंटक मग काँकर नाना। चलब पयादेहिं बिनु पदत्राना ॥
चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे। मारग अगम भूमिधर भारे ॥
कंदर खोह नदीं नद नारे। अगम अगाध न जाहिं निहारे ॥
भालु बाघ बृक केहरि नागा। करहिं नाद सुनि धीरजु भागा ॥
भूमि सयन बलकल बसन असनु कंद फल मूल।
ते कि सदा सब दिन मिलहिं सबुइ समय अनुकूल ॥
नर अहार रजनीचर चरहीं। कपट बेष बिधि कोटिक करहीं ॥
लागइ अति पहार कर पानी। बिपिन बिपति नहिं जाइ बखानी ॥
ब्याल कराल बिहग बन घोरा। निसिचर निकर नारि नर चोरा ॥
डरपहिं धीर गहन सुधि आएँ। मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभाएँ ॥
हंसगवनि तुम्ह नहिं बन जोगू। सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू ॥
मानस सलिल सुधाँ प्रतिपाली। जिअइ कि लवन पयोधि मराली ॥
नव रसाल बन बिहरनसीला। सोह कि कोकिल बिपिन करीला ॥
रहहु भवन अस हृदयँ बिचारी। चंद बदनि दुखु कानन भारी।

सहज सुहृद गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि ।
सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि ॥

सुनि मृदु बचन मनोहर पिय के । लोचन ललित भरे जल सिय के ॥
सीतल सिख दाहक भइ कैसें । चकइहि सरद चंद निसि जैसें ॥
उतरु न आव बिकल बैदेही । तजन चहत सुचि स्वामि सनेही ॥
बरबस रोकि बिलोचन बारी । धरि धीरजु उर अवनिकुमारी ॥
लागि सासु पद कह कर जोरी । छमबि देवि बड़ि अविनय मोरी ॥
दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई । जेहि बिधि मोर परम हित होई ॥
मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं । पिय बियोग सम दुखु जग नाहीं ॥

प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान ।
तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद बिधु सुरपुर नरक समान ॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई ॥
सासु ससुर गुर सजन सहाई । सुत सुंदर सुसील सुखदाई ॥
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते । पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते ॥
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू । पति बिहीन सबु सोक समाजू ॥
भोग रोगसम भूषन भारू । जम जातना सरिस संसारू ॥
प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं । मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ॥
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें । सरद बिमल बिधु बदनु निहारें ॥

खग मृग परिजन नगरु बनु बलकल बिमल दुकूल ।
नाथ साथ सुरसदन सम परनसाल सुख मूल ॥

बनदेवी बनदेव उदारा । करिहहिं सासु ससुर सम सारा ॥
कुस किसलय साथरी सुहाई । प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई ॥
कंद मूल फल अमिअ अहारू । अवध सौध सत सरिस पहारू ॥
छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी । रहिहउँ मुदित दिवस जिमि कोकी ॥
बन दुख नाथ कहे बहुतेरे । भय बिषाद परिताप घनेरे ॥
प्रभु बियोग लवलेस समाना । सब मिलि होहिं न कृपानिधाना ॥
अस जिय जानि सुजान सिरोमनि । लेइअ संग मोहि छाड़िअ जनि ॥
बिनती बहुत करौं का स्वामी । करुनामय उर अंतरजामी ॥

राखिअ अवध जो अवधि लगि रहत न जनिअहिं प्रान ।
दीनबंधु सुंदर सुखद सील सनेह निधान ॥

मोहि मग चलत न होइहि हारी । छिनु छिनु चरन सरोज निहारी ॥
सबहि भांति पिय सेवा करिहौं । मारग जनित सकल श्रम हरिहौं ॥

पाय पखारि बैठि तरु छाहीं । करिहउँ बाउ मुदित मन माहीं ॥
श्रम कन सहित स्याम तनु देखें । कहँ दुख समउ प्रानपति पेखें ॥
सम महि तृन तरुपल्लव डासी । पाय पलोटिहि सब निसि दासी ॥
बार बार मृदु मूरति जोही । लागिहि तात बयारि न मोही ॥
को प्रभु सँग मोहि चितवनिहारा । सिंघवधुहि जिमि ससक सिआरा ॥
मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू । तुम्हहि उचित तप मो कहँ भोगू ॥

ऐसेउ बचन कठोर सुनि जौं न हृदउ बिलगान ।
तौ प्रभु बिषम बियोग दुख सहिहहिं पावँर प्रान ॥

× × ×

रथु हांकेउ हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहिं ।
देखि निषाद बिषादबस धुनहिं सीस पछिताहिं ॥

जासु बियोग बिकल पसु ऐसें । प्रजा मातु पितु जिइहहिं कैसें ॥
बरबस राम सुमंत्रु पठाए । सुरसरि तीर आपु तब आए ॥
मागी नाव न केवटु आना । कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना ॥
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई । मानुष करनि मूरि कछु अहई ॥
छुअत सिला भइ नारि सुहाई । पाहन तें न काठ कठिनाई ॥
तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई । बाट परइ मोरि नाव उड़ाई ॥
एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू । नहिं जानउँ कछु अउर कबारू ॥
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू । मोहि पद पदुम पखारन कहहू ॥

पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ।
मोहि राम राउर आन दसरथ सपथ सब साची कहौं ॥
बरु तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं ।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं ॥

सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे ।
बिहसे करुनाऐन चितइ जानकी लखन तन ॥

कृपासिंधु बोले मुसुकाई । सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई ॥
बेगि आनु जल पाय पखारू । होत बिलंबु उतारहि पारू ॥
जासु नाम सुमिरत एक बारा । उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥
सोइ कृपाल केवटहि निहोरा । जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा ॥
पद नख निरखि देवसरि हरषी । सुनि प्रभु बचन मोहँ मति करषी ॥
केवट राम रजायसु पावा । पानि कठवता भरि लेइ आवा ॥
अति आनंद उमगि अनुरागा । चरन सरोज पखारन लागा ॥
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं । एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं ॥

पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार ।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार ॥

उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता । सीय रामु गुह लखन समेता ॥
केवट उतरि दंडवत कीन्हा । प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ॥
पिय हिय की सिय जाननिहारी । मनि मुदरी मन मुदित उतारी ॥
कहेउ कृपाल लेहि उतराई । केवट चरन गहे अकुलाई ॥
नाथ आजु मैं काह न पावा । मिटे दोष दुख दारिद दावा ॥
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी । आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी ॥
अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें । दीनदयाल अनुग्रह तोरें ॥
फिरती बार मोहि जो देवा । सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा ॥

बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु लेइ ॥
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ ॥

× × ×

सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलक भर ।
सरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल ॥

बहुरि सोचबस भे सियरवनू । कारन कवन भरत आगवनू ॥
एक आइ अस कहा बहोरी । सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
सो सुनि रामहि भा अति सोचू । इत पितु बच इत बंधु सकोचू ॥
भरत सुभाउ समुझि मन माहीं । प्रभु चित हित थिति पावत नाहीं ॥
समाधान तब भा यह जाने । भरतु कहे महुँ साधु सयाने ॥
लखन लखेउ प्रभु हृदयँ खभारू । कहत समय सम नीति बिचारू ॥
बिनु पूछें कछु कहउँ गोसाईं । सेवकु समयँ न ढीठ ढिठाईं ॥
तुम्ह सर्बग्य सिरोमनि स्वामी । आपनि समुझि कहउँ अनुगामी ॥

नाथ सुहृद सुठि सरल चित सील सनेह निधान ।
सब पर प्रीति प्रतीति जिय जानिअ आपु समान ॥

बिषई जीव पाइ प्रभुताई । मूढ़ मोह बस होहिं जनाई ॥
भरतु नीति रत साधु सुजाना । प्रभु पद प्रेमु सकल जगु जाना ॥
तेऊ आजु राम पदु पाई । चले धरम मरजाद मिटाई ॥
कुटिल कुबंधु कुअवसरु ताकी । जानि राम बनवास एकाकी ॥
करि कुमंत्रु मन साजि समाजू । आए करै अकंटक राजू ॥
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई । आए दल बटोरि दोउ भाई ॥
जौं जिय होत न कपट कुचाली । केहि सोहाति रथ बाजि गजाली ॥
भरतहि दोसु देइ को जाएँ । जग बौराइ राज पदु पाएँ ॥

ससि गुर तिय गामी नहुषु चढ़ेउ भूमिसुर जान।
लोक वेद तें बिमुख भा अधम न वेन समान॥

सहसबाहु सुरनाथु त्रिसंकू। केहि न राजमद दीन्ह कलंकू॥
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ। रिपु रिन रंच न राखब काऊ॥
एक कीन्हि नहि भरत भलाई। निदरे रामु जानि असहाई॥
समुझि परिहि सोउ आजु बिसेषी। समर सरोष राम मुखु पेखी॥
एतना कहत नीति रस भूला। रन रस बिटपु पुलक मिस फूला॥
प्रभु पद बंदि सीस रज राखी। बोले सत्य सहज बलु भाषी॥
अनुचित नाथ न मानब मोरा। भरत हमहि उपचार न थोरा॥
कहँ लगि सहिअ रहिअ मनु मारें। नाथ साथ धनु हाथ हमारें॥

छत्रि जाति रघुकुल जनमु राम अनुग जगु जान।
लातहुँ मारें चढ़ति सिर नीच को धूरि समान॥

उठि करि जोरि रजायसु मागा। मनहुँ बीर रस सोवत जागा॥
बाँधि जटा सिर कसि कटि भाथा। साजि सरासनु सायकु हाथा॥
आजु राम सेवक जसु लेऊँ। भरतहि समर सिखावन देऊँ॥
राम निरादर कर फलु पाई। सोवहुँ समर सेज दोउ भाई॥
आइ बना भल सकल समाजू। प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू॥
जिमि करि निकर दलइ मृगराजू। लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू॥
तैसेहि भरतहि सेन समेता। सानुज निदरि निपातउँ खेता॥
जौं सहाय कर संकरु आई। तौ मारउँ रन राम दोहाई॥

अति सरोष माखे लखनु लखि सुनि सपथ प्रवान।
सभय लोक सब लोकपति चाहत भभरि भगान॥

जगु भय मगन गगन भइ बानी। लखन बाहुबलु बिपुल बखानी॥
तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा। को कहि सकइ को जाननिहारा॥
अनुचित उचित काजु कछु होऊ। समुझि करिअ भल कह सबु कोऊ॥
सहसा करि पाछें पछिताहीं। कहहिं वेद बुध ते बुध नाहीं॥
सुनि सुर बचन लखन सकुचाने। राम सीय सादर सनमाने॥
कही तात तुम्ह नीति सुहाई। सब तें कठिन राजमदु भाई॥
जो अचवँत नृप मातहिं तेई। नाहिन साधुसभा जेहि सेई॥
सुनहु लखन भल भरत सरीसा। बिधि प्रपंच महँ सुना न दीसा॥

भरतहि होइ न राजमदु बिधि हरि हर पद पाइ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ॥

तिमिर तरुन तरनिहि मकु गिलई। गगनु मगन मकु मेघहिं मिलई॥
गोपद जल बूड़हिं घटजोनी। सहज छमा बरु छाड़ै छोनी॥
मसक फूँक मकु मेरु उड़ाई। होइ न नृपमदु भरतहि भाई॥
लखन तुम्हार सपथ पितु आना। सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना॥
सगुनु खीरु अवगुन जलु ताता। मिलइ रचइ परपंचु बिधाता॥
भरतु हंस रबिबंस तड़ागा। जनमि कीन्ह गुन दोष बिभागा॥
गहि गुन पय तजि अवगुन बारी। निज जस जगत कीन्हि उजिआरी॥
कहत भरत गुन सील सुभाऊ। पेम पयोधि मगन रघुराऊ॥

सुनि रघुबर बानी बिबुध देखि भरत पर हेतु।
सकल सराहत राम सो प्रभु को कृपानिकेतु॥

जौं न होत जग जनम भरत को। सकल धरम धुर धरनि धरत को॥
कबि कुल अगम भरत गुन गाथा। को जानइ तुम्ह बिनु रघुनाथा॥
लखन राम सिय सुनि सुर बानी। अति सुख लहेउ न जाइ बखानी॥
इहाँ भरतु सब सहित सहाए। मंदाकिनी पुनीत नहाए॥
सरित समीप राखि सब लोगा। मांगि मातु गुर सचिव नियोगा॥
चले भरतु जहँ सिय रघुराई। साथ निषादनाथु लघु भाई॥
समुझि मातु करतब सकुचाहीं। करत कुतरक कोटि मन माहीं॥
रामु लखनु सिय सुनि मम नाऊँ। उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ॥

मातु मते महुँ मानि मोहि जो कछु करहिं सो थोर।
अघ अवगुन छमि आदरहिं समुझि आपनी ओर॥

जौं परिहरहिं मलिन मनु जानी। जौं सनमानहिं सेवकु मानी॥
मोरें सरन रामहि की पनही। राम सुस्वामि दोसु सब जनही॥
जग जस भाजन चातक मीना। नेम पेम निज निपुन नवीना॥
अस मन गुनत चले मग जाता। सकुच सनेह सिथिल सब गाता॥
फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी। चलत भगति बल धीरज धोरी॥
जब समुझत रघुनाथ सुभाऊ। तब पथ परत उताइल पाऊ॥
भरत दसा तेहि अवसर कैसी। जल प्रवाह जल अलि गति जैसी॥
देखि भरत कर सोचु सनेहू। भा निषाद तेहि समय बिदेहू॥

लगे होन मंगल सगुन सुनि गुनि कहत निषादु।
मिटिहि सोचु होइहि हरषु पुनि परिनाम बिषादु॥

× × ×

बिपुल सुमन सुर बरषहिं गावहिं प्रभु गुन गाथ।
निज पद दीन्ह असुर कहुँ दीनबंधु रघुनाथ॥

खल वधि तुरत फिरे रघुवीरा । सोह चाप कर कटि तूनीरा ॥
आरत गिरा सुनी जब सीता । कह लछिमन सन परम सभीता ॥
जाहु वेगि संकट अति भ्राता । लछिमन विहसि कहा सुनु माता ॥
भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई । सपनेहुँ संकट परइ कि सोई ॥
मरम वचन जब सीता बोला । हरि प्रेरित लछिमन मन डोला ॥
वन दिसि देव सौंपि सब काहू । चले जहाँ रावन ससि राहू ॥
सून बीच दसकंधर देखा । आवा निकट जती कें वेषा ॥
जाकें डर सुर असुर डेराहीं । निसि न नीद दिन अन्न न खाहीं ॥
सो दससीस स्वान की नाईं । इत उत चितइ चला भड़िहाईं ॥
इमि कुपंथ पग देत खगेसा । रह न तेज तन बुधि वल लेसा ॥
नाना विधि करि कथा सुनाई । राजनीति भय प्रीति देखाई ॥
कह सीता सुनु जती गोसाईं । बोलेहु बचन दुष्ट की नाईं ॥
तव रावन निज रूप देखावा । भई सभय जब नाम सुनावा ॥
कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा । आइ गयउ प्रभु रहु खल ठाढ़ा ॥
जिमि हरिबधुहि छुद्र सस चाहा । भएसि कालवस निसिचर नाहा ॥
सुनत वचन दससीस रिसाना । मन महुँ चरन बंदि सुख माना ॥

क्रोधवंत तब रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ ।
चला गगनपथ आतुर भयँ रथ हांकि न जाइ ॥

हा जगदीश देव रघुराया । केहिं अपराध विसारेहु दाया ॥
आरति हरन सरन सुखदायक । हा रघुकुल सरोज दिननायक ॥
हा लछिमन तुम्हार नहिं दोसा । सो फलु पायउँ कीन्हेउँ रोसा ॥
बिबिध विलाप करति बैदेही । भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ॥
बिपति मोरि को प्रभुहि सुनावा । पुरोडास चह रासभ खावा ॥
सीता कै विलाप सुनि भारी । भए चराचर जीव दुखारी ॥
गीधराज सुनि आरत वानी । रघुकुल तिलक नारि पहिचानी ॥
अधम निसाचर लीन्हें जाई । जिमि मलेछ बस कपिला गाई ॥
सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा । करिहउँ जातुधान कर नासा ॥
धावा क्रोधवंत खग कैसें । छूटइ पवि परवत कहुँ जैसें ॥
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही । निर्भय चलेसि न जानेहि मोही ॥
आवत देखि कृतांत समाना । फिरि दसकंधर कर अनुमाना ॥
की मैनाक कि खगपति होई । मम वल जान सहित पति सोई ॥
जाना जरठ जटायू एहा । मम कर तीरथ छाँड़िहि देहा ॥
सुनत गीध क्रोधातुर धावा । कह सुनु रावन मोर सिखावा ॥
तजि जानकिहि कुसल गृह जाहू । नाहिं त अस होइहि बहुबाहू ॥

राम रोष पावक अति घोरा। होइहि सकल सलभ कुल तोरा॥
उतरु न देत दसानन जोधा। तबहिं गीध धावा करि क्रोधा॥
धरि कच बिरथ कीन्ह महि गिरा। सीतहि राखि गीध पुनि फिरा॥
चोचन्ह मारि बिदारेसि देही। दंड एक भइ मुरुछा तेही॥
तब सक्रोध निसिचर खिसिआना। काढ़ेसि परम कराल कृपाना॥
काटेसि पंख परा खग धरनी। सुमिरि राम करि अदभुत करनी॥
सीतहि जान चढ़ाइ बहोरी। चला उताइल त्रास न थोरी॥
करति बिलाप जाति नभ सीता। ब्याध बिबस जनु मृगी सभीता॥
गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी। कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी॥
एहि बिधि सीतहि सो लै गयऊ। बन असोक महँ राखत भयऊ॥

हारि परा खल बहु बिधि भय अरु प्रीति देखाइ।
तब असोक पादप तर राखिसि जतन कराइ॥

जेहि बिधि कपट कुरंग सँग धाइ चले श्रीराम।
सो छबि सीता राखि उर रटति रहति हरिनाम॥

रघुपति अनुजहि आवत देखी। बाहिज चिंता कीन्हि बिसेषी॥
जनकसुता परिहरिहु अकेली। आयहु तात बचन मम पेली॥
निसिचर निकर फिरहिं बन माहीं। मम मन सीता आश्रम नाहीं॥
गहि पद कमल अनुज कर जोरी। कहेउ नाथ कछु मोहि न खोरी॥
अनुज समेत गए प्रभु तहवाँ। गोदावरि तट आश्रम जहवाँ॥
आश्रम देखि जानकी हीना। भए बिकल जस प्राकृत दीना॥
हा गुन खानि जानकी सीता। रूप सील ब्रत नेम पुनीता॥
लछिमन समुझाए बहु भाँती। पूछत चले लता तरु पाँती॥
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम्ह देखी सीता मृगनैनी॥
खंजन सुक कपोत मृग मीना। मधुप निकर कोकिला प्रबीना॥
कुंद कली दाड़िम दामिनी। कमल सरद ससि अहिभामिनी॥
बरुन पास मनोज धनु हंसा। गज केहरि निज सुनत प्रसंसा॥
श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं। नेकु न संक सकुच मन माहीं॥
सुनु जानकी तोहि बिनु आजू। हरषे सकल पाइ जनु राजू॥
किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं। प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं॥
एहि बिधि खोजत बिलपत स्वामी। मनहुँ महा बिरही अति कामी॥
पूरनकाम राम सुख रासी। मनुजचरित कर अज अबिनासी॥
आगें परा गीधपति देखा। सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा॥

कर सरोज सिर परसेउ कृपासिंधु रघुबीर।
निरखि राम छबि धाम मुख बिगत भई सब पीर॥

तब कह गीध बचन धरि धीरा। सुनहु राम भंजन भव भीरा॥
नाथ दसानन यह गति कीन्ही। तेहिं खल जनकसुता हरि लीन्ही॥
लै दच्छिन दिसि गयउ गोसाईं। बिलपति अति कुररी की नाईं॥
दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना। चलन चहत अब कृपा निधाना॥
राम कहा तनु राखहु ताता। मुख मुसुकाइ कही तेहिं बाता॥
जा कर नाम मरत मुख आवा। अधमउ मुकुत होइ श्रुति गावा॥
सो मम लोचन गोचर आगें। राखौं देह नाथ केहि खाँगें॥
जल भरि नयन कहहिं रघुराई। तात कर्म निज तें गति पाई॥
परहित बस जिन्ह के मन माहीं। तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं॥
तनु तजि तात जाहु मम धामा। देउँ काह तुम्ह पूरनकामा॥

सीता हरन तात जनि कहहु पिता सन जाइ।
जौं मैं राम त कुल सहित कहिहि दसानन आइ॥

गीध देह तजि धरि हरि रूपा। भूषन बहु पट पीत अनूपा॥
स्याम गात बिसाल भुज चारी। अस्तुति करत नयन भरि बारी॥

जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही।
दससीस बाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही॥
पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं।
निति नौमि रामु कृपाल बाहु बिसाल भव भय मोचनं॥
बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं।
गोविंद गोपर द्वंद्वहर बिग्यानघन धरनीधरं॥
जे राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं।
नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजनं॥
जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म व्यापक बिरज अज कहि गावहीं।
करि ध्यान ग्यान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं॥
सो प्रगट करुना कंद सोभा बृंद अग जग मोहई।
मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई॥
जो अगम सुगम सुभाव निर्मल असम सम सीतल सदा।
पस्यंति जं जोगी जतन करि करत मन गो बस सदा॥
सो राम रमा निवास संतत दास बस त्रिभुवन धनी।
मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी॥

अबिरल भगति मागि बर गीध गयउ हरिधाम।
तेहि की क्रिया जथोचित निज कर कीन्ही राम॥

कोमल चित अति दीनदयाला। कारन बिनु रघुनाथ कृपाला ।।
गीध अधम खग आमिष भोगी। गति दीन्ही जो जाचत जोगी ।।
सुनहु उमा ते लोग अभागी। हरि तजि होहिं बिषय अनुरागी ।।
पुनि सीतहि खोजत द्वौ भाई। चले बिलोकत बन बहुताई ।।
संकुल लता बिटप घन कानन। बहु खग मृग तहँ गज पंचानन ।।
आवत पंथ कबंध निपाता। तेहि सब कही साप कै बाता ।।
दुरवासा मोहि दीन्ही सापा। प्रभु पद पेखि मिटा सो पापा ।।
सुनु गंधर्ब कहउँ मैं तोही। मोहि न सोहाइ ब्रह्मकुल द्रोही ।।

मन क्रम बचन कपट तजि जो कर भूसुर सेव।
मोहि समेत बिरंचि सिव बस ताके सब देव ।।

सापत ताड़त परुष कहंता। बिप्र पूज्य अस गावहि संता ।।
पूजिअ बिप्र सील गुन हीना। सूद्र न गुन गन ग्यान प्रबीना ।।
कहि निज धर्म ताहि समुझावा। निज पद प्रीति देखि मन भावा ।।
रघुपति चरन कमल सिरु नाई। गयउ गगन आपनि गति पाई ।।
ताहि देइ गति राम उदारा। सबरी कें आश्रम पगु धारा ।।
सबरी देखि राम गृहँ आए। मुनि के बचन समुझि जिय भाए ।।
सरसिज लोचन बाहु बिसाला। जटा मुकुट सिर उर बनमाला ।।
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई। सबरी परी चरन लपटाई ।।
प्रेम मगन मुख बचन न आवा। पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा ।।
सादर जल लै चरन पखारे। पुनि सुंदर आसन बैठारे ।।

कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि ।।

पानि जोरि आगे भइ ठाढ़ी। प्रभुहि बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी ।।
केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी। अधम जाति मै जड़मति भारी ।।
अधम ते अधम अधम अति नारी। तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी ।।
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानउँ एक भगति कर नाता ।।
जाति पांति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई ।।
भगति हीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा ।।
नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं ।।
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ।।

गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान ।।

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजन सो वेद प्रकासा ।।

छठ दम सील विरति बहु करमा । निरत निरंतर सज्जन धरमा ।
सातवँ सम मोहि मय जग देखा । मोते संत अधिक करि लेखा ॥
आठवँ जथालाभ संतोषा । सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा ॥
नवम सरल सब सन छलहीना । मम भरोस हियँ हरप न दीना ॥
नव महुँ एकउ जिन्ह के होई । नारि पुरुष सचराचर कोई ॥
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें । सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें ॥
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई । तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई ॥
मम दरसन फल परम अनूपा । जीव पाव निज सहज सरूपा ॥
जनकसुता कइ सुधि भामिनी । जानहि कहु करिबरगामिनी ॥
पंपा सरहि जाहु रघुराई । तहँ होइहि सुग्रीव मिताई ॥
सो सब कहिहि देव रघुबीरा । जानतहूँ पूछहु मतिधीरा ॥
बार बार प्रभु पद सिरु नाई । प्रेम सहित सब कथा सुनाई ॥

× × ×

भवन गयउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बृंद ।
सीतहि त्रास देखावहिं धरहिं रूप बहु मंद ॥

त्रिजटा नाम राच्छसी एका । राम चरन रति निपुन बिबेका ॥
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना । सीतहि सेइ करहु हित अपना ॥
सपनें बानर लंका जारी । जातुधान सेना सब मारी ॥
खर आरूढ़ नगन दससीसा । मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥
एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई । लंका मनहुँ बिभीषन पाई ॥
नगर फिरी रघुबीर दोहाई । तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥
यह सपना मैं कहउँ पुकारी । होइहि सत्य गए दिन चारी ॥
तासु बचन सुनि ते सब डरीं । जनकसुता के चरनन्हि परीं ॥

जहँ तहँ गईं सकल तब सीता कर मन सोच ।
मास दिवस बीते मोहि मारिहि निसिचर पोच ॥

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी । मातु बिपति संगिनि तैं मोरी ॥
तजौं देह करु बेगि उपाई । दुसह बिरहु अब नहिं सहि जाई ॥
आनि काठ रचु चिता बनाई । मातु अनल पुनि देहि लगाई ॥
सत्य करहि मम प्रीति सयानी । सुनै को श्रवन सूल सम बानी ॥
सुनत बचन पद गहि समुझाएसि । प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि ॥
निसि न अनल मिलि सुनु सुकुमारी । अस कहि सो निज भवन सिधारी ॥
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला । मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला ॥
देखिअत प्रगट गगन अंगारा । अवनि न आवत एकउ तारा ॥

पावकमय ससि स्रवत न आगी। मानहुँ मोहि जानि हतभागी ॥
सुनहि बिनय मम विटप असोका। सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥
नूतन किसलय अनल समाना। देहि अगिनि जनि करहि निदाना ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता। सो छन कपिहि कलप सम बीता ॥

कपि करि हृदय विचार दीन्हि मुद्रिका डारि तव।
जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुंदर ॥
चकित चितव मुदरी पहिचानी। हरष विषाद हृदय अकुलानी ॥
जीति को सकइ अजय रघुराई। माया तें असि रचि नहिं जाई ॥
सीता मन विचार कर नाना। मधुर वचन बोलेउ हनुमाना ॥
रामचंद्र गुन बरनैं लागा। सुनतहिं सीता कर दुख भागा ॥
लागीं सुनैं श्रवन मन लाई। आदिहु तें सब कथा सुनाई ॥
श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई। कही सो प्रगट होति किन भाई ॥
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ। फिर बैठीं मन बिसमय भयऊ ॥
राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुनानिधान की ॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्ह राम तुम्ह कहँ सहिदानी ॥
नर बानरहि संग कहु कैसें। कही कथा भइ संगति जैसें ॥

कपि के वचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास।
जाना मन क्रम वचन यह कृपासिंधु कर दास ॥

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ॥
बूड़त विरह जलधि हनुमाना। भयहु तात मो कहुँ जलजाना ॥
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी ॥
कोमलचित कृपाल रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥
सहज बानि सेवक सुख दायक। कबहुँक सुरति करत रघुनायक ॥
कबहुँ नयन मम सीतल ताता। होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता ॥
वचनु न आव नयन भरे वारी। अहह नाथ हौं निपट बिसारी ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता। बोला कपि मृदु वचन बिनीता ॥
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता। तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥
जनि जननी मानहुँ जियँ ऊना। तुम्ह ते प्रेम राम के दूना ॥

रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गदगद भयउ भरे विलोचन नीर ॥

कहेउ राम वियोग तव सीता। मो कहुँ सकल भए विपरीता ॥
नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू। काल निसा सम निसि ससि भानू ॥

कुवलय विपिन कुंत वन सरिसा। बारिद तपत तेल जनु बरिसा ॥
जे हित रहे करत तेइ पीरा। उरग स्वास सम त्रिविध समीरा ॥
कहेहू तें कछु दुख घटि होई। काहि कहौं यह जान न कोई ॥
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा ॥
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं ॥
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही। मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥
कह कपि हृदय धीर धरु माता। सुमिरु राम सेवक सुखदाता ॥
उर आनहु रघुपति प्रभुताई। सुनि मम बचन तजहु कदराई ॥

निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु।
जननी हृदयँ धीर धरु जरे निसाचर जानु ॥

जौं रघुबीर होति सुधि पाई। करते नहिं बिलंबु रघुराई ॥
राम बान रबि उए जानकी। तम बरूथ कहँ जातुधान की ॥
अबहिं मातु मैं जाउँ लवाई। प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई ॥
कछुक दिवस जननी धरु धीरा। कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा ॥
निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं। तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं ॥
हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना। जातुधान अति भट बलवाना ॥
मोरे हृदय परम संदेहा। सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा ॥
कनक भूधराकार सरीरा। समर भयंकर अतिबल बीरा ॥
सीता मन भरोस तब भयऊ। पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ ॥

सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल।
प्रभु प्रताप तें गरुड़हि खाइ परम लघु ब्याल ॥

मन संतोष सुनत कपि बानी। भगति प्रताप तेज बल सानी ॥
आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना। होहु तात बल सील निधाना ॥
अजर अमर गुननिधि सुत होहू। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू ॥
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥
बार बार नाएसि पद सीसा। बोला बचन जोरि कर कीसा ॥
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता। आसिष तव अमोघ बिख्याता ॥
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा। लागि देखि सुंदर फल रूखा ॥
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी। परम सुभट रजनीचर भारी ॥
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं। जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ॥

देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु।
रघुपति चरन हृदय धरि तात मधुर फल खाहु ॥

× × ×

प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज।
पूछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज॥
जामवंत कह सुन रघुराया। जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया॥
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर। सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर॥
सोइ बिजई बिनई गुन सागर। तासु सुजसु त्रैलोक उजागर॥
प्रभु की कृपा भयउ सब काजू। जन्म हमार सुफल भा आजू॥
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी। सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी॥
पवनतनय के चरित सुहाए। जामवंत रघुपतिहि सुनाए॥
सुनत कृपानिधि मन अति भाए। पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए॥
कहहु तात केहि भांति जानकी। रहति करति रच्छा स्वप्रान की॥
नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट॥
चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदय लाइ सोइ लीन्ही॥
नाथ जुगल लोचन भरि बारी। बचन कहे कछु जनककुमारी॥
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना। दीन बंधु प्रनतारति हरना॥
मन क्रम बचन चरन अनुरागी। केहिं अपराध नाथ हौं त्यागी॥
अवगुन एक मोर मैं माना। बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना॥
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा। निसरत प्रान करहिं हठि बाधा॥
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा। स्वास जरइ छन माहिं सरीरा॥
नयन स्रवहिं जलु निज हित लागी। जरैं न पाव देह बिरहागी॥
सीता कै अति बिपति बिसाला। बिनहिं कहें भलि दीनदयाला॥
निमिष निमिष करुनानिधि जाहिं कलप सम बीति।
बेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति॥
सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना। भरि आए जल राजिव नयना॥
बचन काय मन मम गति जाही। सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही॥
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई। जब तव सुमिरन भजन न होई॥
केतिक बात प्रभु जातुधान की। रिपुहि जीति आनिबी जानकी॥
सुनु कपि तोहि समान उपकारी। नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी॥
प्रति उपकार करौं का तोरा। सनमुख होइ न सकत मन मोरा॥
सुन सुत तोहि उरिन मैं नाहीं। देखउँ करि बिचार मन माहीं॥
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता। लोचन नीर पुलक अति गाता॥
सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत॥

× × ×

बाँध्यो बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस ।
सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस ॥

निज बिकलता बिचारि बहोरी । बिहँसि गयउ गृह करि भय भोरी ॥
मंदोदरी सुन्यो प्रभु आयो । कौतुकहीं पाथोधि बँधायो ॥
कर गहि पतिहि भवन निज आनी । बोली परम मनोहर बानी ॥
चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा । सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा ॥
नाथ बयरु कीजे ताही सों । बुधि बल सकिअ जीति जाही सों ॥
तुम्हहि रघुपतिहि अंतर कैसा । खलु खद्योत दिनकरहि जैसा ॥
अतिबल मधु कैटभ जेहिं मारे । महाबीर दितिसुत संघारे ॥
जेहिं बलि बांधि सहसभुज मारा । सोइ अवतरेउ हरन महि भारा ॥
तासु बिरोध न कीजिअ नाथा । काल करम जिव जाके हाथा ॥

रामहि सौंपि जानकी नाइ कमल पद माथ ।
सुत कहुँ राज समर्पि बन जाइ भजिअ रघुनाथ ॥

नाथ दीनदयाल रघुराई । बाघउ सनमुख गए न खाई ॥
चाहिअ करन सो सब करि बीते । तुम्ह सुर असुर चराचर जीते ॥
संत कहहिं असि नीति दसानन । चौथेंपन जाइहि नृप कानन ॥
तासु भजनु कीजिअ तहँ भर्ता । जो कर्ता पालक संहर्ता ॥
सोइ रघुबीर प्रनत अनुरागी । भजहु नाथ ममता सब त्यागी ॥
मुनिबर जतनु करहिं जेहि लागी । भूप राजु तजि होहिं बिरागी ॥
सोइ कोसलाधीस रघुराया । आयउ करन तोहि पर दाया ॥
जौं पिय मानहु मोर सिखावन । सुजसु होइ तिहुँ पुर अति पावन ॥

अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंपित गात ।
नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिवात ॥

तब रावन मयसुता उठाई । कहै लाग खल निज प्रभुताई ॥
सुनु तैं प्रिया बृथा भय माना । जग जोधा को मोहि समाना ॥
बरुन कुबेर पवन जम काला । भुज बल जितेउँ सकल दिगपाला ॥
देव दनुज नर सब बस मोरें । कवन हेतु उपजा भय तोरें ॥
नाना बिधि तेहि कहेसि बुझाई । सभा बहोरि बैठ सो जाई ॥
मंदोदरी हृदयँ अस जाना । काल बस्य उपजा अभिमाना ॥
सभा आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा । करब कवन बिधि रिपु सैं जूझा ॥
कहहिं सचिव सुनु निसिचर नाहा । बार बार प्रभु पूछहु काहा ॥
कहहु कवन भय करिअ बिचारा । नर कपि भालु अहार हमारा ॥

सठ के बचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि।
नीति बिरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि॥

× × ×

प्रभु आग्या धरि सीस चरन बंदि अंगद उठेउ।
सोइ गुन सागर ईस राम कृपा जा पर करहु॥

स्वयंसिद्ध सब काज नाथ मोहि आदर दियउ।
अस बिचारि जुबराज तन पुलकित हरषित हियउ॥

बंदि चरन उर धरि प्रभुताई। अंगद चलेउ सबहि सिर नाई॥
प्रभु प्रताप उर सहज असंका। रन बाँकुरा बालिसुत बंका॥
पुर पैठत रावन कर बेटा। खेलत रहा सो होइ गै भेटा॥
बातहिं बात करष बढ़ि आई। जुगल अतुल बल पुनि तरुनाई॥
तेहिं अंगद कहुँ लात उठाई। गहि पद पटकेउ भूमि भवाँई॥
निसिचर निकर देखि भट भारी। जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी॥
एक एक सन मरमु न कहहीं। समुझि तासु बध चुप करि रहहीं॥
भयउ कोलाहल नगर मझारी। आवा कपि लंका जेहिं जारी॥
अब धौं कहा करिहि करतारा। अति सभीत सब करहिं बिचारा॥
बिनु पूछें मगु देहिं दिखाई। जेहि बिलोक सोइ जाइ सुखाई॥

गयउ सभा दरबार तब सुमिरि राम पद कंज।
सिंह ठवनि इत उत चितव धीर बीर बल पुंज॥

तुरत निसाचर एक पठावा। समाचार रावनहि जनावा॥
सुनत बिहँसि बोला दससीसा। आनहु बोलि कहाँ कर कीसा॥
आयसु पाइ दूत बहु धाए। कपिकुंजरहि बोलि लै आए॥
अंगद दीख दसानन बैसें। सहित प्रान कज्जलगिरि जैसें॥
भुजा बिटप सिर सृंग समाना। रोमावली लता जनु नाना॥
मुख नासिका नयन अरु काना। गिरि कंदरा खोह अनुमाना॥
गयउ सभा मन नेकु न मुरा। बालितनय अतिबल बाँकुरा॥
उठे सभासद कपि कहुँ देखी। रावन उर भा क्रोध बिसेषी॥

जथा मत्त गज जूथ महुँ पंचानन चलि जाइ।
राम प्रताप सुमिरि मन बैठ सभा सिर नाइ॥

कह दसकंठ कवन तैं बंदर। मैं रघुबीर दूत दसकंधर॥
मम जनकहि तोहि रही मिताई। तव हित कारन आयउँ भाई॥
उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती। सिव बिरंचि पूजेउ बहु भाँती॥
बर पायहु कीन्हेहु सब काजा। जीतेहु लोकपाल सब राजा॥

नृप अभिमान मोह बस किंवा। हरि आनिहु सीता जगदंबा ॥
अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा। सब अपराध छमिहि प्रभु तोरा ॥
दसन गहहु तृन कंठ कुठारी। परिजन सहित संग निज नारी ॥
सादर जनकसुता करि आगें। एहि विधि चलहु सकल भय त्यागें ॥

प्रनतपाल रघुबंसमनि त्राहि त्राहि अब मोहि।
आरत गिरा सुनत प्रभु अभय करैगो तोहि ॥

रे कपिपोत बोलु संभारी। मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी ॥
कहु निज नाम जनक कर भाई। केहि नातें मानिए मिताई ॥
अंगद नाम बालि कर बेटा। तासों कबहुँ भई ही भेटा ॥
अंगद बचन सुनत सकुचाना। रहा बालि बानर मैं जाना ॥
अंगद तहीं बालि कर बालक। उपजेहु बंस अनल कुल घालक ॥
गर्भ न गयहु ब्यर्थ तुम्ह जायहु। निज मुख तापस दूत कहायहु ॥
अब कहु कुसल बालि कहँ अहई। बिहँसि बचन तब अंगद कहई ॥
दिन दस गए बालि पहिं जाई। बूझेहु कुसल सखा उर लाई ॥
राम बिरोध कुसल जसि होई। सो सब तोहि सुनाइहि सोई ॥
सुनु सठ भेद होइ मन ताकें। श्रीरघुबीर हृदय नहिं जाकें ॥

हम कुल घालक सत्य तुम्ह कुल पालक दससीस।
अंधउ बधिर न अस कहहि नयन कान तव बीस ॥

सिव बिरंचि सुर मुनि समुदाई। चाहत जासु चरन सेवकाई ॥
तासु दूत होइ हम कुल बोरा। अइसिहुँ मति उर बिहर न तोरा ॥
सुनि कठोर बानी कपि केरी। कहत दसानन नयन तरेरी ॥
खल तव कठिन बचन सब सहऊँ। नीति धर्म मैं जानत अहऊँ ॥
कह कपि धर्मसीलता तोरी। हमहुँ सुनी कृत पर त्रिय चोरी ॥
देखी नयन दूत रखवारी। बूड़ि न मरहु धर्म ब्रतधारी ॥
कान नाक बिनु भगिनि निहारी। छमा कीन्हि तुम्ह धर्म बिचारी ॥
धर्मसीलता तव जग जागी। पावा दरसु हमहुँ बड़भागी ॥

जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि सठ बिलोकु मम बाहु।
लोकपाल बल बिपुल ससि ग्रसन हेतु सब राहु ॥

पुनि नभ सर मम कर निकर कमलन्हि पर करि बास।
सोभत भयउ मराल इव संभु सहित कैलास ॥

तुम्हरे कटक माझ सुनु अंगद। मो सन भिरिहि कवन जोधा बद ॥
तव प्रभु नारि बिरह बलहीना। अनुज तासु दुख दुखी मलीना ॥

तुम्ह सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ। अनुज हमार भीरु अति सोऊ॥
जामवंत मंत्री अति बूढ़ा। सो कि होइ अब समरारूढ़ा॥
सिल्पि कर्म जानहिं नल नीला। है कपि एक महा बलसीला।
आवा प्रथम नगरु जेहिं जारा। सुनत बचन कह बालिकुमारा॥
सत्य बचन कहु निसिचर नाहा। सांचेहुँ कीस कीन्ह पुर दाहा।
रावन नगर अल्प कपि दहई। सुनि अस बचन सत्य को कहई।'
जो अति सुभट सराहेहु रावन। सो सुग्रीव केर लघु धावन॥
चलइ बहुत सो बीर न होई। पठवा खबर लेन हम सोई॥

सत्य नगरु कपि जारेउ बिनु प्रभु आयसु पाइ।
फिरि न गयउ सुग्रीव पहिं तेहि भय रहा लुकाइ॥
सत्य कहहि दसकंठ सब मोहि न सुनि कछु कोह।
कोउ न हमारे कटक अस तो सन लरत जो सोह॥
प्रीति बिरोध समान सन करिअ नीति असि आहि।
जौ मृगपति बध मेडुकन्हि भल कि कहइ कोउ ताहि॥
जद्यपि लघुता राम कहुँ तोहि बधें बड़ दोष।
तदपि कठिन दसकंठ सुन छत्र जाति कर रोष॥
वक्र उक्ति धनु बचन सर हृदय दहेउ रिपु कीस।
प्रतिउत्तर सड़सिन्ह मनहु काढ़त भट दससीस॥
हंसि बोलेउ दसमौलि तब कपि कर बड़ गुन एक।
जो प्रतिपालइ तासु हित करइ उपाइ अनेक॥

धन्य कीस जो निज प्रभु काजा। जहँ तहँ नाचइ परिहरि लाजा॥
नाचि कूदि करि लोग रिझाई। पति हित करइ धर्म निपुनाई॥
अंगद स्वामिभक्त तव जाती। प्रभु गुन कस न कहसि एहि भाँती॥
मैं गुन गाहक परम सुजाना। तव कटु रटनि करउँ नहिं काना॥
कह कपि तव गुन गाहकताई। सत्य पवनसुत मोहि सुनाई॥
बन बिधंसि सुत बधि पुर जारा। तदपि न तेहिं कछु कृत अपकारा॥
सोइ बिचारि तव प्रकृति सुहाई। दसकंधर मैं कीन्हि ढिठाई॥
देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा। तुम्हरें लाज न रोष न माखा॥
जौं असि मति पितु खाए कीसा। कहि असि बचन हँसा दससीसा॥
पितहि खाइ खातेउँ पुनि तोही। अबहीं समुझि परा कछु मोही॥
बालि बिमल जस भाजन जानी। हतउँ न तोहि अधम अभिमानी॥
कहु रावन रावन जग केते। मैं निज श्रवन सुने सुनु जेते॥

बलिहि जित न एक गयउ पताला । राखेउ बाँधि सिसुन्ह हयसाला ।।
खेलहिं बालक मारहिं जाई । दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई ।।
एक बहोरि सहसभुज देखा । धाइ धरा जिमि जंतु बिसेषा ।।
कौतुक लागि भवन लै आवा । सो पुलस्ति मुनि जाइ छोड़ावा ।।

एक कहत मोहि सकुच अति रहा बालि की काँख ।
इन्ह महुँ रावन तैं कवन सत्य बदहि तजि माख ।।

सुनु सठ सोइ रावन बलसीला । हरगिरि जान जासु भुज लीला ।।
जान उमापति जासु सुराई । पूजेउँ जेहि सिर सुमन चढ़ाई ।।
सिर सरोज निज करन्हि उतारी । पूजेउँ अमित बार त्रिपुरारी ।।
भुज बिक्रम जानहिं दिगपाला । सठ आजहूँ जिन्ह कें उर साला ।।
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई । जब जब भिरउँ जाइ बरिआई ।।
जिन्ह के दसन कराल न फूटे । उर लागत मूलक इव टूटे ।।
जासु चलत डोलति इमि धरनी । चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी ।।
सोइ रावन जग बिदित प्रतापी । सुनेहि न श्रवन अलीक प्रलापी ।।

तेहि रावन कहँ लघु कहसि नर कर करसि बखान ।
रे कपि बर्बर खर्ब खल अब जाना तव ग्यान ।।

सुनि अंगद सकोप कह बानी । बोलु सँभारि अधम अभिमानी ।।
सहसबाहु भुज गहन अपारा । दहन अनल सम जासु कुठारा ।।
जासु परसु सागर खर धारा । बूड़े नृप अगनित बहु बारा ।।
तासु गर्ब जेहि देखत भागा । सो नर क्यों दससीस अभागा ।।
राम मनुज कस रे सठ बंगा । धन्वी कामु नदी पुनि गंगा ।।
पसु सुरधेनु कल्पतरु रूखा । अन्न दान अरु रस पीयूषा ।।
बैनतेय खग अहि सहसानन । चिंतामनि पुनि उपल दसानन ।।
सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा । लाभ कि रघुपति भगति अकुंठा ।।

सेन सहित तव मान मथि बन उजारि पुर जारि ।
कस रे सठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि ।।

सुनु रावन परिहरि चतुराई । भजसि न कृपासिंधु रघुराई ।।
जौं खल भएसि राम कर द्रोही । ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ।।
मूढ़ बृथा जनि मारसि गाला । राम बयर अस होइहि हाला ।।
तव सिर निकर कपिन्ह के आगें । परिहहिं धरनि राम सर लागें ।।
ते तव सिर कंदुक सम नाना । खेलिहहिं भालु कीस चौगाना ।।
जबहिं समर कोपिहि रघुनायक । छुटिहहिं अति कराल बहु सायक ।।
तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा । अस बिचारि भजु राम उदारा ।।
सुनत बचन रावन परजरा । जरत महानल जनु घृत परा ।।

कुंभकरन अस बंधु मम सुत प्रसिद्ध सक्रारि।
मोर पराक्रम नहिं सुनेहि जितेउँ चराचर झारि॥

सठ साखामृग जोरि सहाई। बाँधा सिंधु इहइ प्रभुताई॥
नाघहिं खग अनेक बारीसा। सूर न होहिं ते सुनु सब कीसा॥
मम भुज सागर बल जल पूरा। जहँ बूड़े बहु सुर नर सूरा॥
बीस पयोधि अगाध अपारा। को अस बीर जो पाइहि पारा॥
दिगपालन्ह मैं नीर भरावा। भूप सुजस खल मोहि सुनावा॥
जौं पै समर सुभट तव नाथा। पुनि पुनि कहसि जासु गुन गाथा॥
तौ बसीठ पठवत केहि काजा। रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा॥
हरगिरि मथन निरखु मम बाहू। पुनि सठ कपि निज प्रभुहि सराहू॥

सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहिं सीस।
हुने अनल अति हरष बहु बार साखि गौरीस॥

जरत बिलोकेउँ जबहिं कपाला। बिधि के लिखे अंक निज भाला॥
नर कें कर आपन बध बाँची। हसेउँ जानि बिधि गिरा असाँची॥
सोउ मन समुझि त्रास नहिं मोरें। लिखा बिरंचि जरठ मति भोरें॥
आन बीर बल सठ मम आगें। पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागें॥
कह अंगद सलज्ज जग माहीं। रावन तोहि समान कोउ नाहीं॥
लाजवंत तव सहज सुभाऊ। निज मुख निज गुन कहसि न काऊ॥
सिर अरु सैल कथा चित रही। ताते बार बीस तैं कही॥
सो भुजबल राखेहु उर घाली। जीतेहु सहसबाहु बलि बाली॥
सुनु मतिमंद देहि अब पूरा। काटें सीस कि होइअ सूरा॥
इंद्रजालि कहुँ कहिअ न बीरा। काटइ निज कर सकल सरीरा॥

जरहिं पतंग मोह बस भार बहहिं खर बृंद।
ते नहिं सूर कहावहिं समुझि देखु मतिमंद॥

अब जनि बत बढ़ाव खल करहीं। सुनु मम बचन मान परिहरही॥
दसमुख मैं न बसीठीं आयउँ। अस बिचारि रघुबीर पठायउँ॥
बार बार अस कहइ कृपाला। नहिं गजारि जसु बधें सृकाला॥
मन महुँ समुझि बचन प्रभु केरे। सहेउँ कठोर बचन सठ तेरे॥
नाहिं त करि मुख भंजन तोरा। लै जातेउँ सीतहि बरजोरा॥
जानेउँ तव बल अधम सुरारी। सूनें हरि आनिहि परनारी॥
तैं निसिचर पति गर्ब बहूता। मैं रघुपति सेवक कर दूता॥
जौं न राम अपमानहि डरऊँ। तोहि देखत अस कौतुक करऊँ॥

तोहि पटकि महि सेन हति चौपट करि तव गाउँ।
तव जुबतिन्ह समेत सठ जनकसुतहि लै जाउँ॥

जौं अस करौं तदपि न बड़ाई। मुएहि बधें नहिं कछु मनुसाई॥
कौल कामबस कृपिन बिमूढ़ा। अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा॥
सदा रोगबस संतत क्रोधी। बिष्नु बिमुख श्रुति संत बिरोधी॥
तनु पोषक निंदक अघ खानी। जीवत सव सम चौदह प्रानी॥
अस बिचारि खल बधउँ न तोही। अब जनि रिस उपजावसि मोही॥
सुनि सकोप कह निसिचर नाथा। अधर दसन दिसि मीजत हाथा॥
रे कपि अधम मरन अब चहसी। छोटे बदन बात बड़ि कहसी॥
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाकें। बल प्रताप बुधि तेज न ताकें॥

अगुन अमान जानि तेहि दीन्ह पिता बनबास।
सो दुख अरु जुबती बिरह पुनि निसि दिन मम त्रास॥

जिन्ह के बल कर गर्ब तोहि अइसे मनुज अनेक।
खाहिं निसाचर दिवस निसि मूढ़ समुझु तजि टेक॥

जब तेहिं कीन्हि राम कै निंदा। क्रोधवंत अति भयउ कपिंदा॥
हरि हर निंदा सुनइ जो काना। होइ पाप गोघात समाना॥
कटकटान कपिकुंजर भारी। दुहु भुजदंड तमकि महि मारी॥
डोलत धरनि सभासद खसे। चले भाजि भय मारुत ग्रसे॥
गिरत सँभारि उठा दसकंधर। भूतल परे मुकुट अति सुंदर॥
कछु तेहिं लै निज सिरन्हि सँवारे। कछु अंगद प्रभु पास पबारे॥
आवत मुकुट देखि कपि भागे। दिनहीं लूक परन बिधि लागे॥
की रावन करि कोप चलाए। कुलिस चारि आवत अति धाए॥
कह प्रभु हँसि जनि हृदयँ डेराहू। लूक न असनि केतु नहिं राहू॥
ए किरीट दसकंधर केरे। आवत बालितनय के प्रेरे॥

तरकि पवनसुत कर गहे आनि धरे प्रभु पास।
कौतुक देखहिं भालु कपि दिनकर सरिस प्रकास॥

उहाँ सकोपि दसानन सब सन कहत रिसाइ।
धरहु कपिहि धरि मारहु सुनि अंगद मुसुकाइ॥

एहि बिधि बेगि सुभट सब धावहु। खाहु भालु कपि जहँ जहँ पावहु॥
मर्कटहीन करहु महि जाई। जिअत धरहु तापस द्वौ भाई॥
पुनि सकोप बोलेउ जुबराजा। गाल बजावत तोहि न लाजा॥
मरु गर काटि निलज कुलघाती। बल बिलोकि बिहरति नहिं छाती॥

रे त्रिय चोर कुमारग गामी। खल मल रासि मंदमति कामी॥
सन्यपात जल्पसि दुर्बादा। भएसि कालबस खल मनुजादा॥
याको फलु पावहिगो आगें। बानर भालु चवेटन्हि लागें॥
रामु मनुज बोलत असि बानी। गिरहिं न तव रसना अभिमानी॥
गिरिहहिं रसना संसय नाहीं। सिरन्हि समेत समर महि माहीं॥

सो नर क्यों दसकंध बालि बध्यो जेहिं एक सर।
बीसहुँ लोचन अंध धिग तव जन्म कुजाति जड़॥

तव सोनित कीं प्यास तृषित राम सायक निकर।
तजउँ तोहि तेहि त्रास कटु जल्पक निसिचर अधम॥

मैं तव दसन तोरिबे लायक। आयसु मोहि न दीन्ह रघुनायक॥
असि रिस होति दसउ मुख तोरौं। लंका गहि समुद्र महँ बोरौं॥
गूलरि फल समान तव लंका। बसहु मध्य तुम्ह जंतु असंका॥
मैं बानर फल खात न बारा। आयसु दीन्ह न राम उदारा॥
जुगुति सुनत रावन मुसुकाई। मूढ़ सिखिहि कहँ बहुत झुठाई॥
बालि न कबहुँ गाल अस मारा। मिलि तपसिन्ह तैं भएसि लबारा॥
सांचेहुँ मैं लबार भुज बीहा। जौं न उपारिउँ तव दस जीहा॥
समुझि राम प्रताप कपि कोपा। सभा माझ पन करि पद रोपा॥
जौं मम चरन सकसि सठ टारी। फिरहिं रामु सीता मैं हारी॥
सुनहु सुभट सब कह दससीसा। पद गहि धरनि पछारहु कीसा॥
इंद्रजीत आदिक बलवाना। हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना॥
झपटहिं करि बल बिपुल उपाई। पद न टरइ बैठहिं सिरु नाई॥
पुनि उठि झपटहिं सुर आराती। टरइ न कीस चरन एहि भाँती॥
पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी। मोह बिटप नहिं सकहिं उपारी॥

कोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ।
झपटहिं टरै न कपि चरन पुनि बैठहिं सिर नाइ॥

भूमि न छाँड़त कपि चरन देखत रिपु मद भाग।
कोटि बिघ्न ते संत कर मन जिमि नीति न त्याग॥

कपि बल देखि सकल हियँ हारे। उठा आपु कपि के परचारे॥
गहत चरन कह बालिकुमारा। मम पद गहें न तोर उबारा॥
गहसि न राम चरन सठ जाई। सुनत फिरा मन अति सकुचाई॥
भयउ तेजहत श्री सब गई। मध्य दिवस जिमि ससि सोहई॥
सिंघासन बैठेउ सिर नाई। मानहुँ संपति सकल गँवाई॥

जगदातमा प्रानपति रामा। तासु विमुख किमि लह बिश्रामा ॥
उमा राम की भृकुटि बिलासा। होइ बिस्व पुनि पावइ नासा ॥
तृन ते कुलिस कुलिस तृन करई। तासु दूत पन कहु किमि टरई ॥
पुनि कपि कही नीति विधि नाना। मान न ताहि कालु निग्रराना ॥
रिपु मद मथि प्रभु सुजस सुनयो। यह कहि चल्यो वालि नृप जायो ॥
हतौं न खेत खेलाइ खेलाई। तोहि अवहिं का करौं वड़ाई ॥
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा। सो सुनि रावन भयउ दुखारा ॥
जातुधान अंगद पन देखी। भय व्याकुल सब भए विसेषी ॥

रिपु बल धरषि हरषि कपि वालितनय बल पुंज।
पुलक सरीर नयन जल गहे राम पद कंज ॥

× × ×

वैनतेय सुनु संभु तब आए जहँ रघुवीर।
विनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर ॥

जय राम रमारमनं समनं। भव ताप भयाकुल पाहि जनं ॥
अवधेस सुरेस रमेस विभो। सरनागत मागत पाहि प्रभो ॥
दससीस विनासन बीस भुजा। कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ॥
रजनीचर बृंद पतंग रहे। सर पावक तेज प्रचंड दहे ॥
महि मंडल मंडन चारुतरं। धृत सायक चाप निषंग बरं ॥
मद मोह महा ममता रजनी। तम पुंज दिवाकर तेज अनी ॥
मनजात किरात निपात किए। मृग लोग कुभोग सरेन हिए ॥
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे। विषया बन पावँर भूलि परे ॥
बहु रोग बियोगन्हि लोग हए। भवदंघ्रि निरादर के फल ए ॥
भव सिंधु अगाध परे नर ते। पद पंकज प्रेम न जे करते ॥
अति दीन मलीन दुखी नितहीं। जिन्ह कें पद पंकज प्रीति नहीं ॥
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें। प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें ॥
नहिं राग न लोभ न मान मदा। तिन्ह कें सम वैभव वा बिपदा ॥
एहि तें तव सेवक होत मुदा। मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥
करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ। पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ ॥
सम मानि निरादर आदरही। सब संत सुखी बिचरंति मही ॥
मुनि मानस पंकज भृंग भजे। रघुवीर महा रनधीर अजे ॥
तव नाम जपामि नमामि हरी। भव रोग महागद मान अरी ॥
गुन सील कृपा परमायतनं। प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ॥
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं। महिपाल बिलोकय दीन जनं ॥

बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥
बरनि उमापति राम गुन हरषि गए कैलास।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास॥

सुनु खगपति यह कथा पावनी। त्रिबिध ताप भव भय दायनी॥
महाराज कर सुभ अभिषेका। सुनत लहहिं नर बिरति बिबेका॥
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख संपति नाना बिधि पावहिं॥
सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं। अंतकाल रघुपति पुर जाहीं॥
सुनहिं बिमुक्त बिरत अरु बिषई। लहहिं भगति गति संपति नई॥
खगपति राम कथा मैं बरनी। स्वमति बिलास त्रास दुख हरनी॥
बिरति बिबेक भगति दृढ़ करनी। मोह नदी कहँ सुंदर तरनी॥
नित नव प्रीति राम पद पंकज। सबकें जिन्हहि नमत सिव मुनि अज॥
मंगन बहु प्रकार पहिराए। द्विजन्ह दान नाना बिधि पाए॥

ब्रह्मानंद मगन कपि सब के प्रभु पद प्रीति।
जात न जाने दिवस तिन्ह गए मास षट बीति॥

बिसरे गृह सपनेहुँ सुधि नाहीं। जिमि परद्रोह संत मन माहीं॥
तब रघुपति सब सखा बोलाए। आइ सबन्हि सादर सिरु नाए॥
परम प्रीति समीप बैठारे। भगत सुखद मृदु बचन उचारे॥
तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई। मुख पर केहि बिधि करौं बड़ाई॥
ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे। मम हित लागि भवन सुख त्यागे॥
अनुज राज संपति बैदेही। देह गेह परिवार सनेही॥
सब मम प्रिय नहिं तुम्हहि समाना। मृषा न कहउँ मोर यह बाना॥
सब के प्रिय सेवक यह नीती। मोरे अधिक दास पर प्रीती॥

अब गृह जाहु सखा सब भजेहु मोहि दृढ़ नेम।
सदा सर्बगत सर्बहित जानि करेहु अति प्रेम॥

सुनि प्रभु बचन मगन सब भए। को हम कहाँ बिसरि तन गए॥
एकटक रहे जोरि कर आगे। सकहिं न कछु कहि अति अनुरागे॥
परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा। कहा बिबिध बिधि ग्यान बिसेषा॥
प्रभु सन्मुख कछु कहन न पारहिं। पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिं॥
तब प्रभु भूषन बसन मगाए। नाना रंग अनूप सुहाए॥
सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराए। बसन भरत निज हाथ बनाए॥
प्रभु प्रेरित लछिमन पहिराए। लंकापति रघुपति मन भाए॥
अंगद बैठ रहा नहिं डोला। प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला॥

जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ।
हियँ धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ॥

तब अंगद उठि नाइ सिरु सजल नयन कर जोरि।
अति बिनीत बोलेउ बचन मनहुँ प्रेम रस बोरि॥

सुनु सर्बग्य कृपा सुख सिंधो। दीन दयाकर आरत बंधो॥
मरती बेर नाथ मोहि बाली। गयउ तुम्हारेहिं कोंछें घाली॥
असरन सरन बिरदु संभारी। मोहि जनि तजहु भगत हितकारी॥
मोरे तुम्ह प्रभु गुर पितु माता। जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता॥
तुम्हहि बिचारि कहहु नरनाहा। प्रभु तजि भवन काज मम काहा॥
बालक ग्यान बुद्धि बल हीना। राखहु सरन नाथ जन दीना॥
नीचि टहल गृह कै सब करिहउँ। पद पंकज बिलोकि भव तरिहउँ॥
अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही। अब जनि नाथ कहहु गृह जाही॥

अंगद बचन बिनीत सुनि रघुपति करुना सींव।
प्रभु उठाइ उर लायउ सजल नयन राजीव॥

निज उर माल बसन मनि बालितनय पहिराइ।
बिदा कीन्हि भगवान तब बहु प्रकार समुझाइ॥

भरत अनुज सौमित्र समेता। पठवन चले भगत कृत चेता॥
अंगद हृदयँ प्रेम नहिं थोरा। फिरि फिरि चितव राम की ओरा॥
बार बार कर दंड प्रनामा। मन अस रहन कहहिं मोहि रामा॥
राम बिलोकनि बोलनि चलनी। सुमिरि सुमिरि सोचत हँसि मिलनी॥
प्रभु रुख देखि बिनय बहु भाषी। चलेउ हृदयँ पद पंकज राखी॥
अति आदर सब कपि पहुँचाए। भाइन्ह सहित भरत पुनि आए॥
तब सुग्रीव चरन गहि नाना। भाँति बिनय कीन्हे हनुमाना॥
दिन दस करि रघुपति पद सेवा। पुनि तव चरन देखिहउँ देवा॥
पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा। सेवहु जाइ कृपा आगारा॥
अस कहि कपि सब चले तुरंता। अंगद कहइ सुनहु हनुमंता॥

कहेहु दंडवत प्रभु सैं तुम्हहि कहउँ कर जोरि।
बार बार रघुनायकहि सुरति कराएहु मोरि॥

अस कहि चलेउ बालिसुत फिरि आयउ हनुमंत।
तासु प्रीति प्रभु सन कही मगन भए भगवंत॥

कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि।
चित्त खगेस राम कर समुझि परइ कहु काहि॥

पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा। दीन्हे भूषन बसन प्रसादा॥
जाहु भवन मम सुमिरन करेहू। मन क्रम बचन धर्म अनुसरेहू॥
तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता। सदा रहेहु पुर आवत जाता॥
बचन सुनत उपजा सुख भारी। परेउ चरन भरि लोचन बारी॥
चरन नलिन उर धरि गृह आवा। प्रभु सुभाउ परिजननि्ह सुनावा॥
रघुपति चरित देखि पुरबासी। पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी॥
राम राज बैठें त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका॥
बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई॥

बरनाश्रम निज निज धरम निरत वेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि व्यापा॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥
चारिउ चरन धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं॥
राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी॥
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब विरुज सरीरा॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न हीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छनहीना॥
सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी॥
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट सयानी॥

राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं।
काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं॥

भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला॥
भुअन अनेक रोम प्रति जासू। यह प्रभुता कछु बहुत न तासू॥
सो महिमा समुझत प्रभु केरी। यह बरनत हीनता घनेरी॥
सोउ महिमा खगेस जिन्ह जानी। फिरि एहिं चरित तिन्हहुँ रति मानी॥
सोउ जाने कर फल यह लीला। कहहिं महा मुनिबर दमसीला॥
राम राज कर सुख संपदा। बरनि न सकइ फनीस सारदा॥
सब उदार सब पर उपकारी। बिप्र चरन सेवक नर नारी॥
एकनारि व्रत रत सब झारी। ते मन बच क्रम पति हितकारी॥

दंड जाति कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज।
जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र कें राज॥

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन। रहहिं एक सँग गज पंचानन॥
खग मृग सहज बयरु बिसराई। सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई॥

कूजहिं खग मृग नाना बृंदा । अभय चरहिं बन करहिं अनंदा ॥
सीतल सुरभि पवन वह मंदा । गुंजत अलि लै चलि मकरंदा ॥
लता विटप मागें मधु चवहीं । मनभावतो धेनु पय स्रवहीं ॥
ससि संपन्न सदा रह धरनी । त्रेताँ भइ कृतजुग कै करनी ॥
प्रगटीं गिरिन्ह विविधि मनि खानी । जगदातमा भूप जग जानी ॥
सरिता सकल बहहिं बर बारी । सीतल अमल स्वाद सुखकारी ॥
सागर निज मरजादाँ रहहीं । डारहिं रत्न तटन्हि नर लहहीं ॥
सरसिज संकुल सकल तड़ागा । अति प्रसन्न दस दिसा विभागा ॥

विधु महि पूर मयूखन्हि रवि तप जेतनेहि काज ।
मागें वारिद देहिं जल रामचंद्र कें राज ॥

× × ×

अवधेसके द्वारें सकारें गई सुत गोद कै भूपति लै निकसे ।
अवलोकि हौं सोच बिमोचनको ठगि-सी रही, जे न ठगे धिक से ॥
तुलसी मन-रंजन रंजित-अंजन नैन सुखंजन-जातक से ।
सजनी ससिमें समसील उभै नवनील सरोरुह-से विकसे ॥

पग नूपुर औ पहुँची करकंजनि मंजु बनी मनिमाल हिएँ ।
नवनील कलेवर पीत झँगा झलकै पुलकैं नृपु गोद लिएँ ॥
अरविंदु सो आननु, रूप मरंदु अनंदित लोचन-भृंग पिएँ ।
मनमो न बस्यौ अस बालकु जौं तुलसी जगमें फलु कौन जिएँ ॥

तनकी दुति स्याम सरोरुह लोचन कंजकी मंजुलताई हरैं ।
अति सुंदर सोहत धूरि भरे, छवि भूरि अनंगकी दूरि धरैं ॥
दमकैं दँतियाँ दुति दामिनि ज्यों, किलकैं कल बालविनोद करैं ।
अवधेसके बालक चारि सदा तुलसी-मन-मंदिरमें विहरैं ॥

कबहूँ ससि मागत आरि करैं, कबहूँ प्रतिबिंब निहार डरैं ।
कबहूँ करताल बजाइकै नाचत मातु सबै मन मोद भरैं ॥
कबहूँ रिसिआइ कहैं हठिकै पुनि लेत सोई जेहि लागि अरैं ।
अवधेसके बालक चारि सदा तुलसी-मन-मंदिरमें बिहरैं ॥

बर दंतकी पंगति कुंदकली अधराधर-पल्लव खोलनकी ।
चपला चमकैं घन बीच जगै छवि मोतिन माल अमोलनकी ॥
घुंघुरारि लटैं लटकैं मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलनकी ।
नेवछावरि प्रान करै तुलसी बलि जाउँ लला इन बोलनकी ॥

पदकंजनि मंजु बनीं पनहीं, धनुहीं सर पंकल-पानि लिएँ।
लरिका सँग खेलत डोलत हैं सरजू-तट चौहट हाट हिएँ॥
तुलसी अस बालक सों नहि नेहु, कहा जप जोग समाधि किएँ।
नर वे खर सूकर स्वान समान कहौ जगमें फलु कौन जिएँ॥

सरजू बर तीरहिं तीर फिरैं रघुवीर सखा अरु बीर सबै।
धनुहीं कर तीर, निषंग कसें कटि, पीत दुकूल नवीन फबै॥
तुलसी तेहि औसर लावनिता दस चारि नौ तीन इकीस सबै।
मति भारति पंगु भई जो निहारि बिचारि फिरी उपमा न पबै॥

भले भूप कहत भलें भदेस भूपनि सों,
लोक लखि बोलिये पुनीत रीति मारिषी।
जगदंबा जानकी जगतपितु रामचंद्र,
जानि जियँ जोहौ जो न लागै मुहँ कारिखी॥
देखे हैं अनेक ब्याह, सुने हैं पुरान-बेद,
बूझे हैं सुजान साधु नर-नारि पारिखी।
ऐसे सम समधी समाज न बिराजमान,
रामु से न बर दुलही न सिय-सारिखी॥

दूलह श्रीरघुनाथु बने दुलही सिय सुंदर मंदिर माहीं।
गावति गीत सबै मिलि सुंदरि बेद जुवा जुरि विप्र पढ़ाहीं॥
रामको रूपु निहारति जानकी कंकनके नगकी परछाहीं।
यातें सबै सुधि भूलि गई कर टेकि रही पल टारत नाहीं॥

एहि घाटतें थोरिक दूरि अहै कटि लौं जलु, थाह देखाइहौं जू।
परसें पगधूरि तरै तरनी, घरनी घर क्यों समुझाइहौं जू॥
तुलसी अवलंबु न और कछू, लरिका केहि भांति जियाइहौं जू।
बरु मारिए मोहि, बिना पग धोएँ हौं नाथ न नाव चढ़ाइहौं जू॥

रावरे दोषु न पायन को, पगधूरिको भूरि प्रभाउ महा है।
पाहन तें बन-बाहनु काठको कोमल है, जलु खाइ रहा है॥
पावन पाय पखारि कै नाव चढ़ाइहौं, आयसु होत कहा है।
तुलसी सुनि केवटके बर बैन हंसे प्रभु जानकी ओर हहा है॥

पात भरी सहरी, सकल सुत बारे-बारे,
केवटकी जाति, कछु बेद न पढ़ाइहौं।
सबु परिवारु मेरो याहि लागि, राजा जू,
हौं दीन बित्तहीन, कैसें दूसरी गढ़ाइहौं॥

गौतम की घरनी ज्यों तरनी तरेगी मेरी,
प्रभुसों निषादु ह्वै के बादु न बढ़ाइहौं।
तुलसी के ईस राम, रावरे सों साँची कहौं,
बिना पग धोएँ नाथ, नाव ना चढ़ाइहौं॥

पुरतें निकसी रघुबीरबधू, धरि धीर दए मगमें डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनीं जलकीं, पुट सूखि गए मधुराधर वै॥
फिरि बूझति हैं, चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौं कित ह्वै।
तियकी लखि आतुरता पियकी अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै॥

जलको गए लक्खनु, हैं लरिका,
परिखौ, पिय! छाहँ घरीक ह्वै ठाढ़े।
पोंछि पसेउ बयारि करौं,
अरु पाय पखारिहौं भूभुरि-डाढ़े॥
तुलसी रघुबीर प्रियाश्रम जानि कै,
बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।
जानकीं नाहको नेहु लख्यो,
पुलको तनु, बारि बिलोचन बाढ़े॥

बनिता बनी स्यामल गौरके बीच,
बिलोकहु, री सखि! मोहि-सी ह्वै।
मगजोगु न कोमल, क्यों चलिहै,
सकुचाति मही पदपंकज छ्वै॥
तुलसी सुनि ग्रामबधू बिथकीं,
पुलकीं तन, औ चले लोचन च्वै।
सब भांति मनोहर मोहनरूप,
अनूप हैं भूपके बालक द्वै॥

सीस जटा, उर-बाहु बिसाल, बिलोचन लाल, तिरीछी-सी भौंहैं।
तून सरासन-बान धरें तुलसी बन-मारगमें सुठि सोहैं॥
सादर बारहिं बार सुभायँ चितै तुम्ह त्यों हमरो मन मोहैं।
पूँछति ग्रामबधू सिय सों, कहौ, साँवरे-से, सखि रावरे को हैं॥

सुनि सुंदर बैन सुधारस-साने सयानी हैं जानकीं जानी भली।
तिरछे करि नैन, दै सैन, तिन्हैं समुझाइ कछू, मुसुकाइ चली॥
तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचनलाहु अलीं।
अनुराग-तड़ागमें भानु-उदैं बिगसीं मनो मंजुल कंजकलीं॥

पद कोमल, स्यामल-गौर कलेवर राजत कोटि मनोज लजाएँ।
कर बान-सरासन, सीस जटा, सरसीरुह-लोचन सोन सुहाए॥
जिन्ह देखे सखी! सतिभायहु तें तुलसी तिन्ह तौ मन फेरि न पाए।
एहिं मारग आजु किसोर बधू बिधुबैनी समेत सुभायँ सिधाए॥

मुखपंकज, कंजविलोचन मंजु, मनोज-सरासन-सी बनीं भौंहैं।
कमनीय कलेवर कोमल स्यामल-गौर किसोर, जटा सिर सोहैं॥
तुलसी कटि तून, धरें धनु-बान, अचानक दिष्टि परी तिरछौहैं।
केहि भांति कहौं सजनी! तोहि सों, मृदु मूरति द्वै निवसीं मन मोहैं॥

बासव-बरुन-बिधि-बनतें सुहावनो,
दसाननको काननु, बसंतको सिंगारु सो।
समय पुराने पात परत, डरत बातु,
पालत लालत रति-मारको बिहारु सो॥
देखें वर वापिका तड़ाग बागको बनाउ,
रागबस भो बिरागी पवनकुमारु सो।
सीयकी दसा बिलोकि बिटप असोक तर,
'तुलसी' बिलोक्यो सो तिलोक-सोक-सारु सो॥

'दिवस छ-सात जात जानिबे न, मातु! धरु,
धीर, अरि-अंतकी अवधि रहि थोरिकै।
बारिधि बँधाइ सेतु ऐहैं भानुकुलकेतु,
सानुज कुसल कपिकटकु बटोरि कै'॥
बचन बिनीत कहि, सीताको प्रबोधु करि,
'तुलसी' त्रिकूट चढ़ि कहत डफोरि कै।
'जै जै जानकीस दससीस-करि-केसरी',
कपीसु कूद्यो बात-घात उदधि हलोरि कै॥

भलि भारतभूमि, भलें कुल जन्मु, समाजु सरीरु भलो लहि कै।
करषा तजि कै परुषा, बरषा, हिम, मारुत, घाम सदा सहि कै॥
जो भजै भगवानु सयान सोई, 'तुलसी' हठ चातकु ज्यों गहि कै।
नतु और सबै बिषबीज बए, हर हाटक कामदुहा नहि कै॥

सो जननी, सो पिता, सोइ भाइ, सो भामिनि, सो सुतु, सो हितु मेरो।
सोइ सगो, सो सखा, सोइ सेवकु, सो गुरु, सो सुरु, साहेबु, चेरो॥
सो 'तुलसी' प्रिय प्रानसमान, कहाँ लौं बनाइ कहौं बहुतेरो।
जो तजि देहको गेहको नेहु, सनेहसों रामको होइ सबेरो॥

रामु हैं मातु, पिता, गुरु, बंधु, औ संगी, सखा, सुतु, स्वामि, सनेही।
रामकी सौंह, भरोसो है रामको, राम रँग्यो, रुचि राच्यो न केही॥
जीअत रामु, मुएँ पुनि रामु, सदा रघुनाथहि की गति जेही।
सोई जिऐ जगमें 'तुलसी' नतु डोलत और मुए धरि देही॥

सियराम-सरूपु अगाध अनूप विलोचन मीननको जलु है।
श्रुति रामकथा, मुख रामको नामु, हिएँ पुनि रामहिको थलु है॥
मति रामहि सों, गति रामहि सों, रति रामसों, रामहि को बलु है।
सबकी न कहै, तुलसीके मतें इतनो जग जीवनको फलु है॥

तिन्ह तें खर, सूकर, स्वान भले, जड़ता बस ते न कहैं कछु वै।
'तुलसी' जेहि रामसों नेहु नहीं, सो सही पसु पूँछ, विषान न द्वै॥
जननी कत भार मुई दस मास, भई किन बाँझ, गई किन च्वै।
जरि जाउ सो जीवनु, जानकीनाथ! जियै जगमें तुम्हरो बिनु ह्वै॥

जप, जोग, विराग, महामख-साधन, दान, दया, दम कोटि करै।
मुनि-सिद्ध, सुरेसु, गनेसु, महेसु-से सेवत जन्म अनेक मरै॥
निगमागम-ग्यान, पुरान पढ़ै, तपसानलमें जुगपुंज जरै।
मनसों पनु रोपि कहै तुलसी, रघुनाथ बिना दुख कौन हरै॥

रावरो कहावौं, गुनु गावौं राम! रावरोई,
रोटी द्वै हौं पावौं राम! रावरी हीं कानि हौं।
जानत जहानु, मन मेरेहूँ गुमानु बड़ो,
मान्यो मैं न दूसरो, न मानत, न मानिहौं॥
पाँचकी प्रतीति न भरोसो मोहि आपनोई,
तुम्ह अपनायो हौं तबै हीं परि जानिहौं।
गढ़ि-गुढ़ि, छोलि-छालि कुंदकी-सी भाई बातैं
जैसी मुख कहौं, तैसी जीयँ जब आनिहौं॥

स्वारथको साजु न समाजु परमारथको,
मोसो दगाबाज दूसरो न जगजाल है।
कै न आयों, करौं न करौंगो करतूति भली,
लिखी न बिरंचिहूँ भलाई भूलि भाल है॥
रावरी सपथ, रामनामही की गति मेरें,
इहाँ झूठो झूठो सो तिलोक तिहूँ काल है।
तुलसी को भलो पै तुम्हारें ही किएँ कृपाल,
कीजे न बिलंबु, बलि, पानीभरी खाल है॥

रागको न साजु, न विरागु, जोग, जाग जियँ,
काया नहिं छाड़ि देत ठाटिबो कुठाटको।
मनोराजु करत अकाजु भयो आजु लगि,
चाहै चारु चीर, पै लहै न टूकु टाटको ॥
भयो करतारु बड़े कूरको कृपालु, पायो,
नामप्रेमु-पारसु, हौ लालची वराटको।
'तुलसी' वनी है राम ! रावरें वनाएँ, नातो,
धोवी-कैसा कूकरु, न घरको, न घाटको ॥

सब अँग हीन, सव साधन विहीन, मन-
बचन मलीन, हीन कुल-करतूति हौं।
बुधि-बल हीन, भाव-भगति-विहीन, हीन
गुन, ग्यानहीन, हीन भाग हूँ, विभूति हौं ॥
तुलसी गरीब की गई-बहोर रामनामु,
जाहि जपि जीहँ रामहू को बैठो धूति हौं।
प्रीति रामनामसों, प्रतीति रामनामकी,
प्रसाद रामनामकें पसारि पाय सूतिहौं ॥

दानव-देव, अहीस-महीस, महामुनि-तापस, सिद्ध-समाजी।
जग जाचक, दानि दुतीय नहीं, तुम्ह ही सबकी राखत बाजी ॥
एते बड़े तुलसीस ! तऊ सबरीके दिए बिनु भूख न भाजी।
राम गरीबनेवाज ! भए हौ गरीबनेवाज गरीब नेवाजी ॥

किसवी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट,
चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी।
पेटको पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन-गन अहन अखेटकी ॥
ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।
'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी ॥

खेती न किसानको, भिखारीको न भीख, बलि,
बनिकको बनिज, न चाकरको चाकरी।
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों 'कहाँ जाई, का करी ?'

वेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,
साँकरे सबै पै, राम ! रावरें कृपा करी।
दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु !
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी ॥

कुल - करतूति - भूति - कीरति - सुरूप-गुन,
जौबन जरत जुर, परै न कल कहीं।
राजकाजु कुपथु, कुसाजु भोग रोग ही के,
बेद-बुध बिद्या पाइ बिबस बलकहीं ॥
गति तुलसीसकी लखै न कोउ, जो करत,
पब्बयतें छार, छारै पब्बय पलक हीं।
कासों कीजै रोषु,दोषु दीजै काहि, पाहि, राम !
कियो कलिकाल कुलि खललु खलक हीं ॥

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहूकी बेटी सों, बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ ॥
तुलसी सरनाम गुलामु है रामको, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।
मांगि कै खैबो, मसीतको सोइबो लैबेको एकु न दैबे को दोऊ ॥

मेरें जाति-पाँति न चहौं काहूकी जाति-पाँति,
मेरे कोऊ कामको न हौं काहूके कामको।
लोकु परलोकु रघुनाथही के हाथ सब,
भारी है भरोसो तुलसीकें एक नामको ॥
अति ही अयाने उपखानो नहि बूझैं लोग,
'साह ही को गोतु गोतु होत है गुलामको।'
साधु कै असाधु, कै भलो कै पोच, सोचु कहा,
का काहूके द्वार परौं, जो हौं सो हौं रामको ॥

× × ×

अज अद्वैत अनाम, अलख रूप-गुन-रहित जो।
माया पति सोइ राम, दास हेतु नर-तनु धरेउ ॥
तुलसी बेद-पुरान-मत, पूरन सास्त्र बिचार।
यह बिराग-संदीपनी, अखिल ग्यानको सार ॥
एक भरोसो एक बल, एक आस बिस्वास।
राम-रूप स्वाती जलद, चातक तुलसीदास ॥

बिरले बिरले पाइए, माया त्यागी संत।
तुलसी कामी कुटिल कलि, केकी केक अनंत॥

महि पत्री करि सिंधु मसि, तरु लेखनी बनाइ।
तुलसी गनपति सों तदपि, महिमा लिखी न जाय॥

तुलसी भगत सुपच भलौ, भजै रैन दिन राम।
ऊँचो कुल केहि काम को, जहाँ न हरि को नाम॥

सोइ पंडित सोइ पारखी, सोई संत सुजान।
सोई सूर सचेत सो, सोई सुभट प्रमान॥

सोइ ग्यानी सोइ गुनी जन, सोई दाता ध्यानि।
तुलसी जाके चित भई, राग द्वेषकी हानि॥

राग द्वेष की अगिनि बुझानी। काम क्रोध वासना नसानी॥
तुलसी जबहिं सांति गृह आई। तब उरहीं उर फिरी दोहाई॥

× × ×

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहरेहुँ जौं चाहसि उजिआर॥

हियँ निर्गुन नयननि्ह सगुन रसना राम सुनाम।
मनहुँ पुरट संपुट लसत तुलसी ललित ललाम॥

सगुन ध्यान रुचि सरस नहिं निर्गुन मन ते दूरि।
तुलसी सुमिरहु राम को नाम सजीवन मूरि॥

एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब बरनानि पर जोउ।
तुलसी रघुबर राम के बरन बिराजत दोउ॥

नाम-राम को अंक है सब साधन हैं सून।
अंक गएँ कछु हाथ नहिं अंक रहें दस गून॥

नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु॥

कासीं-बिधि बसि तनु तजें हठि तनु तजें प्रयाग।
तुलसी जो फल सो सुलभ राम नाम अनुराग॥

हम लखि लखहि हमार लखि हम हमार के बीच।
तुलसी अलखहि का लखहि राम नाम जपु नीच॥

राम नाम अवलंब बिनु परमारथ की आस।
बरषत बारिद बूँद गहि चाहत चढ़न अकास॥

बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास।
रामनाम बर बरन जुग सावन भादव मास॥

राम नाम नर केसरी कनककसिपु कलिकाल।
जापक जन प्रह्लाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल॥

राम नाम कलि कामतरु राम भगति सुरधेनु।
सकल सुमंगल मूल जग गुरुपद पंकज रेनु॥

राम नाम कलि कामतरु सकल सुमंगल कंद।
सुमिरत करतल सिद्धि सब पग पग परमानंद॥

ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि।
राम चरित सत कोटि महँलिय महेस जियँ जानि॥

राम भरोसो राम बल राम नाम बिस्वास।
सुमिरत सुभ मंगल कुसल माँगत तुलसीदास॥

राम नाम रति नाम गति राम नाम बिस्वास।
सुमिरत सुभ मंगल कुसल दुहुँ दिसि तुलसीदास॥

रसना सांपिनि बदन बिल जे न जपहिं हरिनाम।
तुलसी प्रेम न राम सों ताहि बिधाता बाम॥

हिय फाटहुँ फूटहुँ नयन जरउ सो तन केहि काम।
द्रवहिं स्रवहिं पुलकइ नहीं तुलसी सुमिरत राम॥

स्रवै न सलिल सनेहु तुलसी सुनि रघुबीर जस।
ते नयना जनि देहु राम! करहु बरु आँधरो॥

रहैं न जल भरि पूरि राम सुजस सुनि रावरो।
तिन आंखिनमें धूरि भरि भरि मूठी मेलिये॥

स्वारथ सीता राम सों परमारथ सिय राम।
तुलसी तेरो दूसरे द्वार कहा कहु काम॥

आपु आपने तें अधिक जेहि प्रिय सीताराम।
तेहि के पग की पानहीं तुलसी तनु को चाम॥

तुलसी जौं पै राम सों नाहिन सहज सनेह।
मूँड़ मुड़ायो बादिहीं भाँड़ भयो तजि गेह॥

साहिब सीतानाथ सों जब घटिहै अनुराग।
तुलसी तबहीं भालतें भभरि भागि हैं भाग॥

प्रीति रामसों नीति पथ चलिय राग रिस जीति।
तुलसी संतनके मते इहै भगति की रीति॥

तुलसी रामहु तें अधिक राम भगत जियँ जान।
रिनिया राजा राम भे धनिक भए हनुमान॥
भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप।
किए चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप॥
ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार।
सोइ सच्चिदानंद घन कर नर चरित उदार॥
सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानुकुल केतु।
चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु॥
नाम ललित लीला ललित ललित रूप रघुनाथ।
ललित बसन भूषन ललित ललित अनुज सिसु साथ॥
परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम।
प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम॥
श्रीरघुबीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषान।
ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन॥
बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह बिश्रामु॥
बिनु गुर होइ न ग्यान ग्यान कि होइ बिराग बिनु।
गावहिं बेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु॥
रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निर्बान।
ग्यानवंत अपि सो नर पसु बिनु पूँछ बिषान॥
जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ॥
मो सम दीन न दीनहित तुम्ह समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंसमनि हरहु बिषम भवभीर॥
राम चरित राकेस कर सरिस सुखद सब काहु।
सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिसेषि बड़ लाहु॥
मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघ हानिकर।
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न॥
बासर ढासनि के ढका रजनीं चहुँ दिसि चोर।
संकर निज पुर राखिऐ चितै सुलोचन कोर॥

× × ×

आजु महामंगल कोसलपुर सुनि नृपके सुत चारि भए
सदन-सदन सोहिलो सोहावनो, नभ अरु नगर निसान हए॥

सजि-सजि जान अमर किंनर-मुनि जानि समय-सम गान ठए।
नाचहिं नभ अपसरा मुदित मन, पुनि पुनि बरपहिं सुमन चए॥
अति सुख वेगि बोलि गुरु भूसुर भूपति भीतर भवन गए।
जातकरम करि कनक, बसन, मनभूषित सुरभि-समूह दए॥
दल-फल-फूल, दूब-दधि-रोचन, जुवतिन्ह भरि भरि थार लए।
गावत चलीं भीर भइ बीथिन्ह, बंदिन्ह बाँकुरे बिरद बए॥
कनक-कलस, चामर-पताक-धुज, जहँ तहँ बंदनवार नए।
भरहिं अबीर, अरगजा छिरकहिं, सकल लोक एक रंग रए॥
उमगि चल्यौ आनंद लोक तिहुँ, देत सबनि मंदिर रितए।
तुलसिदास पुनि भरेइ देखियत, रामकृपा चितवन चितए॥

× × ×

सुभग सेज सोभित कौसिल्या रुचिर राम-सिसु गोद लिये।
बार बार बिधुवदन बिलोकति, लोचन चारु चकोर किये॥
कबहुँ पौढ़ि पयपान करावति, कबहूँ राखति लाइ हिये।
बालकेलि गावति हलरावति, पुलकति प्रेम-पियूष पिये॥
बिधि-महेस, मुनि सुर सिहात सब, देखत अंबुद ओट दिये।
तुलसिदास ऐसो सुख रघुपति पै काहू तो पायो न बिये॥

× × ×

पगनि कब चलिहौ चारो भैया?
प्रेम-पुलकि, उर लाइ सुवन सब, कहति सुमित्रा मैया॥
सुंदर तनु सिसु-बसन-बिभूषन नखसिख निरखि निकैया।
दलि तृन, प्रान निछावरि करि करि लैहैं मातु बलैया॥
किलकनि, नटनि, चलनि, चितवनि, भजि मिलनि मनोहरतैया।
मनि-खंभनि प्रतिबिंब-झलक, छबि छलकिहै भरि अँगनैया॥
बालबिनोद, मोद मंजुल बिधु, लीला ललित जुन्हैया।
भूपति पुन्य-पयोधि उमँग, घर घर आनंद-बधैया॥
ह्वै हैं सकल सुकृत - सुख - भाजन, लोचन - लाहु लुटैया।
अनायास पाइहैं जनमफल तोतरे बचन सुनैया॥
भरत, राम रिपुदवन, लषनके चरित सरित-अन्हवैया।
तुलसी तबके से अजहुँ जानिबे रघुबर - नगर - बसैया॥

× × ×

पौढ़िये लालन, पलने हौं झुलावौं।
कर पद मुख चकमल लसत लखि लोचन-भँवर भुलावौं॥

बाल-विनोद-मोद - मंजुलमनि किलकनि - खानि खुलावौं।
तेइ अनुराग ताग गुहिबे कहँ मति - मृगनयनि बुलावौं ॥
तुलसी भनित भली भामिनि उर सो पहिराइ फुलावौं।
चारु चरित रघुबर तेरे तेहि मिलि गाइ चरन चितु लावौं ॥

× × ×

ललन लोने लेरुआ, बलि मैया।
सुख सोइए नींद-बेरिया भई, चारु-चरित चार्‌यौ भैया ॥
कहति मल्हाइ, लाइ उर छिन-छिन, 'छगन छबीले छोटे छैया'।
मोद - कंद कुल - कुमुद - चंद्र मेरे रामचंद्र रघुरैया ॥
रघुबर बालकेलि संतनकी सुभग सुभद सुरगैया।
तुलसी दुहि पीवत सुख जीवत पय सप्रेम घनी घैया ॥

× × ×

ललित सुतहि लालति सचु पाये।
कौशल्या कल कनक अजिर महँ सिखवति चलन अँगुरियाँ लाये ॥
कटि किंकिनी, पैंजनी पाँयनि बाजति रुनझुन मधुर रेंगाये।
पहुँची करनि, कंठ कठुला बन्यो केहरि नख मनि-जरित जराये ॥
पीत पुनीत बिचित्र झँगुलिया सोहति स्याम सरीर सोहाये।
दंतियाँ द्वै द्वै मनोहर मुखछबि, अरुन अधर चित लेत चोराये ॥
चिबुक कपोल नासिका सुंदर, भाल तिलक मसिबिंदु बनाये।
राजत नयन मंजु अंजनयुत खंजन कंज मीन मद नाये ॥
लटकन चारु भ्रुकुटिया टेढ़ी, मेढ़ी सुभग सुदेस सुभाये।
किलकि किलकि नाचत चुटकी सुनि, डरपति जननि पानि छुटकाये ॥
गिरि घुटुरुवनि टेकि उठि अनुजनि तोतरि बोलत भूप देखाये।
बाल-केलि अवलोकि मातु सब मुदित मगन आनँद न अमाये ॥
देखत नभ घन-ओट चरित मुनि जोग समाधि बिरति बिसराये।
तुलसिदास जे रसिक न यहि रस ते नर जड़ जीवत जग जाये ॥

× × ×

बिहरत अवध-बीथिन राम।
संग अनुज अनेक सिसु, नव-नील-नीरद-स्याम ॥
तरुन अरुन-सरोज-पद बनी कनकमय पदत्रान।
पीत-पट कटि तून बर, कर ललित लघु धनु-बान ॥
लोचननिको लहत फल छबि निरखि पुर-नर-नारि।
बसत तुलसीदास उर अवधेसके सुत चारि ॥

× × ×

ए कौन कहाँते आए ?
नील-पीत-पाथोज-बरन, मन-हरन, सुभाय सुहाए ॥
मुनिसुत किधौं भूप-बालक, किधौं ब्रह्म-जीव जग जाए ।
रूप-जलधिके रतन, सुछबि तिय-लोचन ललित ललाए ॥
किधौं रवि-सुवन, मदन-ऋतुपति, किधौं हरि-हरवेष बनाए ।
किधौं आपने सुकृत-सुरतरुके सुफल रावरेहि पाए ॥
भये विदेह बिदेह नेहबस देहदसा बिसराए ।
पुलक गात, न समात हरष हिय, सलिल सुलोचन छाए ॥
जनक-बचन मृदु मंजु मधु-भरे भगति कौसिकहि भाए ।
तुलसी अति आनंद उमगि उर राम लषन गुन गाए ॥

× × ×

पूजि पारबती भले भाय पाँय परिकै ।
सजल सुलोचन, सिथिल तनु पुलकित,
आवै न बचन, मन रह्यो प्रेम भरिकै ॥
अंतरजामिनि, भवभामिनि स्वामिनिसों हौं,
कही चाहों बात, मातु, अंत तौ हौं लरिकै ।
मूरति कृपाल मंजु माल दै बोलत भई,
पूजो मन कामना भावतो बरु बरिकै ॥
राम कामतरु पाइ, बेलि ज्यों बौंड़ी बनाइ,
माँग-कोखि तोखि-पोखि, फैलि-फूलि-फरिकै ।
रहौगी, कहौगी तब, साँची कही अंबा सिय,
गहे पाँय द्वै, उठाय, माथे हाथ धरिकै ॥
मुदित असीस सुनि, सीस नाइ पुनि पुनि,
बिदा भई देवीसों जननि डर डरिकै ।
हरषीं सहेली, भयो भावतो, गावतीं गीत,
गवनी भवन तुलसीस-हियो हरिकै ॥

× × ×

दूलह राम, सीय दुलही री !
घन-दामिनि वर बरन, हरन-मन, सुंदरता नखसिख निबही, री ॥
ब्याह-बिभूषन-बसन-बिभूषित, सखि अवली लखि ठगि सी रही, री ।
जीवन-जनम-लाहु, लोचन-फल है इतनोइ, लह्यो आजु सही, री ॥
सुखमा सुरभि सिंगार-छीर दुहि मयन अमियमय कियो है दही, री ।
मथि माखन सिय-राम सँवारे, सकल भुवन छबि मनहु मही, री ॥

तुलसिदास जोरी देखत सुख सोभा अतुल, न जाति कही, री ।
रूप-रासि विरची विरंचि मनो, सिला लवनि रति-काम लही री ॥

× × ×

जानकी-वर सुंदर, माई ।
इंद्रनील-मनि-स्याम सुभग, अँग अंग मनोजनि बहु छवि छाई ॥
अरुन चरन, अंगुली मनोहर, नख दुतिवंत, कछुक अरुनाई ।
कंजदलनिपर मनहु भौम दस बैठे अचल सुसदसि बनाई ॥
पीन जानु, उर चारु, जटित मनि नूपुर पद कल मुखर सोहाई ।
पीत पराग भरे अलिगन जनु जुगल जलज लखि रहे लोभाई ॥
किंकिनि कनक कंज अवली मृदु मरकतसिखर मध्य जनु जाई ।
गई न उपर, सभीत नमितमुख, विकसि चहूँ दिसि रही लोनाई ॥
नाभि गँभीर, उदर रेखा बर, उर भृगु-चरन-चिह्न सुखदाई ।
भुज प्रलंब भूषन अनेक जुत, बसन पीत सोभा अधिकाई ॥
जग्योपवीत विचित्र हेममय, मुक्तामाल उरसि मोहि भाई ।
कंद-तड़ित बिच जनु सुरपति-धनु रुचिर बलाकपांति चलि आई ॥
कंबु कंठ, चिबुकाधर सुंदर, क्यों कहौं दसननकी रुचिराई ।
पदुमकोस महँ बसे बज्र मनो निज सँग तड़ित-अरुन-रुचि लाई ॥
नासिक चारु, ललित लोचन, भ्रूकुटिल, कचनि अनुपम छवि पाई ।
रहे घेरि राजीव उभय मनो चंचरीक कछु हृदय डेराई ॥
भाल तिलक, कंचनकिरीट सिर, कुंडल लोल कपोलनि झाँई ।
निरखहिं नारि-निकर विदेहपुर निमि नृपकी मरजाद मिटाई ॥
सारद-सेस-संभु निसि-बासर चिंतत रूप, न हृदय समाई ।
तुलसिदास सठ क्यों करि बरनै यह छवि, निगम नेति कह गाई ॥

× × ×

सुनहु राम मेरे प्रानपियारे ।
बारौं सत्यबचन श्रुति-सम्मत, जाते हौं बिछुरत चरन तिहारे ॥
बिनु प्रयास सब साधनको फल प्रभु पायो, सो तो नाहिं सँभारे ।
हरि तजि धरमसील भयो चाहत, नृपति नारिबस सरबस हारे ॥
रुचिर काँचमनि देखि मूढ ज्यों करतलतें चिंतामनि डारे ।
मुनि-लोचन-चकोर-ससि राघव, सिव-जीवनधन, सोउ न बिचारे ॥
जद्यपि नाथ तात ! मायाबस सुखनिधान सुत तुम्हहिं बिसारे ।
तदपि हमहि त्यागहु जनि रघुपति, दीनबंधु, दयालु, मेरे बारे ॥

अतिसय प्रीति विनीत बचन सुनि, प्रभु कोमल-चित चलत न पारे ।
तुलसिदास जौ रहौं मातु हित, को सुर-बिप्र-भूमि-भय टारे ॥

× × ×

राम ! हौं कौन जतन घर रहिहौं ।
बार बार भरि अंक गोद लै ललन कौनसों कहिहौं ॥
इहि आँगन बिहरत मेरे बारे ! तुम जो संग सिसु लीन्हें ।
कैसे प्रान रहत सुमिरत सुत, बहु बिनोद तुम कीन्हें ॥
जिन्ह श्रवननि कल बचन तिहारे सुनि सुनि हौं अनुरागी ।
तिन्ह श्रवननि बनगवन सुनति हौं, मोतें कौन अभागी ॥
जुग सम निमिष जाहिं रघुनंदन, बदनकमल बिनु देखे ।
जौ तनु रहै बरष बीते, बलि, कहा प्रीति इहि लेखे ? ॥
तुलसीदास प्रेमबस श्रीहरि देखि बिकल महतारी ।
गदगद कंठ, नयन जल, फिरि फिरि आवन कह्यो मुरारी ॥

× × ×

कहौ तुम्ह बिनु गृह मेरो कौन काजु ?
बिपिन कोटि सुरपुर समान मोको, जोपै पिय परिहर्यो राजु ॥
बलकल बिमल दुकूल मनोहर, कंद-मूल-फल अमिय नाजु ।
प्रभुपदकमल बिलोकिहौं छिनछिन, इहितें अधिक कहा सुख-समाजु ॥
हौं रहौं भवन भोग-लोलुप ह्वै, पति कानन कियो मुनिको साजु ।
तुलसिदास ऐसे बिरह-बचन सुनि कठिन हियो बिहरो न आजु ॥

× × ×

जबहि रघुपति-सँग सीय चली ।
बिकल-बियोग लोग-पुरतिय कहैं, अति अन्याउ अली ॥
कोउ कहै, मनिगन तजत काँच लगि, करत न भूप भली ।
कोउ कहै, कुल-कुबेलि कैकेयी दुख-बिष-फलनि फली ॥
एक कहैं, बन जोग जानकी ! बिधि बड़ बिषम बली ।
तुलसी कुलिसहुकी कठोरता तेहि दिन दलकि दली ॥

× × ×

फिरि फिरि राम सीय तनु हेरत ।
तृषित जानि जल लेन लषन गए, भुज उठाइ ऊँचे चढ़ि टेरत ॥
अवनि कुरंग, बिहँग द्रुम-डारन रूप निहारत पलक न प्रेरत ।
मगन न डरत निरखि कर-कमलनि सुभग सरासन सायक फेरत ॥

अवलोकत मग-लोग चहूँ दिसि, मनहु चकोर चंद्रमहि घेरत ।
ते जन भूरिभाग भूतलपर तुलसी राम-पथिक-पद जे रत ॥

× × ×

सखि ! सरद-बिमल-बिधुबदनि बधूटी ।
ऐसी ललना सलोनी न भई, न है, न होनी,
रत्यो रची बिधि जो छोलत छबि छूटी ॥
साँवरे गोरे पथिक बीच सोहति अधिक,
तिहुँ त्रिभुवन - सोभा मनहु लूटी ।
तुलसी निरखि सिय प्रेमबस कहैं तिय,
लोचन - सिसुन्ह देहु अमिय घूटी ॥

× × ×

बहुत दिन बीते सुधि कछु न लही ।
गए जो पथिक गोरे - साँवरे सलोने,
सखि ! संग नारि सुकुमारि रही ॥
जानि - पहिचानि बिनु आपुतें आपुनेहुतें,
प्रानहुतें प्यारे प्रियतम उपही ।
सुधाके सनेहहूके सार लै सँवारे बिधि,
जैसे भावते हैं भांति जाति न कही ॥
बहुरि बिलोकिबे कबहुक, कहत,
तनु पुलक, नयन जलधार बही ।
तुलसी प्रभु सुमिरि ग्रामजुवती सिथिल,
बिनु प्रयास परीं प्रेम सही ॥

× × ×

फटिकसिला मृदु बिसाल, संकुल सुरतरु - तमाल,
ललित लता - जाल हरति छबि बितानकी ।
मंदाकिनि - तटिनि - तीर, मंजुल मृग-बिहग-भीर,
धीर मुनिगिरा गभीर सामगानकी ॥
मधुकर-पिक-बरहि मुखर, सुंदर गिरि निरझर झर,
जल-कन घन - छाँह, छन प्रभा न भानकी ।
सब ऋतु ऋतुपति प्रभाउ, संतत बहै त्रिबिध बाउ,
जनु बिहार - बाटिका नृप पंचबानकी ॥
बिरचित तहँ परनसाल, अति बिचित्र लषनलाल,
निवसत जहँ नित कृपालु राम - जानकी ।

निजकर राजीवनयन पल्लव-दल-रचित सयन,
प्यास परसपर पियूष प्रेम - पानकी ॥
सिय अँग लिखैं धातुराग, सुमननि भूषन - विभाग,
तिलक - करनि का कहौं कलानिधानकी ।
माधुरी-विलास-हास, गावत जस तुलसिदास,
बसति हृदय जोरी प्रिय परम प्रानकी ॥

× × ×

आजुको भोर, और सो, माई ।
सुनौं न द्वार वेद-बंदी-धुनि, गुनिगन-गिरा सोहाई ॥
निज निज सुंदर पति-सदननितें रूप-सील-छवि-छाई ।
लेन असीस सीय आगे करि मापै सुतवधू न आई ॥
बूझी हौं न विहँसि मेरे रघुबर 'कहाँ री ! सुमित्रा माता ?' ।
तुलसी मनहु महासुख मेरो देखि न सकेउ बिधाता ॥

× × ×

जननी निरखति बान-धनुहियाँ ।
बार बार उर-नैननि लावति प्रभुजूकी ललित पनहियाँ ॥
कबहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगावति कहि प्रिय बचन सवारे ।
उठहु तात ! बलि मातु बदनपर, अनुज-सखा सब द्वारे ॥
कबहुँ कहति यों, बड़ी बार भइ, जाहु भूप पहँ, भैया ।
बंधु बोलि जेंइय जो भावै, गई निछावरि मैया ॥
कबहुँ समुझि बनगवन रामको रहि चकि चित्र लिखी-सी ।
तुलसिदास वह समय कहेतें लागति प्रीति सिखी-सी ॥

× × ×

जानत हौ सबहीके मनकी ।
तदपि कृपालु ! करौं विनती सोइ सादर, सुनहु दीन-हित जनकी ॥
ए सेवक संतत अनन्य अति, ज्यों चातकहि एक गति घनकी ।
यह विचारि गवनहु पुनीत पुर, हरहु दुसह आरति परिजनकी ॥
मेरो जीवन जानिय ऐसोइ, जियै जैसो अहि, जासु गई मनि फनकी ।
मेटहु कुलकलंक कोसलपति, आग्या देहु नाथ मोहि बनकी ॥
मोको जोइ लाइय लागै सोइ, उतपति है कुमातुतें तनकी ।
तुलसिदास सब दोष दूरि करि प्रभु अब लाज करहु निज पनकी ॥

× × ×

हाथ मींजिबो हाथ रह्यो।
लगी न संग चित्रकूट हुतें, ह्याँ कहा जात बह्यो॥
पति सुरपुर, सिय-राम-लषन वन, मुनिब्रत भरत गह्यो।
हौ रहि घर मसान-पावक ज्यों मरिबोइ मृतक दह्यो॥
मेरोइ हिय कठोर करिबे कहँ बिधि कहुँ कुलिस लह्यो।
तुलसी बन पहुँचाइ फिरी सुत, क्यो कछु परत कह्यो॥

× × ×

आरत बचन कहति बैदेही।
बिलपति भूरि बिसूरि 'दूरि गए मृग सँग परम सनेही'॥
कहे कटु बचन, रेख नाँघी मैं, तात छमा सो कीजै।
देखि बधिक-बस राजमरालिनि, लषनलाल! छिनि लीजै॥
बनदेवनि सिय कहन कहति यों, छल करि नीच हरी हौं।
गोमर-कर सुरधेनु, नाथ! ज्यौं, त्यौं पर-हाथ परी हौं॥
तुलसिदास रघुनाथ-नाम-धुनि अकनि गीध धुकि धायो।
'पुत्रि पुत्रि! जनि डरहि, न जैहै नीचु ! मीचु हौं आयो'॥

× × ×

राघौ गीध गोद करि लीन्हों।
नयन-सरोज सनेह-सलिल सुचि मनहु अरघजल दीन्हों॥
सुनहु, लषन! खगपतिहि मिले बन मैं पितु-मरन न जान्यौ।
सहि न सक्यौ सो कठिन बिधाता, बड़ो पछु आजुहि भान्यौ॥
बहु बिधि राम कह्यौ तनु राखन, परम धीर नहि डोल्यौ।
रोकि प्रेम, अवलोकि बदन-बिधु, बचन मनोहर बोल्यौ॥
तुलसी प्रभु झूठे जीवन लगि समय न धोखो लैहौं।
जाको नाम मरत मुनिदुरलभ तुमहि कहाँ पुनि पैहौं !॥

× × ×

मेरो सुनियो, तात! सँदेसो।
सीय-हरन जनि कहेहु पितासों, ह्वै है अधिक अंदेसो॥
रावरे पुन्यप्रताप-अनल महँ अलप दिननि रिपु दहिहैं।
कुलसमेत सुरसभा दसानन समाचार सब कहिहैं॥
सुनि प्रभु-बचन, राखि उर मूरति, चरन-कमल सिर नाई।
चल्यो नभ सुनत राम-कल-कीरति, अरु निज भाग बड़ाई॥
पितु ज्यों गीध-क्रिया करि रघुपति अपने धाम पठायो।
ऐसो प्रभु बिसारि तुलसी सठ! तू चाहत सुख पायो॥

× × ×

रघुकुलतिलक ! वियोग तिहारे।
मैं देखी जब जाइ जानकी, मनहु बिरह-मूरति मन मारे ॥
चित्र-से नयन अरु गढ़े-से चरन-कर, मढ़े-से स्रवन, नहिं सुनति पुकारे।
रसना रटति नाम, कर सिर चिर रहै, नित निजपद-कमल निहारे ॥
दरसन-आस-लालसा मन महँ, राखे प्रभु-ध्यान प्रान-रखवारे।
तुलसिदास पूजति त्रिजटा नीके रावरे गुन-गन-सुमन सँवारे ॥

× × ×

जाऊँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे।
काको नाम पतित पावन जग, केहि अति दीन पियारे ॥
कौने देव बराइ विरद-हित, हठि हठि अधम उधारे।
खग, मृग, व्याध, पषान, विटप जड़, जवन कवन सुरतारे ॥
देव, दनुज मुनि, नाग, नाग मनुज सब माया विवस विचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे ॥

× × ×

मेरो मन हरिजू ! हठ न तजै।
निस दिन नाथ देउँ सिख बहु विधि करत सुभाउ निजै ॥
ज्यों जुवती अनुभवति प्रसव अति दारुन दुख उपजै।
ह्वै अनुकूल बिसारि सूल सठ पुनि खल पतिहि भजै ॥
लोलुप भ्रम-गृह पशु ज्यों जहँ तहँ सिर पदत्रान बजै।
तदपि अधम विचरत तेहि मारग कबहुँ न मूढ़ लजै ॥
हौं हार्‌यो करि जतन विविध विध अतिसय प्रबल अजै।
तुलसीदास वस होइ तबहिं जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥

× × ×

अब लौं नसानी अब न नसैहौं।
राम कृपा भवनिसा सिरानी जागे फिरि न डसैहौं ॥
पायेउँ नाम चारु चिन्तामनि उर कर ते न खसैहौं।
स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहिं कसैहौं ॥
परवस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन निज वस ह्वै न हँसैहौं।
मन मधुकर पनकै तुलसी रघुपति - पद - कमल बसैहौं ॥

× × ×

ऐसे राम दीन-हितकारी।
अति कोमल करुनानिधान बिनु कारन पर उपकारी ॥

साधन-हीन दीन निज अघ - बस सिला भई मुनि-नारी ।
गृहतें गवनि परसि पद पावन घोर सापतें तारी ॥
हिंसारत निषाद तामस बपु पसु - समान बनचारी ।
भेंट्यो हृदय लगाइ प्रेम बस नहिं कुल, जाति विचारी ॥
यद्यपि द्रोह कियो सुरपति सुत, कहि न जाइ अति भारी ।
सकल लोक अवलोकि सोकहत सरन गये भय टारी ॥
विहँग योनि आमिष अहार-पर गीध कौन व्रतधारी ।
जनक-समान क्रिया ताकी निज कर सब भांति सँवारी ॥
अधम जाति सवरी जोषित जड़ लोक - वेद ते न्यारी ।
जानि प्रीति, दै दरस कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी ॥
कपि सुग्रीव वन्धु भय व्याकुल, आयो सरन पुकारी ।
सहि न सके दारुन दुख जन के, हत्यो बालि सहि गारी ॥
रिपुको अनुज विभीषन निसिचर, कौन भजन अधिकारी ।
सरन गये आगे ह्वै लीन्हो भेंट्यो भुजा पसारी ॥
असुभ होइ जिन्हके सुमिरे ते वानर रीछ विकारी ।
वेद-विदित पावन किये ते सब, महिमा नाथ ! तुम्हारी ॥
कहँ लगि कहों दीन अगनित जिन्हकी तुम विपति दिवारी ।
कलिमल ग्रसित दास तुलसी पर, काहे कृपा बिसारी ॥

× × ×

मन पछितैहै अवसर बीते ।
दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु, करम वचन अरु हीते ॥
सहसबाहु दसबदन आदि नृप बचे न काल बली ते ।
हम-हम करि धन धाम सँवारे अन्त चले उठि रीते ॥
सुत-बनितादि जानि स्वारथरत, न करु नेह सबही ते ।
अन्तहुँ तोहिं तजैंगे पामर ! तू न तजै अबही ते ॥
अब नाथहिं अनुरागु, जागु जड़, त्यागु दुरासा जी ते ।
बुझै न काम अगिनि तुलसी कहुँ, विषय भोग बहु घी ते ॥

× × ×

जयति जय सुरसरी जगदखिल-पावनी ।
विष्णु-पदकंज-मकरंद इव अम्बुवर वहसि,
दुख दहसि, अघवृन्द - विद्राविनी ॥
मिलित जलपात्र-अज । युक्त-हरिचरणरज,
विरज- वर- वारि त्रिपुरारि शिर - धामिनी ।

जह्नु-कन्या धन्य, पुण्यकृत सगर-सुत,
भूधरद्रोणि - विद्दरणि बहुनामिनी ॥
यक्ष, गंधर्व, मुनि, किन्नरोरग, दनुज,
मनुज मज्जहिं सुकृत - पुंज युत - कामिनी ।
स्वर्ग-सोपान, विज्ञान-ज्ञानप्रदे,
मोह - मद - मदन - पाथोज - हिमयामिनी ॥
हरित गंभीर वानीर दुहुँ तीरवर,
मध्य धारा विशद, विश्व अभिरामिनी ।
नील-पर्यंक-कृत-शयन सर्पेश जनु,
सहस सीसावली स्रोत सुर - स्वामिनी ॥
अमित महिमा, अमितरूप, भूपावली-
मुकुट - मनिवंद्य त्रैलोक पथगामिनी ।
देहि रघुबीर-पद-प्रीति निर्भर मातु,
दासतुलसी त्रासहरणि भवभामिनी ॥

× × ×

अब चित चेति चित्रकूटहि चलु ।
कोपित कलि, लोपित मंगल मगु, विलसत बढ़त मोह-माया-मलु ॥
भूमि बिलोकु राम - पद-अंकित, बन बिलोकु रघुबर-बिहार थलु ।
सैल-सृंग भवभंग-हेतु लखु, दलन कपट-पाखंड-दंभ-दलु ॥
जहँ जनमे जग-जनक जगतपति, बिधि-हरि-हर परिहरि प्रपंच छलु ।
सकृत प्रवेस करत जेहि आश्रम, बिगत-बिषाद भये पारथ नलु ॥
न करु बिलंब बिचारु चारुमति, बरष पाछिले सम अगिले पलु ।
मंत्र सो जाइ जपहि, जो जपि भे, अजर अमर हर अचइ हलाहलु ॥
रामनाम-जप जाग करत नित, मज्जत पय पावन पीवत जलु ।
करिहैं राम भावतौ मनकौ, सुख-साधन, अनयास महाफलु ॥
कामदमनि कामता, कलपतरु सो जग-जुग जागत जगतीतलु ।
तुलसी तोहि बिसेषि बूझिये, एक प्रतीति-प्रीति एकै बलु ॥

× × ×

भूमिजा - रमण - पदकंज - मकरंद - रस-
रसिक - मधुकर भरत भूरिभागी ।
भुवन-भूषण, भानुवंश-भूषण, भूमिपाल-
मणि रामचन्द्रानुरागी ॥
जयति बिबुधेश-धनदादि-दुर्लभ-महा-
राज - संम्राज - सुख-पद - बिरागी ।

खड्ग-धाराव्रती-प्रथमरेखा प्रकट
शुद्धमति - युवति पति - प्रेमपागी ॥
जयति निरुपाधि - भक्तिभाव - यंत्रित - हृदय,
बंधु - हित चित्रकूटादि - चारी।
पादुका - नृप - सचिव, पुहुमि - पालक - परम
धरम - धुर - धीर, वरवीर भारी ॥
जयति संजीवनी-समय-संकट हनूमान
धनुवान - महिमा बखानी।
बाहुबल बिपुल परमिति पराक्रम अतुल,
गूढ़ गति जानकी - जानि जानी ॥
जयति रण - अजिर गन्धर्व - गण - गर्वहर,
फिर किये रामगुणगाथ - गाता।
माण्डवी - चित्त - चातक - नवांबुद - बरन,
सरन तुलसीदास अभय - दाता ॥

× × ×

कबहुँक अंब, अवसर पाइ।
मेरिऔ सुधि द्याइवी, कछु करुन-कथा चलाइ ॥
दीन, सब अँग हीन, छीन, मलीन, अघी अघाइ।
नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी-दास कहाइ ॥
बूझिहैं 'सो है कौन', कहिबी नाम दसा जनाइ।
सुनत राम कृपालुके मेरी बिगरिऔ बनि जाइ ॥
जानकी जगजननि जनकी किये बचन सहाइ।
तरै तुलसीदास भव तव नाथ-गुन-गन गाइ ॥

× × ×

रामको गुलाम, नाम रामबोला राख्यौ राम,
काम यहै, नाम द्वै हौं कबहूँ कहत हौं।
रोटी-लूगा नीके राखै, आगेहूकी वेद भाखै,
भलो ह्वै है तेरो, ताते आनँद लहत हौं ॥
बाँध्यौ हौं करम जड़ गरव गूढ़ निगड़,
सुनत दुसह हौं तौ साँसति सहत हौं।
आरत - अनाथ - नाथ, कौसलपाल कृपाल,
लीन्हों छीन दीन देख्यो दुरित दहत हौं ॥
बूझ्यो ज्यौं ही, कह्यो, मैं हूँ चेरो ह्वै हौ रावरो जू
मेरो कोऊ कहूँ नाहिं चरन गहत हौं।

गुरु पीठ, अपनाइ गहि बाँह बोलि
सेवक-सुखद, सदा बिरद बहत हौं ॥
लोग कहैं पोच, सो न सोच न सँकोच मेरे
ब्याह न बरेखी, जाति-पांति न चहत हौं।
तुलसी अकाज-काज राम ही के रीझे-खीझे,
प्रीतिकी प्रतीति मन मुदित रहत हौं ॥

× × ×

तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप-पुंज-हारी ॥
नाथ तू अनाथको, अनाथ कौन मोसो।
मो समान आरत नहिं आरतिहर तोसो ॥
ब्रह्म तू, हौं जीव, तू है ठाकुर, हौं चेरो।
तातु-मातु, गुरु-सखा तू सब विधि हितु मेरो ॥
तोहिं मोहिं नाते अनेक, मानियै जो भावै।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु! चरन-सरन पावै ॥

× × ×

केशव! कहि न जाइ का कहिये।
देखत तव रचना बिचित्र हरि! समुझि मनहिं मन रहिये ॥
सून्य भीतिपर चित्र, रंग नहिं, तनु बिनु लिखा चितेरे।
धोये मिटइ न, मरइ भीति, दुख पाइअ एहि तनु हेरे ॥
रविकर-नीर बसै अति दारुन मकर रूप तेहि माहीं।
बदन-हीन सो ग्रसै चराचर, पान करन जे जाहीं ॥
कोउ कह सत्य, झूठ कह कोऊ, जुगल प्रबल कोउ मानै।
तुलसिदास परिहरै तीन भ्रम, सो आपन पहिचानै ॥

× × ×

दीनदयालु, दुरित दारिद दुख दुनी दुसह तिहुँ ताप तई है।
देव दुवार पुकारत आरत, सबकी सब सुख हानि भई है ॥
प्रभुके बचन, वेद-बुध-सम्मत, 'मम मूरति महिदेवमई है'।
तिनकी मति रिस-राग-मोह-मद, लोभ लालची लीलि लई है ॥
राज-समाज कुसाज कोटि कटु कलपित कलुष कुचाल नई है।
नीति, प्रतीति प्रीति परमित पति हेतुबाद हठि हेरि हई है ॥
आश्रम-बरन-धरम-बिरहित जग, लोक-वेद, मरजाद गई है।
प्रजा पतित, पाखंड-पापरत, अपने अपने रंग रई है ॥

शांति, सत्य, सुभ रीति गई घटि, बढ़ी कुरीति, कपट-कलई है ।
सीदत साधु, साधुता सोचति, खल बिलसत, हुलसति खलई है ॥
परमारथ स्वारथ, साधन भये अफल, सफल नहिं सिद्धि सई है ।
कामधेनु-धरनी कलि-गोमर-बिवस बिकल जामति न वई है ॥
कलि-करनी बरनिये कहाँ लौं, करत फिरत विनु टहल टई है ।
तापर दाँत पीसि कर मींजत, को जानै चित कहा ठई है ॥
त्यों त्यों नीच चढ़त सिर ऊपर, ज्यों ज्यों सीलबस ढील दई है ।
सरुष वरजि तरजिये तरजनी, कुम्हिलैहैं कुम्हड़ेकी जई है ॥
दीजै दादि देखि ना तौ वलि, मही मोद-मंगल रितई है ।
भरे भाग अनुराग लोग कहैं, राम कृपा-चितवनि चितई है ॥
विनती सुनि सानंद हेरि हंसि, करुणा-बारि भूमि भिजई है ।
राम-राज भयो काज, सगुन सुभ, राजाराम जगत-बिजई है ॥
समरथ बड़ो, सुजान सुसाहब, सुकृत-सैन हारत जितई है ।
सुजन सुभाव, सराहत सादर, अनायास साँसति वितई है ॥
उथपे थपन, उजारि बसावन, गई बहोरि बिरद सदई है ।
तुलसी प्रभु आरत-आरतिहर, अभय बाँह केहि केहि न दई है ॥

× × ×

मैं हरि पतित-पावन सुने ।
मैं पतित तुम पतित-पावन दोउ वानक बने ॥
व्याध गनिका गज अजामिल साखि निगमनि भने ।
और अधम अनेक तारे जात कापै गने ॥
जानि नाम अजानि लीन्हें नरक सुरपुर मने ।
दासतुलसी सरन आयो, राखिये आपने ॥

× × ×

ऐसो को उदार जग माहीं ।
विनु सेवा जो द्रवै दीनपर राम सरिस कोउ नाहीं ॥
जो गति जोग विराग जतन करि नहिं पावत मुनि ग्यानी ।
सो गति देत गीध सबरी कहुँ प्रभु न बहुत जिय जानी ॥
जो संपति दस सीस अरप करि रावन सिव पहँ लीन्हीं ।
सो संपदा विभीषन कहँ अति सकुच-सहित हरि दीन्हीं ॥
तुलसिदास सब भांति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो ।
तौ भजु राम, काम सब पूरन करैं कृपानिधि तेरो ॥

× × ×

रघुवर ! रावरि यहै बड़ाई।
निदरि गनी आदर गरीबपर करत कृपा अधिकाई ॥
थके देव साधन करि सब, सपनेहुँ नहिं देत दिखाई।
केवट कुटिल भालु कपि कौनप, कियो सकल सँग भाई ॥
मिलि मुनिबृंद फिरत दंडक वन, सो चरचौ न चलाई।
बारहि बार गीध सबरीकी बरनत प्रीति सुहाई ॥
स्वान कहे तें कियो पुर बाहिर, जती गयंद चढ़ाई।
तिय-निंदक मतिमंद प्रजारज निज नय नगर बसाई ॥
यहि दरबार दीनको आदर रीति सदा चलि आई।
दीन-दयालु दीन तुलसीकी काहु न सुरति कराई ॥

× × ×

कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो।
श्रीरघुनाथ कृपालु-कृपातें संत-सुभाव गहौंगो ॥
जथालाभसंतोष सदा, काहूसों कछु न चहौंगो।
पर-हित-निरत-निरंतर, मन क्रम बचन नेम निबहौंगो ॥
परुष वचन अति दुसह श्रवन सुनि तेहि पावक न दहौंगो।
बिगत मान, सम सीतल मन, पर-गुन नहिं दोष कहौंगो ॥
परिहरि देह-जनित चिंता, दुख-सुख सम बुद्धि सहौंगो।
तुलसिदास प्रभु यहि पथ रहि अबिचल हरि-भगति लहौंगो ॥

× × ×

जाके प्रिय न राम बैदेही।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही ॥
तज्यो पिता प्रहलाद, बिभीषन बंधु, भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो कंत ब्रज-बनितन्हि, भये मुद-मंगलकारी ॥
नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं।
अंजन कहा आंखि जेहि फूटै, बहुतक कहौं कहाँ लौं ॥
तुलसी सो सब भांति परम हित पूज्य प्रानते प्यारो।
जासों होय सनेह राम-पद, एतो मतो हमारो ॥

× × ×

श्रीरघुबीरकी यह बानि।
नीचहू सों करत नेह सुप्रीति मन अनुमानि ॥
परम अधम निषाद पाँवर, कौन ताकी कानि ?
लियो सो उर लाइ सुत ज्यों प्रेमको पहिचानि ॥

गीध कौन दयालु, जो बिधि रच्यो हिंसा सानि ?
जनक ज्यों रघुनाथ ताकहँ दियो जल निज पानि ॥
प्रकृति-मलिन कुजाति सबरी सकल अवगुन-खानि ।
खात ताके दिये फल अति रुचि बखानि बखानि ॥
रजनिचर अरु रिपु बिभीषन सरन आयो जानि ।
भरत ज्यों उठि ताहि भेंटत देह-दसा भुलानि ॥
कौन सुभग सुसील बानर, जिनहिं सुमिरत हानि ॥
किये ते सब सखा, पूजे भवन अपने आनि ।
राम सहज कृपालु कोमल दीनहित दिनदानि ।
भजहि ऐसे प्रभुहि तुलसी कुटिल कपट न ठानि ॥

× × ×

ऐसेहि जनम-समूह सिराने ।
प्राननाथ रघुनाथ-से प्रभु तजि सेवत चरन बिराने ॥
जे जड़ जीव कुटिल, कायर, खल, केवल कलिमल-साने ।
सूखत बदन प्रसंसत तिन्ह कहँ हरि तें अधिक करि माने ॥
सुख हितकोटि उपाय निरंतर करत न पायँ पिराने ।
सदा मलीन पंथके जल ज्यों, कबहुँ न हृदय थिराने ॥
यह दीनता दूर करिबेको अमित जतन उर आने ।
तुलसी चित-चिंता न मिटै बिनु चिंतामनि पहिचाने ॥

× × ×

राम ! रावरो नाम साधु - सुरतरु है ।
सुमिरे त्रिविध घाम हरत, पूरत काम,
सकल सुकृत सरसिजको सरु है ॥
लाभहूको लाभ, सुखहूको सुख, सरबस,
पतित - पावन, डरहूको डरु है ।
नीचेहूको, ऊँचेहूको, रंकहूको, रावहूको,
सुलभ सुखद आपनो - सो घरु है ॥
वेद हू पुरान हू, पुरारि हू पुकारि कह्यो,
नाम - प्रेम चारिफलहूको फरु है ।
ऐसें राम - नाम सों न प्रीति, न प्रतीति मन,
मेरे जान, जानिबो सोई नर खरु है ॥
नाम-सो न मातु-पितु, मीत-हित, बंधु-गुरु,
साहिब सुधी सुसील सुधाकरु है ।

नामसों निवाह नेहु, दीनको दयालु ! देहु,
दासतुलसीको, वलि, बड़ो वरु है ॥

× × ×

बिस्वास एक राम-नामको ।
मानत नहिं परतीति अनत ऐसोइ सुभाव मन वामको ॥
पढ़िबो पर्‌यो न छठी छ मत रिगु जजुर अथर्वन सामको ।
व्रत तीरथ तप सुनि सहमति पचि मरै करै तन छाम को ? ॥
करम-जाल कलिकाल कठिन आधीन सुसाधित दामको ।
ग्यान विराग जोग जप-तप, भय लोभ मोह कोह कामको ॥
सब दिन सब लायक भव गायक रघुनायक गुन-ग्रामको ।
बैठे नाम-कामतरु-तर डर कौन घोर घन घामको ॥
को जानै को जैहै जमपुर को सुरपुर पर-धामको ।
तुलसिहिं बहुत भलो लागत जग जीवन रामगुलामको ॥

× × ×

लाभ कहा मानुष-तनु पाये ।
काय-वचन-मन सपनेहुँ कबहुँक घटत न काज पराये ॥
जो सुख सुरपुर-नरक, गेह-वन आवत विनहिं बुलाये ।
तेहि सुख कहँ बहु जतन करत मन, समुझत नहिं समुझाये ॥
पर-दारा, पर द्रोह, मोहबस किये मूढ़ मन भाये ।
गरभबास दुखरासि जातना तीव्र विपति बिसराये ॥
भय-निद्रा, मैथुन-अहार, सबके समान जग जाये ।
सुर-दुरलभ तनु धरि न भजे हरि मद अभिमान गवाँये ॥
गई न निज-पर-बुद्धि, शुद्ध ह्वै रहे न राम-लय लाये ।
तुलसिदास यह अवसर बीते का पुनि के पछिताये ॥

× × ×

रुचिर रसना तू राम राम राम क्यों न रटत ।
सुमिरत सुख सुकृत बढ़त, अघ-अमंगल घटत ॥
बिनु श्रम कलि-कलुषजाल कटु कराल कटत ।
दिनकरके उदय जैसे तिमिर-तोम फटत ॥
जोग, जाग, जप, बिराग, तप, सुतीरथ-अटत ।
बांधिवेको भव-गयंद रेनुकी रजु बटत ॥
परिहरि सुर-मनि सुनाम, गुंजा लखि लटत ।
लालच लघु तेरो लखि तुलसि तोहिं हटत ॥

संत पीपाजी

कायउ देवा काइअउ देवल, काइअउ जंगम जाती।
काइअउ धूप दीप नइवेदा, काइअउ पूजत पाती॥
काइआ वहु षंड षोजते, नवनिधि पाई।
नाकछु आइबो ना कछु जाइबो, रामकी दुहाई॥
जो ब्रह्मंडे सोई पिंडे, जो पोजै सो पावै।
पीपा प्रणवै परम तत्तु है, सतिगुरु होइ लषावै॥

रैदास

भगती ऐसी सुनहु रे भाई।
आइ भगति तव गई वड़ाई॥
कहा भयो नाचे अरु गाये कहा भयो तप कीन्हे।
कहा भयो जे चरन पखारे जोलौं तत्त्व न चीन्हे॥
कहा भयो जे मूँड़ मुड़ायो कहा तीर्थ व्रत कीन्हे।
खाली दास भगत अरु सेवक परम तत्व नहिं चीन्हे॥
कह रैदास तेरी भगति दूर है भाग वड़े सो पावै।
तजि अभिमान मेटि आपा पर पिपलिक ह्वै चुनि खावै॥

× × ×

पहले पहरे रैन दे बनजरिया तैं जनम लिया संसार वे।
सेवा चूकी राम की तेरी बालक बुद्धि गँवार वे॥
बालक बुद्धि न चेता तूँ भूला माया जाल वे।
कहा होय पीछे पछिताये जल पहिले न बाँधी पाल वे॥
वीस वरस का भया अयाना थांभि न सक्का भार वे।
जन रैदास कहै बनजरिया जनम लिया संसार वे॥

× × ×

राम मैं पूजा कहा चढ़ाऊँ। फल अरु मूल अनूप न पाऊँ॥
थनहर दूध जो बछरू जुठारी। पुहुप भँवर जल मीन बिगारी॥
मलयागिरि वेधियो भुअंगा। विष, अमृत दोऊ एकै संगा॥
मन ही पूजा मन ही धूप। मन ही सेऊँ सहज सरूप॥
पूजा अरचा न जानूँ तेरी। कह रैदास कवन गति मेरी॥

× × ×

रे चित चेत अचेत काहे बालक को देख रे ।
जाति तें कोइ पद नहिं पहुँचा राम भगति विशेष रे ॥
खट क्रम सहित जे विप्र होते हरि भगति चित दृढ़ नाहिं रे ।
हरि की कथा सोहाय नाहीं स्वपच तूलै ताहि रे ॥
मित्र शत्रु अशात सबतें अन्तर लावे हेत रे ।
लाग वाकी कहाँ जानै तीन लोक पवेत रे ॥
अजामिल गज गनिका तारी काटी कुंजर की पास रे ।
ऐसे दुरमत मुक्त कीये तो क्यों न तरै रैदास रे ॥

× × ×

जो तुम गोपालहि नहिं गैहौ ।
तो तुमका सुख में दुख उपजै सुखहि कहाँ ते पैहौ ॥
माला नाय सकल जग डहको झूँठो भेख बनैहौ ।
झूँठे ते सांचे तब होइ हो हरि की सरन जब ऐहौ ॥
कनरस, बतरस और सबै रस झूँठहि मूड़ डुलैहौ ।
जब लगि तेल दिया में बाती देखत ही बुझ जैहौ ॥
जो जन राम नाम रँग राते और रंग न सोहैहौ ।
कह रैदास सुनो रे कृपानिधि प्रान गये पछितैहौ ॥

× × ×

प्रभु जी संगति सरन तिहारी । जग जीवन राम मुरारी ॥
गली गली को जल बहि आयो सुरसरि जाय समायो ।
संगत के परताप महातम नाम गंगोदक पायो ॥
स्वाति बूँद बरसे फदि ऊपर सीस विषै होइ जाई ।
वही बूँद कै मोती निपजै संगत की अधिकाई ॥
तुम चंदन हम रेंड बापुरे निकट तुम्हारे बासा ।
संगत के परताप महातम आवै बास सुबासा ॥
जाति भी ओछी करम भी ओछा ओछा कसब हमारा ।
नीचे से प्रभु ऊँच कियो है कह रैदास चमारा ॥

× × ×

बिनु देषे उपजै नहीं आसा, जो दीसै सो होइ बिनासा ।
बरन सहित जो जापै नामु, सो जोगी केवल निहकामु ॥
परचै रामु रवै जउ कोई, पारसु परसै दुविधा न होई ॥
सो मुनि मनकी दुविधा पाइ, बिनु दुआरे त्रैलोक समाइ ।
मनका सुभाउ सभु कोइ करै, करता होइ सु अनभै रहै ॥
फल कारन फूली बनराइ, फल लागा तब फूलु बिलहाइ ।
गिआने कारन करम अभिआस, गिआनु भइआ तब करमह नासु ॥

घ्रित कारन दधि मथै सइआन, जीवत मुकत सदा निरवान।
कहि रविदास परम बैराग, रिदै रामु कीन जपिसि अभाग ॥

× × ×

पड़ीऐ गुनीऐ नामु सभु सुनीऐ, अनभउ भाव न दरसै।
लोहा कंचनु हिरन होइ कैसे, जउ पारसहि न परसै ॥
देव संसै गांठि न छूटै।
काम क्रोध माइआ मद मतसर, इह पंचहु मिलि लूटै ॥
हम बड़ कवि कुलीन हम पंडित, हम जोगी संनिआसी।
गिआनी गुनी सूर हम दाते, इह बुधि कबहि न नासी ॥
कहु रविदास सभै नहीं समझसि, भूलि परे जैसे बउरे।
मोहि अधारु नामु नाराइन, जीवन प्रान धन मोरे ॥

× × ×

माधो भरम कैसेहु न बिलाइ, ताते द्वैत दरसै आई ॥
कनक कुंडल सूत पट जुदा, रजु भुअंग भ्रम जैसा।
जल तरंग पाहन प्रतिमा ज्यों, ब्रह्म जीव इति ऐसा ॥
विमल एकरस उपजै न विनसै, उदय अस्त दोउ नाहीं।
बिगता बिगत घटै नहिं कबहूँ, बसत बसै सब माही ॥
निस्चल निराकार अज अनुपम, निरभय गति गोविंदा।
अगम अगोचर अच्छर अतरक, निरगुन अंत अनंदा ॥
सदा अतीत ज्ञानघन वर्जित, नरबिकार अविनासी।
कह रैदास सहज सुन्न सत, जिवन मुक्त निधि कासी ॥

× × ×

ऐसे कछु अनुभौ कहत न आवै। साहिब मिलै तो को बिलगावै ॥
सब में हरि है हरि में सबहै, हरि अपनो जिन जाना।
साखी नहीं और कोइ दूसर, जाननहार सयाना ॥
बाजीगर सो राचि रहा, बाजी का मरम न जाना।
बाजी झूठ साँच बाजीगर, जाना मन पतियाना ॥
मन थिर होइ त कोइ न सूझै, जानै जाननहारा।
कह रैदास विमल विवेक सुख, सहज सरूप सँभारा ॥

× × ×

ज्यों तुम कारन केसवे, अंतर लव लागी।
एक अनूपम अनुभवी, किमि होइ विरागी ॥

इक अभिमानी चातृगा, विचरत जगमाही।
यद्यपि जल पूरन वही, कहूँ वा रुचि नाहीं॥
जैसे कामी देखि कामिनी, हृदय सूल उपजाई।
कोट वेदविधि ऊचरै, वाकी विथा न जाई॥
जो तेहि चाहै सो मिलै, आरतगति होई।
कह रैदास यह गोप नहिं, जानै सब कोई॥

× × ×

संतो अनिन भगति यह नाहीं।
जब लग सिरजत मन पांचों गुन, व्यापत है या माही॥
सोई आन अंतर करि हरिसों, अपमारग को आनै।
काम क्रोध मद लोभ मोहकी, पल पल पूजा ठानै॥
सत्य सनेह इष्ट अँग लावै, अस्थल अस्थल खेलै।
जो कछु मिलै आन आखतसों, सुत दारा सिर मेलै॥
हरिजन हरिहि और ना जानै, तजै आन तन त्यागी।
कह रैदास सोई जग निर्मल, निसिदिन जो अनुरागी॥

× × ×

दूधु बछरै थनहु बिटारिउ। फूलु भँवरि, जलु मीन बिगारिउ॥
माई गोविंद पूजा कहाले चरावउ। अवरु न फूलु अनूपु न पावउ॥
मैलागर वेरहे है भुइअंगा। विपु अंम्रितु बसहिं इक संगा॥
धूप दीप नईवेदहि वासा। कैसे पूज करहि तेरी दासा॥
तनु मनु अरपउ पूज चरावउ। गुर परसादि निरंजनु पावउ॥
पूजा अरचा आहि न तोरी। कहि रविदास कवन गति मोरी॥

× × ×

ऐसा ध्यान धरौं वरो बनवारी। मन पवन दै सुखमन नारी॥
जो जप जपौं जो बहुरि न जपना। सो तप तपौं जो बहुरि न तपना॥
सो गुरु करौं जो बहुरि न करना। ऐसो मरौं जो बहुरि न मरना॥
उलटी गंग जमुन में लावौं। त्रिनही जल मंजन द्वै पावौं॥
लोचन भरि भरि बिंब निहारौं। जोति विचारि न और बिचारौं॥
पिंड परे जिव जिस घर जाता। सबद अतीत अनाहद राता॥
जापर कृपा सोई भल जानै। गूंगो साकर कहा बखानै॥
सुन्न महल में मेरा वासा। ताते जिव में रहौं उदासा॥
कह रैदास निरंजन ध्यावौं। जिस घर जावँ सो बहुरि न आवौं॥

× × ×

गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ । गावन हारको निकट बताऊँ ॥
जब लग है या तन की आसा, तब लग करै पुकारा ।
जब मन मिल्यौ आस नहिं तन की, तब को गावनहारा ॥
जब लग नदी न समुद समावै, तब लग बढ़ै हँकारा ।
जब मन मिल्यो रामसागर सों, तब यह मिटी पुकारा ॥
जब लग भगति मुकतिकी आसा, परम तत्व सुनि गावै ।
जहँ जहँ आस धरत है यह मन, तहँ तहँ कछू न पावै ॥
छाड़ै आस निरास परम पद, तब सुख सति कर होई ।
कह रैदास जासों और करत है, परम तत्व अब सोई ॥

× × ×

नरहरि चंचल है मति मेरी, कैसे भगति करूँ मैं तेरी ॥
तूं मोहिं देखै हौं तोरि देखूं, प्रीति परस्पर होई ।
तूं मोहिं देखै तोहि न देखूं, यह मति सब बुधि खोई ॥
सब घट अंतर रमसि निरंतर, मैं देखन नहिं जाना ।
गुन सब तोर मोर सब औगुन, कृत उपकार न माना ॥
मैं तैं तोरि मोरि असमझिसों, कैसे करि निस्तारा ।
कह रैदास कृस्न करुनामय, जै जै जगत अधारा ॥

× × ×

तोही मोही मोही तोही अंतर कैसा । कनिक कटिक जल तरंग जैसा ॥
जउपै हमन पाप करंता, अहे अनंता । पतित पावन नाम कैसे हुंता ॥
तुम जु नाइक आछहु अंतरजामी । प्रभते जनु जानीजै जनते सुआमी ॥
सरीरु अराधै बीकउ बीचारु देहू । रविदास समदल समझावै कोऊ ॥

× × ×

जउ हम बांधे मोह फांस, हम प्रेम बंधनि तुम बांधे ।
अपने छूटनको जतनु करहु, हम छूटे तुम अराधे ॥
माधवे, जानत हहु जैसी तैसी । अब कहा करहुगे ऐसी ॥
मीनु पकरि फांकिउ अरु काटिउ, रांधि कीउ बहुबानी ।
पंड पंड करि भोजन कीनो, तऊ न बिसारिउ पानी ॥
आपन बापै नाहीं किसी को, भावन को हरि राजा ।
मोहु पटलु सभु जगतु बिआपिउ, भगतनही संतापा ॥
कहि रविदास भगति इक बाढ़ी, अब इह कासिउ कहीऐ ।
जाकारनि हम तुम अराधे, सो दुखु अजहू सहीऐ ॥

× × ×

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा । जउ तुम चंद तउ हम भए हैं चकोरा ॥
माधवे तुम न तोरहु तउ हम नहीं तोरहि ।
तुमसिउ तोरि कवनसिउ जोरहि ॥
जउ तुम दीवरा तउ हम बाती । जउ तुम तीरथ तउ हम जाती ॥
साची प्रीति हम तुमसिउ जोरी । तुमसिउ जोरि अवरसंगि तोरी ॥
जंह जंह जाउ तहां तेरी सेवा । तुमसौं ठाकुरु अउर न देवा ॥
तुमरे भजन कटहि जम फांसा । भगति देत गावै रविदासा ॥

× × ×

जब हम होते तव तू नाहीं, अब तूंही मैं नाहीं ।
अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि, जल केवल जल माही ॥
माधवे, किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा । जैसा मानीऐ होइ न तैसा ॥
नरपति एकु सिंघासनि सोइआ, सुपने भइआ भिपारी ।
अछत राज विछुरत दुपु पाइआ, सो गति भई हमारी ॥
राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि, अब कछु मरमु जनाइआ ॥
अनिक कटक जैसे भूलि परे अब, कहते कहनु न आइया ॥
सरवे एकु अनेकै सुआमी, सब घट भोगावै सोई ।
कहि रविदास हाथपै नेरै, सहजे होइ सु होई ॥

× × ×

सहकी सार सुहागनि जानै, तजि अभिमानु सुप रलीआ मानै ।
तनु मनु देइ न अंतरु रापै, अवरा देपि न सुनै अभापै ॥
सो कत जानै पीर पराई । जाकै अंतरि दरदु न आई ॥
दुपी दुहागनि दुइ पप हीनी, जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी ।
पुरष लात का पंथु दुहेला, संगि न साथी गवनु इकेला ॥
दुपीआ दरदवंदु दरि आइआ, वहुतु पिआस जवावु न पाइआ ।
कहि रविदास सरन प्रभु तेरी, जिउ जानहु तिउ करु गति मोरी ॥

× × ×

पावन जस माधो तेरा, तुम दारुन अघ मोचन मेरा ॥
कीरति तेरी पाप विनासे, लोक वेद यों गावै ।
जौ हम पाप करत नहि भूधर, तौ तूं कहा नसावै ॥
जब लग अंग पंक नहिं परसै, तौ जल कहा पखारै ।
मन मलीन विपया रस लंपट, तौ हरि नाम सँभारै ॥
जो हम विमल हृदय चित अंतर, दोष कवन हम धरिहौ ।
कह रैदास प्रभु तुम दयाल हौ, अबँध मुक्ति का करिहौ ॥

× × ×

सब कछु करत कहौं कछु कैसे, गुन विधि बहुत रहति ससि जैसे ॥
दरपन गगन अनिल अलेप जस, गंध जलधि प्रतिबिंब देखि तस ॥
सब आरंभ अकाम अनेहा, विधि निषेध कीयो अनेकेहा ॥
यह पद कहत सुनत जेहि आवै, कह रैदास सुकृत को पावै ॥

× × ×

तेरे देव कमलापति सरन आया।
मुझ जनम संदेह भ्रम छेदि माया ॥
अति अपार संसार भवसागर, जामे जनम मरना संदेह भारी।
काम भ्रम क्रोध भ्रम लोभ भ्रम मोह भ्रम,
अनत भ्रम छेदि मम करसि यारी ॥
पंच संगी मिलि पीड़ियो प्रान यों,
जाय न सक्यों वैराग भाग।
पुत्र वरग कुल बंधु ते भारजा,
भरवै दसो दिसा सिर काल लागा ॥
भगति चितऊं तो मोह दुख व्यापही,
मोह चितऊं तो मेरी भगति जाई।
उभय संदेह मोहि रैन दिन व्यापही,
दीन दाता करूँ कवन उपाई ॥
चपल चेतो नहीं बहुत दुख देखियो,
काम, वस मोहिहो करम फंदा।
सक्ति संबंध कियो ज्ञान पद हरि लियो,
हृदय विश्वरूप तजि भयो अंधा ॥
परम प्रकास अविनासी अघ मोचना,
निरखि निज रूप विसराम पाया।
बदत रैदास वैराग पद चिंतना,
जपौ जगदीस गोविंद राया ॥

× × ×

दरसन दिजै राम, दरसन दीजै।
दरसन दीजै विलंब न कीजै ॥
दरसन तोरा जीवन मोरा। बिन दरसन क्यों जिवै चकोरा ॥
साधो सतगुरु सब जग चेला। अबके बिछुरे मिलन दुहेला ॥
धन जोबन की झूठी आसा। सत सत भाषै जन रैदासा ॥

× × ×

तुम चंदन हम इरंड बापुरे, संगि तुमारे बासा।
नीच रूप ते ऊँच भए हैं, गंध सुगंध निवासा॥
माधउ, सत संगति सरनि तुम्हारी।
हम अउगन तुम उपकारी॥
तुम मषतूल सुपेद सपीअल, हम बपुरे जस कीरा।
सत संगति मिलि रहीऔ माधउ जैसे मधुप मषीरा॥
जाती ओछा पाती ओछा, ओछा जनमु हमारा।
राजा राम की सेव न कीन्ही, कहि रविदास चमारा॥

× × ×

कुपु भरिओ जैसे दादिरा, कछु देस बिदेस न बूझ।
ऐसे मेरा मनु बिपिआ बिमोरिआ, कछु आरापार न सूझ।
सगल भवन के नाइका, एक छिनु दरस दिषाइजी॥
मलिन भई मति माधवा, तेरी गति लषी न जाइ।
करहु क्रिपा भ्रमु चूकई, मैं सुमति देहु समुझाइ॥
जोगीसर पावहि नहीं, तुअ गुण कथन 'अपार।
प्रेम भगति कै कारणै, कहु रविदास चमार॥

× × ×

कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु।
प्रेम जाइ तउ डरपै तेरो जनु॥
तुझहि चरन अरविंद भवन मनु।
पान करत पाइओ पाइओ रामइआ धनु॥
संपति बिपत पटल माइआ धनु।
तामहि मगन होत न तेरो जनु॥
प्रेमकी जेवरी बाधिओ तेरो जन।
कहि रविदास छूटिबो कवन गुन॥

× × ×

सुष सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु वसि जाके।
चारि पदारथ असट दसा सिधि, नवनिधि करतल ताके॥
हरि हरि हरि न जपहि रसना। अवर सभि तिआगि बचन रचना।
नाना षिआन पुरान वेद बिधि, चउतीस अषर माही।
बिआस विचारि कहिउ परमारथु, रामनाम सरि नाहीं॥
सहज समाधि उपाधि रहत फुनि, बड़ै भागि लिव लागी।
कहिं रविदास प्रगासु रिदै धरि, जनम मरन भै भागी॥

× × ×

जलकी भीति पवन का थंभा, रकत बुंद का गारा।
हाड मास नाडी को पिंजरु, पंषी वसै विचारा॥
प्रानी किआ मेरा किआ तेरा। जैसा तरवर पंषि वसेरा॥
राषहु कंध उसारहु नीवाँ। साढ़े तीनि हाथ तेरी सीवाँ॥
वंके वाल पाग सिर डेरी। इहु तनु होइगो भसम की ढेरी॥
ऊंचे मंदर सुंदर नारी। राम नाम विनु वाजी हारी॥
मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी, ओछा जनमु हमारा।
तुम सरनागति राजा राम, कहि रविदास चमारा॥

× × ×

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो, स्रवन वानी सुजसु पूरि राषउ।
मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ, रसनअंम्रित रामनाम भाषउ॥
मेरी प्रीति गोविंद सिउ जिनि घटै। मैं तउ मोलि महँगीलई जीअ सटै॥
साध संगति विना भाउ नहीं ऊपजै, भाव विनु भगति नहीं होइ तेरी॥
कहै रविदास इक वेनती हरि सिउ, पैज राषहु राजा राम मेरी॥

× × ×

नाथ कछूअ न जानउ। मनु माइआ कै हाथि विकानउ॥
तुम कहीअत है जगतगुर सुआमी। हम कहीअत कलि जुगके कामी॥
इन पंचन मेरो मनु जु विगारिउ। पलु पलु हरिजी ते अंतरु पारिउ॥
जत देषउ तत दुष की रासी। अजौं न पत्याइ निगम भए साथी॥
गोतम नारि उमापति स्वामी। सीसु धरनि सहस भगगामी॥
इन दूतन षलु वधु करि मारिउ। वडो निलाजु अजहू नहीं हारिउ॥
कहि रविदास कहा कैसे कीजै। विनु रघुनाथ सरनि काकी लीजै॥

× × ×

जो दिन आवहि सो दिन जाही, करना कूचु रहनु थिरु नाही।
संगु चलत है हमभी चलना, दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना॥
किआ तू सोइआ जागु इआना, तै जीवनु जगि सचु करि जाना॥
जिनि जीउ दीआ सुरिजकु अंवरावै, सभ घटि भीतरि हाटु चलावै।
करि वंदिगी छाड़ि मैं मेरा, हिरदै नामु संभारि सवेरा॥
जनमु सिराने पंथु न संवारा, साँझ परी दह दिसि अंधिआरा।
कहि रविदास निदानि दिवाने, चेतसि नाही दुनीआ फन षाने॥

× × ×

दारिदु देषि सभको हँसै, ऐसी दसा हमारी।
असट दसा सिधि करतलै, सभ क्रिपा तुम्हारी॥

तू जानत मैं किछु नहीं भव खंडन राम।
सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम॥
जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु।
ऊँच नीच तुमते तरे आलाजु संसारु॥
कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै।
जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै॥

× × ×

हरि सा हीरा छाड़िकै, करै आनकी आस।
ते नर जमपुर जाहिंगे, सत भाषै रैदास॥
रैदास कहै जाके हृदे, रहै रैन दिन राम।
सो भगता भगवंत सम, क्रोध न व्यापै काम॥
जा देखे घिन उपजै, नरक कुंडमें वास।
प्रेम भगति सों ऊधरे, प्रगटत जन रैदास॥

कमाल

इतना जोग कमाय के साधू, क्या तूने फल पाया।
जंगल जाके खाक लगाये, फेर चौरासी आया॥
राम भजन है अच्छा रे। दिलमों रखो सच्चा रे॥
जोग जुगत की गत है न्यारी, जोग जहर का प्याला।
जीने पावे उने घुपावे, वोही रहे मतवाला॥
जोग कमाय के बादू होना, ये तो बड़ा मुष्कल है।
दोनों हात जब निकल गये, फेर सुधरन भी मुष्कल है॥
सुख से बैठो आपने मेहलमो, राम भजन अच्छा है।
कछु काया भीजे नहीं खरचे, ध्यान धरो सोइ सच्चा है॥
कहत कमाल सुनो भाई साधू, सब से पंथ न्यारा है।
वेद शास्तर की बात येही, जमके माथा फत्तर है॥

× × ×

ये तनु किसोकी किसोकी। आखर वस्ती जंगलकी॥
काहे कू दिवाने सोच करे, मेरी माता और पुती।
ये तो सब झुट पसारा, राम करो अपना साती॥
खाये पिये सुख से बैठे, फेर उठके चले जाती।
बरखकी छाया सुख की मीठी, एक घड़ी का साती॥

कहत कमाल सुनो भाई साधू, सपन भया रात ।
खिन मो राजा खिन मो रंक, ऐसी रहा चलती ।।

× × ×

पीर पैगम्बर की वानी, यारो वस्त भयो निर्वानी ।।
राजा रंक दोनों बराबर, जैसे गंगाजल पानी ।
मान करो कुई मूपर मारो, दोनों मीठा वानी ।।
कांचन नारी जहर सम देखे, ना पसरे ह्या पानी ।
साधु संत से शीश नमावे, हात जोरकर निर्वानी ।।
कहत कमाल सुनो भाई साधू, येही हमारी वानी ।
ये ही ग्यान मान मो राखो, और कछू ना जानी ।।

× × ×

राम सुमरो राम सुमरो, राम सुमरो भाई ।
कनक कान्ता तजकर बाबा, आपनी बादशाही ।।
देस बदेस तीरथ बरतमे, कछु नहीं काम ।
बैठे जगा सुख से ध्यावो, अखिल राजाराम ।।
कहे कमाल इतना वचन, पुरानों का सार ।
झूठा सच्चा आपनो दिलमो, आपही आप पछानन हार ।।

धन्ना भगत

गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि, नामदेउ मनु लीणा ।
आढ दाम को छीपरो होइउ लाषीणा ।।
बुनना तनना तिआगिकै, प्रीति चरन कबीरा ।
नीच कुला जोलाहरा भइउ गुनीय गहीरा ।।
रविदासु ढुवंता ढोरनी, तितिन्हि तिआगी माइआ ।
परगटु होआ साधसंगि, हरि दरसनु पाइआ ।।
सैनु नाई बुतकारीआ, उहु घरिघरि सुनिआ ।
हिरदे वसिआ पारब्रह्मु भगता महि गनिआ ।।
इह बिधि सुनिकै जाटरो, उठि भगती लागा ।
मिले प्रतषि गुसाईआं, धना वड़भागा ।।

× × ×

भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने, तनु मनु धनु नहीं धीरे ।
लालच बिषु काम लुबध राता, मनि बिसरे प्रभहीरे ।।

विपु फल मीठ लगे मन वउरे, चार विचार न जानीआ।
गुन ते प्रीति बढी अनभांती जनम मरन फिरि तानिआ॥
जुगति जानि नही रिदै निवासी, जलत जाल जम फंध परे।
विपु फल संचि भरे मन ऐसे, परम पुरप प्रभ मन विसरे॥
गिआन प्रवेस गुरहि धनु दीआ, धिआनु मानु मन एकमए।
प्रेम भगति ठानी सुपु जानिआ, त्रिपति अघाने मुकति भए॥
जोति समाए समानी जाकै, अछली प्रभु पहिचानिआ।
धंनै धनु पाइआ धरणीधरु, मिलि जन संत समानिआ॥

× × ×

रे चित चेतसि कीन दयाल, दमोदर विवहित जानसि कोई।
जे धावहि पंड ब्रहिमंड कउ, करता करै सु होई॥
जननी केरे उदक महि, पिंडु कीआ दस दुआरा।
देइ अहारु अगनि महि रापै, ऐसा पसमु हमारा॥
कुंभी जल माहि तन तिसु वाहरि, पंप षीरु तिन्ह नाही।
पूरन परमानंद मनोहर, समझि देपु मन माही॥
पाषणि कीटु गुपतु होइ रहता, ताचो मारगु नाही।
कहै धंना पूरन ताहू को, मत रे जीअ डराही॥

× × ×

गोपाल तेरा आरता।
जो जन तुमरी भगति करंते, तिनके काज सँवारता॥
दालि सीधा मांगउ घीउ, हमरा पुसी करै नित जीउ।
पन्ही आछादनु नीका, अनाज मंगउ सतसीका॥
गऊ भैस माँगउ लावेरी, इक ताजनि तुरी चंगेरी।
घर की गीहनि चंगी, जनु धंना लेवै मंगी॥

शेख फ़रीद

जिंदु वहूटी मरणु वर, लै जासी परणाइ।
आपण हथी जोलिकै, कै गलि लगै धाइ॥
फरीदा जो तै मारनि मुकीआं, तिना न मारे घुंमि।
आपनड़ै घरि जाईऔ, पैरा तिन्हांदे चुंमि॥
फरीदा जिन लोइण जगु मोहिआ, सो लोइण मैं डिठु।
कजल रेख न सहदिआ, से पंषी सूइ वहिठु॥

फरीदा खाकु न निंदीऐ, खाकु जेडु न कोइ ।
जीवदिआ पैरा तलै, मइआ ऊपरि होइ ॥
रूषी सूपी षाइ कै, ठंढा पाणी पीउ ।
फरीदा, देषि पराई चोपड़ी, ना तरसाए जीउ ॥
फरीदा, बारि पराइऐ वैसणा, साईं मुझै न देहि ।
जे तू एवै रषसी, जीउ सरीरहु लेहि ॥
फरीदा काले मैड़े कपड़े, काला मैड़ा वेसु ।
गुनही भरिआ मैं फिरा, लोकु कहै दरवेसु ॥
फरीदा षालक षलक महि, षलक वसै रव माहि ।
मंदा किसनो आषीऐ, जां तिसुविणु कोई नाहिं ॥
फरीदा मैं जानिआ, दुषु मुझकु, दुषु सवाइऐ जगि ।
ऊंचे चड़िकै देषिआ, तो घरि घरि एहा अगि ॥
कागा करंग ढंढोलिआ, सगला षाइआ मासु ।
ए दुइ नैना मति छुहउ, पिव देषन की आस ॥
आपु सवारहि मैं मिलहि, मैं मिलिआ सुषु होइ ।
फरीदा जे तू मेरा होइ रहहि, सभु जगु तेरा होइ ॥
सरवर पंथी हेकड़े, फाहीवाल पचास ।
इहु तनु लहरी गडुथिआ, सचे तेरी आस ॥
विरहा विरहा आषीऐ, विरहा तू सुलतानु ।
फरीदा जितु तनि विरहु न ऊपजै, सो तनु जाण मसानु ॥
बूढा होआ शेख फरीदु, कंपणि लगी देह ।
जे सउ वरिआ जीवणा, भी तनु होसी वेह ॥
फरीदा सिरु पलीआ, दाड़ी पली मूँछा भी पलीआं ।
रे मन गहिले बावले, माणहि किआ रलीआं ॥

अंगद

जिसु पिआरेसिउ नेहु, तिसु आगै मरि चलीऐ ।
ध्रिगु जीवणु संसारि, ताकै पाछै जीवणा ॥
जो सिरु सांई ना निवै, सो सिरु दीजै डारि ।
नानक जिसु पिंजर महि विरहा नही, सो पिंजरु लै जारि ॥
अखी बाझहु वेखणा, विणु कंना सुनणा ।
पैरा बाझहु चलणा, विणु हथा करणा ॥

जीभै वाझहु बोलणा, इउ जीवत मरणा।
नानक हुकमु पछाणिकै, तउ खसमै मिलणा॥

नानक परखे आपकउ, ता पारखु जाणु।
रोगु दारू दोवै बुझै, ता वैदु सुजाणु॥

अगी पाला सिकरे, सूरज केही राति।
चंद अनेरा किकरे, पउण पणी किआ जाति॥
धरती चीजी किकरे, जिसु विचि सभु किछु होइ।
नानक तापति जाणी अै, जापति रखै सोइ॥

जे सउ चंदा उगवहि, सूरज चड़हि हजार।
एते चानण होदिआं, गुर बिनु घोर अंधारु॥
इहु जगु सचै की हैं कोटड़ी, सचे का विचि वासु।
इकन्हा हुकमि समाइलए, इकन्हा हुकमे करे विणासु॥
जपु तपु सभु किछु मंनिअै, अवरि कारा सभि वादि।
नानक मंनिआ मंनिअै, बुझीअै गुर परसादि॥
नानक चिंता मति करहु, चिंता तिसही होइ।
जल महि जंत उपाइअनु, तिनाभि रोजी देइ॥
नानक तिन्हा वसंतु है, जिन घरि वसिआ कंतु।
जिन्हके कंत दिसापुरी, से अहिनिसि फिरहि जलंत॥
मिलिअै मिलिआ न मिलै, मिलै मिलिआ जे होइ।
अंतर आतमै जो मिलै, मिलिआ कहीआ सोइ॥
सावणु आइआ हे सखी, जलहरु वरसनहारु।
नानक सुखि सवनु सोहागणी, जिन्ह सह नालि पिआरु॥

अमरदास

जगि हउमै मैलु दुखु पाइआ, मलु लागी दूजै भाइ।
मलु हउमै धोती किवै न उतरै, जे सउ तीरथ नाइ॥
बहु विधि करम कमावदे, दूणी मलु लागी आइ।
पड़िअै मैलु न उतरै, पूछहु गिआनिआ जाइ॥
मनु मेरे गुरु सरणि आवै, ताहि न मलु होइ।
मनमुख हरि हरि करि थकै, मैलु न सकी धोइ॥

मनि मैलै भगति न होवई, नामु न पाइआ जाइ ।
मनमुख मैले मैले मुए, जासनि पति गवाइ ॥
गुर परसादी मनि वसै, मलु हउमै जाइ समाइ ।
जिउ अंधेरै दीपकु वालीऐ, तिउ गुर गिआ निआगिआनि तजाइ ॥

हम कीआ हम करहगे, हम मूरख गावार ।
करणै वाला विसरिआ, दूजै भाइ पिआरु ॥

माइआ जेवडु दुख नहीं, सभि भवि थके संसारु ।
गुर मती सुखु पाईऐ, सचु नामु उरधारि ॥
जिसनो मेले सो मिलै, हउ तिसु बलिहारै जाउ ।
ए मन भगती रतिआ, सचु बाणी निज थाउ ॥
मनि रते जिहवा रती, हरिगुण सचे गाग ।
नानक नामु न वीसरै, सचे माहि समाउ ॥

× × ×

अंदरि हीरा लालु बणाइआ । गुर कै सबदि परखि परखाइआ ॥
जिन सचु पलै सचु वखाणहि, सचु कसवटी लावणिआ ॥
हउ वारी जीउ वारी गुरकी बाणी मंनि वसावणिआ ।
अंजन माहि निरंजनु पाइआ, जोती जोति मिलावणिआ ॥
इसु काइआ अंदरि बहुतु पसारा । नामु निरंजनु अति अगम अपारा ॥
गुरमुखि होवै सोई पाए, आपे वखसि मिलवाणिआ ॥
मेरा ठाकुरु सचु द्रिढाए । गुर परसादी सचु चिति लाए ।
सचो सचु वरतै सभनी थाई, सचे सचि समावणिआ ॥
वे पर वाहु सचु मेरा पिआरा । किलविख अवगण काटणहारा ॥
प्रेम प्रीति सदा धिआइऐ, भाइ भगति द्रिढावणिआ ॥
तेरी भगति सची जे सचे भावै । आपे देइ न पछोतावै ॥
सभना जीआ का एको दाता, सबदे मारि जीवावणिआ ॥
हरि तुधु बाझहु मैं कोई नाही । हरि तुधै सेवीतै तुधु सालाही ॥
आपे मेलि लैहु प्रभ साचे, पूरै करमि तू पावणिआ ॥
मैं होरु न कोई तुधै जेहा । तेरी नदरी सीझसि देहा ॥
अनदिनु सारि समालि हरि राखहि, गुरमुखि सहज समावणिआ ॥
तुधु जे वडु मैं होरु न कोई, तुधु आपे सिरजी आपे गोई ॥
तू आवेही घड़ि भंनि सवारहि, नानक नाम सुहावणिआ ॥

× × ×

हउमै नावै नालि विरोधु है, दुइ न वसहि इकठाइ ।
हउमै विचि सेवा न होवई, तामनु विरथा जाइ ॥
हरि चेति मन मेरे तू गुर का सबदु कमाइ ।
हुकमि मंनहि ता हरि मिलै, ता विचहु हउमै जाइ ॥
हउमै सभु सरीरु है, हउमै उपति होइ ।
हउमै वड़ा गुबारु है, हउमै विचि बूझि न सकै कोइ ॥
हउमै विचि भगति न होवई, हुकमु न बुझिआ जाइ ।
हउमै विचि जीउ बंधु है, नामु न वसै मनि आइ ॥
नानक सतगुरि मिलिऐ हउमै गई, ता सचु वसिआ मनि आइ ।
सचु कमावै सचि रहै, सचे सेवि समाइ ॥

× × ×

तिही गुणी त्रिभवन विआपिआ, भाई गुर मुखि बूझ बुझाइ ।
राम नामि लगि छूटिऐ, भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥
मनरे त्रैगुण छोड़ि चउथै चितु लाइ ।
हरि जीउ तेरै मनि वसै भाई, सदा हरि केरा गुणगाइ ॥
नामै ते सभि ऊपजै भाई, नाइ विसरिऐ मरि जाइ ।
अगिआनी जगतु अंधु है भाई, सूते गए मुहाइ ॥
गुरमुखि जागे से ऊबरे भाई, भवजलु पारि उतारि ।
जगमहि लाहा हरिनामु है भाई, हिरदै रखिआ उरधारि ॥
गुर सरणाई ऊबरे भाई, राम नाम लिव लाइ ।
नानक नाउ बेड़ा नाउ तुलहड़ा भाई, जितु लगि पारि जन पाइ ॥

× × ×

अतुलु किउ तोलिआ जाइ । दूजा होइ त सोझी पाइ ॥
तिसते दूजा नाही कोइ । तिसदी कीमति किकू होइ ॥
गुर परसादि वसै मनि आइ । ताको जाणै दुविधा जाइ ॥
आपि सराफु कसवटी लाए । आपे परखे आपि चलाए ॥
आपे तोले पूरा होइ । आपे जाणै एको सोइ ॥
माइआ का रूपुसभ तिसते होइ । जिसनो मेले सु नियमलु होइ ॥
जिसनोलाए लगै तिसु आइ । सभु सचु दिखाले ता सचि समाइ ॥
आपे लिव धातु है आपे । आपि बुझाए आपे जापे ॥
आपे सतिगुरु सबदु है आपे । नानक आखि सुणाए आपे ॥

× × ×

पूरे गुरते वड़िआई पाई । अचिंत नामु वसिआ मनि आई ॥
हउमै माइआ सबदि जलाई । दरि साचै गुर ते सोभा पाई ॥
जगदीस सेवउ मै अवरु न काजा ।
अनदिनु अनदु होवै मनि मेरै, गुरमुखि मागउ तेरा नाम निवाजा ॥
मन की परतीति मनते पाइ । पूरे गुर ते सबदि बुझाई ॥
जीवण मरणु को समसरि वेखै । बहुड़ि न मरै नाजमु पेखै ॥
घर ही महि सभि कोट निधान । सतिगुरि दिखाए गइआ अभिमानु ॥
सदही लागा सहजि धिआन । अनदिनु गावै एको नाम ॥
इसु जुग महि वड़िआई पाई । पूरे गुर ते नामु धिआई ॥
जहँ देखा तहँ रहिआ समाई । सदा सुखदाता की मति नहिं पाई ॥
पूरै भागि गुरु पूरा पाइआ । अंतरि नामु निधानु दिखाइआ ॥
गुर का सबदु अति मीठा लाइआ ।
नानक त्रिसन बुझी मनि तनि सुखु पाइआ ॥

× × ×

जाति का गरबु न करिअहु कोई । ब्रह्मु बिंदे सो ब्राह्मणु होई ॥
जाति का गरबु न करि मूरख गंवारा ।
इसु गरवते जलहि बहुत विकारा ॥
चारे वरन आखै सभु कोई । ब्रह्मु विंदु ते सभ उपति होई ॥
माटी एक सगल संसारा । बहु विधि भांडे घड़ै कुम्हारा ॥
पंच ततु मिलि देही का आकारा । घटि वधि को करै वीचारा ॥
कहतु नानक इहु जीउ करम बंधु होई ।
बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥

× × ×

निरंकारु आकारु है आपे, आपे भरमि भुलाए ॥
करि करि करता आपे वेखै, जितु भावै तितु लाए ॥
सेवक कउ एहा वड़िआई, जाकउ हुकमु मनाए ॥
आपणा भाणा आपे जाणै, गुरकिरपा ते लगीऐ ॥
एका सकति सिवै घरि आवै, जीवदिआ मरि रहीऐ ॥
वेद पढ़ै पढ़ि वादु वखाणै, ब्रह्म विसनु महेसा ।
एक त्रिगुण माइआ जिनु जगतु भुलाइआ जनम, मरण का सहसा ॥
गुर परसादी एको जाणै, चूकै मनहु अंदेसा ॥
हम दीन मूरख अवीचारी, तुम चिंता करहु हमारी ॥
होहु दइआल करि दासु दासा का, सेवा करी तुमारी ॥

एकु निधान देहि तू अपणा, अहिनिसि नामु वखाणी ॥
कहत नानकु गुर परसादी बूझहु, कोई ऐसा करे वीचारा ॥
जितु जल जल ऊपरि फेनु बुदबुदा, तैसा इहु संसारा ॥
जिसते होआ तिसहि समाणा, चूकि गइआ पासारा ॥

× × ×

राम राम सभु को कहै, कहिऐ रामु न होइ ॥
गुर परसादी रामु मनि वसै, ता फलु पावै कोइ ॥
अंतरि गोविंद जिसु लागै प्रीति ।
हरि तिसु कदे न वीसरै, हरि हरि करहि सदा मनि चीति ॥
हिरदै जिन्हके कपटु वसै, बाहरहु संत कहाहि ॥
त्रिसना मूलि न चूकई, अंति गए पछुताहि ॥
अनेक तीरथ जे जतन करै ता अंतरकी हउमै कदे न जाइ ॥
जिसु नर की दुविधा न जाइ, धरमराइ तिसु देइ सजाइ ॥
करमु होवै सोई जनु पाए गुरमुखि बूझै कोई ॥
नानक विचरहु हउमै मारे तां हरि भेटै सोई ॥

× × ×

मनमुख मैली कामणी, कुलपणी कुनारि ॥
पिवु छोडिआ घरि आपणा, पर पुरखै नालि पिआरु ॥
त्रिसना कदे न चुकई जलदी करे पुकार ॥
नानक विनु नावै कुरूपि कुसोहणी, परहरि छोडी भतारि ॥
सबदि रती सोहागणी, सतिगुर कै भाइ पिआरि ॥
सदा रावे पिवु आपणा, सचै प्रेमि पिआरि ॥
हंसा वेखि तरंदिआ, बगांभि आया चाउ ॥
डूबि मुए बग बपुड़े, सिरु तलि उपरि पाउ ॥
भै विचि सभु आकारु है, निरभउ हरिजीउ सोइ ॥
सतिगुरि सेविऐ हरि मनि वसै, तिथै भउ कदे न होइ ॥
इसु जगमहि पुरखु एकु है, होर सगली नारि सबाई ॥
सभि घट भोगवै अलिपतु रहै, अलखु न लखणा जाई ॥
हरि गुण तोटि न आवई, कीमति कहणु न जाइ ॥
नानक गुरमुखि हरिगुण रवहि, गुण महि रहै समाई ॥
धन पिवु एहि न आखिअन्हि, बहन्हि इकठे होइ ।
एक जोति दुइ मूरती, धन पिवु कहीऐ सोइ ॥
आसा मनसा जगि मोहणी, जिनि मोहिआ संसारु ॥
सभुको जमके चीरे विचि है, जेता सभु आकारु ॥

सहजि वणसपति फुलु फलु, भवरु वसै भैपंडि ॥
नानक तरवरु एकु है, एको फुलु फिरंगु ॥
मनु माणकु जिनि परखिआ, गुर सबदी बीचारि ॥
से जन विरले जाणीअहि, कलजुग विचि संसारि ॥
आपै नो आपु मिलि रहिआ, हउमै दुविधा मारि ॥
नानक नामि रते दुतरु तरे, भउ जलु विषमु संसारु ॥

सिंगाजी

मैं तो जाणू साईं दूर है, तूझे पाया नेड़ा ।
रहणी रही सामरथ भई, मुझे पलवा तेरा ॥
तुम सोना हम गहणा, मुझे लागा टांका ।
तुम तो बोलो हम देह धरि, बोले कै रंग भाखा ॥
तुम चंदा हम चांदणी, रहणी उजियाला ।
तुमतो सूरज हम घामला, सोई चौजुग पुरिया ॥
तुमतो दरियाव हम मीनहैं, विश्वास का रहणा ।
देह गली मिट्टी भई, तेरा तूही में समाणा ॥
तुम तरुवर हम पंछीड़ा, बैठे एक ही डाला ।
चोंच मार फल भांजिया, फल अमृत सारा ॥
तुम तो वृक्ष हम वेलड़ी, मूल से लपटाना ।
कह सिंगा पहचाण ले, पहचाण ठिकाणा ॥

× × ×

मन निर्भय कैसा सोवे, जग में तेरा को है ॥
काम क्रोध में अतिवल योधा, हरे नर ! विख का बीज क्यों बोवे ॥
पांच रिपु तेरी संग चलत हैं, हरे वो ! जड़ा मूल से खोवे ।
मात पिता ने जनम दिया है, हरे वो ! त्रिया संग न जोवे ॥
भरम भरम नर जनम गमांयो, हरे ! ये आई बाजू खोवे ।
कहे जन सिंगा अगम की वाणी, हरे नर ! अन्त काल को रोवे ॥

× × ×

संगी हमारा चंचला, कैसा हाथ जो आवे ।
काम क्रोध विख भरि रह्या, तासे दुख पावे ॥
मट्टी केरा सीधड़ा, पवन रंग भरिया ।
पाव पलक घड़ी थिर नहीं, बहु फेरा फिरिया ॥

आया था हरि नाम को, सो तो नहीं रे विसाया।
सौदा तो सच्चा नहीं, झूठा सँग कीया॥
घुरत नगारा शून्य में, ताको सुध लीजे।
मोतियन की वर्षा वर्षे, कोइ हरिजन भीजे॥
राह हमारी बारीक है, हाथी नहीं समाय।
सिंगाजी चींटी हुई रह्या, निर्भय आवनो जाय॥

× × ×

पाणी में मीन पियासी, मोहे सुन सुन आवे हांसी॥
जल विच कमल कमल विच कलियां, जॅह वासुदेव अविनाशी।
घट में गंगा घट में जमुना, वहीं द्वारका कासी॥
घर वस्तु बाहर क्यों ढूंढो, वन वन फिरो उदासी।
कहे जन सिंगा सुनो भाइ साधू, अमरापुर के वासी॥

× × ×

निर्गुण ब्रह्म है न्यारा, कोइ समझो समझणहारा॥
खोजत ब्रह्मा जनम सिराणा, मुनिजन पार न पाया।
खोजत खोजत शिवजी थाके, वो ऐसा अपरंपारा॥
शेष सहस मुख रटे निरंतर, रैन दिवस एक सारा।
ऋषि मुनि और सिद्ध चौरासी, वो तैंतीस कोटि पचिहारा॥
त्रिकुटी महल में अनहद बाजे, होत सब्द झनकारा।
सुकमणि सेज शून्य में झूले, वो सोंह पुरुष हमारा॥
वेद कथे अरु कहे निर्वाणी, श्रोता कहो विचारा।
काम क्रोध मद मत्सर त्यागो, ये झूठा सकल पसारा॥
एक बूंद की रचना सारी, जाका सकल पसारा।
सिंगाजी जो भर नजरा देखा, वो वोही गुरू हमारा॥

× × ×

नर नारी में देखिले, सब घट में एकतार।
कहे सिंगा पहचान ले, एक ब्रह्म है सार॥
हम पंथी पारिब्रह्म का, जो अपरंपद दूर।
निराधार जहा मठ किया, जहॅ चंदा नहिं सूर॥
वास श्वास दो बैल हैं, सुर्त रास लगाव।
प्रेम पिराहणो करधरो, ज्ञान आर लगाव॥

भीषनजी

नैनहु नीरु वहै तनु षीना, भए केस दुधावनी।
रूधा कंठु सवदु नहीं उचरै, अव किआ करहि परानी॥
राम राइ होहि वैद वनवारी। अपने संतह लेहु उवारी॥
माथे पीर सरीरि जलनि है, करक करेजे माही।
ऐसी वेदन उपजि षरी भई, वाका औषधु नाही॥
हरिका नामु अंम्रित जलु निरमलु, इहु औषधु जगि सारा।
गुर परसादि कहै जनु भीषनु, पावउ मोष दुआरा॥

× × ×

ऐसा नामु रतनु निरमोलकु, पुंनि पदारथु पाइआ।
अनिक जतन करि हिरदै रापिआ, रतनु न छुपै छुपाइआ॥
हरिगुन कहते कहनु न जाई। जैसे गुंगे की मिठिआई॥
रसना रमत सुनत सुषु स्रवना, चित चेते सुषु होई।
कहु भीषन दुइ नैन संतोषे, जहं देषां तह सोई॥

रामदास

कबको भालै घुंघरू ताला, कबको वजावै रवाबु।
आवत जात वार खिनु लागै, हउ तब लगु समारउ नामु॥
मेरे मन ऐसी भगति वनि आई।
हउ हरि विनु खिनु पलु रहिन समउ, जैसे जल विनु मीनु मरिजाई॥
कब कोउ मेलै पंचसत गाइआ, कबको रागु धुनि उठावै।
मेलत चुनत खिनु पलु चसा लागै, तव लगु मेरा मनु राम गुन गावै॥
कबको नाचै पाव पसारै कबको हाथ पसारे।
हाथ पाव पसारत विलमु तिलु लागै, तव लगु मेरा मनु राम समारे॥
कब कोऊ लोगन कउ पतिआवै, लोकि पतीणै ना पति होइ।
जन नानक हरि हिरदै स धिआवहु, ता जै जै करै सभु कोइ॥

× × ×

माई मेरो प्रीतमु रामु वतावहु री माई॥
हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ, जैसे करहलु वेलि रिझाई॥
हमरा मनु वैराग विरकतु भइउ, हरि दरसन मीत कै माई॥
जैसे अलि कमला विनु रहि न सकै, तैसे मोहि हरि बिनु रहन न जाई॥

राषु सरणि जगदीसुर पिआरे, मोहि सरधा पूरि हरि गुसाई ॥
जन नानक कै मनु अँनदु होत है, हरि दरसनु निमष दिषाई ॥

× × ×

मेरे सुंदरु कहहु मिलै कितु गली ।
हरि के संत बतावहु मारगु, हम पीछै लागि चली ॥
प्रिअके वचन सुषाने हीअरे, इह चाल बनी है भली ।
लटुरी मधुरी ठाकुर भाई उह, सुंदरि हरि ढुलि मिली ॥
एको प्रिउ सषीआ सभु प्रिअकी, जो भावै पिव सा भली ॥
नानकु गरीबु किआ करै विचारा, हरि भावै तितु राह चली ॥

× × ×

अब हम चली ठाकुर पहि हारि ।
जब हम सरणि प्रभू की आई । राषु प्रभू भावै मारि ॥
लोकन की चतुराई उपमाते, बैसंतरि जारि ॥
कोई भला कहउ भावै बुरा कहउ, हम तनु दी उहै ढारि ॥
जो आवत सरणि प्रभु तुमरी, तिसु राषहु किरपा धारि ॥
जन नानक सरणि तुमारी हरिजीउ, राषहु लाज मुरारि ॥

× × ×

हरि दरसन कउ मेरा मनु बहुतपतै, जिहु त्रिषावंतु बिनु नीर ॥
मेरे मनि प्रेमु लगो हरि तीर ।
हमरी वेदन हरि प्रभु जानै, मेरे मन अंतर की पीर ॥
मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै, सोभाई सो मेरा बीर ॥
मिलु मिलु सषी गुण कहु मेरे प्रभु के, सतिगुर मति की धीर ॥
जन नानक की हरि आस पुजावहु, हरि दरसनि सांति सरीर ॥

× × ×

जिउ पसरी सूरज किरणि जोति । तिउ घटि-घटि रमईआ उति पोति ॥
एको हरि रविआसबु थाइ ।
गुर सबदी मिलीऔ मेरी माइ ॥
घटि घटि अंतरि एको हरि सोइ । गुरि मिलिऔ इकु प्रगटु होइ ॥
एको एकु रहिआ भरपूरि । साकत नर लोभी जाणहि दूरि ॥
एको इकु वरतै हरि लोइ । नानक हरि एको करे सु होइ ॥

× × ×

काइआ नगरि एकु बालकु बसिआ, षिनु पलु थिरु न रहाई ॥
अनिक उपाव जतन करि थाके, बारंबार भरमाई ॥

मेरे ठाकुर वालकु इकतु घरि आणु ।
सतिगुरु मिलै त पूरा पाइऐ, भजु राम नामु नीसाणु ॥
इहु मिरतकु मड़ा सरीरु है सभु जगु, जितु राम नाम नहि वसिआ ॥
राम नामु गुरि उदकु चुआइआ, फिरि हरिआ होआ वसिआ ॥
मै निरषत निरषत सरीरु प्रभु षोजिआ, इकु गुर मुषि चलतु दिषाइआ ॥
वाहरु षोजि मुए सभि साकत, हरि गुरमती घरि पाइआ ॥
दीना दीन दइआल भए है, जिउ क्रिसनु विदुर घरि आइआ ॥
मिलिउ सुदामा भावनी धारि सभु किछु आगे, दालदु भंजि समाइआ ॥
राम नाम की पैज वड़ेरी, मेरे ठाकुरि आपि रषाई ॥
जे सभि साकत करहि बषोली, इकरती तिलु न घटाई ॥
जन की उसतति है रामनामा, दह दिसि सोभा पाई ॥
निंदकु साकतु बनि न सकै तिलु, अगै घरि लूकी लाई ॥
जनकउ जनु मिलि सोभा पावै, गुण महि गुण परगासा ॥
मेरे ठाकुर के जन प्रीतम पिआरे, जो होवहि दासनि दासा ॥
आपे जलु अपरंपरु करता, आपे मेलि मिलावै ।
नानक गुरमुखि सहजि मिलाए, जिउ जलु जलहि समावै ॥

× × ×

पंडितु सासत सिम्रित पडिआ । जोगी गोरषु गोरषु करिआ ।
मै मूरष हरि हरि जपु पड़िआ ॥
ना जाना किआ गति राम हमारी ।
हरि भजु मन मेरे तरु भउ जलु तू तारी ॥
संनिआसी विभूति लाइ देह सवारी । परत्रिअ तिआगु करी ब्रहमचारी ।
मै मूरष हरि आस तुमारी ॥
षत्री करक करे सूर तणु पावै । सूदु वैसु परकिरति कमावै ।
मै मूरष हरि नाम छड़ावै ॥
सभ तेरी स्रिसटि तू आपि रहिआ समाई । गुरमुषि नानक दे वड़िआई ।
मै अंधुले हरि टेक टिकाई ।

× × ×

हउ अनदिनु हरि नामु कीरतनु करउ ।
सतिगुर मोकउ हरिनामु वताइआ, हउ हरि विनु पिनु पलु रहिन सकउ ॥
हमरै स्रवणु सिमरनु हरि कीरतनु, हउ हरि विनु रहि न सकउ हउ इकुपिनु ॥
जैसे हंसु सरवर विनु रहि न सके, तैसे हरि जनु कि उर है हरि सेवा विनु ॥

किनहूँ प्रीति लाई दूजा भाउ रिद धारि, किनहूँ प्रीति लाई मोह अपमान ॥
हरिजन प्रीति लाई हरि निरवाणपद, नानक सिमरत हरि हरि भगवान ॥

× × ×

आपे धरती साजीअनु, आपे आकासु ॥
विचि आपे जंत उपाइअनु, मुषि आपे देइ गिरासु ॥
हरि प्रभका सभु पेतु है, हरि आपि किरसाणी लाइआ ॥
गुर मुषि वषसि जमाईअनु, मनमुषी मूलु गवाइआ ॥
वड़ भागीआ सोहागणी, जिना गुर मुषि मिलिआ हरिराइ ॥
अंतर जोति प्रगासीआ, नानक नाम समाइ ॥
सा धरती भई हरिआवली, जिथै मेरा सतिगुरु वैठा जाइ ॥
से जंत भए हरिआवले, जिनी मेरा सतिगुरु देषिआ जाइ ॥
किआ सवणा किआ जागणा, गुर मुषि ते परवाणु ॥
जिना सासि गिरासि न विसरै, से पूरे पुरव परधान ॥
करमी सतिगुरु पाईए, अनुदिन लगै धिआनु ॥
तिनकी संगति मिलि रहा, दरगह पाई मानु ॥
मनमुषु प्राणी मुगधु है, नामहीण भरमाइ ॥
बिनु गुर मनूआ ना टिकै, फिरि फिरि जूनी पाइ ॥
अंधे चानणु ताथीऐ, जा सतिगुरु मिलै रजाइ ॥
बंधन तोड़ै सचि वसै अगिआनु अंधेरा जाइ ॥
हरिदासन सिउ प्रीति है, हरिदासन को मितु ॥
हरिदासन कै वसि है, जिउ जंती के वसि जंतु ॥
सो हरिजनु नाम धिआइदा, हरि हरिजनु इक समानि ॥
जन नानकु हरि का दासु है, हरि पैज रषहु भगवान ॥
गुरमुषि अंतरि सांति है, मनि तनि नामि समाइ ॥
नामो चितवे नामु पड़ै, नामि रहै लिव लाइ ॥
नामु पदारथु पाइआ, चिंतागई बिलाइ ॥
सतिगुर मिलिऐ नामु ऊपजै, तिसना भूष सभ जाइ ॥

धर्मदास

मोरे पिया मिले सत ज्ञानी ।
ऐसन पिय हम कबहूँ न देखा देखत सुरत लुभानी ॥
आपन रूप जब चीन्हा बिरहिन तब पिय के मन मानी ॥
जब हंसा चले मानसरोवर मुक्ति भरे जहँ पानी ॥

कर्म जलाय के काजल कीन्हा, पढ़े प्रेम की बानी ॥
धर्मदास कबीर पिय, पाये मिट गई आवाजानी ॥

× × ×

गुरु पैयाँ लागों नाम लखा दीजो रे।
जनम जनम का सोया मनुआँ शब्दन मारि जगा दीजो रे ॥
घट अँधियार नैन नहिं सूझै ज्ञान का दीपक जगा दीजो रे ॥
विष की लहर उठत घट अन्तर अमृत बूँद चुवा दीजो रे ॥
गहिरी नदिया अगम बहै धरवा खेय के पार लगा दीजो रे ॥
धरमदास की अरज गुसाईं अब के खेप निभा दीजो रे ॥

× × ×

हम सत्त नाम के बैपारी।
कोई कोई लादे काँसा पीतल कोई कोई लौंग सुपारी ॥
हम तो लाद्यो नाम धनी को पूरन खेप हमारी ॥
पूँजी न टूटै नफ़ा चौगुना बनिज किया हम भारी ॥
हाट जगाती रोक न सकिहैं, निर्भय गैल हमारी ॥
मोति बुंद घटही में उपजै सुकिरत भरत कोठारी ॥
नाम पदारथ लाद चला है धरमदास बैपारी ॥

× × ×

झरि लागै महलिया, गगन घहराय।
खन गरजै खन बिजुरी चमकै, लहर उठै शोभा बरनि न जाय ॥
सुन्न महल से अमृत बरसै, प्रेम अनन्द ह्वै साधु नहाय ॥
खुली किवरिया मिटी अँधियरिया, धन सतगुरु जिन दिया लखाय ॥
धरमदास बिनवै कर जोरी, सतगुरु चरन में रहत समाय ॥

× × ×

मितऊ मड़ैया सूनी कर गैलो।
अपन बलम परदेस निकरि गैलो,
हमरा के अछुवो न गुन दै गैलो ॥
जोगिन ह्वै के मैं बन ढूँढ़ों,
हमरा के बिरह बैराग दै गैलो ॥
सँग की सखी सब पार उतरि गैलीं,
हम धन ठाढ़ी अकेली रहि गैलो ॥
धरमदास यह अरज करतु हैं,
सार सबद सुमिरन दै गैलो ॥

दादू दयाल

हुसियार रहो मन मारेगा।
साईं सतगुरु तारैगा।।
माया का सुख भावै मूरिख मन बौरावे रे।।
झूठ साच करि जाना इन्द्री स्वाद भुलाना रे।।
दुख कौं सुख करि मानै काल झाल नहि जानै रे।।
दादू कहि समझावै यह अवसर बहुरि न पावै रे।।

× × ×

भाई रे ऐसा पंथ हमारा।
द्वै पख रहित पंथ गहि पूरा अवरण एक अधारा।।
वाद विवाद काहू सौं नाहीं माहिं जगत थैं न्यारा।
सम दृष्टी सूँ भाई सहज में आपहि आप विचारा।।
मैं, तैं, मेरी, यहु मत नाहीं निरबैरी निरविकारा।
पूरण सबै देखि आपा पर निरालंभ निरधारा।।
काहू के संगी मोह न ममिता सङ्गी सिरजनहारा।
मन ही मनसूँ समझि सयाना आनँद एक अपारा।।
काम कलपना कदे न कीजे पूरण ब्रह्म पियारा।
इहि पँथ पहुँचि पार गहि दादू सो तत सहजि सँभारा।।

× × ×

आव रे सजणाँ आव, सिर पर धरि पाँव।
जानी मैंडा जिंद असाड़े।
तू रावैं दा राव वे सजणाँ आव।
इत्थाँ उत्थाँ जित्थाँ कित्थाँ, हौं जीवाँ तो नाल वे।
मीयाँ मैंडा आव असाड़े।
तू लालों सिर लाल वे सजणाँ आव।।
तन भी डेवाँ मन भी डेवाँ, डेवाँ प्यंड पराण वे।
सच्चा साईं मिलि इत्थाईं।
जिन्दा करौं कुरवाण वे सजणाँ आव।
तूँ पाकौं सिर पाक वे सजणाँ तू खूबौ सिर खूब।
दादू भावै सजणाँ आवै।
तू मीठा महबूब वे सजणाँ आव।।

× × ×

म्हारा रे व्हाला ने काजे रिदै जोवा ने हूँ ध्यान धरूँ ।
आकुल थाये प्राण म्हारा कोने कही पर करूँ ॥
सँभार्‌यो आवे रे व्हाला व्हेला एहों जोइ ठरूँ ।
साथी जी साथै थइनि पेली तीरे पार तरूँ ॥
पीव पाखे दिन दुहेला जाये घड़ी वरसाँ सौ केम भरूँ ।
दादू रे जन हरि गुण गाताँ पूरण स्वामी ते वरूँ ॥

× × ×

बटाऊ रे चलना आजि कि कालि ।
समझि न देखै कहा सुख सोवै रे मन राम सँभालि ॥
जैसे तरवर विरख बसेरा पंखी बैठे आइ ।
ऐसे यहु सब हाट पसारा आप आप कौं जाइ ॥
कोइ नहिं तेरा सजन सँगाती जिनि खोवे मन भूल ।
यहु संसार देखि जिनि भूलै सब ही सेंवल फूल ॥
तन नहिं तेरा धन नहिं तेरा कहा रह्यो इहिं लागि ।
दादू हरि विन क्यों सुख सोवै काहे न देखै जागि ॥
जागि रे सब रैणि विहाणी जाइ जनम अँजुली कौ पाणी ॥
घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावै जे दिन जाइ से बहुरि न आवै ॥
सूरज चंद कहैं समझाइ दिन दिन आयू घटती जाइ ॥
सरवर पाणी तरवर छाया निसदिन काल गरासै काया ॥
हंस बटाऊ प्राण पयाना दादू आतमराम न जाना ॥

× × ×

बातैं बादि जाहिंगी भइये ।
तुम जिनि जानौ बातनि पइये ॥
जब लग अपना आप न जाणै तब लग कथनी काची ।
आपा जाणि साईं कूँ जाणै तब कथनी सब साची ॥
करणी बिना कंत नहिं पावै कहे सुने का होई ।
जैसी कहै करै जे तैसी पावेगा जन सोई ॥
बातनिहीं जे निरमल होवै तौ काहे कूँ कसि लीजै ।
सोना अगिनि दहै दस बारा तब यहु प्राण पतीजै ॥
यौं हम जाणा मन पतियाना करनी कठिन अपारा ।
दादू तन का आपा जारै तौ तिरत न लागै बारा ॥

× × ×

राम नाम नहिं छांड़ौं भाई, प्राण तजौं निकटि जिव जाई ॥
रती रती करि डारै मोहि, सांई संग न छांड़ौं तोहि ॥

भावे लै सिर करवत दे, जीवन-मूरी न छांड़ौं ते ॥
पावक में ले डारे मोहि, जरै सरीर न छांड़ौ तोहि ॥
इव दादू ऐसी वनि आई, मिलौ गोपाल निसान वजाई ॥

× × ×

क्यौं विसरै मेरा पीव पियारा, जीव की जीवनि प्राण हमारा ॥
क्यौं करि जीवै मीन जल विछुरै, तुम्ह विन प्राण सनेही ।
चिंतामणि जब कर, तैं छूटै, तव दुप पावै देही ॥
माता वालक दूध न देवै, सो कैसैं करि पीवै ।
निर्धन का धन अनत भुलाना, सो कैसैं करि जीवै ॥
वरसहु राम सदा सुष अमृत, नीझर निर्मल धारा ।
प्रेम पियाला भरि भरि दीजै, दादू दास तुम्हारा ॥

× × ×

अवधू कामधेन गहि राषी ।
वसि कीन्ही तव अमृत सरवै, आगै चारि न नांषी ॥
पोषंता पहली उठि गरजै, पीछै हाथि न आवै ।
भूषी भलैं दूध नित दूणां, यूं या धेन दुहावै ॥
ज्यूं ज्यूं षींण पड़ै त्यूं दूझै, मुकता मेल्यां मारै ।
घाटा रोकि घेरि घरि आंणै, बांधी कारज सारै ॥
सहजैं बांधी कदै न छूटै, कर्म बंधन छुटि जाई ।
काटै कर्म सहज सौं बांधै, सहजैं रहै समाई ॥
छिन छिन माहि मनोरथ पूरै, दिन दिन होइ अनंदा ।
दादू सोई देषता पावै, कलि अजरावर कंदा ॥

× × ×

निकटि निरंजन देषिहौ, छिन दूर न जाई ।
वाहरि भीतरि येकसा, सव रह्या समाई ॥
सतगुर भेद लषाइया, तव पूरा पाया ।
नैन नहीं निरषूं सदा, घरि सहजैं आया ॥
पूरसौं परचा भया, पूरी मति जागी ।
जीव जांनि जीवनि मिल्या, ऐसैं वड़भागी ॥
रोंम रोंम मैं रमि रह्या, सो जीवनि मेरा ।
जीव पीव न्यारा नहीं, सब संगि बसेरा ॥
सुंदर सो सहजैं रहै, घंटि अन्तरजामी ।
दादू सोई देषिहौ, सारौं संगि स्वामी ॥

× × ×

निकटि निरंजन लागि रहे, तब हम जीवत मुकत भये ॥
मरिकरि मुकति जहां लगि जाइ, तहां न मेरा मन पतिआइ ॥
आगैं जन्म लहैं औतारा, तहां न मानैं मना हमारा ॥
तन छूटे गति जो पद होइ, मृतक जीव मिलै सब कोइ ॥
जीवत जन्म सुफल करि जाना, दादू राम मिलै मन माना ॥

× × ×

ऐसैं गृह मैं क्यूं न रहै, मनसा वाचा रांम कहै ॥
संपति बिपति नहीं मैं मेरा, हरिष सोक दोउ नाहीं ।
राग दोष रहित सुष दुष थैं, बैठा हरिपद मांही ॥
तनधन माया मोह न बांधै, बैरी मीत न कोई ।
आपा पर समि रहै निरंतर, निजजन सेवग सोई ॥
सरवर कवल रहै जल जैसैं, दधि मथि घृत करि लीन्हां ।
जैसे वनमैं रहै बटाऊ, काहूॅ हेत न कीन्हां ॥
भाव भगति रहै रसिमाता, प्रेम मगन गुन गावै ।
जीवत मुकत होइ जन दादू, अमर अभैपद पावै ॥

× × ×

अलह राम छूटा भ्रम मोरा ।
हिंदू तुरक भेद कछु नाही, देषौं दरसन तोरा ॥
सोई प्राण पिंड पुनि सोई, सोई लोही मासा ।
सोई नैन नासिका सोई, सहजैं कीन्ह तमासा ॥
श्रवणौं सबद बोलता सुणियें, जिभ्या मीठा लागै ।
सोई भूष सबन कौं व्यापै, एक जुगति सोइ जागै ॥
सोई संधि बंध पुनि सोई, सोई सुष सोई पीरा ।
सोई हस्त पाव पुनि सोई, सोई एक सरीरा ॥
यहु सब षेल षालिक हरि तेरा, तैंहिं एक कर लीनां ।
दादू जुगति जानि करि ऐसी, तब यहु प्रान पतीना ॥

× × ×

क्यों करि यहु जग रच्यौ गुसाईं,
तेरे कौंन विनोद बन्यौ मन माहीं ॥
कै तुम्ह आपा परगट करणां, कै यहु रचिले जीव उधरनां ॥
कै यहु तुमको सेवग जानैं, कै यहु रचिले मंनके मानैं ॥
कै यहु तुमकौ सेवग भावै, कै यहु रजिले षेल दिषावै ॥

कै यहु तुमकौं षेल पियारा, कै यहु भावै कीन्ह पसारा ॥
यहु सब दादू अकथ कहानी, कहि समझावौ सारंग पानी ॥

× × ×

थकित भयौ मन कह्यो न जाई, सहजि समाधि रह्यौ ल्यौ लाई ॥
जे कुछ कहिये सोचि विचारा, ग्यान अगोचर अगम अपारा ॥
साइर बूंद कैसैं करि तोलै, आप अबोल कहा कहि बोलै ॥
अनल पंष परे परि दूरि, ऐसैं राम रह्या भरपूरि ॥
इन मन मेरा ऐसैं रे भाई, दादू कहिवा कहण न जाई ॥

× × ×

तू राषै त्यूंहीं रहै, तेई जन तेरा ।
तुम्ह बिन और न जानही, सो सेवग नेरा ॥
अंबर आपैही धरया, अजहूँ उपगारी ।
धरती धारी आपथैं, सबहीं सुषकारी ॥
बचन पासि सबके चलै, जैसैं तुम कीन्हा ।
पानी परगट देषिहूँ, सब सौं रहैं भीना ॥
चंद चिराकी चहु दिसा सब सीतल जानैं ।
सूरज भी सेवा करैं, जैसैं भल मानैं ॥
ये निज सेवग तेरड़े, सब आग्या कारी ।
मोकौं ऐसैं कीजिये, दादू बलिहारी ॥

× × ×

घीव दूध में रमि रह्या ब्यापक सब ही ठौर ।
दादू बकता [illegible] हैं मथि काढ़ैं ते और ॥
दादू दीया है [illegible] दिया करो सब कोय ।
घर में धरा न [illegible] ॥६४ जो कर दिया न होय ॥
यह मसीत यह दे[illegible]रा सतगुरु दिया दिखाइ ।
भीतरि सेवा बं[illegible] बाहिर काहे जाइ ॥
कहि कहि मेरी [illegible] रहि सुणि सुणि तेरे कान ।
सतगुरु बपुरा क्या [illegible] जो चेला मूढ़ अजान ॥
सुख का साथी जगत [illegible] सब दुख का नाहीं कोइ ।
दुख का साथी सा[illegible]॥६५ दादू सतगुरु होइ ॥
दादू देख दयाल कौ [illegible] सकल रहा भरपूर ।
रोम रोम में रमि रह्यो [illegible] तू जिनि जानै दूर ॥

मिसरी माँहिं मेल करि माल विकाना वंस ।
यों दादू महिंगा भया पारब्रह्म मिलि हंस ॥
केते पारिख पचि मुये कीमति कही न जाइ ।
दादू सब हैरान हैं गूँगे का गुड़ खाइ ॥
जब मन लागै राम सौं तब अनत काहे को जाइ ।
दादू पाणी लूण ज्यों ऐसे रहै समाइ ॥
क्या मुँह ले हंसि बोलिये दादू दीजै रोइ ।
जनम अमोलक आपणा चले अकारथ खोइ ॥
एक देस हम देखिया जहँ सत नहि पलटै कोइ ।
हम दादू उस देस के जहँ सदा एक रस होइ ॥
सुरग नरक संसय नहीं जिवण मरण भय नाहिं ।
राम विमुख जे दिन गये सो सालैं मन मांहिं ॥
मैं ही मेरे पोट सर मरिये ताके भार ।
दादू गुरु परसाद सौं सिर थैं धरी उतार ॥
दादू मारग कठिन है जीवत चलै न कोइ ।
सोई चलि है बापुरा जे जीवत मिरतक होइ ॥
काया कठिन कमान है खींचै विरला कोइ ।
मारे पाँचौ मिरगला दादू सूरा सोइ ॥
जे सिर सौंप्या राम कौं सो सिर भया सनाथ ।
दादू दे ऊरण भया जिसका तिसके हाथ ॥
कहतौं सुनतौं देखतौं लेतौं देतौं प्राण ।
दादू सो कतहूँ गया माटी धरी मसाण ॥
जिहिं घर निंदा साधु की सो घर गये समूल ।
तिन की नीव न पाइये नाँव न ठाँव न धूल ॥
दादू सतगुर अंजन वाहि करि, नैन पटल सब षोले ।
बहरे कानौ सुणने लागे, गूंगे मुख सौ बोले ॥
सतगुर कीया फेरि करि, मन का औरै रूप ।
दादू पंचौ पलटि करि, कैसे भये अनूप ॥
आतमबोध बंझ कर बेटा, गुर मुषि उपजै आइ ।
दादू पंगुल पंच विन, जहां राम तहां जाइ ॥
साचा समरथ गुर मिल्या, तिन तत दिया बताइ ।
दादू मोट महाबली, घटि घृत मथि करि षाइ ॥

दादू जिहि मत साधू धरै, सो मत लीया सोध।
मन लै मारग मूल गहि, यहु सतगुर का परमोध॥

दादू नैन न देषै नैनकूं, अंतर भी कुछ नांहि।
सतगुर दर्पन करि दिया, अरस परस मिलि मांहि॥

दादू पंचौं ये परमोधिले, इन हीकौं उपदेस।
यहु मन अपणा हाथि कर, तौ चेला सब देस॥

दादू चम्बक देषि करि, लोहा लागै आइ।
यौं मन गुण इंद्री एक सौं, दादू लीजै लाइ॥

मनका आसण जे जिव जाणै, तौ ठौर ठौर सब सूझै।
पंचौ आणि एक घरि राषै, तब अगम निगम सब बूझै॥

कहै लषै सो मानवी, सैंन लषै सो साध।
मनकी लषै सु देवता, दादू अगम अगाध॥

दादू नीका नांव है, हरि हिरदै न विसतारि।
मूरति मन मांहि बसै, सांसैं सांस संभारि॥

दादू राम अगाध है, परिमित नांहीं पार।
अवरण वरण न जांणिये, दादू नांइ अधार॥

सर्गुण निर्गुण ह्वै रहे, जैसा है तैसा लीन।
हरि सुमिरण ल्यौ लाइये, का जाणौं का कीन॥

नांव सपीड़ा लीजिये, प्रेम भगति गुण गाइ।
दादू सुमिरण प्रीतसौं, हेत सहित ल्यौ लाइ॥

दादू रामनाम सबको कहै, कहिबै बहुत बमेक।
एक अनेकौं फिरि मिले, एक समाना एक॥

सुमिरण का संसा रह्या, पछितावा मन मांहि।
दादू मीठा राम रस, सगला पाया नांहि॥

अगनि धोम ज्यौं नीकलै, देषत सबै बिलाइ।
त्यौं मन बिछुड़्या रामसौं, दहदिसि चौपरि जाइ॥

जहां सुरति तहं जीव है, जहं नाहीं तह नाहिं।
गुण निर्गुण जहं राषिये, दादू घर बन मांहिं॥

दादु आपा उरझै उरझिया, दीसै सब संसार।
आपा सुरझै सुरझिया, यहु गुरज्ञान विचार॥

जब समझया तब सुरझिया, उलटि समाना सोइ।
कछू कहावै जब लगै, तब लग समझि न होइ॥

जे मति पीछै ऊपजै, सो मति पहिली होइ।
कबहुँ न होवै जी दुषी, दादू सुषिया सोइ॥

दादू गऊ बच्छ का ग्यान गहि, दूध रहै ल्यौ लाइ।
सींग पूँछ पग परहरै, अस्थन लागा धाइ॥

दादू एक घोड़ै चढ़ि चलै, दूजा कोतिल होइ।
दुहु घोड़ौं चढ़ि बैसना, पारि न पहुँचा कोइ॥

श्रवना राते नाद सौं, नैना राते रूप।
जिभ्या राती स्वाद सौं, त्यौं दादू एक अनूप॥

दादू इसक अल्लाह का, जे कबहूँ प्रगटै आइ।
तौ तन मन दिल अरवाह का, सब पड़दा जलि जाइ॥

साहिब सौं कुछ बल नहीं, जिनि हठ साधै कोइ।
दादू पीड़ पुकारिये, रोता होइ सो होइ॥

पहिली आगम बिरह का, पीछैं प्रीति प्रकास।
प्रेम मगन लैलीन मन, तहां मिलन की आस॥

मनही मांहै झूरणां, रोवै मन ही माहि।
मन ही मांहै धाह दे, दादू बाहरि नाहि॥

दादू बिरह जगावै दरद कौं, दरद जगावै जीव।
जीव जगावै सुरति कौं, पंच पुकारै पीव॥

प्रीति जु मेरे पीव की, पैठी पिंजर माहिं।
रोम रोम पिव पिव करै, दादू दूसर नाहिं॥

बिरह अगनि मैं जलि गये, मन के बिषै बिकार।
तार्थैं पंगुल ह्वै रह्या, दादू दरि दीवार॥

जे हम छांड़ै राम कौं, तौ राम न छाड़ै।
दादू अमली अमल थैं, मन क्यूं करि काढ़ै॥

राम बिरहनी ह्वै रह्या, बिरहिन ह्वै गई राम।
दादू बिरहा बापुरा, ऐसै करि गया काम॥

दादू इसक अलह की जाति है, इसक अलह का अंग।
इसक अलह औजूद है, इसक अलह का रंग॥

ग्यान लहर जहां थैं उठै, बाणी का पाकास।
अनभै जहां थैं ऊपजै, सबदैं किया निवास॥

दादू आपा जब लगै, तब लग दूजा होइ।
जब यहु आपा मिटि गया, तब दूजा नाहीं कोइ॥

दादू है कौं भै घणां, नाहीं कौं कुछ नाहिं।
दादू नाही होइ रहु, अपणे साहिब माहिं॥
सुन्य सरोवर मीन मन, नीर निरंजन देव।
दादू यहु रस विलसिये, ऐसा अलप अभेव॥
चर्म दृष्टि देषै बहुत, आतम दृष्टी एक।
ब्रह्म दृष्टि परचै भया, तब दादू बैठा देष॥
येई नैना देह के, येई आतम होइ।
येई नैना ब्रह्म के, दादू पलटे दोइ॥
दादू सबद अनाहद हम सुन्या, नषसिष सकल सरीर।
सब घटि हरि हरि होत है, सहजैं ही मन थीर॥
जे कुछ वेद कुरान थैं, अगम अगोचर बात।
सो अनभै साचा कहै, यहु दादू अकह कहात॥
प्राण हमारा पीव सौं, यौं लागा सहिये।
पुहप वास, घृत दूध मैं, अब कासौं कहिये॥
दादू हरि रस पीवतां, कबहूँ अरुचि न होइ।
पीवत प्यासा नित नवा, पीवणहारा सोइ॥
दादू लै लागी तब जाणिये, जे कबहूँ छूटि न जाइ।
जीवत यौं लागी रहै, मूवां मंझि समाइ॥
सब तजि गुण आकार के, निहचल मन ल्यौ लाइ।
आतम चेतन प्रेम रस, दादू रहै समाइ॥
यौं मन तजै सरीर कौं, ज्यौं जागत सो जाइ।
दादू बिसरै देषतां, सहजि सदा ल्यौ लाइ॥
आदि अन्ति मधि एक रस, टूटै नहिं धागा।
दादू एकै रहि गया, तब जाणी जागा॥
भगति भगति सब को कहै, भगति न जाणै कोइ।
दादू भक्ति भगवंत की, देह निरंतर होइ॥
लै विचार लागा रहै, दादू जरता जाइ।
कबहूँ पेट न आफरै भावै तेता षाइ॥
सोई सेवग सब जरै, जेता रस पीया।
दादू गूझ गंभीर का, परकास न कीया॥
प्रेम पियाला राम रस, हमकौं भावै येह।
रिधि सिधि मांगै मुकति फल, चाहैं तिनकौं देह॥

तन भी तेरा मन भी तेरा, तेरा पिंड परान।
सब कुछ तेरा तूं है मेरा, यहु दादू का ग्यान॥

दादू निराकार मन सुरति सौं, प्रेम प्रीति सौं सेव।
जे पूजै आकार कौं, तौ साधू प्रतषि देव॥

दादू फिरता चाक कुम्भार का, यूं दीसै संसार।
साधू जन निहचल भये, जिनके राम अधार॥

विष का अमृत करि लिया, पावक का पाणी।
बांका सूधा करि लिया, सो साध विनाणी॥

दादू करणी हिंदू तुरक की, अपणी अपणी ठौर।
दुहुँ बिच मारग साध का, यहु संतौं की रह और॥

काचा उछलै ऊफणै, काया हांडी माहिं।
दादू पाका मिलि रहै, जीव ब्रह्म द्वै नाहिं॥

मनसा के पकवान सौं, क्यौ पेट भरावै।
ज्यौं कहिये त्यौं कीजिये, तबही बनि आवै॥

दादू तौ तूं पावै पीव कौं, आपा कछू न जान।
आपा जिसथैं ऊपजै, सोई सहज पिछान॥

दादू सीष्यूं प्रेम न पाइये, सीष्यूं प्रीति न होइ।
सीष्यूं दर्द न ऊपजै, जब लग आप न षोइ॥

जहां राम तहं मैं नहीं, मैं तहं नाहीं राम।
दादू महल बारीक है, द्वै कूं नाहीं ठाम॥

दादू सबहीं गुर किये, पसु पंषी बनराइ।
तीनि लोक गुण पंचसौं, सब हीं माहिं षुदाइ॥

दादू देषौं जिन पीवकौं, और न देषौं कोइ।
पूरा देषौं पीव कौं, बाहरि भीतरि सोइ॥

तन मन नाहीं मैं नहीं, नहिं माया नहिं जीव।
दादू एकै देषिये, दहदिसि मेरा पीव॥

दह दिसि दीपक तेज के, बिन बाती बिन तेल।
चहुँ दिसि सूरज देषिये, दादू अदभुत षेल॥

बाजी चिहर रचाइ करि, रह्या अपरछन होइ।
माया पट पड़दा दिया, तायै लषै न कोइ॥

जब पूरण ब्रह्म विचारिये, तब सकल आतमा एक।
काया के गुण देखिये, तौ नाना बरण अनेक॥

अन्धे कौ दीपक दिया, तौ भी तिमर न जाइ।
सोधो नहीं सरीर की, तासनि का समझाइ॥

दादू चौरासी लप जीवकी, परकीरति घट माहिं।
अनेक जन्म दिन के करै, कोई जाणै नाहिं॥

जीव जन्म जाणैं नहीं, पलक पलक मैं होइ।
चौरासी लप भोगवै, दादू लपै न कोइ॥

आपा मेटै हरि भजे, तन मन तजै विकार।
निर्बैरी सब जीव सौं, दादू यहु मत सार॥

माया विषै विकार थैं, मेरा मन भागै।
सोई कीजे सांइयां, तूं मीठा लागै॥

जे साहिबा कूं भावै नहीं, सो हमथैं जिनि होइ।
सतगुर लाजै आपणा, साध बन मानै कोइ॥

नन्ददास

बन्दन करौं कृपानिधान श्रीसुक सुभकारी।
सुद्ध ज्योतिमय रूप सदा सुन्दर अविकारी॥

हरि लीला रस मत्त मुदित नित विचरत जगमें।
अद्भुत गति कतहूँ न अटक ह्वै निकसत मगमें॥

नीलोत्पलदल श्याम अंग नव जोवन भ्राजै।
कुटिल अलक मुखकमल मनो अलि अवलि विराजै॥

ललित विसाल सुभाल दिपति जनु निकर निसाचर।
कृष्ण भगति प्रतिवन्ध तिमिर कहँ कोटि दिवाकर॥

कृपा रङ्ग रस ऐन नैन राजत रतनारे।
कृष्ण रसासव पान अलस कछु घूम घुमारे॥

श्रवन कृष्ण रसभवन गण्ड मण्डल भल दरसै।
प्रेमानन्द मिलिन्द मन्द मुसुकनि मधु बरसै॥

उन्नत नासा अधर विम्ब शुक की छबि छीनी।
तिन मह अद्भुत भांति जु कछुक लसित मसि भीनी॥

कम्बुकण्ठ की रेख देखि हरि धरमु प्रकासै।
काम क्रोध मद लोभ मोह जिहि निरखत नासै॥

उरवर पर अति छबि की भीर कछु बरनि न जाई ।
जिहि भीतर जगमगत निरन्तर कुँअर कन्हाई ॥
सुन्दर उदर उदार रोमावलि राजति भारी ।
हियो सरोवर रस भरि चली मनो उमगि पनारी ॥
जिहि रस की कुण्डिका नाभि अस शोभित गहरी ।
त्रिवली तामहँ ललित भांति मनु उपजत लहरी ॥
अति सुदेस कटि देस सिंह सोभित सघनन अस ।
जोवन मद आकरसत बरसत प्रेम सुधारस ॥
गूढ़ जानु अजानु-बाहु मद-गज-गति-लोलैं ।
गङ्गादिकन पवित्र करत अवनी पर डोलैं ॥
जब दिन मनि श्रीकृष्ण दृगन तें दूरि भये दुरि ।
पसरि परयो अँधियार सकल संसार घुमड़ि घिरि ॥
तिमिर ग्रसित सब लोक-ओक लखि दुखित दयाकर ।
प्रकट कियो अद्भुत प्रभाव भागवत विभाकर ॥
श्रीवृन्दावन चिद्घन कछु छवि बरनि न जाई ।
कृष्ण ललित लीला के काज गहि रह्यो जड़ताई ॥
जहँ नग खग मृग लता कुञ्ज वीरुध तृन जेते ।
नहिं न काल गुन प्रभा सदा सोभित रहैं तेते ॥
सकल जन्तु अविरुद्ध जहाँ हरि मृग सँग चरहीं ।
काम क्रोध मद लोभ रहित लीला अनुसरहीं ॥
सब दिन रहत बसन्त कृष्ण अवलोकनि लोभा ।
त्रिभुवन कानन जा बिभूति करि सोभित सोभा ॥
ज्यों लक्ष्मी निज रूप अनूपम पद सेवति नित ।
भू बिलसत जु बिभूति जगत जगमग रही जित कित ॥
श्री अनन्त महिमा अनन्त को बरनि सकै कवि ।
सङ्करषन सो कछुक कही श्रीमुख जाकी छवि ॥
देवन में श्री रमारमन नारायन प्रभु जस ।
बन में बृन्दावन सुदेस सब दिन सोभित अस ॥
या वन की बर बानिक या वनही बन आवै ।
सेस महेस सुरेस गनेस न पारहिं पावै ॥
जहँ जेतिक द्रुमजात कल्पतरु सम सब लायक ।
चिन्तामणि सम सकल भूमि चिन्तित फल दायक ॥

तिन महँ इक जु कल्पतरु लगि रही जगमग ज्योती ।
पात मूल फल फूल सकल हीरा मनि मोती ॥
तहँ मुतियन के गन्ध लुब्ध अस गान करत अलि ।
वर किन्नर गन्धर्व अपच्छर तिन पर गइ बलि ॥
अमृत फुही सुख गुही अति सुही परत रहत नित ।
रास रसिक सुन्दर पियको स्रम दूर करन हित ॥
ता सुरतरु महँ और एक अद्भुत छवि छाजै ।
साखा दल फल फूलनि हरि प्रतिबिम्ब बिराजै ॥
ता तरु कोमल कनक भूमि मनिमय मोहत मन ।
दिखियतु सब प्रतिबिम्ब मनो धर महँ दूसर वन ॥
जमुनाजू अति प्रेम भरी नित बहत सुगहरी ।
मनि मण्डित महिमाँह दौरि जनु परसत लहरी ॥
तहँ इक मनिमय अंक चित्र को सङ्क सुभग अति ।
तापर षोडश दल सरोज अद्भुत चक्राकृति ॥
मधि कमनीय करिनिका सब सुख सुन्दर कन्दर ।
तहँ राजत बृजराज कुँअर वर रसिक पुरन्दर ॥
निकर विभाकर दुति मेंटत सुभ मनि कौस्तुभ अस ।
सुन्दर नन्द कुँअर उर पर सोई लागति उडु जस ॥
मोहन अद्भुत रूप कहि न आवत छवि ताकी ।
अखिल खण्ड व्यापी जु ब्रह्म आभा है जाकी ॥
परमातम परब्रह्म सबनके अन्तरजामी ।
नारायन भगवान धरम करि सबके स्वामी ॥
बाल कुमर पौगण्ड धरम आक्रान्त ललित तन ।
धरमी नित्य किसोर कान्ह मोहत सबको मन ॥
अस अद्भुत गोपाल लाल सब काल बसत जहँ ।
याही ते बैकुण्ठ विभव कुण्ठित लागत तहँ ॥

× × ×

हे सखि, हे मृग-बधू इन्हैं किन पूछहु अनुसारि ।
डहडहे इनके नयन अबहिं कहुँ देखे हैं हरि ॥
अहो सुभग वन गन्धि, पवनि सँग थिर जुरही चल ।
सुख के भवन दुख गमन रमन इतते चितये बलि ॥

हे चम्पक, हे कुसुम, तुम्हैं छवि सबतैं न्यारी।
नैकु बताय जु देउ, जहाँ हरि कुंज बिहारी॥
हे कदम, हे निम्ब, अम्ब क्यों रहे मौन गहि!
हे वट उतँग सुरँग वीर कहुँ तुम इतउत लहिं!
हे असोक, हरि सोक लोक मनि पियहिं बतावहु।
अहो पनस, सुभ सरस मरत तिय अमिय पियावहु॥

× × ×

नूपुर, कंकन, किंकिन, करतल, मंजुल मुरली।
ताल मृदंग उपंग चंग एकै सुर जुरली॥
मृदुल मधुर टंकार ताल, झंकार मिली धुनि।
मधुर जंत्र के तार भँवर-गुंजर रली पुनि॥
तैसिय मृदु पटकनि, चटकनि करतारनि की।
लटकनि, मटकनि, झलकनि कल कुंडल हारन की॥
सांवल पिय के संग नृतति यों वृज की बाला।
जनु घन मंडल मंजुल खेलति दामिनि माला॥
छबिलि तियन के पाछे आछे बिलुलत बेनी।
चंचल रूप-लतानि-संग डोलति अलि सोनी॥
मोहन पिय की मुसकनि, ढलकनि मोर-मुकुट की।
सदा बसौ मन मेरे फरकन पियरे पट की॥

× × ×

जो उनके गुन होय वेद क्यों नेति बखानै।
निरगुन सगुन आत्म रचि ऊपर सुख शानै॥
वेद-पुराननि खोजि कै, पायो कितहुँ न एक।
गुनही के गुन होहिं ते, कहौ अकासहि टेक॥
सुनो वृज नागरी।

जौ उनके गुन नाहिं, और गुन पाये कहाँ ते।
बीज बिना तरु जमैं मोहि तुम कहौ कहाँ ते॥
वा गुन की परछांह री माया दरपन बीच।
गुन ते गुन न्यारे भये, अमल वारि मिलि कीच॥
सखा सुन स्याम के।

प्रेम जु कोऊ वस्तु रूप देखत लौ लागै।
वस्तु दृष्टि बिन कहौं कहा प्रेमी अनुरागै॥

तरनि चन्द्र के रूप को, गुन गहि पायो ज्ञान ।
तौ उनको कहि जानिए, गुनातीत भगवान ।।
सुनो वृज नागरी ।

तरनि अकास प्रकास तेजमय रह्यो दुराई ।
दिव्य दृष्टि बिनु कहौ, कौन पै देख्यो जाई ।।
जिनकी वे आँखें नहीं, देखै कब वह रूप ।
तिन्है साँच क्यों उपजै, परे कर्म के कूप ।।
सखा सुन स्याम के ।

जो गुन आवै दृष्टि माँझ नहिं ईस्वर सारे ।
इन सबहिनते बासुदेव, अच्युत हैं न्यारे ।।
इन्द्री दृष्टि-विकार ते, रहत अधोक्षज जोति ।
सुद्ध सरूपी ज्ञान जिय, तृप्ति जु ताते होति ।।
सुनो वृज नागरी ।

नास्तिक जे हैं लोग कहा जानै हित रूपै ।
प्रगट भानु को छाँड़ि गहैं परछाहीं धूपै ।।
हम को बिन वा रूप के, और न कछु सुहाय ।
ज्यो करतल आभास के कोटिक ब्रह्म दिखाय ।।
सखा सुन स्याम के ।

पुनि पुनि कहै जु जाय चलौ बृन्दावन रहिए ।
प्रेम प्रसंग को प्रेम जाय गोपिन संग लहिए ।।
और काम सब छाँड़िकै, उन लोगन सुख देहु ।
नातरु टूट्यो जात है, अबही नेह-सनेहु ।।
करौगे तौ कहा ।

ऊधव को उपदेश सुनो ब्रजनागरी ।
रूप सील लावन्य सबै गुन आगरी ।।
प्रेम धुजा रस रूपिनी उपजावन सुख पुंज ।
सुन्दर स्याम बिलासिनी नव बृन्दाबन कुंज ।।
सुनो ब्रजनागरी ।

कहन स्याम सन्देस एक मैं तुम पै आयो ।
कहन समै संकेत कहूँ अवसर नहिं पायो ॥
सोचत ही मन मैं रह्यो कब पाऊँ इक ठाउँ ॥
कहि सन्देस नँदलाल को बहुरि मधुपुरी जाउँ ॥
सुनो ब्रजनागरी ।

सुनत स्याम को नाम ग्राम गृह की सुधि भूली ।
भरि आनँद रस हृदय प्रेम बेली द्रुम फूली ॥
पुलकि रोम सब अँग भये भरि आये जल नैन ।
कण्ठ घुटे गदगद गिरा बोले जात न बैन ॥
व्यवस्था प्रेम की ।

सुनत सखा के बैन नैन भरि आये दोऊ ।
बिवस प्रेम आवेस रही नाही सुधि कोऊ ॥
रोम-रोम प्रति गोपिका, ह्वै रही साँवरे गात ।
कल्पतरोरुह साँवरो, ब्रजवनिता भईं पात ॥
उलहि अँग अंग तें ।

कृष्णदास

बाल दसा गोपाल की सब काहू प्यारी ।
लै लै गोद खिलावहीं जसुमति महतारी ॥
पति अङ्गुलि तन सोहंही, सिर कुलहि बिराजै ।
छुद्र घंटिका कटि बनी पाय नूपुर बाजै ॥
मुरि मुरि नाचै मोर ज्यों, सुर-नर-मुनि मोहै ।
कृष्णदास प्रभु नन्द के आँगन में सोहै ॥

× × ×

रास रस गोविन्द करत विहार ।
सूर-सुता के पुलिन रम्य महँ, फूले कुन्द मँदार ॥
अदभुत सतदल बिगसित कोमल, मुकुलित कुमुद कल्हार ।
मलय-पवन वह सारदि पूरन चन्द मधुप झंकार ॥
सुघरराय संगीत-कला निधि-मोहन नन्द-कुमार ।
ब्रजभामिनि-सँग प्रमुदित नाचत, तन परचित घनसार ॥

× × ×

गोपाले देखन किन आई री।
आजु वने गोविन्द मानिनी, तोकों लैन पठाई री॥
तरनि-तनया-पुलिन विमल, सरद निसि जुन्हाई री।
राका पति कर रंजित द्रुमलता भूमि सुहाई री॥
गोर्वधन धरन लाल गान सों बुलाई री।
कृष्णदास प्रभु को मिलन जुवतिनि सुखदाई री॥

× × ×

आजु पिय सों तू मिली री, मानो।
स्रम-जलकन भरि बदन की शोभा नभसि उडुराज खिसानो॥
त्रिभुवन जुवतिन को सुख सरवसु, जानति हौं तुव माँझ समानो।
कृष्णदास प्रभु रसिक-मुकुट-मनि, सुवस कियो गोवर्धन रानो॥

× × ×

मो मन गिरधर छवि पै अटक्यौ।
ललित त्रिभंगि चाल पै चलिकै, चिबुक चारु गढ़ि ठटक्यौ॥
सजल श्याम घन-बरन लीन है, फिर चित अनत न भटक्यौ।
कृष्णदास किये प्रान निछावर, यंह तन जग सिर पटक्यौ॥

× × ×

इहि मन कैसे कै रहैं राख्यो।
जिहि मधुकर ह्वै गिरधर पिय कौ वदन कमल रस चाख्यो॥
जु कछुक मैं मानी वरवस ह्वै ताही को सौ साख्यो।
वार वार वहुविधि समझायो ऊचो नीचो भाख्यो॥
केहु न मानत महा हठीलौ कही तुम्हारी आख्यो।
कृष्णदास कहँ लौ हौ वरनौ, रूप मधुर मधु चाख्यो॥

× × ×

तरनि तनया तट आवत प्रात समय।
कंदुक खेलत देख्यो आनँद को कँदवा॥
नूपुर पद कुनित पीताम्बर कटि वांधे।
लाल उपसा सिर मोरन के चँदवा॥

× × ×

कंचन मनि मरकत रस ओपी।
नंद सुवन के संगम सुख कर अधिक बिराजति गोपी॥
मनहु विधाता गिरिधर पिय-हित सुरत धुजा सुख रोपी।
बदन कांति के सुनु री भामिनी! सघन चंद श्री लोपी॥

माननाथ के चित चोरन को भौंह भुजंगम कोपी।
कृष्णदास स्वामी वस कीन्हें, प्रेम पुन्ज की चोपी॥

परमानन्ददास

राधे जू हारावलि टूटी।
उरज कमल दल माल मरगजी, वाम कपोल झलक लट छूटी॥
वर उर उरज करज विन अंकित, वाहु जुगल वलयावलि फूटी।
कंचुकि चीर विविध रंग रंजित गिरधर अधर माधुरी घूँटी॥
आलस-वलित नैन अनियारे, अरुन उनींदे रजनी खूटी।
परमानंद प्रभु सुरति समय रस मदन नृपति की सेना लूटी॥

× × ×

कहा करौं वैकुंठहि जाय ?
जहँ नहिं नँद जहाँ न जसोदा, नहिं जहँ गोपी ग्वाल न गाय॥
जहँ नहिं जल जमुना को निर्मल और नहीं कदमन की छाय।
परमानन्द प्रभु चतुर ग्वालिनी, व्रज रज तजि मेरो जाय वलाय॥

× × ×

व्रज के बिरही लोग बिचारे।
विनु गोपाल ठगे से ठाढ़े, अति दुर्वल तन हारे॥
मात जसोदा पंथ निहारत, निरखत साँझ सकारे।
जो कोई कान्ह कान्ह कहि वोलत आंखिन वहत पनारे॥
यह मथुरा काजर की रेखा, जे निकसे ते कारे।
परमानन्द स्वामी विनु ऐसे, ज्यों चन्दा विनु तारे॥

× × ×

कौन रसिक है इन वातन कौ।
नँद नँदन विनु कासो कहिये, सुनि री सखी, मेरे दुखिया मन कौ॥
कहाँ वे जमुना पुलिन मनोहर, कहाँ वह चंद सरद रातन कौ।
कहाँ वे मंद सुगन्ध गमल रस, कहाँ पटपद जल जातन कौ॥
कहाँ वो सेज पौढ़ियो वन को फूल विछौना मृदु पातन कौ।
कहाँ वे दरस-परस परमानन्द कोमल तन कोमल गातन कौ॥

× × ×

माई री, कमल नैन स्याम सुन्दर झूलत हैं पलना।
वाल-लीला गावति, सव गोकुल की ललना॥

अरुन तरुन कमल नख-मनि जस जोती।
कुंचित कच मकराकृत लटकत गज-मोती॥
अँगुठा गहि कमलापति मेलत मुख माही।
अपनी प्रतिबिम्ब देखि पुनि पुनि मुसकाहीं॥
जसुमति के पुन्य पुंज बार बार लाले।
परमानन्द प्रभु गोपाल सुत-सनेह पाले॥

× × ×

गावति गोपी मधु ब्रज वानी।
जाके भवन वसत त्रिभुवन पति, राजा नन्द जसोदा रानी॥
गावत वेद, भारती गावति, गावत नारदादि मुनि ज्ञानी।
गावत गुन गंधर्व काल शिव, गोकुल नाथ महातम जानी॥
गावत चतुरानन सुर-नायक, गावत शेष सहस मुखरास।
मन क्रम वचन प्रीति द-अम्बुज गावत 'परमानन्द दास॥

× × ×

जसोदा तेरो भाग्य की कही न जाय।
जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्लभ, सो प्रगटे हैं आय॥
सिव नारद सुक सनकादिक मुनि मिलिवे को करत उपाय।
ते नँदलाल धूर धूसरित वपु रहत गोद लपटाय॥
रहत जड़ित पौढ़ाय पालने वदन देखि मुसकाय।
झलौ लाल जाऊँ बलिहारी, परमानन्द जसु गाय॥

× × ×

आये मेरे नँद नँदन के प्यारे।
माला तिलक मनोहर बानी त्रिभुवन के उँजियारे॥
प्रेम समेत वसत मन मोहन, नैकहुँ टरत न टारे।
हृदय कमल के मध्य विराजत, श्री ब्रजराज दुलारे॥
कहा जानौ कौन पुन्य प्रगट भयो, मेरे घर जो पधारे।
परमानन्द प्रभु करी निछावरि, वार वार हौ वारे॥

× × ×

'जिय की साधन' जिय ही रही री।
बहुरि गोपाल देख नहीं पाये विलपत कुंज अहीरी॥
एक दिन सोंज समीप यह मारग वेचन जात दही री।
प्रीत के लिए दान मिस मोहन मेरी बाँह गही री॥

बिन देखे घड़ी जात कलप सम बिरहा अनल दही री।
परमानन्द स्वामी बिन दर्शन नैन न नींद वही री॥

× × ×

वह बात कमल दल नैन की।
बार बार सुधि आवत रजनी वहु दुरि देनी सेनी सेन की॥
वह लीला वह रास सरद को जो रज रजनी आवनि।
अरु वह ऊँची टेर मनोहर मिस करि मोह सुनावनि॥
बसन कुंज में रास खिलाया बिथा गमाई मन की।
परमानन्द प्रभू सो क्यों जीवे जो पोखी मृदु वन की॥

कुंभनदास

तुम नीके दुहि जानत गैया।
चलिए कुँअर रसिक मन मोहन लगौं तिहारे पैया॥
तुमहि जानि करि कनक दोहनी घर ते पठई मैया।
निकटहिं है यह खरिक हमारो, नागर लेहु बलैया॥
देखियत परम सुदेस लरिकई चितू पहुँच्यो सुन्दरैया।
कुंभनदास प्रभु मानि लई रति गिरि गोर्वधन रैया॥

× × ×

देखिहौं इन नैननि।
सुन्दर स्याम मनोहर मूरति, अङ्ग अङ्ग सुख दैननि॥
वृन्दावन बिहार दिन दिनप्रति गोप वृन्द सँग लैननि।
हंसि हंसि हरषि पतौवनि पावन बांटि बांटि पय फैननि॥
कुंभनदास किते दिन बीते, किये रेनु सुख सैननि।
अब गिरधर बिनु निसि अरु वासर, मन न रहत क्यों चैननि॥

× × ×

केते दिन जु गये बिनु देखैं।
तरुन किसोर रसिक नँद नंदन, कछुक उठत मुख रेखैं॥
वह सोभा वह कान्ति बदन की, कोटिक चंद विसेखैं।
वह चितवन वह हास मनोहर, वह नटवर वपु भेखैं॥
स्याम सुन्दर सँग मिलि खेलन की, आवति हिये अपेखैं।
कुंभनदास लाल गिरधर बिनु जीवन जनम अलेखैं॥

× × ×

आवत मन मोहन मन जु हरयो है।
हौं गृह अपने सचु सो बैठी, निरखि बदन सरवस बिसरयो है॥
रूप निधान रसिक नँद नंदन, उपँग्यो हिय धीरज न धरयो है।
कुंभनदास प्रभु गोवंधन धर, अंग अंग प्रेम पियूष भरयो है॥

× × ×

नैन भरि देखौ नंदकुमार।
ता दिन ते सब भूलि गयो हौं बिसरयो पन परवार॥
बिन देखे हो बिकल भयो हौं अङ्ग अङ्ग सब हारि।
ताते सुधि है साँवरी मूरति की लोचन भरि भरि वारि॥
रूप रास पैमित नहिं मानों कैसे मिले सो कन्हाई।
कुंभनदास प्रभू गोवर्धन धन मिलियै बहुर री माई॥

× × ×

रूप देख नैना पल लागै नाही।
गोवंधन के अङ्ग अङ्ग प्रति निरखि नैन मन रहत वही॥
कहा कहौं कछु कहत न आवै चित चोरयो मांगवै दही।
कुंभनदास प्रभू के मिलन की सुन्दर बात सखियन सो कही॥

× × ×

जो ये चौप मिलन की होय।
तौ क्यों रहै ताहि बिन देखे लाख करौं जिन कोय॥
जो यह बिरह परस्पर व्यापै जो कछु जीवन बनै।
लोक लाज कुल की मर्यादा एकौ चितै न गनै॥
कुंभनदास प्रभू जाय तन लागी और न कछू सुहाय।
गिरधर लाल तौहि बिन देखे छिन छिन कलप बिहाय॥

× × ×

भक्तन को कहा सीकरी को काम।
आवत जात पन्हैया टूटी बिसर गयो हरिनाम॥
जाको मुख देखे दुख लागै ताको करन परी परनाम।
कुंभनदास लाल गिरधर बिनु यह सब झूठौ धाम॥

× × ×

हिलगनि कठिन है या मन की।
जाके लियै देखि मेरी सजनी लाज गई सब तन की॥

धर्म जाव अरु लोग हँसो सब अरु गावौ कुल नारी।
सो क्यों रहे ताहिं बिन देखे जो जाको हितकारी ॥
रस लुब्धक निमख न छाँड़त ज्यों अधीन मृग गानो।
कुंभनदास सनेह परम श्री गोवर्धन धर जानो ॥

चतुर्भुजदास

जसोदा कहा कहौं हौं बात ?
तुम्हरे सुत के करतब मो पै कहत कहे नहिं जात ॥
भाजन फोरि, ढारि सब गोरस, लै माखन दधि खात।
जौं बरजौं तौ आंखि दिखावै, रंचहुँ नाहिं सकात ॥
और अटपटी कहँ लौ बरनौं, छुवत पानि सौं गात।
दास चतुर्भुत गिरधर गुन हौं, कहति कहति सकुचात ॥

× × ×

सुभग शृङ्गार निरख मोहन को ले दर्पण कर पियहि दिखावे।
आपुन नेक निहारिये बलि जाऊँ आज छवि कछु कहत न आवे ॥

छीत स्वामी

भोर भये नव कुंज सदन ते आवत लाल गोर्वधन धारी।
लट पर पाग अरगजी माला, सिथिल अङ्ग डगमग गति न्यारी ॥
बिनु गुन माल बिराजति उर पर नख छत द्वैज चंद अनुहारी।
छीत स्वामि जब जितये मो तन तब हौ निरखि गयी बलिहारी ॥

× × ×

भई अब गिरधर सौं पहिचान।
कपट रूप छलवे आयो पुरुषोत्तम नहिं जान ॥
छोटो बड़ो कछू नहिं जान्यो छाय रह्यो अज्ञान।
छीत स्वामी देखत अपनायौ श्री विट्ठल कृपा निधान ॥

× × ×

प्रिय नवनीत पालने झूले श्री विट्ठल नाथ झुलावै हो।
कबहुँक आप संग मिल झूलै कबहुँक उतरि झुलावै हो ॥

कबहुँक सुरँग खिलौना लै लै नाना भांति खिलावै हो।
चकई फिरकनी ले विगीट्ठ भुग्ग भुग्ग हात बजावै हो॥
भोजन करत थाल एक भारी दोऊ मिलि खाय खवावै हो।
गुप्त महारस प्रकट जनावै प्रीति नई उपजावै हो॥
धनि धनि भाग दास निज जिनके जिन यह दर्शन पाए हो।
छीत स्वामी गिरधरन श्री विट्ठल निगम एक पाए हो॥

गोविन्द स्वामी

प्रात समय उठि जसुमति जननी गिरधर सुत को उबटि न्हवावति।
करि सिंगार बसन भूषन सजि फूलन रचि रचि पाग बनावति॥
छुटे बंद वागे अति सोभित बिच बिच चोव अरगजा लावति।
सूथन लाल फूँदना सोभित, आजु की छवि कछु कहत न आवति॥
विविध कुसुम की माला उर धरि श्री कर मुरली बेंत गहावति।
लै दरपन देखे श्रीमुख को, गोविन्द प्रभु चरनन सिर नावति॥

हितहरिवंश

आजु नीकी बनी राधिका नागरी।
ब्रज जुवति जूथ में रूप अरु चतुराई।
सील, सिंगार-गुन सबनि ते आगरी।
कमल दच्छिन भुजा बाम भुजा अंसु सखि।
गावती सरस मिलि मधुर सुर रागरी।
सकल विद्या विदित रहसि हरिवंसहित।
मिलत नव कुन्ज बर स्याम बड़भागरी॥

× × ×

मधुरितु वृन्दावन, आनंद न थोर।
राजति नागरी नव कुसल किसोर॥
जूथिका जुगल रूप मंजरी रसाल।
विथ कित अलि मधु माधवी गुलाल॥
चंपक बकुल कुल विविध सरोज।
केतकी मेदिनी मद मुदित मनोज॥
रोचक रुचिर वहै त्रिविध समीर।
मुकुलित नूत नदित पिक कीर॥

पावन पुलिन घन मंजुल निकुन्ज ।
किसलय सैन रचित सुख पुन्ज ।।
मंजीर मुरज डफ मुरली मृदंग ।
बाजत उपंग वीना वर मुख चंग ।।
मृग-मद मलयज कुंकुम अबीर ।
बदन अगर-सत सुरभित चीर ।।
गावत सुन्दर हरि सरस धमारि ।
पुलकित खग-मृग बहत न वारि ।।
(जयश्री) हितहरिवंश हंस हंसिनी समाज ।
ऐसेई करहु मिलि जुग जुग राज ।।

× × ×

सरद विमल, नभ चन्द विराजै ।
मधुर मधुर मुरली कल बाजै ।।
अति राजत घन स्याम-तमाला ।
कंचन वेलि बनी ब्रज बाला ।।
भूषन बहत, विविध रंग सारी ।
अंग सुगन्ध दिखावति नारी ।।
बरसत कुसुम मुदित सुर-जोषा ।
सुनियतु दिवि दुन्दुभि कल घोषा ।।
(जयश्री) हितहरिवंश मगन मन स्यामा ।
राधा - रमन सकल सुख धामा ।।

× × ×

प्रीति न काहू कि कानि विचारै ।
मारग अप विथकित मन, को अनुसरत निवारै ।।
ज्यौं पावस सरिता जल उमगत, सनमुख सिन्धु सिधारै ।
ज्यौं नादहि मन दिये कुरंगनि, प्रगट पारथी मारै ।।
(जयश्री) हितहरिवंश लग सारँग, ज्यौं सलभ सरीरहिं जारै ।
नायक निपुन नवल मोहन बिनु, कौन अपनपौ हारै ।।

× × ×

देखौ भाई, सुन्दरता की सीवाँ ।
बृज-नव-तरुनि-कदम्ब नागरी निरखि करति अध ग्रीवाँ ।।
जो कोउ कोटि कलप लगि जीवै रसना कोटिक पावै ।
तऊ रुचिर बदनारविन्द की सोभा कहति न आवै ।।

देव लोक, भूवलोक रसातल सुनि कवि-कुल मन डरियै।
सहज माधुरी अंग अंग की कहि कासों पटतरियै॥
(जयश्री) हित हरिवंश प्रताप रूर गुन वय बल स्याम उजागर।
जाकी भ्रू विलास वस पसुरिव, दिन विगलित रस सागर॥

× × ×

चलति किन मानिनि कुञ्ज कुटीर।
तो विन कुँवर कोटि वनिता जुत मथत मदन की पीर॥
गदगद सुर विरहाकुल पुलकित श्रवत विलोचन नीर।
क्वासि क्वासि वृषभान नंदिनी विलपत विपिन अधीर॥
वंसी विसिख व्याल मालावलि पञ्चानन पिक कीर।
मलयज गरल हुतासन मारुत साखामृग रिपु चीर॥
हितहरिवंस परम कोमल चित सपदि चली पिय तीर।
सुनि भय भीत वज्र को पिंजर सुरत सूर रनबीर॥

× × ×

आजु वन नीको रास बनायो।
पुलिन पवित्र सुभग यमुनातट मोहन वेनु बजायो॥
कल कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि खग मृग सचुपायो।
जुवतिनु मंडल मध्य श्यामघन सारँग राग जमायो॥
ताल मृदंग उपंग मुरज डफ मिलि रस सिंधु बढ़ायो।
विविध विसद वृषभानु नंदिनी अंग सुढंग दिखायो॥
अभिनय निपुन लटकि लटि लोचन भृकुटि अनंद नचायो।
ताथेइ ताथेइ धरति नवलगति पति ब्रजराज रिझायो॥
सकल उदार नृपति चूड़ामणि सुख वारिद बरसायो।
परिरंभन चुंवन आलिंगन उचित जुवति जन पायो॥
बरखत कुसुम मुदित नभ नायक इन्द्र निसान बजायो।
हितहरिवंस रसिक राधापति जस वितान जग छायो॥

मीरा बाई

पायो जी, मैंने नाम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु किरपा कर अपनायो॥
जनम जनम की पूँजी पाई जग में सभी खोवायो।
खरचै नहिं कोइ चोर न लेवे दिन दिन बढ़त सवायो॥

सत की नाव खेवैया सतगुरु भवसागर तर आयो ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर हरख हरख जस गायो ।।

× × ×

करम गति टारे नाहिं टरे ।
सतबादी हरिचँद से राजा नीच घर नीर भरे ।
पाँच पांडु अरु कुंती द्रौपदी हाड़ हिमालय गरे ।।
जज्ञ किया बलि लेण इंद्रासन सो पाताल धरे ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर विप से अमृत करे ।।

× × ×

मेरे तो एक राम नाम दूसरा न कोई ।
दूसरा न कोई साधो सकल लोक जोई ।।
भाई छोड्या बंधु छोड्या छोड्या सगा सोई ।
साधु संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ।।
भगत देख राजी हुई जगत देख रोई ।
प्रेम नीर सींच सींच विष वेल धोई ।।
दधिमथ घृत काढ़ लियो डार दई छोई ।
राणा विप को प्यालो भेज्यो पीय मगन होई ।।
अब तौ वात फैल पड़ी जाणे सब कोई ।
मीरा राम लगण लागी होणी होय सो होई ।।

× × ×

घड़ी एक नहिं आवड़े तुम दरसण बिन मोय ।
तुमहो मेरे प्राण जी कासूँ जीवण होय ।।
धान न भावै नींद न आवै विरह सतावे मोय ।
घायल सी घूमत फिरूँ रे मेरा दरद न जाणे कोय ।।
दिवस तो खाय गमायो रे रैण गमाई सोय ।
प्राण गमायो झूरताँ रे नैण गमाई रोय ।।
जो मैं ऐसा जाणती रे प्रीत किये दुख होय ।
नगर ढिंढोरा फेरती रे प्रीत करो मत कोय ।।
पंथ निहारूँ डगर बुहारूँ ऊबी मारग जोय ।
मीरा के प्रभु कबरे मिलोगे तुम मिलियाँ सुख होय ।।

× × ×

हेरी मैं तो प्रेम दिवाणी मेरा दरद न जाणे कोय ।।
सूली ऊपर सेज हमारी किस विध सोणा होय ।।

गगन मंडल पै सेज पिया की किस विध मिलणा होय ॥
घायल की गति घायल जानै की जिन लाई होय ॥
जौहरी की गति जौहरी जानै की जिन जौहर होय ॥
दरद की मारी वन वन डोलूँ वैद मिल्या नहिं कोय ॥
मीरा की प्रभु पीर मिटैगी जब वैद सँवलिया होय ॥

× × ×

बंसी वारो आयो म्हारे देस थाँरी साँवरी सुरत वालीवेस ॥
आऊँ आऊँ कर गया साँवरा कर गया कौल अनेक ॥
गिणते गिणते घिस गई उँगली घिस गई उँगली की रेख ॥
मैं वैरागिणि आदि की थांरे म्हारे कद को सनेस ॥
बिन पाणी बिन साबुन साँवरा हुइ गई धुई सपेद ॥
जोगिण हुई जंगल सब हेरूँ तेरा नाम न पाया भेस ॥
तेरी सुरत के कारणे धर लिया भगवा भेस ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै घूँघर वाला केस ॥
मीरा को प्रभु गिरिधर मिल गये दूना बढ़ा सनेस ॥

× × ×

राम मिलण रो घणो उमावो नित उठ जोऊँ बाटड़ियाँ ।
दरसण बिन मोहिं पल न सुहावै कल न पड़त हैं आँखड़ियाँ ॥
तलफ तलफ के बहु दिन बीते पड़ी बिरह की फाँसड़ियाँ ।
अब तो वेगि दया करि साहिब मैं हूँ तेरी दासड़ियाँ ॥
नैण दुखी दरसण को तिरसे नाभि न बैठे साँसड़ियाँ ।
रात दिवस यह आरत मेरे कब हरि राखे पासड़ियाँ ॥
लगी लगन छूटण की नाहीं अब क्यों कीजै आटड़ियाँ ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर पूरौ मन की आसड़ियाँ ॥

× × ×

मन रे परसि हरि के चरण ॥
सुभग सीतल कँवल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण ।
जिण चरण प्रहलाद परसे, इंद्र पदवी धरण ।
जिण चरण ध्रुव अटल कीने, राखि अपनी सरण ।
जिण चरण ब्रह्मांड मेट्यो, नखसिखाँ सिरी धरण ।
जिण चरण प्रभु परसि लीने, तरी गौतम घरण ।
जिण चरण कालीनाग नाथ्यो, गोपलीला करण ।

जिण चरण गोवरधन धारयो, इन्द्र को ग्रव हरण।
दासि मीराँ लाल गिरधर, अगम तारण तरण॥

× × ×

हमरो प्रणाम बांके विहारी को॥
मोर मुकट माथे तिलक विराजै, कुंडल अलकाकारी को।
अधर मधुर पर बंशी बजावै, रीझ रिझावै राधाप्यारी को।
यह छबि देख मगन भई मीराँ, मोहन गिरवरधारी को॥

× × ×

वसो मेरे नैनन में नन्दलाल।
मोहनी मूरति साँवरि सूरति नैना बने विसाल।
अधर सुधा रस मुरली राजित उर वैजन्ती माल॥
छुद्र घंटिका कटि तटि सोभित नूपुर सब्द रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई भक्त बछल गोपाल॥

× × ×

हरि मोरे जीवन प्रान अधार॥
और आसिरो नाहीं तुम बिनु, तीनूं लोक मँझार।
आप बिना मोहि कछु न सुहावै, निरख्यो सब संसार।
मीराँ कहै मैं दास रावरी, दीज्यौ मती विसार॥

× × ×

तनक हरि चितवौ जी मेरी ओर॥
हम चितवत तुम चितवत नाहीं, दिल के बड़े कठोर।
मेरे आसा चितवनि तुमरी, और न दूजी दोर।
तुमसे हमकूँ कबरे मिलोगे, हमसी लाख करोर।
कभी ठाढ़ी अरज करत हूँ, अरज करत भयो भोर।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, देस्यूँ प्राण अकोर॥

× × ×

मेरो मन बसिगो गिरधरलाल सों॥
मोर मुकुट पीताम्बर हो, गल वैजंती माल।
गउवन के सँग डोलत, हो जसुमति को लाल।
कालिंदी के तोर हो, कान्हा गउवाँ चराय।
सीतल कदम की छाहियाँ, हो मुरली बजाय।
जसुमति के दुवरवाँ हो, ग्वालिन सब जाय।
बरजहु आपन दुलरुवा, हमसों अरुझाय।

वृन्दावन क्रीड़ा करै, गोपिन के साथ।
सुर नर मुनि मोहे हो, ठाकुर जदुनाथ।
इन्द्र कोप घन बरखो, मूसल जलधार।
बूड़त ब्रज को राखेऊ, मोरे प्रान अधार।
मीराँ के प्रभु गिरधर हो, सुनिये चितलाय।
तुम्हरे दरस की भूखी हो, मोहि कछु न सोहाय॥

× × ×

या मोहन के मैं रूप लुभानी॥
सुंदर वदन कमल दल लोचन, बाँकी चितवन मँद मुसकानी।
जमना के नीरे तीरे धेन चरावै, बंशी में गावै मीठी बानी।
तन मन धन गिरधर पर वारूँ, चरण कँवल मीराँ लपटानी॥

× × ×

जब से मोहिं नंदनँदन, दृष्टि पड्यो माई।
तब से परलोक लोक, कछू न सोहाई।
मोर की चंद्रकला, सीस मुकुट सोहै।
केसर को तिलक भाल, तीन लोक मोहै।
कुंडल की अलक झलक, कपोलन पर धाई।
मनो मीन सरवर तजि, मकर मिलन आई।
कुटिल भृकुटि तिलक भाल, चितवन में टौना।
खंजन अरु मधुप मीन, भूले मृगछौना।
सुंदर अति नासिका, सुग्रीव तीन रेखा।
नटवर प्रभु भेष धरे, रूप अति विसेषा।
अधर विंब अरुन नैन, मधुर मंद हाँसी।
दसन दमक दाड़िम दुति, चमके चपलासी।
छुद्र घंट किंकिनी, अनूप धुनि सोहाई।
गिरधर के अंग अंग, मीराँ बलि जाई॥

× × ×

नैणा लोभी रे बहुरि सके नहिं आइ।
रूँम रूँम नखसिख सब निरखत, ललकि रहे ललचाइ।
मैं ठाढ़ी ग्रिह आपणेरी, मोहन निकसे आइ।
वदन चंद परकासत हेली, मंद मंद मुसकाइ।
लोक कुटंबी गरजि बरजहीं, बतियाँ कहत बनाइ।
चंचल निपट अटक नहिं मानत, परहथ गये विकाइ।

भली कहौ कोइ बुरी कहौ मैं, सब लई सीसि चढ़ाइ।
मीराँ कहे प्रभु गिरधर के बिनि, पल भर रह्यो न जाइ॥

× × ×

आली रे मेरे नैणाँ बाण पड़ी॥
चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी।
कब की ठाढ़ी पंथ निहरूँ, अपने भवन खड़ी।
कैसे प्राण पिया बिनि राखूँ, जीवन मूर जड़ी।
मीराँ गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहैं बिगड़ी॥

× × ×

नैनन वनज बसाऊँरी, जो मैं साहिब पाऊँ॥
इन नैनन मेरा साहिब बसता, डरनी पलक न नाऊँ, री।
त्रिकुटी महल में बना है झरोखा, तहाँ से झाँकी लगाऊँ, री।
सुन्न महल में सुरत जमाऊँ, सुख की सेज बिछाऊँ, री।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बलि जाऊँ, री।

× × ×

असा पिया जाण न दीजै हो॥
तन मन धन करि वारणै, हिरदे धरि लीजै, हो।
आव सखी मिलि देखिये, नैणाँ रस पीजै, हो।
जिह जिह विधि रीझै हरी, सोई विधि कीजै हो।
सुंदर स्याम सुहावणा, मुख देख्याँ जीजै, हो।
मीराँ के प्रभु रामजी, बड़ भागण रीझै, हो॥

× × ×

श्री गिरधर आगे नाचूँगी॥
नाचि नाचि पिव रसिक रिझाऊँ, प्रेमी जन कूँ जाचूँगी।
प्रेमप्रीति की बांधि घूँघरू, सुरत की कछनी काछूँगी।
लोक लाज कुल की मरजादा, यामें एक न राखूँगी।
पिव के पलँगा जा पौढूँगी, मीराँ हरि रँग राचूँगी॥

× × ×

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकट, मेरे पति सोई।
छांड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई।
संतन ढिक बैठि बैठि, लोक लाज खोई।

अँसुवन जल सींचि सींचि, प्रेम बेलि बोई ।
अब तो बेल फैल गई, आणँद फल होई ।
भगति देखि राजी हुई, जगति देखि रोई ।
दासी मीराँ लाल गिरधर, तारो अब मोहीं ॥

× × ×

मैं तो साँवरे के रँग राची ।
साजि सिगार बाधि पग घुँघरु, लोकलाज तजि नाची ।
गई कुमति लई साधु की संगति, भगतरूप भई साँची ।
गाय गाय हरि के गुन निसदिन, काल व्याल सूँ बाँची ।
उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काँची ।
मीराँ श्री गिरधरलाल सूँ, भगति रसीली जाँची ॥

× × ×

मैं तो गिरधर के घर जाऊँ ।
गिरधर म्हाँरो साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ,
रैण पड़ै तब ही उठि जाऊँ, भोर गये उठि आऊँ ।
रैणदिना वाके सँग खेलूँ, ज्यूँ त्यूँ वाहि रिझाऊँ ।
जो पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ ।
मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण बिनि पल न रहाऊँ ।
जहाँ बैठावैं तितही बैठूँ, बेचै तो बिक जाऊँ ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बलि जाऊँ ।

× × ×

माई री मैं तो लीयो गोविन्दो मोल ।
कोई कहै छाने कोई कहै चौड़े, लियोरी बजंता ढोल ।
कोई कहै मुँहघो कोई सुँहघो, लियो री तराजू तोल ।
कोई कहै कारो कोई कहै गोरो, लियोरी अमोलिक मोल ।
याही कूँ सब लोग जाणत है, लियोरी आँखी खोल ।
मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्यौ, पूरब जनम कौ कोल ॥

× × ×

मैं गिरधर रँग राती, सैयाँ मैं० ।
पचरँग चोला पहर सखी मैं, झिरमिट खेलन जाती ।
ओह झिरमिट माँ मिल्यो साँवरो, खोल मिली तन गाती ।
जिनका पिया परदेस बसत है, लिख लिख भेजैं पाती ।
मेरा पिया मेरे हीय बसत है, ना कहुँ आती जाती ।

चँदा जायगा सूरज जायगा, जायगी धरणि अकासी।
पवन पाणी दोनों ही जायँगे, अटल रहै अविनासी।
सुरत निरत का दिवला सँजोले, मनसा की करले वाती।
प्रेम हटी का तेल मँगा ले, जगे रह्या दिन ते राती।
सतगुर मिलिया सांसा भाग्या, सैन बताई साँची।
ना घर तेरा न घर मेरा, गावै मीराँ दासी।

× × ×

मैं अपणे सैंया सँग साँची।
अब काहे की लाज सजनी, परगट ह्वै नाची।
दिवस भूख न चैन कबहूँ, नींद निसि नासी।
वेधि वार पार ह्वै गो, ग्यान गुह गाँसी।
कुल कुटंबी आन बैठे, मनहुँ मधुमासी।
दासी मीराँ लाल गिरधर, मिटी जग हाँसी॥

× × ×

कोई कछू कहे मन लागा।
ऐसी प्रीति लगी मन मोहन, ज्यूँ सोना में सोहागा।
जनम जनम का सोया मनुवाँ, सतगुर सब्द सुण जागा।
मात पिता सुत कुटुम कवीला, टूट गयों ज्यूँ तागा।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, भाग हमारा जागा॥

× × ×

वरजी मैं काहू की नाहिं रहूँ।
सुनौरी सखी तुम चेतन होइके, मन की बात कहूँ।
साध सँगति करि हरि सुख लीजै, जगसूँ दूरि रहूँ।
तन धन मेरे सब ही जावो, भलि मेरो सीस लहूँ।
मन मेरो लागी सुमिरण सेती, सब का मैं बोल सहूँ।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, सतगुरु सरण गहूँ।

× × ×

तेरो कोई नहिं रोकणहार, मगन होइ मीराँ चली।
लाज सरम कुल की मरजादा, सिर सैं दूरि करी।
मान अपमान दोउ घर पटके, निकसी हूँ ग्यान गली।
ऊँची अटरिया लाज किवाड़िया, निरगुन सेज बिछी।
पँचरंगी झालर सुभ सौहै, फूलन फूल कली।

बाजू बन्द कठूला सोहै, सिन्दुर माँग भरी।
सुमिरन थाल हाथ में लीन्हा, सोभा अधिक खरी।
सेज सुखमणा मीराँ सोहै, सुभ है आज घरी।
तुम जावो राणा घर अपणे, मेरी तेरो नाहिं सरी॥

× × ×

आज म्हाँरो साधु जननो संगरे, राणा म्हाँरा भाग भल्याँ॥
साधु जननो संग जो करिये, चढ़े ते चौगणो रंगरे।
साकट जनन तो संग न करिये, पड़े भजन में भंगरे।
अड़सठ तीरथ संतों ने चरणे, कोटि कासी ने सोय गंगरे।
निन्दा मरसे नरक कुंड माँ जासे थासे आँधला अपंगरे।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, संतों नीरज म्हारे अंगरे॥

× × ×

राणाजी म्हें तो गोविंद का, गुण गास्याँ।
चरणाम्रित को नेम हमारो, नित उठ दरसण जास्याँ।
हरि मन्दिर में निरत करास्याँ, घुँघरिया घमकास्याँ।
राम नाम का झाझ चलास्याँ, भवसागर तर जास्याँ।
यह संसार वाड़ का काँटा, ज्याँ संगत नहिं जास्याँ।
मीराँ कहे प्रभु गिरधर नागर, निरख परख गुण गास्याँ॥

× × ×

नहिं भावै थाँरो देसलड़ो रँगरूड़ो।
थाँरा देसाँ में राणा साध नहीं छै, लोग वसै सब कूड़ो।
गहणा गाठो राणा हम सब त्यागा, त्याग्यो कररो चूड़ो।
काजल टीकी हम सब त्यागा, त्याग्यो छै बाँधन जूड़ो।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बर पायो छै पूरो।

× × ×

राणाजी मुझे यह बदनामी लगे मीठी।
कोई निन्दो कोई विन्दो, मैं चलूँगी चाल अनूठी।
साँकली गली में सतगुर मिलिया, क्यूँ कर फिरूँ अपूठी।
सतगुर जी सूँ बातज करताँ, दुरजन लोगाँ ने दीठी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, दुरजन जलो जा अँगीठी।

× × ×

राणा जी थे क्याँने राखो म्हाँसूँ बैर।
थे तो राणाजी म्हाँने इसड़ा लागो ज्यों ब्रच्छन में कैर।

महल अटारी हम सब त्याग्या, त्याग्यो थाँरो बसनो सहर।
कागज टीकी राणा हम सब त्याग्या भगवी चादर पहर।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, इमरित कर दियो जहर।

× × ×

सीसोद्यो रुठ्यो तो म्हाँरो कांई करलेसी।
म्हें तो गुण गोविंद का गास्यॉं, हो माई॥
राणो जी रूठ्यो वाँरो देस रखासी।
हरि रूठ्याँ कुम्हलास्याँ, हो माई।
लोक लाज की काण न मानूँ।
निरभै निसाण घुरास्याँ, हो माई।
राम नाम का झाझ चलास्याँ।
भवसागर तर जास्याँ, हो माई।
मीराँ सरण सबल गिरधर की।
चरण कँवल लपटास्याँ, हो माई॥

× × ×

पग घुँगरु बाँध मीराँ नाची, रे।
मैं तो मेरे नारायण की, आपहि होगइ दासी, रे।
लोग कहँ मीराँ भई बावरी, न्यात कहँ कुलनासी, रे।
विष का प्याला राणाजी भेज्या, पीवत मीराँ हाँसी, रे।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सहज मिले अविनासी, रे।

× × ×

राम तने रँगराची, राणा मैं तो साँवलिया रँगराची, रे।
ताल पखावज मिरदंग बाजा, साधाँ आगे नाची, रे।
कोई कहे मीरा भई बावरी, कोई कहे मतमाती, रे।
विष का प्याला राणा भेज्या; अमृत कर आरोगी, रे।
मीराँ कहे प्रभु गिरधर नागर, जनम जनम की दासी, रे॥

× × ×

राणाजी थे जहर दियो म्हे जाणी।
जैसे कंचन दहत अगिन में, निकसत बाराबाणी।
लोक लाज कुल काण जगत की, दइ बहाय जस पाणी।
अपणे घर का परदा करले, मैं अबला बौराणी।
तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक गयो सनकाणी।

सब संतन पर तन मन वारो, चरण कँवल लपटाणी।
मीराँ को प्रभु राखि लई है, दासी अपणी जाणी॥

× × ×

राणा जी म्हाँरी प्रीत पुरबली मैं कांई करूँ।
राम नाम बिन घड़ी न सुहावे, राम मिले म्हाँरा हियरा ठराय।
भोजनियाँ नहिं भावे म्हांने, नींदलड़ी नहिं आय।
विषको प्यालो भेजियोजी, जावो मीरा पास।
कर चरणामृत पी गई, म्हांरे रामजी के विस्वास।
छापा तिलक बनाविया जी, मन में निश्चय धार।
रामजी काज सँवरिया, म्हांने भावे गरदन मार।
पेट्याँ वासक भेजिया जी, यो छै मोतीडाँरो हार।
नाग गले में पहिरिया, म्हारे महलाँ भयो उजार!
राठौडाँरी धीयड़ी जी, सीसोद्यांरे साथ।
ले जाती बैकुंठ कूँ म्हाँरी, नेक न मानी बात।
मीराँ दासी राम की जी, राम गरीब निवाज।
जन मीराँ को राखज्यो, कोई बाँह गहे की लाज॥

× × ×

मैं गोविंद गुण गाणा।
राजा रूठै नगरी राखै, हरि रूठ्याँ कहँ जाणा।
राणै भेज्या जहर पियाला, इमिरत करि पी जाणा।
डबिया में भेज्या ज भुजंगम, सालिगराम करि जाणा।
मीराँ तो अब प्रेम दिवांणी, साँवलिया वर पाणा॥

× × ×

यो तो रंग धत्ताँ लग्यो ए माय।
पिया पियाला अमर रस का, चढ़ गई घूम घुमाय।
यो तो अमल म्हाँरो कबहुँ न उतरे, कोट करो न उपाय।
साँप पिटारो राणाजी भेज्यो, द्यो मेडतणी गल डार।
हँस हँस मीरा कँठ लगायो, यो तो म्हांरे नौसर हार।
विष को प्यालो राणा जी मेल्यो, द्यो मेड़तणी ने पाय।
कर चरणामृत पीगई रे, गुण गोविंद रा गाय।
पिया पियाला नाम का रे, और न रंग सोहाय।
मीराँ कहै प्रभु गिरधर नागर, काचो रंग उड़ जाय॥

× × ×

मीरा मगन भई हरि के गुण गाय ।।
साँप पिटारा राणा भेज्या मीरा हाथ दियो जाय ।
न्हाय धोय जब देखण लागी सालिगराम गई पाय ।।
जहर का प्याला राणा भेज्या अमृत दीन्ह बनाय ।
न्हाय धोय जब पीवण लागी हो अमर अँचाय ।।
सूल सेज राणा ने भेजी दीज्यो मीरा सुलाय ।
साँझ भई मीरा सोवण लागी मानो फूल बिछाय ।।
मीरा के प्रभु सदा सहाई राखे विघन हटाय ।
भजन भाव में मस्त डोलती गिरधर पै बलि जाय ।।

× × ×

हेली म्हाँसूँ हरि बिनि रह्यो न जाय ।
सास लड़ै मेरी नन्द खिजावै, राणा रह्या रिसाय ।
पहरो भी राख्यो चौकी बिठरायो, ताला दियो जड़ाय ।
पूर्व जनम की प्रीत पुराणी, सो क्यूँ छोड़ी जाय ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, और न आवे म्हाँरी दाय ।।

× × ×

अब नहिं विसरूँ, म्हांरे हिरदे लिख्यो हरि नाम ।
म्हांरे सतगुरु दियो बताय, अब नहिं विसरूँ रे ।।
मीरा बैठी महल में रे, ऊठत बैठत राम ।
सेवा करस्याँ साध की, म्हांरे और न दूजा काम ।।
राणा जी बतलाइया, कह देणो जवाब ।
पण लागों हरिनाम सूँ, म्हाँरो दिन दिन दूनो लाभ ।।
सीप-भरयो पाणी पिवे रे, टाँक भरयो अन्न खाय ।
बतलायाँ बोली नहीं रे, राणोजी गया रिसाय ।।
विष रा प्याला राणाजी भेज्या दीजो मेड़तणी के हाथ ।
कर चरणामृत पी गई, म्हाँरा सबल धणी का साथ ।।
विष को प्यालो पी गई, भजन करे उस ठौर ।
थाँरा मारी ना मरूँ म्हाँरों राखणहारो और ।।
राणोजी मोपर कोप्यो रे, मारूँ एक ज सेल ।
मारयां पराछित लागसी, म्हाँ नें दीजो पीहर मेल ।।
राणो मोपर कोप्यो रे, रती न राख्यो मोद ।
ले जाती वैकुंठ में, यो तो समझ्यो नहीं सिसोद ।।

छापा तिलक बनाइया, तजिया सब सिंगार।
म्हें तो सरणे रामके, भल निन्दो संसार॥
माला म्हारे देवड़ी, सील बरत सिंगार।
अबके किरपा कीजिये, हूँ तो फिर बांधूं तलवार॥
रयाँ बैल चुनाय कै, ऊटाँ कसियो भार।
कैसे तोड़ूँ राग सूँ, म्हाँरो भोभो री भरतार॥
राणो साँढ्यो मोकल्यो, जाज्यो एके दौड़।
कुल की तारण अस्तरी, या तो मुरड़ चली राठौड़॥
साड्यो पाछो फेरयो रे, परत न देस्याँ पाँव।
कर सूरापण नीसरी, म्हारे कुण राणे कुण राव॥
संसारी निन्दा करे, दुखियो सब संसार।
कुल सारो ही लाजसी, मीरा थें जो भया जी ख्वार॥
राती माती प्रेम की, विष भगत को मोड़।
राम अमल माती रहे, धन मीराँ राठौड़॥

× × ×

मैं जाण्यो नाहीं प्रभु को मिलण कैसे होइरी।
आये मेरे सजना फिरि गये अँगना, मैं अभागण रही सोइरी।
फारूँगी चीर करूँ गल कंथा, रहूँगी बैरागण होइरी।
चुरियाँ फोरूँ माँग बखेरूँ, कजरा मैं डारूँ धोइरी।
निसवासर मोहि विरह सतावै, कल न परत मोइरी।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, मिलि बिछुरो मति कोइरी॥

× × ×

जोगियाजी निसिदिन जोऊँ वाट।
पाँव न चालै पंथ दुहेलो, आड़ा औघट घाट।
नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीत न पाइ।
मैं भोली भोलापन कीन्हौ, राख्यौ नहिं विलमाइ।
जोगिया कूँ जोवत बोहो दिन बीता, अजहूँ आयो नाहिं।
विरह बुझावण अन्तरि आवो, तपत लगी तन माहि।
कै तो जोगी जग में नहीं, कैर विसारी मोइ।
काँइ करूँ कित जाऊँरी सजनी, नैण गुमायो रोइ।
आरति तेरी अन्तरि मेरे, आवो अपनी जाणि।
मीराँ व्याकुल विरहिणी रे, तुम बिनि तलफत प्राणि॥

× × ×

जोगी मत जा मत जा मत जा, पाँइ परूँ मैं चेरी तेरी हौ।
प्रेम भगति को पैड़ो ही न्यारा, हमकूँ गैल वता जा।
अगर चँदण की चिता वणाऊँ, अपणे हाथ जला जा।
जल वल भई भस्म की ढेरी, अपणे अंग लगा जा।
मीराँ कहै प्रभु गिरधर नागर, जोत मे जोत मिला जा॥

× × ×

होजो म्हाँराज छोड़ मत जाज्यो।
मैं अबला वल नाहिं गुसाईं, तुमहि मेरे सिरताज।
मै गुणहीन गुण नाहि गुसाईं, तुम समरथ महराज।
रावली होइ के किणरे जाऊँ, तुमहौ हिवड़ा रो साज।
मीराँ के प्रभु और न कोई, राखौ अवके लाज॥

× × ×

ऐसी लगन लगाइ कहाँ तू जासी।
तुम देखे विन कलि न परति है, तलफि तलफि जिव जासी।
तेरे खातिर जोगण हूँगी, करवत लूँगी कासी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल की दासी॥

× × ×

पियाजी म्हांरे नैणाँ आगे रहज्यो जी।
नैणाँ आगे रहज्यो, म्हांने भूल मत जाज्यो जी।
भौसागर में वही जात हूँ वेग म्होंरी सुध लीज्यो जी।
राणाजी भेज्या विख का प्याला, सो इमरित कर दीज्यो जी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, मिल विछुड़न मत कीज्यो जी॥

× × ×

जागो म्हाँरा जगपति राइक, हंसि वोलो क्यूँ नाहीं।
हरि छीजी हिरदा माँहि, पट खोलो क्यूँ नहीं॥
तन मन सुरति सँजोइ, सीस चरणाँ धरूँ।
जहाँ जहाँ देखूँ म्हारो राम, जहाँ सेवा करूँ॥
सदकै करूँ जी सरीर जुगै जुग वारणै।
छोड़ी छोड़ी कुल की लाज, साहिव तेरे कारणै॥
थोड़ी थोड़ी लिखूँ सिलाम, वहोत करि जाणज्यौ।
वन्दी हूँ खानाजाद, महरि करि मानज्यो॥
हाँ हो म्हारा नाथ सुनाथ, बिलम नहि कीजियै।
मीराँ चरणाँ की दास, दरस अब दीजियै॥

× × ×

जावादे जावादे जोगी किसका मीत ।
सदा उदासी रहै मोरि सजनी, निपट अटपटी रीत ।
बोलत बचन मधुर से मानूँ, जोरत नाहीं प्रीत ।
मै जाणूँ या पार निभैगी, छांड़ि चले अधबीच ।
मीराँ के प्रभु स्याम मनोहर प्रेम पियारा मीत ॥

× × ×

धूतारा जोगी एकरसूँ हंसि बोल ।
जगत बदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल ।
अंग भभूति गले मृगछाला, तू जन गुढियाँ खोल ।
सदन सरोज वदन की सोभा, ऊभी जोऊँ कपोल ।
सेली नाद बभूत न बटवो, अजूँ मुनी मुख खोल ।
चढ़ती बैस नैण अणियाले, तूँ घरि घरि मत डोल ।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, चेरी भई बिन मोल ॥

× × ×

हरि तुम हरो जन की भीर ।
द्रोपदी क लाज राखी, तुरत बाढ्यौ चीर ।
भक्त कारण रूप नरहरि, धरयौ आप सरीर ।
हिरणाकुश मारि लीन्ह, धरयौ नाहिं न धीर ।
बूड़तो गजराज राख्यौ, कियौ बाहर नीर ।
दासी मीराँ लाल गिरधर, चरण कँवल पै सीर ।

× × ×

अबतो निभायाँ सरेगी, बाँह गहे की लाज ।
समरथ सरण तुम्हारी सइयाँ, सरब सुधारण काज ।
भव सागर संसार अपरबल, जामें तुम हो भयाज ।
निरधाराँ आधार जगत गुरु, तुम बिन होय अकाज ।
जुग जुग भीर हरी भगतन की, दीनी मोच्छ समाज ।
मीराँ सरण गही चरणन की, लाज रखो महाराज ॥

× × ×

हरि बिन कूण गती मेरी ।
तुम मेरे प्रतिपाल कहिये, मै रावरी चेरी ।
आदि अन्त निज नाँव तेरो, हीया मे फेरी ।
बेरि बेरि पुकारि कहूँ, प्रभु आरति है तेरी ।

यौ संसार विकार सागर, बीच में घेरी।
नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो, बूड़त है बेरी।
विरहणि पियकी बाट जोवै, राखिल्यौ नेरी।
दासि मीराँ राम रटत है, मैं सरण हूँ तेरी॥

× × ×

प्रभु जी थे कहाँ गया नेहड़ी लगाय।
छोड़ गया विस्वास सँगाती, प्रेम की बाती बराय।
बिरह समँद में छोड़ गया छो, नेह की नाव चलाय।
मीराँ के प्रभु कबरे मिलोगे, तुम बिनि रह्योइ न जाय॥

× × ×

डारि गयो मनमोहन पासी।
आँबा की डालि कोइल इक बोलै, मेरो मरण अरु जग केरी हाँसी।
बिरह की मारी मैं बन बन डोलूँ, प्रान तजूँ करवत ल्यूँ कासी।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, तुम मेरे ठाकुर मैं मेरी दासी॥

× × ×

माई म्हारी हरिह न बूझी बात।
पंड माँसूँ प्राण पाती, निकसि क्यूँ नहीं जात॥
पाट न खोल्या मुखाँ न बोल्याँ, साँझ भई परभात।
अबोलणाँ जुग बीतण लागो, तो काहे की कुसलात॥
सावण आवण कह गया रे, हरि आवण की आस।
रैण अंधेरी बीज बीज चमकै, तारा गिणत निरास॥
लेइ कटारी कंठ सारूँ, मरूँगी विष खाइ।
मीराँ दासी राम राती, लालच रही ललचाइ॥

× × ×

परम सनेही राम की निति ओलूँरी आवै।
राम हमारे हम हैं राम के, हरि बिन कछू न सुहावै॥
आवण कह गये अजहुँ न आये, जिवड़ो अति उकतावै।
तुम दरसण की आस रमैया, कब हरि दरस दिखावै॥
चरण कँवल की लगनि लगी नित, बिन दरसन दुख पावै।
मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्यौ, आँणद बरण्यूँ न जावै॥

× × ×

जोगिया जी छाइ रह्या परदेस ।
जब का बिछुड़्या फेर न मिलिया, बहोरि न दियो संदेस ।
या तन ऊपरि भसम रमाऊँ, खोर करूँ सिर केस ।
भगवाँ भेख धरूँ तुम कारण, ढूँढत च्यारूँ देस ।
मीराँ के प्रभु राम मिलण कूँ, जीवनि जनम अनेस ॥

× × ×

रमइया बिनि रह्योइ न जाय ।
खान पान मोहि फीको सो लागै, नैणा रहे मुरझाइ ।
बार बार मैं अरज करत हूँ, रैण गई दिन जाय ।
मीराँ कहै हरि तुम मिलियाँ बिनि, तरस तरस तन जाइ ॥

× × ×

हेरी मैं तो दरद दिवाणी होइ, दरद न जाणै मेरो कोइ ।
घायल की गति घाइल जाणैं, की जिण लाई होइ ।
जौहरि की गति जौहरी जाणै, की जिनि जौहर होइ ॥
सूली ऊपरि सेज हमारी, सोवण किस विध होइ ।
गॅगन मँडल पै सेज पिया की, किस विध मिलणा होइ ॥
दरद की मारी बन बन डोलूँ, बैद मिल्या नहिं कोइ ।
मीराँ की प्रभु पीर मिटेगी, जब बैद सॉवलिया होइ ॥

× × ×

पीया बिनि रह्यौइ न जाइ ।
तन मन मेरो पिया पर वारूँ, बार बार बलि जाइ ।
निस दिन जोऊँ बाट पिया की, कबरे मिलोगे आइ ।
मीराँ के प्रभु आस तुमारी, लीज्यौ कंठ लगाइ ॥

× × ×

नातो नाम को मोसूँ तनक न तोड़्यो जाइ ।
पानाँ ज्यूँ पीली पड़ी रे, लोग कहैं पिंड रोग ।
छाने लाँघण मैं किया रे, राम मिलण के जोग ॥
बाबल बैद बुलाइया रे, पकड़ दिखाई म्हाँरी बाँह ।
मूरिख बैद मरम नहिं जाणै, करक कलेजा माँह ॥
जा बैदा घरि आपणे रे, मेरो नाँव न लेइ ।
मैं तो दाधी बिरह की रे, तूँ काहे कूँ दारू देइ ॥
माँस गलै गल छीजिया रे, करक रह्या गल आहि ।
आँगलियाँ री मूदड़ो, म्हारे आवण लागी बाँहि ॥

रहो रहो पावी पपीहा रे, पिव को नाम न लेइ।
जे कोइ विरहणि साम्हले, (सजनी) पिव कारण जीव देइ ॥
खिण मंदिर खिण आगणै रे, खिण खिण ठाढी होइ।
घायल ज्यूँ घूमूँ सादरी, म्हाँरी विथा न बूझै कोइ ॥
काढ़ि कलेजो मैं धरूँ रे, कौवा तू ले जाइ।
ज्याँ देसाँ म्हाँरो पिव बसै, (सजनी) वे देखै तू खाइ ॥
म्हांरे नातो नाव कोरे, और न नातो कोइ।
मीराँ व्याकुल विरहणी रे, पिया दरसण दीजो मोइ ॥

× × ×

रमैया विन नींद न आवै।
नींद न आवे विरह सतावे, प्रेम की आँच ढुलावै।
विन पिया जोत मंदिर अँधियारो, दीपक दाय न आवै।
पिया बिन मेरी सेज अलूनी, जागत रैण विहावै।
पिया कब रे घर आवै।
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल सबद सुणावै।
घुमँट घटा ऊलर होइ आई, दामिन दमक डरावै।
नैन झर लावै।
कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी, वेदन कूण बुतावै।
बिरह नागण मोरी काया डसी है, लहर लहर जिव जावै।
जड़ी घस लावै।
कौहै सखी सहेली सजनी, पिया कूँ आन मिलावै।
मीराँ कूँ प्रभु कबरे मिलोगे, मन मोहन मोहि भावै।
कबै हँस कर बतलावै ॥

× × ×

नींदलड़ी नहिं आवै सारी रात, किस विधि होइ परभात।
चमक उठी सुपने सुध भूली, चन्द्रकला न सोहात।
तलफ तलफ जिव जाय हमारो, कबरे मिले दीनानाथ।
भइहूँ दिवानी तन सुध भूली, कोई न जानी म्हाँरी बात।
मीराँ कहै बीती सोइ जानै, मरण जीवण उन हाथ ॥

× × ×

पतियाँ मैं कैसे लिखूँ, लिखही न जाय।
कलम धरत मेरो कर कंपत, हिरदो रहो धर्राई।
बात कहूँ मोहि बात न आवै, नैन रहै झर्राई।

किस विध चरण कमल मैं गहिहौं, सबहि अंग थर्राई।
मीराँ कहै प्रभु गिरधर नागर, सबही दुख विसराई॥

× × ×

होली पिया बिन लागे खारी, सुनो री सखी मेरी प्यारी।
सूनो गाँव देस सब सूनो, सूनी सेज अटारी।
सूनी बिरहन पिव बिन डोलै, तज दइ पीव पियारी।
भई हूँ या दुख कारी।

देस विदेस सँदेस न पहुँचै, होय अँदेसा भारी।
गिणताँ गिणताँ घस गईं रेखा, आँगरियाँ की सारी।
अजहूँ नहिं आये मुरारी।

बाजत झाँझ मृदंग मुरलिया, बाज रही इकतारी।
आयो बसंत कंत घर नाहीं, तन में जर भया भारी।
स्याम मन कहा विचारी।

अबतो मेहर करो मुझ ऊपर, चित दे सुणो हमारी।
मीराँ के प्रभु मिलज्यो माधो, जनम जनम की कँवारी।
लगी दरसण की तारी॥

× × ×

होली पिया बिन मोहिं न भावै, घर आँगण न सुहावे।
दीपक जोय कहा करूँ हेली, पिय परदेस रहावे।
सूनी सेज जहर ज्यूँ लागे, सुसक सुसक जिय जावे।
नींद नहि आवे।

कब की ठाढ़ी मैं मग जोऊँ, निसदिन बिरह सतावे।
कहा कहूँ कछु कहत न आवे, हिवड़ो अति अकुलावे।
पिया कब दरस दिखावे।

ऐसा है कोई परम सनेही, तुरत सँदेसो लावे।
वा बिरियाँ कब होसी मोकूँ, हँस कर निकट बुलावे।
मीराँ मिल होली गावे॥

× × ×

किण सँग खेलूँ होली, पिया तज गये हैं अकेली।
माणिक मोती सब हम छोड़े, गल में पहनी सेली।
भोजन भवन भलो नहि लागै, पिया कारण भई गेली।
मुझे दूरी क्यूँ म्हेली।

अब तुम प्रीत और सूँ जोड़ी, हमसे करी क्यूँ पहेली।
वहु दिन बीते अजहुँ न आये, लग रही ताला बेली।
किण बिलमाये हेली।

स्याम बिना जियड़ो मुरझावे, जैसे जल बिन बेली।
मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्यो, जनम जनम की चेली।
दरस बिन खड़ी दुहेली॥

× × ×

मतवारो बादर आए रे, हरि को सनेसो कबहुँ न लाए रे।
दादर मोर पपइया बोलै, कोयल सबद सुणाए रे।
(इक) कारी अँधियारी बिजरी चमकै, बिरहणि अति डरपाए रे।
(इक) गाजै बाजै पवन मधुरिया, मेहा अति झड़ लाए रे।
(इक) कारी नाग बिरह अति जारी, मीराँ मन हरि भाए रे॥

× × ×

बादल देख डरी हो स्याम मैं, बादल देख डरी।
काली पीली घट ऊमटी, बरस्यो एक घरी।
जित जाऊँ तित पाणी पाणी, हुई हुई भोम हरी।
जाका पिया परदेस बसत है, भीजूँ बाहर खरी।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, कीज्यौ प्रीत खरी॥

× × ×

रे पपइया प्यारे कब को बैर चितारयौ।
मैं सूती छी अपने भवन में, पिय पिय करत पुकारयो।
दाध्या ऊपर लूण लगायो, हिवड़ो करवत सार्‌यो।
उठि बैठो वा वृच्छ की डाली, बोल बोल कंठ सार्‌यो।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ चित धार्‌यो॥

× × ×

पपइया रे पिव की वाणि न बोल।
सुणि पावेली बिरहणी रे, थारो रालैली आँख मरोड़।
चोंच कटाऊँ पपइया रे, ऊपरि कालर लूण।
पिव मेरा मैं पीव की रे, तू पिव कहै स कूण।
थारा सबद सुहावणा रे, जो पिव मेला आज।
चोंच मढाऊँ थारी सोवनी रे, तू मेरे सिरताज।
प्रीतम कूँ पतियाँ लिखूँ, कउवा तू ले जाइ।
जाइ प्रीतम जी सूँ यूँ कहै रे, थाँरी बिरहणि धान न खाइ।

मीराँ दासी व्याकुली है, पिव पिव करत बिहाइ ।
वेगि मिलो प्रभु अंतरजामी, तुम विनि रह्योही न जाइ ॥

× × ×

हे मेरो मन मोहना ।
आयो नहीं सखीरी, हे मेरो० ॥
कैं कहुँ काज किआ संतन का, कैं कहुँ गैल भुलावना ।
कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी, लाग्यो है बिरह सँतावना ।
मीराँ दासी दरसण प्यासी, हरि चरणाँ चित लावणा ॥

× × ×

मैं विरहणि बैठी जागूँ, जगत सब सोवै री आली ।
बिरहणि बैठी रंगमहल में, मोतियन की लड़ पोवै ।
इक विरहणि हम ऐसी देखी, अँसुवन की माला पोवै ।
तारा गिण गिण रैण बिहानी, सुख की घड़ी कब आवै ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, मिल के बिछुड़ न जावै ॥

× × ×

सखी मेरी नींद नसानी हो ।
पिय को पंथ निहारत, सिगरी रैण बिहानी हो ॥
सब सखियन मिली सीख दई, मन एक न मानी हो ।
विनि देख्याँ कल नाहिं पड़त, जिय ऐसी ठानी हो ॥
अंगि अंगि व्याकुल भई, मुखि पिय पिय बानी हो ।
अन्तर वेदन विरह की, वह पीड़ न जानी हो ॥
ज्यूँ चातक घन कूँ रटै, मछरी जिमि पानी हो ।
मीराँ व्याकुल विरहणी, सुध बुध विसरानी हो ॥

× × ×

जोगियारी सूरत मन में वसी ।
नित प्रति ध्यान धरत हूँ दिल में, निस दिन होत कुसी ।
कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी, मनो सरप डसी ।
मीराँ कहे प्रभु कबरे मिलोगे, प्रीत रसीली बसी ॥

× × ×

प्रभु विनि ना सरै माई ।
मेरा प्राण निकस्या जात, हरी विन ना सरै माई ॥

कमठ दादुर कसत जल में, जल से उपजाई।
मीन जल से बाहर कीना, तुरत मर जाई।
काठ लकरी वन परी, काठ बुन खाई।
ले अगन प्रभु डार आये, भसम हो जाई।
वन वन ढूँढ़त मैं फिरी, आली सुधि नही पाई।
एक बेर दरसण दीजै, सब कसर मिटि जाई।
पात ज्यूँ पीरी परी, अरु विपत तन छाई।
दास मीराँ लाल गिरधर, मिल्या सुख छाई।

× × ×

मैं हरि बिनि क्यूँ जिवूँरी माइ।
पिय कारण बौरी भई, ज्यूँ काठहिं घुन खाइ।
ओखद मूल न संचरै, मोहि लाग्यो बौराइ।
कमठ दादुर वसत जल मे, जलहि तै उपजाइ।
मीन जल के बिछुरे तन, तलफि करि मरि जाइ।
पिव ढूँढण वन वन गई, कहुँ मुरली धुन पाइ।
मीराँ के प्रभु लाल गिरधर, मिलि गये सुखदाइ।

× × ×

राम मिलण के काज सखी, मेरे आरति उर मे जागी री।
तलफत तलफत कल न परत है, बिरहबाण उरि लागी री।
निसदिन पंथ निहारूँ पीव को, पलकन पल भरि लागी री।
पीव पीव मै रटूँ रात दिन, दूजी सुधि बुधि भागी री।
विरह भवँग मेरो डस्यो है कलेजो, लहरि हलाहल जागी री।
मेर आरति मेटि गुसाईं, आइ मिलौ मोहि सागी री।
मीराँ व्याकुल अति उकलाणी, पिया की उमंग अति लागी री॥

× × ×

रामनाम मेरे मन बसियो, राम रसियो रिझाऊँ, ए माय।
मंद भागिण करम अभागिण, कीरत कैसे गाऊँ, ए माय।
बिरह पिंजर की वाड़ सखीरी, उठकर जी हुलसाऊँ, ए माय।
मन कूँमार सजूँ सतगुरु सूँ, दुरमत दूर गमाऊँ, ए माय।
डाको नाम सुरत की डोरी, कड़ियाँ प्रेम चढ़ाऊँ, ए माय।
ज्ञान को ढोल वन्यो अति भारी, मगन होय गुण गाऊँ, ए माय।
तन करूँ ताल मन करूँ मोरचँग, सोती सुरत जगाऊँ, ए माय।
निरत करूँ मै प्रीतम आगे, तो अमरापुर पाऊँ, ए माय।

मो अवला पर किरपा कीज्यो, गुण गोविंद के गाऊँ, ए माय।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, रज चरणाँ की पाऊँ, ए माय।

× × ×

स्याम सुंदर पर वार।
जीवड़ा मैं वार डारूँगी, स्याम सुँदर० ॥
तेरे कारण जोग धारणा, लोक लाज कुल डार।
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, नैन चलत दोउँ वार।
कहा करूँ कित जाऊँ मेरी सजनी, कठिन विरह की धार।
मीराँ कहै प्रभु कबरे मिलोगे, तुम चरणाँ आधार ॥

× × ×

करणाँ सुणि स्याम मेरी।
मैं तो होइ रही चेरी तेरी ॥
दरसण कारण भई बावरी, विरह बिथा तन घेरी।
तेरे कारण जोगण हूँगी, दूँगी नग्र बिच फेरी।
कुंज सब हेरी हेरी।

अंग भभूत गले म्रिग छाला, योतन भसम करूँरी।
अजहुँ न मिल्या राम अविनासी, वन वन वीच फिरूँरी।
रोऊँ नित टेरी टेरी।

जन मीराँ कूँ गिरधर मिलिया, दुख मेटण सुख भेरी।
रूम रूम साता भइ उर में, मिटि गई फेरा फेरी ॥

× × ×

पिया अब घर आज्यो मेरे, तुम मोरे हूँ तोरे।
मैं जन तेरा पंथ निहारूँ, मारग चितवत तोरे।
अवध वदीती अजहुँ न आये, दुतियन सूँ नेह जोरे।
मीराँ कहे प्रभु कबरे मिलोगे, दरसन विन दिन दोरे ॥

× × ×

भवन पति तुम घरि आज्यो हो।
बिथा लगी तन माहिंने (म्हारी), तपत बुझाज्यो हो ॥
रोवत रोवत डोलोंत, सब रैण विहावै हो।
भूख गई निदरा गई, पापी जीव न जावै हो।
दुखिया कूँ सुखिया करो, मोहि दरसण दीजै हो।
मीराँ व्याकुल बिरहणी, अब विलम न कीजै हो ॥

× × ×

म्हारे घर रमतो ही आई रे तू जोगिया।
कानाँ बिच कुंडल गले बिच सेली, अंग भभूत रमाई रे।
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, ग्रिह ऑगणो न सुहाई रे।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, दरसण द्यो मोकूँ आई रे॥

× × ×

आवो मनमोहना जी मीठा थाँरो बोल।
बालपनाँ की प्रीत रमइयाजी, कदे नाहिं आयो थाँरो तोल।
दरसण बिन मोहि कल न परत है, चित मेरो डाँवाडोल।
मीराँ कहै मैं भई रावरी, कहो तो वजाऊँ ढोल॥

× × ×

प्यारे दरसण दीज्यो आय, तुम बिन रह्यो न जाय।
जल बिन कँवल चंद बिन रजनी, ऐसे तुम देख्याँ बिन सजनी।
व्याकुल व्याकुल फिरूँ रैण दिन, बिरह कलेजो खाय।
दिवस न भूख नींद नहिं रैणा, मुखसूँ कथत न आवै बैणा।
कहा कहूँ कुछ कहत न आवै, मिल कर तपत बुझाय।
क्यूँ तरसावो अंतरजामी, आय मिलो किरपा कर स्वामी।
मीराँ दासी जनम जनम की, परी तुम्हारे पाय॥

× × ×

घड़ी एक नहिं आवड़े, तुम दरसण बिन मोय।
तुम हो मेरे प्राण जी, कासूँ जीवण होय॥
धान न भावै नींद न आवे, विरह सतावे मोहि।
घायल सी घूमत फिरूँ रे, मेरो दरद न जाणै कोय॥
दिवस तो खाय गमाइतो रे, रैण गमाई सोइ।
प्राण गमायो झूरताँ रे, नैण गमाया रोइ॥
जो मैं ऐसी जाणती रे, प्रीत कियाँ दुख होइ।
नगर ढँढोरा फेरती रे, प्रीत करो मत कोइ॥
पंथ निहारो डगर बुहारूँ, ऊभी मारग जोइ।
मीराँ के प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलिया सुख होइ॥

× × ×

दरस बिन दूखण लागे नैण।
जब के तुम बिछुरे प्रभु मोरे, कबहुँ न पायो चैन।
सबद सुणत मेरी छतियाँ काँपै, मीठे मीठे बैन।
बिरह कथा कासूँ कहूँ सजनी, वह गई करवत ऐन।

कल न परत पल हरि मग जोवत, भई छमासी रैण।
मीराँ के प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटण सुख दैण।।

× × ×

तुमरे कारण सब सुख छाड्या, अब मोहि क्यूँ तरसावौ हो।
विरह विथा लागी उर अन्तर, सो तुम आप बुझावौ हो।
अब छोड़त नहिं बणै प्रभूजी, हंसि कर तुरत बुलावौ हो।
मीराँ दासी जनम जनम की, अंग से अंग लगावौ हो।।

× × ×

तूँ नागर नंदकुमार, तोसों लाग्यो नेहरा।
मुरली तेरी मन हर्यो, विसर्यो ग्रिह ब्योहार।।
जबतैं स्रवननि धुनि परी, ग्रिह अँगना न सुहाय।
पारधि ज्यूँ चूकै नहीं, मृगी वेधि दई आय।।
पानी पीर न जाणई, मीन तलफि मरि जाइ।
रसिक मधुप के मरम को, नहिं समुझत कँवल सुभाइ।।
दीपक को जु दया नहीं, उड़ि उड़ि मरत पतंग।
मीराँ प्रभु गिरधर मिले, (जैसे) पाणी मिल गयो रंग।।

× × ×

म्हाँरो जनम मरन को साथी, थांने नहिं बिसरूँ दिन राती।
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, जानत मेरी छाती।
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ, रोये अखियाँ राती।
यो संसार सकल जग झूँठो, झूँठा कुलरा न्याती।
दोउ कर जोड्यां अरज करत हूँ, सुण लीज्यो मेरी बाती।
यो मन मेरो बड़ो हरामी, ज्यूँ मदमातो हाथी।
सतगुरु दस्त धर्यो सिर ऊपर, आंकुस दे समझाती।
पल पल तेरा रूप निहारूँ, निरख निरख सुखपाती।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ चित राती।

× × ×

सजन सुध ज्यूँ जाणे त्यूँ लीजै हो।
तुम बिन मोरे और न कोई, क्रिपा रावरी कीजै हो।
दिन नहिं भूख रैण नहिं निंदरा, यूँ तन पलपल छीजै हो।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, मिल बिछड़न मत कीजै हो।।

× × ×

राम मिलण रो घणो उमावो, नित उठ जोऊँ बाटड़ियाँ।
दरस विना मोहि कछु न सुहावै, जक न पड़त है आँखड़ियाँ।
तलफत तलफत वहु दिन बीता, पड़ी बिरह की पाशड़ियाँ।
अब तो वेगि दया करि साहिब, मैं तो तुम्हारी दासड़ियाँ।
नैण दुखी दरसण कूँ तरसै, नाभिन बैठे साँसड़ियाँ।
राति दिवस यह आरति मेरे, कब हरि राखै पासड़ियाँ।
लागी लगनि छूटण की नाहीं, अब क्यूँ कीजै आँटड़ियाँ।
मीराँ के प्रभु कब रे मिलोगे, पूरो मन की आसड़ियाँ॥

× × ×

म्हाँरे घर होता जाज्यो राज।
अब के जिन टाला दे जावो, सिर पर राखूँ बिराज।
म्हे तो जनम-जनम की दासी, थे म्हाँका सिरताज।
पावणड़ा म्हांके भलाँ ही पधारो, सब ही सुधारण काज।
म्हे तो बुरी छाँ थांके भली छै घणेरी, तुम हो एक रसराज।
थांने हम सबहिन की चिंता तुम, सबके हो गरिब निवाज।
सबके मुकट सिरोमनि सिर पर, मानुँ पुण्य की पाज।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बाँह गहे की लाज॥

× × ×

कबहूँ मिलोगो मोहि आई, रे तूँ जोगिया।
तेरे कारण जोग लियो है, घरि घरि अलख जगाई।
दिवस न भूख रैण नहिं निंदरा, तुम बिनु कछू न सुहाई।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, मिलि करि तपति बुझाई॥

× × ×

गोविंद कबहुँ मिलै पिया मेरा।
चरण कवल कूँ हंसि-हंसि देखूँ राखूँ नैणाँ नेरा।
निरखण कूँ मोहि चाव घणेरो, कब देखूँ मुख तेरा।
व्याकुल प्राण धरति नहिं धीरज, मिलि तूँ मीत सवेरा।
मीराँ के प्रभु हरि गिरधर नागर, ताप तपन बहुतेरा।

× × ×

म्हाँरी सुध ज्यूँ जानो ज्यूँ लीजो जी।
पल-पल भीतर पंथ निहारूँ, दरसण म्हांने दीजो जी।
मैं तो हूँ बहु औगणहारी, औगण चित मत दीजो जी।

मैं तो दासी थांरे चरण कँवल की, मिल विछुरन मत कीज जी।
मीराँ तो सतगुर जी सरणे, हरि चरणाँ चित दीजो जी॥

× × ×

म्हांरे घर आज्यो प्रीतम प्यारा, तुम विन सब जग खारा।
तन मन धन सब भेंट करूँ, ओ भजन करूँ मैं थाँरा।
तुम गुणवंत बड़े गुणसागर, मैं हूँ जी औगणहारा।
मैं निगुणीं गुण एको नाहीं, तुझमें जी गुण सारा।
मीराँ कहै प्रभु कवहिं मिलौगे, विन दरसण दुखियारा॥

× × ×

तुम आज्यो जी रामा, आवत आस्याँ सामा।
तुम मिलियाँ मैं बहु सुख पाऊँ, सरै मनोरथ कामा।
तुम विच हम विच अंतर नाहीं, जैसे सूरज घामा।
मीराँ मन के और न माने, चाहे सुन्दर स्यामा॥

× × ×

पिया मोहिं दरसण दीजै हो।
वेर वेर मैं टेरहूँ, अहे क्रिपा कीजै हो।
जेठ महीने जल विना, पंछी दुख होई हो।
मोर आसाढ़ाँ कुरलहे, घन चात्रग सोई हो।
सावण में झड़ लागियौ, सखि तीजाँ खेलै हो।
भादरवै नदिया वहै, दूरी जिन मेलै हो।
सीप स्वाति ही झेलती, आसोजाँ सोई हो।
देव काती में पूजहे, मेरे तुम होई हो।
मगसर ठंड वहोती पड़ै, मोहि वेगि सम्हालो हो।
पोस मही पाला घणा, अवही तुम न्हालो हो।
महा मही वसंत पंचमी, फागाँ सव गावै हो।
फागुण फागा खेलहैं, वणराइ जरावै हो।
चैत चित्त में ऊपजी, दरसण तुम दीजै हो।
वैसाख वणराइ फूलवै, कोइल कुरलीजै हो।
काग उड़ावत दिन गया, वूझूँ पंडित जोसी हो।
मीराँ विरहणि व्याकुली, दरसण कव होसी हो॥

× × ×

जोगिया जी आवो ने या देस।
नैणज देखूँ नाथ मेरो, ध्याइ करूँ आदेस।

आया सावण कास सजनी, भरे जल थल ताल।
रावल कुण विलमाइ राखो, विरहनि है बेहाल।
बीछड़ियाँ कोइ भौ भयो (रे जोगी), ऐ दिन अहला जाय।
एक वेरी देह फेरी, नगर हमारे आय।
वा मूरति मेरे मन बसे (रे जोगी), छिन भरि रह्यौइ न जाय।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, दरसण द्यौ हरि आय॥

× × ×

जोगिया ने कहज्यो जी आदेस।
जोगियो चतुर सुजाण सजनी, ध्यावै संकर सेस।
आऊँगी मैं नाह रहूँगी (रे म्हारा), पीव विना परदेस।
करि किरपा प्रतिपाल मो परि, रखो न आपण देस।
माला मुदरा मेखला रे वाला, खप्पर लूँगी हाथ।
जोगणि होइ जुग ढूँढसूँ रे, म्हाँरा रावलियारी साथ।
सावण आवण कह गया वाला, कर गया कौल अनेक।
गिणता-गिणता घिस गई रे, म्हाँरा आँगलियाँरी रेख।
पीव कारण पीली पड़ी वाला, जोवन वाली वेस।
दास मीराँ राम भजि कै, तन मन कीन्हौं पेस॥

× × ×

थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ,
मैं हाजिर नाजिर कबकी खड़ी।
साजनियाँ दुसमण होय बैठ्या, सब ने लगूँ कड़ी।
तुम बिन साजन कोइ नहीं है, डिगी नाव मेरी समँद अड़ी।
दिन नहिं चैन रैण नहिं निंदरा, सूखूँ खड़ी खड़ी।
वाण विरह का लग्या हिये में, भूलूँ न एक घड़ी।
पत्थर की तो अहिल्या तारी, वन के बीच पड़ी।
कहा बोझ मीराँ में कहिये, सौ पर एक धड़ी॥

× × ×

इण सरवरियाँ री पाल मीराँबाई साँपड़े।
साँपड़ किया असनान, सूरज सामी जप करे।
होय विरंगी नार, डगराँ विच क्यूँ खड़ी।
कांई थारो पीहर दूर, घराँ सासू लड़ी।
चल्यो जारे असल गुँवार, तनै मेरी के पड़ी।

गुरु म्हारा दीन दयाल, हीरॉरा पारखी।
दियो म्हाने ग्यान बताय, संगत कर साधरी।
खोई कुल की लाज, मुकुंद थांरे कारणे।
वेगही लीज्यो सँभाल, मीराँ पड़ी वारणे॥

× × ×

पिय विनि सूनो छै म्हांरो देस।
ऐसा है कोई पीवकूँ मिलावै, तन मन करूँ सब पेस।
तेरे कारण वन वन डोलूँ, कर जोगण को भेस।
अवधि वदीती अजूँ न आए, पंडर होइ गया केस।
मीराँ के प्रभु कवरे मिलोगे, तजि दियो नगर नरेस॥

× × ×

कोई कहियो रे प्रभु आवन की।
आवन की मनभावन की, कोई० ॥
आप न आवै लिख नहिं भेजै, बाँण पड़ी ललचावन की।
ए दोइ नैण कह्यो नहिं मानै, नदिया बहै जैसे सावन की।
कहा करूँ कछु नहिं वस मेरो, पाँख नहीं उड़ जावन की।
मीराँ कहे प्रभु कवरे मिलोगे, चेरी भइ हूँ तेरे दाँवन की।

× × ×

भीजे म्हाँरो दाँवन चीर, सावणियो लूम रह्यो रे।
आप तो जाय विदेसाँ छाये, जिवड़ो धरत न धीर।
लिख लिख पतियाँ संदेसा भेजूँ कब घर आवै म्हाँरो पीव।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, दरसन दो वलवीर॥

× × ×

मेरे प्रियतम प्यारे राम कूँ, लिख भेजूँ रे पाती।
स्याम सनेसो कबहुँ न दीन्हौ, जानि वूझ गुझवाती।
डगर बुहारूँ पंथ निहारूँ, जोइ जोइ अखियाँ राती।
राति दिवस मोहि कल न पड़त है, हीयो फटत मेरी छाती।
मीराँ के प्रभु कवरे मिलोगे, पूरब जनम का साथी॥

× × ×

मोहि लागी लगन गुरु चरनन की।
चरन विन कछुवै नाहिं भावै, जग माया सब सपनन की।

भवसागर सब सूखि गयो है, फिकर नहीं मोहिं तरनन की ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, आस बसी गुरु सरनन की ।।

× × ×

स्याम तेरी आरति लागी हो ।
गुरु परतापे पाइया, तन दुरमति भागी हो ।
या तन को दियना करों, मनसा करों बाती हो ।
तेल भरावों प्रेम का, बारों, दिन राती हो ।
पाटी पारों ज्ञान की, मति मॉंग सॅवारो हो ।
तेरे कारन सॉंवरे, धन जोबन वारों हो ।
या सेजिया बहु रंग की, बहु फूल बिछाये हो ।
पंथ मै जो हौं स्याम का, आजहुँ नहि आये हो ।
सावन भादों ऊमड़ो, बरषा रितु आई हो ।
भौंह घटा घन घेरि के, नैनन झरि आई हो ।
मात पिता तुमको दियो, तुमही भल जानों हो ।
तुम तजि और भतार को, मन में नहि आनों हो ।
तुम प्रभु पूरन ब्रह्म हो, पूरन पद दीजै हो ।
मीराँ व्याकुल विरहनी, अपनी करि लीजै हो ।।

× × ×

तुम सुणौ दयाल म्हाँरी अरजी ।
भवसागर में बही जात हूँ, काढ़ों तो थाँरी मरजी ।
यौ संसार सगो नहिं कोई, सॉंचा सगा रघुवरजी ।
मात पिता औ कुटम कबीलो, सब मतलब के गरजी ।
मीराँ की प्रभु अरजी सुण लो, चरण लगावो थाँरी मरजी ।।

× × ×

मैं तो तेरी सरण परी रे रामा, ज्यूँ जाणे त्यूँ तार ।
अड़सठ तीरथ भ्रमि भ्रमि आयो, मन नाही मानी हार ।
या जग में कोई नहिं अपणा, सुणियौ श्रवन मुरार ।
मीराँ दासी राम भरोसे, जम का फंदा निवार ।

× × ×

अब मैं सरण तिहारी जी, मोहिं राखो कृपानिधान ।
अजामील अपराधी तारे, तारे नीच सदान ।
जल डूबत गजराज उबारे, गणिका चढ़ी विमान ।

और अधम तारे बहुतेरे, भाखत संत सुजान।
कुबजा नीच भीलणी तारी, जाने सकल जहान।
कहँ लगि कहूँ गिणत नहिं आवै, थकि रहे बेद पुरान।
मीराँ कहै मैं सरण रावलो, सुनियो दोनों कान॥

× × ×

मेरो बेड़ो लगाज्यो पार, प्रभुजी मैं अरज करूँ छूँ।
या भव मे मैं बहु दुख पायो, संसा सोग निवार।
अष्ट करम की तलब लगी है, दूर करो दुख भार।
यो संसार सब बह्यो जात है, लख चौरासी री धार।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, आवागमन निवार॥

× × ×

रावलो बिड़द मोहि रूड़ो लागे, पीड़ित पराये प्राण।
सगो सनेही मेरी और न कोई, बैरी सकल जहान।
ग्राह गह्यो गजराज उबारयो, बूड़ न दियो छे जान।
मीराँ दासी अरज करत है, नहिं जो सहारो आन॥

× × ×

राम मोरी बांहड़ली जी गहो।
या भव सागर मँझधार में, थे ही निभावण हो।
म्हाँ में ओगण घणा छै हो प्रभुजी, थेही सहो तो सहो।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, लाज बिरद की बहो।

× × ×

नंनँदन बिलमाई, बदराने घेरी माई।
इत घन गरजे उत घन लरजे, चमकत बिज्जु सवाई।
उमड़ घुमड़ चहूँ दिस से आया, पवन चलै पुरवाई।
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल सबद सुणाई।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चितलाई॥

× × ×

सुनी हो मैं हरि आवन की आवाज।
म्हैल चढ़े चढ़ि जोऊँ मेरी सजनी, अब आवै महाराज।
दादर मोर पपइया बोलै, कोइल मधुरे साज।
उमंग्यो इन्द्र चहूँ दिसि बरसै, दामणि छोड़ी लाज।

धरती रूप नवानवा धरिया, इन्द्र मिलण के काज।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, वेग मिलो महाराज॥

× × ×

रे साँवलिया म्हाँरे आज रंगीली गणगोर, छै जी।
काली पीली वदली में बिजली चमके, मेघ घटा घनघोर छै जी।
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल कर रही सोर छै जी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरणाँ में म्हाँरो जोर छै जी॥

× × ×

झुक आई वदरिया सावन की, सावन की मन भावन की।
सावन उमँग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की।
उमड़ घुमड़ चहुँ दिसि से आयो, दामण दमक झर लावन की।
नन्ही नन्ही बूँदन मेहा बरसै, सीतल पवन सोहावन की।
मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर, आनँद मंगल गावन की॥

× × ×

रँगभरी रँगभरी रँग सूँ भरी री,
होली आई प्यारी रँग सूँ भरी री॥
उड़त गुलाल लाल भये बादल, पिचकारिन की लगी झरी री।
चोवा चंदन और अरगजा, केसर गागर भरी धरी री।
मीराँ कहे प्रभु गिरधर नागर, चेरी होय पायन में परी री॥

× × ×

बदला रे तू जल भरि ले आयो।
छोटी छोटी बूंदन बरसन लागीं, कोयल सबद सुनायो।
गाजै बाजै पवन मधुरिया, अंबर बदरा छायो।
सेज सँवारी पिय घर आये, हिलमिल मंगल गायो।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, भाग भलो जिन पायो॥

× × ×

सहेलियाँ साजन घरि आया हो।
बहोत दिनाँ की जोवती, विरहणि पिव पाया हो।
रतन करूँ नेवछावरी, ले आरति साजूँ हो।
पिया का दिया सनेसड़ा, ताहि बहोत निवाजूँ हो।
पाँच सखी इकठी भई, मिलि मंगल गावै हो।
पिय का रली वधावणाँ, आँणद अंगि न मावै हो।

हरि सागर सूँ नेहरो, नैणाँ बंध्या सनेह हो।
मीराँ सखी के आँगणै, दूधाँ वूठा मेह हो ॥

× × ×

फागुन के दिन चार रे, होरी खेल मना रे।
विनि करताल पखावज बाजै, अणहद की झनकार रे।
विनि सुर राग छतीसूँ गावै, रोम रोम रंग सार रे।
सील संतोख की केसर घोली, प्रेम प्रीत पिचकार रे।
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर, बरहत रंग अपार रे।
घट के सब पट खोल दिये हैं, लोक लाज सब डार रे।
होरी खेलि पीव घर आये, सोइ प्यारी प्रिय प्यार रे।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल बलिहार रे।

× × ×

रमइया विनि य जिवड़ौ दुख पावै।
कहो कुण धीर बँधावै ॥
यो संसार कुबधि को भाँडो, साध सँगति नहिं भावै।
राम नाम की निंद्या ठाणै, करम ही करम कुमावै।
राम नाम विनि मुकुति न पावै, फिर चौरासी जावै।
साध सँगत में कबहूँ न जावै, मूरखि जनन गुमावै।
जन मीराँ सतगुर के सरणैं, जीव परमपद पावै ॥

× × ×

चलो मन गंगा जमना तीर।
गंगा जमना निर्मल पाणी, सीतल होत सरीर।
बँसी बजावत गावत कान्हो, संग लियाँ बलवीर।
मोर मुगट पीतांबर सोहै, कुंडल झलकत हीर।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल पै सीर ॥

× × ×

जागो बंसीवारे ललना, जागो मोरे प्यारे।
रजनी बीती भोर भयो है, घर घर खुले किवारे।
गोपी दही मथत सुनियत है, कँगना के झनकारे।
उठो लाल जी भोर भयो है, सुर नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, जय जय सबद उचारे।

माखन रोटी हाथ में लीनी, गउवन के रखवारे।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सरण आया कूँ तारे॥

× × ×

आज अनारी ले गयो सारी, बैठी कदम की डारी हे माय।
म्हारे मेल पड्यो गिरधारी, हे माय, आज अनारी।
मैं जल जमुना भरन गई थी, आ गयो कृश्न मुरारी हे माय।
ले गयो सारी अनारी म्हारी, जल में ऊभी उघारी हे माय।
सखी साइनि मोरी हँसत हैं, हँसि हँसि दे मोहि तारी हे माय।
सास बुरी अर नणद हठीली, लरि लरि दे मोहि गारी हे माय।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल की वारी हे माय॥

× × ×

आवत मोरी गलियन में गिरधारी।
मैं तो छुप गई लाज की मारी॥
कुसुमल पाग केसरिया जामा, ऊपर फूल हजारी।
मुकट ऊपर छत्र विराजे, कुंडल की छवि न्यारी।
केसरी चीर दरयाई को लेंगो, ऊपर अंगिया भारी।
आवत देखी किसन मुरारी, छिप गई राधा प्यारी।
मोर मुकट मनोहर सोहै, नथनी की छवि न्यारी।
गल मोतिन की माल विराजे, चरण कमल बलिहारी।
ऊभी राधा प्यारी अरज करत है, सुण जे किसन मुरारी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल पर वारी॥

× × ×

छाँडो लँगर मोरी बहियाँ गहोना।
मैं तो नार पराये घर की, मेरे भरोसे गुपाल रहोना।
जो तुम मोरी बहियाँ गहत हो, नयन जोर मोरे प्राण हरोना।
वृन्दावन की कुंज गली में, रीति छोड़ अनरीति करोना।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चितटारे टरोना।

× × ×

होरी खेलत हैं गिरधारी।
मुरली चंग बजत डफ न्यारो, संग जुवति ब्रजनारी।
चंदन केसर छिरकत मोहन, अपने हाथ बिहारी।
भरि भरि मूठि गुलाल लाल चहुँ, देत सबन पै डारी।

छैल छबीले नवल कान्ह संग, स्यामा प्राण पियारी।
गावत चार धमार राग तहँ, दै दै कल करतारी।
फाग जु खेलत रसिक साँवरो, बाढ्यो रस ब्रज भारी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, मोहन लाल बिहारी॥

× × ×

या ब्रज में कछू देख्यो री टोना।
ले मटुकी सिर चली गुजरिया, आगे मिले बाबा नँदजी के छोना।
दधि को नाम बिसरि गयो प्यारी, 'लेलेहु री कोइ स्याम सलोना'।
बृन्दावन की कुंज गलिन में, आँख लगाइ गयो मनमोहना।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सुन्दर स्याम सुघर रसलोना॥

× × ×

कोई स्याम मनोहर ल्योरी, सिर धरैं मटकिया डोलै।
दधि को नाँव बिसर गई ग्वालन, 'हरिल्यो, हरिल्यो' बोलै।
कृष्णरूप छकी है ग्वालिन, औरहि औरै बोलै।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चेरी भई बिन मोलै॥

× × ×

होजी हरि कित गये नेह लगाय।
नेह लगाय मेरो हर लीयो, रस भरी टेर सुनाय।
मेरे मन में ऐसी आवै, मरूँ जहर बिस खाय।
छाड़ि गये बिस्वासघात करि, नेह केरी नाव चढ़ाय।
मीरा के प्रभु कबरे मिलोगे, रहे मधुपुरी छाय॥

× × ×

हो गये स्याम दूइज के चंदा।
मधुबन जाइ भये मधुबनिया, हम पर डारो प्रेम को फंदा।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, अब तो नेह परो कछु मंदा।

× × ×

सखीरी लाल बैरण भई।
श्रीलाल गोपाल के सँग, काहे नाही गई।
कठिन क्रूर अक्रूर आयो, साजि रथ कहं नई।
रथ चढ़ाय गोपाल लैगो, हाथ मींजत रही।
कठिन छाती स्याम बिछुरत, बिरह तें तन तई।
दासि मीराँ लाल गिरधर, बिसर क्यूँ ना गई॥

× × ×

अपणे करम को वो छै दोस, काकूँ दीजै रे ऊधो अपणे० ।
सुणियो मेरी वगण पड़ोसण, गेले चलत लागी चोट ।
पहली ग्यान मान नहिं कीन्हो, मैं ममता की बाँधी पोट ।
मैं जाण्यूँ हरि नाहि तजेंगे, करम लिख्यो भलि पोच ।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, परो निधारोनी सोच ॥

× × ×

गोहने गुपाल फिरूँ, ऐसी आवत मन में ।
अवलोकत वारिज बदन, बिबस भई तन में ।
मुरली कर लकुट लेऊँ, पीत वसन धारूँ ।
काछी गोप भेष मुकट, गोधन सँग चारूँ ।
हम भई गुलफ लता, वृन्दावन रैनाँ ।
पशु पंछी मरकट मुनी, श्रवन सुनत बैनाँ ।
गुरुजन कठिन कानि, कासों री कहिए ।
मीराँ प्रभु गिरिधर मिलि, ऐसे ही रहिए ॥

× × ×

कुण बांचै पाती, विना प्रभु कुण बांचै पाती ।
कागद ले ऊधो जी आयो, कहाँ रह्या साथी ।
आवत जावत पाँव घिस्या रे (वाला), अंखियाँ भई रातीं ।
कागद ले राधा बाँचण बैठी, भर आई छाती ।
नैण नीरज में अंब वहे रे (बाला), गंगा बहि जाती ।
पाना ज्यूँ पीली पड़ी रे (बाला), अन्न नहिं खाती ।
हरि बिन जिवड़ो यूँ जलै रे (वाला), ज्यूँ दीपक सँग वाती ।
म्हने भरोसो राम को रे (बाला), डूबतिरयो हाथी ।
दास मीराँ लाल गिरधर, साँकड़ारो साथी ॥

× × ×

अच्छे मीठे चाख चाख, बेर लई भीलणी ।
ऐसी कहा अचारवती, रूप नहीं एक रती ।
नीच कुल ओछी जात, अति ही कुचीलणी ।
जूठे फल लीन्हें राम, प्रेम की प्रतीत जाण ।
ऊँच नीच जाने नहीं, रस की रसीलणी ।
ऐसी कहा वेद पढ़ी, छिन में विमाण चढ़ी ।

हरि जी सूँ बाँध्यो हेत, दास मीराँ तरै जोइ।
पतित-पावन प्रभु, गोकुल अहीरणी ॥
× × ×

देखत राम हँसे सदामाँ कूँ, देखत राम हँसे।
फाटी तो फूलडियाँ पाँव उभाणे, चलतैं चरण घसे।
बालपणे का मित सुदामाँ, अब क्यूँ दूर वसे।
कहा भावज ने भेंट पठाई, तांदुल तीन पसे।
कित गई प्रभु मोरी टूटी टपरिया, हीरा मोती लाल कसे।
कित गई प्रभु मोरी गउवन बछिया, द्वारा विच हसती फँसे।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, सरणे तोरे बसे ॥
× × ×

तेरो मरम नहिं पायौ रे जोगी।
आसण माँडि गुफा में बैठो, ध्यान हरी को लगायो।
गल विच सेली हाथ हाजरियो, अंग भभूति रमायो।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, भाग लिख्यो सो ही पायो ॥
× × ×

लागी सोही जाणै, कठण लगण दी पीर।
विपति पड्याँ कोइ निकटि न आवै, सुख में, सब को सीर।
बाहरि घाव कछू नहिं दीसै, रोम रोम दी पीर।
जन मीराँ गिरधर के ऊपर, सदकै करूँ सरीर।
× × ×

चालो अगम के देस, काल देखत डरै।
वहाँ भरा प्रेम का होज, हंस केल्याँ करै।
ओढण लज्जा चीर, धीरज को घाँघरो।
छिमता काँकण हाथ, सुमति को मून्दरो।
दिल दुलड़ी दरियाब, साँच को दोवड़ो।
उवटण गुरुको ज्ञान, ध्यान को धोवणो।
कान अखोटा ज्ञान, जुगत को झूटणो।
बेसर हरि को नाम, चूड़ो चित ऊजलो।
जीहर सील सँतोष, निरत को घूँघरो।
बिंदली गज और हार, तिलक गुरु ज्ञान को।
सज सोलह सिणगार, पहरि सोने राखड़ी।
साँवलिया सूँ प्रीति, औराँ सूँ आखड़ी ॥
× × ×

गली तो चारौ बन्द हुई, मैं हरि से मिलूँ कैसे जाइ।
ऊँची नीची राह लपटीली, पाँव नहीं ठहराइ।
सोच सोच पग धरूँ जतन से, बार बार डिग जाइ।
ऊँचा नीचा महल पिया का, हमसे चढ्या न जाइ।
पिया दूर पंथ म्हाँरो झीणो, सुरत झकोला खाइ।
कोस कोस पर पहरा बैठ्या, पैंड पैंड बटमार।
हे बिधना कैसी रच दीन्ही, दूर बस्यो म्हाँरो गाम।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सतगुर दई बताय।
जुगन जुगन की बिछड़ी मीरा, घर में लीन्ही लाय॥

× × ×

भज मन चरण कँमल अविनासी।
जेताइ दीसे धरण गगन बिच, तेताइ सब उठ जासी।
कहा भयो तीरथ व्रत कीन्हे, कहा लिये करवत कासी।
इण देही का गरब न करणा, माटी में मिल जासी।
यों संसार चहर की बाजी, साँझ पड्याँ उठ जासी।
कहा भयो है भगवा पहरयाँ, घर तज भये संन्यासी।
जोगी होय जुगति नहिं जाणी, उलटि जनम फिर आसी।
अरज करो अबला कर जोरे, स्याम तुम्हारी दासी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम की फाँसी॥

× × ×

नहिं ऐसो जनम बार बार।
का जानूँ कछु पुण्य प्रगटे, मानुसा अवतार।
बढ़त छिन छिन घटत पल पल, जात न लागे बार।
बिरछ के ज्यूँ पात टूटे, बहुरि न लागे डार।
भौसागर अति जोर कहिये, अनँत ऊंडी धार।
राम नाम का बाँध बेड़ा, उतर परले पार।
ज्ञान चौसर मँडी चोहटे, सुरत पासा सार।
या दुनिया में रची बाजी, जीत भावै हार।
साधु संत महंत ज्ञानी, चलत करत पुकार।
दासी मीराँ लाल गिरधर, जीवणा दिन चार॥

× × ×

जग में जीवणा थोड़ा, राम कुण कह रे जंजार।
मात पिता तो जन्म दियो है, करम दियो करतार।

कहरे खाइवो कहरे खरचियो, कहरे कियो उपकार।
दिया लिया तेरे संग चलेगा, और नहीं तेरी लार।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, भज उतरे भव पार।।

× × ×

मनवा जनम पदारथ पायो, ऐसी बहुर न आती।
अबके मोसर ज्ञान विचारो, राम नाम मुख गाती।
सतगुरु मिलिया कुंज पिछाड़ी, ऐसा ब्रह्म में पाती।
सुगुरा सूरा अमृत पीवे, निगुरा प्यासा जाती।
मगन भया मेरा मन सुख में, गोविंद का गुण गाती।
साहब पाया आदि अनादी, नातर भव में जाती।
मीराँ कहे इक आस आपनी, औरौं सूँ सकुचाती।।

× × ×

बंदे बंदगी मति भूल।
चार दिना की करले खूबी, ज्यूँ दाड़िमदा फूल।
आया था ए लोभ के कारण, मूल गमाया भूल।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, रहना है वे हजूर।

× × ×

राम नाम रस पीजै मनुआँ, राम नाम रस पीजै।
तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि चरचा सुण लीजै।
काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ, चित से वहाय दीजै।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रंग में भीजै।।

× × ×

मेरो मन रामहिं राम रटै रे।
राम नाम जप लीजे प्राणी, कोटिक पाप कटै रे।
जनम जनम के खतजु पुराने, नामहि लेत फटै रे।
कनक कटोरे इम्रत भरियो, पीवत कौन नटै रे।
मीराँ कहै प्रभु हरि अविनासी, तन मन ताहि पटै रे।।

× × ×

सूरत दीनानाथ सो लगी, तूँ तो समझ सुहागण नार।
लगनी लहँगो पहर सुहागण, बीती जाय बहार।
धन जोवन है पावणोरी, मिलै न दूजी बार।
रामनाम को चुड़लो पहिरो, प्रेम को सुरमो सार।
नकवेसर हरिनाम की री, उतरि चलोनी परले पार।

ऐसे वर को क्या वरूँ, जो जनमै और मर जाय।
वर वरिये एक साँवरो री, (मेरो) चुड़लो अमर होय जाय।
मैं जान्यों हरि मैं ठग्योरी, हरि ठग ले गयो मोय।
लख चौरासी मोरचा री, छिन में गेरया छै त्रिगोय।
सुरत चली जहाँ मैं चली री, कृष्ण नाम झणकार।
अविनासी की पोल पर जी, मीरा करै छै पुकार॥

× × ×

मीराँ मन मानी सुरत सैल असयानी।
जब जब सुरत लगै वा घर की, पल पल नैनन पानी।
ज्यों हिये पीर तीर सम सालत कसक कसक कसकानी।
रात दिवस मोहिं नींद न आवत, भावै अन्न न पानी।
ऐसी पीर विरह तन भीतर, जागत रैन विहानी।
ऐसा वैद मिलै कोइ भेदी, देस बिदेस पिछानी।
तासों पीर कहूँ तन केरी, फिर नहिं भरमों खानी।
खोजत फिरों भेद वा घर को, कोई न करत बखानी।
रैदास संत मिले मोहि सतगुरु, दीन्हा सुरत सहदानी।
मैं मिली जाय पाय पिय अपना, तब मोरी पीर बुझानी।
मीरा खाक खलक सिरडारी, मैं अपना घर जानी॥

गदाधर भट्ट

सखी हौं स्याम रंग रँगी।
देखि बिकाय गई वह मूरति सूरत माहिं पगी॥
संग हुतो अपनो सपनों सो सोइ रही रस खोई।
जागेहु आगे दृष्टि परै सखि नेकु न न्यारो होई॥
एक जु मेरी अँखियनि में निसि द्यौस रह्यो करि भौन।
गाय चरावन जात सुन्यो, सखि, सो धौं कन्हैया कौन?
कासों कहौ कौन पतियावै, कौन करै बकवाद?
कैसे कै कहि जात गदाधर, गूँगे कौ गुर स्वाद?

× × ×

झूलति नागरि नागर लाल।
मंद मंद सब सखी झुलावति, गावत गीत रसाल॥
फरहरात पट पीत नील के, अंचल चंचल चाल।
मनहुँ परस्पर उमगि ध्यान छवि प्रगट भई तिहिं काल॥

सिल सिलात अति प्रिया सीस ते लटकति वेनी भाल ।
जनु पिय मुकुट बरहि भ्रम बस तहँ ब्याली विकल विहाल ॥
मल्ली माल प्रिया के उर की, पिय तुलसी दल माल ।
जनु सुरसरि रवि - तनया मिलिकै सोभित श्रेनि मराल ॥
स्यामल गौर परस्पर प्रति छवि सोभा विसद विसाल ।
निरखि गदाधर रसिक कुँवरि मन परयो सुरग जंजाल ॥

× × ×

जयति श्री राधिके, सकल सुख साधिके,
तरुनि - मनि नित्य नव तन किसोरी ।
कृष्ण तन लीन मन रूप की चातकी,
कृष्ण मुख हिम किरन की चकोरी ।
कृष्ण दृग भृंग विश्राम हित पद्मिनी,
कृष्ण दृग मृगज बन्धन सुडोरी ।
कृष्ण अनुराग मकरन्द की मधुकरी,
कृष्ण गुन गान रस सिन्धु बोरी ।
विमुख पर चित ते चित्त जाको सदा,
करति निज नाह की चित्त चोरी ।
प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे बनै,
अमित महिमा, इतै बुद्धि थोरी ।

स्वामी हरिदास

ज्योंही ज्योंही तुम राखत हौं, त्योंही त्योंही रहियत हौं हरि ।
और अपराधे पाय धरौ सुतौ कहौ, कौन के पैंड धरि ॥
जदपि हौं अपनो भायो कियो चाहौ, कैसे करि सकौं जो तुम राखौ पकरि ।
कहैं हरिदास पिंजरा के जनावर लौं, तरफराय रह्यो उडिवेको कितोऊ करि ॥

× × ×

गहो मन सब रस को रस सार ।
लोक वदे कुल करमैं तजिये भजिये नित्य विहार ॥
गृह कामिनि कंचन धन त्यागौ सुमिरो श्याम उदार ।
गति हरिदास रीति संतन की गादी को अधिकार ॥

× × ×

गायो न गोपाल मन लाइकै निवारि लाज,
पायो न प्रसाद राज मंडली में जाइ के।
धायो न धमक वृँदा विपिन की कुंजन में,
रह्यो न सरन जाय विठलेस राइ के।
नाथ जू न देखि छक्यो छिनहूँ छबीली छाँव,
सिंह पौरि पर्‍यो नाहिं सीसहू नवाइ के।
कहे हरिदास तोहे लाजहू न आवे नेक,
जनम गमायो न कमायो कछु आइ के।

× × ×

हरि के नाम आलस क्यों करत है रे, काल फिरत सर साँधे।
हीरा बहुत जवाहर संचे, कहा भयो हस्ती दर बाँधे॥
वेर कुवेर कछू नहिं जानत, चढ़ो फिरत है काँधे।
कहि हरिदास, कछू न चलत जब आवत अन्त की आँधे॥

× × ×

हरि को ऐसोई सब खेल।
मृग तृस्ना जग व्यापि रही है, कहुँ विजोरो न वेल॥
धन-मद जोवन-मद औ राज-मद ज्यों पंछिन में डेल।
कह हरिदास यहै जिय जानौ तीरथ को सो मेल॥

× × ×

आजु तृन टूटत हैरी, ललित त्रिभंगी पर।
चरन चरन पर मुरलि अधर पर॥
चितवन बंक छबीली भुव पर॥
चलहु न बेगि राधिका पिय पै।
जो भई चाहत हौं सर्वोपरि॥
श्री 'हरिदास' समय जब नीकौ।
हिल मिलि केलि अटल रतिधुवपर॥

× × ×

झूलत डोल दुलहिनी दूलह।
उड़त अबीर कुमकुमा छिरकत, खेल परस्पर भूलहु॥
बाजत ताल रवाव और बहु तरनि तनैया कूलहु।
श्री 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज विहारी को अंतै नहिं फूलहु॥

× × ×

प्यारी तेरो वदन चन्द देखे।
मेरे हृदय सरोवर में कुमोदिनी फूली॥

मन के मनोरथ तरंग अपार।
सुन्दरता तहँ गति मति भूली॥

तेरो कोप ग्राह ग्रसे लिये जात।
छुड़ाये न छूटत रह्यो बुधिबल भूली॥

श्री 'हरिदास' के स्वामी स्यामा चरन वनसी।
गहि काढ़ि रहे लपटाइ गहि भुजबली॥

रहीम

तैं रहीम मन आपुनो, कीन्हों चारु चकोर।
निसि वासर लागो रहै, कृष्णचन्द्र की ओर॥

अच्युत-चरण - तरंगिणी, शिव सिर-मालति-माल।
हरि न बनायो सुरसरी, कीजो इंदव-भाल॥

अधम वचन काको फल्यो, बैठि ताड़ की छाँह।
रहिमन काम न आइहैं, ये नीरस जग माँह॥

अनकीन्ही बातैं करै, सोवत जागे जोय।
ताहि सिखाय जगायबो, रहिमन उचित न होय॥

अनुचित उचित रहीम लघु, करहिं बड़ेन के जोर।
ज्यों ससि के संजोग तें, पचवत आगि चकोर॥

अनुचित वचन न मानिए, जदपि गुराइसु गाढ़ि।
है रहीम रघुनाथ तें, सुजस भरत को बाढ़ि॥

अब रहीम मुश्किल पड़ी, गाढ़े दोऊ काम।
सांचे से तो जग नहीं, झूठे मिलैं न राम॥

रहिमन बिपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय॥

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं।
उनते पहिले वे मुये, जिन मुख निकसत नाहिं॥

रहिमन सुधि सबते भली, लगै जो बारंबार।
बिछुरे मानुष फिर मिले, यहै जान अवतार॥

अमर वेलि विनु मूल की, प्रतिपालत है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहि तजि, खोजत फिरिए काहि॥

अरज गरज मानैं नहीं, रहिमन ए जन चारि।
रिनियाँ, राजा, माँगता, काम आतुरी नारि॥

आप न काहू काम के, डार पात फल फूल।
औरन को रोकत फिरैं, रहिमन पेड़ बवूल॥

उरग, तुरंग, नारी, नृपति, नीच जाति, हथियार।
रहिमन इन्हे सँभारिए, पलटत लगै न वार॥

एक उदर दो चोंच है, पंछी एक कुरंड।
कहि रहीम कैसे जिये, जुदे जुदे दो पिंड॥

एकै साधे सव सधै, सव साधे सव जाय।
रहिमन मूलहि सींचिवो, फूलै फलै अघाय॥

ए रहीम दर दर फिरहिं, माँगि मधुकरी खाहिं।
यारो यारी छोड़िये, वे रहीम अब नाहिं॥

ओछो काम वड़े करैं, तौ न वड़ाई होय।
ज्यों रहीम हनुमंत को, गिरधर कहै न कोय॥

अंजन दियो तो किरकिरी, सुरमा दियो न जाय।
जिन आँखिन सों हरि लख्यो, रहिमन बलि-बलि जाय॥

अंतर दाव लगी रहै, धुआँ न प्रगटै सोय।
कै जिय जाने आपुनो, कै जा सिर बीती होय॥

कदली, सीप, भुजंग-मुख, स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन॥

कमला थिर न रहीम कहि, यह जानत सव कोय।
पुरुष पुरातन की वधू, क्यों न चंचला होय॥

कमला थिर न रहीम कहि, लखत अधम जे कोय।
प्रभु की सो अपनी कहै, क्यों न फजीहत होय॥

करम हीन रहिमन लखो, धँसो वड़े घर चोर।
चिंतत ही वड़ लाभ के, जागत ह्वै गो भोर॥

कहि रहीम इक दीप तें, प्रगट सबै दुति होय।
तन सनेह कैसे दुरै, दृग दीपक जरु दोय॥

कहि रहीम या जगत तें, प्रीति गई दै टेर।
रहि रहीम नर नीच में, स्वारथ स्वारथ देर॥

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत॥

कहु रहीम केतिक रही, केतिक गई बिहाय।
माया ममता मोह परि, अन्त चले पछिताय॥

कहु रहीम कैसे निभै, बेर केर को संग।
वे डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग॥

कहु रहीम कैसे बनै, अनहोनी ह्वै जाय।
मिला रहै औ ना मिलै, तासों कहा बसाय॥

कागद को सो पूतरा, सहजहि में घुलि जाय।
रहिमन यह अचरज लखो, सोऊ खैंचत बाय॥

काज परे कछु और है, काज सरे कछु और।
रहिमन भँवरी के भए, नदी सिरावत मौर॥

काम न काहू आवई, मोल रहीम न लेइ।
बाजू टूटे बाज को, साहब चारा देइ॥

काह करौं बैकुंठ लै, कल्प वृच्छ की छाँह।
रहिमन दाख सुहावनो, जो गल पीतम बाँह॥

काह कामरी पामरी, जाड़ गए से काज।
रहिमन भूख बुताइए, कैस्यो मिलै अनाज॥

कुटिलन संग रहीम कहि, साधू बचते नाहिं।
ज्यों नैना सैना करें, उरज उमेठे जाहिं॥

कैसे निबहैं निबल जन, करि सबलन सों गैर।
रहिमन बसि सागर विषे, करत मगर सों बैर॥

कोउ रहीम जनि काहु के, द्वार गये पछिताय।
संपति के सब जात हैं, विपति सबै लै जाय॥

कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भो धीम।
केहि की प्रभुता नहिं घटी, पर घर गये रहीम॥

खीरा सिर तें काटिए, मलियत नमक बनाय।
रहिमन करुए मुखन को, चहिअत इहै सजाय॥

खैंचि चढ़नि, ढीली ढरनि, कहहु कौन यह प्रीति।
आज काल मोहन गही, बंस दिया की रीति॥

खैर, खून, खाँसी, खुसी, बैर, प्रीति, मदपान।
रहिमन दाबे ना दबैं, जानत सकल जहान॥

गरज आपनी आपसों, रहिमन कही न जाय।
जैसे कुल की कुलवधू, पर घर जात लजाय॥

गहि सरनागति राम की, भवसागर की नाव।
रहिमन जगत उधार कर, और न कछू उपाव॥

गुन तें लेत रहीम जन, सलिल कूप तें काढ़ि।
कूपहु तें कहुँ होत है, मन काहू को वाढ़ि॥

गुरुता फबै रहीम कहि, फबि आई है जाहि।
उर पर कुच नीके लगैं, अनत बतौरी आहि॥

चरन छुए मस्तक छुए, तेहु नहिं छाँड़ति पानि।
हियो छुवत प्रभु छोड़ि दे, कहु रहीम का जानि॥

चारा प्यारा जगत में, छाला हित कर लेत।
ज्यों रहीम आटा लगे, त्यों मृदंग स्वर देय॥

चाह गई चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह।
जिनको कछू न चाहिए, वे साहन के साह॥

चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध-नरेस।
जापर विपदा पड़त है, सो आवत यहि देस॥

चिंता बुद्धि परेखिए, टोटे परख त्रियाहि।
सगे कुवेला परखिए, ठाकुर गुनो कि आहि॥

छिमा बड़ेन को चाहिए, छोटेन को उतपात।
का रहीम हरि को घट्यो, जो भृगु मारी लात॥

छोटेन सो सोहैं बड़े, कहि रहीम यह रेख।
सहसन को हय बाँधियत, लै दमरी की मेख॥

जब लगि वित्त न आपुनो, तब लगि मित्र न कोय।
रहिमन अंबुज अंबु बिनु, रवि नाहिंन हित होय॥

ज्यों नाचत कठपूतरी, करम नचावत गात।
अपने हाथ रहीम ज्यों, नहीं आपुने हाथ॥

जहाँ गाँठ तहँ रस नहीं, यह रहीम जग जोय।
मँड़ए तर की गाँठ में, गाँठ गाँठ रस होय॥

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़त छोह॥

जे गरीब पर हित करैं, ते रहीम बड़ लोग।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग॥

जे रहीम बिधि बड़ किए, को कहि दूषन काढ़ि।
चंद्र दूबरो कूबरो, तऊ नखत तें बाढ़ि॥

जे सुलगे ते बुझि गए, बुझे ते सुलगे नाहिं।
रहिमन दाहे प्रेम के, बुझि बुझि कै सुलगाहिं॥

जेहि अंचल दीपक दुर्‍यो, हन्यो सो ताही गात।
रहिमन असमय के परे, मित्र शत्रु ह्वै जात॥

जेहि रहीम तन मन लियो, कियो हिए बिच भौन।
तासों दुख सुख कहन की, रही बात अब कौन॥

जैसी जाकी बुद्धि है, तैसी कहै बनाय।
ताको बुरो न मानिए, लेन कहाँ सो जाय॥

जैसी परै सो सहि रहै, कहि रहीम यह देह।
धरती पर ही परत है, शीत घाम औ मेह॥

जैसी तुम हमसों करी, करी करो जो तीर।
बाढ़े दिन के मीत हौ, गाढ़े दिन रघुबीर॥

जो अनुचितकारी तिन्हैं, लगै अंक परिनाम।
लखे उरज उर बेधियत, क्यों न होय मुख स्याम॥

जो पुरुषारथ ते कहूँ, संपति मिलत रहीम।
पेट लागि बैराट घर, तपत रसोई भीम॥

जो बड़ेन को लघु कहै, नहिं रहीम घटि जाहिं।
गिरधर मुरलीधर कहे, कछु दुख मानत नाहिं॥

जो मरजाद चली सदा, सोई तौ ठहराय।
जो जल उमगै पार तें, सो रहीम बहि जाय॥

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग॥

जो रहीम ओछो बढ़ै, तौ अति ही इतराय।
प्यादे सों फरजी भयो, टेढ़ो टेढ़ो जाय॥

जो रहीम करिबो हुतो, ब्रज को इहै हवाल।
तौ काहे कर पर धर्‍यो, गोवर्धन गोपाल॥

जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो लगे, बढ़े अँधेरो होय॥

जो रहीम जग मारियो, नैन बान की चोट।
भगत भगत कोउ बचि गये, चरन कमल की ओट॥

जो रहीम दीपक दसा, तिय राखत पट ओट।
समय परे तें होत है, वाही पट की चोट॥

जो रहीम तन हाथ है, मनसा कहुँ किन जाहि।
जल में जो छाया परी, काया भीजति नाहिं॥

टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ बार।
रहिमन फिरि फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार॥

तन रहीम है कर्म बस, मन राखो ओहि ओर।
जल में उलटी नाव ज्यों, खैंचत गुन के जोर॥

तबही लौं जीबो भलों, दीबो होय न धीम।
जग में रहिबो कुचित गति, उचित न होय रहीम॥

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहि न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान॥

तासों ही कछु पाइए, कीजै जाकी आस।
रीते सरवर पर गये, कैसे बुझै पिआस॥

थोथे बादर क्वाँर के, ज्यों रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भये, करै पाछिली बात॥

दादुर, मोर, किसान मन, लग्यो रहै घन माँहि।
रहिमन चातक रटनि हू, सरवर को कोउ नाहिं॥

दिव्य दीनता के रसहिं, का जाने जग अन्धु।
भली बिचारी दीनता, दीनबन्धु से बन्धु॥

दीन सबन को लखत है, दीनहि लखै न कोय।
जो रहीम दीनहि लखै, दीनबंधु सम होय॥

दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहि।
ज्यों रहीम नट कुण्डली, सिमिट कूदि चढ़ि जाहि॥

दुख नर सुनि हाँसी करै, धरत रहीम न धीर।
कही सुनै सुनि सुनि करै, ऐसे वे रघुबीर॥

दुरदिन परे रहीम कहि, दुरथल जैयत भागि।
ठाढ़े हूजत घूर पर, जब घर लागत आगि॥

दुरदिन परे रहीम कहि, भूलत सब पहिचानि।
सोच नहीं वित हानि को, जो न होय हित हानि॥

देनहार कोउ और है, भेजत सो दिन रैन।
लोग भरम हम पै धरैं, याते नीचे नैन॥

दोनों रहिमन एक से, जौलों बोलत नाहिं।
जान परत हैं काक पिक, ऋतु बसंत के माहिं॥

धन थोरो इज्जत बड़ी, कह रहीम का बात।
जैसे कुल की कुलबधू, चिथड़न माँह समात॥

धन दारा अरु सुतन सों, लगो रहे नित चित्त।
नहि रहीम कोऊ लख्यो, गाढ़े दिन को मित्त॥

धनि रहीम गति मीन की, जल बिछुरत जिय जाय।
जिअत कंज तजि अनत बसि, कहा भौंर को भाय॥

धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पिअत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय॥

धूर धरत नित सीस पै, कहु रहीम केहि काज।
जेहि रज मुनिपत्नी तरी, सो ढूँढ़त गजराज॥

नात नेह दूरी भली, लो रहीम जिय जानि।
निकट निरादर होत है, ज्यों गड़ही को पानि॥

नाद रीझि तन देत मृग, नर धन देत समेत।
ते रहीम पशु से अधिक, रीझेहु कछू न देत॥

नैन सलोने अधर मधु, कहि रहीम घटि कौन।
मीठो भावै लोन पर, अरु मीठे पर लौन॥

परि रहिबो मरिबो भलो, सहिबो कठिन कलेस।
बामन ह्वै बलि को छल्यो, भलो दियो उपदेस॥

पात पात को सींचिबो, बरी बरी को लौन।
रहिमन ऐसी बुद्धि को, कहो बरैगो कौन॥

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधे मौन।
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन॥

प्रीतम छबि नैनन बसी, पर छबि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि, पथिक आप फिर जाय॥

फरजी साह न ह्वै सकै, गति टेढ़ी तासीर।
रहिमन सीधे चालसों, प्यादो होत वजीर॥

वड़ माया को दोष यह, जो कबहूँ घटि जाय।
तो रहीम मरिबो भलो, दुख सह जिये वलाय॥

वड़े दीन को दुख सुने, लेत दया उर आनि।
हरि हाथी सों कव हुती, कहु रहीम पहिचानि॥

वड़े पेट के भरन को, है रहीम दुख वाढ़ि।
यातें हाथी हहरि कै, दयो दाँत द्वै काढ़ि॥

वड़े वड़ाई नहि तजैं, लघु रहीम इतराइ।
राइ करौंदा होत है, कटहर होत न राइ॥

वड़े वड़ाई ना करैं, वड़ो न बोलैं वोल।
रहिमन हीरा कव कहै, लाख टका मेरो मोल॥

वढ़त रहीम धनाढ्य धन, धनौ धनी को जाइ।
घटै वढ़ै वाको कहा, भीख माँगि जो खाय॥

बसि कुसंग चाहत कुसल, यह रहीम जिय सोस।
महिमा घटी समुद्र की, रावन बस्यो परोस॥

विगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय॥

विपति भए धन ना रहे, रहे जो लाख करोर।
नभ तारे छिपि जात हैं, ज्यों रहीम भये भोर॥

भजौं तो काको मैं भजौं, तजौं तो काको आन।
भजन तजन ते विलग हैं, तेहि रहीम तू जान॥

भलो भयो घर ते छुट्यो, हँस्यो सीस परि खेत।
काके काके नवत हम, अपन पेट के हेत॥

भार झोंकि के भार में, रहिमन उतरे पार।
पै बूड़े मझधार में, जिनके सिर पर भार॥

भीत गिरी पाखान की, अररानी वहि ठाम।
अब रहीम धोखो यहै, को लागै केहि काम॥

भूप गनत लघु गुनिन को, गुनी गनत लघु भूप।
रहिमन गिरि तें भूमि लौं, लखौ तो एकै रूप॥

मथत मथत माखन रहै, दही मही बिलगाय।
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय॥

मनसिज माली की उपज, कहि रहीम नहिं जाय।
फल श्यामा के उर लगे, फूल श्याम उर आय॥

मन से कहाँ रहीम प्रभु, दृग सो कहाँ दिवान।
देखि दृगन जो आदरैं, मन तेहि हाथ बिकान ॥

माँगे घटत रहीम पद, कितौ करौ बढ़ि काम।
तीन पैग वसुधा करी, तऊ बावनै नाम ॥

माँगे मुकरि न को गयो, केहि न त्यागियो साथ।
माँगत आगे सुख लह्यो, ते रहीम रघुनाथ ॥

मान सरोवर ही मिले, हंसनि मुक्ता भोग।
सफरिन भरे रहीम सर, बक बालकनहि जोग ॥

मान सहित विष खाय के, संभु भये जगदीस।
विना मान अमृत पिये, राहु कटायो सीस ॥

मुकता कर करपूर कर, चातक जीवन जोय।
एतो बड़ो रहीम जल, ब्याल बदन विष होय ॥

मुनि नारी पाषान ही, कपि पसु गुह मतंग।
तीनों तारे राम जू, तीनों मेरे अङ्ग ॥

यद्यपि अवनि अनेक हैं, कूपवंत सरिताल।
रहिमन मानसरोवरहिं, मनसा करत मराल ॥

यह न रहीम सराहिये, देन लेन की प्रीति।
प्रानन बाजी राखिये, हारि होय के जीति ॥

यह रहीम निज संग लै, जनमत जगत न कोय।
बैर, प्रीति, अभ्यास, जस, होत होत ही होय ॥

यह रहीम मानै नहीं, दिल से नवा जो होय।
चीता, चोर, कमान के, नये ते अवगुन होय ॥

याते जान्यो मन भयो, जरि बरि भस्म बनाय।
रहिमन जाहि लगाइये, सो रूखो ह्वै जाय ॥

ये रहीम फीके दुवो, जानि महा संतापु।
ज्यों तिय कुच आपुन गहे, आप बड़ाई आपु ॥

यों रहीम गति बड़ेन की, ज्यों तुरंग व्यवहार।
दाग दिखावत आपु तन, सही होत असवार ॥

रन, वन, ब्याधि, बिपत्ति में, रहिमन मरै न रोय।
जो रच्छक जननी जठर, सो हरि गये कि सोय ॥

रहिमन अती न कीजिये, गहि रहिये निज कानि।
सैंजन अति फूले तऊ, डार पात की हानि ॥

रहिमन अपने गोत को, सबै चहत उत्साह।
मृग उछरत आकाश को, भूमी खनत वराह ॥
रहिमन अपने पेट सो, बहुत कह्यो समुझाय।
जो तू अन खाये रहे, तो सों को अनखाय ॥
रहिमन असमय के परे, हित अनहित ह्वै जाय।
वधिक वधै मृग बानसों, रुधिरै देत बताय ॥
रहिमन अँसुआ नैन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ।
जाहि निकारो गेह तें, कस न भेद कहि देइ ॥
रहिमन आँटा के लगे, बाजत है दिन राति।
घिउ शक्कर जे खात हैं, तिनकी कहा बिसाति ॥
रहिमन उजली प्रकृत को, नहीं नीच को संग।
करिया बासन कर गहे, कालिख लागत अंग ॥
रहिमन ओछे नरन सों, बैर भली ना प्रीति।
काटे चाटे स्वान के, दोऊ भाँति विपरीति ॥
रहिमन कठिन चितान तें, चिंता को चित चेत।
चिता दहति निर्जीव को, चिंता जीव समेत ॥
रहिमन कहत सुपेट सों, क्यो न भयो तू पीठ।
रीते अनरीते करै, भरे बिगारत दीठ ॥
रहिमन को कोउ का करै, ज्वारी, चोर, लबार।
जो पत राखनहार हैं, माखन चाखनहार ॥
रहिमन खोटी आदि की, सो परिनाम लखाय।
जैसे दीपक तम भखै, कज्जल वमन कराय ॥
रहिमन गली है साँकरी, दूजो ना ठहराहिं।
आपु अहै तो हरि नहीं, हरि सो आपुन नाहिं ॥
रहिमन घरिया रहँट की, त्यों ओछे की डीठ।
रीतिहि सनमुख होत है, भरी दिखावै पीठ ॥
रहिमन चुप ह्वै बैठिए, देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहैं देर ॥
रहिमन छोटे नरन सों, होत बड़ो नहीं काम।
मढ़ो दमामो ना बने, सौ चूहे के चाम ॥
रहिमन जगत बड़ाइ की, कूकुर की पहिचानि।
प्रीति करै मुख चाटई, बैर करै तन हानि ॥

रहिमन जाके बाप को, पानी पियत न कोय।
ताकी गैल अकाश लौं, क्यों न कालिमा होय॥
रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल॥

रहिमन ठठरी धूरि की, रही पवन ते पूरि।
गाँठ युक्ति की खुलि गई, अंत धूरि को धूरि॥
रहिमन तब लगि ठहरिए, दान मान सनमान।
घटत मान देखिय जबहिं, तुरतहि करिय पयान॥
रहिमन तीन प्रकार तें, हित अनहित पहिचानि।
पर बस परे, परोस बस, परे मामिला जानि॥
रहिमन तीर की चोट तें, चोट परे बचि जाय।
नैन बान की चोट तें, चोट परे मरि जाय॥
रहिमन थोरे दिनन को, कौन करे मुँह स्याह।
नहीं छलन को परतिया, नहीं करन को ब्याह॥

रहिमन दानि दरिद्र तर, तऊ जाँचबे योग।
ज्यों सरितन सूखा परे, कुँआ खनावत लोग॥
रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि॥
रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय॥
रहिमन निज मन की विथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय॥
रहिमन निज संपति बिना, कोउ न बिपति सहाय।
बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सके बचाय॥
रहिमन नीचन संग बसि, लगत कलंक न काहि।
दूध कलारी कर गहे, मद समुझै सब ताहि॥

रहिमन नीच प्रसंग तें, नित प्रति लाभ विकार।
नीर चोरावै संपुटी, मारु सहै घरिआर॥
रहिमन पर उपकार के, करत न यारी बीच।
माँस दियो शिवि भूप ने, दीन्हों हाड़ दधीच॥
रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून॥

रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा ने कीन।
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फाँकें तीन॥
रहिमन पैंडा प्रेम को, निपट सिलसिली गैल।
बिछलत पाँव पिपीलिका, लोग लदावत बैल॥
रहिमन प्रीति सराहिए, मिले होत रँग दून।
ज्यों जरदी हरदी तजै, तजै सफेदी चून॥
रहिमन ब्याह बिआधि है, सकहु तो जाहु बचाय।
पायन बेड़ी पड़त है, ढोल बजाय बजाय॥
रहिमन बहु भेषज करत, ब्याधि न छाँड़त साथ।
खग मृग बसत अरोग बन, हरि अनाथ के नाथ॥
रहिमन बात अगम्य की, कहन सुनन की नाहिं।
जे जानत ते कहत नहिं, कहत ते जानत नाहिं॥
रहिमन बिगरी आदि की, बनै न खरचे दाम।
हरि बाढ़े आकाश लौं, तऊ बावनै नाम॥
रहिमन भेषज के किए, काल जीति जो जात।
बड़े बड़े समरथ भए, तौ न कोउ मरि जात॥
रहिमन मनहिं लगाइ कै, देखि लेहु किन कोय।
नर को बस करिबो कहा, नारायन बस होय॥
रहिमन मारग प्रेम को, मत मतिहीन मझाव।
जो डिगिहै तो फिर कहूँ, नहिं धरने को पाँव॥
रहिमन माँगत बड़ेन की, लघुता होत अनूप।
बलि मख माँगन को गए, धरि बावन को रूप॥
रहिमन याचकता गहे, बड़ो छोट ह्वै जात।
नारायन हू को भयो, बावन आँगुर गात॥
रहिमन या तन सूप है, लीजै जगत पछोर।
हलुकन को उड़ि जान दै, गरुए राखि बटोर॥
रहिमन यों सुख होत है, बढ़त देखि निज गोत।
ज्यों बड़री अँखियाँ निरखि, आँखिन को सुख होत॥
रहिमन रजनी ही भली, पिय सों होय मिलाप।
खरो दिवस किहि काम को, रहिबो आपुहि आप॥
रहिमन रहिबी वा भलो, जौ लौं सील समूच।
सील ढील जब देखिये, तुरत कीजिए कूच॥

रहिमन रहिला की भली, जो परसै चित लाय।
परसत मन मैला करे, सो मैदा जरि जाय॥

रहिमन राज सराहिए, ससि सम सुखद जो होय।
कहा वापुरो भानु है, तपै तरैयन खोय॥

रहिमन राम न उर धरै, रहत विषय लपटाय।
पसु खर खात सवाद सों, गुर गुलियाए खाय॥

रहिमन रिस को छाँड़ि कै, करो गरीवी भेस।
मीठी बोलो नै चलो, सबै तुम्हारो देस॥

रहिमन लाख भली करो, अगुनी अगुन न जाय।
राग सुनत पय पियत हू, साँप सहजि धर खाय॥

रहिमन वहाँ न जाइये, जहाँ कपट को हेत।
हम तन ढारत ढेकुली, सींचत आपन खेत॥

रहिमन वित्त अधर्म को, जरत न लागै वार।
चोरी करि होरी रची, भई तनिक में छार॥

राम नाम जान्यो नहीं, भइ पूजा में हानि।
कहि रहीम क्यों मानिहै, जम के किंकर कानि॥

राम नाम जान्यो नहीं, जान्यो सदा उपाधि।
कहि रहीम तिहि आपुनो, जनम गँवायो वादि॥

रूप, कथा, पद, चारु, पट, कंचन, दोहा, लाल।
ज्यों ज्यों निरखत सूक्ष्मगति, मोल रहीम विसाल॥

लाजन मैन तुरंग चढ़ि, चलिवो पावक माँहि।
प्रेम-पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निवहत नाहिं॥

लिखी रहीम लिलार में, भई आन की आन।
पद करि काटि वनारसी, पहुँचे मगरु-स्थान॥

लोहे की न लोहार की, रहिमन करी विचार।
जो हनि मारे सीस में, ताही की तलवार॥

विरह रूप घन तम भयो, अवधि आस उद्योत।
ज्यों रहीम भादों निसा, चमकि जात खद्योत॥

वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग।
बाँटनवारे को लगे, ज्यों मेंहदी को रंग॥

सदा नगारा कूच का, बाजत आठों जाम।
रहिमन या जग आइ कै, को करि रहा मुकाम॥

सब को सब कोऊ करै, कै सलाम कै राम।
हित रहीम तब जानिए, जब कछु अटकै काम॥

समय दसा कुल देखि कै, सबै करत सनमान।
रहिमन दीन अनाथ को, तुम बिन को भगवान॥

समय परे ओछे वचन, सब के सहै रहीम।
सभा दुसासन पट गहे, गदा लिए रहे भीम॥

समय लाभ सम लाभ नहि, समय चूक सम चूक।
चतुरन चित रहिमन लगी, समय चूक की हूक॥

सर सूखे पच्छी उड़ैं, औरे सरन समाहिं।
दीन मीन बिन पच्छ के, कहु रहीम कहँ जाहिं॥

साधु सराहै साधुता, जती जोखिता जान।
रहिमन साँचे सूर को, बैरी करै बखान॥

सौदा करो सो करि चलौ, रहिमन याही बाट।
फिर सौदा पैहौ नहीं, दूरि जान है बाट॥

संतत संपति जानि कै, सब को सब कछु देत।
दीनबंधु बिनु दीन की, को रहीम सुधि लेत॥

ससि, सुकेस, साहस, सलिल, मान, सनेह रहीम।
बढ़त बढ़त बढ़ि जात हैं, घटत घटत घटि सीम॥

सीत हरत, तम हरत नित, भुवन भरत नहि चूक।
रहिमन तेहि रवि को कहा, जो घटि लखै उलूक॥

हित रहीम इतऊ करै, जाकी जिती बिसात।
नहिं यह रहै न वह रहै, रहै कहन को बात॥

होय न जाकी छाँह ढिग, फल रहीम अति दूर।
बढ़िहू सो बिनु काज ही, जैसे तार खजूर॥

× × ×

ओछे को सतसंग, रहिमन तजहु अँगार ज्यों।
तातो जारै अंग, सीरो पै कारो लगै॥

रहिमन कीन्हीं प्रीति, साहब को भावै नहीं।
जिनके अगनित मीत, हमैं गरीबन को गनै॥

रहिमन जग की रीति, मैं देख्यो रस ऊख में।
ताहू में परतीति, जहाँ गाँठ तहँ रस नहीं॥

रहिमन नीर पखान, बूड़ै पै सीझै नहीं।
तैसे मूरख ज्ञान, बूझै पै सूझै नहीं॥

रहिमन बहरी बाज, गगन चढ़े फिर क्यों तिरै।
पेट अधम के काज, फेर आय बंधन परै॥

रहिमन मन की भूल, सेवा करत करील की।
इनतें चाहत फूल, जिन डारन पत्ता नहीं॥

रहिमन मोहि न सुहाय, अमी पिआवै मान बिनु।
बरु बिप देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो॥

बिंदु मों सिंधु समान, को अचरज कासों कहै।
हेरनहार हेरान, रहिमन अपुने आप तें॥

चूल्हा दीन्हो बार, नात रह्यो सो जरि गयो।
रहिमन उतरे पार, भार झोंकि सब भार में॥

× × ×

बंदौं देवि सरदवा, पद कर जोरि।
बरनत काव्य बरैवा, लगै न खोरि॥

लखि अपराध पियरवा, नहिं रिस कीन।
बिहँसत चनन चउकिया, बैठक दीन॥

बिनु गुन पिय-उर हरवा, उपट्यो हेरि।
चुप ह्वै चित्र पुतरिया, रहि मुख फेरि॥

बैरिहि बैर गुमनवा, जनि करु नारि।
मानिक औ गजमुकता, जौ लगि बारि॥

रहत नयन के कोरवा, चितवनि छाय।
चलत न पग-पैजनियाँ, मग अहटाय॥

लहरत लहर लहरिया, लहर बहार।
मोतिन जरी किनरिया, बिथुरे बार॥

लागे आन नवेलियहि, मनसिज बान।
उकसन लाग उरोजवा, दृग तिरछान॥

कवन रोग दुहुँ छतिया, उपजे आय।
दुखि दुखि उठै करेजवा, लगि जनु जाय॥

औचक आइ जोबनवाँ, मोहि दुख दीन।
छुटिगा संग गोइअवाँ, नहि भल कीन॥

पहिरति चूनि चुनरिया, भूषन भाव।
नैननि देत कजरवा, फूलनि चाव॥
जंघन जोरत गोरिया, करत कठोर।
छुअन न पावै पियवा, कहुँ कुच-कोर॥
ढीलि आँख जल अँचवत, तरुनि सुभाय।
धरि खसकाइ घइलना, मुरि मुसुकाय॥
भोरहि बोलि कोइलिया, बढ़वति ताप।
घरी एक घरि अलवा, रह चुपचाप॥
सुनि-सुनि कान मुरलिया, रागन भेद।
गैल न छाँड़त गोरिया, गनत न खेद॥
निसु दिन सासु ननदिया, मुहि घर हेर।
सुनन न देत मुरलिया, मधुरी टेर॥
मोहि बर जोग कन्हैया, लागौं पाय।
तुहु कुल पूज देवतवा, होहु सहाय॥
चूनत फूल गुलबवा, डार कटील।
टुटिगा बंद अँगियवा, फट पट नील॥
आयेसि कवनेउ ओरवा, सुगना सार।
परिगा दाग अधरवा, चोंच चोटार॥
मै पठयेउँ जिहि कमवाँ, आयेस साध।
छुटिगा सीस को जुरवा, कसि के बाँध॥
मुहि तुहि हरबर आवत, भा पथ खेद।
रहि रहि लेत उससवा, बहत प्रसेद॥
होइ कत आइ बदरिया, बरखहि पाथ।
जैहौं घन अमरैया, सुगना साथ॥
जैहौं चुनन कुसुमियाँ, खेत बड़ि दूर।
नौआ केर छोहरिया, मुहि सँग कूर॥
बाहिर लै के दियवा, बारन जाय।
सासु ननद ढिग पहुँचत, देत बुझाय॥
तनिक सी नाक नथुनिया, मित हित नीक।
कहति नाक पहिरावहु, चित दै सींक॥
आजु नैन के कजरा, औरे भाँत।
नागर नेह नवेलिया, सुदिने जात॥

बालम अस मन मिलियउँ, जस पय पानि ।
हँसिनि भइल सवतिया, लइ बिलगानि ॥

आपुहि देत जवकवा, गूँधत हार ।
चुनि पहिराव चुनरिया, प्रान अधार ॥

अवरन पाय जवकवा, नाइन दीन ।
मुहि पग आगर गोरिया, आनन कीन ॥

खीन मलिन बिखभैया, औगुन तीन ।
मोहि कहत बिधुबदनी, पिय मतिहीन ॥

दौतुल भयसि सुगरुवा, निरस पखान ।
यह मधु भरल अधरवा, करसि गुमान ॥

मितवा करत बँसुरिया, सुमन सपात ।
फिरि फिरि तकत तरुनिया, मन पछतात ॥

मित उत तें फिरि आयेउ, देखु न राम ।
मैं न गई अमरैया, लहेउ न काम ॥

लखि लखि धनिक नयकवा, बनवत भेष ।
रहि गइ हेरि अरसिया, कजरा रेख ॥

करिकै सोरह सिंगरवा, अतर लगाइ ।
मिलेउ न लाल सहेटवा, फिरि पछिताइ ॥

भा जुग जाम जमनिया, पिय नहिं आय ।
राखेउ कवन सवतिया, रहि बिलमाय ॥

कठिन नीद भिनुसरवा, आलस पाइ ।
धन दे मूरख मितवा, रहल लोभाइ ॥

हँसि हँसि हेरि अरसिया, सहज सिंगार ।
उतरत चढ़त नवेलिया, तिय कै बार ॥

सोवत सब गुरु लोगवा, जानेउ बाल ।
दीन्हेस खोलि खिरकिया, उठि कै हाल ॥

कीन्हेसि सबै सिंगरवा, चातुर बाल ।
ऐहै प्रानपिअरवा, लै मनिमाल ॥

आपुहि देत जवकवा, गहि गहि पाय ।
आपु देत मोहि पिअवा, पान खवाय ॥

प्रीतम करत पियरवा, कहल न जात ।
रहत गढ़ावत सोनवा, इहै सिरात ॥

मैं अरु मोर पियरवा, जस जल मीन।
बिछुरत तजत परनवा, रहत अधीन॥

भो जुग नैन चकोरवा, पिय मुख चंद।
जानत है तिय अपुनै, मोहि सुखकंद॥

लै हीरन के हरवा, मानिकमाल।
मोहि रहत पहिरावत, बस ह्वै लाल॥

चलीं लिवाइ नवेलिअहि, सखि सब संग।
जस हुलसत गा गोदवा, मत्त मतंग॥

पहिरे लाल अछुअवा, तिय-गज पाय।
चढ़े नेह-हथिअवहा, हुलसत जाय॥

चलो रैनि अँधिअरिया, साहस गाढ़ि।
पायन केर कँगनिया, डारेस काढ़ि॥

नील मनिन के हरवा, नील सिंगार।
किए रैनि अँधिअरिया, धनि अभिसार॥

सेत कुसुम के हरवा, भूषन सेत।
चली रैनि उँजिअरिया, पिय के हेत॥

पहिरि बसन जरतरिया, पिय के होत।
चली जेठ दुपहरिया, मिलि रवि जोत॥

धन हित कीन सिंगरवा, चातुर बाल।
चलो संग लै चेरिया, जहवाँ लाल॥

परिगा कानन सखिया, पिय कै गौन।
बैठी कनक पलँगिया, ह्वै कै मौन॥

सुठि सुकुमार तरुनिया, सुनि पिय-गौन।
लाजनि पौंढ़ि ओवरिया, ह्वै कै मौन॥

पीतम इक सुमिरिनिया, मुहि देइ जाहु।
जेहि जप तोर बिरहवा, करब निबाहु॥

पियवा आय दुअरवा, उठि किन देख।
दुरलभ पाय बिदेसिया, मुद अवरेख॥

आवत सुनत तिरियवा, उठ हरषाइ।
तलफत मनहुँ मछुरिया, जनु जल पाइ॥

तौ लगि मिटिहि न मितवा, तन की पीर।
जौ लगि पहिर न हरवा, जटित सुहीर॥

जहवाँ जात रइनियाँ, तहवाँ जाहु ।
जोरि नयन निरलजवा, कत मुसुकाहु ॥

सघन कुंज अमरैया, सीतल छाँह ।
झगरत आय कोइलिया, पुनि उड़ि जाइ ॥

करवौं ऊँच अटरिया, तिय सँग केलि ।
कबधौं पहिरि गजरवा, हार चमेलि ॥

अब भरि जनम सहेलिया, तकब न ओहि ।
ऐंठलि गइ अभिमनिया, तजि कै मोहि ॥

पीतम मिलेउ सपनवाँ, भइ सुख-खानि ।
आनि जागएसि चेरिया, भइ दुखदानि ॥

पिय मूरति चितसरिया, चितवत बाल ।
सुमिरत अवध बसरवा, जपि जपि माल ॥

देखन ही को निस दिन, तरफत देह ।
यही होत मधुसूदन, पूरन नेह ॥

विरह विथा तें लखियत, मरिबौ भूरि ।
जो नहिं मिलिहै मोहन, जीवन मूरि ॥

भादों निस अँधिअरिया, घर अँधिआर ।
बिसर्यौ सुघर बटोही, शिव आगार ॥

× × ×

गई आगि उर लाय, आगि लेन आई जो तिय ।
लागी नाहिं बुझाय, भभकि भभकि बरि बरि उठै ॥

तुरुक-गुरुक भरिपूर, डूबि डूबि सुरगुर उठै ।
चातक जातक दूरि, देह दहे बिन देह को ॥

दीपक हिए छिपाय, नवल वधू घर लै चली ।
कर विहीन पछिताय, कुच लखि निज सीसै धुनै ॥

पलटि चली मुसुकाय, दुति रहीम उपजाय अति ।
बाती सी उसकाय, मानों दीनी दीप की ॥

यक नाहीं यक पीर, हिय रहीम होती रहै ।
काहु न भई सरीर, रीति न वेदन एक सी ॥

रहिमन पुतरी स्याम, मनहुँ जलज मधुकर लसै ।
कैधों शालिग्राम, रूपे के अरघा धरे ॥

तानसेन

अब मैं राम नाम कह टेरों।
मेरो मन लागो उनहीं सीतापति पद हेरो॥
चरन सरोज श्रवन मन मेरो धुज अंकुस सुख केरो।
तानसेन प्रभु तुम बहुनायक इन भक्तन पर फेरो॥

× × ×

प्रथम उठ भोर ही राधे-कृष्ण कहो मन।
जासों हो सब सिद्ध काज।
इह लोक परलोक के स्वामी।
ध्यान धरी ब्रजराज॥
पतित उधारन जन प्रति पालन।
दीन दयाल नाम लेत जाय दुख भाज।
तानसेन प्रभु को सुमरो प्रातहि।
जग में रहे तेरो लाज॥

× × ×

मुरली की धुन सुन चकित भई सब ब्रज की नारी सुध न रही कछु
आपन तन मन घर की।
छक छक रीझ रीझ कर लेत बलाई कान्हर हर की॥
ऐसे सुर ते बजावत जामें नीके सात सप्तक तान बिरह सुर की।
जिनहूँ सुन्यो तिनहूँ सुख पायो तानसेन प्रभु राधावर की॥

× × ×

घर घर ते ब्रज वनिता जो बन निकली।
आज कंचन थार भर भर नग नोछावर करत लाल की।
सप्त सुर ले गावत कंठ कोकला लाजत उपजत
अति रसाल गमक तान ताल की।
मदन महोत्सव साज समाज गोपिन वृन्द
मिल चलत चाल मराल की।
तानसेन प्रभु रस बस कर लीने।
तिरछी चितवन मदन गोपाल की॥

× × ×

चलो तुमहूँ देखो कैसी मची होरी गावत रंग महल में नारी।
एक गावत एक मृदंग बजावत एक नाचत दै दै करतारी॥
अबीर गुलाल केशर पिचकारी तक तक मारत गावत हैं सब गारी।
तानसेन प्रभु खेल रच्यो है फगुवा लीन्हों है भारी॥

× × ×

आनन्द भयो आज आयो विजय घर-घर मंगलचार।
अनेक गज तुरंग साजे नौबत नगारे बाजे गज तुरंग साजे सवार॥
तत बीतत घन शिखर नाना विधि बाजत सुर पुर के द्वार।
ब्रह्मा वेद पढ़ें नारद मुनि गावें राजा रामचन्द्र जी के द्वार॥
तानसेन कहै सुनो साह अकबर दशहरा सुफल भई तिथि वार॥

× × ×

सुन्दर अति प्रवीन महा चतुर अचल राज करो,
रवि ससि जौलों भूमि पर।
चिर चिरंजीव रहो जौलौं ध्रुव धरन तरन पवन पानी,
राजन मनि राजा रामचन्द्र रघुबर॥
तो सो तू ही और दूजो नाहीं मेरे जान,
सब जग को विसंभर।
तानसेन तोरी अस्तुति कहाँ लौं बखानौं,
भक्त-वछल तोहैं ध्यावत सुर नर मुनिवर॥

× × ×

कौन सी रित मानी साँची कहो मन भावन।
निसि के जागे अनुरागे आये हो मोहिं रिझावन॥
बचन बनावत बन नहिं आवत कहै देत नैन बैन
दरसावन।
तानसेन के प्रभु वहीं सिधारो जहाँ सारी रैन रति रंग
जगावन॥

× × ×

इन अँखियन मन में विरह की बेल बई।
सींच सींच जल अंसुवन पानी री दिन-दिन
होत चाह नई॥
उलहन पातन नये से बूँद पताल गई।
तानसेन प्रभु तुमरे दरस बिन सब तन छीन भई॥

× × ×

आज कहाँ तज बैठी है भूषन ऐसे अंग कछु अरसीले।
बोलत बोल रुखाई लिये तुम कहे कुढंग किये अहसीले ॥
क्यों न कहो दुख प्राण पिया सो अँसुअन रहे भर भर नै लजीले।
तानसेन सुख होवे जिनके तिनके मन भावन छैल छबीले ॥

× × ×

एरी आली आज शुभ दिन गावहु मंगल चार।
चौक पुरावो मृदंग बजाओ रिझावो बँधावो बाँधो बंधनवार ॥
गुनी गंधर्व अपसरा किन्नर बीन रबाव बजे करतार।
धन घरी धन पल मुहूरत तानसेन प्रभु पर बलिहार ॥

× × ×

एरी गँवार ग्वार तूं कहा जाने रोगी पीन को मरम।
काँध कामरी और हाथ लकुट लिए ताकों जिय कहा होत नरम।
कटि सोहै पीत बसन डारो फिरत याही ते जानि जात तेरो धरम।
तानसेन कहे शबरी को जूठो खायो ताके जिय कहा होत सरम ॥

× × ×

एरी तूं अंग अंग रंग राती अतही सयानी रितु पिय मन मानी।
सोलह कला समानी बोलत अमृत बानी तेरो मुख देखे चंद जोतहू लजानी ॥
कटि केहर कदली जंघ नारा ता पर कोट वारों श्रीफल उरोजन की छबि आनी।
तानसेन कहे प्रभु दोउ चिरजीवी रहो तेरो नेह रहै जौलौं गंग जमुन पानी ॥

× × ×

कहो जी तुम कौन हो कहाँ आये कहाँ कित ह्वै जावगे सबेरे।
हम तुमको पहचानत नाहिंन मेरे घर आवत दरेरे ॥
लाल पाग पीतांबर सोहत और बनमाल गरेरे।
तानसेन के प्रभु नेक ज्यों ठाढ़े रहे सब सखियन मिल हेरे ॥

× × ×

चंद्रवदनी मृगनयनी ता मध तारका गंग पुतरी कालिंदी इह बिधि
डोरे बनाय कीनी तिरवेनी।
छूटी पोत कंठ दीपक मुख को जोत होत तामें गुप्त प्रकट सरस्वती
मिली एन मेनी ॥
सुंदर रूप अनुपम सोभा त्रिभुवन पाप ताप हरनी करत सुख चैनी।
तानसेन को करो निरमल तूं दाता भक्त जनन की बैकुंठ की नसैनी ॥

× × ×

चंद्रबदनी मृगनयनी हंसगमनी चली हैं पूजन महादेव।
कर लिये अग्र थार पुहपन के गुंथे हार सुख दीयरा जराये देवन में
देव महादेव॥
सोलह सिंगार बतीसों आभरन सज नखसिख सुंदरताई छबि बरनी न
जाई हैं निरमल मंजन कर सेव॥
तानसेन कहै धूप दीप पुष्प पत्र नैवेद्य ले ध्यान लगाय हर हर हर
आदिदेव॥

× × ×

चलो जाय पूछिये हरि के समाचार जसोदा के आँगन कछु तो लगी
है री भीर।
पियातें पाती आई बाँचीहू न परे उनको कहा हमारी पीर॥
आवन कह गये अवधहूँ बीती अब कैसे जिय धरिये धीर।
तानसेन प्रभु मधुबन को बिरम रहे कबधों मिलिहैं जे हरे हैं चीर॥

× × ×

जनम योहीं गँवायो बावरो अब गहे न हरि के चरनन॥
हो जानो पीय जोबन थिर रहेगो भूली याही भरमन॥
लख चौरासी भटकत भटकत सरन सुमेर पायो मनुष्य धरमन॥
तानसेन के प्रभु सुमरन कर ले सुध चित करमन॥

× × ×

जै गंगा जग तारनी जग जननी पाप हरनी वेद बरनी बैकुंठ निसानी।
भागीरथी विष्णुपदा पवित्रा त्रिपथगा जाह्नवी जग जानी॥
ईस सीस मध विराजत त्रइलोक पावन किये जीव जत खग मृग सुर
नर मुनि ज्ञानी॥
तानसेन प्रभु तेरी अस्तुत करे तूं दाता भक्त जनन की मुक्त को
बरदानी॥

× × ×

जै शारदा भवानी भारती विद्यादानी महावाक् वानी तेहि ध्यावै॥
सुर नर मुनि मनि तोहिं कूं त्रिभुवन जानि जो जाकी मन इंछा
सोई सोई पुजावै॥
मंगला बुध दानी ज्ञान को निधानी वीणा पुस्तक धारनी प्रथम तोहिं
गावै॥
तानसेन तेरी अस्तुति कहाँ लों सप्त स्वर तीन ग्राम रँग लय अच्छर
आवै॥

× × ×

शानपति महेश विद्यापति गणेश पृथ्वीपति नरेश बलपति हनुमान ।
सरितापति सागर गिरवरपति सुमेर राजनपति इंद्र धर्मनपति दान ।।
बाजनपति मृदंग पत्रनपति पान पंछिनपति गरुड़ भक्तनपति कान्ह ।
साहनपति साह दिल्लीपति पातसाह तानसेनपति अकबर अर्जुनपति बान ।।

× × ×

तन की तपन तबही मिटेगी मेरी जब प्यारे कूं दृष्टि भर देखूँगी ।।
जब दरस पाऊँ प्रान पीतम को जनम जीतब सुफल अपनों लेखूगी ।।
अष्ट जाम मोहिं को ध्यान रहत वाको आली कोली भेटूँगी ।।
तानसेन प्रभु कोउ आन मिलावै ताके पाँयन सीस टेकूँगी ।।

× × ×

तेरे नयन लीने री जिन मोहे स्याम सलोने ।
अति ही दीर्घ बिसाल बिलोले कारे भारे पिय रस रिझाये कोने ।।
वदन जोत चंद्रहूते निर्मल कुच कठोर अति ठोने बोने ।
तानसेन प्रभु सों रतिमानी कंचन कसौटी कसोने ।।

× × ×

धीरे धीरे मन धीरे ही सब कुछ होय ।
धीरे राज धीरे काज धीरे जोग धीरे ध्यान धीरे सुख समाज जोय ।।
धीरे तीरथ धीरे व्रत संजम धीरे ही करे सत्संग सेवा साध के बैठ मन को धीरे राखोय ।
तानसेन कहैं सुनो साह अकबर एतो बड़ो राज एती बड़ी बादसाही धीरे ही ते पाई सोय ।।

× × ×

नाद अगाध बहुत गये हैं साध सुर नर गुनी गंधर्व रचपच गये सिद्ध सँवार ।
काहू न पायो पार कर कर थाके विचार कँवल आसन शिवश्रवन धार ।।
अंजनी नंदन कहे उचार सरस्वती तरन लागी हिय में दो तूंबा डार ।।
सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मूर्छना बाइस सुहत उनचास कोट तन असंन्यास विकृत धार ।
छह राग छतीस रागणी ओडव के भेद सुध मुद्रा सुध बानी तानसेन करो बिना जाको सूझत न आरपार ।।

× × ×

मनमोहन मनमानी यातें तूं प्रवीण सयानी ।
सुंदर वदन चंद्रकला लजानी तोसी तूं ही तिया और नहीं तिहूँ लोक सानी ॥
तानसेन चिर चिरजीवो ऐसी प्रीत रही जौलों जमुन गंग पानी ॥

× × ×

मन ही मन में तू रार रही धर आप अपवस कर के सवन तें दुराय विराय
कर रही सो अरगट परगट नैन वताय देत ।
प्रानेसुर की प्रीत अति गुपत कियो चाहे अत री तेरे दृगपाल तें अनजान
जान लेत ॥
जौलों मैं न सिखाई तौंलो आई नेह नजर जनम जनम हित समेत ।
तानसेन प्रभु के रंग रंगे जे अरन वरन सेत असेत ॥

× × ×

माइ री महा कठिन भयो मिल विछुरे की पीर ।
घरीं घरीं पल छिन जुग से वीतन लागे नैनन भर भर आवत नीर ॥
जव से प्यारो भयो न्यारो कल ना परत मेरो वीर ।
तानसेन के प्रभु वेग आवन कीनों जियरा धरत नहीं धीर ॥

× × ×

मोसों अवधि वद गये गुंसाईं रहे कवन भाँत ।
रैना दिना मग जोवत जात ऐसी कौन तिय जेहि रिझाय कीनो मात ॥
अंजन अधर भाल महावर नवल तिया ललचात ।
तानसेन प्रभु वहीं सिधारो जहाँ जागे सारी रात ॥

× × ×

लंगर बटमार खेले होरी ।
वाट गाट कोउ निकस न पावै पिचकारिन रंग बोरी ।
मैं जू गई जमुना जल भरने गह मुष मींजी रोरी ।
तानसेन प्रभु नंद को ढोटा वरज्यो न मानत गोरी ॥

× × ×

सुर मुनि को परनाम करि, सुगम करौं संगीत ।
तानसेनि वाणी सरस, जान गान की प्रीत ॥
देख्यौ शिवमत भरतमत, हनूमान मत जोइ ।
कहै संगीत विचारि कै, तानसेनि मत सोइ ॥
गीत वाद्य अरु नृत्य कौ, कह्यौ नाम संगीत ।
तानसेनि सुमतङ्ग मुनि, भरत मते हो थीत ॥

द्वै प्रकार संगीत है, मारग देसी जानु।
मारग ब्रह्मादिक कह्यौ, देसी देसनि मानु॥
गीत वाद्य अरु नृत्य रस, साधारण गुण जोइ।
तानसेनि उपजै नहीं, सो संगीत न होइ॥
द्वै प्रकार जो नाद है, राख्यौ सुरमुनि जानि।
तानसेनि जु कह्यौ है, वहुविधि तिनै बखानि॥
नाहत नाद जो मुक्ति दे, आहत रंजक जानि।
भौ भंजन मीयां प्रगट, नादहिं कह्यो वखानि॥
नाहत बाजत आपुही, आहत दैव बजाइ।
तानसेन संगीत मत, इन्हके कहे सुभाइ॥
नाद अनाहत को सदा, सुरमुनि करैं जु ध्यान।
गुर उपदेसै मुक्ति दे, यह जानौ परिनाम॥

× × ×

वायु अग्नि संजोग ते, उपजत आहत नाद।
तानसेनि संगीत मत, कह्यौ सुरनि ब्रह्माद॥
जो टारत है चित्त को, चित्त टारत है अग्नि।
टारत अग्नि जु वायु को, ब्रह्म ग्रंथि जो मग्नि॥
ततछन ऊरध को चलै, ब्रह्म ग्रंथि की वायु।
सुच्छम धुनि ह्वै नाभि की, अंग मध्य पुष्टायु॥
होय पुष्ट जो सीस मैं, कृत्यम वहुमुष आइ।
पंच स्थानन फिरत है, तानसेनि मुष भाइ॥
कही जु उतपति नाद की, शास्त्र रीति परमान।
तानसेन संगीत मत, जानौ चतुर सुजान॥
गीत वाद्य अरु नृत्य कौ, कह्यौ आतमा नाद।
तानसेनि संगीत मत, जामै उपजत स्वाद॥
तीनौ मत बस नाद के, कह्यौ सुमुनिन प्रमान।
ताहि हिये मँह जानि निज, मीयाँ सरस सुजान॥
बरन बात ब्यवहार मैं, मिल्यौ रहतु है नाद।
तानसेनि सब जीति भय, और कहै सो वाद॥
नाद ज्ञान बरतत रहै, सारद के परसाद।
केवल पशु जड़ नाग ए, कुण्डल भै सुनि नाद॥

पसु सिसु अहि सन्तुष्ट भौ, सुनो सब्द जिन नाद ।
तानसेनि यह नाद की, कहि न जात मरजाद ॥
नाद उदधि के पार को, केती करी उपाइ ।
मज्जन के डर सारदा, तूंबी रही लगाइ ॥

अकबर

जाको जस है जगत मैं, जगत सराहै जाहि ।
ताको जीवन सफल है, कहत अकब्बर साहि ॥

साहि अकब्बर एक समैं चले कान्ह विनोद विलोकन वालहि ।
आहट ते अवला निरख्यो चकि चौंकि चली करि आतुर चालहि ।
त्यों बलि बेनी सुधारि धरी सु भई छवि यों ललना अरु लालहि ।
चम्पक चारु कमान चढ़ावत काम ज्यों हाथ लिये अहि व्यालहि ।

× × ×

केलि करैं विपरीत रमैं सुअकब्बर क्यों न इतो सुख पावै ।
कामिनि की कटि किंकिन कान किधौं गनि पीतम के गुन गावै ।
विन्दु छुटी मन मे सुललाट तें यों लट में लटको लगि आवै ।
साहि मनोज मनो चित मैं छवि चन्द लये चकडोर खिलावै ॥

बीरबल

पूत कपूत, कुलच्छनि नारि, लराक परोस, लजायन सारो ।
वन्धु कुबुद्धि, पुरोहित लम्पट, चाकर चोर, अतीथ छुतारो ।
साहव सूम, अराक तुरंग, किसान कठोर, दिवान नकारो ।
ब्रह्म भनै सुन शाह अकब्बर, बारहो बाँधि समुद्र में डारो ।

× × ×

सखि भोर उठी बिन कंचुकी भामिनि कान्हर ते करि केलि घनी ।
कवि ब्रह्म भनै छवि देखत ही कहि जात नहीं मुख ते बरनी ।
कुच अग्र नखच्छत कंत दयो सिर नाय निहारि लियो सजनी ।
ससि 'सेखर के सिर से सु मनों निहुरे ससि लेत कला अपनी ।

× × ×

एक समै हरि धेनु चरावत, वेनु बजावत मंजु रसालहि।
डीठि गई चलि मोहन की वृषभानु सुता उर मोतिन मालहि।
सो छवि ब्रह्म लपेटि हिए करसों कर लैकर कंज सनालहि।
ईस के सीस कुसुम्भ की माल मनो पहिरावत व्यालिनि व्यालहि।

× × ×

उछरि उछरि भेकी झपटै उरग पर उरग पै केकिन के लपटै लहकि है।
केकिन के सुरति हिए की ना कछू है भये एकी करी केहरिन बोलत बहकि है।
कहै कवि ब्रह्म वारि हेरत हरिन फिरैं बैहर बहत बड़े जोर सों जहकि है।
तरनि के तावन तवा सी भई भूमि रही दसहू दिसान में दवारिसी दहकि है।

टोडरमल

गुन विन धन जैसे, गुरू विन ज्ञान जैसे,
मान विन दान जैसे, जल विन सर है।
कण्ठ विन गीत जैसे, हित विन प्रीत जैसे,
वेश्या रस रीति जैसे, फल विन तर है।
तार विन जंत्र जैसे, स्याने विन मंत्र जैसे,
पुरुष विन नार जैसे, पुत्र बिन घर है।
टोडर सुकवि तैसे मनमें विचार देखो,
धर्म विन धन जैसे पच्छी विन पर है।

× × ×

जार को विचार कहा, गनिका को लाज कहा,
गदहा को पान कहा, आँधरे को आरसी।
निगुनी को गुन कहा, दान कहा दारिदी को,
सेवा कहा सूम को, अरण्डन की डारसी।
मदपी को सुचि कहा, सोंच कहा लम्पट को,
नीच को वचन कहा, स्यार की पुकार सी।
टोडर सुकवि ऐसे हठी ते न टारे टरै,
भावे कहो सूधी बात, भावै कहो फारसी।

× × ×

सोहै जिन सासन में आतमानुसासन सु
जी के दुखहारी सुखकारी साँची सासना।

जाको गुन भद्रकार गुण भद्र जाको जानि,
भद्र गुन धारी भव्य करत उपासना।
ऐसे सार सास्त्र को प्रकास अर्थ जीवन को,
बनै उपकार नासै मिथ्या भ्रम वासना।
ताते देस भाषा अर्थ को प्रकास करु जाते,
मंद बुद्धि हूँ के हिए होवै अर्थ भासना।

अग्रदास

कुन्डल ललित कपोल जुगल अस परम सुदेसा।
तिनको निरखि प्रकास लजत राकेस दिनेसा।
मेयक कुटिल विसाल सरोरुह नैन सुहाए।
मुख पंकज के निकट मनो अलि छौना छाए।
× × ×
पहरे राम तुम्हारे सोवत, मैं मतिमंद अंध नहिं जोवत।
अपमारग मारग महि जान्यो, इन्द्री पोषि पुरुषारथ मान्यो।
औरनि के बल अनत प्रकार, अगरदास के राम अधार।

नाभादास

त्रेता काव्य निबन्ध करी सत कोटि रसायन।
इक अच्छर उच्चरे ब्रह्म इत्यादि परायन।
अब भक्तन सुख दैन बहुरि लीला विस्तारी।
राम चरच रसमत्त रहत अहनिसि व्रतधारी।
संसार अपार के पार को, सुगम रूप नौका लियो।
कलि कुटिल जीव निस्तारहित बाल्मीक तुलसी भयो।
× × ×
अवधपुरी की सोभा जैसी। कहि नहि सकहि शेष श्रुति तैसी।
रचित कोट कल धौत सुहावन। विवध रंग मति अति मन भावन।
चहुँदिसि विपिन प्रमोद अनूपा। चतुर जोजन रस रूपा।
सुदिसि नगर सरजू सरि पावनि। मनिमय तीरथ परम सुहावनि।
बिगसे जलज भृंग रस भूले। गुन्जत जल समूह दोउ कूले।
परिखर प्रति चहुँ दिसि लसति, कंचन कोट प्रकाश।
विविध भाँति नग जगमगत, प्रति गोपुर पुरआस॥

हृदयराम

जानकी को मुख न विलोक्यो ताते कुन्डल।
न जानत हौं, वीर पायँ छुवै रघुराइ के॥
हाथ जो निहारे नैन फूटि है हमारे।
ताते कंकन न देखे, वाले कह्यो सत भाइ के॥
पाँयन के परिवे को जाने दास लछिमन।
याते पहिचानत है भूषन जे पाइ के॥
विछुआ है एई, अरु झांझ है एई जुग।
नूपुर है तेई राम जानत जराइ के॥

× × ×

एहो हनू! कह्यो श्रीरघुवीर कछू सुधि है सिय की छिति माँही।
हे प्रभु लंक कलंक बिना सुवसै तहँ रावन बागकी छाँही।
जीवित है? कहिवोई को नाथ, क्यों न मरी हमते विछुराहीं।
प्रान बसै पद पंकज में जम आवत है पर पावत नाहीं।

× × ×

सातो सिन्धु सातों लोक सातों रिषि है ससोक,
सातो रवि थोरे थोरे देखे न डरात मैं।
सातो दीप ईति काँप्योई करत और,
सातो मत रात दिन प्रान है न गात है।
सातो चिर जीव बरराइ उठे बार बार,
सातो सुर हाय हाय होत दिन रात है।
सातहू पताल काल सबद कराल राम।
भेदे सात ताल, चाल परी सात सात मैं।

प्राणचंद चौहान

कातिक मास पच्छ उजियारा। तीरथ पुन्य सोम कर वारा॥
ता दिन कथा कीन्ह अनुमाना। शाह सलेम दिलीपति थाना॥
संवत सोरह सै सत साठा। पुन्य प्रगास पाय भय नाठा॥
जो सारद माता करु दाया। बरनौं आदि पुरुष की माया॥
जेहि माया कह मुनि जगमूला। ब्रह्मा रहे कमल के फूला॥

निकसि न सक माया कर बाँधा । देषहु कमलनाल के राँधा ॥
आदि पुरुष बरनौं केहि भाँती । चाँद सुरज तहँ दिवस न राती ॥
निरगुन रूप करै सिव ध्याना । चार वेद गुन तोरि बषाना ॥
तीनों गुन जानै संसारा । सिरजै पालै भंजनहारा ॥
श्रवन बिना सो अस बहुगुना । मन में होइ सु पहले सुना ॥
देषै सब पै आहि न आँषी । अंधकार चोरी के साषी ॥
तेहि कर दहुँ को करै बषाना । जिहि कर मर्म वेद नहि जाना ॥
माया सींव सो कोउ न पारा । शंकर पँवरि बीच होइ हारा ॥

नरहरि

ज्ञानवान हठ करै निधन परिवार बढ़ावै ।
बँधुआ करै गुमान धनी सेवक ह्वै धावै ॥
पण्डित किरिया हीन राँड़ दुरबुद्धि प्रमानै ।
धनी न समझै धर्म नारि मरजाद न मानै ॥
कुलवंत पुरुष कुलविधि तजै वन्धु न मानै वन्धु हित ।
संन्यास धारि धन संग्रहै ये जग में मूरख विदित ॥

× × ×

को सिखवत कुल वधू लाज गृह काज रङ्ग रति ।
हंसन को सिक्खवत करन पय पान भिन्न गति ॥
सज्जन को सिक्खवत दान अरु शील सुलच्छन ।
सिंहन को सिक्खवत हनन गज कुंभ ततच्छन ॥
विधि रच्यो जानि नरहरि निरखि कुल सुभाव को मिट्टवै ।
गुण धर्म अकब्बर साह सुन को नर काको सिक्खवै ॥

× × ×

वैर धनी निरधनी वैर कायर अरु सूरहिं ।
घृत मधु माखी वैर वैर निम्मूहि कपूरहिं ॥
मूसे सर्पहिं वैर वैर पावक अरु पानी ।
जरा जोबना वैर वैर मूरख अरु ज्ञानी ॥
बड़ वैर मोर जिमि चन्द मन विरहिन वैर वसन्त सों ।
नरहरि सुकब्बि कब्वित्त किय मङ्गन वैर अदत्त सों ॥

× × ×

सरवर नीर न पीवहीं स्वाति बुंद की आस ।
केहरि कबहुँ न तृन चरै जो व्रत करै पचास ॥
जो व्रत करै पचास बिपुल गज्जूह बिदारै ।
धन ह्वै गर्व न करै निधन नहिं दीन उचारै ॥
नरहरि कुल क सुभाव मिटै नहिं जब लग जीवै ।
बरु चातक मरि जाय नीर सरवर नहिं पीवै ॥

× × ×

भूमि परत अवतरत करत बानक बिनोद रस ।
पुनि जोबन मदमत्त तत्व इन्द्री अनङ्ग बस ॥
विजय हेत जड़ फिरत वहुरि पहुँच्यो बिरधप्पन ।
गयो जन्म गुन गनत अन्त कछु भयो न अप्पन ॥
थिर रहत न कोउ नरपति न बल रहत एक चहुँजुग्ग जस ।
सुइ अजर अमर नरहरि निरखि पिये भक्ति भगवंत रस ॥

× × ×

कबहुँ द्वार प्रतिहार कबहुँ दर दर फिरंत नर ।
कबहुँ देत धन कोटि कबहुँ कर तर करंत कर ॥
कबहुँ नृपति मुख चहत कहत करि रहत वचन बस ।
कबहुँ दास लघु दास करत उपहास जिभ्य रस ॥
कछु जानि न संपति गर्ब्बिये विपति न यह उर आनिये ।
हिय हारि न मानत सत पुरुष नरहरि हरिहिं सँभारिये ॥

× × ×

अरिहुँ दन्त तिन धरै-ताहि नहि मारि सकत कोइ ।
हम संतत तिनु चरहिं, वचन उचारहि दीन होइ ॥
अमृत पय नित स्रवहिं-बच्छ महि थंभन जावहि ।
हिन्दुहिं मधुर न देहिं कटुक तुरकहिं न पियावहि ॥
कह कवि नरहरि अकबर सुनौं विनवत गउ जोरे करन ।
अपराध कौन मोहि मारियत मुएहु चाम सेवहि चरन ॥

कृपा राम

परसि पाइ बोली बिहँसि, वेगि चलो रस दानि ।
तो हित कीन्हों कुन्ज में, रसिक बसेरो आनि ॥
विरह सतावै रैन दिन, तऊ रटै तुम नाम ।
चातिक ज्यों स्वाती चहै, पाती चहै सुवाम ॥

भादौं की अधराति, गरजि गरजि बरपै जलद ।
लिए तुम्हारी जाति, जरति न बन घन कुपथ पथ ॥

लखि यों हुलसति ननहि मन, लसत लखे भजि जाहिं ।
असन बसन भूषन विमल, लहे वधू सरसाहिं ॥

आवत जोबन कछुक तन, होत डहडहे अंग ।
शिशुता की हलचल कही, ललिता ललित सुरंग ॥

खिझवति हँसति लजाति पुनि, चितवत चमकति हाल ।
शिशुता जोबन की झलक, भरे वधू तन ख्याल ॥

नवल बधू तन तरु नई, नई रही है छाइ ।
दे चशमा चख चतुरई, लघु शिशुता लखि जाइ ॥

पति समीप दोउ प्रिया, लखति द्वैज को चंद–
चाँपि चरन सों चरन इक, लालन लग्यो अनंद ॥

मोल तोल छवि एक के, गुहि मोतिन के हार ।
लेहु बहुनि सो हँसि कह्यो, धरि समीप सुकुमार ॥

अति प्रवीन वह सुन्दरी, मोहन को हित आँकि ।
सबको दीठि बचाइके, गई झरोकनि झाँकि ॥

फीके लागत उर अबै, गुरु गुरुजन के बोल ।
नीके नंद किशोर के, करै सखी चित लोल ॥

प्यारी प्यारे सो प्रथम मिलत परम परवीन ।
मंद मंद बोलैं बिहँसि जनु डरपति रस लीन ॥

हित हित को पर सखिन मुख, प्रगटत सुन्यो सुबाम ।
गही चित्रगति सुन्दरी, रही बैठि निज धाम ॥

कौन सुने कासों कहौं, जब तब रोकत गैल ।
को मोहन सखि नाहिं री, मो ननदोई छैल ॥

छुने बाँस की बाँसुरी, डारि चले नँदलाल ।
लेहु कनक की नग जटित, मो घर धरी रसाल ॥

अबै चल्यौ पति गाँव को, नहीं और घर कोइ ।
हितहिं सुनायो हितहिं वर, भरि लोचन में तोइ ॥

फिरि बिदेस सूनो सदन, बिरह सतावै रैन ।
स्याम सुनै यों सखिन सों, कहै सुलोचनि बैन ॥

गयो निकसि सुरसों कहूँ, मोरे परतिय नाम ।
बिच घूँघट प्यारी वधू, कीन्हे लोचन ताम ॥

आज सवारे हौं गई, नन्दलाल हित ताल ।
कुसुम कुसुदनी के भट्ट, निरखे औरै हाल ॥
खंजन मीन कुरंग गन, मैं जीते सुनि वाल ।
मृगलोचनि मोसों कहै, विन समझे क्यों लाल ॥
भूले पंथ सुकुञ्ज के, धौ अरसाने लाल ।
नूतन और मिली कहूँ, य सोचै उर वाल ॥
चली स्याम हित राधिका, सरद उजेरी माहि ।
चंद उजेरी सों मिलत, नेकु न जानी जाहि ॥
रैन अँधेरी नील पट, मृगमद चर चित अंग ।
सघन घटा सी लखि परै, रँगी स्याम के रंग ॥
तजि गोकुल अकरूर संग, मथुरा चलत गुपाल ।
विरह अनल उपज्यो हिएँ, सुनत राधिके हाल ॥
चहै संग अकरूर के, गौन कियो ब्रजराज ।
सुनि धुनि सूकी सुन्दरी, भूलि गयो गृहकाज ॥
नचत विलोके रास में सगुन सलोने स्याम ।
ऊधो ते क्योंहु न लखे, निरगुन निपट निकाम ॥
माल व्याल जाये भई, चंदन भयो दवागि ।
निसदिन भामिनि भौन में, फिरत विरह तन दागि ॥
सहि न सकति तन दुसह दुख कहि न सकत पिक बैन ।
तरफराति सफरीन लौं, बिन जल हित मृग नैन ॥
जा सुमिरे पातक नसै, लसै सकल शुभ काम ।
सोई प्रभु मो मन वसौ, नन्द नन्द घनस्याम ॥

गंग

चकित भँवर रहि गयौ गमन नहिं करत कमलवन ।
अहि फनि मनि नहिं लेत तेज नहिं वहत पवन घन ॥
हंस मानसर तज्यो चक्क चक्की न मिलै अति ।
वहु सुन्दरि पद्मिनी पुरुष न चहैं न करैं रति ॥
खलभलित सेस कवि गंग भमि अमित तेज रवि रथ खस्यो ।
खानान खान बैरम सुवन जि दिन क्रोध करि तँग कस्यो ॥

× × ×

बैठी थी सखिन संग पिय को गवन सुन्यो,
सुख के समूह में वियोग आग भरकी।
गंग कहै त्रिविध सुगंध लै पवन बह्यो,
लागतही ताके तन भई बिथा जर की।
प्यारी को परसि पौन गयो मानसर पहँ,
लागत ही औरै गति भई मानसर की।
जलचर जरे ओ सेवार जरि छार भयो,
जल जरि गयो पंक सूख्यो भूमि दरकी॥

× × ×

नवल नवाब खानखाना जू तिहारी त्रास,
भागे देसपती धुनि सुनत निसान की।
गंग कहै तिनहूँ की रानी राजधानी छाँड़ि,
फिरै बिललानी सुधि भूली खान पान की।
तेऊ मिलो करिन हरिन मृग बानरन,
तिनहूँ की भली भई रच्छा तहाँ प्रान की।
सची जानो करिन भवानो जानो केहरिन,
मृगन कलानिधि कपिन जानी जानकी॥

× × ×

प्रबल प्रचण्ड बली बैरम के खानखाना,
तेरी धाक दीपन दिसान दह दहकी।
कहै कवि गंग तहाँ भारी सूर वीरन के,
उमड़ि अखंड दल प्रलै पौन लहकी।
मच्यो घमसान तहाँ तोप तीर बान चलै,
मंडि बलवान किरवान कोपि गहकी।
तुंड काटि मुंड काटि जोसन जिरह काटि,
नीमा जामा जीन काटि जिमी आनि ठहकी॥

× × ×

झुकत कृपान मयदान ज्यों उदोत भान,
एकन तें एक मनो सुखमा जरद की।
कहै कवि गंग तेरे बल की बयारि लगे,
फूटी गज घटा घन घटा ज्यों सरद की।
एते मान सोनित को नदियाँ उमड़ि चलीं,
रही न निसानी कहूँ महि में गरद की।

गौरी गह्यो गिरिपति गनपति गह्यो गौरी,
गौरीपति गह्यो पूँछ लपकि वरद को॥
फूट गये हीरा की बिकानी कनी हाट हाट,
काहू घाट मोल काहू बाढ़ मोल को लयो।
टूट गई लंका फूट मिल्यो जो विभीषन है,
रावन समेत वंश आसमान को गयो।
कहै कवि गंग दुर्योधन से छत्रधारी,
तनक में फूटे तें गुमान वाको नै गयो।
फूटे तें नरद उठि जात वाजी चौसर की,
आपुस के फूटे कहु कौन को भलो भयो॥

× × ×

आवत हौं चले शिव शैलेतें गिरीश जाँचे,
मिल्यो हुतो मोहि जहाँ सागर सगर को।
कविन की रसना के पालकी पै चढ़ो जात,
संग सोहै रावरो प्रताप तेज वर को।
कवि गंग पूछी तुम को हौ कित जैहो, उन,
कह्यो मोसों हँसिकै सनेसो ऐसो थर को।
जस मेरो नाम मेरो दसो दिसि काम मेरो,
कहियो प्रनाम हौं गुलाम वीरवर को॥

× × ×

देखत के वृच्छन में दीरघ सुभायमान,
कीर चल्यो चाखिवे को प्रेम जिय जग्यो है।
लाल फल देखि कै जटान मड़रान लागे,
देखत बटोही बहुतेरे डगमग्यो हैं।
गंग कवि फल फूटे भुआ उधिरान लखि,
सवन निरास ह्वै कै निज गृह भग्यो है।
ऐसो फलहीन वृच्छ बसुधा में भयो यारो,
सेमर बिसासी बहुतेरन को ठग्यो है॥

× × ×

मृगहू ते सरस विराजत विसाल दृग,
देखिये न अति दुति कौलहू के दल मैं।

'गंग' घन दुज से लसत तन आभूषन,
ठाढ़े द्रुम छाँह देख ह्वै गई विकल मैं।
चख नित चाय भरे शोभा के समुद्र माँझ,
रही ना सँभार दसा और भई पल मैं।
मन मेरो गरुओ गयोरी बूड़ि मैं न पायो,
नैन मेरे हरुये तिरत रूप जल मैं॥

× × ×

चकई बिछुरि मिली तू न मिली प्रीतम सों,
गंग कवि कहै ये तो कियो मान टानरी।
अथये नछत्र ससि अथई न तेरी रिस,
तू न परसन परसन भयो भान री।
तू न खोली मुख खोलो कंज औ गुलाब मुख,
चली सीरी बाय तू न चली भो बिहान री।
राति सब घटी नाहीं करनी ना घटी तेरी,
दीपक मलीन ना मलीन तेरो मान री॥

× × ×

अधर मधुप ऐसे बदन अधिकानी छवि,
विधि मानो विधु कीन्हो रूप को उदधि कै।
कान्ह देखि आवत अचानक मुरछि पर्‌यो,
बदन छपाइ सखियान लीन्हो मधि कै।
मारि गई गंग दृग शर वेधि गिरिधर,
आधी चितवनि मैं अधीन कीन्हो अधिकै।
बान बधि बधिक बचे को खोज लेत फेरि,
बधिक बधू ना खोज लीन्ही फेरि बधि कै॥

× × ×

मालती शकुन्तला सी को है कामकंदला सी,
हाजिर हजार चारु नटी नौल नागरै।
ऐल फैल फिरत खवास खास आस पास,
चोवन की चहल गुलावन की गागरै।
ऐसी मजलिस तेरी देखी बीरबर,
गंग कहै गूँगी ह्वै कै रह्यो है गिरा गरै।

महि रह्यो मागधनि गीत रह्यो ग्वालियर,
गोरा रह्यो गोर ना अगर रह्यो आगरै ॥

× × ×

राजे भाजे राज छोड़ि रन छोड़ि रजपूत,
रौतौ छोड़ि राउर रनाई छोड़ि रानाजू ।
कहै कवि गंग हूल समुद के चहूँ कूल,
कियो न करै कबूल तिय खसमाना जू ।
पश्चिम पुरतगाल कासमीर अवताल,
खक्खर को देस बाढ़्यो भक्खर भगाना जू ।
रूम साम लोम सोम बलक बदाऊशान,
खैल फैल खुरासान खीझे खानखाना जू ॥

× × ×

कोप काशमीर तें चल्यो है दल साजि बीर,
धीर न धरत गल गाजिवे को भीम है ।
सुन्न होत सांझे तें बजत दंत आधीरात,
तीसरे पहर में दहल दे असीम है ।
कहै कवि गंग चौथे पहर सतावै आनि,
निकट निगोरो मोहिं जानि कै यतीम है ।
बाढ़ी शीत शंका कांपे कर ह्वै अतङ्का,
लघुशंका के लगे ते होत लंका की मुहीम है ॥

× × ×

दलहि चलत हलहलत भूमि थल थल जिमि चल दल ।
पल पल खल खलभलत विकल वाला कर कुल कल ॥
जब पटहध्वनि युद्ध धुंधु धुद्धुव धुद्धुव हुव ।
अरर अरर फटि दरकि गिरत धसमसति धुकन ध्रुव ॥
भनि गंग प्रबल महि चलत दल जहँगीर शाह तुव भार तल ।
फुं फुं फनिन्द फन फुंकरत सहस गाल उगिलत गरल ॥

× × ×

मृगनैनी की पीठ पै बेनी लसै सुख साज सनेह समोइ रही ।
सुचि चीकनी चारु चुभी चित मैं भरि भौन भरी खुशबोइ रही ॥
कवि गंग जूया उपमाजो कियो लखि सूरति ता श्रुति गोइ रही ।
मनो कंचनके कदलीदल पै अति साँवरी सांपिन सोइ रही ॥

× × ×

मन घायल पायल मायल ह्वै गढ़ लंकते दूर निसंक गयो ।
तहँ रूप नदी त्रिवली तरि के करि साहस सागर पार भयो ।।
कवि गंग भनै बटपार मनोज रुमावलि सों ठग संग लयो ।
परि दोऊ सुमेरु के बीच मनोभव मेरो मुसाफिर लूट लयो ।।

नरोत्तम दास

लोचन कमल दुखमोचन तिलक भाल ।
श्रवणन कुंडल मुकुट धरे माथ हैं ।।
श्रोढ़े पीत वसन गले में वैजयंती माल ।
शंख चक्र गदा श्रौर पद्म लिये हाथ हैं ।।
कहत नरोत्तम सँदीपन गुरू के पास ।
तुमही कहत हम पढ़े एक साथ हैं ।।
द्वारका के गये हरि दारिद हरेंगे पिय ।
द्वारका के नाथ वे श्रनाथन के नाथ हैं ।।

× × ×

शिच्छक हैं सिगरे जगको तिय ताको कहा अब देति है सिच्छा ।
जे तप कै परलोक सिधारत संपति की तिनके नहिं इच्छा ।।
मेरे हिये हरिको पद पंकज वार हजारलौं देख परिच्छा ।
श्रौरन के धन चाहिये बावरी ब्राह्मण के धन केवल भिच्छा ।।

× × ×

दानी बड़े तिहुँ लोकन में जग जीवत नाम सदा जिनको लै ।
दीनन की सुधि लेत भली विधि सिद्ध करो पिय मेरो मतो लै ।।
दीन दयालु के द्वार न जातसो श्रौर के द्वार पै दीन ह्वै बोलै ।
श्री यदुनाथ से जाके हितूसो तिहुँ पन क्यों कन माँगत डोलै ।।

× × ×

च्छत्रिन के प्रण युद्ध ज्यों बादल साजि चढ़े गज बाजनहीं ।
वैश्य को वानिज श्रौर कृषीपन शूद्र के सेवन नीति यही ।।
विप्रन के प्रण है जु यही सुख संपति सों कुछ काज नहीं ।
कै पढ़िबो कै तपोधन है कन माँगत ब्राह्मणै लाज नहीं ।।

× × ×

कोदों समा जुरतौ भरिपेट न चाहति हौं दधि दूध मिठौती ।
शीत व्यतीत गयो सिसिश्रातहि हौं हठती पै तुम्हैं न हठौती ।।

जो जनती न हितू हरि से तौ मैं काहे को द्वारका ठेल पठौती ।
या घरसे कबहूँ न गयो पिय टूटौ तवा अरु फूटी कठौती ॥

× × ×

छाँड़ि सबै झख तोहि लगी बक आठहुँ याम यही ठक ठानी ।
जातहि दैहैं लदाय लढ़ा भरि लैहौं लदाय यही जिय जानी ॥
पैये अटारी अटा कहँ ते जिनको विधि दीनी है टूटी सी छानी ।
जोपै दरिद्र ललाट लिख्यो तोपै काहु के मेटे न जात अजानी ॥

× × ×

फाटे पट टूटी छानि खायो भीख माँगि ।
आनि विना गये विमुख रहत देव पित्रई ॥
वे हैं दीनबन्धु दुखी देखके दयालु ह्वै हैं ।
दै हैं कछु भलो सो हौं जानत अगतई ॥
द्वारका लौं जात पिय केतौ अलसात ।
तुम काहे को लजात भई कौन सी विचित्रई ॥
जोपै सब जन्म ये दरिद्र ही सतायो ।
तोपै कौन काज आय है कृपानिधि की मित्रई ॥

× × ×

तैं तो कही नीकी सुन बात हित ही की ।
यह रीति मित्रई की नित प्रीति सरसाइये ॥
चित्त के मिलेते वित्त चाहिये परसपर ।
मित्र के जो जैंइये तो आप हू जिमाइये ॥
वे हैं महाराज जोरि बैठत समाज भूप ।
तहाँ यह रूप जाय कहा सकुचाइये ॥
दुख सुख सब दिन काटे ही बनेगो भूल ।
विपति परे पै द्वार मित्र के न जाइये ॥

× × ×

विप्र के भगत हरि जगत विदित बन्धु ।
लेत सब ही की सुधि ऐसे महादानि हैं ॥
पढ़े एक चटसार कही तुम कैयो बार ।
लोचन अपार वे तुम्हें न पहिचानिहैं ॥
एक दीनबन्धु कृपासिंधु फेर गुरुबन्धु ।
तुम सम कौन दीन जाको जिय जानिहैं ॥
नाम लेत चौगुनी गये ते द्वार सौगुनी ।
बिलोकत सहसगुनी प्रीति प्रभु मानिहैं ॥

× × ×

द्वारका जाहु जू द्वारका जाहु जू आठहु याम यही झक तेरे ।
जौ न कहो करिये तौ बड़ो दुख पैहौ कहाँ अपनी गति हेरे ॥
द्वार खड़े प्रभु के छड़िया तहँ भूपति जान न पावत नेरे ।
पाँच सुपारी तौ देखु विचारि के भेट को चारि न चामर मेरे ॥

× × ×

यह सुनि के तब ब्राह्मणी गई परोसिन पास ।
सेर पाव चामर लिये आई सहित हुलास ॥
सिद्धि करो गणपति सुमिरि बाँधि दुपटिया खूट ।
चले जाहु तेहि मारगहि माँगत बाली बूट ॥

× × ×

मंगल संगीत धाम धाम में पुनीत जहाँ ।
नाचें वारवधू देवनारि अनुहारिका ॥
घंटन के नाद कहूँ बाजन के छाय रहे ।
कहूँ कीर केकी पढ़ें सुक और सारिका ॥
रतनन ठाट हाट बाटन में देखियत घूमें ।
गज अश्व रथ पत्ति नर नारिका ॥
दशो दिशा भीर द्विज धरत न धीर मन ।
उठत है पीर लखि बलवीर द्वारिका ॥

× × ×

दृष्टि चकचौंधि गयी देखत सुवरनमयी ।
एकते सरस एक द्वारका के भौन हैं ॥
पूछे बिन कोऊ काहू से न करै बात जहाँ ।
देवता से बैठे सब साधि साधि मौन हैं ॥
देखत सुदामा धाय पुरजन गहे पाय ।
कृपा करि कहो कहाँ कीने विप्र गौन हैं ॥
धीरज अधीर के हरण परपीर के ।
बताओ बलवीर के महेल यहाँ कौन हैं ॥

द्वारपाल चलि तहँ गयो जहाँ कृष्ण यदुराय ।
हाथ जोरि ठाड़ो भयो बोल्यो शीश नवाय ॥

× × ×

शीश पगा न झँगा तन में प्रभु जानें को आहि बसै किहि ग्रामा ।
धोती फटी सी फटी दुपटी अरु पाँय उपानह की नहिं सामा ॥

द्वार खड़ो द्विज दुर्बल देखि रह्यो चकि सो बसुधा अभिरामा ।
दीनदयालु को पूछत धाम बतावत आपनो नाम सुदामा ।।

× × ×

लोचन पूरि रहे जल सों प्रभु दूरते देखतही दुख मेट्यो ।
सोच भयो सुरनायक के कलपद्रुम के हिय माँझ खखेट्यो ।।
काँपि कुबेर हिये सर से पग जात सुमेरहु रंक से सेट्यो ।
राज भयो तबही जबही भरि अंग रमापति सों द्विज भेंट्यो ।।

× × ×

ऐसे बिहाल बिवायन सों भये कंटक जाल लगे पुनि जोये ।
हाय महा दुख पायो सखा तुम आये इतै न कितै दिन खोये ।।
देखि सुदामा की दीन दशा करुणा करिके करुणानिधि रोये ।
पानी परात को हाथ छुयो नहि नैनन के जल सों पग धोये ।।

× × ×

तंदुल त्रिय दीने हुते आगे धरियो जाय ।
देखि राजसंपति विभव दै नहि सकत लजाय ।।
अंतरयामी आप हरि जानि भक्ति की रीति ।
सुहृद सुदामा विप्रसो प्रकट जनाई प्रीति ।।
कछु भाभी हमको दियो सो तुम काहे न देत ।
चाँपि गाँठरी काँख में रहे कहो किहि हेत ।।

× × ×

आगे चना गुरु मात दिये ते लिये तुम चावि हमें नहि दीने ।
श्याम कही मुसकाय सुदामासों चोरिकी बानि में हौ जु प्रवीने ।।
गाँठरी काँख में चापि रहे तुम खोलत नाहि सुधारस भीने ।
पाछिली बानि अजौ न तजी तुम वैसे ही भाभी के तंदुल कीने ।।
खोलत सकुचत गाँठरी चितवत हरिकी ओर ।
जीरण पट फट छुटि परे बिखरि गये तेहि ठौर ।।

× × ×

तंदुल माँगत मोहन विप्र सकोच ते देत नहीं अभिलाखे ।
है नहिं पास कछू कहिके तहि गोपि घनी विधि काँख राखे ।।
सो लखि दीनदयालु तहाँ यह चोरी करी तुम यों हँसि भाखे ।
खोलके पोट अछोट मुठी गिरि धारण चामर चावसों चाखे ।।

× × ×

काँपि उठी कमला मन सोचत मों सों कहा हरि को मन ओंको ।
ऋद्धि कँपी नवनिद्ध कँपी सब सिद्धि कँपी ब्रह्मनायक धोंको ।।

शोक भयो सुरनायक के जब दूसरी बार लयो भरि झोंको ।
मेरु डरै बकसै जिन मोहि कुबेर चबावत चामर चोंको ॥

× × ×

हूल हियरा में कान कानन परी है टेर ।
भेटत सुदामैं श्याम बनै न अघातहीं ॥
कहै नरोत्तम ऋद्धि सिद्धिन में शोर भयो ।
ठाड़ी थरहरे और सोचे कमला तहीं ॥
नाग लोक लोक सब ओक ओक थोक थोक ।
ठाढ़े थरहरैं मुख से कहैं न बातहीं ॥
हाल पर्‍यो लोकन में लालो पर्‍यो ।
चक्रिन में चालो पर्‍यो लोगन में चामर चबातहीं ॥

× × ×

भौन भरे पकवान मिठाइन लोग कहैं निधि हैं सुखमा के ।
साँझ सवेरे पिता अभिलाषत दाखन प्राखत सिंधु रमा के ॥
ब्राह्मण एक कोऊ दुखिया सेर पावक चामर लायो समाके ।
प्रीति की रीति कहा कहिये तिहि बैठे चबावत कंत रमा के ॥

× × ×

मूठी दुसर भरत ही रुक्मिनि पकरी बाँह ।
ऐसी तुम्हें कहा भई संपति की अनचाह ॥
कही रुक्मिनि कान में यह धौं कौन मिलाप ।
करत सुदामहि आपसो होत सुदामा आप ॥

× × ×

हाथ गह्यो प्रभु को कमला कहै नाथ कहा तुमने चित धारी ।
तंदुल खाय मुठी दुइ दीन कियो तुमने दुइ लोक बिहारी ॥
खाय मुठी तिसरी अब नाथ कहा निज बास की आस बिसारी ।
रङ्कहि आप समान कियो तुम चाहत आपहि होन भिखारी ॥

× × ×

रूपे के रुचिर थार पायस सहित शोभा ।
सब जीत लीनी शोभा शरद के चंदकी ॥
दूसरे परोस्यो भात सान्यो है सुरभि घृत ।
फूले फूले फुलके प्रफुल्लिद्युति मंदकी ॥
पापर मुँगौरी बरा बेसन अनेक भाँति ।
देवता बिलोकि शोभा भोजन अनंदकी ॥

या विधि सुदामा जी को अच्छकै जिमाय ।
फिर पाछेकै पछावरि परोसी आनि कंदकी ॥

× × ×

कह्यो विश्वकर्मा को हरि तुम जाय करि ।
नगर सुदामा जी को रचौ वेग अबही ॥
रतन जटित धाम सुवरणमयी सव ।
कोट औ बजार वाग फूलनके तवही ॥
कल्पवृक्ष द्वार गज रथ असवार प्यादे ।
कीजिये अपार दास दासी देव छबही ॥
इन्द्र औ कुवेर आदि देव वधू अपसरा ।
गंधरव गुणी जहाँ ठाढ़े रहैं सबही ॥

× × ×

नित नित सब द्वारावती दिखलाई प्रभु आप ।
भरे बाग अनुराग सब जहाँ न व्यापहिं ताप ॥
परम कृपा दिन दिन करी कृपानाथ यदुराय ।
मित्र भावना विस्तरी दूनो आदर भाय ॥

× × ×

दाहिने वेद पढ़ैं चतुरानन सामुहे ध्यान महेश धर्‌यो है ।
बायें दोऊ करजोर सुसेवक देवन साथ सुरेश खर्‌यो है ॥
एतन वीच अनेक लिये धन पायन आय कुबेर पर्‌यो है ।
देखि विभो अपनो सपनो बपुरो वह ब्राह्मण चौंकि पर्‌यो है ॥

× × ×

देनो हुतो सो दे चुके विप्र न जानी गाथ ।
चलती वेर गुपाल जी कछू न दीनो हाथ ॥
गोपुर लों पहुँचाय के फिरे सकल दरवार ।
मित्र वियोगी कृष्ण के नेत्र चली जल धार ॥
हौं आवत नाहीं हुतौ वामहि पठयो ठेल ।
अब कहिहौं समझाय के बहु धन धरौ सकेल ॥
वालापन के मित्र हैं कहा देउँ मैं शाप ।
जैसो हरि हमको दियो तैसो पइयो आप ॥
और कहा कहिये जहाँ कञ्चन ही के धाम ।
निपट कठिन हरि को हियो मोको दियो न दाम ॥

इमि सोचत सोचत झकत आये निज पुर तीर ।
दृष्टि परी इक बारहीं हय गयंद की भीर ॥

× × ×

वेई सुरतरु प्रफुलित फुलवारिन में ।
वेई सुरवर हंस बोलन हिलन को ॥
वेई हेम हिरन दिशान दहलीजन में ।
वेई गजराज हय गरज गिलन को ॥
द्वार द्वार छड़ी लिये द्वार पौरिया जो खड़े ।
बोलत मरोर बरजोर ज्यों भिलन को ॥
द्वारका ते चल्यो भूलि द्वारका ही आयो नाथ ।
माँगिहैं न मोपै चार चामर मिलन को ॥

× × ×

जगर मगर ज्योति छाय रही चहुँ दिशि ।
अगर बगर हाथी घोड़न को शोर है ॥
चौनड़ को बन्यो है बजार पुनि सोनन के ।
महल दुकान की कतार चहुँ ओर है ॥
भीड़भाड़ धकापेल चहुँ दिशि देखियत ।
द्वारकाते दूनों यहाँ प्यादेन को जोर है ॥
रहिबो को ठाम है न काहू सों पिछान मेरी ।
बिन जाने बसे कोऊ हाड़ मेरे तोर है ॥

× × ×

फूटी एक थारी बिन टोंटनीकी झारी हुती ।
बाँस की पिटारी औ पथारी हुती ठाटकी ॥
बेंटे बिन छुरी औ कमंडलु हौ टोकावो हौ ।
टूटो हतो पोपौ पाटी टूटी एक खाटकी ॥
पथरौटा काठको कठौता कहूँ दीसै नाहिं ।
पीतर को लोटो हो कटोरो है न बाटकी ॥
कामरी फटी सी हुती डोड़न की माला नाक ।
गोमती की माटी की न सुध कहूँ माटकी ॥

मलूक दास

अब तो अजपा जपु मन मेरे ।
सुर नर असुर टहलुआ जाके मुनि ग्रंथन हैं जाके चेरे ।

दस औतार देखि मत भूलौ, ऐसे रूप घनेरे।
अलख पुरुष के हाथ बिकाने जब नैननि हेरे।
कह मलूक तू चेत अचेता काल न आवै नेरे।
नाम हमारा खाक है, हम खाकी बंदे।
खाकहिं से पैदा किये अति गाफिल गंदे।
कबहूँ न करने बंदगी दुनिया में भूले।
आसमान को ताकते छोड़े चढ़ फूले।

× × ×

सबहिन के हम सबै हमारे। जीव जंतु मोहि लगै पियारे ॥
तीनो लोक हमारी माया। अन्त कतहुँ से कोइ नहिं पाया ॥
छत्तिस पवन हमारी जाति। हमही दिन औ हमही राति ॥
हमही तरुवर कीट पतंगा। हमही दुर्गा हमही गंगा ॥
हमही तल्ला हमही काजी। तीरथ बरत हमारी बाजी ॥
हमही दशरथ हमही राम। हमरै क्रोध औ हमरै काम ॥
हमही रावन हमही कंस। हमही मारा अपना बंस ॥

× × ×

दीन दयाल सुनी जब से, तब से हिय में कुछ ऐसी बसी है।
तेरो कहाय के जाऊँ कहाँ मैं, तेरे हित की पट खैंच कसी है।
तेरोई एक भरोसो मलूक को, तेरे समान न दूजो जसी है।
एहो मुरारि कहौ अब, मेरी हँसी नहिं तेरी हँसी है।

× × ×

भील कब करी थी भलाई जिय आप जान,
फील कब हुआ था मुरीद कहु किसका ?
गीध कब ज्ञान की किताब का किनारा छुआ,
व्याध अरु बधिक निसाफ कहु तिसका ?
नाग कब माला लैके बंदगी करी थी बैठ,
मुझको भी लगा था अजामिल का हिसका ?
ऐते बदराहो की बदी करी थी माफ जन,
मलूक अजाती पर एती करी रिसका।

× × ×

जहाँ जहाँ बच्छा फिरै, तहाँ तहाँ फिरै गाय।
कहै मलूक जहँ संत जन, तहाँ रमैया जाय ॥

गर्व भुलाने देह के, रचि रचि बाँधे पाग।
सो देही नित देखि के, चोंच सँवारै काग॥
दर्द दिवाने बावरे, अलमस्त फकीरा।
एक अदीका ले रहे, ऐसे मन धीरा॥
प्रेम पियाला पीवते, बिसरे सब साथी।
आठ पहर यों झूमते, ज्यों माता हाथी॥
उनको नजर न आवते, कोई राजा रंका।
बंधन तोड़े मोह के, फिरते निःशंका॥
साहब मिलि साहब भये, कछु न रही तमाई।
कहि मलूक तेहि घर गये, जहाँ पवन न जाई॥

एकनाथ

आदि पुरुष निर्गुण निराधार की याद कर,
मेरे गुरु परवर दिगार की याद कर।
जिने माया अजब बनाइ,
उस वस्ताद की याद कर।
गैवी खजाना जिसने दिया,
उस साहब की याद कर।
सन्त महन्त की याद कर,
गुणी गुणवन्त की याद कर।

× × ×

आ बे हांडी बाग। बाप बड़ा क्या बेटा बड़ा?
बेटे आगे बाप खड़ा। गुरु बड़ा क्या चेला बड़ा?
चेले आगे गुरू खड़ा। चेला तो प्रेम महल पर चढ़ा।
धनी बड़ा क्या चाकर बड़ा? चाकर आगे धनी खड़ा।

तुकाराम

मंत्र तंत्र नहिं मानत साखी। प्रेम भाव नहिं अन्तर राखी॥
राम कहे त्याके पग लागूँ। देखत कपट अभिमान हौ भागूँ॥
अधिक जाति कुळ-हीन नहिं जानूँ। जाने नारायन सो प्रानी मानूँ॥
कहे तुका जीव तन डारू वारी। राम उपसिहूँ बलियारी॥

× × ×

तन की करूँ नावरी उतारूँ वैले तीर ।
सन्त जन पन्हिया ले खड़ा राहूँ ठाकुर द्वार ।
चलत पाछे हूँ फिरौं रज उड़त लेउँ सीर ।
राम कहे सो मुख भला रे खाए खीर खांड ।
हरि बिन मुख यों धूल परी रे क्या जानी उस रांड ?
राम कहे सो मुख भला रे बिना राम से बीस ।
अब न जानूँ राम ते जब काल लगावे सीस ।
कहे तुका मैं सौदा लेवे केनन हार ।

× × ×

मीठ साधु संत जन रे रे मूरख के सिर मार ।
कहे तुका भला भया हम हुआ संत का दास ।
क्या जानूँ केते मरते न मिटती मन की आस ।
तुका और मिठाई क्या करूँ पाले विकार पिंड ।
राम कसावे सो भली सखी माखन चीर खांड ।

रसखानि

मानुष हौं तौ वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन ।
जौ पसु हौं तौ कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन ।
पाहन हौं तौ वही गिरि को जो धर्यौ कर छत्र पुरंदर-धारन ।
जौ खग हौं तौ बसेरो करौं मिलि कालिंदी-कूल कदंब की डारन ।।

× × ×

जो रसना रस ना बिलसै तेहि देहु सदा निज नाम उचारन ।
मो कर नीकी करैं करनी जु पै कुंज-कुटीरन देहु बुहारन ।
सिद्धि समृद्धि सबै रसखानि लहौं ब्रज-रेनुका-अंक-सँवारन ।
खास निवास मिलै जु पै तौ वही कालिंदी-कूल कदंब की डारन ।।

× × ×

वा लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं ।
आठहु सिद्धि नवौ निधि को सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं ।
ए रसखानि जबै इन नैनन तें ब्रज के बन-बाग निहारौं ।
कोटिक ये कलधौत के धाम करील की कुंजन ऊपर वारौं ।।

× × ×

बैन वही उनको गुन गाइ औ कान वही उन बैन सों सानी।
हाथ वही उन गात सरैं अरु पाइ वही पु वहीं अनुजानी।
जान वही उन आन के संग औ मान वही पु करै मनमानी।
त्यों रसखानि वही रसखानि पु है रसखानि सों है रसखानी॥

× × ×

सेष सुरेस दिनेस गनेस प्रजेस धनेस महेस मनावौ।
कोऊ भवानी भजौ, मन की सब आस सबै विधि जाइ पुरावौ।
कोऊ रमा भजि लेहु महा धन, कोऊ कहूँ मनवांछित पावौ।
पै रसखानि वही मेरो साधन, और त्रिलोक रहौ कि नसावौ॥

× × ×

कंचन-मंदिर ऊँचे बनाइ कै मानिक लाइ सदा झलकैयत।
प्रात ही तें सगरी नगरी नग मोतिन ही की तुलानि तुलैयत।
जद्यपि दीन प्रजान प्रजापति को प्रभुता मघवा ललचैयत।
ऐसे भए तौ कहा रसखानि जौ साँवरे ग्वार सों नेह न लैयत॥

× × ×

देस विदेस के देखे नरेसन रीझ की कोऊ न बूझ करैगो।
तातें तिन्हें तजि जानि गिर्‌यो गुन, सौ गुन औगुन गाँठि परैगो।
बाँसुरीवारो बड़ो रिझवार है स्याम पु नैकु ढार ढरैगो।
लाड़लो छैल वही तौ अहीर को पीर हमारे हिये की हरैगो॥

× × ×

सुनियै सब की कहियै न कछू रहियै इमि या मन बागर मैं।
करियै व्रत-प्रेम सचाई लियें, जिन तें तरियै मन-सागर मैं।
मिलियै सब सों दुरभाव बिना, रहियै सतसंग उजागर मैं।
रसखानि गुबिंदहिं यौं भजियै जिमि नागरि को चित गागर मैं॥

× × ×

कहा रसखानि सुखसंपति सुमार कहा,
कहा तन जोगी ह्वै लगाए अंग छार को।
कहा साधे पंचानल, कहा सोए बीच नल,
कहा जीति लाए राज सिंधु-आरपार को।
जप बार बार, तप संजम बयार-व्रत,
तीरथ हजार अरे बूझत लबार को।

कीन्हौ नहीं पार, नहीं सेयौ दरबार, चित
चाह्यौ न निहार्‌यौ जौ पै नंद के कुमार को ॥

× × ×

वेई ब्रह्म ब्रह्मा जाहि सेवत हैं रैन-दिन,
सदासिव सदा ही धरत ध्यान गाढ़े हैं।
वेई विष्नु जाके काज मानो मूढ़ राजा रंक,
जोगी जती ह्वै के सीत सह्यौ अंग डाढ़े हैं।
वेई ब्रजचंद रसखानि प्रान प्रानन के,
जाके अभिलाष लाख लाख भाँति बाढ़े हैं।
जसुधा के आगे बसुधा के मन-मोचन ये,
तामरस-लोचन खरोचन कौं ठाढ़े हैं॥

× × ×

कंचन के मंदिरनि डीठि ठहराति नाहिं,
सदा दीपमाल लाल-मानिक उजारे सों।
और प्रभुताई अब कहाँ लौं बखानौ,
प्रतिहारन की भीर भूप टरत न द्वारे सों।
गंगाजी में न्हाइ मुक्ताहलहू लुटाइ, वेद
बीस बार गाइ, ध्यान कीजत सवारे सों।
ऐसे ही भए तौ नर कहा रसखानि जौ पै,
चित दै न कीनी प्रीति पीतपटवारे सों॥

× × ×

गावैं गुनी गनिका गँधरब्ब औ सारद सेष सबै गुन गावत।
नाम अनंत गनंत गनेस ज्यौं ब्रह्मा त्रिलोचन पार न पावत।
जोगी जती तपसी अरु सिद्ध निरंतर जाहि समाधि लगावत।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावत॥

× × ×

सेष गनेस महेस दिनेस सुरेसहि जाहि निरंतर गावैं।
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सु वेद बतावैं।
नारद से सुक व्यास रहैं पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं॥

× × ×

संकर से सुर जाहि जपैं चतुरानन ध्यानन धर्म बढ़ावैं ।
नेकु हियें जिहि आनत ही जड़ मूढ़ महा रसखानि कहावैं ।
जा पर देव अदेव भू-अंगना वारत प्रानन प्रानन पावैं ।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं ॥

× × ×

गुंज गरें सिर मोरपखा अरु चाल गयंद को मो मन भावै ।
साँवरो नंदकुमार सबै ब्रजमंडली मैं ब्रजराज कहावै ।
साज समाज सबै सिरताज औ छाज की बात नहीं कहि आवै ।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावै ॥

× × ×

संपति सौं सकुचाइ कुबेरहि रूप सौं दीनी चिनौती अनंगहि ।
भोग कै कै ललचाइ पुरंदर, जोग कै गंग लई धरि मंगहि ।
ऐसे भए तौ कहा रसखानि रसै रसना जौ जु मुक्ति-तरंगहि ।
दै चित ताके न रंग रच्यो जु रह्यो रचि राधिका रानी के रंगहि ॥

× × ×

ब्रह्म मैं ढूंढ्यौ पुरानन गानन बेद-रिचा सुनि चौगुने चायन ।
देख्यौ सुन्यौ कबहूँ न कितूँ वह कैसे सरूप औ कैके सुभायन ।
टेरत हेरत हारि पर्‌यौ रसखानि बतायौ न लोग लुगायन ।
देखौ दुरौ वह कुंज कुटीर मैं बैठो पलोटत राधिका पायन ॥

× × ×

द्रौपदी औ गनिका गज गीध अजामिल सों किय सो न निहारो ।
गौतम-गेहनी कैसी तरी, प्रहलाद कों कैसें हर्‌यौ दुख भारो ।
काहे कों सोच करै रसखानि कहा करिहै रबिनंद बिचारो ।
ता खन जा खन राखियै माखन-चाखनहारो सो राखनहारो ॥

कहा करै रसखानि को कोऊ चुगुल लबार ।
जौ पै राखनहार है माखन-चाखनहार ॥

× × ×

आजु गई हुती भोर ही हौं रसखानि रई वहि नंद के भौनहिं ।
वाको जियौ जुग लाख करोर जसोमति को सुख जात कह्यौ नहिं ।
तेल लगाइ लगाइ कै अंजन भौंहैं बनाइ बनाइ डिठौनहिं ।
डालि हमेलनि हार निहारत वारत ज्यौं चुचकारत छौनहि ॥

× × ×

धूरिभरे अति सोभित स्यामजू तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरैं अँगना पग पैजनी बाजति पीरी कछोटी।
वा छबि कों रसखानि बिलोकत वारत काम कला निज कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी॥

× × ×

गाइ दुहाई ना या पै कहूँ, न कहूँ यह मेरी गरी निकरयौ है।
धीरसमीर कलिंदी के तीर खरयौ रहै आजु ही डीठि परयौ है।
जा रसखानि बिलोकत ही सहसा ढरि रॉग सो ऑग ढरयौ है।
गाइन घेरत हेरत सो पट फेरत टेरर आनि अरयौ है॥

× × ×

डोलिबो कुंजनि कुंजनि को अरु बेनु बजाइबो धेनु चरैबो।
मोहिनीताननि सों रसखानि सखानि के संग को गोधन गैबो।
ये सब डारि दिये मन मारि बिसारि दयौ सिगरो सुख पैबो।
भूलत क्यों करि नेहन ही को 'दही' कहिबो मुसकाइ चितैबो॥

× × ×

आयौ हुतौ नियरें रसखानि कहा कहौं तू न गई वहि ठैया।
या ब्रज में सिगरी बनिता सब वारति प्राननि होति बलैया।
कोऊ न काहू की कानि करै कछु चेटक सो जु कियौ जदुरैया।
गाइ गौ तान जमाइ गौ नेह रिझाइ गौ प्रान चराइ गौ गैया॥

× × ×

जा दिन तें वह नंद को छोहरा या वन धेनु चराइ गयौ है।
मोहिनी ताननि गोधन गावत वेनु वजाइ रिझाइ गयौ है।
वा दिन सों कछु टोना सो कै रसखानि हिये मैं समाइ गयौ है।
कोऊ न काहू की कानि करै सिगरो ब्रज बीर, बिकास गयौ है॥

× × ×

आवत हैं बन तें मनमोहन गाइन संग लसैं ब्रज ग्वाला।
वेनु वजावत गावत गीत, अभीत इतै करि गौ कछु ख्याला।
हेरत टेरि ककै चहुँ ओर तें, झाँकि झरोखन ते ब्रज-बाला।
देखि सु आनन कों रसखानि तज्यौ सब द्योस को ताप-कसाला॥

× × ×

एक समै जमुना-जल मैं सब मज्जन हेत धसीं ब्रज-गोरी।
त्यों रसखानि गयौ मनमोहन लै कर चीर कदंब की छोरी।

न्हाइ जबै निकसीं बनिता चहुँ ओर चितै चित रोष करो री।
हार हियें भरि भावन सों पट दीने लला वचनांमृत बोरी॥

× × ×

कुंजगली मैं अली निकसी तहाँ साँकरें ढोटा कियौ भटभेरो।
माई री वा मुख की मुसकान गयौ मन बूड़ि फिरै नहिं फेरो।
डोरि लियौ दृग चोरि लियौ चित डारयौ है प्रेम को फंद घनेरो।
कैसी करौं अब क्यौं निकसौं रसखानि परयौ तन रूप को घेरो॥

× × ×

भौंह भरी सुथरी बरुनी अति ही अधरानि रच्यौ रँग रातो।
कुंडल लोल कपोल महाछबि कुंजन तें निकस्यौ मुसकातो।
छूटि गयौ रसखानि लखें उर भूलि गई तन की सुधि सातो।
फूटि गयौ सिर तें दधि भाजन टूटि गौ नैननि लाज को नातो॥

× × ×

रंग भरयो मुसकात लला निकस्यौ कल कुंजन तें सुखदाई।
मैं तबहीं निकसी घर तें तकि नैन बिसाल की चोट चलाई।
घूमि गिरी रसखानि तबै हरिनी जिमि बान लगें गिरि जाई।
टूटि गयौ घर को सब बंधन छूटि गौ आरज-लाज-बड़ाई॥

× × ×

खंजन मीन सरोजन को मृग को मद गंजन दीरघ नैना।
कुंजन तें निकस्यौ मुसकात सु पान भरयौ मुख अमृत बैना।
जाइ रहे मन प्रान बिलोचन कानन मैं रुचि मानत चैना।
रसखानि करयौ घर मो हिय मैं निसिबासर एक पलौ निकसै ना॥

× × ×

अधर लगाइ रस प्याइ बाँसुरी बजाइ,
मेरो नाम गाइ हाइ जादू कियौ मन मैं।
नटखट नवल सुघर नँदनंदन ने,
करि कै अचेत चेत हरि कै जतन मैं।
झटपट उलट पुलट पट परिधान,
जान लागीं लालन पै सबै बाम बन मैं।
रस रास सरस रँगीलो रसखानि आनि,
जानि जोर जुगुति बिलास कियौ जन मैं॥

× × ×

देखत सेज बिछी ही अछी सु बिछो बिष सो भिदि गौ सिगरे तन।
ऐसी अचेत गिरी नहिं चेत उपाय करे सिगरी सजनी जन।
बोली सयानी सखी रसखानि बचैं यौं सुनाइ कह्यौ जुवतीगन।
देखन कौं चलियै री चलौ सब, रास रच्यौ मनमोहन जू बन॥

× × ×

देखि कै रास महावन को इक गोपबधू कह्यौ एक बधू पर।
देखति हौ सखि मार से गोपकुमार बने जितने ब्रज-भू पर।
तीछैं निहारि लखौ रसखानि सिंगार करौ किन कोऊ कछू पर।
फेरि फिरैं अँखियाँ ठहराति हैं कारे पितंबरवारे के ऊपर॥

× × ×

आज भटू मुरली-वट के तट नंद के साँवरे रास रच्यौ री।
नैननि सैननि बैननि सौं नहिं कोऊ मनोहर भाव बच्यौ री।
जद्यपि राखन कौं कुल-कानि सबै ब्रजबालन प्रान पच्यौ री।
तद्यपि वा रसखानि के हाथ बिकानि कौं अंत लच्यौ पै लच्यौ री॥

× × ×

जात हुती जमुना जल कौं मनमोहन घेरि लयौ मग आइ कै।
मोद भर्‌यौ लपटाइ लयौ, पट घूँघट टारि दयौ चित चाइ कै।
और कहा रसखानि कहौं मुख चूमत घातन बात बनाइ कै।
कैसें निभै कुलकानि, रही हियें साँवरी मूरति की छबि छाइ कै॥

× × ×

आईं सबै ब्रज-गोपाललली ठिठकीं ह्वै गली जमुना-जल न्हाने।
औचक आइ मिले रसखानि बजावत बेनु सुनावत ताने।
हाहा करी सिसकीं सिगरी मति मैन हरी हियरा हुलसाने।
घूमैं दिवानी अमानी चकोर सौं ओर सौं दोऊ चलैं दृग बाने॥

× × ×

बात सुनी न कहूँ हरि की, न कहूँ हरि सो मुखबोल हँसी है।
काल्हि ही गोरस बेचन कौं निकसी ब्रजबासिनि बीच लसी है।
आजु ही बारक 'लेहु दही' कहि कै कछु नैनन मैं बिहसी है।
बैरिनि वाहि भई मुसकानि जु वा रसखानि के प्रान बसी है॥

× × ×

पहलें दधि लै गई गोकुल मैं चख चारि भए नटनागर पै।
रसखानि करी उनि मैनमई कहैं दान दै दान खरे अर पै।

नख तें सिख नील निचोल लपेटे सखी सम भाँति कँपै डरपै।
मनौं दामिनि सावन के घन मैं निकसै नहीं भीतर ही तरपै॥

× × ×

गोरस गाँव ही मैं बिचिबो तजिबो नहीं नंद-मुखानल-भारन।
गैल गहें चलियें रसखानि तौ पाप बिना डरियें किहि कारन।
नाहिं री ना भटू, क्यौं करि कै बन पैठत पाइबी लाज सम्हारन।
कुंजनि नंदकुमार बसै तहाँ मार बसै कचनार की डारन।

× × ×

बार हीं गोरस बेंचि री आजु तूँ माइ कें मूड़ चढ़े कत मौंडी।
आवत जात हीं होइगी साँझ भटू जमुना भतरौंड लौं औंडी।
पार गएँ रसखानि कहै अँखियाँ कहूँ होहिंगी प्रेम-कनौंडी।
राधे बलाइ ल्यौं जाइगी बाज अबै ब्रजराज-सनेह की डौंडी॥

× × ×

छीर जौ चाहत चीर गहैं अजू लेउ न केतिक छीर अचैहौ।
चाखन के मिस माखन माँगत खाउ न माखन केतिक लैहौ।
जानति हौं जिय की रसखानि सु काहे कौं एतिक बात बढ़ैहौ।
गोरस के मिस जो रस चाहत सो रस कान्हजू नेकु न पैहौ॥

× × ×

आज महूँ दहि बेचन जात ही मोहन रोकि लियौ मग आयौ।
माँगत दान मैं आन लियौ सु कियौ निलजी रस-जोबन खायौ।
काह कहूँ सिगरी री बिथा रसखानि लियौ हँसि कै मुसकायौ।
पाले परी मैं अकेली लली, लला लाज लियौ सु कियौ मन भायौ॥

× × ×

दानी नए भए माँगत दान सुनै जुपै कंस तौ बाँधे न जैहौ।
रोकतहीं बन मैं रसखानि पसारत हाथ महा दुख पैहौ।
टूटैं छरा बछरादिक गोधन जो धन है सु सबै पुनि दैहौ।
जैहै जो भूषन काहू तिया को तौ मोल छला के लला न बिकैहौ॥

× × ×

लंगर छैलहि गोकुल मैं मग रोकत संग सखा ढिग तें हैं।
जाहि न ताहि दिखावत आँखि सु कौन गई अब तोसों करें हैं।
हाँसी मैं हार हरयौ रसखानि जू जौ कहूँ नेकु तगा टुटि जैहैं।
एकहि मोती के मोल लला सिगरे ब्रज हाटहि हाट बिकैहैं॥

× × ×

अंत तें न आयौ याही गाँवरे को जायौ,
माई बापरे जिवायौ प्याइ दूध बारे बारे को।
सोई रसखानि पहिचानि कानि छाँड़ि चाहै,
लोचन नचावत नचैया द्वारे द्वारे को।
भैया की सौ सोच कछू मटकी उतारे को न,
गोरस के ढारे को न चीर चोरि डारे को।
यहै दुख भारी गहै डगर हमारी माँझ,
नगर हमारे ग्वाल बगर हमारे को॥

× × ×

तन चंदन खौर कै बैठी भटू रही आजु सुधा को सुता मनसी।
मनौ इंदुबधून लजावन कौ सब ज्ञानिन काढ़ि धरी गन-सी।
रसखानि विराजति चौकी कुचौ बिच उत्तमताहि जरी तन सी।
दमकै दृगवान के घायन कौ गिरि सेत के संधि के जीवन सी॥

× × ×

बासर तूँ जु कहूँ निकरै रवि को रथ माँझ अकास अरै री।
रैन यहै गति है रसखानि छपाकर आँगन ते न टरै री।
द्यौस निस्वास चल्यौई करै निसि द्यौस की आसन पाय धरै री।
तेरो न जात कछू दिन राति बिचारे बटोही की बाट परै री॥

× × ×

अति लाल गुलाल दुकूल ते फूल, अलि, अलि कुंतल राजत हैं।
मखतूल समान के गुंज छरानि में किंसुक की छबि छाजत हैं।
मुकता के कदंब ते अंब के मौर सुने सुर कोकिल लाजत है।
यह आवन प्यारी जु की रसखानि वसंत-सी आज विराजत है॥

× × ×

आजु सँवारति नेकु भटू तन, मंद करी रति की दुति लाजै।
देखत रीझ रहे रसखानि सु और कहा विधिना उपराजै।
आए हैं न्यौतें तरैयन के मनो संग पतंग पतंग जु राजै।
ऐसें लसै मुकतागन मैं तिल तेरे तरौना के तीर बिराजै॥

× × ×

बाँकी मरोर गही भृकुटीन लगीं अँखियाँ तिरछानि तिया की।
टाँक सी लाँक भई रसखानि सुदामिनि तें दुति दूनी हिया की।
सोहैं तरंग अनंग की अंगनि ओप उरोज उठी छतिया की।
जोवन-जोति सु यौं दमकै उसकाइ दई मनो बाती दिया की॥

× × ×

कौन की नागरि रूप की आगरि जाति लियें सँग कौन की बेटी।
जाको लसै मुख चंद-समान सु कोमल अंगनि रूप-लपेटी।
लाल रही चुप लागिहै डीठि सु जाके कहूँ उर बात न भेटी।
टोकत ही टटकार लगी रसखानि भई मनो कारिख-पेटी॥

× × ×

यह जाको लसै मुख चंद-समान कमान-सी भौंह गुमान हरै।
अति दीरघ नैन सरोजहु तें मृग खंजन मीन की पाँति दरै।
रसखानि उरोज निहारत ही मुनि कौन समाधि न जाहि टरै।
कांह नीकें नवें कटि हार के भार सों तासों कहैं सब काम करै॥

× × ×

जल की न घट भरैं मग की न पग धरैं,
घर की न कछु करैं बैठी भरैं साँसु री।
एकै सुनि लोट गई एकै लोट-पोट भईं,
एकनि के दृगनि निकसि आए आँसु री।
कहै रसखानि सो सबै ब्रज-बनिता बधि,
बधिक कहाय हाय भई कुलहाँसु री।
करियै उपाय बाँस डारियै कटाय,
नाहि उपजैगो बाँस नाहिं बाजै फेरि बाँसुरी॥

× × ×

कालिह पर्यौ मुरली-धुनि मैं रसखानि जू कानन नाम हमारो।
ता दिन ते नहिं धीर रह्यौ जग जानि लयौ अति कीनौ पँवारो।
गाँवन गाँवन मैं अब तौ बदनाम भई सब सों कै किनारो।
तौ सजनी फिरि फेरि कहौं पिय मेरो वही जग ठोंकि नगारो॥

× × ×

ब्रज की बनिता सब घेरि कहैं तेरो ढारो बिगारो कहा कस री।
अरी तू हमकों जमकाल भई नेंकु कान्ह रही तौ कहा रस री।
रसखानि भली बिधि आनि बनी, बसिबो नहि देत दिना दस री।
हम तौ ब्रज को बसिबोई तजौ बस री ब्रज बैरिन तू बँसरी॥

× × ×

चंद सों आनन मैन-मनोहर बैन मनोहर मोहत हैं मन।
बंक बिलोकनि लोट भई रसखानि हियो हित दाहत है तन।

मैं तव तें कुलकानि की मेंड नखी जु सखी अब डोलत हैं बन ।
वेनु बजावत आवत है नित मेरी गली ब्रजराज को मोहन ॥

× × ×

वेनु बजावत गोधन गावत ग्वालन संग गली मधि आयौ ।
बाँसुरी मैं उनि मेरोई नावँ सुग्वालिनि के मिस टेरि सुनायौ ।
ए सजनी सुनि सास के त्रासनि नंद के पास उसास न मायौ ।
कैसी करौं रसखानि नहीं हित, चैननहीं चित चोर चुरायौ ॥

× × ×

मोहन की मुरली सुनि कै वह बौरी ह्वै आनि अटा चढ़ि झाँकी ।
गोप बड़ेन की डीठि बचाइ कै डीठि सों डीठि मिली दुहुँ घाँ की ।
देखत मोल भयौ अँखियान को को करै लाज कुटुंब पिता की ।
कैसें छुटाई छुटै अँटकी रसखानि दुहूँ की बिलोकनि बाँकी ॥

× × ×

मेरी सुनौ मति आइ अली उहाँ जौनी गली हरि गावत है ।
हरि लैहै बिलोकत प्रानन कों पुनि गाढ़ परें घर आवत है ।
उन तान की तान तनी ब्रज मैं रसखानि सयान सिखावत है ।
तकि पाय धरौ रपटाय नहीं वह चारो सो डारि फँदावत है ॥

× × ×

काननि दै अँगुरी रहिबो जबहीं मुरली धुनि मंद बजैहै ।
मोहनी ताननि सों रसखानि अटा चढ़ि गोधन गैहै तौ गैहै ।
टेरि कहौं सिगरे ब्रज लोगनि काल्हि कोऊ सु कितौ समुझैहै ।
माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै न जैहै न जैहै ॥

× × ×

बजी है बजी रसखानि बकी सुनि कै अब गोपकुमारि न जीहै ।
न जीहै कोऊ जो कदाचित कामिनी कान मैं बाकी जु तान कुँ पीहै ।
कुपी है बिदेस सँदेस न पावति मेरीऽब देह कों मैन सजी है ।
सजी है तौ मेरो कहा है सु तौ बैरिनि बाँसुरी फेरि बजी है ॥

× × ×

दूध दुह्यौ सीरो पर्यौ तातो, न जमायो कर्यौ,
जामन दयौ सो धर्यौ धर्यौई खटाइ गौ ।
आन हाथ आन पाइ सब ही के तब हीं तें,
जब ही तें रसखानि तानन सुनाइ गौ ।

ज्यों ही नर त्यों ही नारी तैसीयै तरुन बारी,
कहिये कहा री सब ब्रज बिललाइ गौ।
जानिहै न आली यह छोहरा जसोमति को,
बाँसुरी बजाइ गौ कि विष बगराइ गौ॥

× × ×

कान्ह भए बस बाँसुरी के अब कौन सखी, हमकौं चहिहै।
निसद्यौस रहै सँग-साथ लगी यह सौतिन तापन क्यौं सहिहै।
जिन मोहि लियौ मनमोहन कौं रसखानि सदा हमकौं दहिहै।
मिलि आओ सबै सखी, भागि चलैं अब तौ ब्रज मैं बँसुरी रहिहै॥

× × ×

आजु भटू इक गोपबधू भई बावरी नेकु न अंग सम्हारै।
माइ सु धाइ कै टोना सो ढूँढति, सासु सयानी सयानी पुकारै।
यौं रसखानि घिरौ सिगरो ब्रज आन को आन उपाय बिचारै।
कोऊ न कान्हर के कर तें वहि बैरिनि बाँसुरिया गहि जारै॥

× × ×

बाँकी बिलोकनि रंगभरी रसखानि खरी मुसकानि सुहाई।
बोलत बोल अमीनिधि चैन महारस ऐन सुने सुखदाई।
सजनी पुर-बीथिन मैं पिय-गोहन लागी फिरैं जित ही तित धाई।
बाँसुरी टेरि सुनाइ अली अपनाइ लई ब्रजराज कन्हाई॥

× × ×

कल काननि कुंडल मोरपखा उर पै बनमाल बिराजति है।
मुरली कर मैं अधरा मुसकानि तरंग महाछबि छाजति है।
रसखानि लखैं तन पीत पटा सत दामिनि की दुति लाजति है।
वहि बाँसुरी की धुनि कान परें कुलकानि हियो तजि भाजति है॥

× × ×

बंसी बजावत आनि कढ़ौ सो गली मैं अली, कछु टोना सो डारै।
हेरि, चितै, तिरछी करि दृष्टि चलौ गयौ मोहन मूठि सी मारै।
ताही घरी सों परी धरी सेज पै प्यारी न बोलति प्रानहूँ वारै।
राधिका जी है तौ जीहैं सबै न तौ पीहैं हलाहल नंद के द्वारै॥

× × ×

कौन ठगौरी भरी हरि आजु बजाई है बाँसुरिया रँग-भीनी।
तान सुनी जिनहीं तिनहीं तबहीं तित लाज बिदा करि दीनी।

घूमै घरी घरी नंद के द्वार नवीनो कहा कहूँ वाल प्रवीनी।
या ब्रजमंडल मैं रसखानि सु कौन भटू जु लटू नहिं कीनी॥

× × ×

मो मन मानिक लै गयौ, चितै चोर नँदनंद।
अब वे-मन मैं क्या करूँ, परी फेर के फंद॥

नैन दलालनि चौहटें, मन-मानिक पिय हाथ।
रसखाँ ढोल वजाइकै, वेच्यौ हिय जिय साथ॥

× × ×

लोक की लाज तज्यौ तवहीं जव देख्यौ सखी ब्रजचंद सलोनो।
खंजन मीन सरोजन की छवि गंजन नैन लला दिनहोनो।
हेरें सम्हारि सकै रसखानि सो कौन तिया वह रूप सुठोनो।
भौंह कमान सों जोहन को सर वेधत प्राननि नंद को छोनो॥

× × ×

चीर की चटक औ लटक नव कुंडल की,
भौंह की मटक नेह आँखिन दिखाउ रे।
मोहन सुजान गुन-रूप के निधान फेरि,
बाँसुरी बजाइ तनु-तपन सिराउ रे।
एहो वनवारी वलिहारी जाउँ तेरी आजु,
मेरी कुंज आइ नेकु मीठी तान गाउ रे।
नंद के किसोर चितचोर मोरपंखवारे,
वंसीवारे साँवरे पियारे इत आउ रे॥

× × ×

उनहीं के सनेहन सानी रहैं उनकीं के जु नेह दिवानी रहैं।
उनहीं की सुनैं न औ वैन त्यौं सैन सों चैन अनेकन ठानी रहैं।
उनहीं सँग डोलन मैं रसखानि सवै सुखसिंधु अघानी रहैं।
उनहीं विन ज्यौं जलहीन ह्वै मीन सी आँखि मेरी अँसुवानी रहैं॥

× × ×

दूर तें आइ दुरेहीं दिखाइ अटा चढ़ि जाइ गह्यौ तहाँ आरौ।
चित्त कहूँ चितवै कितहूँ, चित और सों चाहि करै चखवारौ।
रसखानि कहै यहि वीच अचानक जाइ सिढ़ी चढ़ि सास पुकारौ।
सूखि गई सुकुवार हियो हनि सैन भटू कह्यौ स्याम सिधारौ॥

× × ×

भई बावरी ढूँढति काहि तिया अरी लाल ही लाल भयौ कहा तेरो।
ग्रीवा तें छूटि गयौ अबहीं रसखानि तबयौ घर मारग हेरो।
डरियै कहँ माइ हमारी बुरी हिय नेकु न सूनो सहै छिन मेरो।
काहे को पाइबो जाइबो है सजनी अनखाइबो सीस सहेरो॥

प्रीतम नंदकिसोर, जा दिन तें नैननि लग्यौ।
मनभावन चितचोर, पलक ओट नहिं सहि सकौं॥

× × ×

घरहीं घर घेरु घनो घरिही घरिहाइनि आगें न साँस भरौं।
लखि मेरियै ओर रिसाहिं सबै सतराहिं जौ सौंहैं अनेक करौं।
रसखानि तो काज सबै ब्रज तौ मेरो बैरी भयौ कहि कासों लरौं।
बिनु देखे न क्यौं हूँ निमेषैं लगैं तेरे लेखें न हूँ या परेखें मरौं॥

× × ×

सास की सासनहीं चलिबो चलियै निसिद्यौस चलावै जिहीं ढँग।
आली चवाव लुगाइनि के डर जाति नहींन नदी ननदी-सँग।
भावती औ अनभावती भीर मैं छ्वै न गयौ कबहूँ अँग सों अँग।
घेरु करैं घरहाईं सबै रसखानि सों मो सों कहा के भयौ रँग॥

× × ×

बाल गुलाब के नीर उसीर सों पीर न जाइ हियैं जिन ढारौ।
कंज की माल करौ जु बिछावन होत कहा पुनि चंदन गारौ।
एते इलाज बिकाज करौ रसखानि कों काहे कों जारे पै जारौ।
चाहति हौ जु जिवायौ भटू तौ दिखावौ बड़ी बड़ी आँखिनिवारौ॥

× × ×

खंजन नैन फँदे पिंजरा छवि, नाहिं रहैं थिर कैसें हूँ माई।
छूटि गई कुलकानि सखी रसखानि लखी मुसकानि सुहाई।
चित्र कढ़े 'से रहे मेरे नैन न बैन कढ़े मुख दीनी दुहाई।
कैसी करौं जित जाउँ अली सब बोलि उठैं यह बावरी आई॥

× × ×

बैरिनि तूँ बरजी न रहै अबहीं घर बाहिर बैरु बढ़ैगो।
टोना सु नंद ढुटोन पढ़ै सजनी तुहि देखि बिसेषि पढ़ैगो।
हँसिहै सखि गोकुल गावँ सबै रसखानि तबै यह लोक रढ़ैगो।
बैस चढ़ें घरहीं रहि बैठि अटा न चढ़ै बदनाम चढ़ैगो॥

× × ×

मोरपखा मुरली बनमाल लखें हिय कौ हियरा उमह्यौ री।
ता दिन तें उन वैरिन को कहि कौन न बोल कुबोल सह्यौ री।
तौ रसखानि सनेह लग्यौ, कोउ एक कह्यौ कोउ लाख कह्यौ री।
और तौ रंग रह्यौ न रह्यौ इक रंग रँगी सोइ रंग रह्यौ री॥

× × ×

तेरी गलीन मैं जा दिन तें निकसे मनमोहन गोधन गावत।
ये ब्रज लोग सो कौन सी बात चलाइ कै जो नहि नैन चलावत।
वे रसखानि जो रीझिहैं नेकु तौ रीझि कै क्यों न बनाइ रिझावत।
बावरी जौ पै कलंक लग्यौ तौ निसंक ह्वै क्यौं नहीं अंक लगावत॥

× × ×

देखन कौं सखी नैन भए न सबै तन आवत गाइन पाछैं।
कान भए प्रति रोम नहीं सुनिबे कौं अमीनिधि बोलनि आछैं।
ए सजनी न सम्हारि परै वह बाँकी बिलोकनि कोर कटाछैं।
भूमि भयौ न हियो मेरी आली जहाँ हरि खेलत काछनी काछैं॥

× × ×

मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं गुंज की माल गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।
भावतो वोहि मेरो रसखानि सो तेरे कहें सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥

× × ×

कुजनि कुजनि गुंज के पुंजनि मंजु लतानि सों माल बनैबो।
मालती मल्लिका कुंद सों गूँदि हरा हरि के हियरा पहिरैबो।
आली कबै इन भावते भाइन आपुन रीझि कै प्यारे रिझैबो।
माइ झकै हरि हाँकरिबो रसखानि तकै फिरि कै मुसकैबो॥

× × ×

बन बाग तड़ागनि कुंजगली अँखियाँ सुख पाइहैं देखि दई।
अब गोकुल माँझ बिलोकियैगी वह गोप सभाग सुभाय रई।
मिलिहै हँसि गाइ कबै रसखानि कबै ब्रजबालाने प्रेममई।
वह नील निचोल के घूँघट की छवि देखबी देखन लाजलई॥

× × ×

कोउ रिझावन कौ रसखानि कहै मुकतानि सों माँग भरौंगी।
कोऊ कहै गहनो अँग अंग दुकूल सुगंध-भर्यौ पहिरौंगी।

तूँ न कहै न कहै तौ कहौ कहूँ न कहौं तेरे पाँय परौंगी।
देखहि तूँ यह फूल की माल जसोमति-लाल निहाल करौंगी॥

× × ×

प्रान वही जु रहैं रिझि वा पर रूप वही जिहि वाहि रिझायौ।
सीस वही जिन वे परसे पद अंक वही जिन वा परसायौ।
दूध वही जु दुहायौ री वाही दही सु सही जु वही ढरकायौ।
और कहाँ लौं कहौं रसखानि री भाव वही जु वही मन भायौ॥

स्याम सघन घन घेरि कै रस बरस्यौ रसखानि।
भई दिवानी पान करि, प्रेम-मद्य-मन मानि॥

× × ×

नंद को नंदन है दुखकंदन प्रेम के फंदन बाँध लई हौं।
एक दिना ब्रजराज के मंदिर मेरी अली इक बार गई हौं।
हेर्‌यौ लला लचकाइ कै मो तन जोहन की चकडोर भई हौं।
दौरी फिरौं दृग डोरनि मैं हिय मैं अनुराग की बेलि बई हौं॥

जोहन नंदकुमार कों गई नंद के गेह।
मोहिं देखि मुसकाइ कै बरस्यौ मेह सनेह॥

× × ×

दमकैं रवि कुंडल दामिनि से धुरवा जिमि गोरज राजत है।
मुकताहल-वारन गोप के सु तौ बूँदन की छवि छाजत है।
ब्रजबाल नदी उमही रसखानि मयंकवधू-दुति लाजत है।
यह आवन श्रीमनभावन की वरषा जिमि आज बिराजत है॥

× × ×

वह नंद को साँवरो छैल अली अब तौ अति ही इतरान लग्यौ।
नित घाटन बाटन कुंजन मैं मोहिं देखत ही नियरान लग्यौ।
रसखानि बखान कहा करियै तकि सैननि सों मुसकान लग्यौ।
तिरछी बरछी सम मारत है दृग बान कमान सु कान लग्यौ॥

× × ×

हेरत कुंज भुजा धरे स्याम सों नेकु तबै हँसती न लुगाई।
लाज न कानि हुती जिय मोंझ सु भेटत जौ मग माँह कन्हाई।
हेरे परैं न गुपाल सखी इन जोवन आनि कुचाल चलाई।
होत कहा अब के पछिताएँ जौ हाथ तें छूटि गई लरिकाई॥

× × ×

बाँकी धर कँलगी सिर ऊपर बाँसुरी-तान कहै रस बीर के।
कुंडल कान लसैं रसखानि विलोकन तीर अनंग-तुनीर के।
डारि ठगौरी गयौ चित चोरि, लिये हैं सबै सुख सोखि सरीर के।
जात चलावन मो अबला यह कौन कला है भला वे अहीर के॥

अरी अनोखी बाम, तूँ आई गौने नई।
बाहरि धरसि न पाम, है छलिया तुव ताक मैं॥

× × ×

काल्हि भटू मुरली-धुनि मैं रसखानि लियौ कहुँ नाम हमारौ।
ता छिन तें भई बैरिनि सास कितौ कियौ झाँकन देति न द्वारौ।
होत चवाव बलाइ सों आली री जौ भरि आँखिन भेंटियै प्यारौ।
बाट परी अबहीं ठिटक्यौ हियरे अटक्यो पियरे पटवारौ॥

× × ×

एरी आजु काल्ह सब लोकलाज त्यागि दोऊ,
सीखे हैं सबै विधि सनेह सरसाइबो।
यह रसखानि दिन द्वै मैं बात फैलि जैहै,
कहाँ लौं सयानी चंदा हाथन छिपाइबो।
आजु हौं निहार्‌यौ बीर निपट कलिंदी-तीर,
दोउन को दोउन सों मुरि मुसकाइबो।
दोऊ परैं पैयाँ दोऊ लेत हैं बलैयाँ उन्हें,
भूलि गईं गैयाँ इन्हें गागर उचाइबो॥

× × ×

मोहन के मन भाइ गयौ इक भाइ सों ग्वालिनैं गोधन गायौ।
ताकौं लग्यौ चट, चौहट सों दुरि औचक गात सों गात छुवायौ।
रसखानि लही इनि चातुरता चुपचाप रही जब लौं घर आयौ।
नैन नचाइ चितै मुसकाइ सु ओट ह्वै जाइ अँगूठा दिखायौ॥

× × ×

सोई है रास मैं नैसुक नाचि के नाच नचायौ कितौ सबकों जिन।
सोई है री रसखानि किते मनुहारनि सूधें चितौत न हो छिन।
तो मैं धौं कौन मनोहर भाव बिलोकि भयौ बस हाहा करी तिन।
औसर ऐसो मिलै न मिलै फिरि लंगर मौड़ो कनौड़ो करै किन॥

× × ×

एक तें एक लौं कानन मैं रहैं ढीठ सखा सब लीने कन्हाई।
आवत ही हौं कहाँ लौं कहौं कोउ कैसे सहै अति की अधिकाई।
खायौ दही मेरो भाजन फोर्यौ न छोड़त चीर दिवाएँ दुहाई।
सौंह जसोमति की रसखानि तें भागें मरू करि छूटन पाई॥

× × ×

काहू को माखन चाखि गयौ अरु काहू को दूध दही ढरकायौ।
काहू को चीर लै रूख चढ़्यौ अरु काहू को गुंजछरा छहरायौ।
माने नहीं बरजें रसखानि सु जानियै राज इन्हैं घर आयौ।
आव री बूझैं जसोमति सों यह छोहरा जायौ कि मेव मँगायौ॥

× × ×

ग्वालिन द्वैक भुजान गहें रसखानि कों लाईं जसोमति पाहैं।
लूटत हैं कहैं ये बन मैं मन मैं कहैं ये सुख-लूट कहाँ हैं।
अंग ही अंग त्यौं ज्यौं ही लगैं त्यौं त्यौं हीं न अंग ही अंग समाहैं।
वै पछलैं उलटैं पग एक तौ वै (पछलैं उलटैं पग जाहैं)॥

× × ×

काह कहू सजनी सँग की रजनी नित बीतै मुकुंद कों हेरी।
आवन रोज कहैं मनभावन आवन की न कबौं करी फेरी।
सौतिन-भाग बढ़्यौ ब्रज मैं जिन लूटत हैं निसि रंग घनेरी।
मो रसखानि लिखी विधना मन मारि कै आपु बनी हौं अहेरी॥

× × ×

तूँ गरवाइ कहा झगरै रसखानि तेरे बस बावरो होसै।
तौ हूँ न छाती सिराइ अरी करि झार इतै उतै बाझिन कोसै।
लालहि लाल कियें अँखियाँ गहि लालहि काल सो क्यौं भई रोसै।
ए विधना तू कहा री पढ़ी बस राख्यौ गुपालहि लाल भरौसै॥

× × ×

प्रेमकथानि की बात चलें चमकैं चित चंचलता चिनगारी।
लोचन बंक बिलोकनि लोलनि बोलनि मैं बतियाँ रसकारी।
सोहैं तरंग अनंग की अंगनि कोमल यौं झमकै झनकारी।
पूतरी खेलत ही पटकी रसखानि सु चौपर खेलत प्यारी॥

बंक बिलोकनि हँसनि मुरि, मधुर बैन रसखानि।
मिले रसिक रसराज दोउ, हरखि हिये रसखानि॥

× × ×

एक समै इक ग्वालिनि कों ब्रजजीवन खेलत दृष्टि पर्‌यौ है।
बाल प्रवीन सकै करि कै सरकाइ कै मौरन चीर धर्‌यौ है।
यौं रस ही रस ही रसखानि सखी अपनो मनभायौ कर्‌यौ है।
नंद के लाड़िले ढाँकि दै सीस इहा हमरो वरु हाथ भर्‌यौ है॥

× × ×

काह कहू रतियाँ की कथा बतियाँ कहि आवत है न कछू री।
आइ गोपाल लियौ भरि अंक कियौ मनभायौ पियौ रस कू री।
ताही दिना सों गड़ीं अँखियाँ रसखानि मेरे अँग अंग मैं पूरी।
पै न दिखाई परै अब वावरी दै कै वियोग बिथा की मजूरी॥

× × ×

देखिहौं आँखिन सों पिय कों अरु कानन सों उन वैन को प्यारी।
बाँके अनंगनि रंगनि की सुरभीनि सुगंधनि नाक मैं डारी।
त्यौं रसखानि हिये मैं धरौं वहि साँवरी मूरति मैन-उजारी।
गाँव भरौ कोउ नाँव धरौ पुनि साँवरी हौं वनिहौं सुकुमारी॥

× × ×

जो कवहूँ मग पाँव न देत सु तो हित लालन आपुन गौनै।
मेरो कह्यौ करि मौन तजौ कहि मोहन सों बलि बोल सलोनै।
सौंहैं दिवावत हौं रसखानि तूँ सौंहैं करै किन लाखनि लोनै।
नोखी तूँ मानिनि मान कह्यौ किन मान वसंत मैं कीनौ है कौनै॥

× × ×

पिय सों तुम मान कर्‌यौ कत नागरि आजु कहा किनहूँ सिख दीनी।
ऐसे मनोहर प्रीतम के तरुनी वरुनी पग पोछै नवीनी।
सुंदर हास, सुधानिधि सो मुख नैननि चैन महारस भीनी।
रसखानि न लागत तोहिं कछू अब तेरी तिया किनहूँ मति छीनी॥

× × ×

मान की औधि है आधी घरी अरी जौ रसखानि डरै हित कें डर।
कै हित छोड़ियै पारियै पाइनि ऐसे कटाछ नहीं हियरा-हर।
मोहनलाल कों हाल बिलोकियै नेकु कछू किनि छ्वै कर सों कर।
नाँ करिवे पर वारे हैं प्रान कहा करिहैं अब हाँ करिवे पर॥

× × ×

खेलै अलीजन के मन मैं उत प्रीतम प्यारे सों नेह नवीनो।
वैननि वोध करै इत कौं, उत सैननि मोहन को मन लीनो।

नैननि की चलिबी कछु जान सखी रसखानि चितैवे कौ कीनो।
जा लखि पाइ जँभाइ गई चुटकी चटकाइ बिदा करि दीनो ॥

× × ×

नाह-वियोग बढ़्यौ रसखानि मलीन महा दुति देह तिया की।
पंकज सौं मुख गौ मुरझाइ लगी लपटैं बरि स्वाँस हिया की।
ऐसे मैं आवत कान्ह सुने हुलसे तरकीं सु तनीं अँगिया की।
यौं जगजोति उठी अँग की उसकाइ दई मनौ बाती दिया की ॥

× × ×

वह सोई हुती परजंक लली लला लीनो सु आइ भुजा भरि कै।
अकुलाइ कै चौंकि उठी सु डरी निकरी चहैं अंकनि ते फरि कै।
झटका झटकी मैं फटी पटुका दरकी अँगिया मुकता झरि कै।
मुख बोल कढ़े रिस से रसखानि हटौ जू लला निबिया धरि कै ॥

× × ×

सोई हुती पिय की छतियाँ लगि बाल प्रबीन महा मुद माने।
केस खुले छहरैं बहरैं फहरैं, छबि देखत मैन अमाने।
वा रस मैं रसखानि पगी रति रैन जगी अँखियाँ अनुमाने।
कंद पै बिंब औ बिंब पै कैरव कैरव पै मुकतान प्रमानै ॥

× × ×

अँखियाँ अँखियाँ सौं सकाइ मिलाइ हिलाइ रिझाइ हियो हरिबो।
बतियाँ चित चोरन चेटक सी रस चारु चरित्रन ऊचरिबो।
रसखानि के प्रान सुधा भरिबो अधरान पै त्यौं अधरा धरिबो।
इतने सब मैन के मोहनी जंत्र पै मंत्र बसीकर सी करिबो ॥

× × ×

अंगनि अंग मिलाइ दोऊ रसखानि रहे लिपटे तरु-छाहीं।
संगनि संग अनंग को रंग सुरंग सनी पिय दै गलबाहीं।
बैन ज्यौं मैन सु ऐन सनेह को लूटि रहे रति अंतर जाहीं।
नीवी गहै कुच कंचन कुंभ कहै बनिता पिय नाहीं जु नाहीं ॥

× × ×

बागन काहे को जाओ पिया घर बैठे ही बाग लगाइ दिखाऊँ।
एड़ी अनार सी मौरि रही, बहियाँ दोउ चंपे की डार नवाऊँ।
छातिन मै रस के निबुवा अरु घूँघट खोलि कै दाख चखाऊँ।
ढाँगन के रस के चसके रति फूलनि की रसखानि लुटाऊँ ॥

× × ×

एरी चतुर सुजान, भयौ अजान हि जान कै।
तजि दीनी पहिचान, जान आपनी जान कौं॥

× × ×

वा मुसकान पै प्रान दियौ जिय जान दियौ वहि तान पै प्यारी।
मान दियौ मन मानिक के सँग वा मुख मंजु पै जोवन वारी।
वा तन कौं रसखानि पै री तन ताहि दियौ नहिं आन विचारी।
सो मुँह मोर करी अब का हहा लाल लै आज समाज मैं ख्वारी॥

× × ×

बाँके कटाछ्छ चितैवो सिख्यौ बहुधा बरज्यौ हित कै हितकारी।
तूँ अपने ढँग की रसखानि सिखावनि देति न हौं पचि हारी।
कौन की सीख सिखी सजनी अजहूँ तजि दे बलि जाउँ तिहारी।
नंदन नंद के फंद कहूँ परि जैहै अनोखी निहारनिहारी॥

× × ×

आली पगे रंगे जे रँग साँवरे मो पै न आवत लालची नैना।
धावत हैं उतहीं जित मोहन रोके रुकैं नहिं घूँघट ऐना।
काननि कौं कल नाहिं परै सखी प्रेम सों भींजे सुनें बिन बैना।
रसखानि भई मधु की मखियाँ अब नेह को बंधन क्यौं हूँ छुटै ना॥

× × ×

नवरंग अनंग भरी छवि सों वह मूरति आँखि गड़ी ही रहै।
बतिया मन की मन ही मैं रहै, घतिया उर बीच अड़ी ही रहै।
तबहूँ रसखानि सुजान अली नलिनीदल बूँद पड़ी ही रहै।
जिय की नहिं जानत हौं सजनी रजनी अँसुवान लड़ी ही रहै॥

× × ×

साँझ समै जिहि देखति ही तिहि पेखन कौं मन यौं ललकै री।
ऊँची अटान चढ़ी व्रजबाम सु लाज सनेह दुरै उझकै री।
गोधन धूरि की धूँधरि मैं तिनकी छवि यौं रसखानि तकै री।
पावक के गिरि तें बुझि मानो धुँवा-लपटी लपटै लपकै री॥

× × ×

वा मुख की मुसकानि भटू अँखियानि तें नेकु टरै नहिं टारी।
जौ पलकैं पल लागति हैं पल ही पल माँझ पुकारैं पुकारी।
दूसरी ओर ते नेकु चितै इन नैनन नेम गह्यौ बजमारी।
प्रेम की बानि कि जोगकलानि गही रसखानि विचार विचारी॥

× × ×

मोहन रूप छकी वन डोलति घूमति री तजि लाज विचारै।
बंक विलोकनि नैन विसाल सु दंपति कोर कटाछन मारै।
रंगभरी मुख की मुसकान लखें सखी कौन सु देह सम्हारै।
ज्यौं अरविंद हिमंत-करी झकझोरि के तोरि मरोरि के डारै।।

× × ×

ए सजनी मनमोहन नागर आगर दौर करी मन माहीं।
सास के त्रास उसास न आवत कैसे सखी ब्रजवास बसाहीं।
माखी भई मधु की तरुनी वरुनीन के बान बिंधी कित जाहीं।
बीथिन डोलति हैं रसखानि रहैं निज मंदिर में पल नाहीं।।

× × ×

मोहन के मन की सब जानति जोहन के मग मोहि लियौ मन।
मोहन सुंदर आनन चंद ते, कुंजनि देख्यौ मैं स्याम सिरोमन।
ता दिन तें मेरे नैनन लाज तजी कुलकानि की डोलति हौं बन।
कैसी करौं रसखानि लगी जक री पकरी पिय के हित को पन।।

× × ×

बाँकी बड़ी अँखियाँ बड़रारे कपोलनि बोलनि कौं कल बानी।
सुंदर हास सुधानिधि सो मुख, मूरति रंग सुधारस-सानी।
ऐसी नवेली ने देखे कहूँ ब्रजराज लला अति ही सुखदानी।
डोलति है वन बीथिन मैं रसखानि मनोहर रूप लुभानी।।

× × ×

मैन-मनोहर नैन बड़े सखि सैननि ही मन मेरों हर्‌यौ है।
गेह को काज तज्यौ रसखानि हिये ब्रजराजकुमार अर्‌यौ है।
आसन-बासन सास के त्रासन मानै न सासन, रंग-भर्‌यौ है।
नैननि बंक विसाल की जोहनि मत्त महा मन मत्त कर्‌यौ है।।

× × ×

प्रेम मरोरि उठै तब हीं मन पाग-मरोरनि मैं उरझावै।
रूसे से ह्वै दृग मोसों रहैं लखि मोहन-मूरति मो पै न आवै।
बोलें बिना नहिं चैन परै रसखानि सुने कल श्रौनन पावै।
भौंह मरोरिबो री रुसिबो झुकिबो पिय सों सजनी सिखरावै।।

× × ×

मोहन सों अटक्यौ मन री कल जातें परै सोई क्यौं न बतावै।
ब्याकुलता निरखे बिन मूरति भागति भूख न भूषन भावै।

देखे ते नेकु सम्हार रहै न तबै झुकि कै लखि लोग लजावै।
चैन नहीं रसखानि दुहूँ विधि भूली सबै न कछू बनि आवै॥

× × ×

लाल लसे पगिया सब के, सब के पट कोटि सुगंधनि भीने।
अंगनि अंग सजे सब ही रसखानि अनेक जराउ नवीने।
मुकता-गलमाल लसै सब के सब ग्वार कुमार सिंगार सो कीने।
पै सिगरे ब्रज के हरि हीं हरि ही कै हरैं हियरा हरि लीने॥

× × ×

औचक दृष्टि परे कहूँ कान्ह जू तासों कहै ननदी अनुरागी।
सो सुनि सास रही मुख मोरि, जिठानी फिरै जिय मैं रिस पागी।
नीके निहारि कै देखे न आँखिन, हों कबहूँ भरि नैन न जागी।
मो पछितावो यहै जु सखी कि कलंक लग्यो पर अंक न लागी॥

× × ×

मेरो सुभाव चितैवे को माइ री लाल निहारि कै बंसी बजाई।
वा दिन तें मोहि लागी ठगौरी सी लोग कहैं कोई बावरी आई।
यों रसखानि घिर्‌यौ सिगरो ब्रज जानत वे कि मेरो जियराई।
जौ कोउ चाहै भलो अपनो तौ सनेह न काहू सों कीजियौ माई॥

× × ×

आजु भटू इक गोपकुमार ने रास रच्यौ इक गोप के द्वारै।
सुंदर बानिक सो रसखानि बन्यौ वह छोहरा भाग हमारै।
ए विधना जो हमै हँसती अब नेकु कहूँ उत को पग धारैं।
ताहि बदौं फिरि आवै घरै बिनही तन औ मन जोवन वारै॥

× × ×

मकराकृत कुंडल गुंज की माल वे लाल लसैं पग पाँवरिया।
बछरानि चरावन के मिस भावतो दै गयौ भावती भाँवरिया।
रसखानि विलोकत ही सिगरी भई बावरिया ब्रज-डाँवरिया।
सजनी इहिं गोकुल मैं विष सो बगरायौ है नंद के साँवरिया॥

× × ×

पूरब पुन्यनि तें चितई जिन ये अँखियाँ मुसकानि भरी जू।
कोऊ रहीं पुतरी सी खरी, कोउ घाट डरी, कोउ बाट परी जू।
जे अपने घरहीं रसखानि कहै अरु हौंसनि जाति मरी जू।
लाल जे बाल विहाल करी ते विहाल करी न निहाल करी जू॥

× × ×

समुझै न कछू अजहूँ हरि सो ब्रज नैन नचाइ नचाइ हँसै।
नित सास की सीरी उसासनि सों दिन हीं दिन माइ की काँति नसै।
चहुँ ओर बवा की सौं सोर सुने मन मेरेऊ आवति री सकसै।
पै कहा करों वा रसखानि बिलोकि हियो हुलसै हुलसै हुलसै॥

× × ×

आजु री नंदलला निकस्यौ तुलसीबन तें वनकैं मुसकातो।
देखें बनै न बनै कहते अब सो सुख जो मुख मैं न समातो।
हौं रसखानि बिलोकिबे कौं कुलकानि के काज कियौ हिय हातो।
आइ गई अलबेली अचानक ए भटू लाज को काज कहा तो॥

× × ×

वह गोधन गावत गोधन मैं जब ते इहिं मारग ह्वै निकस्यौ।
तब तें कुलकानि कितीय करौ यह पापी हियो हुलस्यौ हुलस्यौ।
अब तौ जु भई सु भई नहिं होत है लोग अजान हँस्यौ सु हँस्यौ।
कोउ पीर न जानत जानत सो तिनके हिय मैं रसखानि बस्यौ॥

× × ×

मो मन मोहन कों मिलि कै सबहीं मुसकानि दिखाइ दई।
वह मोहनी मूरति रूपमई सबहीं चितई तब हौं चितई।
उन तौ अपने अपने घर की रसखानि भली बिधि राह लई।
कछु मोहि को पाप परयौ पल मैं पग पावत पौरि पहार भई॥

× × ×

ब्याहीं अनब्याहीं ब्रज माहीं सब चाहीं तासों,
दूनी सकुचाहीं, दीठि परे न जुन्हैया की।
नेकु मुसकानि रसखानि की बिलोकत ही,
चेरी होतिं एक बार कुंजनि-दिखैया की।
मेरो कह्यौ मानि अंत मेरो गुन मानिहै री,
प्रात खात जात ना सकात सौंह मैया की।
माइ की अँटक तौ लौं सासु की हटक, जौ लौं,
देखी ना लटक मेरे दूलह कन्हैया की॥

× × ×

अब हीं खरिक गई गाइ के दुहाइबे कौं,
बावरी ह्वै आई डारि दोहनीयौ पानि की।
कोऊ कहै छरी, कोऊ मौन परी, डरी कोऊ,
कोऊ कहै मरी गति हरी अँखियानि की।

सास व्रत ठाने नंद बोलत सयाने धाइ,
दौरि दौरि मानै जानै खोरि देवतानि की।
सखी सब हँसैं मुरझानि पहिचानि, कहूँ
देखी मुसकानि वा अहीर रसखानि की॥

× × ×

या छवि पै रसखानि अब वारौं कोटि मनोज।
जाकी उपमा कविन नहिं पाई रहे सु खोज॥

मन लीनो प्यारे चितै पै छटाँक नहिं देत।
यहै कहा पाटी पढ़ी दल को पीछो लेत॥

ए सजनी लोनो लला लह्यौ, नंद के गेह।
चितयौ मृदु मुसकाइ कै, हरी सबै सुधि-देह॥

देख्यौ रूप अपार, मोहन सुंदर स्याम को।
वह ब्रजराजकुमार, हिय जिय नैननि मैं बस्यौ॥

मोहन छवि रसखानि लखि, अब दृग अपने नाहिं।
ऐंचे आवत धनुष से, छूटे सर से जाहिं॥

× × ×

दृग दूने खिंचे रहैं कानन लौं लट आनन पै लहराइ रही।
छकि छैल छबीली छटा छहराइ कै कौतुक कोटि दिखाइ रही।
झुकि झूमि झमाकनि चूमि अमी चहि चाँदनी चंद चुराइ रही।
मन भाइ रही रसखानि महा छवि मोहन की तरसाइ रही॥

× × ×

अलबेली विलोकनि बोलनि औ अलबेलियै लोल निहारन की।
अलबेली सी डोलनि गंडनि पै छवि सौं मिलि कुंडल वारन की।
भटू ठाढ़ौ लख्यौ छवि कैसें कहौं रसखानि गहैं द्रुम डारन की।
हिय मैं जिय मैं मुसकानि रसी गति को सिखवै निरवारन की॥

× × ×

आज गई ब्रजराज के मन्दिर सुंदर स्याम विलोक्यौ री माई।
सोइ उठ्यौ पलिका कल-कंचन बैठ्यौ महा मनहार कन्हाई।
ए सजनी मुसकात लख्यौ रसखानि विलोकनि बंक सुहाई।
मैं तब तैं कुलकानि तजी सु बजी ब्रजमंडल माँह दुहाई॥

× × ×

अति सुंदर री ब्रजराजकुमार महामृदु बोलनि बोलत है।
लखि नैन की कोर कटाछ्छ चलाइ कै लाज की गाँठन खोलत है।
सुनि री सजनी अलबेलो लला वह कुंजनि कुंजनि डोलत है।
रसखानि लखैं मन बूड़ि गयौ मधि रूप के सिंधु कलोलत है॥

× × ×

कैसो मनोहर बानक मोहन सोहन सुंदर काम तें आली।
जाहि बिलोकत लाज तजी कुल छूटो है नैननि की चल चाली।
अधरा मुसकान तरंग लसै रसखानि सुहाइ महाछवि छाली।
कुंजगली मधि मोहन सोहन देख्यौ सखी वह रूप-रसाली॥

× × ×

आली लला घन सों अति सुंदर तैसो लसै पियरो उपरैना।
गंडनि पै छलकै छवि कुंडल मंडित कुंतल रूप की सैना।
दीरघ बंक बिलोकनि की अवलोकनि चोरति चित्त की चैना।
मो रसखानि हर्‌यौ चित री मुसकाइ कहे अधरामृत बैना॥

× × ×

डोरि लियौ मन चोरि लियौ चित, जोरि लियौ हित, तोरिकै कानन।
कुंजनि तें निकस्यौ सजनी मुसकाइ कह्यौ वह सुंदर आनन।
हौं रसखानि भई रसमत्त सखी सुनिकै कल बाँसुरी कानन।
मत्त भई बन बीथिन डोलति मानति काहू की नेकु न आनन॥

× × ×

प्रेम-अयनि श्रीराधिका, प्रेम-बरन नँदनंद।
प्रेमवाटिका के दोऊ, माली मालिन द्वंद॥

प्रेम प्रेम सब कोउ कहत, प्रेम न जानत कोइ।
जौ जन जानै प्रेम तौ, मरै जगत क्यों रोइ॥

प्रेम अगम अनुपम अमित, सागर सरिस बखान।
जो आवत यहि ढिग, बहुरि जात नाहिं रसखान॥

प्रेम-वारुनी छानि कै, वरुन भये जलधीस।
प्रेमहिं तें विषपान करि, पूजे जात गिरीस॥

प्रेमरूप दर्पन अहो, रचै अजूबो खेल।
या मैं अपनो रूप कछु, लखि परिहै अनमेल॥

कमल तंतु सो हीन अरु, कठिन खड़ग की धार।
अति सूधो टेढ़ो बहुरि, प्रेमपंथ अनिवार॥

लोक-वेद-मरजाद सब, लाज काज संदेह ।
देत बहाए प्रेम करि, विधि-निषेध को नेह ॥
कबहुँ न जा पथ भ्रम-तिमिर रहै सदा सुख-चंद ।
दिन-दिन बाढ़त ही रहत, होत कबहुँ नहि मंद ॥
भले वृथा करि पचि मरौ, ज्ञान-गरूर बढ़ाय ।
बिना प्रेम फीको सबै कोटिन किये उपाय ॥
स्रुति पुरान आगम स्मृतिहि, प्रेम सबहि को सार ।
प्रेम बिना नहिं उपज हिय, प्रेम-बीज-अँकुवार ॥
आनँद-अनुभव होत नहि, बिना प्रेम जग जान ।
कै वह विषयानंद कै ब्रह्मानंद बखान ॥
ज्ञान कर्म अरु उपासना, सब अहमिति को मूल ।
दृढ़ निस्चय नहिं होत, बिन किये प्रेम अनुकूल ॥
सास्त्रन पढ़ि पंडित भए, कै मौलवी कुरान ।
जु पै प्रेम जान्यौ नहो, कहा कियौ रसखान ॥
काम क्रोध मद मोह भय लोभ द्रोह मात्सर्य ।
इन सब ही तें प्रेम है परे, कहत मुनिवर्य ॥
बिन गुन जोवन रूप धन, बिन स्वारथ हित जानि ।
सुद्ध, कामना तें रहित प्रेम सकल रसखानि ॥
अति सूछम कोमल अतिहि, अति पतरो अति दूर ।
प्रेम कठिन सब तें सदा, नित इकरस भरपूर ॥
जग मैं सब जान्यौ परै, अरु सब कहै कहाइ ।
पै जगदीस 'रु प्रेम यह, दोऊ अकथ लखाइ ॥
जेहि बिनु जाने कछुहि नहि, जान्यौ जात बिसेष ।
सोइ प्रेम, जेहि जानि कै, रहि न जात कछु सेष ॥
दंपति-सुख अरु बिषय-रस, पूजा निष्ठा ध्यान ।
इन तें परे बखानियै, सुद्ध प्रेम रसखानि ॥
मित्र कलत्र सुबंधु सुत, इनमैं सहज सनेह ।
सुद्ध प्रेम इनमैं नहीं, अकथ कथा सविसेह ॥
इकअंगी बिनु कारनहि, इकरस सदा समान ।
गनै प्रियहि सर्वस्व जो, सोई प्रेम प्रमान ॥
डरै सदा चाहै न कछु, सहै सबै जो होइ ।
रहै एकरस चाहि कै, प्रेम बखानौ सोइ ॥

प्रेम प्रेम सब कोउ कहै, कठिन प्रेम की फाँस ।
प्रान तरफि निकरै नहीं, केवल चलत उसाँस ।।

प्रेम हरी को रूप है, त्यौं हरि प्रेम-सरूप ।
एक होइ द्वै यौं लसैं, ज्यौं सूरज औ' धूप ।।

ज्ञान ध्यान विद्या मती, मत विस्वास विवेक ।
बिना प्रेम सब धूरि हैं, अगजग एक अनेक ।।

प्रेम-फाँस हैं फँसि मरै, सोई जियै सदाहिं ।
प्रेम-मरम जानै बिना, मरि कोउ जीवत नाहिं ।।

जग में सब ते अधिक अति, ममता तनहिं लखाइ ।
पै या तनहूँ ते अधिक, प्यारो प्रेम कहाइ ।।

जेहि पाएँ बैकुंठ अरु, हरिहूँ की नहिं चाहि ।
सोइ अलौकिक सुद्ध सुभ, सरस सुप्रेम कहाहि ।।

कोउ याहि फाँसी कहत, कोउ कहत तरवार ।
नेजा, भाला, तीर कोउ, कहत अनोखी ढार ।।

पै मिठास या मार के, रोम रोम भरपूर ।
मरत जियै, झुकतौ थिरै, बनै सु चकनाचूर ।।

पै एतोहूँ हम सुन्यौ, प्रेम अजूबो खेल ।
जाँबाजी बाजी जहाँ, दिल का दिल से मेल ।।

सिर काटौ, छेदौ हियो, टूक टूक करि देहु ।
पै याके बदले बिहँसि, वाह वाह ही लेहु ।।

अकथ कहानी प्रेम की, जानत लैली खूब ।
दो तनहूँ जहँ एक भे, मन मिलाइ महबूब ।।

दो मन इक होते सुन्यौ, पै वह प्रेम न आहि ।
होइ जबै द्वै तनहुँ इक, सोइ प्रेम कहाहि ।।

याही तें सब मुक्ति तें, लही बड़ाई प्रेम ।
प्रेम भए नसि जाहिं सब, बँधे जगत के नेम ।।

हरि के सब आधीन, पै हरी प्रेम अधीन ।
याही तें हरि आपुहीं, याहि बड़प्पन दीन ।।

वेद-मूल सब धर्म, यह कहैं सबै स्रुतिसार ।
परम धर्म है ताहु तें, प्रेम एक अनिवार ।।

जदपि जसोदानंद अरु, ग्वाल बाल सब धन्य ।
पै या जग मैं प्रेम कौं, गोपी भईं अनन्य ।।

वा रस की कछु माधुरी, ऊधो लही सराहि ।
पावै बहुरि मिठास अस, अब दूजो को आहि ॥

स्रवन कीरतन दरसनहिं, जो उपजत सोइ प्रेम ।
सुद्धासुद्ध बिभेद तें, द्वैविध ताके नेम ॥

स्वारथमूल असुद्ध त्यौं, सुद्ध स्वभाव 'नुकूल ।
सारदादि प्रस्तार करि, कियौ जाहि को तूल ॥

रसमय, स्वाभाविक, बिना स्वारथ अचल महान ।
सदा एकरस सुद्ध सोइ, प्रेम अहै रसखान ॥

जातें उपजत प्रेम सोइ, बीज कहावत प्रेम ।
जामैं उपजत प्रेम सोइ, चेत्र कहावत प्रेम ॥

जातें पनपत बढ़त अरु, फूलत फलत महान ।
सो सब प्रेमहिं प्रेम यह, कहत रसिक रसखान ॥

वही बीज अंकुर वही, एक वही आधार ।
डाल पात फल फूल सब, वही प्रेम सुखसार ॥

जो जातें जामैं बहुरि, जा हित कहियत बेष ।
सो सब प्रेमहिं प्रेम है, जग रसखानि असेष ॥

कारज-कारन रूप यह, प्रेम अहै रसखान ।
कर्ता कर्म क्रिया करन, आपहि प्रेम बखान ॥

देखि गदर हित-साहबी, दिल्ली नगर मसान ।
छिनहिं बादसा-बंस की, ठसक छोरि रसखान ॥

प्रेम-निकेतन श्रीबनहिं, आइ गोबर्धन-धाम ।
लह्यौ सरन चित चाहि कै, जुगल-सरूप ललाम ॥

तोरि मानिनी ते हियो, फोरि मोहनी मान ।
प्रेमदेव की छबिहि लखि, भए मियाँ रसखान ॥

बिधु सागर रस इंदु सुभ बरस सरस रसखानि ।
प्रेमबाटिका रचि रुचिर चिर हिय-हरष बखानि ॥

अरपी श्रीहरि-चरन-जुग-पदुम-पराग निहार ।
बिचरहिं या मैं रसिकवर, मधुकर-निकर अपार ॥

राधा-माधव सखिन सँग, बिहरत कुंज-कुटीर ।
रसिकराज रसखानि तहँ, कूजत कोइल कीर ॥

सूरदास मदन मोहन

अहो मेरी लाडिली सुकुमारि पालने झूलै।
मृदु मुसकान निरखि नैननि मुख कीरत जू मन ही मन फूलै।
कबहुं चटकोश चटकावति, झुंजन झुंझुना झलन झूलै।
कबहुँक लेत उछंग अंग भरि अंनरगनि ही हरति है मूलै।
श्री वृषभानु गोद लै बैठे, मन क्रम वचन साधना तूलै।
सूरदास मदन मोहन के अन्तर निधि की खानि मों खूलै।

× × ×

प्रीतम प्यारी राजनि रंग महल।
गरजि - गरजि - रिमझिम-रिमझिम,
बूँदनि लग्यो बरसनि घन।
बोलत चातक मोर दामिनी दमकि,
आवै झूमि बादर अवनि परसन।
तैसी हरियारी सावन मन भावन,
आनंद मन उपजावत इन्द्र वधू दरसन।
मदन मोहन पिया सँग गावत राग मल्हार,
ललित लता लागी सुनि सुनि दरसन।

× × ×

स्वामि निकट सनमुख ह्वै बैठी स्यामा कंचन मनि आभूषन पहिरै।
साँवरे तन में प्रतिबिम्बित हैं मानो स्नान करत बैठी जमुना जल में गहिरै।
अंग अंग आभास तरंग गौर स्यामता सुन्दरता सोभा की लहरै।
सूरदास मदन मोहन मोपै कहि नहि आवत दृष्टि न ठहरै।

× × ×

स्याम लाल प्रात भयो, जागो बलि जाऊँ।
गुटिया मुरझाय बीच सुमन है गुथाऊँ।
उगत सूर्य ज्योति भई कुलहिरी बनाऊँ।
पाँय बाँधि घुँघुरो सो चलिवो सिखाऊँ।
सूरदास मदन मोहत गुन तिहारो गाऊँ।
हरषि निरषि गोविन्द छवि जीवन फल पाऊँ।

× × ×

खेलिये आँगन छगन मगन कीजिए कलेवा।
छीके ते सौंधी दधि ऊपर तें काढ़ि धरी।

पहिरि लेउ अंगुली फेंटा बाँधि लेहु मेवा।
ग्वालन के सँग खेलन जाहु खेलन के मिस भूषण ल्याहु।
कौन परी प्यारे निसिदिन की टेवा।
सूरदास मदन मोहन घर में ही खेलो प्यारे ललन।
भँवरा चकडोर देहौ हँस चकोर परेवा।

× × ×

मधु के मतवारे स्याम खोलौ प्यारे पलकै।
सीस मुकु लटा छुटी और छुटी अलकै।
सुर नर मुनि द्वार ठाढ़े दरस हेतु किलकै।
नासिक के मोती सोहै बीच लाल ललकै।
कटि पीताम्बर मुरली स्रवन कुंडल झलकै।
सूरदास मदन मोहन दरस देहो भलकै।

× × ×

चली री, मुरली सुनिए, कान्ह बजाई जमुना तीर।
तजि लोक लाज, कुल की कानि गुरु-जन की भीर।
जमुना-जल थकित भयो बछा न पीवै छीर।
सुर-विमान थकित भये, थकित कोकिल कीर।
देह की सुधि बिसरि गई, बिसरो तन कौ चीर।
मात तात बिसरि गये, बिसरे बालक बीर।
मुरली धुनि मधुर बाजै, कैसे कै धरौ धीर।
सूरदास मदन मोहन जानत हौ पर - पीर।

× × ×

माई री, झूलत रंग हिंडौरै।
सोभा तन स्याम-गोरै नील।
पीत पट दामिनी के भोरैं।
सखी जन चहुँ ओर झुलावति।
थोरै थोरै पवन गवन आवै सोध्वै की झकोर।
सोभा सिन्धु मन बोरै ननिन सों।
नैन जोरै रीझि, प्रान वारति छवि पर तृन तोरै।
सूरदास मदन मोहन चित चोरै।
मुरली की धुनि सुनि सुर वधू सिर ढोरै॥

× × ×

पाछे ललिता आगे स्यामा प्यारी,
ता आगे पिय मारग फूल बिछावत जात।
कठिन कलीं बीन बीन न्यारी करत,
प्यारी के चरण कोमल जानि सकुचन गड़िबेऊ डरात।
दीर्घलता कर सों निवारत पाछे,
गहे टारि सीस नाहि पसरत पल्लव पात।
सूरदास मदन मोहन पिय की अधिनताई,
देखत मेरे री नैन सिरात।

श्री भट्ट

भीजत कब देखौं इन नैना।
स्यामजू की सुरँग चूनरी, मोहन को उपरैना।
स्याम स्यामा कुन्जतर ठाढ़े, जतन कियो कुछ मैना।
श्री भट्ट उमड़ि घटा चहुँ दिसि तें, घिरि आई जल सेना।

× × ×

ब्रजभूमि मोहिनी मैं जानी।
मोहन कुंज, मोहन वृन्दावन, मोहन जमुना पानी।
मोहन नारि सकल गोकुल की बोलति अमिरत बानी।
श्री भट्ट के प्रभु मोहन नागर, मोहनि राधा रानी।

× × ×

बसौ मेरे नैननि में दोउ चन्द।
गोर वदनि वृषभान नंदिनी स्याम बरन नँदनन्द।
गोलक रहे रूप में निरखत आनन्द कन्द।
जय श्री भट्ट प्रेम रस बन्धन, क्यों छूटे दृढ़ फन्द।

हरीराम व्यास

वृन्दावन के रूख हमारे मात पिता सुत बन्ध।
गुरु गोविन्द साधु गति मति सुख, फल फूलन की गन्ध।
इनहि पीठि दै अनत डीठि करै सो अन्धन में अन्ध।
व्यास इनहि छौड़ै और छुड़ावै ताको परियो कन्ध।

× × ×

आजु कछु कुंजन में बरषा सी।
बादल दल में देखि सखी री! चमकत है चपला सी।
नान्ही नान्ही बूँदन कछु धुरना से, पवन वहै सुखरानी।
मन्द मन्द गरजनि सो सुनियतु, नाचति मोर समा सी।
इन्द्र धनुष बग पंगति वोलित वोलति कोक कला सी।
इन्द्र बधू छवि छाइ रही मनु गिरि पर अरुन घटा सी।
उमगि महीरुह स्यो महि फूली भूली मृगमाला सी।
रटति व्यास चातक ज्यों रसना, रस पीवत हू प्यासी।

× × ×

सुघर राधिका प्रवीन बीना, वा रास रच्यो,
स्याम संग वर सुढंग तरनि तनया तीरे।
आनन्द कन्द वृन्दावन सरद मंद मंद पवन,
कुसुम कुन्ज ताप दवन, धुनित कल कुटीरे।
रुनित किंकिनी सुचारु, नूपुर तिमि वलय हार,
अंग वर मृदंग ताल तरल रंग भीरे।
गावत अति रंग रह्यो, मोपै नहिं जात कह्यो,
व्यास रस प्रवाह वह्यो निरखि नैन सीरे॥

× × ×

सती सूरमा संत जन, इन समान नहिं और।
अगम पंथ पै पग धरै, डिगे न पावै ठौर॥
व्यास न कथनी काम की, करनी है इक सार।
भक्ति विना पंडित वृथा, ज्यों खर चन्दन भार॥

मंझन

हरि हरि कहा गएउँ कह रहेऊँ। का किछु कहै लिए का कहेऊँ।
कुंवर वात कहिवे मैं लई। वीच नींदि मोहिं हरि लै गई।
अव हौ पलटि कहौ सुनु बाता। जस कुमार सुख निद्रा माता।
विधि सँजोग भा अछरिन केरा। सोवत कुंवर सेज पर घेरा।
देखा गंध्रप सुरति अमोला। अछरिन केर देखि चित डोला।

कहिनि कि यह मानुस हम अछरीं और न हमरे काज।
पै यह लखिय वरहि वर कामिनि उदै अस्त जेत राज॥

× × ×

उदे अस्त जहँ लगि जग रेखा। कौन सो ठाउँ जो हम नहिं देखा।
हम इहिं सभ सयंसार बिनानी। ढूंढहिं जग एहिं जोग परानी।
कोइ सराह सोरठ गुजराता। कोइ कह सिंघल दीप के बाता।
त्रिभुवन चित आई दौराई। कुंवर जोग जग नारि न पाई।
पुनि उठि जनी एक अस कहा। एहि रे जोग कन्या एक अहा।

विक्रम राय सकबंधी नगर महारस थान।
तेहि घर है कन्या मधुमालती रबि ससि रूप छुपान॥

× × ×

सुनत बात बहुतहि चित भाई। कोइ कहै कुंवर रूप अधिकाई।
पुनि सभ मिलिकै कहहिं बिचारी। पटतर देखिय कुंवर कुमारी।
कोइ कहै कुंवरहि ओहि लै जाइय। कोइ कहै कुंवरि इहाँ लै आइय।
जनी एक पुनि कहा बुझाई। जातहिं आवत रैनि सिराई।
पुनि मोहनि निदरा चखि लाई। लीन्हि कुंवर कै सैन उचाई।

जहँ सोवै सुख सेज सोहागिनि तीनि भुवन उजियारि।
लै पालक तहँ डासी सम कै देखहिं रूप उन्हारि॥

× × ×

देखिनि सो जो न जाइ बखाना। दिन सूरुज निसि चाँद छपाना।
अचकि रहीं किछु कहा न जाई। देखि रूप सभ रहीं लजाई।
एहि देखहिं तो अधिक लोनाई। ओहि परखहिं तौ रूप सवाई।
अपनी अपनी कला सपूनी। दुइ महँ कोउ न राव बिहूनी।
अपने रूप कुंवर निरमला। बर कामिनि मुहँ सोरह कला।

जेउं जेउं निरखि निहारै तेउं तेउं अधिक सरूप।
तीनि भुवन महं बिधनै एइ दोउ सिरे अनूप॥

× × ×

कहहिं रूप उत्तिम ए दोऊ। एक एक लेखैं अधिक न कोऊ।
जौ बिधि इन्ह दोउ देइ मेरावा। बाजै तीनिउं लोक बधावा।
जोगिहिं जोग मिले सुख होई। औ सुख इन्हहि जौ देखै कोई।
तीनि भुवन जगजीवन साईं। इन्ह दुहुँ प्रीति मिलाव गोसाईं।
त्रिभुवन सिष्टि ढूँढि हम रहीं। इन्ह दुहुँ सम तोसर कोउ नहीं।

यह सूरुज वह ससिहर यह ससिहर वह सूर।
इन्ह दुहुँ पेम प्रीति जो उपजै त्रिभुवन बाजै तूर॥

× × ×

कहेन्हि कि ए दुइ पेम पियारे। विधनै जगत सइंहि औतारे।
हम एहि नगर चरन गति आई। चलहि जाहि कौतुक अंवराई।
जौ लहि एह सोवहिं एहिं ठाऊँ। तौ लहि हम देखहिं लखराऊँ।
कै गवनीं लखराउँ सब्राई। जागा राजकुंवर अँगिराई।
देखेसि दोसर सैन सम डासी। राजकुंवरि एक तहाँ नेवासी।

सूर न सरभरि पावै चाँद न खूंदै छाँह।
नौ सत कला सपूनी सोवै जोवन उसीसे बाँह॥

× × ×

चहुँ दिसि मंदिल पटोर मढ़ावा। हेम खंभ सभ नगन जड़ावा।
मंदिल सरग ससि वदन (सो) नारी। तारे रतन धरे जनु तारी।
कचपचियां भर चेरिन्हि टोला। पालक जानु अकास खटोला।
पालक पर जनु लाइ संवारी। सोई सेन सहज विकरारी।
सेज सौरि का बरनौं पारी। कहत सुनत जो बात रसारी।

नौ सत साजें बाला निभरम सोव सुख सेज।
चेत परिहरेउ कुंवर चित देखि हरेउ बुधि तेज॥

× × ×

सूती सेज सहज विकरारा। देखि सजग भा राजकुमारा।
चक्रित चित दहुँ दिसि फिरि हेरा। विधि यह नगर मंदिल केहि केरा।
औ यह कौन सोव बिकरारी। धनि जेहि लगि विधनै औतारी।
देखत हिये समानी स्यामां। कुंवर जीउ करि गै परनामा।
सूती सुखी सेज देखि बाला। नख सिख उठी कुंवर के ज्वाला।

कंवल भांति परगासे पुरुख निरखि मुख सूर।
देखत पेम पिरीत पुब्ब के हिय उर महं अंकूर॥

× × ×

जेउं जेउं देखै रूप सिंगारा। खिन मुरछै खिन चेत सँभारा।
देखि चक्रित चित रहा। विधि यह कौन कहाँ मैं अहा।
एक रूप औ किएं सिंगारा। मुनिबर परहि देखि मुख बारा।
रूप रेख का कहौं बखानी। सहस भाउ होइ हिये समानी।
देखत रूप जीउ भरमाना। वेकहल पात जिमि प्रान उड़ाना।

रूप सिंगार सोहागिनि जेउं जेउं देखि अघाइ।
तेउं तेउं नैन न परिहरहि रूप जो रहे लोभाइ॥

× × ×

उतपति सुनहु माँग के भाऊ। सरग पंथ अति बिकट चढाऊ।
देखत माग चिहुर कर भावा। खिन भुलाइ खिन मारग पावा।
अति सोभित सिर मांग सुहाई। खरग धार जनु रगत बसाई।
मांग के पंथ चलै को पारा। परग परग बेसे फंसिहारा।
जेत गौने तेत मारे भारी। परगट रगत देखु रतनारी।

मांग सरूप सोहागिनि जानु खरग कै धार।
देखि बरनि को पारै फिरतहि होइ दुइ फार॥

× × ×

सूर किरिन सिर मांग सोहाई। सभ जग जीति गगन पर आई।
मांग न आहि गगन कै हाटा। रवि ससि उदै अस्त कै बाटा।
कै जनु अमिअ नदी बहि आई। बदन चांद नहिं अमिअ सिराई।
मांग सरूप देखि जिउ हरा। दीप पतंग जोति जनु परा।
सिर पर ठाउं दीन्ह बिधि नाही। केहि पटतर लै लावौं ताही।

स्याम रैनि जस दामिनि स्याम जलद महं दीस।
सरग हुते जनु छिटकी आइ परी त्रिय सीस॥

× × ×

तेहि पर कच बिखधर बिख सारे। लोटहिं सेज सहज छुहकारे।
सगबगाहिं परतिख मनियारे। गरल भरे बिखधर हतियारे।
निसि अजोर जैस बदन दिखाएं। तस अंध्यार दिन कच मोंकराएं।
कच न होहिं बिरही दुख़ सारा। भएउ जाइ मधु सीस सिंगारा।
भूली दसौ दसा निजु ताही। चिहुर चिन्हारि भई जग जाही।

छिटके चिहुर सोहागिनि जगत भएउ अन्धकाल।
जनु बिरही जन जिय बध कारन मनमथ रोपा जाल॥

× × ×

जग सुवास पूरित भै जाहीं। किछु जानसि दहुँ कारन काहीं।
कै जनु म्रिग मद नाभि उघारी। कै मधु मालति चिहुर खिडारी।
यह जो जगत मलयानिल बाऊ। अति सुबास जानसि केहि भाऊ।
दिन एक कामिनि चिहुर खिडाए। ठाढ़े मिरितु निकट बहु आए।
तेहि (तेही) दिन हुत बहुत उदासा। पै अजहूँ नहि पूजी आसा।

चिहुर पास मधु मालति जब सों बहेउ बतास।
तेहि दिन सों निसि बासर संतत बहा उदास॥

× × ×

निह कलंक ससि दुइजि लिलारा। नौ खंड तीनि भुवन उजियारा।
बदन पसेउ बुंद चहुँ पासा। कचपचियैं जनु चांद गरासा।
म्रिगमद तिलक ताहि पर धरा। जानहु चांद राहु बस परा।
गएउ मयंक सरग जेहिं लाजा। सो लिलाट कामिनि पहं छाजा।
सहस कला देखिय उजियारा। जग ऊपर जगमगत लिलारा।

तर मयंक ऊपर तिसु पाटी बनी अहै कसि रीति।
जानहु ससि औ निसि सेउं भई सुरति विपरीत॥

× × ×

काम कमान रहसि कर लीन्हें। वर सेउं तोरि टूक दुइ कीन्हें।
बिनु रस सेउं धरि मेलि अडारे। सोइ बनाइ मधु भौंह सँवारे।
भौंह नेवासि सोह कस वारी। मदन धनुक जनु धरा उतारी।
जौं चखि चढ़ै भौंह वर नारी। इंद्र धनुक दइ पनच अडारी।
तेहिं धनु मरन तिरभुवन जीता। बहुरि उतारि नारि कहं दीता।

जीति त्रिलोक नेवासि भौ रहा न जगत जुझार।
देखत जाहि हिये सर निकरै तेहि को जीतै पार॥

× × ×

सूते स्याम सेत औ राते। लागत हिएं निफरि ही जाते।
चपल विसाल तीख अति बांके। खंजन पलक पंख सेउं ढाके।
पारधि जनु अगनित जिउ हरे। पौढ़ें धनुक सीस तर धरें।
सनमुख मीन केलि जनु करहीं। कै जनु दुइ खंजन उड़ि लरहीं।
दुवौ नैन जिय केर वियाधा। देखत उठै मरै कै साधा।

अचिजु एक का वरनौं वरनत वरनि न जाइ।
जनु सारंग सारंग तर निभरम पौढ़े आइ॥

× × ×

वरुनि बनावरि बिहस बुझाई। मटकि परत उर जाहिं समाई।
बरुनि वान सनमुख भे जाही। रोवं रोवं तन झांझर ताही।
दिस्टि साथ गै हियें सयानी। रुहिर करेज कीन्ह धरि पानी।
जवहीं वरुनि वरुनि सौं मेरवै। जानहु छुरी छुरी सौं टेवै।
वरुनि वान को जीतै पारा। एक मूठि सौ कांड पवारा।

बरुनि वान के मारत मैं न सकेउं जिउ लेखि।
केहि न मिरितु जिय भावै वरुनि सोहागिनि देखि॥

× × ×

नांक सरूप न बरने पारीं। तीनिउं भुवन हेरि कै हारीं।
कीर टोर औ खरग कै धारा। तिलक फूल में बरनि न पारा।
उदयागिरि जौ कहां तो नाहीं। ससि सूरुज दुइ वाद कराहीं।
निकट न कोउअ सँचरै पारा। निसि दिन जियै सो बास अधारा।
केहि दे जोर पटतरीं नासा। ससि सूरुज जेरि करहिं बतासा।

नांक सरूप सोहागिनि केहि लै लावौं भाउ।
जा कहं ससि सूरुज निसि बासर ओसरीं सारहिं वाउ॥

× × ×

अति सुरंग रस भरे अमोला। जुग सोभित मुख मद्धि कपोला।
मतिहीनी किछु उकति न आई। मधु कपोल बरनौं केहि लाई।
नहिं जानौं दहुँ केइं तप सारा। जो बेरसिहि यह निधि सयंसारा।
अस कपोल बिधि सिरे सोहाए। जे न जाहिं किछु उपमा लाए।
मानुस दहुँ बपुरा केहि माहीं। देवता देखि कपोल नवाहीं।

सुर नर मुनि गन गंध्रप काहुँ न रहेउ गियान।
देखि कपोल नारि कैं निहचै टरै महेस धियान॥

× × ×

अधर अमिअ रस भरे सोहाए। पेम बरें हुत रगत तिसाए।
अति सुरंग कोंवल रस भरे। जानहु बिंब मयंकम धरे।
पटतर लाइ न जाहिं बखाने। जनु ससि अमी गारि बिधि साने।
अधर अमीरस भरे अपीऊ। कुंवर जान मोर डोलहिं जीऊ।
वह सो घरी बिधि कब दरसाइहि। जब यह जिउ मोरे घट आइहि।

अनल बरन दुइ अधर सोहागिनि जगत सुधानिधि जान।
अचिजु जो अम्रित अगिनि सेउं देखत जरहि परान॥

× × ×

दसन जोति बरनी नहिं जाई। चौंधै दिस्टि देखि चमकाई।
नेक बिगसाइ नीद महं हँसी। जानहुँ सरग सेउं दामिनि खसी।
बिहरत अधर दसन चनकाने। त्रिभुवन मुनि गन चौंधि भुलाने।
मंगर सूक गुरू सन्हि चारी। चौक दसन भय राजकुमारी।
नहिं जानौं दहुँ कहँ दुरि जाई। रहे जाइ ससि माहि लुकाई।

जौ कोइ कहै कि बिधिध पसारा तेहि कर सुनहु सुभाउ।
बिधि गुपुत जग माहीं काहुँ न देखा काउ॥

× × ×

तिल जो परा मुख ऊपर आई। वरनि न गा किछु उपमां लाई।
जाइ कुंवर चखु रूप लोभाने। हिलगे वहुरि न आवहिं आने।
तिल न होइ रे नैन कै छाया। जासेउं सोभ रूप मुख पाया।
अति निरमल मुख मुकुर सरीखा। चखु छाया तामहं तिल दीखा।
स्याम कोंवर लोचन पुत्तरी। मुख निरमल पर तिल होइ परी।

अति सरूप मुख निरमल मुकुर समान प्रवान।
तामहं चखु कै छाया दीसै तिल अनुमान ॥

× × ×

सुधा समान जीभ मुख बाला। औ बोलति अति वचन रसाला।
सुनत वचन वहि अम्रित बानी। मि.र्तक मुख आवै भरि पानी।
सुने वचन जानु रतन अमोले। ते सभ भए जगत मिठ बोले।
कौन सो तपा जनमि जग आइहि। जो रसनां पर रसनां लाइहि।
अति रसारि रसनां मुख रसी। दुइ अरि बीच जाइ बसी।

अति रसारि रसनां मुख कामिनि अमी सुरस परवान।
वदन चंद महं रसनां अमी सुरा कै जान ॥

× × ×

सुभर सीप दुइ सवन सोहाए। सरग नखत जनु बीरि जराए।
तरिवन हीर रतन नग जरे। अदित सुक्र दुइ खुंटिला धरे।
दुहुँ दिसि दुवौ चक्र अनियारे। ससि संघ जानु उए दुइ तारे।
जग काकरि अति भागि बिधाता। सवन लागि वहि कह जो बाता।
बाता वदन चंद रखवारी। मानुकि राहु कीत दुइ फारी।

कानन्हि चक्र नरायन लहै दुहुँ दिसि जोति।
नातर राहु गरासत जौ न चक्र भौ होत ॥

× × ×

गियं उपमां बरनौं केहि लाई। सइं विसकरमैं चाक फिराई।
करम रेख दहुँ काहि लिलारा। केइं पयाग दहुँ करवत सारा।
केहि लगि विधि असि गीवं निरमई। धनि सो कंठ ओहि लगि देरसई।
धनि जग जीवन भनि औतारा। जेहिं लगि विधि अस गीवं संवारा।
देखत तीनि कंठ कै रेखा। सजग सरीर होइ कस भेखा।

तीनि रेख अति सोभित गीवं सोहागिनि दीस।
कौन सो तपा जाहि लगि निरमी ऐसि गीवं जगदीस ॥

× × ×

भुजा सइंहि बिसकरमैं गढ़ी। हारेउं हेरि न पटतर रही।
सबल सरूप अतिहिं बरियारी। देखि बीर अबली बलिहारी।
औ अनूप दुइ बनीं कलाई। काम कुंदेरैं फेरि बनाई।
औ तिन्ह पर दुइ सुभर हथोरी। फटिक सिला जनु ईंगुर पूरी।
बिरही जन जहवां लहि मारे। तिन्हके रकत दस नख रतनारे।

सोभित सबल सरूप अति त्रिभुवन जीतन हार।
दहुँ केहि देइ आलिंगन धनि सो जग औतार॥

× × ×

अति सरूप दुइ सिहुन अमोले। जिन्ह देखत त्रिभुवन मन डोले।
कठिन हिरदै महं बिधि निरमाए। तातें कठिन सिहुन दुइ भए।
जबहिं हिरदैं हिरदैं संचरे। कुच आदर कहं उठ भै खरे।
दुवौ अनूप सिरीफल नए। भेंट आनि तरुनापैं दए।
जबहि प्रानपति हियरे छाए। कुच सकोच उठि बाहेर आए।

दुनउं कठोरे कलिसिरे गरब न काहुँ नवाहि।
दुवो सीवं के संभइत आपुस महिं न मिलाहिं॥

× × ×

अनियारे तीखे अनियाई। दिस्टि साथ उर जाहिं समाई।
सोभित दिए स्याम सिर बाने। महाबीर त्रिभुवन जग जाने।
दुवौ सींव पर चहहिं लरा। हार आइ तब अन्तरु परा।
दुवौ बीर कुच जूह जुझारा। सोभहिं आनि सुनहिं रन मारा।
ऐने वैने अस तिनक सुभाऊ। संतत सौंह न पाछें काऊ।

बिपरीत भाउ तिन्हहि कर नहि अचिज्जु कबि पेख।
जिन्ह उपजहिं नहिं सालहिं सालहिं तिन्हहिं जो देख॥

× × ×

रोमावलि नागिनि बिस भरी। जनु करि हुते बिवर अनुसरी।
नाभी कुंड परी जइ आई। घूमि रही पै निकसि न जाई।
पातर पेट सरूप सुहावा। जनु बिधि बाझु अन्त निरमावा।
लंक झीनि देखि जिउ डरई। भार नितंब टूटि जनि परई।
छुइ न जाति कत हाथ पसारी। मंत छुवतहिं टूटहि हतियारी।

टूटि परति करि कामिनि गरुव नितंब के भार।
जौ न होतदिढ़ बंधन कीन्हे त्रिवली तासु अधार॥

× × ×

करि माहँ त्रिवली करि अही। विधनै गढ़त मूंठि जनु गही।
गुरजन लाज मनहिं मन मानेउं। तौ नहिं मदन भंडार बखानेउं।
देखि नितंब चिहुँटि चित लागा। परस दिस्टि मनमथ तन जागा।
जुगुल जंघ देखि मन थहराई। भरमेउ जीउ किछु कहा न जाई।
राते कोंवल सेत सोहाए। तरुवन्ह कंवल पटतर जिमि लाए।

विपरित कनक केदली औ गज सुंड सुभाउ।
उपमां देत लजानेउं सुनहुँ कहौं सति भाउ॥

× × ×

विनु कटाछ विनु भाउ सिंगारा। सूती सेज वरनि को पारा।
जो विधि सिरजी पुब्ब अनूपीं। सहज ते बाझु सिंगार सरूपीं।
सगरी सिस्टि केर अहिवाता। लज्यावंत मदन सभ गाता।
सोवत देखि सैन विकरारा। उठेउ कुंवर तन विरह विकारा।
सहज चितहिं उपजेउ बैरागू। बिरह आइ भा जिय कर लागू।

बदन मदन धनु दुति उदित देखि हरे मन चेत।
धनि सो जनम जग ताकर जा सेउं उपजै हेत॥

केशव

केशव एक समै हरि राधिका आसन एक लसे रँग भीने।
आनँद सों तिय आनन की द्युति देखत दर्पण में दृग दीने।
भाल के लाल में बाल विलोकत ही भरि लालन लोचन लीने।
शासन पीय सवासन सीय हुतासन में जनु आसन कीने॥

× × ×

केशव सूधो विलोचन सूधी विलोकनि सों अविलोकै सदाई।
सूधियै वात सुनै समुझै, कहि आवत सूधियै वात सदाई।
सूधी सुहाँसी सुधाकरसी सुख शोध कई वसुधा की सुधाई।
सूधे स्वभाव सबै सजनी वश कैसे किये अति टेढ़े कन्हाई॥

× × ×

कौन रंगरंगे नैन तिनही के डोलौ संग,
नासा अंग रसना के रस ही समाने हौ।
और गूढ़ कहा कहौ मूढ़ हौ जू जनि जाहु,
प्रौढ़ रूढ़ केशोदास नीके करि जाने हौ।

तन आन मन आन कपट-निधान कान्ह,
सांँची कहो मेरी आन काहे को डराने हौ।
वे तौ हैं विकानी हाथ मेरे हौं तिहारे हाथ,
तुम ब्रजनाथ हाथ कौन के विकाने हौ॥

× × ×

चन्द कैसौ भाग भाल भृकुटी कमान ऐसी,
मैन कैसे पैने शर नैनन विलासु है।
नासिका सरोज गंधवाह से सुगन्धवाह,
दारयौं से दशन कैसो वीजुरी सो हासु है।
भांइ ऐसी ग्रीवा भुज पानसो उदर अरु,
पंकज सौं पांइ, गति हंस ऐसी जासु है।
देखी है गुपाल एक गोपिका मैं देवता सी,
सोनो सो शरीर सब सोंधे कैसो वासु है॥

× × ×

माल गुही गुन लाल लटे लपटी लर मोतिन की सुख दैनी।
ताहि विलोकत आरसी लै कर आरस सो इक सारसनैनी।
केशव कान्ह दुरे दरसी परसी उपमा मति को अति पैनी।
सूरज मंडल में शशि मंडल मध्य धसी जनु ताहि त्रिवेणी॥

× × ×

लोचन ऐंचि लिये इत को मन की गति यद्यपि नेह नहीं है।
आनन आइ गये श्रम सीकर रोम उठे उर कंप गही है।
तासों कहा कहिये कहि केशव लाज समुद्र में बूड़ि रही है।
चित्रहु में हरि मित्रहिं देखति यों सकुची जनु बाँह गही है॥

× × ×

काल्हि की ग्वारि तौ आजहूँ तौन सम्हारति केशव कै सहुँ देहै।
सीरी ह्वै जात, उठै कबहूँ जरि जीव रहै कै रही रुचि रेहै।
कोरि बिचार विचारति है उपचारन के बरसै सखि मेहै।
कान्ह बुरो जिन मानौ तिहारी विलोकन में विष बीस बिसे है॥

× × ×

सखि सोहत गोप सभा महँ गोविन्द बैठे हुते द्युति को धरि कै।
जनु केशव पूरण चन्द लसै चित चारु चकोरन को हरि कै।

तिन को उलटी करि आन दियो किहुँ नीरज नीर नये भरि कै।
कहि काहे तें नेकु निहारि मनोहरि फेरि दियो कलिका करि कै॥

× × ×

लाड़िलो लीली कलोरी लुरी कहुँ लाल लुके कहाँ आग लगाइकै।
आजु तौ केशव कैसहुँ लेरुवै लागन देत न कैसेहू आइ कै।
वेगि चलौ चलि आइ बुलावन दौरि अकेलि यों हौं अकुलाइ कै।
भूलेहु गोकुल गाँउ में गोविन्द कीजै गरूर न गाइ चराइकै॥

× × ×

फूल न दिखाउ शूल फूलत है हरि बिन,
दूरि करि माला बाला व्यालसी लगति है।
चँवर चलाउ जिन वीजन हलाउ मति,
केशव सुगन्ध वायु बाइ सी लगति है।
चंदन चढ़ाउ जिन तापसी चढ़ति तन,
कुंकुम न लाउ अंग आग सी लगति है।
बार बार बरजति बावरी है वारौं प्रान,
बीरी ना खवाउ बीर विष सी लगति है॥

× × ×

प्रेम भय भूप रूप सचिव सकोच शोच,
विरह विनोद पील पेलियत पचि कै।
तरल तुरंग अविलोकनि अनन्त गति,
रथ मनोरथ रहे प्यादे गुन गचिकै।
दुहूँ ओर परी जोर घोर घनी केशौदास,
होइ जीत कौन की को हारे जिय लचिकै।
देखत तुम्हैं गुपाल तिहिं काल उहिं बाल,
उर सतरंज कैसी बाजी राखि रचि कै॥

× × ×

केशव चौंकति सी चितवै छिति पाँ धर कै तरकै तकि छाँही।
बूझिये और कहे मुख और सु और की और भई छण माहीं।
डीठि लगी किधौं बाइ लगी मन भूलि पर्‍यो कै कर्‍यौ कछु काहीं।
घूँघट की घट की पट की हरि आजु कछू सुधि राधिकै नाहीं॥

× × ×

बैन तज्यौं उन बीन तैं बोल्यों न बोलि विलोकति बुद्धि भगी है।
बै न सुनै समुझै न तु बातहि प्रेत लग्यौ किधौं प्रीति जगी है।

केशव वे तुहि तोहिं रटैं रट तोहिं इतै उन हीं की लगी है।
वे भये पान न, पानी न तू, सु तौ कान्ह ठगे कि तू कान्ह ठगी है ॥

× × ×

बूझत ही वह गोपी गुपालहि आजु कहूँ हँसि कै गुण गाथहिं।
ऐसे में काहू को नाम सखी कहि केसौ धौं आइ गयो व्रजनाथहिं।
खाति खवावति ही जु बिरी सु रही मुख की मुख हाथ की हाथहिं।
आतुर ह्वै उन आँखिन ते अँसुआ निकसे अखरानि के साथहिं ॥

× × ×

हरित हरित हार हेरत हियो हरत,
हारो हों हरिननैनी हरि न कहूँ लहों।
वनमाली व्रज पर बरषत वनमाली,
वनमाली दूर दुख केशव कैसे सहों।
हृदय कमल नैन देखि के कमल नैन,
होहूँगी कमल नैनि और हों कहा कहों।
आप घने घनश्याम घन ही से होत घन—
श्याम के दिवस घनश्याम बिन क्यों रहों ॥

× × ×

आयेते आवैगी आँखिन आगे ही डोलिहै मानहु मोल लई है।
सोवै न सोवन देय न यों तव सो इनमें उन साथ दई है।
मेरिये भूलि कहा कहों केशव सौति कहूँ ते सहेली भई है।
स्वारथ ही हितु है सब के परदेश गये हरि नींद गई है ॥

× × ×

भौंरिनि ज्यों भौंवत रहत वन वीथिकान,
हंसिनि ज्यों मृदुल मृणालिका वहति हैं।
पीउ पीउ रटत रहत चित चातकी ज्यों,
चन्द चितैं चकई ज्यों चुप ह्वै रहति हैं।
हिरनी ज्यों हेरति न केशरी के कानन को,
केका सुनि व्याली ज्यौं बिलान हीं कहति हैं।
केशव कुँवर कान्ह विरह तिहारे ऐसी,
सूरतिन राधिका की मूरति गहति हैं ॥

× × ×

दीरघ दरीन बसै केशोदास केशरी ज्यों,
केशरी को देखे वन करी ज्यों कँपत है।

वासर की संपदा चकोर ज्यों न चितवत,
चकवा ज्यों चंदही ते चौगुनो चँपत है।
केका सुनि व्याल ज्यों विलात जात घनश्याम,
घननि की घोरनि जवासे त्यों तपत है।
भौंर ज्यों भँवत वन योगी ज्यों जगत निशि,
चातक ज्यों श्याम नाम तेरोई जपत है।।

× × ×

थोरी सी सुदेश वेप दीरघ नयन केश,
गोरी जू सी गोरी भोरी भवजू की सारी सी।
साँचे की सी ढारी अति सूक्षम सुधारि कढ़ी,
केशोदास अंग अंग भाँइके उतारी सी।
सोंधे कैसी सोंधी देह सुधा सों सुधारी,
पाँउ धारी देवलोक तें कि सिन्धु ते उधारी सी।
आजु यासों बोलि चालि हंसि खेलि लेहु लाल,
काल्हि ऐसी ग्वारि लाउँ काम की कुमारी सी।।

× × ×

जहीं जहीं दुरै तहीं जौन्ह ऐसी जगमगे,
कैसे हूँ जु केशव दुराइ ल्याउँ रंग की।
पवन को पंथ अलि अलिन के पीछे आली,
अलिनी ज्यों लागी रहैं जिन्हें साध संग की।
निपट अमिल तक तुम्हें मिलिबै की जक,
कैसे कै मिलाऊँ गति मोपै न विहंग की।
इक तो दुसह दुख देति हुती दुति दूजे,
वीस बिसे बिस बास भई वाके अंग की।।

× × ×

मैन ऐसो मन तन मृदुल मृणालिका के,
सूत ऐसो सुरधुनि मनहि हरति है।
दारों कैसी बीज दंतपाँति के अरुण ओंठ,
केशोदास देखे दृग आनन्द भरति है।
एरी मेरी तेरी मोहि भावत भलाई ताते,
बूझत हौं तोहिं उर बूझत डरति है।
माखन सी जीभ मुख कंज सो कुँवरि कहुँ,
काठ सी कठेठी बात कैसे निकरति है।।

× × ×

आपुन ह्वजै दुखी दुख जाके ही ताहि कहा कबहूँ दुख दीजै।
जा बिन और सुहाइ न केशव ताहि सुहाइ सु तो सब कीजै।
भाग बड़ो जु रची तुमसों वह तो विझकाइ कहो कहँ लीजै।
जो रिसियाइ तो जैये मनावन तातो है दूध सिराइ न पीजै॥

× × ×

वा मृगनैनी ज्यों और नहीं जु लगावत हौं मुँह ऐसे न हूजै।
सोने सी जो कहूँ पीतर होहि तो केशव कैसहूँ हाथ न छूजै।
आपु गिरा गुन जो सिखवै तऊ काकन कोकिल ज्यों कल कूजै।
सुन्दर श्याम विचार करो कछु आम कि साथ न आमिली पूजै॥

× × ×

सिखै हारी सखी डरपाइ हारी कादंबिनी,
दामिनी दिखाई हारी दिशि अधिरात की।
झुकि झुकि हारी रति, मारि मारि हार्यो मार,
हारी झकझोरति त्रिविध गति वात की।
दई निरदई दई वाहि ऐसी काहे मति,
जारत जु ऐन रैन दाह ऐसी गात की।
कैसेहूँ न माने हो मनाइ हारी केशोराय,
बोलि हारी कोकिला, बुलाइ हारी चातकी॥

× × ×

केशोदास लाख लाख भाँतिन के अभिलाष,
बारिदै री बावरी न वारि हिये होरी सी।
राधा हरि केरी प्रीति सबते अधिक जानि,
रति रतिनाथ हू में देखी रति थोरी सी।
तिनहूँ में भेद न भावनि हूँ पै पार्यो जाइ,
भारति की भारती है कहिबे को भोरी सी।
एकै गति एकै मति एकै प्राण एकै मन,
देखिबे को देह द्वै, है नैनन की जोरी सी॥

× × ×

बानी जगरानी उदारता बखानी जाय,
ऐसी मति उदित उदार कौन की भई।
देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज तप वृद्ध,
कहि कहि हारे सब कहि न काहू लई।
भावी, भूत, वर्त्तमान जगत बखानत है,
केशोदास क्योंहू न बखानी काहू पै गई।

बरौं पति चारि मुख, पूत बरौं पाँचमुख,
नाती बरौं षट्मुख तदपि नई नई ॥

× × ×

सोभत सुवास हास सुधा सो सुधारयो विधि,
विष को निवास जैसो तैसो मोहकारी है।
केशोदास पावन परम हंस गति तेरी,
पर हीय हरन प्रकृति कौन पारी है।
वारक विलोकि बलवीर से बलीन कहँ,
करत बरहिं बश, ऐसी बैस वारी है।
एरी मेरी सखी तेरो कैसे कै प्रतीत कीजे,
कृशनानुसारी दृग करणानुसारी है ॥

× × ×

जो हौं कहौं 'रहिये' तो प्रभुता प्रगट होति,
'चलन' कहौं तो हित हानि, नाहिं सहनो।
'भावै सो करहु' तो उदास भाव प्राणनाथ,
'साथ लै चलहु' कैसे लोक लाज वहनो।
केशोराय की सौं तुम सुनहु छबीले लाल,
चलेही बनत जोपै नाहीं राजी रहनो।
तैसिय सिखाश्रो सीख तुमही सुजान पिय,
तुमहिं चलत मोहि जैसो कछू कहनो ॥

× × ×

एकै कहैं अमल कमल मुख सीता जू को,
एकै कहैं चन्द्र सम आनन्द को कंद री।
होय जो कमल तो रयनि में न सकुचै री,
चंद जो तो वासर न होय दुति मंद री।
वासर ही कमल, रजनि ही में चंद, मुख,
वारसहू रजनि विराजै जगवंद री।
देखे मुख भावैं, अनदेखेई कमल चंद,
ताते मुख मुखै, सखि कमलै न चंद री ॥

× × ×

पाँयन को परिवो अपमान अनेक सों 'केशव' मान मनैवो।
सीठी तमूर खवायवो खैबो विशेष चहूँ दिसि चौंकि चितैबो।

चीर कुचीरन ऊपर पौढ़िवो पात हू के खरके भगि ऐवो।
आँखिन मूँदि के सीखत राधिका कुंजन ते प्रति कुंजन ऐवो॥

× × ×

पूरण कपूर पान खाए कैसी मुख वास,
अधर अरुण रुचि सुधा सों सुधारे हैं।
चित्रित कपोल लोल लोचन मुकुर मैन,
अमर झलक झलकनि मोहि मारे हैं।
भृकुटी कुटिल जैसी तैसी न किए हू होंहि,
आँजी ऐसी आँखें केशोराय हेरि हारे हैं।
काहे को शृंगारि कै बिगारति है मेरी आली,
तेरे अंग सहज शृंगार ही शृंगारे हैं॥

× × ×

बैठी सखीन की सोहै सभा सब ही के जु नैनन साँझ बसै।
बूझै ते बात बराइ कहै मन ही मन केशवदास हँसै।
खेलति है इत खेल उतै पिय, चित्त खिलावत यों बिलसै।
कोउ जानै नहीं दृग दौरे कबै, कित ह्वै हरि आनन छ्वै निकसै॥

× × ×

नाह लगे मुख सौति दहै दुख, नाहीं लगे दुख देह दहैगो।
नाहीं अबै सुख देत है केशव नाह सदा सुख देत रहैगो।
नाहीं ते नाहि री नाहिं भलाई, भलो सब नाह हितै पै कहैगो।
नाह सों नेह निबाहि बलाइ ल्यौं, नाहीं सो नेह कहा निबहैगो॥

× × ×

आजु मिले वृषभानुकुमारिहि नन्दकुमार वियोग बितै कै।
रूप की राशि रस्यो रस केशव, हास बिलासनि रोस रितै कै।
बागे के भीतर देखि हिये नख, नैन नवाइ रही सु इतै कै।
फूलहिं में भ्रम भूलि मनो सकुचे सरसीरुह चंद चितै कै॥

× × ×

घेरो जनि मोहिं घर जान देहु घनस्याम,
घरिक में लागी उर देखिबी ज्यों दामिनी।
होइ कोऊ ऐसी वैसी आवै इत उत ह्वै कै,
वे क वृषभानु जू की बेटी गज-गामिनी।
आदित को आयो अंत आवो बनि बलि जाउँ,
आवत है वै ऊ बनि आई अरु यामिनी।
घाम के डरन तुम कुंज गह्यो केशोदास,
भौंरन के डरन भवन गह्यो भामिनी॥

बिहारी

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ ।
जा तन की झाँईं परैं, स्यामु हरित-दुति होइ ।।

अपने अँग के जानि कै जोबन-नृपति प्रवीन ।
स्तन, मन, नैन, नितंब कौ बड़ौ इजाफा कीन ।।

अर तैं टरत न बर-परे, दई मरक मनु मैन ।
होड़ाहोड़ी बढ़ि चले चितु, चतुराई, नैन ।।

औरै-ओप कनीनिकनु गनी धनी-सिरताज ।
मनीं धनी के नेह की बनीं छनीं पट लाज ।।

सनि-कज्जल चख-झख-लगन उपज्यौ सुदिन सनेहु ।
क्यौं न नृपति ह्वै भोगवै लहि सुदेसु सब देहु ।।

सालति है नटसाल सी, क्यौं हूँ निकसति नाँहि ।
मनमथ-नेजा-नोक सी खुभी खुभी जिय माँहि ।।

जुवति जोन्ह मैं मिलि गई नैंक न होति लखाइ ।
सौंधे कैं डोरै लगी अली चली सँग जाइ ।।

हौं रीझी, लखि रीझिहौ छबिहिं छबीले लाल ।
सोनजुही सी होति दुति-मिलत मालती माल ।।

बहके-सब जिय की कहत, ठौरु कुठौरु लखै न ।
छिन औरै, छिन और से, ए छबि छाके नैन ।।

फिरि फिरि चितु उत ही रहतु, टुटी लाज की लाव ।
अंग-अंग-छबि-झौंर मै भयौ भौंर की नाव ।।

नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि ।
तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि ।।

चितई ललचौहैं चखनु डटि घूँघट-पट माँह ।
छल सौं चली छुवाइ कै छिनकु छबीली छाँह ।।

जोग-जुगति सिखए सबै मनौ महामुनि मैन ।
चाहत पिय-अद्वैतता काननु सेवत नैन ।।

खरी पातरी कान की, कौन बहाऊ बानि ।
आक-कली न रली करै अली, अली, जिय जानि ।।

पिय बिछुरन कौ दुसहु दुखु, हरपु जात प्यौसार ।
दुरजोधन लौं देखियति तजत प्रान इहि बार ।।

झीनैं पट मैं झुलमुली झलकति ओप अपार ।
सुरतरु की मनु सिंधु मैं लसति सपल्लव डार ॥

डारे ठोढ़ी - गाड़, गहि नैन - बटोही, मारि ।
चिलक-चौंध मैं रूप-ठग, हाँसी-फाँसी डारि ॥

कीनैं हू कोरिक जतन अब कहि काढ़ै कौनु ।
भो मन मोहन रूप मिलि पानी मैं कौ लौनु ॥

लग्यो सुमनु ह्वै है सफलु, आतप-रोसु निवारि ।
बारी, बारी आपनी सींचि सुहृदयता - बारि ॥

अजौं तरयौना हीं रह्यौ श्रुति सेवत इक-रंग ।
नाक-बास बेसरि लह्यौ बसि मुकुतनु कैं संग ॥

जम-करि-मुँह-तरहरि परयौ, इहिं धरहरि चित लाउ ।
विषय-तृषा परिहरि अजौं नरहरि के गुन गाउ ॥

पलनु पीक, अंजनु अधर, धरे महावरु भाल ।
आजु मिले, सु भली करी; भले बने हौ लाल ॥

लाज-गरब-आलस-उमग-भरे नैन मुसकात ।
राति-रमी रति देति करि औरै प्रभा प्रभात ॥

पति रति की बतियाँ कहीं, सखि लखि लखि मुसकाइ ।
कै कै सबै टलाटलीं, अलीं चलीं सुख पाइ ॥

तो पर वारौं उरबसी, सुनि, राधिके सुजान ।
तू मोहन कैं उर बसी ह्वै उरबसी-समान ॥

कुच-गिरि चढ़ि, अति थकित ह्वै, चली डीठि मुँह-चाड़ ।
फिरि न टरी, परियै रही, गिरी चिबुक की गाड़ ॥

वेधक अनियारे नयन, वेधत करि न निषेधु ।
बरबट वेधतु मो हियौ तो नासा कौ वेधु ॥

लौनैं मुहुँ दीठि न लगै, यौं कहि दीनौ ईठि ।
दूनी ह्वै लागन लगी, दियैं दिठौना दीठि ॥

चितवनि रूखे दृगनु की, हाँसी-बिनु मुसकानि ।
मानु जनायौ मानिनी, जानि लियौ पिय, जानि ॥

सब ही त्यौं समुहाति छिनु, चलति सबनु दै पीठि ।
वाही त्यौं ठहराति यह, कविलनवी लौं, दीठि ॥

कौन भाँति रहिहै बिरदु अब देखिबी मुरारि ।
बीधे मोसौं आइ कै गीधे गीधहिं तारि ॥

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत लजियात ।
भरे भौन मैं करत हैं नैननु हीं सब बात ॥

वाही की चित चटपटी, धरत अटपटे पाइ ।
लपट बुझावत बिरह की कपट-भरेऊ आइ ॥

लखि गुरुजन-बिच कमल सौं सीसु छुवायौ स्याम ।
हरि-सनमुख करि आरसी हियैं लगाई बाम ॥

पाइ महावरु दैं न कौं नाइनि बैठी आइ ।
फिरि फिरि जानि महावरी, एड़ी मीड़ति जाइ ॥

तोहीं, निरमोही, लग्यो मो ही इहैं सुभाउ ।
अनआऐं आवै नहीं, आऐं आवतु आउ ॥

नेहु न, नैननु, कौं कछू उपजी बड़ी बलाइ ।
नीर-भरे नितप्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाइ ॥

नहिं परागु, नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल ।
अली, कली ही सौं बँध्यौ, आगैं कौन हवाल ॥

लाल, तुम्हारे बिरह की अगनि अनूप, अपार ।
सरसै बरसैं नीर हूँ, भर हूँ मिटै न झार ॥

देह दुलहिया की बढ़ै ज्यौं ज्यौं जोवन-जोति ।
त्यौं त्यौं लखि सौत्यैं सबै बदन मलिन दुति होति ॥

जगतु जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नाँहि ।
ज्यौं आँखिनु सबु देखियै, आँखि न देखी जाँहि ॥

मंगलु बिंदु सुरंगु, मुखु ससि केसरि-आड़ गुरु ।
इक नारी लहि संगु, रसमय किय लोचन-जगत ॥

पिय तिय सौं हँसि कै कह्यौ, लखैं दिठौना दीन ।
चंदमुखी, मुखचंदु तैं भलौ चंद-समु कीन ॥

कौं हर सी एड़ीनु की लाली देखि सुभाइ ।
पाइ महावरु देइ को आपु भई बे-पाइ ॥

खेलन सिखए अलि भलैं चतुर अहेरी मार ।
कानन - चारी नैन - मृग नागर नरनु सिकार ॥

रस सिंगार - मंजनु किए, कंजनु भंजनु दैन ।
अंजनु रंजनु हूँ बिना खंजनु गंजनु नैन ॥

साजे मोहन - मोह कौं, मोहीं करत कुचैन ।
कहा करौं, उलटे परे टोने लोने नैन ॥

याकैं उर औरै कछू लगी बिरह की लाइ।
पजरै नीर गुलाव कैं, पिय की वात बुझाइ॥

कहा लेहुगे खेल पैं, तजौ अटपटी वात।
नैंक हँसौं हीं है भई भौंहैं, सौंहैं खात॥

डारी सारी नील की ओट अचूक चुकै न।
मो मन - मृगु करबर गहैं अहे! अहेरी नैन॥

दीरघ साँस न लेहु दुख, सुख साईंहिं भूलि।
दई दई क्यौं करतु है, दई दई सु कबूलि॥

बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन-तन माँह।
देखि दुपहरी जेठ की छाँहौं चाहति छाँह॥

हा हा! बदनु उघारि, दृग सफल करैं सबु कोइ।
रोज सरोजनु कैं परैं, हँसी ससी की होइ॥

होमति सुखु करि कामना तुमहिं मिलन की, लाल।
ज्वालामुखी सी जरति लखि लगनि-अगनि की ज्वाल॥

सायक-सम मायक नयन, रँगे त्रिबिध रँग गात।
झखौ बिलखि दुरि जात जल, लखि जलजात लजात॥

मरी डरी कि टरी बिथा, कहा खरी, चलि चाहि।
रही कराहि कराहि अति, अब मुँह आहि न आहि॥

कहा भयौ, जौ बीछुरे, मो मनु तोमन-साथ।
उड़ी जाउ कित हूँ, गुड़ी तऊ उड़ाइक-हाथ॥

लखि, लोने लोइननु कैं कोइनु, होइ न आजु।
कौनु गरीबु निवाजिबौ, कित तूठ्यौ रतिराजु॥

सीतलताऽरु सुवास कौ, घटै न महिमा मूरु।
पीनस वारैं जौ तज्यौ सोरा जानि कपूरु॥

कागद पर न लिखत वनत, कहत सँदेसु लजात।
कहिहै सबु तेरौ हियौ मेरे हिय की बात॥

बंधु भए का दीन के, को तार्‍यौ रघुराइ।
तूठे तूठे फिरत हौ झूठे बिरद कहाइ॥

जब जब वै सुधि कीजियै, तब तब सब सुधि जाँहि।
आँखिनु आँखि लगी रहैं, आँखैं लागति नाँहि॥

कौन सुनै कासौं कहौं, सुरति बिसारी नाह।
बदाबदी ज्यौं लेत हैं ए बदरा बदराह॥

मैं हो जान्यौ, लोइननु जुरत बाढ़िहै जोति ।
को हो जानतु, दीठि कौं दीठि किरकिटी होति ॥

गहकि, गाँसु औरै गहे, रहे अधकहे बैन ।
देखि खिसौं हैं पिय-नयन किए रिसौं हैं नैन ॥

मैं तोसौं कैवा कह्यौ, तू जिन इन्हैं पत्याइ ।
लगालगी करि लोइननु उर मैं लाई लाइ ॥

वर जीते सर मैन के, ऐसे देखे मैं न ।
हरिनी के नैनानु तैं, हरि, नीके ए नैन ॥

थोरैं ही गुन रीझते, बिसराई वह बानि ।
तुमहूँ, कान्ह, मनौ भए आज कालिह के दानि ॥

अंग-अंग-नग जगमगत दीपसिखा सी देह ।
दिया बढ़ाएँ हूँ रहै बड़ौ उज्यारौ गेह ॥

छुटी न सिसुता की झलक, झलक्यौ जोवनु अंग ।
दीपति देह दुहून मिलि दिपति ताफता-रंग ॥

कब कौ टेरतु दीन रट, होत न स्याम सहाइ ।
तुमहूँ लागी जगत-गुरु, जग-नाइक, जगबाइ ॥

सकुचि न रहियै, स्याम सुनि ए सतरौंहैं बैन ।
देत रचैं हौं चित कहे नेह-नचौंहैं नैन ॥

पत्रा हीं तिथि पाइयै वा घर कैं चहुँ पास ।
नितप्रति पून्यौई रहै आनन - ओप - उजास ॥

बसि सकोच-दसबदन-बस, साँचु दिखावति बाल ।
सियलौं सोधति तिय तनहिं लगनि-अगिनि की ज्वाल ॥

जौ न जुगति पिय मिलन की, धूरि मुकति-मुँह दीन ।
जौ लहियै सँग सजन, तौ धरक नरक हूँ की न ॥

चमक, तमक, हाँसी, ससक, मसक, झपट, लपटानि ।
ए जिहिं रति, सो रति मुकति; और मुकति अति हानि ॥

मोहू सौं तजि मोहु, दृग चले लागि उहि गैल ।
छिनकु छाइ छवि-गुर-डरी छले छबीलैं छैल ॥

कंज नयनि मंजनु किए, बैठी ब्यौरति बार ।
कच-अंगुरी-बिच दीठि दै, चितवति नंदकुमार ॥

पावक सो नयननु लगै जावकु लाग्यौ भाल ।
मुकुरु होहुगे नैंक मैं, मुकुरु बिलोकौ, लाल ॥

रहति न रन, जयसाहि-मुख लखि, लाखनु की फौज ।
जाँचि निराखरऊ चलै लै लाखनु की मौज ॥

दियौ, सु सीस चढ़ाइ लै आछी भाँति अएरि ।
जापैं सुखु चाहतु लियौ, ताके दुखहिं न फेरि ॥

तरिवन-कनकु कपोल-दुति बिच बीच हीं बिकान ।
लाल लाल चमकति चुनीं चौका-चीन्ह-समान ॥

मोहिं दयौ, मेरौ भयौ, रहतु जु मिलि जिय साथ ।
सो मनु बाँधि न सौंपियै, पिय, सौतिहिं कैं हाथ ॥

कुंज-भवनु तजि भवन कौं चलिए नंदकिसोर ।
फूलति कली गुलाब की, चटकाहट चहुँ ओर ॥

कहति न देवर की कुबत कुल-तिय कलह डराति ।
पंजर-गत मंजार-ढिग सुक ज्यौं सूकति जाति ॥

औरै भाँति भए ऽब ए चौसरु, चंदनु, चंदु ।
पति-बिनु अति पारतु बिपति मारतु मारुतु मंदु ॥

चलन न पावतु निगम-मगु जगु, उपज्यौ अति त्रासु ।
कुच - उतंगगिरिवर गह्यौ मैंना मैंनु मवासु ॥

त्रिवली, नाभि दिखाइ, कर सिर ढकि, सकुचि, समाहि ।
गली, अली की ओट कै, चली भली बिधि चाहि ॥

देखत बुरै कपूर ज्यौं उपै जाइ जिन, लाल ।
छिन छिन जाति परी खरी छीन छबीली बाल ॥

हँसि उतारि हिय तैं, दई तुम जु तिहिं दिना, लाल ।
राखत प्रान कपूर ज्यौं, वहै चुहुटिनी-माल ॥

कोऊ कोरिक संग्रहौ, कोऊ लाख हजार ।
मो संपति जदुपति सदा बिपति-बिदारनहार ॥

द्वैज-सुधादीधिति कला वह लखि, दीठि लगाइ ।
मनौ अकास - अगस्तिया एकै कली लखाइ ॥

गदराने तन गोरटी, ऐपन - आड़ लिलार ।
हूठ्यौ दै, इठलाइ, दृग करै गँवारि सुवार ॥

तंत्री - नाद कबित्त - रस, सरस राग, रति - रंग ।
अनबूड़े बूड़े, तरे जे बूड़े सब अंग ॥

सहज [illegible]कन, स्याम-रुचि, सुचि, सुगंध, सुकुमार ।
पथु अपथु, लखि बिथुरे सुथरे बार ॥

सुदुति दुराई दुरति नहिं प्रगट करति रति-रूप ।
छुटैं पीक, औरै उठी लाली ओठ अनूप ।।
वेई गड़ि गाड़ैं परीं उपट्यौ हारु हियैं न ।
आन्यौ मोरि मतंगु मनु मारि गुरेरनु मैन ।।
नैंकु न झुरसी बिरह-झर नेह-लता कुम्हिलाति ।
नित नित होति हरी हरी, खरी झालरति जाति ।।
हेरि हिंडोरैं गगन तैं परी परी सी टूटि ।
धरी धाइ पिय बीच हीं, करी खरी रस लूटि ।।
नैंक हँसौं ही बानि तजि, लख्यौ परतु मुहुँ नीठि ।
चौका चमकनि-चौंध मैं परति चौंधि सी डीठि ।।
प्रगट भए द्विजराज-कुल, सुबस बसे ब्रज आइ ।
मेरे हरौ कलेस सब, केसव केसवराइ ।।
केसरि कै सरि क्यौं सकै, चंपकु कितकु अनूपु ।
गात-रूपु लखि जातु दुरि जातरूप कौ रूपु ।।
मकराकृति गोपाल कैं सोहत कुंडल कान ।
धरयो मनौ हिय-धर समरु, ड्योढ़ी लसत निसान ।।
खौर-पनिच भृकुटी-धनुषु वधिक समरु, तजि कानि ।
हनतु-तरुन-मृग तिलक-सर-सुरक-भाल, भरि तानि ।।
नीकौ लसतु लिलार पर टीकौ जरितु जराइ ।
छबिहिं बढ़ावतु रवि मनौ ससि-मंडल मैं आइ ।।
लसतु सेतसारी - ढप्यौ, तरल तरयौना कान ।
परयौ मनौ सुरसरि-सलिल रवि-प्रतिबिंबु बिहान ।।
हम हारीं कै कै हहा, पाइनु पारयौ प्यौरु ।
लेहु कहा अजहूँ किए तेह - तरेरयौ त्यौरु ।।
सतर भौंह, रूखे बचन, करति कठिनु मन नीठि ।
कहा करौं, ह्वै जाति हरि हेरि हँसौं ही डीठि ।।
वाहि लखैं लोइनि लगै कौन जुवति की जोति ।
जाकैं तन की छाँह-ढिग जोन्ह छाँह सी होति ।।
कहा कहौं वाकी दसा, हरि प्राननु के ईस ।
बिरह-ज्वाल जरिबो लखैं मरिबो भई असीस ।।
जेती संपति कृपन कैं, तेती सूमति जोर ।
बढ़त जात ज्यों ज्यौं उरज, त्यौं त्यौं होत कठोर ।।

ज्यौं ज्यौं जोबन-जेठ दिन कुच मिति अति अधिकाति ।
त्यौं त्यौं छिन छिन कटि-छपा छीन परति नित जाति ॥

तेह-तरेरौ त्यौरु करि कत करियत दृग लोल ।
लीक नहीं यह पीक की, श्रुति-मनि-झलक कपोल ॥

नैंक न जानी परति यौं, पर्‌यौ विरह तनु छामु ।
उठति दियैं लौं नाँदि, हरि, लियैं तिहारौ नामु ॥

नभ-लाली चाली निसा, चटकाली धुनि कीन ।
रति पाली, आली, अनत, आए वनमाली न ॥

सोवत सपनैं स्यामघनु मिलिहिलि हरत वियोगु ।
तब हीं टरि कितहूँ गई, नींदौं नींदनु जोगु ॥

संपति केस, सुदेस नर नवत, दुहुनि इक वानि ।
विभव सतर कुच, नीच नर नरम बिभव की हानि ॥

कहत सबै कवि कमल से, मो मत नैन पखानु ।
नतरुक कत इन विय लगत उपजतु विरह-कृसानु ॥

हरि हरि ! वरि वरि उठति है, करि करि थकी उपाइ ।
वाकौ जुरु, वलि वैद, जौ, तो रस जाइ, तु जाइ ॥

यह विनसतु नगु राखि कै जगत बड़ौ जसु लेहु ।
जरी विपम जुर जाइयें आइ सुदरसनु देहु ॥

या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोइ ।
ज्यौं ज्यौं बूड़ै स्याम रँग, त्यौं त्यौं उज्जलु होइ ॥

विय सौतिनु देखत दई अपने हिय तैं, लाल ।
फिरति सबनु मैं डहडही उहैं मरगजी माल ॥

छला छबीले लाल कौ नवल नेह लहि नारि ।
चूँबति, चाहति, लाइ उर पहिरति, धरति उतारि ॥

नित संसौ हंसौ बचतु, मनौ सु इहिं अनुमानु ।
विरह-अगिनि लपटनु सकतु झपटि न मीचु-सचानु ॥

थाकी जतन अनेक करि, नैंक न छाड़ति गैल ।
करी खरी दुबरी सु लगि तेरी चाह-चुरैल ॥

लाज गहौ, वेकाज कत घेरि रहे, घर जाँहि ।
गोरसु चाहत फिरत हौ, गोरसु चाहत नाँहि ॥

घाम घरीक निवारियै, कलित ललित अलि-पुंज ।
जमुना - तीर - तमाल - तरु-मिलित मालती-कुंज ॥

उन हरकी हँसि कै, इतै इन सौंपी मुसकाइ ।
नैन मिलैं मन मिलि गए दोऊ, मिलवत गाइ ॥

पर्यौ जोरु, विपरीत रति रुपी सुरत-रन-धीर ।
करति कुलाहलु किंकिनी, गह्यौ मौनु मंजीर ॥

बिनती रति विपरीत की करी परसि पिय पाइ ।
हँसि, अनबोलैं हीं दियौ ऊतरु, दियौ बताइ ॥

कैसैं छोटे नरनु तैं सरत बड़नु के काम ।
मढ्यौ दमामौ जातु क्यौं, कहि चूहे कैं चाम ॥

सकत न तुव ताते बचन मो रस कौ रसु खोइ ।
खिन खिन औटे खीर लौं खरौ सवादिलु होइ ॥

कहि, लहि कौनु सकै दुरी सौनजाइ मैं जाइ ।
तन की सहज सुवास वन देती जौ न बनाइ ॥

चाले की बातैं चलीं, सुनत सखिनु कैं टोल ।
गोऐं हूँ लोइन हँसत, बिहँसत जात कपोल ॥

सनु सूक्यौ, बीत्यौ बनौ, ऊखौ लई उखारि ।
हरी हरी अरहरि अजैं, धरि धरहरि जिय नारि ॥

आए आपु, भली करी, मेटन मान-मरोर ।
दूरि करौ यह, देखिहै छला छिगुनिया-छोर ॥

मेरे बूझत बात तू कत बहरावति, बाल ।
जग जानी बिपरीत रति लखि बिंदुली पिय-भाल ॥

फिरि फिरि बिलखी ह्वै लखति, फिरि फिरि लेति उसासु ।
साईं ! सिर-कच-सेत लौं बीत्यौ चुनति कपासु ॥

डगकु डगति सी चलि, ठठुकि चितई, चली निहारि ।
लिए जाति चितु चोरटी वहै गोरटी नारि ॥

करी बिरह ऐसी, तऊ गैल न छाड़तु नीचु ।
दीनैं हूँ चसमा चखनु चहै लहै न मीचु ॥

जपमाला, छापैं, तिलक सरै न एकौ कामु ।
मन - काँचै नाचै वृथा, साँचै राँचै रामु ॥

जौ वाके तन की दसा देख्यौ चाहत आपु ।
तौ बलि नैंक विलोकियै चलि अचकाँ, चुपचापु ॥

जटित नीलमनि जगमगति सींक सुहाई नाँक ।
मनौ अली चंपक-कली बसि रसु लेतु निसाँक ॥

तजि तीरथ, हरि-राधिका-तन-दुति करि अनुरागु ।
जिहिं ब्रज-केलि-निकुंज-मग पग पग होतु प्रयागु ॥

सीस-मुकुट, कटि-काछनी, कर-मुरली, उर-माल ।
इहिं बानक मो मन सदा बसौ, बिहारी लाल ॥

कहत सबै, बेंदी दियैं आँकु दसगुनी होतु ।
तिय-लिलार बेंदी दियैं अगिनितु बढ़तु उदोतु ॥

दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति ।
परति गाँठि दुरजन हियैं, दई, नई यह रीति ॥

अधर धरत हरि कैं, परत ओठ-डीठि-पट-जोति ।
हरित बाँस की बाँसुरी इंद्र धनुष रँग होति ॥

कहा, कुसुम, कह कौमुदी, कितक आरसी जोति ।
जाकी उजराई लखैं आँखि ऊजरी होति ॥

लाज-लगाम न मानहीं, नैना मो बस नाहिं ।
ए मुँहजोर तुरंग ज्यौं, ऐंचत हूँ चलि जाहिं ॥

मिलि, चलि, चलि मिलि, मिलि चलत आँगन अथयौ भानु ।
भयौ मुहूरत भोर कौ पौरिहिं प्रथमु मिलानु ॥

कर लै, चूमि, चढ़ाइ सिर, उर लगाइ, भुज भेंटि ।
लहि पाती पिय की लखति, बाँचति, धरत समेटि ॥

पलनु प्रगटि, बरुनीनु बढ़ि नहिं कपोल ठहरात ।
अँसुवा परि छतिया, छिनकु छनछनाइ, छिपि जात ॥

भाल लाल बेंदी, ललन आखत रहे बिराजि ।
इंदुकला कुज मैं बसी मनौ राहु-भय भाजि ॥

चिंतामणि

पेख्यौ चहै पिय को बिन ओट, बनै न कछू बिन घूँघट खोलै ।
भावै न संग छुट्यौ पति कौ, सकुचै, न करै कछु काम कलोलै ।
चाहति बात कह्यौ न कह्यौ, पर जात रह्यौ न रहै अनबोलै ।
झूलत है मन प्रान पियारी कौ, लाज मनोज के बीच हिंडोलै ॥

× × ×

साँझ ते चन्द कलंक उयौ, मन मेरौ लै साथ रहे तुम न्यारे ।
बैठि बची मनि-मन्दिर बीच, लगे तब दीप प्रकास अँध्यारे ।

प्रातहि पाइ सुधामय पारनौ, नैक-चकोर छके मे सुखारे।
क्यों अनूप कला प्रगटौ, अकलंक कलानिधि मोहन प्यारे॥

× × ×

बोलत काहे न बोल सुनैं मधुरी बतियाँ मनमोहन भाखैं।
बोलै कहा, कछु चित्त मैं है दुख, पित्त बढ़ै, कटु लागतीं दाखैं।
ठाढ़े हैं लाल, बिलोकै न बाल क्यों, तेरी बिलोकनि को अभिलाखैं।
लाल भई बिन काजहि आजु ए, देखौं कहा, मेरी दूखती आँखैं॥

× × ×

जावक रंजित भाल किए, मनभावन भामती-गेह सिधारे।
दूरि तें भौंह कमान चढ़ाइ कै, सुन्दरि नैन कटाच्छ तें डारे।
आइकै बालम बाँह गहीं ढिग, चन्दमुखी झुकिकै झझकारे।
चम्पक-माल सी कोमल बाल, सु लाल चमेली की माल सों मारे॥

× × ×

जामै कछू मन सोच-सँकोच न, आछिये सो तौ कछू लरिकाई।
आवत ही इन नैनन के रस, मोहन के बस को ललचाई।
देखे बिना कल नैंक नहीं, अरु देखै तौ गोकुल गाँम चवाई।
जामैं हँसे हूँ कलंक लगै, यह कौन धौं बैस बिसासिनि आई॥

× × ×

एहो तुम हौ तौ नैक घरै क्यों न रहौ,
देखौ 'चिंतामनि' बागन में कौप लहलही हैं।
तुमको धरम ह्वै है देव-अरचन काज,
सुन्दरि चमेली की कली कछूक चही हैं।
बाग में अँध्यारौ, डरु लागत हैं जातैं उत,
तातैं हौं कहति इहाँ लोग और नहीं हैं।
कैसैं करि जाँउ फूल लैन हौं अकेली ह्याँ तौ,
आछे-आछे फूलन की बेली फूल रही हैं॥

× × ×

आपु ही पाँइन देत महावर, बेनी गुहै और बैनी डुलावै।
आपु ही बीरी बनाइ खवावै, अनेक बिलासन रीझि रिझावै।
तेरी सखी अरु आपने मित्र सों, तेरे ही प्रेम की बातैं चलावै।
तो सी त्रिलोक में को बड़भागिनि, जो तिय यों पिय को बस पावै॥

× × ×

जामिनि की पहिलौ जब जाम, बितीत भयौ पिय गेह न आयौ।
लाजन बोलि सकै न सखीन सों, बाम को काम-हियौ अकुलायौ।
यों मन बीच बिचारि करै, उन कँहू न मोहि वियोग दिखायौ।
जानति हौं न महा गति है, मेरे प्रानन कौ पति कै बिलमायौ॥

× × ×

पेखत ही प्रगटी मन को 'मनि' बैनी महा विष नागिनि गाई।
ताप चढ़ाइ गयो निरखे सुरभी तरुनी मुख चंद टगाई।
नील सरोरुह मैन के बानन नैननि मारि कै पीर जगाई।
आगि अँगार के रंगन-अंगनि कैसी अनंग की आगि लगाई॥

× × ×

चिंतामनि स्याम जू के सुन्दर बदन पर,
हम हैं बिकानी कौन यामै छल छंदु है।
कहौ कुलकानि जाति कौन पै निबाही जोई,
देखतु है याही ताहि लाग्यो प्रेम फंदु है।
मधुर कपोलनि मधुर मुसक्यानि माई,
मधुर बिलोकनि मधुर मुख चंदु है।
जैसे सब कलनि अमृतमय चंद ऐसे,
निपट अनंदमय नंद जू को नंदु है॥

× × ×

बैन सुधा तुही सींचै बिलासिनि मो मन मोद लतानि की क्यारी।
मोहि कहा कल होत कहूँ 'मनि' जो पल एक रहै जब न्यारी।
मेरियै नैन चकोर छके मृग लोचनी तो मुख चंद उज्यारी।
जो कछु जानौ सुजाइ कहौ तुम मेरी हौ प्रानन ते अति प्यारी॥

× × ×

मन मान कियो वृषभान लली, अनतै अवलोकत लालन हैं।
उत आइ जुरी सखियाँ सिगरी पिय आयो सखी एक बीज कहे।
दृग मूँदि रही चितए जुपै मान लला हसि ते दृग मूदि रहे।
मुसकाइ कै राधिका आनंद सौ भुज माल सौ लाल लपेटि गहे॥

× × ×

स्वामि दरसन चंद सिंधु ते निकारी बुन्द,
मीन हम तपत महीतल में डारी हैं।
पल पल बीतत कलप कोटि हरि बिनु,
हहरि हहरि हाइ हाइ करि हारी हैं।

चिंतामनि विहँसि विलोकि चितचोर की वै,
चलनि चितौनि बिसरत न बिसारी हैं।
सदाई अनंद अरविन्द नैन इन्दु मुख,
कन ही गोविन्द सुधि करत हमारी है॥

× × ×

वेसरि बारहिं बार उतारत, केसरि अंग लगावन लागी।
आई हैं नैननि चंचलता, दृग अंचल वाम छिपावन लागी।
दूलह के अवलोकन को, वा अटानि झरोखन आवन लागी।
द्यौस द्वै तीनक ते बतियाँ मन-भावन की मन भावन लागी॥

× × ×

वैस की उठौन ठौन रूप की अनूप, कान्ह,
अंग अंग और कछु और उलहति है।
चिंतामनि चंचला विलास को रसाल नैन,
मदन के मद और आभा उमहति है।
कुंदन की वेली सी नवेली अलवेली बाल,
केतिक गरब की सों गौरता गहति है।
उझकि झरोखे।तुम्हें चाहिवे कौ चंदमुखी,
द्यौसहू में चंद्रिका पसारति रहति है॥

× × ×

अवलोकनि मैं पलकैं न लगैं,
पलकौ अवलोकि बिना ललकै।
पति के परिपूरन प्रेम पगी,
मन और सुभाव लगै न लकै।
तिय की विहसौं ही विलोकनि में,
मनि आनँद आँखिन यों झलकै।
रसवंत कवित्तन कौ रस ज्यों,
अखरान के ऊपर ह्वै छलकै॥

× × ×

तुही धन तुही प्रान तोही में हरी को मन,
तेरे ही रिझाइवे की रीति में प्रवीन हैं।
चिंतामनि चिंता नित उन्हें लगी तेरी रहै,
तेरे ही विरह खिन खिन होत खीन हैं।

ठीक जु न कीजै ठकुरायनि इतेक हठ,
छोड़ि दीजै, तेरे वृज टाकुर अधीन हैं।
तू है पी के नैन अरविंदन की इंदिरा, औ
पी के नैन तेरे तन पानिप के मीन हैं॥

× × ×

कहाँ जागे रैन आए निपट उनींदे हो जू,
सोइ रहौ प्यारे बिछ्यौ आछो परजंक है।
खेलत हे चाँदनी में ग्वालन के संग कहूँ,
काहू ग्वाल ही को नाम लीजै कहा संक है।
यों ही भले मानसै लगावती कलंक है, वो
देख्यो कहूँ चिंतामनि रति हू को अंक है।
पीत रंग अम्बर सो भयो नील रंग, लाल,
झूठी हो गोपाल तुम्हें काहे को कलंक है॥

× × ×

सरद ससी तैं अधससी ह्वै बची हौं, कवि
चितामनि तिमि हिमि सिसिर झमक तैं।
मारत मरूकै बर्चा बधिक बसंत हू तैं,
पावक प्रचार बची, ग्रीषम तमक तैं।
आयो पापी पावस ये प्रात अकुलान लाग्यौ,
भयौ री असान घोर घन के घमक तैं।
ताप तैं तचौंगी, जो पै अमिय अँचौंगी आली!
अब न बचौंगी चपलान की चमक तैं॥

× × ×

चिंतामणि, कच, कुच भार लंक लचकति,
सोहै तन तनक बनक छवि खान की।
चपल बिलास मद आलस बलित नैन,
ललित बिलोकनि लसनि मृदु बान की।
नाक मुकुताहल अधर रंग संग लीन्ही,
रुचि संध्या राग नखतन के प्रभान की।
वदन कमल पर अलि ज्यौं, अलक लोल,
अमल कपोलनि झलक मुसक्यान की॥

× × ×

इक आजु मैं कुंदन बेलि लखी मनि मंदिर की रुचि वृन्द भरै।
कुरबिन्दु को पल्लव इंदु तहाँ अरविंदन ते मकरंद झरै।
उत बुंदन के मुकुता गन ह्वै फल सुन्दर द्वै पर आनि धरै।
लखि यों दुति कंद अनन्द कला नँदनंद सिला द्रव रूप धरै॥

× × ×

राति रहे 'मनि' लाल कहूँ रमि ह्याँ दुख बाल वियोग लहे हैं।
आये घरै अरुनोदय होत मरोष तिया इमि बैन कहे हैं।
लाल भये दृग कोरन आनि कै यो अँसुवा नव बूँद रहे हैं।
चोंचन चापि मनों सिथिलै विवि खंजन दाड़िम बीज गहे हैं॥

× × ×

हंसन के छौना स्वच्छ सोहत बिछौना बीच,
होत गति मोतिन की जोति जोन्ह जामिनी।
सत्य कैसी ताग सीता पूरन सुहाग भरी,
चली जयमाल लै मराल मंद गामिनी।
जोई उरबसी सोई मूरति प्रतच्छ लसी,
चिंतामनि देखि हँसी संकर की भामिनी।
मानो सर्द चन्द, चन्द मध्य अरविन्द,
अरविन्द मध्य विद्रुम विदारि कढ़ी दामिनी॥

मतिराम

कुंदन कौ रंगु फीको लगै, झलकै अति अंगन चारु गुराई।
आँखिन मैं अलसानि चितौन में मंजु विलासन की सरसाई।
को बिन मोल बिकात नहीं, मतिराम लहै मुसकानि मिठाई।
ज्यों ज्यों निहारिए नेरे ह्वै नैननि, त्यों त्यों खरी निकरै सी निकाई॥

× × ×

कोऊ नहीं बरजै मतिराम रहो तितही जितही मन भायो।
काहे कौं सौहैं हजार करौ, तुम तौ कबहूँ अपराध न ठायो।
सोवन दीजै, न दीजै हमें दुख, यों ही कहा रसवाद बढ़ायो।
मान रहोई नहीं मनमोहन मानिनी होय सो मानैं मनायो॥

× × ×

क्यों इन आँखिन सों निरसंक ह्वै मोहन को तन-पानिप पीजै।
नेकु निहारें कलंक लगै इहि गाँव वसे कहौ कैसे के जीजै।

होत रहै मन यों मतिराम, कहूँ बन जाय बड़ो तप कीजै।
ह्वै बनमाल हिए लगिए अरु ह्वै मुरली अधरारस लीजै॥

× × ×

आई है निपट साँझ गैयाँ गई घर-माँझ,
हाँ सो दौरि आई मेरो कहो कान्ह कीजिए।
हौं तो हौं अकेली और दूसरो न देखियत,
बन की अँधेरी मैं अधिक भय भीजिए।
कवि मतिराम मनमोहन सौं पुनि-पुनि,
राधिका कहत बात साँची यै पतीजिए।
कब की हौं हेरति न हेरे हरि पावति हौं,
बछुरा हिरानो सो हिराय नैक दीजिए॥

× × ×

बैठी तिया गुरु लोगन मैं, रति तैं अति सुन्दर रूप बिसेखी।
आयो तहाँ मतिराम सुजान, मनोभव सौं बढ़ि कांति उरेखी।
लोचन रूप पियो ही चहैं अरु लाजनि जात नहीं छवि पेखी।
नैन नमाय रही हिय-माल मैं, लाल की मूरति लाल मैं देखी॥

× × ×

आई हौं पायँ दिवाय महावर, कुंजन तैं करिकैं सुख-सैनी।
साँवरे आजु सँवार्‌यो है अंजन, नैनन की लखि लाजति ऐनी।
बात के बूझत ही मतिराम कहा करिए भट्टू भौंह तनैनी।
मूँदी न राखत प्रीति भट्टू, यह गूँदी गुपाल के हाथ की बैनी॥

× × ×

सकल सिंगार साज संग लै सहेलिन कौं,
सुन्दरि मिलन चली आनन्द के कंद कौं।
कवि मतिराम मग करति मनोरथनि,
पेख्यो परजंक पै न प्यारे नंदनंद कौं।
नेह ते लगी है देह दाहन दहत गेह,
बाग को बिलोकि द्रुम बेलिन के वृन्द कौं।
चंद को हँसत तब आयो मुखचंद अब,
चंद लाग्यो हँसन तिया के मुखचंद कौं॥

× × ×

जमुना के तीर बहै सीतल समीर तहाँ,
मधुकर करत मधुर मंद सोर हैं।

कवि मतिराम तहाँ छवि सौं छबीली बैठी,
अंगन ते फैलत सुगन्ध के झकोर हैं।
पीतम विहारी की निहारिबे को बाट ऐसी,
चहूँ ओर दीरघ दृगन करी दौर हैं।
एक ओर मीन मनो, एक ओर कंज-पुंज,
एक ओर खंजन, चकोर एक ओर हैं॥

× × ×

प्रानपियारो मिल्यो सपने मैं, परी जब नैंसुक नींद निहोरैं।
कंत को आगम त्यों ही जगाय, कह्यो सखी बोल पियूष निचोरैं।
यौं मतिराम भयो हिय मैं सुख बाल के बालम सौं दृग जोरैं।
जैसे मिहीं पट मैं चटकीलो चढ़ै रंग तीसरी बार के बोरैं॥

× × ×

नागर बिदेस में बिताय बहु द्यौस आयो,
नागरी के हिय मैं हुलासन की खान की।
कवि 'मतिराम' अंक भरत मयंक-मुखी,
नेह सरसाय मोही मति सुखदान की।
सुबरन बोलि कैं बतावति है सुबरन,
हीरन जतावति है छवि मुसकान की।
आँखिन तैं आनन्द के आँसू उमगाय प्यारी,
प्यारे को दिखावति सुरति मुकतान की॥

× × ×

गुच्छनि के अवतंस लसैं सिर, पच्छन अच्छ किरीट बनायो।
पल्लव लाल समेत छरी कर-पल्लव सौं मतिराम सुहायो।
गुंजनि के उर मंजुल हार, सुकुंजनि तैं कढ़ि बाहर आयो।
आज कौ रूप लखैं नंदलाल कौ, आजुहि नैननि को फल पायो॥

× × ×

सुन्दरि सरस सब अंगन सिंगार साजे,
सहज सुभाव निसि नेह कछु कै गई।
कीने 'मतिराम' बिहसौहैं से कपोल गोल,
बोलन अमोल इतनोई दुख दै गई।
मेरे ललचौहैं मुख फेरि के लजौहैं, लल-चौहैं
चारु चखनि चितै कै सो चली गई।

निपट निकट व्है कैं कपट छुवाय अंग,
लाय की सी लपट लपेटि मनु लै गई ॥

× × ×

दूसरे की बात सुनि परत न ऐसी जहाँ,
कोकिल कपोतन की धुनि सरसाति है।
छाई रहे जहाँ द्रुम वेलिन सौं मिलि,
'मतिराम' अलि-कुलन अँध्यारी अधिकाति है।
नखत से फूलि रहे फूलन के पुंज घन-
कुंजन मैं होति जहाँ दिन ही मैं राति है।
ता वन की बाट कोऊ संग न सहेली साथ,
कैसे तू अकेली दधि बेचन को जाति है॥

× × ×

गौने के द्यौस सिंगारन को 'मतिराम' सहेलिन को गनु आयौ।
कंचन के बिछुवा पहिरावत प्यारी सखी परिहास बढ़ायौ।
पीतम स्रौन समीप सदा बजै यौं कहि के पहिले पहिरायौ।
कामिनि कौल चलावनि कों कर ऊँचो कियौ, पै चल्यौ न चलायौ॥

× × ×

जा दिन तैं देखे 'मतिराम' तुम ता दिन तैं,
बढ़ी रहै मुसकानि वाके जियराई पर।
भावत न भोजन, बनावत न आभरन,
हेतु न करत सुधानिधि सियराई पर।
चलो उठि देखौ बड़े भाग हैं तिहारे अब,
राखो धरि राधिकै कन्हाई हियराई पर।
दूनी दुति छाई देह आई दुवराई पिय,
राई लौनु वारिए तिया की पियराई पर॥

× × ×

जा दिन तैं छवि सौं मुसक्यात कहूँ निरखे नंदलाल बिलासी।
ता दिन तैं मन ही मन मैं 'मतिराम' पियैं मुसक्यानि सुधा सी।
नेकु निमेष न लागत नैन, चकी चितवै तिय देव-तिया सी।
चंदमुखी न हलै न चलै निरवात निवास मैं दीप सिखा सी॥

× × ×

मानहु आयो है राज कछू, चढ़ि बैठेहो ऐसे पलास के खोढ़े।
गूँज गरे, सिर मोर पखा 'मतिराम' हों गाय चरावत चोढ़े।

मोतिन को मेरो तोर्‌यौ हरा, गहि हाथन सौं रहे चूनरी पोढ़े।
ऐसें ही डोलत छैल भए, तुम्हें लाज न आवत कामरी ओढ़े॥

× × ×

सकल सहेलिन के पीछे पीछे डोलति है,
मंद-मंद गौनु आजु हिय को हरत है।
सनमुख होत, 'मतिराम' सुख होत, जवै
पौन लागै घूँघट को पट उघरत है।
कालिंदी के तट बंसीवट के निकट,
नंदलाल कौ सँकोचन तैं चाह्यो न परत है।
तनु तो तिया को वर भाँवरैं भरत,
मनु, सामरे वदन पर भाँवरैं भरत है॥

× × ×

दोऊ अनन्द सौं आँगन माँझ विराजैं असाढ़ की साँझ सुहाई।
प्यारी कौं बूझत और तिया को अचानक नांउँ लियो रसिकाई।
आयो उने मुँहु मैं हँसी, कोपि, प्रिया सुर-चाप सी भौंह चढ़ाई।
आँखिन तैं गिरे आँसू के बूँद, सुहाँसु गयो उड़ि हंस की नाँई॥

× × ×

धुरवानि की धावनि मानो अनंग की तुंग धुजा फहरान लगी।
नभमंडल व्है छितिमंडल छवै छनदा की छटा छहरान लगी।
'मतिराम' समीर लगे लतिका, विरही वनिता थहरान लगी।
परदेस मैं पीव संदेस न पायौ, पयोद-घटा घहरान लगी॥

× × ×

मोर-पखा 'मतिराम' किरीट, मनोहर मूरति सौं मनु लैगो।
कुंडल डोलनि, गोल कपोलनि, बोल सनेह के बीज-से वैगो।
लाल विलोचनि-कौलनि सौं मुसकाइ इतैं अरुझाइ चितैगो।
एक घरी घन से तन सौं अँखियान घनो घनसार सो दैगो॥

× × ×

मोर-पखा 'मतिराम' किरीट मैं कंठ बनी बनमाल सुहाई।
मोहन की मुसकानि मनोहर, कुंडल डोलनि मैं छवि छाई।
लोचन लोल विसाल विलोकनि को न बिलोकि भयो बस माई।
वा मुख की मधुराई कहा कहौं? मीठी लगै अँखियान लुनाई॥

× × ×

जा छिन तें 'मतिराम' कहै मुसकात कहूँ निरख्यौ नंदलालहि।
ता छिन तें छिन-ही-छिन छीन विथा बहु बाढ़ी वियोग की बालहि।
पोछति है कर सों किसलै गहि बूझति स्याम सरीर गुपालहि।
भोरी भई है मयंकमुखी, भुज भेटति है भरि अंक तमालहि॥

× × ×

सुन्दरिवदनि राधे सोभा को सदन तेरो,
वदन बनायो चारिवदन बनाय कै।
ताकी रुचि लैन कों उदित भयो रैनपति,
मूढ़मति राख्यो निज कर बगराय कै।
'मतिराम' कहै निसिचर चोर जानि याहि,
दीनी है सजाइ कमलासन रिसाय कै।
रातौं दिन फेरै अमरालय के आस-पास,
मुख मैं कलंक मिसि कारिख लगाय कै॥

× × ×

सजल जलद जिमि झलकत मदजल,
छिति-तल हलत चलत मंद गति मैं।
कहै 'मतिराम' बल विक्रम विहद सुनि,
गरजनि परै दिगवारन विपति मैं।
सत्ता के सपूत भाऊ तेरे दिए हलकनि,
बरनी ऊँचाई कविराजन की मति मैं।
मधुकरकुल करनीनि के कपोलनि तें,
उड़ि-उड़ि पियत अमिय उड़पति मैं॥

× × ×

निसि दिन स्रौननि पियूष सों पियत रहैं,
छाय रह्यो नाद बाँसुरी के सुरग्राम को।
तरनि-तनूजा-तीर वन कुंज बीथिन मैं,
जहाँ - तहाँ देखति हैं रूप छबि धाम को।
कवि मतिराम होत हाँतो न हिए ते नैक,
सुख प्रेम गात को परस अभिराम को।
ऊधो तुम कहत वियोग तजि जोग करौ,
जोग तब करैं, जो वियोग होय स्याम को॥

× × ×

ग्रीष्म हूँ रितु मैं भरी दुहूँ कूल पैराउ ।
खारे जल की बहति है नदी तिहारे गाँउ ।।

पानिप पूर पयोधि में रूप जाल बगराइ ।
नैन मीन ए नागरनि बरबट बाँधत आइ ।।

दिपै देह दीपति, गयौ दीप बयारि बुझाइ ।
अंचल ओट किए तऊ चली नवेली जाइ ।।

होत दसगुनो अंकु है दिएँ एक ज्यों बिंदु ।
दिएँ दिठौना यों बढ़ी आनन आभा इंदु ।।

सुधा मधुर तेरो अधर, सुन्दर सुमन सुगंध ।
पीव जीव कौ बंध यह बंधजीव को बंध ।।

बार बार वा गेह सों बारि बारि लै जाति ।
काहे तें बिन बात ही बाती आजु बुझाति ।।

नैन जोरि मुख मोरि हँसि नैंसुक नेह जनाइ ।
आगि लैन आई, हिये मेरे गई लगाइ ।।

पिय-आगम सुनि बाल तन बाढ़े हरख बिलास ।
प्रथम बूँद बारिद उठै ज्यौं बसुमती सुबास ।।

नर नारी सब जपत हैं घर-घर हरि को नाउँ ।
मेरे मुख धोखें कढ़त, परत गाज ब्रज गाउँ ।।

भौंह बीच तिल तनक से सोहत सुखमा संचि ।
दियौ डिठौना रीझि सों, मानहुँ बिरचि बिरंचि ।।

बासन को पानिप घट्यो तन पानिप की आस ।
मिटी पथिक की वदन तें, लगी दृगनि मैं प्यास ।।

नंदलाल के रूप पर रीझि परी एक बारि ।
अधमूँदी अँखियनि दई मूँदी प्रीति उघारि ।।

बिन देखे दुख के चलें, देखें सुख के जाहि ।
कहो लाल उन दृगनि के अँसुवा क्यों ठहराहि ।।

राधिक के दृग खेल में मूँदे नंदकुमार ।
करनि लगी दृग-कोर सो भई छेदि उर पार ।।

सेत बसन में यों लगै उघरत गोरे गात ।
उड़ै आगि ऊपर लगी ज्यों बिभूति अवदात ।।

पिय मिलाप के हेत तिय सजे उछाह सिंगार ।
दृग कमलनि के द्वार में बाँधे बंदनवार ।।

भुज भुजगेस की है संगिनी भुजंगिनी सी,
छेदि छेदि खाती दीह दारुन दलन के।
बखतर पाखरिन बीच धसि जाति मीन,
पैरि पार जात परवाह ज्यों जलन के।
रैया राय चंपति को छत्रसाल महाराज,
भूषन सकत को बखानियों बलन के।
पच्छी पर छीने ऐसे परे पर छीने बीर,
तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।।

× × ×

सुनै हूँ बेसुध, सुने बिन रह्यो न जाय,
याही ते बिकल सी बितातो दिनराती हैं।
भूषन सुकवि देखि बावरी बिचार काज,
भूलिवे के मिस सास नंद अनखाती हैं।
सोई गति जानै जाके भिदी होय कानै स,
जेती कटै तानै तेती छेदि छेदि जाती हैं।
हूक पाँसुरी में, क्यों भरौं न आँसु री मैं, थोरे छेद
बासुरी में, घने छेद किये छाती हैं।।

× × ×

कारो जल जमुना को काल सो लगत आली,
छाइ रह्यो मानों यह बिष काली नाग को।
बैरिन भई है कारी कोयल निगोड़ी यह,
तैसो ही भँवर कारो बासी बन बाग को।
भूषन भनत कारे कान्ह को बियोग हिये,
सबै दुखदायी जो करैया अनुराग को।
कारो घन घेरि घेरि मारयो अब चाहत है,
एते पर करति भरोसो कारे काग को।।

कंद मूल.

अशरफ़

भूषन सिथिल
दि सँवार। जानो मोतिया केरा हार।
भूनत भनत सिवो धड़। मानिक मोती हीरे जड़।
नगन मोल। सीन तराजू सेंती तोल।
नार। सच्चा हुआ नौ लिरहार।

× × ×

बाचा कीन्हा हिन्दवी में। किस्सा मक़तल शाह हुसेन।
नज़म लिखी सब मौजूं आन। यो मैं हिन्दवी कर आसान।
यक यक बोल यह मौजूं आन। तकरीर हिन्दवी सब बखान।

फ़ीरोज़

बराहीम मखदूम जी जीवना। कि मैं सिर्फ़ वहदत सदा पीवना।
मेरा पीर मखदूम जी जगमने। मँगुँ न्यामतों मैं सदा उसकने।
करें मुझ पर प्यार ये पीव जग। कि तुझ प्यार से होय मंधीर जग।
पिया जीव ते तो हमन बास है। तु हम जीव के फूल का बास है।
वही फूल जिस फूल की बास तू। वही जीव जिस जीव की आस तू।

बुरहानुद्दीन जानम्

अल्ला सिमरूँ पहले आज। कीना जिन यह धौं जग काज।
जगतर को तूँ करतार। समूं केरा सिरजन हार।
अस्तुत ओरुँ करने चख। फ़ुर्सत पाऊँ बोलने मुख।
क़ुदरत तू तुज अंत न पार। अगनित कीना हो परकार।

× × ×

तूँ ने देख्या आपस आप। जे घड़्या यह तुज काज।
आरे तूं इस सफा में नूर। कि जैसा आकाश में सूर।
अरे तू अपसे आपस देख। जहूर कूँ करता लेखा लेख।
व खाली दिसता ठाँव। वह कइया अपना नाँव।
यो गफलत मेरी टूटी। जे नजर ऐसी फूटी।
यह सदके मुर्शिद छूटा। यह घोर अंधारा फूटा।
जैसा खाली फूल। या देखे जैसा डोल।

शाह-अली

आज प्रेम तो तुझ सूँ खेलूँ। जो ये बाचा देवे।
जे तूँ जीते मुँज कूँ लीजे। होर धन जीते तूँ लेवे।
एक सो बात प्रेम की भारी। दूजा तुज सूँ खेल चढ़ाई।
तिस पर तैं मतवाजी केती। भर भर प्याली प्रेम पिलाई।

× × ×

जिसें तिरे दो, नयन आते...सो तो नहीं नाथी।
तुझ बिन कुछ भी ना जीऊँ, क्या करूँ संघाती।
ये यारी होर दोस्ती मेरी।
ये सब यारी दोस्ती तेरी।
हम क्या कीजे बात घनेरी।

× × ×

अभरन मेरा सही सो पिव है। पिव का जिव सो मेरा जिव है।
हार हमेलाँ मुँज शहवाहाँ। मोती हार सो तुम गल माँहा।
मुझ शह अन्तर कछू न भावे। प्यारो चोला चीर उतरावे।
एक मेक जो राख्या लौ है। सो बुज अभरन क्यों कुछ छोड़े।

वजही

अपे फूल अपे फल बन अहै। अपे चाँद अपे सूर अपे घन अहै।
गरज एक आप च सबे ठार है। उसी नूर का सब में झलकार है।
खुदाया बड़ा तूँ बड़ाई है तुज। हमन सब बंदे है खुदाई है तुज।
जो जग मे सदा काल जीता अछूँ। मुहब्बत केरी मैं कूँ पीता अछूँ।

× × ×

मुहम्मद नबी नाँव तेरा अहै। अरश के उपर छाँव तेरा अहै।
कि चौदह मुलक का तू सुल्तान है। अली सा तेरे घर में परधान है।
असी होर एक लाख पैगम्बर आय। वले मर्तबा कोई तेरा न पाय।
शफाअत करनहार सबका तुही। अपे लाडला एक रबका तुही।
मुहम्मद कूँ जिस रात मेराज होइ। न था दूसरा वाँ अलीबाज कोइ।
इनो तीनों कूँ बात या फ़ाम है। समजता वो चौथे का नै काम है।

× × ×

दखिन सा नही ठार संसार में। निपज फ़ाज़िलाँ का है इस ठार में।
दखिन है नगीना अँगूठी है जग। अँगूठी कूँ हुर्मत नगीना ही लग।
दखिन मुल्क कूँ धन अजब साज़ है। कि सब मुल्क सिर होर दखिन ताज है।
दखिन मुल्क मौते च खासा अहै। तिलंगाना उसका खुलासा अहै।

मुहम्मद कुल्ली

चंद सूर तेरे नूर ते निसदिन कूँ नूरानी किया।
तेरी सिफत किन कर सके तू आपि मेरा है जिया।

तुँज नाम मुँज आराम है मुँज जीव सो तुज नाम है।
सब जग कूँ तुझसौँ काम है, तुज नाम जप माला हुआ।
तुज याद में जग मोहिया, है जग उपर तेरा मया।
जो जग मँगे सो तूँ दिया, तू ही जगत का है दिया।
जीता हूँ तेरे आस ते, आया है रहम अकास ते।
जे कुच मँगूँ तुज पास ते, सो है सो मुज कूँ तूँ दिया।
भौतिक मया सेती अपन, दीता कुतुब कूँ सब दखिन।
सेऊँ नबी का नित चरन जब लग है तन म्याने जिया।

× × ×

बसंत आया सकी, जो लाल गाला। कुसुम चोला.....!
पपीहा गावता है मीठे बैना, मधुर रस दे अधर रसका पियाला।
पियारी होर पिया हत में सो हतले, सरोवन में न्हिजी गल फूलमाला।
कँठी कोयल सरस नाँदा सुनावे, तनन तन तन तनन तनतन तला ला।
गरज बादल ते दादुर गीत गावे, कोयल कूके सो फुलबन के खियाला।
सदा सेवा करे ऐसी गुसाईं, दलिद्दर दूर कर करता निहाला।
नबी सदके हुआ कुतबा तेरा जीत, दुँधाँ सीने में सलता दुःख भाला।

× × ×

सकी आज प्याला अनंद का पिला मुँज।
व याकूत अधरों की मस्ती दिला मुँज।
महल दिसते हैं नूर के अति सफ़ा सों।
सकील्या सजन कूँ मना कर बुला मुँज।
गगन से तबक मोतियों सो भरे हों।
पिया आरती ताईं पिउकूँ हिला मुँज।
तेरे नेह बिन जीवना मुँज न भावै।
मसीहा नमन आप - दम सों जिला मुँज।
अधर बिन तेरे मुँज न भावे अक़ीकाँ।
बदन तेरे बिन ने हैं नीका तिला मुँज।
तेरे हुस्न बिन होर मुँज नैन में कद।
न आवे किहै इस सेतों इत्तिला मुँज।
नबी सदके कुत्बा अलीमेह सेतो।
बँधा दिल कहो ने उनन बिन बलाँ मुँज।

× × ×

सकीं तुज अधर ते पिला मुँज नवेज़।
चुमन के नकल सो पिला मुज नवेज़।

जिया कूँ दिया है सफा नेह - शराब।
दिया दिल कूँ कौसर जला मुँज नवेज़।
मेरे नैन जों सूर पुर नूर कर।
दिला कूँ दिला कर खिला नवेज़।
तेरे नैन ते मुँज चड्या है असर।
दिया तुज तिला की कला मुज नवेज़।
जो वन की सुराही कुतुब हत में दे।
बशारत दिया कुल्कुला मुँज नवेज़।

अब्दुल

करूँ इबतेदा शह बरा हीन नाम। कि जिस सिफ़्त आल्या फिर्या है तमाम।
सुरग मिर्त पाताल हर एक धरा। रखा रूप सरवर हो आलम भरा।
इलाही ज़बाँ गंज तूँ बोल मुझ। अमोलक वहाँ कर जे बोल मुझ।
कहूँ बिस्म अव्वल तो अल्लाह लाय। गले मुख खुले जीव पकड़े सो लाय।

अमीन

सहेल्याँ जो थ्याँ तीन उनके सँगात। उनांने निकाले यह उस वक्त बात।
सुना शहर फ़ारस का है बादशाह। है खूबी मने खूब ज्यों मेहो माह।
कते है बहुत खूबसूरत है वो। फिरंग चीन की खबसूरत है ओ।
अगर्चे वही आदमी जाद है। चँदा उसके आगे सो बी मात है।
ले आया उसे देव आशिक होर। रखा है लिया कर अपस ठार पर।

ग़ौवासी

गवासीं अगर तू है सचला ग़वास। लगा इश्क अपने खुदा साथ खास।
चलेगा केता नफ़स के कय मने। केता होयगा नाव के पय मने।
जे कुच ख्वास्त तेरा है सब उसपे छोड़। दुन्या के इलाके ते तूँ दिल कूँ तोड़।

× × ×

इलाही जगत का इलाही सो तूँ। करनहार जम बादशाही सो तूँ।
तेरे हुक्म तल नौगढ़ असमान के। रईयत मलिक तेरे फरमान के।

भरया जित गर्द बीच तारे हशम। करे नौबतों सो उलॅग दमबदम।
जहाँ लग जो बादल के हैं गड़गड़ाट। तेरी फ़तेह दौलत दमामे के टाट।
इतो तेरे दरबार के पहाड़ सब। छड़ीदार तुझ दार के झाड़ सब।
तेरी बादशाहत कूँ कुछ अन्त नै। तेरे मुल्क में गेरकूँ निस नै।
गबासी जो तुझ दार का खाक है। तेरी बाट का महज़ खाशाक है।
दिखा की मया कर तूँ मुझ खाक कूँ। दे रंगवास मुझ दिल फलफ़ाक कूँ।

× × ×

इलाही जो साहेब है संसार का। जो देता है मंग्या मॅगनहार का।
जो बेटा दिया शाह कूँ बदेदल। चॅदर-सूर ते खूब निर्मल-निछल।
खुश्यों साथ अमृत घड़ी फ़ाल देक। सो सैफ़ुल्मलूक कर रख्या नाँव नेक।
जो था सालेह उस शाह केरा वज़ीर। खुदा उसके हक़ पर हुआ दस्तगीर।
उसी रात उसे एक बेटा दिया। दिवा उसके घर का सो रोशन किया।

मीराँ हुसैनो

जिव का बी ओ जिवाला, रूपों में रूप आला।
सब के ऊपर है बाला, नित हँसत रह तुँ मीराँ।
अकुलाय रूप सब सूँ, ओ रूप देक जब तूँ।
वे रूप के तूँ तब सूँ, नित हँसत रह तुँ मीराँ।
बच्चा बगल में होकर, ढुँढते नगर मे रोकर।
सारी उमर यों खोकर, नित हँसत रह तुँ मीराँ।
कोई नाक के ऊपर ज्यों, नित बादते नजर क्यों।
दिसतें ही जोत कर यों, नित हँस रह तुँ मीराँ।
उस नूर कूँ फना है, सूरत जिसमे बना है।
नूर ऐन कूँ मना है, नित हंसत रह तुँ मीराँ।
सो नूर खास होर, रंग रूप कुछ न आया।
सूरत - सकल न माया, नित हंसत रह तुँ मीराँ।
ओ नूर खास आला, सब सूँ ऊपर है बाला।
काला न लाल-पीला, नित हँसत रह तुँ मीराँ॥

अफ़ज़ल

सखी री चैत रुत आई सोहाई। अजहुँ उमेद मेरी बर न आई।
बआलम फूल्या फुवारियों सब। करे सैरां पिया संग नारियों सब।

रहे है भँवर फूलों के गले लाग। मेरे सीना जुदाई की लगी आग।
निहायत दर्द दुख हमने सहे री। ग़मे हिजराँ मुझे हरदम रहे री।
सखी दिन-रैन मुज नागन डसत है। फिरूँ दूरी तमामी जग हँसत है।
मेरे गलमों पड़ी है प्रेम फाँसी। भया मरना मुझे और लोग हाँसी।
अरे यह इश्क सों डरती फिरूँ री। नसीहत अपने से आपे करूँ री।
कि पंजी सों लगन हर्गिज न कीजे। अरी दिल दे हज़ारों ग़म न लीजे।

मुक़ीमी

दुन्या तो फ़ना है मुक़ीमी सभी। रहेगी वचन की निशानी यही।
मुक़ीमी पिरित बीच अंपड्या हूँ मैं। पिरिति के कमँद बीच सँपड्या मैं।
मुक़ीमी वचन का तरंग साज तूँ। हविस का चल्या है तुँ महियार कूँ।

× × ×

कया जा उसे "ए दिवाने बशर। कहाँ सूँ तु आया चल्या है किधर।"
उने जाव फिरकर दिया शाह कूँ। "तूँ चेत चल पकड़ आपनी बात कूँ।
तुँ आशिक हुआ है सो किस हूर का। हुआ मुब्तला कह तूँ किस नूर का।
तेरा मन लग्या है सो कह तू मुझे। जो माशूक तेरा मिलाऊ तुजे।"

क़ुतुबी

साथी हो तुझ, भाई चले खिदमत करे शामो-सेहर।
ना ल्याय दुख का आज, उनके गम दुख में ले जाय सब।
ऐसे न होसे ना रचे देना तिलाक उस जूद तर।
जो तू नारी करे घूँढ चार चीज अपने से कम।
सिन जात कद तुजते तले चौथा सो क्या धन-मालोज़र।
करता च नारी तू अगर हर्गिज न ऐसे बग़ैर।
कर ख़ौफ़ हँस मत बोल रे दीदार ऐसे जो खर॥

अबदुल्ला क़ुतुब

बोल दिलकुशा इश्रत-महल मत्बूअ औ तारा हुआ।
जाती ज़मीं की पीठसों ज्यों मुश्तरी भारा हुआ।

हर ताक यों खुश तरह का दिसता दरीया फर्द का ।
आजिज़ हो इसकी शरह का है वान से न्यारा हुआ ।
अंखियाँ सों चन्दन सूर के देख असमाना दूर के ।
आशिक है इसके नूर के क्या खूब दो ठारा हुआ ।
देवे सफ़ा दीदार सों लख नक्श ठारे ठार सो ।
खुश मान यों अचार सों फ़िरदौस का हारा हुआ ।
नाज़ुक अचम्भा वेवदल लिक्खे भरया ऐसा महल ।
बाँध्या न कोई आखिर अवल जमशीद या दारा हुआ ।
ज्यों फूल ताज़ा बनमने ज्यों पूतली पूजन मने ।
त्यों आज इस दखिन मने यो महल उतम सारा हुआ ।
सदक़े नवी के पा अमाँ इस महल म्याने हर ज़माँ ।
जम अब्दुला शाह तुर्कमाँ भोगी गमनहारा हुआ ।

सनअती

हरयक नूर में हूर पर तानाज़न । हर एक चाँद से साफ़ निर्मल वदन ।
दिसे शोले में नूरस्यां ओ परयाँ.........
ओ नारयाँ अगर नूर में नार थ्याँ । वलेकिन वराहिम का गुल्जार थ्याँ ।
अधर पौ दौर हरेक वरग गुल धरे । वले काँ है गुलवर्ग शक्कर भरे ।
दसन मस्त उनके हरे जाये पात । बले का है हरयाँ में यों आवताव ।
दिसे ज़ुल्फ़ उनकी हरेक गाल पर । तूँ वोले कि संबूल है गुललाल पर ॥

× × ×

अयाँ वाँ अजब सब्ज़ यक मुर्गजार । दरख्ताँ थे कै भाँत के वारदार ।
दिसे सब्ज़ रंग आसमासा ज़मीन । सितारयाँ से उसमें गुले यास्मीन ।
हर एक कालवाँ जो कि जल सीम का.......
दिसे जलथों वारेत इस धात मौज । कि चंचल की जो चखमे गमज्या की फ़ौज ।
दिसे पेच सँबुल के लाले में यों । अरूसां के रुखसार पर ज़ुल्फ जो ।
हरेक पात पर बूँद बरसात के । हरेक शाख पर मुर्ग कै भाँत के ।
वचन आये हर मुर्ग के सीनेत साफ़ । सफ़ाई में फकनूस पर उनके लाफ़ ॥

खुशनूद

अजब वेमेह्र दुनिया वेवफ़ा है । मोहब्बत ऐन इसका सब जफ़ा है ।
जेते हैं दोस्तां फर्ज़ंद साती । सकल है गोर लग ओ सब संगाती ।

निझल नेकी के घर का डाल बुनियाद। तेरे बाद अज़ करे सब खल्क तुज याद।
न कर ऐसा बदी जो सिर धुनाए। मुए पीछे तेरा कोइ गम न खाए।
मिले हैं बाप भाई सब मिरासी। वले कोई गोर में हर्गिज न आसी।
कहाँ दारा सिकन्दर शाह ग्यानी। कहाँ जमशीद जम हातिम दुरानी।
कहाँ खुसरो कहाँ ओ रुस्तमे ज़ाल। सुन्या नौशेरवाँ का क्या हुआ हाल।
जदा लग है सकत हातामने ज़ोर। तदां लग उचाते सब दोस्ताँ शोर।
चले जो नेक मरदाँ चल तु खुशनूद। खुदा हासिल करेगा दिलका मकसूद।

× × ×

कह्या शह तीन गौहर है शरफनाक......
हुआ खुशहाल अपने बख्त परसों। किया सिज्दा खुदा के तख्त परसों।
वले फरमाँ दिया तीनो रतनकूँ। निकर जाओ तुमें हर एक पटनकूँ।
जहा लग है मेरा सब मुर्गों माही। जहाँ फिरता है मुँज शहकी दोहाई।
रहेंगे वा तो मारूँ ख्वार कर में। सयासत कर धरूँगा दार पर में।

रुस्तमी

किया तर्जुमा दखिनी दिल पज़ीर। बोल्या मोजज़ा यों कमाल खां दबीर।
खलक कहती है मुँज कमाल खाँदबीर। तखल्लुस सोहै रुस्तमी बेनज़ीर।
नबी की जो हिजरत थी किता खयाल। हजार पर पचास और नौ की थी साल।
कहा रुस्तमी उस वक्त यों किताब। बन्ध्या बानकी गौहराँ बे हिसाब।

× × ×

आया था ज़मी पर बी जो शाह जंग। ज़मी होर ज़मा कूँ लिया था...।
सफ़ेदी की खिन्ची थी मुखपर नक़ाब। परिन्दा सफ़ेद फँस्या था आफ़ताब।
ज़मी पर अम्बर का मंडप तमाम।..................।
ज़मी पर तो सुम्बुल था नै था सुमन।..................।
गया था महल के भितर शाह चीन। सबाही का था मुर्ग भी ख्वाब मे...।
ज़मी होर ज़मा में भी काजल भरया। अंगार जाके जग में धुआँ भर रह्या।
जेते मुर्ग माही कुँ था भौत ख्वाब। जमी कूँ दरंग आसमाँ बाशिताब।
फलक नो तबक गेहरा हसों सवार।......... ....।

निशाती

करूँ तारीफ में उस ताजवर का।
समझता है जिने क़ीमत गुहर का।

शहों का शाह अबदुल्लाह ग़ाज़ी।
अछो जम हक्सों उसके पेशवाज़ी।
सआदत के नयन का नूर है तूँ।
शुजाअत के गगन का सूर है तू।
अजब ने देख तेरी नौशेरवानी।
करैं चकरयाँ की गुरगाँ पासवानी।
अगर देगा जो तेरे अदुल हद बाँध।
रखेगा कर जतन केतन कुं (तू) चाँद।
जहाँ लग मेहर चरखे अख्तरी है।
जहाँ लग घन पे ज़ोहरा मुश्तरी है हैं।

नुसरती

न कह सूर वल आग-बादल अथा। न वो धूप यक आतशी जल अथा।
मगर खोच दोज़ख के दरियाते वीर। बरसता अछै जग में जलता च नीर।
किरन है सो सब जल की धारा दिसै। हरेक ज़री क़तराते बदराँ दिसै।
ज़मीं ते फलक लग सब यक धात सों। भरी सर्द आतिश की बरसात सों।
लगे मारने जब सुराबाँ के मौज। चले चौकधन तब हरारत की फ़ौज।
वले इस अबर में हैं यक तर्फा घात। लजाता है फिर नीर खींच अपने साथ।

× × ×

दी है जमिस्ताँ नो गज़ी दूँगा उचा धुँधकार आज।
सर्दार हो बादेखज़ाँ थॅड का रच्या है भार आज।
उरट्या हवा का फ़ौज यों शबनम के गोल्याँ छाँटता।
डरसूँ अगिन सों झांपले डर राही है ठारे ठार आज।
ओ आग कोइ मारे तो दम उठती थी हो सब तन ज़बाँ।
वैसी भी सरकश सर नवा पीली दिसे सदहार आज।
वेशक वतन इस जगते मिट जातीं अगिन हो वे निशाँ।
गर दिल में अपने आशिकाँ देते न सबकूँ ठार आज॥

× × ×

सफ़पर गुनहगारों की तब क़ायम क़यामत हो रही।
त्रिसरे यकस यकको मदद पेशा सबब दुश्वार का॥
जो जाँ अथे सो त्यों च वाँ हैरत सों सारे दँग रहे।
सूरत में हर तन यों दिस्या ज्यों नक्श है दीवार का॥

शहके ग़ज़ब की त अगिन नहिं सरकशी पर आप लगा।
शह शोर में दिल जा पड्या हर गायमे अशरार का ॥
तहकीक़ सब जाने कि अब आख़िर तुटे पर आसमाँ।
हरगिज़ थमा सकसे न कोइ बल हथके दे आधार का ॥
यों अल-अमाँ की हाँक सब चौंधेर ते गढ़ परते उटी।
आजिज़ हो काडे मुख पकड़ सुट धंदा हथियार का ॥
जब शह चड़े घोड़े उपर यों फ़तह गढ़ ऐसा किये।
तब मुखमें शायाँ के हुआ नित दर्द इस गुफ़्तार का ॥
कहना है धन उस माहकूँ है जिसकूँ ऐसा शह ख़लफ़।
सो ओ बड़े-साहेब हैं जम पाकर करम करतार का ॥
जिस घरकी न्यामत ते जमन पाली गई है सब ज़मीं।
ते आवे दरिया में असर है तिसकी.....खारका ॥
जिस दिलकूँ कर हुब्बुल-वतन गमती है निस-दिन रास्ते।
होर घर करामत सों ज़ख़म है तिस-ज़बाँ में प्यारका ॥

तबई

इलाही यो तबई तेरा दास है। दे ईमान इसको तेरी आस है ॥
इलाही बचन का मुँजे ताब दे। मेरी जीभकी तेगकूँ आब दे ॥

अजब सीस पर उस लम्बे बाल थे। भुजंग शाख संदल पर रखवाल थे।
जबीं देख उसकी छुपे आफ़ताब। ले मुख पर अपसके रयन का नकाब।
भवाँ पर उसी के नज़र कर हलाल। किया तनकु लागिर रयन का नक़ाब।
नयन देख आहू परेशान हो। चमन बीच नर्गिस हो हैरान हो।
अजब उसकी आँखों में डोरे थे लाल। कि जिन नयन कारन बनाई जो चाल।
दो गालाँ सफा की सना की न जाय। देखत आशना उसके रशकत लियाय।
सिपह खाल नादिर था उस गाल पर। भँवर होके बैठा है गुल लाल पर।
दो लब आबे हैवाँ से लब्रेज थे। किया शहद शक्कर सो आमेज़ थे।
अथे दांत मुख बीच हीरे जड़े। दहन के सदफ़ बीच मोती जड़े।
जहाँ वो खुशी साथ हँस बोलती। गुलाँ और मोतियाँ कई रोलती।
सीना पर दो पिस्तान अन्नार थे। यो दो बुर्ज मुश्कीन तातार थे।
शिकन मौज दरियाय सीमाब है। अगे नाफ़ तिस बीच गर्दाब है।
चरन देख चम्पा खिला बाग बाग। वह रुख देख लाला हुआ दाग दाग।

× × ×

जे कोई याद करता न अपना वतन। ओ मर्द है पेरन असल का कफन।
अगर कोई गुर्बत में शाही करे। अगर माल होर मिलक लाखाँ धरे।
अपस कूँ देखे खोल कर जो अँखियाँ। देवे खाक तन का वतन का निशान।
वतन सबकूँ दुनिया में प्यारा अहे। सफ़र है सो जो वादेआराँ अहे।

× × ×

लग्या मैं जो यो मस्नवी बोलने। यो मोतिया निछल धाल यो रोलने॥
यो वजही मेरे ख्वाब में आयकर। कुछ अपना सुरजनार दिखलायकर॥
सरासर सुन्या जो मेरी मस्नवी। कया "बात तबई तेरी है नवी॥"
हो खुशहाल सुनकर यो बाताँ मेरी। अपसके ले हाथोंमें हाथाँ मेरी॥
बड़े प्यारसों अपना यो दे मिसल। सुन्या सो पड्या ख्वाब से मैं उछल॥

× × ×

कता हूँ सुनो कान धर लोग हो। कहावत मने बात हो आप यो॥
अगर शेर कोइ खूब कहकर जो लाय। तो खूबाँकू सुन रश्क अल्बत्ता आय॥
यक सकूँ सो यक देख सकते नहीं। यकसकूँ यो यक मान रखते नहीं॥
अगर खूब जो बोले जो तो वो अहै। अगर जो बुरा बोले तो यों अहै॥
तबई तु जो काम कर अख्तियार। कि रहे ता क़यामत तेरी यादगार॥

× × ×

रवायत किया राविये नेकनाम। बहुत फ़िक्र सों यो हिकायत तमाम॥
अथा रूम के शह्र में बादशाह। .... ॥
ओ शाह भौत मक़बूल आक़िल अथा। सखी हौर फ़ाजिल ओ कामिल अथा॥
सवा लाखथे उसकूँ तुर्की गुलाम। जो अल्मास था रंग उनका तमाम॥
जो हब्शी गुलामाँ सवा लाख थे। ओ नीलम की त्यों हुस्न में पाक थे॥
अगर्चे ओ शाहे-जहाँगीर था। नहीं है कि फर्ज़न्द दिलगीर था॥
इसी ग़मसों दिनरात रोता अछे। .... ॥

× × ×

ओ जुल्फाँ दिलोंके हिंडोले आहे। गलत मैं कया दो सँपोले अहै॥
भँवा बागनख होर अखियाँ हरिन। कि ओ मोहनी है अजब मनहरन॥
ओ गालाँ की सुर्खी सो लालेमें नै। ओ बालाँ की खुश्बोइ बालेमें नै॥
दिसे फूल दो सेवतीके दो कान। चँपेकी कली नाक है दर्मियान॥
अजायब यो चाहे-ज़नख्दान है। कि ग़र्क उसमने दीन-ईमान है॥
दो जोबन सो चोलीके दो हाथ में। जो अम्रीतफल छुप रहे पात में॥
अथा पेट जों आरसीनाद साफ़। कहूँ क्या झमकता अथा ज्यों शफ़ाफ़॥

गुलाम अली

गुलाम अली नयी दुनिया में वफा। कधीं है खुशी होर कधीं है जफ़ा।
कि जो कॉद का है चुना ज़िन्दगी। तो हर्गिज नहीं किसकु पायंदगी।
दुन्या का लेवे काम होइ सिर उपर। फिरे ओ कुते के नमन दरबदर।
दो दिनका सो जीना न कर पायमाल। तु मुट हिर्स कू जो रहे खुशहाल।
गुलाम अली कह भला हर किसे। बुरा कहने सों जग में दुश्मन दिसे।
भलाई सेती तूँ भला पायेगा। बुराई सों सिर पर बला ल्यायगा।
होवे कोई बुरा भलाई न छोड़। बुरा बोल किसकूँ अपस-मूँ न तोड़।

× × ×

गुलामली जिससों दिल लाइये। बिछुड़ने सों देहतर जो जिउ जाइये।
कते खून-दिल सों सो दिल लावना। तो एक तिलमने तोड़कर जावना।
जनावर के जाने से दुख पाइया। तो इन्सान खातिर न ग़म खाइया।

× × ×

कि है सब जगत्तर मने सात दीप। सिगलदीप उसमें का है एक दीप॥
कि ओ दीपमें है सकल पद्मनी। न चित्रिन न हस्तिन नहीं शंखनी॥
सकल दीपके नारकी बात है। सुनों मैं कहूँगा ओ किस धात है॥
अथा एक राजा रो भूखन कनीर। सिंगलदीप के मुल्कमें वेनज़ीर॥
निका नॉव कंदर्प सेन (उस) अथ। जगतमें वड़ा राजा उस बिन न था॥
न था कुच्छ लश्करकु उसकी हिसाब। कि जो धनमें तार्योंमने माहताव॥
खज़ाना भरी कोटर्यों के हज़ार। जवाहिर की संदूक थी सौ हज़ार॥

× × ×

चल्या और कह सात दरिया गुज़र। तमाशे जो देखता हरेक ठार पर॥
बंगालेमें (वाँ) एक खुश बाग था। जो जन्नत की दिल-रश्क सो दाग था॥
उतर वां लग्या सैर करने के तैं। जो मेवेके झाड़ांपे फिरने के तैं॥
वहाँ के कदीमी जो रॉवी अथे। हिरामनकु देख आये मिलने वते॥
देखे जों यो है भौत शीरीं-कलाम। हुये भौत खुशहाल रॉवी तमाम॥

× × ×

चल्या उड़कर शाहका ले पयाम। किया शाहज़ादी कु जाके सलाम।
देखी उसकु अरराके रोने लगी। चँदरमुख अँजू साथ धोने लगी॥
कही "क्यों मेरे सीने दिल तोड़कर। गया था कहाँ तू मुजे छोड़कर॥
कई दिल कया कहुँ यकायक निपट। किया अक़ावरा मुज सेती दिलकूँ हट॥

केते प्यारसो तुजकुँ पाली हुँ में। केता तुज-दुखों आपसों जाली हुँ मैं ॥"
हिरामन दिलासा देकर भौत धात। रतनसेनका सब कह्या खोल बात ॥

× × ×

गुलामली जिसके तँ है हया। जिये हक की तौफीक सों कोइ धात ॥
अगर जावेगा बाघकन धीट कर। खड़ा मूँ फिरा उस तरफ पेट कर ॥
पड़े जा अगर आगमें नागहाँ। होवे ओ अगिन उस उपर गुल्सताँ ॥

इशरती

वेचारी हो रही तब वेचारी वो माई।
वेचार्याँ नमन वो कसूँरो हाय हाय ॥
लहू घूट ले भरके सीनेमें खार।
कलीके नमन दिल रखी नहुँ तलार ॥
चँदरघरके घनकी हटीली वो नार।
निकल राजके गमसों आई बहार ॥
सुना मार सिर पीट के हाय-वाय।
चँदर मे पिरो हर अँजू जल-हवाय ॥
कि "ऐ गुल मुजे आग तुज बिन है वन।
कि घर तुज सजन विन दिसे ज्यो सजन ॥
जगत्तर में तुजसों मेरा नाम है।
कि तुज सूर बिन दिन मेरा शाम है ॥
तुसों खाय हस्रत मेरे लालाज़ार।
बगर तुज है मुॅज सेज में फूल ख़ार ॥
ए तुजसो मेरे हौज़ में नीर है।
तेरे बाज नित खाक मुॅज सीर है ॥
ए तुजसो मेरा हासिल हर मुद्दआ।
अगिन तुज बिना मुझको वादे सवा ॥
तुसों बख्त है ज़ेर मुज ज़ोर मे।
है तुज बाज आराम मुज गोर मे ॥
ए तुज-शमाते बज़्म अनवार है।
बग़ैर तुज मेरे दिलमने नार है ॥
ए तुजसो है मुॅजकूँ राज़ होर नियाज़।
न तुज बिन बग़ैर सोज़ दिसताई है साज़ ॥"

× × ×

लिख्या दिल के लहू से यो नामा तुजे ।
जो तुज बिन दिस्या दिन क़यामत मुजे ।।
तेरी जुल्फ़े मुश्की की सौगन्ध है ।
खबेखब में जिस जिवका एक बंद है ।।
कि जबते अँख्या लहू भर्‌याँ न सबूर ।
रह्या है तेरे मुख के फुलबन सो दूर ।।
तबांते डुब्या लहु में लाले नमन ।
जो अज़बस सुटी लहु की अँशुआ नमन ।।
लग्या इस रविश वहने लहुका नई ।
कि गैरत ले जाता है इस पर कहीं ।।
पवन शाहिद है होर सितारे गवाह ।
कि मुज दिल की तंगी पे कर यह निगाह ।।

× × ×

अवल सब जल्याँ जाके पद्मिनके घिर ।
अदब सों रख्या उसके पावाँ पो सिर ।।
जोबनके मेहर सों थी मनमें उमंग ।
दरया जोशदिल का जवानी तरंग ।।
क्यों तुजते ऐ शहपरी नेकनाम ।
सिक्या हँस चलन होर सनोबर क़याम ।।
यो दो दिनकी दुनिया में दुख सब विसार ।
अनँद करले सुट फिक्र गमते वहार ।।
कि कल परसों की आस चुप हवस ।
खुशी जग में हमना यही दम है बस ।।
किसे क्या खबर है कि यों आसमाँ ।
रख्या क्या है पर्दे में बाजी निहाँ ।।
हो गमते मुकत कर लेवें कुछ आज ।
सुवाकिन देख्या हैं घरे रुच आज ।।
सुत्रा सासुरे जायगी नेह जोड़ ।
चले सब सगे होर माँ-बाप छोड़ ।।
हमें तो पिछे गममें रहन च है ।
बदल गुलके सो खार खाना च है ।।
वह अछ्वल चंचल नार सुध शान धर ।
सहेलियों की सुन वो वचन कान धर ।।
नज़ाकत सों दिल नैनका नीर कर ।
क़दम सर्व का चखपो पानी के धर ।।

सुरजके नमन जलमें डूब शहपरी ।
सदफ त्यों च जल्द मोतियाँ सों भरी ॥
डुब्याँ जलमें कमके सकल हूरज़ाद ।
हुयाँ शाद पायाँ जो अपनी मुराद ॥
डुब उस हौजमें शौक़ सों खेलतियाँ ।
अगिन तनपो पानी ठँडा मेलतियाँ ॥
कन्नूलाँ उचा जल यकस यक हो मेल ।
अपस-दिलकी आतिश पो सुट्र्याँ थ्याँ तेल ॥

× × ×

तबल बजते थे होर नरसिंग पुरगम ।
दमामे हर कथन बजते थे धम-धम ॥
घतर होवे तलक दोवेर के रनसूर ।
उबलते थे ग़ज़ब सों ज्यों कि समदूर ॥
अथे यों मुन्तज़िर जो होन घत्तर ।
निकाले म्यान सों कीने का खंजर ॥
खड़ग ले हाथ म्याने एक बारा ।
करें जौहर अपसका आशिकारा ॥
बड़े हर हाल वो आख़िर हुई रैन ।
छिप्या कोने में जा आराम होर चैन ॥
दिखाया तूर अपस खंजर का झलकाट ।
सितारयों का सकल लश्कर गया न्हाट ॥
हुये दोवेर सेती मुस्तैद दो दल ।
दिसें ज्यों भुइं पोपहाड़ होर घन पो बादल ॥
दिलेराँ ने सफ़ाँ आरास्ता कर ।
दिये थे मरदुमी की दाद यकसर ॥
पड़े हरतन उपर वारों सेती गार ।
बदल पानीके निकल्या ल्यौका अंगार ॥
लगा छातीसों छाती होके गल जोड़ ।
सुटे सिर होर सीना हाथ पग तोड़ ॥
करे गुरज़ाँ के ऐसे घात सों मार ।
पड़े थे धरति कूँ पाताल लगगार ॥
ज़िरहपोशाँ पड़े हो रनमें पामाल ।
पड़े ज्यों मीन भुइँ उपराल बेहाल ॥

करया यों फोड़ हरयक हाथ का तीर।
कि चूम्या हात हर एकस का रहगीर॥
धनुख जब खींचता हर यक कमाँदार।
चला कहता ज़ेहा-ज़ेह उसकुँ सौ वार॥
दिसे यो पाखरों सों हस्तिका दल।
कि जैसा नीर भर बादल दिया चल॥
दिसे ज़खम्याँ का अकस उसमें रकतसों।
दिखाया ज्यों शफक बादलमने मूँ॥
लड़े दिलसोज़ गिर-पड़ होके इस घात।
दिवान्यों कूँ हुआ जैसा कि सनपात॥

ज़ईफ़ी

गरज़ उस ज़माने मने शाह के।
मसायल किया दीन के राह के॥
जो तारीख हिज्रत हजार एक सौ (११००)।
हिदायत हिन्दी हुआ यों तो बीच॥
इग्यारा सो उसमें भरे थे तमाम।
इसी बीच तम्मत का देख्या मुक़ाम॥
सदी बारवीं का लग्या था बरस।
इसी बीच बाजा यो दखिनी जरस॥
वलेकिन शाहंशाह दह में।
मुबारक ओ जुल्हज्जके शह में॥
अथी सात तारीख दिन मुश्तरी।
यो नुसवा मुरत्तब हुआ खुश्तरी॥

× × ×

मसायल यो फ़िक्रहाँ के असनाद सों।
निकाले किया किया पढ़के उस्ताद सों॥
कि अक्सर ज़बाँ हिन्द की इस तरफ।
लगे खुश जो पढ़ते हैं दखिनी हरफ॥
इसी वास्ते हदिया यो हिंद कूँ।
जो ल्याया दखिन साज़के सन्द सों॥
हिदायत-हिन्दी फिकर इसका नाँव।
रख्या होर ल्याया हुँ हिंदियाँ के ठाँव॥

कि हिन्दी केरे है हिदायत में पो ।
... ... ॥
शिफ़ाआत रवैयत का जो काज है ।
ज़ईफ़ी इसीका च मुहताज है ॥
यही इहतियाज अपने दिलमें पकड़ ।
पिरोया हुँ मैं इस रिसाले की लड़ ॥
लकब उस हुआ शेख दाऊद नाँव ।
ज़ईफ़ी है उसके तखल्लुस का ठाँव ॥
अरबी में होर फ़ारसी में ।
केतेका मसायल ज़रूर लिख्या देख-देख ॥
अरब होर अज़म का सखुन पाइया ।
सो दखिन्या कु दखिनी सों समझाइया ॥

× × ×

हिदायते-हिन्दी का यो सब कलाम ।
बयाँबार बोलूँ अँगे भी तमाम ॥
हजार तीन पर ही जदह (३०१८) हिंदी बैत ।
कि इल्मे-सलूक होर शरीअत-समेत ॥
मुरत्तब करे जब यो नुस्खा तमाम ।
दुआ मंथिये शेख दाउद नाम ॥
छसो के ऊपर बीस बतियाँ नबी ।
जो मकसूद कैं कैं न था सो हुई ॥

× × ×

अथा सुन कहूँ नकल उस नारका ।
जो साबेत-कदम नार अवतार का ॥
सुन्या हूँ नबी (के) ज़मानेमें एक ।
अथा जो मुसल्माँ कोई मर्द नेक ॥
नवा आ नबीके सो इस्लाम में ।
अथा नेक नेकी केरे काम में ॥
सो बस्तों सों होय देख यारी उसे ।
मिली एक अजब नेक नारी उसे ॥
निछल पाक-पैकर परी-सारखी ।
परी बल्कि अच्छी न उस सारखी ॥

मुहम्मद अमीन

देखी सूरत अज़ीजे-मिस्र की जब ।
पड़ी धरती उपर पिछड़ाय कर तब ॥
कि वावेला कि वावेला कर दाई ।
बखत खने मेरे आँधे लिखाई ॥
वे तो कुछ और था एतो है कुछ और ।
एतो दुश्मन रहे उस दोस्तके ठोर ॥
हमें वे कब मिले गम मुझ नयन दरस ।
अरे हैं-हात और अफ़सोस अफ़सोस ॥
हमें क्योंकर मिलेगा मुजसों वे शाह ।
हज़ार अफ़सोस और सद आह सद आह ॥
गया वह गंज और यह रह गया साँप ।
(कि) सूरत देख चढ़ी मुँज बोज और काँप ॥
ज़ुलेखा की हक़ीक़त अब सुनावे ।
ज़ुलेखा फिरके युसुफ़ कौन पावे ॥
ज़ुलेखा बेखबर फिरती रती थी ।
इशक़ का घाव वों ऊपर सती थी ॥
कधूँ घरमें कधूँ जंगलमें जाती ।
वे मेहनत के दिनों को यों गँवाती ॥
गई थी एक दिन जंगल के भीतर ।
चली थी उस जगे सों आपने घर ॥
अया जब राह युसुफ़ का बाज़ार ।
ज़ुलेखा ने सुन्या तब शोर बसियार ॥
लगी पूछन कि "ए क्या शोर है रे ।
कहाँ मुझ क्या ऐ दौरा दौर है रे" ॥
ज़ुलेखा ने सो तब पर्दा उठाकर ।
सूरत युसुफ़ की नज़रों बीच ल्याकर ॥
पिछाना है वही दिलयार जानी ।
कि जिस कारन हुँ फिरती थी दिवानी ॥
युसुफ़ (को) देखकर रोई पुकारी ।
पड़ी हो बेखबर कर करके ज़ारी ॥
सवारीकूँ शताबी लेके भागे ।
ज़ुलेखाकूँ ले आये घरके आगे ॥

उतारे घरमने जब हुइ खबरदार ।
पूछी तब दाईने उसको गुफ्तार ॥
"तेरी फिर अक्ल और सुध काँ गई थी ।
ऐसी तूँ बेख़बर क्युँ हो रही थी" ॥
कहा तव "वो गुलाम है यार मेरा ।
उसी ऊपर है दिलका प्यार मेरा" ॥

वज्दी

एक आशिक़ था दिवाना बेख़बर ।
सो रह्या था नींद में यम गौर पर ॥
अज़ क़ज़ा मालूक निकल्या एक वहाँ ।
नींद में आशिक़ कुँ देख्या नागहाँ ॥
पस (वह ख़त) यक लिखको उसके बंद सो ।
बाँधकर जाता रह्या आनंद सो ॥
आशिक़ उठकर ओ चिठो देख्या जो खोल ।
यार के ख़त सों दिसे उसमें यो बोल ॥
"ए दिवाने इस वज़ा सोता है क्या ।
उठ जो सौदागर है तुदूँगाँ पे जो ॥
होर अगर ज़ाहिद है तो बेदार रह ।
बंदगी में सब अपस हुशियार रह ॥
भी जो आशिक़ है तो सोता है गज़ब ।
नींद चख में आशिकां के आये कब ॥
मर्द आशिक तो सदा बेदार अछे ।
दिनकुँ हैराँ रातकूँ हुशियार अछे ॥
इश्क़ में सोना तुजे सर सहल है ।
आशिक़ी के कस्ब में ना अहल है" ॥

× × ×

चंचलका आज बिछुड़ा मुज उपर भारी हुआ याराँ ।
तो मैं इस दो जगतसेती निराधारी हुआ याराँ ॥
हमारी बुत-परस्ती कूँ नहीं समझे अभूँ ज़ाहिद ।
बराये-कुफ्र सत दीं कू तू पुजारी हुआ याराँ ॥

नको कह वज्दिया अपन्याँ निपट शब-वस्ल-क्याँ वाताँ ।
कते हैं लोग सब तुजकूँ कि जुन्नारी हुआ याराँ ॥

× × ×

गई है उम्र सब मेरी सदा सूरत-परस्ती में ।
सुट्या है हुस्न का मद मुज सो हुशियारी ते मस्ती में ।
निकल जा वज्दिया शेखीके शेख्याँ के भंज सेती ।
अगर मक़सूद-खुद हासिल किया है बुत-परस्ती में ॥

× × ×

एक दिन सब जगके पंछी जानपर ।
मिलके भइ जमा हो यक टार पर ॥
शौक सों दिलकी लगे मुर्गोलने ।
यक-यकसते राज दिलका खोलने ॥
नागहाँ वाताँ में निकली बात यों ।
जे पँख्याँ में बादशा कोई न क्यों ॥
है हरेक फिर्के में हर यक बादशाह ।
नहिं हमनकूँ बादशाह सो क्या गुनाह ॥
इस वज़ा पंछी लगे करने विचार ।
बोल उट्ठा उसमें हुदहुद नामदार ॥
"ऐ अज़ीजाँ बात यों करते थे क्या ।
दिलमें चुप बिसवास यों धरते थे क्या ॥
के पड़े हैं इस वज़ा ग़फ़लत मने ।
कुफ्र है यो मुल्क होर मिल्लत मने ॥
कुफ्र सों तोबा करो तोबा करो ।
बादशा की ज़ातमें शक ना धरो" ॥

× × ×

हिन्दुआँ में कोइ राजा था गंभीर ।
के हुआ महमूद सुल्ताँका असीर ॥
लेके आये ज्यों उसे महमूद-पास ।
दीनसों कीते नबीं के रू-शिनास ॥
जब हुआ इस्लाम सों ओ आशना ।
दिल दो आलम सों किया अपने जुदा ॥
एकला जा बैस गोशब के मझार ।
रात दिन रोने लग्या जब ज़ार-ज़ार ॥

कुछ न था काम उसकूँ र-अज़ सोज़ो-आह ।
रोज़ उसका रातसों बदतर सियाह ॥
सोज़ो-ज़ारी जब गये हदसों गुज़र ।
हुइ वज़ा महमूद सुल्ताँ कूँ ख़बर ॥
बस बुला राजाकूँ शाहे-नामदार ।
मेहरबानीसों कया तूँ क्यों है ज़ार ॥
मैं तुजे देऊँगा एता कुछ मुल्को-माल ।
जे तुँ यक सायत में हो जाये निहाल ॥
ऊन को इस बात ऐ राजा गँभीर ।
दुखमने अपना नको गालो सरीर" ॥
बस लग्या कहने कुँ राजा शाह सो ।
"मै रोता नै जो मुल्को-माल सो ॥
सोज़ो-ज़ारी है मुजे इसके सबब ।
जे क़यामत मै करेगा यों च रब ॥
ऐ मेरे बदअहद बंदे बे-वफा ।
किस बजा कीता है तूँ ऐसा जफा ॥
नैं किया तूँ याद मेरा तो' लगूँ ।
तुझमने सुल्तान आया जो लगूँ ॥
जब किया लश्करकशी तेरे पे ओ ।
आसरा मेरा लिया ऐ ज़िश्त-खूँ ॥
नै किया तूँ याद लश्कर में मुँजे ।
दोस्त समझूँ या कि दुश्मन कर तुझे ॥
गर लगूँ तुजसो जफा मुजसो वफा ।
यों वफादारीमने है क्यों रवा ॥
शर्मसारी है मुजे इस बातकी ।
सोज़ दिनका होर ज़ारी रातकी" ॥

वली दकनी

यह विरह की तार क्यों के जावे। चलने की पुकार क्यों के जावे। जोंदार की पार क्यों के जावे। दिले यार को छौ क्यों के जावे।
ज़ख़्मी है शिकार क्यों के जावे।
भरता हुँ जहाँ वो जग सों हज़ार। इस बंद में आ हुआ हुँ लाचार। क्योंकर हो विरह मे मस्त हुशियार। जब लग न मिले शरावे दीदार।
अँखियों का खुमार क्यों के जावे।

जब इश्क़ फ़ौज ने आइ घेरा। हैराँ हुआ हवास मेरा।
उस दिन सों हुआ हुँ तेरा चेरा। यक साँ है हमेशा हुस्न तेरा।
जन्नत सों बहार क्यों के जावे।

यह दिल ते देखने को रोवै। हर शामो-सुबह में तिल न सोवै।
यह उम्र अज़ीज ग़म में खोवै। आँखों की अगर मदद न होवै।
मुझ दिल का गुबार क्यों के जावे।

आशिक़ की यही है जग में बाना। माशूक़ के नाँव पर बिकाना।
नै काम हरेक का इसमें आना। मुमकिन नहीं अब वली का आना।
है आशिक़े ज़ार क्यों के जावे।

× × ×

लागी है लगन तुमसों छुड़ा कौन सकेगा। है किसमें यह कुदरत॥
अजब मुजकुं वतन अपने ले जा कौन सकेगा। कर दिलसों रफ़ाक़त॥
है नक़्श किनारी का तेरे जामेके ऊपर। ऐ हिन्द के बाँके॥
दामन कुँ तेरे हाथ लगा कौन सकेगा। नै ज़ोर नै ताक़त॥
हूँ ख़ाक तुम्हारी ही गली का ऐ सिरीजन। नै काम क़फ़न सों॥
अब मुझकूं जनाज़े में उठा कौन सकेगा। यों गर है हक़ीक़त॥
मत मारो वली कूँ मैं यह कहता हूँ कहाकर। सुन बात हमारी॥
इस हिज्र के तूमार कूँ पा कौन सकेगा। बिन ग़म्ज़ा-ज़राफ़त॥

× × ×

मत गुस्सेके शोले सों जलतेकुँ जलाती जा।
टुक मेह के पानी सों यह आग बुझाती जा॥
तुज चाल की कीमतसों नैं दिल है मेरा वाक़िफ़।
ऐ नाज़-भरी चंचल टुक भाव बताती जा॥
इस रैन अँधेरी में मत भूल परों निस सों।
टुक पाँवके बिछुओंकी आवाज़ सुनाती जा॥
मुज दिलके कबूतर कुँ पकड़ा है तेरी लट ने।
यह काम धरम का है टुक इसकूँ छुड़ाती जा॥
तुज मुखकी परस्तिश में गइ उम्र मेरी सारी।
ऐ बुतकी बचन हारी इस बुतकुँ बचाती जा॥
तुज इश्क़में दिल चलकर जोगी की लिया सूरत।
यकबार अरे मोहन छाती सो लगाती जा॥
तुज घरकी तरफ़ सुंदर आता है वली दायम्।
मुश्ताक़ है दर्शन का टुक दरस दिखाती जा॥

वली वेल्लोरी

वलेकिन शाहका वो दबदबा देख ।
सलाबत होर आली मर्तबा देख ॥
क़दम शोखी सों आगे ना रखे कोई ।
न अँखियाँ खोलकर मुखपर देखे कोई ॥
सो हो नाचार तब सब नाबकारों ।
लगे करने कुँ शहपर तीरबारां ॥
तुरंग उपर सों उतरे शाह शब्बीर ।
कि ना तेजी कुँ नाहक ना लगे तीर ॥
औ था जद्दो-पिदर की यादगारी ।
कलर कं कै करूँ चुप उसकी ख़्वारी ॥
देखे जब काफिरों ने शाहज़ादा ।
तुरँगकुँ मुट हुआ है यक पियादा ॥
दिलावर हो लगे भाने कुँ तीरों ।
लगे शह चुप खड़े खानेकुँ तीरों ॥
पेशानी पर लग्या यक तीर कारी ।
उखाड़े सो हुआ लहु वासे जारी ॥
भरा वैं लहूकने उस हात सर्वर ।
मलें उस लहुकुँ ले मुख सात सर्वर ॥
रकतमें चेहरये - पुरनूर पेशानी ।
हुआ था ज्यों शफक़ मे सूरपानी ॥
कहते थे यो च मे उस लाल मुख सात ।
व.रूँगा ज़द सों अपने जा मुलाक़ात ॥

× × ×

चरिंदे सब जँगल के हो दुखारे ।
खड़े रोते थे चरना छोड़ सारे ॥
पहाड़ों शोरसो फोड़े थे सीना ।
खड़े थे सिरसों कर पग-लग पसीना ॥
दरयों मे के घरों सब छोड़ अपने ।
लगे खुश्की पो आ मछल्यों (सो) तपने ॥
किसी पर शाह की था प्यास का ग़म ।
किसी पर शहके था मरने का मातम ॥

दुन्यों में भर रया था शोर सारा ।
हुआ था दर्दो ग़म हर शै पो न्यारा ।।
खियाई क्यों हमारे - बा - वफ़ा कूँ ।
बुझाई क्यों चिरागे - मुस्तफ़ा कूँ ।।
गया क्यो आज ओ सुल्ताने-आलम ।
अलुकहज़रत सों मिला था जाने आलम ।।
पड्या क्यो आज औंधा तख़्तेशाही ।
हुआ क्यों आज आलम पर तबाही ।।
जहाँ में सब क़यामत का बजा सूर ।
लगे मौजां सो खलबलाने कूँ समदूर ।।
गुबारे - सुर्ख़ होकर आशकारा ।
जगत पर छा गया था सब अँधारा ।।
ज़मीं सब लाल थी होर आसमाँ लाल ।
मँग्या होने कूँ सब कुदरत पो जंजाल ।।
फरिश्ते हाथ में लैं गुर्ज - आहन ।
खड़े थे फोड़ने धनकूँ खना खन ।।

हाशिम अली

जलवा से उठके रनकूँ चला तब कही दुल्हन ।
दामन पकड़ कर लाजसों अँभुओं भरे नयन ।।
"कैसी यो कदखुदाई वो कैसी है यो बरात ।
आता फिराक तुमसों यह जलवा की आज रात ।।
धरकूँ न ले गये हो न बोले हो हमसो बात ।
देखा नहीं जमाल कूँ भरके नयन मेरा ।।
इस कर्बलाके बनमें अकेली मैं क्यों रहूँ ।
तुम बाज मै जहाँ मै फिर उमेद धरूँ ।।
जदे के मदीना क्यों कि मैं इस ठार से फिरूँ ।
तुज अपने साथ लेके दिखाओ वतन मेरा ।।
जाते हो छोड़ रनकी तरफ मुझकूँ तुम रुला ।
नै शर्मका हनोज़ यह सरसो घूँघट खुला ।।
करते नही मुहब्बत व जाते मया भुला ।
इस ज़िन्दगीसों आज भला है मरन मेरा ।।

शोला लगा है दिलमने इस ग़मका क्या करूँ ।
मुजकूँ रवा हुआ है अगर ज़हर खा मरूँ ॥
दूरी में हाय तेरी मैं दिन रैन क्यों भरूँ ।
फ़ुर्क़त की आगसेती जलेगा बदन मेरा" ॥
क़ासिम खड़ा था रोते नैन सों दुल्हन के सात ।
ग़मनाक अपना देखके दामन दुल्हनके हात ॥
तब आहे-दर्दनाक सों बोला दुल्हनके सात ।
"हूँ बोस्ताने - राहत वो सर्वे - चमन मेरा ॥
मुजकूँ नहीं है तेरी जुदाई का इख़्तियार ।
तेरे फ़िराक़ सात में जाता हुँ अश्कबार ॥
मैं क्या करूँ सलाह नहीं हुक्म - कर्दगार ।
हक़ने किया है रनमें मुक़र्रर रहन मेरा ॥
है दाग़ दिलमें तेरी जुदाई का क्या करूँ ।
ने है उमेद रनसे फिर आकर तुझे मिलूँ ॥
जो कुछ हुआ है मुकदरों मैं रास्ती कहूँ ।
वादा हुआ है हश्र में तुमसे मिलन मेरा" ॥

× × ×

बाले असगर केतैं बुलाती रही । सुना यह पालना झुलाती रही ॥
झूला तेरा पड़ा रहा ख़ाली । डोरी मूज हाथमें हिलाती रही ॥
हाय क्यों रूठकर गया मुजसो । मेरे प्यारे के तैं मनाती रही ॥
भूल क्यों तूँ चला गया मेरी । 'आ रे असग़र' तुजे बुलाती रही ॥
मैं सुलाती थी जब लगा छाती । आँचल अपना तुजे उढ़ाती रही ॥
रात-दिन मैं कभूँ न दी रोने । करके बातों तुजे हँसाती रही ॥
था बरसगाँठ का तुजे अरमान । लाल जामाँ तेरा सिलाती रही ॥
क़ासिम आया है जब मियाने कूँ । मैं तमाशा तुझे दिखाती रही ॥
लहो भरा क्यों तेरा चँदरमुख है । जिसकूँ हाथों से मैं बुलाती रही ॥
दूध पीता मेरा गया बाले । ग़मसों छाती मेरी भर आती रही ॥
तुजकूँ भाती न थी अँधारी रात । तेरी ख़ातिर दिवा जलाती रही ॥
करके तावीज़ दिल ऊपर रखती । बदनज़र से तुजे छिपाती रही ॥
क्यों न आख़िर हुई उमर मेरी । तुज बिना हैफ़ मुज हयाती रही ॥
आज पुरखूँ क़फ़न तेरा असग़र । आज सूखा दहन तेरा असग़र ॥
लाल है गुलबदन तेरा असग़र । हैफ़ यों बालापन तेरा असग़र ॥
क्यों है ज़ुल्फा के बाल तारों-तार । क्यों गले सें लोहू के जारी धार ॥

× × ×

वानू पे कर्बलामें कैसा यह दुख पड़ा है ।
गोदो मैं प्यारा असग़र बिन दूद मर चला है ॥
होर रॉड़ बैठी वेटी दामाद मर चुका है ।
सिरका चतर भी ढलना कोइ दमको आ रहा है ॥
समझाना उस बच्ची का इस वक्त क्या मुसीबत ।
बावा बिना तड़पता और तश्नगी की शद्दत ॥
"ऐ वेटी तेरे बावा खाने गये जियाफ़त" ।
मासूम का यह सुनकर दहचंद जी जला है ॥
कहने लगी कि "अम्मा, हे-हे यह क्या ग़ज़ब है ।
मरती हुं भूख सेती प्यासोसे जॉबलब है ॥
ज्याफ़त में गये बाबा मुज बिन सो क्या सबब है ।
बाबा ने मुज पे शायद शफ़क़त कुँ कम किये हैं ॥
मुजसे कभू न करते बाबा मेरी जुदाई ।
असग़र कुँ ले गये हैं मुझसे मया उठाई ॥
बावर न हाइ जो तुमकूँ बतलाउँ कॉ है भाई ।
असग़र का पालना भी ख़ाली देखा पड़ा है" ॥
रो-रो हरम मियॉ से उस तिफ़्ल कूँ मनाते ।
हर यकले भरके उसकूँ छाती सेती लगाते ॥
कहते थे "तेरे बाबा अब कोइ घड़ी में आते ।
वल्लाह साथ शहके असग़र नहीं गया है ॥
समजा कते हैं हारे पन करते नैं वह बावर ।
कहते "जो ले गये नैं दिस्ता नहीं क्यो असग़र ॥
लाचार हो कहे तब अहले-हरम ने यकसर ।
असग़र की लाश लाकर उसको दिखा दिया है ॥
माई को देख रोते दौड़े हैं भरमें लेने ।
हर रोज़ की तरह से लागे हैं बोसा देने ॥
कहते "क्यों आज भाई, नै उटता दूद पीने ।
क्यों उसके पैरहन कूँ ताजा लहु लगा है" ॥
यह मर्सिया लिखा जब ऐ दो जहॉ के मौला ।
सोने सेती धड़ककर ग़मका उठा है शोला ॥
सब जाकिरों में कमतर है क़स्तादिल ग़ुलामी ।
दो दाद जल्द हरचंद है आशियॉ मे नामी ॥

× × ×

फिर घटा हुइ ग़मके बादल की गगन पर आशकार ।
कर्बला में मेघ बरसे लोहु के धारा बेशुमार ॥
तेग़ चमके सिर उपर बिजली के मानिन बारबार ।
क्या समाँ है-हपड़ा सारा जहाँ म्याने अधार ॥
नाराहा कड़के गरजकर आज नगमे-सूर है ।
चौतरफ़ घनघोर है लहुकी बरसती है फुहार ॥
नैं निकलता है सुरज सोये नही सुखके भवन ।
खून दिलसों जहाँ तलक देखे टपकते है नयन ॥
तर हुये हैं अश्क़बारी सो लर्जते हैं बदन ।
आह का हर दम हुआ हैगा दिलों सेती पुकार ॥

× × ×

ले गये, आज किधर ताजे-शहीदाँ कहाँ ।
रनमें तन सों जुदा कर सरे सुल्ताँ कहाँ ॥
कों किये जुल्फे-मुअंबर कुँ परेशान कहाँ ।
नेजा-ऊपर किया ज़ालिमने नुमायाँ कहाँ ॥
जों शफ़क़ बीच हवेदा देखो खुर्शीद मुदाम् ।
लहूभरा नेजा-उपर था सरेपुरनूरे-इमाम् ॥

उसमान

सरवर ढूँढि सबै पचि रही । चित्रित खोज न पावा कही ॥
निकसीं तीर भई बैरागी । धरे ध्यान सुख बिनवै लागी ॥
गुपुत तोहि पावहि का जानी । परगट महँ जो रहै छपानी ॥
चतुरानन पढ़ि चारौ बेदू । रहा खोजि पै पाव न भेदू ॥
हम अंधा जेहि आप न सूझा । भेद तुम्हार कहाँ लौं बूझा ॥
कौन सो ठाउँ जहाँ तुम नाहीं । हम चख जोति न, देखहिं कहीं ॥

पावै खोज तुम्हार सो, जेहि दिखरावहु पंथ ।
कहा होइ जोगी भए, और बहु पढ़े ग्रंथ ॥

× × ×

रितु बसंत नौतन बन फूला । जहँ तहँ भौर कुसुम रंग भूला ॥
आहि कहाँ सो भवर हमारा । जेहि बिनु बसत बसंत उजारा ॥
रात बरन पुनि देखि न आई । मानहुँ दवा दहुँ दिसि लाई ॥
रतिपति-दुरद रितुपती बली । कानन-देह आइ दलमली ॥

× × ×

मान करहु जो करि सकहु, कथनी अकथ अपार।
कथे न करि कछु आवई, करनी करतब सार॥

कौन भरोसा देह का, छाड़हु जतन उपाइ।
कागज की जस पूतरी, पानि परे घुल जाइ॥

तब लहु सहिए विरह दुख, जब लगि आव सो वार।
दुःख गये तब सुक्ख है, जानै सब संसार॥

सब कहँ अमिरित पाँच हैं, बंगाली कहँ सात।
केला, कांजी, पान, रस, साग, माछुरी, भात॥

कहाँ सो विक्रम एक बँधी, कहाँ सो राजा भोज।
हम हम करत हे राइगे, मिला न खोजे खोज॥

× × ×

जिन पच्छूँ दिस कीन्ह पयाना, पहिलहि गा सो देस मुलताना।
देखिसि सिंधि लोग सवाई, अहिरावन सब सेवहि साई।
हेरेसि ठट्ठा नगर सोहावा, विहँगा हरिन सेवै गंजावा।
काबुल हेरि मोगल करि देसा, जहाँ पुहुमि पति होइ नरेसा।
देखेसि रूम सिकन्दर केरा, स्याम रहा होइ सकल अंधेरा।
देखेसि मक्का विधि अस्थाना, होय अंध ते पाहन जाना।
हाजी सँग मिलि गयेउ मदीना, का भा गये जो साफ न सीना।
गा बगदाग पीर के तीरा, जेहि निहचै तेहि सँग हमीरा।
इस्ताम्बोल मिसर पुनि हेरा, गा लद्दाख लहु कीन्हेसि फेरा।
दखिन देस को जे पगु धारा, चला ताकि सो लंक पहारा।
पहिलेहि गै हेरेसि गुजराता, सुन्दर धनी लोग सुखराता।
गयो जाम जहँ कच्छी होई, लागे सुरूप सखी सब कोई।
वलंदीप देखा अंगरेजा, जहाँ जाइ नहिं कठिन करेजा।
ऊँच नीच धन संपति हेरा, मद बराह भोजन जिन केरा।
जहाँ जाइ उहँ बन्दर साजा, लगा संग चढ़ि गयो जहाजा।

× × ×

गाजीपुर उत्तम अस्थाना, देवस्थान आदि जग जाना।
गंगा मिलि जमुना तहँ, बीच मिली गोमती सुसाईं।
तिरधारा उत्तमतट चीन्हा, द्वापर तहँ देवतन तप कीन्हा।

बलभद्र मिश्र

पाटल नयन कोकनद के से दल दोऊ,
बलभद्र बासर उनींदी लखी बाल मैं।
शोभा के सरोवर में बाड़व की आभा कैधौं,
देव धुनि भारती मिली है पुन्य काल मै।
काम कै बरत कैधो नासिका उडुप बैठ्यो,
खेलत सिकार तरुनी के मुख ताल मै।
लोचन सितासित मैं लोहित लकीर मानो,
बाँधे जुग मीन लाल रेसम के जाल मै॥

× × ×

मरकत सूत कैधौं पन्नग के पूत अति,
राज अभूत तमराज कैसे तार हैं।
मखतूल गुनग्राम सोभित सरस स्याम,
काम मृग कानन कै कोहू के कुमार हैं।
कोप की भीरनि कै जलज नल नील तंत,
उपमा अनंत चारु चँवर शृंगार हैं।
कारे सटकारे भीजे सोंधे सो सुगन्ध वास,
ऐसे बलभद्र नवबाला गेरे बार हैं॥

ध्रुवदास

हँसनि में फूलनि की, चाहनि में अमृत की,
नखसिख रूप ही की बरषा-सी होति है।
केसनि की चंद्रिका, सुहाग-अनुराग-घटा,
दामिनी की लसनि, दसन ही की द्योति है।
'हित ध्रुव' पानिप तरंग रस छलकत,
ताकौ मनो सहज सिंगार-सींव तोति है।
अति अलबेली प्रिया भूषिता भारन बिन,
छिन-छिन औरै-और बदन की जोति है॥

× × ×

छवि ठाढ़ी कर जोरैं, गुन-कला चौरैं ढोरे,
दुति सेवै तन गोरे, रति बलि जाति है।

उजराई कुञ्ज ऐन, सुघराई रची मैन,
चतुराई चितै नैन अति ही लजाति है।
राग सुनि रागिनी हूँ, होति अनुराग-बस,
मृदुताई अंगनि छुवति सकुचाति है।
'हितध्रुव' सुकुमारी, पुरीतन हूँ तें प्यारी,
जीवति देखे बिहारी सुख सरसाति है॥

× × ×

आजु को छबीली छबि-छटा चित बेधि रही,
कही नहिं जाति कछू कौन गति भई है।
नवल जुगुल हँसि चितवति ठाढ़ी पासि,
मानों तिहि उर नई नेह-बेलि बई है।
'हित ध्रुव' नीरज-से नीर-भरे ढरे नैन,
बोलति न कछु बैन चित्र-सी ह्वै गई है।
नैन छार लोने रूप परो तब प्रेम कूप,
वाको गत जाने सोई जिहि अनभई है॥

× × ×

रूपजल उठत तरंग है कटाछन के,
अंग अंग भौरन की अति गहराई है।
नैनन को प्रतिबिंब परयो है कपोलनि में,
तेई भए मीन तहाँ, ऐसी उर आई है।
अरुन कमल मुसुकान मानो फबि रही,
थिरकनि बेसरि के मोती की सुहाई है।
भयो है मुदित सखी लाल को मराल मन,
जीवन जुगल ध्रुव एक ठाँव पाई है॥

× × ×

बहु बीतो थोरो रह्यो, सोऊ बीती जाय।
हित ध्रुव बेगि बिचारि कै, बसि वृन्दावन आय॥
बसि वृन्दावन आय त्यागि, लाजहि अभिमानहि।
प्रेमलीन ह्वै दीन आपको तृन सम जानहि॥
सकल सार कौ सार, भजन तू करि रसि रीती।
रे मन सोज विचार, रहो थोरी, बहु बीती॥

× × ×

ऐसी करी नवलाल रँगीले जू चित्त न और कहूँ ललचाई।
जे सुख-दुख रहे लगि सों ते मिटि जाहिऽरु लोग बड़ाई।
संगति साधु, वृन्दावन कानन तो गुन गाननि मोझ बिहाई।
कुञ्ज-पगो में तिहारे बसों बस देहु यहे 'ध्रुव' को ध्रुवताई॥

× × ×

महाप्रेम गति सब तै न्यारी। पिय जानै, कै प्रान-पियारी॥
उरझै मन उरझत नहिं केहू। जिहि अंग ढरत होत सुख तेहू॥
एकै रुचि दुहुँ में सखि बाटी। परि गई प्रेम-ग्रंथि अति गाढ़ी॥
देखत-देखत कल नहिं माई। तिनको प्रेम कह्यौ नहि जाई॥
सहस सुभाइ अनमनी देखै। निमिषनि कोटि कलप सम लेखै॥
हँसि चितवति जब प्रीतम माहीं। सोई कलप निमिष ह्वै जाहीं॥
खेलनि-हँसनि लाल कों भावै। नेह की देवी नितहिं मनावै॥
कौतुक प्रेम छिनहि छिनि होई। यह रस विरलो समुझै कोई॥
ज्यों ज्यों रूपहि देखत माई। प्रेम-तृषा की ताप न जाई॥

× × ×

खान पान सुख चाहत अपने। तिनकों प्रेम छुवत नहिं सपने॥
जो या प्रेम-हिंडोरे झूले। तिनकों और सबै सुख भूलै॥
प्रेम-रसासव चाख्यौ जबहीं। औरै रंग चढ़ै 'ध्रुव' तबही॥
या रस मे जब मन परै आई। मीन नीर की गति ह्वै जाई॥
निसि दिन ताहि न कछू सुहाई। प्रीतम के रस रहै समाई॥
जाकी जासों है मन मान्यो। सो है ताके हाथ बिकान्यौ॥
अरु ताके अंग-सँग की बातें। प्यारी सब लागति तिहि नाते॥
रुचै सोइ जो ताकों भावै। ऐसी नेह की रीति कहावै॥

× × ×

सकल वयस सतकर्म में, जो पै बितई होइ।
भक्तन के अपराध इन, डारत सब को खोइ॥
और सकल अघ-मुचन को, नाम उपायहि नीक।
भक्त-द्रोह को जतन नहिं, होत वज्र की लीक॥
निंदा भक्तिन की करै, सुनत जौन अघरासि।
वे तो एकै संग दोउ, बँधत भानु सुत पासि॥
भूलिहुँ मन दीजै नहीं, भक्तन निंदा ओर।
होत अधिक अपराध तिहि, मति जानहु उर थोर॥

सेवा करतहिं भक्तजन, होइ प्राप्त जो आइ।
सो सेवा तजि वेगिहीं, अरजहु तिनको जाइ॥
भक्तन देखे अधिक हूँ, आदर कीजै प्रीति।
यह गति जो मन की करै, जाइ सकल जग प्रीति॥
मन अभिमान न कीजिए, भक्तन सों होइ भूलि।
स्वपच आदि हूँ होई जो, मिलिए तिनसो फूलि॥

× × ×

जीव दसा कछु इक सुनु भाई। हर-जस अमरत तजि, विप खाई।
छिनभंगुर यह देह व जानी। उलटी समुझि अमर ही मानी।
घर घरनी के रंग यों राच्यौ। छिन-छिन में नट कपि ज्यों नाच्यौ।
वय गई बीति, जाति नहिं जानी। निमि सावन-सरिता के पानी।
माया सुख में यों लपटान्यौ। विपय-स्वादु ही सरवसु जान्यौ।
आलस मय जब आनि तुलानो। तन मन की सुधि तबै भुलानो।

× × ×

वर किसोर दोउ लाडिले, नवल प्रिया नव पीय।
प्रगट देखियत जगत में, रसिक व्यास के हीय॥
कहनी करनी करि गयो, एक व्यास इहि काल।
लोक-वेद तजिकै भजे, राधा वल्लभलाल॥
प्रेम-मगन नहिं गन्यौ कछु, बरना बरन बिचार।
सबनि मध्य पायौ प्रगट, लै प्रसाद रस-सार॥

सुन्दरदास

सुनत नगारे चोट बिगसै कमलं मुख,
अधिक उछाह फूल्यो मात है न तन में।
फेरै जब साँग तब कोऊ नही धीर धरै,
कायर कम्पाय मान होत देखि मन में।
कूदि कै पतंग जैसे परत पावक माँहि,
ऐसे टूट परै बहु सावन के गन में।
मारि घमसान करि सुन्दर जुहारै श्याम,
सोई सूर वीर रूपि रहै जाय रन में॥

× × ×

ब्रह्म तें पुरुष अरु प्रकृति प्रगट भई,
प्रकृति ते महतत्व, पुनि अहंकार है।
अहंकार हू ते तीन गुण सत रज तम,
तम हू ते महाभूत विषय प्रसार है।
रज हू ते इन्द्री रस प्रथक प्रथक भई,
सत्त हू ते मन आदि देवता विचार है।
ऐसे अनुक्रम करि शिष्य सूँ कहत गुरु,
सुन्दर सकल यह मिथ्या भ्रमजार है॥

× × ×

गेह तज्यो अरु नेह तज्यो पुनि खेह लगाइ कै देह संवारी।
मेह सहे सिर, सीत सहे तन, धूप समै जो पँचागिन वारी।
भूख सही रहि रूख तरे, पर सुन्दर दास सबै दुख भारी।
डासन छाँड़िकै कासन ऊपर, आसन मार्‌यो, पै आसन मारी॥

× × ×

बोलिये तौ तब जब बोलिवे की बुद्धि होय,
ना तौ मुख मौन गहि चुप्प होय रहिए।
जोरिए तौ तब जब जोरिवे की रीत जानै,
तुक छन्द अरथ अनूप जामे लहिए।
गाइए तब जब गाइबे को कण्ठ होय,
श्रवण के सुनत ही मने जाइ गहिए।
तुक भंग छन्द भंग अरथ मिलै न कछू,
सुन्दर कहत ऐसी बानी नहीं कहिए॥

× × ×

पति ही सूँ प्रेम होय, पति ही सूँ नेम होय,
पति ही सूँ छेम होय, पति ही सूँ रत है।
पति ही है यज्ञ जोग पति ही है रस भोग,
पति ही सूँ मिटै सोग पति ही को जत है।
पति ही है ज्ञान ध्यान पति ही है पुन्य दान,
पति ही है तीर्थ न्हान पति ही को मत है।
पति बिन पति नाहीं पति बिन गत नाहीं,
सुन्दर सकल विधि एक पतिव्रत है॥

सेनापति

नाहीं नाहीं करैं थोरी माँगे सब दैत कहैं,
मंगन कौं देखि पट देत बार बार हैं।
जिनकौ मिलत भली प्रापति की घरी होति,
सदा सब जन मनभाए निराधार हैं।
भोगी ह्वै रहत बिलसत अवनी के मध्य,
कन कन जोरैं दान पाठ परिवार हैं।
सेनापति वचन की रचना विचारौ जामैं,
दाता अरु सूम दोऊ कीने इकसार हैं॥

× × ×

तीर तैं अधिक बारिधार निराधार महा,
दारुन मकर चैन होत है नदीन कौं।
होति है करक अति बड़ी न सिराति राति,
तिल तिल बाढ़ै पीर पूरी बिरहीन कौं।
सीरक अधिक चारि ओर अवनी रहै न,
पांउरीन बिना क्यों हूँ बनत धनीन कौं।
सेनापति बरनी है बरषा सिसिर रितु,
मूढ़न कौं अगम सुगम परबीन कौं॥

× × ×

देखैं छिति अम्बर जलै है चारि ओर छोर,
तिन तरवर सब ही कौं रूप हर्यौ है।
महा झर लागै जोति भादव की होति चलै,
जलद पवन तन सानौं पर्यौ है।
दारुन तरनि तरैं नदी सुख पावै सब,
सीरी घन छाँह चाहिबौई चित धार्यौ है।
देखौ चतुराई सेनापति कविताई की जु,
ग्रीषम बिषम बरषा की सम कर्यौ है॥

× × ×

बीरैं खाइ रही तातैं सोहति रकतमुखी,
नाँगी ह्वै नची है संक तजि अरि भीर की।
निरवारै बारन बिसारै पुनि हार हू कौं,
आड़ हू भुलावै नखसिख भरी नीर की।

सेनापति पियन कौ राखै सावधान धार,
आगे ही चलावै घात जानि जो सरीर की।
जापर परति ताहि लाल करि डारै मारि,
खेलत समर फाग तेग रघुवीर की॥

× × ×

तेरे जीकी वसुधा है वाके तौ नव सुधा है,
तू तौ छत्रपति सो नछत्र पति मानिये।
सूर सभा तेरी जोति होति है सहसगुनी,
एक सूर आगे चंद जोति पै न मानिये।
सेनापति सदा वड़ी साहिबी अचल तेरी,
निसि दिन चंद चल जगत बखानिये।
महाराज रामचंद चंद ते सरस तू है,
तेरी समता को चंद कैसे मन आनिये॥

× × ×

तारन की जोति जाहि मिले पै विमल होति,
जाके पाइ संग मैं न दीप सरसत है।
भुवन प्रकास उर जानिये उरध अध,
सोउ तही मध्य जाके जगत रहत है।
कामना लहत द्विज कौसिक सरब विधि,
सज्जन भजत महातम हित रत है।
सेनापति बैन मरजाद कविताई की जू,
हरि रवि अरुन तमी कौं वरनत है॥

× × ×

अँखिया सिराती ताप छाती की बुझाती रोम,
रोम सरसाती तन परस सरस ते।
रावरे अधीन तुम बिन अति दीन हम,
नीर हीन मीन जिमि काहे कौं तरसते।
सेनापति जीवन अधार निराधार तुम,
जहाँ कौ ढरत तहाँ टूटत अरस ते।
उनै उनै गरजि गरजि आए घनस्याम,
है के बरसाऊ एक बार तौ बरसते॥

× × ×

कालिन्दी की धार निरधार है अधर, गन
अलि के धरत जानिकाई के न लेस हैं।
जीते अहिराज, खंडि डारे हैं सिखंडि, घन,
इंद्रनील कीरति कराई नाहिं एस हैं।
एड़िन लगत सेना हिय के हरप कर,
देखत हरत रति कंत के कलेस हैं।
चीकने सघन अँधियारे तैं अधिक कारे,
लसत लछारे, सटकारे तेरे केस हैं॥

× × ×

आए परभात सकुचात, अलसात गात,
जाउक तिलक लाल भाल पर लेखियै।
सेनापति मानिनी के रहे रति मानि नीके,
ताही तैं अधर रेख अंजन की रेखियै।
सुख रस भीने प्रानप्यारी बस कीने पिय,
चिन्ह ये नवीने परतच्छ अच्छ पेखियै।
होत कहा नींदे, एतो रैन के उनींदे अति,
आरसीलै नैनां आरसी लै क्यों न देखियै॥

× × ×

बिन ही जिगर हथियार बिन ताके अब,
भूलि मति जाहु सेनापति समझाए हौं।
करि डारी छाती घोर-घाइन सो राती-राती,
मोहिं धौं बतावौ कौन भाँति छूटि आए हौ।
पौढ़ो बलि सेज, करौं औषद की रेज बेगि,
मैं तुम जियत पुरबीले पुन्य पाये हौं।
कीने कौन हाल! वह बाघिन है बाल! ताहि,
कोसति हौं लाल, जिन फारि फारि खाए हौं॥

× × ×

फूलन सौं बाल की बनाइ गुही बेनी लाल,
भाल दीनी बैंदी मृगमद की असित है।
अंग अंग भूषन बनाइ ब्रज-भूषन जू,
बीरी निज कर कै खवाई अति हित है।
ह्वै कै रस बस जब दीबैं कौं महाउर कै,
सेनापति स्याम गह्यौ चरन ललित है।

चूमि हाथ नाथ के लगाइ रही आँखिन सौं,
कही प्रानपति यह अति अनुचित है ॥

× × ×

सहज विलास हास हिय के हुलास तजि,
दुख के निवास प्रेमपास परियत है।
भूलि जात धाम सोच बाढ़त है आठौ जाम,
बिना काम तरसि तरसि मरियत है।
मिलन न पैयै विन मिले अकुलैयै अति,
सेनापति ऐसे कैसे दिन भरियत है।
कहा कहौं तोसौं मन, बात सुनि मो सौं,
जाकौं देखिबो कठिन तासो नेह करियत है ॥

× × ×

लाल लाल टेसू फूलि रहे हैं बिसाल संग,
स्याम रंग भेंटि मानौं मसि मैं मिलाए हैं।
तहाँ मधु काज आइ बैठे मधुकर-पुंज,
मलय पवन उपबन-वन धाए हैं।
सेनापति माधव महीना मैं पलास तरु,
देखि देखि भाउ कविता के मन आए हैं।
आधे अनसुलगि, सुलगि रहे आधे, मानौ,
विरही दहन काम क्वैला परचाए हैं ॥

× × ×

वृष कौ तरनि तेज सहसौं किरन करि,
ज्वालन के जाल बिकराल बरसत है।
तचति धरनि जगजरत झरनि, सीरी,
छाँह कौ पकरि पंथी-पंछी विरमत है।
सेनापति नैंक दुपहरी के ढरत, होत
धमका विषम, ज्यौं न पात खरकत है।
मेरे जान पौनौं सीरी ठौर कौ पकरि कौनौं,
घरी एक बैठि कहूँ घामै बितवत है ॥

× × ×

दुरि जदुराई सेनापति सुखदाई देखौ,
आई रितु पावस, न पाई प्रेम-पतियाँ।

धीर जलधर की, सुनत धुनि धरकी, है
दरकी सुहागिन की छोह भरी छतियाँ।
आई सुधि वर की, हिए में आनि खरकी, तू
मेरी प्रान प्यारी यह पीतम की वतियाँ।
बीती औधि आवन की, लाल मनभावन की,
डग भई बावन की, सावन की रतियाँ॥

× × ×

गगन अँगन घनाघन तैं सघन तम,
सेनापति नैंक हू न नैन मटकत हैं।
दीप की दमक, जीगनान झमक, छाँड़ि
चपला चमक और सौं न अटकत हैं।
रवि गयौ दबि मानौं ससि सोऊ धसि गयौ,
तोरि तोरि डारे से न कहूँ फटकत हैं।
मानौं महा तिमिर तैं, भूलि परी बात तातै,
रबि ससि तारे कहूँ भूले भटकत हैं॥

× × ×

नीके हौ निठुर कंत मन लै पधारे अंत,
मैन मयमंत, कैसे बासर बराइहौं।
आसरौ अवधि कौ, सो अवध्यौ बितीत भई,
दिन दिन पीत भई रही मुरझाइ हौं।
सेनापति प्रानपति साँचो हौं कहति, एक
पाइ कै तिहारे पाइ प्रानन कौ पाइ हौं।
इकली डरी हौं, धनु देखि कै डरी हौं, खाइ,
बिस की डरी हौं, घनस्याम मरि जाइहौं॥

× × ×

सेनापति उनए नए जलद सावन के,
चारि हू दिसान घुमरत भरे तोइ कै।
सोभा सरसाने, न बखाने जात काहू भाँति,
आने हैं पहार मानौं काजर के ढोइ कै।
घन सौं गगन छयौ, तिमिर सघन भयौ,
देखि न परत मानौ रवि गयौ खोइ कै।
चारि मास भरि स्याम निसा के भरम करि,
मेरे जान याही तैं रहत हरि सोइ कै॥

× × ×

पावस निकास तातैं पायौ अवकास, भयौ,
जोन्ह कौ प्रकास, सोभा ससि रमनीय कौं।
विमल अकास होत बारिज विकास, सेना-
पति फूले कास हित हंसन के हीय कौं।
छिति न गरद, मानौं रँगे हैं हरद सालि,
सोहत जरद, को मिलावै हरि पीय कौं।
मत्त हैं दुरद, मिट्यौ खंजन दरद, रितु,
आई है सरद सुखदाई सब जीय कौं॥

× × ×

खंड खंड सब दिग-मंडल जलद सेत,
सेनापति मानौ स्रृंग फटकि पहार के।
अंबर अडंबर सौं उमड़ि घुमड़ि, छिन
छिछकै छछारे छिति अधिक उछार के।
सलिल सहल मानौं सुधा के महल नभ,
तूल के पहल किधौं पवन अधार के।
पूरब कौं भाजत हैं, रजत से राजत हैं,
गग गग गाजत गगन घन क्वार के॥

× × ×

कातिक की राति थोरी थोरी सियरात सेना-
पति है सुहाति सुखी जीवन के गन हैं।
फूले हैं कुमुद; फूली मालती सघन वन,
फूलि रहे तारे मानौ मोती अनगन हैं।
उदित विमल चंद चाँदनी छिटक रही,
राम कैसो जस अध ऊरध गगन हैं।
तिमिर हरन भयौ, सेत है बरन सब,
मानहु जगत छीर सागर मगन हैं॥

× × ×

बरन्यौ कविन कलाधर कौं कलंक, तैसौ
को सकै बरनि कवि हू की मति छीनी है।
सेनापति बरनी अपूरब जुगति ताहि,
कोविद विचारौ कौन भाँति बुद्धि दीनी है।
मेरे जान जेतिक सौ सोभा होत जानी राखि,
तेतिकै कलान रजनी की छबि कीनी है।

वढ़ती के राखे, रैनि हू तैं दिन ह्वै है, यातै,
आगरी मयंक तैं कला निकासि लीनी है ॥

× × ×

सीत कौ प्रबल सेनापति कोपि चढ़यौ दल,
निबल अनल गयौ सूर सियराइ कै।
हिम के समीर तेई बरसैं विषम तीर,
रही है गरम भौन कोनन मैं जाइ कै।
धूम नैन बहैं लोग आगि पर गिरे रहैं,
हिये सो लगाए रहैं नैकु सुलगाइ कै।
मानौ भीत, जानि महासीत तैं पसारि पानि,
छतियाँ की छाँह राख्यौ पाउक छिपाइ कै ॥

× × ×

सिसिर मैं ससि कौ सरूप पावै सबिताऊ,
घामहूँ मैं चाँदनी की दुति दमकति है।
सेनापति होत सीतलता है सहसगुनी,
रजनी की झाईं वासर मैं झमकति है।
चाहत चकोर सूर ओर दृग-छोर करि,
चकवा की छाती तजि धीर धसकति है।
कंद के भरम होत मोद है कमोदनी कौं,
ससि संक पंकजिनी फूलि न सकति है ॥

× × ×

सिसिर तुषार के बुखार से उखारत है,
पूस बीते होत सून हाथ पाइ ठिरि कै।
द्यौस की छुटाई की बड़ाई बरनी न जाय,
सेनापति पाई कछू सोचि कै सुमिरि कै।
सीत हैं सहस-कर सहस-चरन ह्वै कै,
ऐसे जात भाजि तम आवत है घिरि कै।
जौलौं कोक कोकी कौ मिलत तौलौं होति राति,
कोक अधबीच ही ते आवत है फिरि कै ॥

× × ×

अब आयो माह प्यारे लागत हैं नाह, रवि
करत है दाह जैसो अवरेखियत है।

जानियै न जात बात कहत बिलात दिन,
छिन सौं न तातैं तनकौं बिसेखियत है।
कलप सी राति, सो तौ सोए न सिराति क्यौं हू,
सोइ सोइ जागे पै न प्रात पेखियत है।
सेनापति मेरे जान दिन हूँ तैं राति भई,
दिन मेरे जान सपने मैं देखियत है॥

× × ×

तोर्यो है पिनाक, नाकपाल बरसत फूल,
सेनापति कीरति बखानै रामचंद की।
लै कै जयमाल, सिय बाल है बिलोकी छवि,
दसरथ लाल के बदन अरविन्द की।
परी पेम-फंद, उर बाढ़्यौ है अनंद अति,
आछी मंद मंद चाल चलत गयंद की।
बरन कनक बनी, बानक बनक आई,
झनक मनक बेटी जनक नरिंद की॥

× × ×

सीता अरु राम, जुवा खेलत जनक धाम,
सेनापति देखि नैन नैंवहू न मटके।
रूप देखि देखि रानी, वारि फेरि पियैं पानी,
प्रीति सों वलाइ लेत कैयौ कर चटके।
पहुँची के हीरन में दंपति की झाँई परी,
चंद बिंब मानौ मध्य मुकुर निकट के।
भूलि गयो खेल दोऊ देखत परसपर,
दुहुँन के दृग प्रतिबिंबन सौं अटके॥

× × ×

जनक नरिंद नंदिनी कौं बदनारबिंद,
सुन्दर बखान्यौ सेनापति वेद चारि कै।
बरनी न जाई जाकी नैकहू निकाई, लौन,
राई करि पंकज निसंक डारे वारि कै।
बार बार जाकी बराबरि कौं बिधाता अब,
रचि पचि बिधु कौं बनावत सुधारि कै।
पून्यौ कौं बनाइ जब जानत न वैसो भयौ,
कुहू के कपट तब डारत बिगारि कै॥

× × ×

पान चरनामृत कौ, गान गुन गनन कौं,
हरि कथा सुनि सदा हिय लौं हुलसिवौ।
प्रभु के उतीरन की, गूदरीयौ चीरन की,
भाल, भुज, कंट, उर, छापन कौं लखिवौ।
सेनापति चाहत है सकल जनम भरि,
वृन्दावन सीमा तैं न वाहरि निकसिवौ।
राधा-मन-रंजन की, सौभा नैन-कंजन की,
भाल गरे गुंजन की, कुंजन कौं वसिवौ॥

× × ×

तुम करतार जन रच्छा के करनहार,
पुजवनहार मनोरथ चित चाहे के।
यहि जिय जानि सेनापति है सरन आयौ,
हूजियै सरन महा पाप-ताप दाहे के।
जौ कौहू कहौ कि तेरे करम न तैसे, हम
गाहक हैं सुकृति भगति रस लाहे के।
आपने करम करि हौं ही निवहौंगौं, तौव,
हौं हो करतार, करतार तुम काहे के॥

× × ×

ग्राह के गहे ते अति व्याकुल विहाल भयौ,
प्रान पत ताने रह्यौ एक ही उसास कौं।
तहाँ सेनापति, महाराज विना और कौन,
धाइ आइ साँकरे सँघाती होइ दास कौं।
गाढ़ मैं गयंद गरुड़ध्वज के पूजिवो कौं,
जो लौं कोई कमल लपकि लेई पास कौं।
तौं लौं, ताही वार, ताही वारन के हाथ पर्‌यौ,
कमल के लेत हाथ कमलानिवास कौं॥

× × ×

चोर के हरत वलवीर जू वढ़ायो चीर,
दौरि मारि डार्‌यौ न दुसासन प्रगटि कै।
सेनापति जानि याकौ जान्यौ है निदान, सुनि,
जुगति विचारो जौव रावरे मन टिकै।
जोई मुख माँग्यो, सोई दीन्यो वरदान, आप
दीनी द्रोपदी कौं, रही पट सौं लपटि कै।

रोवत मैं श्रीत्र, कहत कही छीवर, सु
मेरे जान यातैं चले छीवर उपटि कै ॥

देव

हेरे हंस सारस सरोजन सरोवर मैं,
कोकन के श्रोकन ससोक सुख दैनी के।
सार्यो सुक मोरन चितै पिक चकोरन,
बुलावै व्याल बालन उन्हारि बर बैनी के।
व्याकुल भये री बलबीर कुलकानि तजि,
हानि न गिनत श्रनहोनी किधौं होनी के।
रोके मृग मारग बिलोकै मृगराज मृग,
भेद-मृग खोजत है भेद मृगनैनी के ॥

× × ×

श्राई हुती श्रन्हवावन नाइनि सोंधे लिये कर सूधे सुभाइनि।
कंचुकी छोरि उतै उबटैबे को ईंगुर से श्रंग की सुख दाइनि।
देव स्वरूप की रासि निहारति पाँय ते सीस लौं सीस ते पाँइनि।
ह्वै रही ठौरही ठाढ़ी ठगी सी हंसै कर ठोढ़ी धरै ठकुराइनि ॥

× × ×

पीछे परवीनै बीने संग की सहेली, आगे--
भार डार भूषन डगर डारै छोरि-छोरि।
मोरै मुख मोरनि त्यों चौंकति चकोरनि, त्यों--
भौंरनि की भीर भीरु देखै मुख मोरि-मोरि।
एक कर आली कर ऊपर ही धरे, हरे--
हरे पग धरे देव चलै चित चोरि-चोरि।
दूजे हाथ साथ लै सुनावति वचन, राज--
हंसनि चुनावति मुकुत माल तोरि-तोरि ॥

× × ×

कुल की सी करनी कुलीन की सी कोमलता,
सील की सी सम्पति सुशील की सी कामिनी।
दान को सो आदरु उदारताई सूर की सीं,
गुनी की लुनाई गुनमंती गजगामिनी।

ग्रीषम को सलिल सिसिर को गों घाम देव,
इंउत हसंती जलदागम की दामिनी।
पून्यो को सो चाँद, परभात को सी सूरज,
सरद को सो वासरु वसन्त की सी जामिनी ॥

× × ×

देव नभ मन्दिर मैं वैठार्यो पुहुम पीठ,
सिगरे सलिल अन्हवाय उमहत हौं।
सकल महीतल के मूल फल फूल दल,
सहित सुगन्धन चढ़ावन चहत हौं।
अमित अनन्त धूप दीपक-अखंड जोति,
जल-थल अन्न दै प्रसन्नता लहत हौं।
ढारत समीर चौंर कामना न मेरे और,
आठौ जाम राम तुम्हैं पूजत रहत हौं ॥

× × ×

फटिक सिलानि सों सुधार्यो सुधा-मन्दिर,
उदधि दधि कौ-सो अधिकाई उमगै अमंद।
वाहेर ते भीतर लौं भीति न देखैए 'देव',
दूध को सो फेनु फैलो आँगन फरसबंद।
तारा सी तरुनि तामैं ठाढ़ी झिलमिल होति,
मोतिन की जोति मिली, मल्लिका को मकरंद।
आरसी-से अंबर मैं आभा सी उज्यारी लगै,
प्यारी राधिका को प्रतिविम्ब सो लगत चंद ॥

× × ×

बँसुरी सुनि देखन दौरि चली, जमुना जल के मिस वेगि तवै।
'कवि देव' सखी के सकोचन सों करि ऊठ सु औसर को वितवै।
वृषभान कुमारि मुरारि की ओर, विलोचन कोरनि सों चितवै।
चलिवे को धरै न करै मन नैक, धरै फिर फेरि भरै रितवै ॥

× × ×

लखि सासहि हास छिपाइ रहै ननदी लखि जी उपजावति भीतिहि।
सौतिन त्यौं सतराइ चितौति जिठानिन ज्यौं जिय ठानति प्रीतिहि।
दासिन हू सों उदास न देव वढ़ावति प्यारे सों प्रेम प्रतीतिहि।
धाय सों पूछति वातैं बिनै की सखीन सों सीखै सुहाग की रीतिहि ॥

× × ×

कुंजन के कोरे मन केलि रस बोरे लाल,
तालन के खोरे बाल आवति है नित को।
अमिय निचोरे कल बोलनि निहोरे नेक,
सखिन के डोरे देव डोले जित तित को।
थोरे थोरे जोवन बिथोरे देत रूप रासि,
गोरे मुख भोरे हँसि जोरे लेति हित को।
तोरे लेति रति दुति मोरे लेति मति गति,
जोरे लेति लोक लाज चोरे लेति चित को॥

× × ×

सुघर सुनार रूप सुवरण चोर दृग,
कोर हरि लेत रव राखत न राई सी।
ये हो बलबीर कीसो बलबीर कैसो काम,
आखिर अहीर पीर जानौ न पराई सी।
घर घरिया मै घुरी जारी मै उघारि आई,
फैली जाति फूलन ही फिरति गुराई सी।
देव जू सुहाग रंगि आँचन तचाई,
सोऽव रंग न सिराति तची कंचन-सराई सी॥

× × ×

मंजुल मंजरी पंजरी सी ह्वै मनोज के ओज सम्हारति चीर न।
भूख न प्यास न नींद परै परी प्रेम-अजीरन के जुर जीरन।
'देव' घरी-पल जात घुरी अँसुवान के नीर उसास समीरन।
आहन जाति, अहीर अहे तुम्हैं कान्ह कहा कहौं काहू की पीर न॥

× × ×

आई बरसाने ते बोलाई वृषभानु सुता,
निरखि प्रभानि प्रभा भानु की अथै गई।
चक चकवानि के चुकाये चक चोटनि सों,
चौंकत चकोर चकचौधी सी चकै गई।
नन्दजू के नन्दन के नैननि अनन्दमयी,
नन्दजू के मन्दिरनि चन्दमयी छै गई।
कंजनि कलिनमयी गुंजनि अलिनमयी,
गोकुल की गलिन नलिनमयी कै गई॥

× × ×

'देव' मैं सीस बसायो सनेह सों भाल मृगम्मद बिंदु कै भाख्यौ।
कंचुकी मैं चुपर्‍यो करि चोवा लगाय लियो उर सों अभिलाख्यौ।

लै मखतूल गुहे गहने, रस मूरतिवंत सिंगार कै चाख्यौ।
साँवरे लाल को साँवरो रूप मैं नैननि को कजरा करि राख्यौ॥

× × ×

सूझत न गात चीत आई अधरात अरु,
सोये सब गुरुजन जानि कै बगर के।
छिपि कै छबीली अभिसार को किंवार खोले,
खुलिगे खजाने चारु चन्दन अगर के।
'देव' कहै भौंर गुंज आये कुंज कुंजन ते,
पूछि पूछि पीछे परे पहरू डगर के।
देवता कि दामिनी मसाल किधौं जोति-जाल,
झगरे मचत जागे सगरे नगर के॥

× × ×

औचक अगाध सिंधु स्याही को उमड़ि आयो,
तामैं तीनों लोक बूड़ि गये एक संग मैं।
कारे कारे आखर लिखे जु कारे कागर,
सुन्यारे करि बाँचै कौन जाँचै चित भंग मैं।
आँखिन में तिमिर अमावस की रैनि जिमि,
जम्बु रस बुंद जमुना जल तरंग मैं।
यों ही मन मेरो मेरे काम को न रह्यो माई,
स्याम रंग ह्वै करि समान्यो स्याम रंग मैं॥

× × ×

वारैं कोटि इंदु अरविन्द रसबिन्द पर,
मानै न मलिन्द बिन्दु सम कै सुधासरो।
गलै मल्ली मालती कदम्ब कचनार चम्पा,
चंपेहू न चाहै चित चरन टिकासरो।
पदुमिनि तू ही षटपदु को परम पदु,
'देव' अनुकूल्यो और फूल्यो तौ कहा सरो।
रग, रिस, रास, रोस आसरो सरन बिसे—
बीसो बिसवास रोकि राख्यो निसि बासरो॥

× × ×

देखे अनदेखे दुखदानि भये सुखदानि,
सूखत न आँसू सुख सोइबो हरे परो।
पानी, पान, भोजन, सुजन गुरजन भूले,
'देव' दुरजन लोग लरत खरे परो।

लागो कौन पाप, पल एको न परति कल,
दूर गयो गेह नयो नेह नियरे परो।
होतो जो अजान, तौ न जानतो इतीक विथा,
मेरे जिय जान तेरो जानिवो गरे परो॥

× × ×

कोमल कोमलता दल दाम कि, कामिनि काम कमान गनाई।
सो दुख दूखि परो तन सूखि मरैं कि जियै सु परै न जनाई।
मोहन मित्र चितेरे विचित्र कि चित्रिन देव चरित्र तनाई।
सेज पै ज्यों रँगरेग मनोज सलोनी सी सोने की वेलि बनाई॥

× × ×

नंद घरै वृषभान के भौन ते जान कह्यो हरि देव सुहाँसुनि।
ताही घरी ते छरी पल लाज धरी के घरी उघरी बतियाँ सुनि।
प्रात अरंभ की खंभ लगी निरदंभ निरंभ सम्हारे न साँसुनि।
ठाढ़ी बड़े खन की बरसैं बड़री अँखियान वड़े वड़े आँसुनि॥

× × ×

सूनौ कै परम पदु, ऊनो कै अनंत मदु,
दूनौ कै नदीस-नदु इंदिरा फुरै परी।
महिमा मुनीसन की, सम्पत्ति दिगीसन की,
ईसन की सिद्धि, ब्रज-वीथी विथुरै परी।
भादौं की अँधेरी अधराति, मथुरा के पथ,
आई मनोरथ, 'देव' देवकी दुरै परी।
पारावार पूरन, अपार, परब्रह्म रासि,
जसुदा के कोरे एक बारक कुरै परी॥

× × ×

वरुनी वघम्बर में, गूदरी पलक दोऊ,
कोये राते बसन भगौहैं वेष रखियाँ।
बूड़ी जल ही में, दिन जामिनि हूँ जागैं भौंहैं,
धूम सिर छायौ विरहानल विलखियाँ।
अँसुवा फटिक-माल, लाल डोरे सेली पैन्हि,
भई हैं अकेली तजि चेली संग सखियाँ।
दीजिये दरस 'देव' कीजिये सँयोगिनी ये,
जोगिनी ह्वै बैठी हैं वियोगिनी की अँखियाँ॥

× × ×

जब तें कुंवर-कान्ह रावरी कला-निधान,
कान परी वाके कहूँ सुजस कहानी सी।
तब ही तें 'देव' देवता सी हँसति सी,
खीझति सी, रीझति सी, रूसति रिसानी सी।
छोही सी, छली सी, छीनि लीन्ही सी, छकी सी छीन,
जकी सी, टकी सी, लागि थकी थहरानी सी।
बांधी सी, दंधी सी, विष बूड़ी सी, विमोहित सी,
वैठी वह वकत, विलोकत विकानी सी॥

× × ×

पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि किंकिन के धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लसै पट पीत, हिये हुलसै बनमाल सुहाई।
माथे किरीट बड़े दृग चंचल मन्द हँसी मुखचंद जुन्हाई।
जै जग - मन्दिर - दीपक सुन्दर श्री ब्रजदूलह देव सहाइ॥

× × ×

मूरति जो मन मोहन की मन-मोहनी के थिरु ह्वै थिरकी सी।
'देव' गुपाल के बोल सुने छतियाँ सियराति सुधा छिरकी सी।
नीके झरोखनि/ झाँकि सकै नहिं, नैनन लाज-घटा घिरकी सी।
पूरन प्रीति हिये हिरकी, खिरकी-खिरकीन फिरै फिरकी सी॥

× × ×

धार मैं धाय धँसी निरधार ह्वै, जाय फँसी उकसी न अंधेरी।
री अँगराय गिरी गहिरी, गहि फेरे फिरी न घिरी नहिं घेरी।
'देव' कछू अपनो बसु ना, रस-लालच लाल चितै भई चेरी।
वेगि ही बूड़ि गई पँखियाँ, अँखियाँ मधु की मखियाँ भई मेरी॥

× × ×

अंभिल ह्वै आई, झुकि उझकी झरोखा, रूप
झरसो झलकि गई, झलकनि झाँई की।
पैने, अनियारे पै सहज कजरारे चख,
चोट सी लगाई चितवनि चंचलाई की।
कौन जाने को हो उड़ि लागी दीठि मोही उर,
रहै अवरोही 'देव' निधि ही निकाई की।
अब लगि आंखिनि की पूतरो-कसौटिन मैं,
लागो रहै लीक वाकी सोने सी गुराई की॥

× × ×

माखन सों मन दूध सों जोवन, है दधि सों अधिकौ उर ईठी।
जा छवि आगे छपाकर छाँछि, समेत सुधा, वसुधा सब सीठी।
नैनन नेह चुवै, कवि 'देव', बुझावत बैन वियोग अँगीठी।
ऐसी रसीली अहीरी अहै, कहौ क्यों न लगै मनमोहनै मीठी॥

× × ×

डार द्रुम-पालन, बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झिंगूला सोहै तन छवि भारी दै।
पवन झुलावै, केकी-कीर बतरावैं 'देव',
कोकिन हलावै-हुलसावै कर तारी दै।
पूरित पराग सों उतारो करै राई नोन,
कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक वसंत ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाव चटकारी दै॥

× × ×

ऐसो जो हौं जानतो कि जैहै तू विषै के संग,
एरे मन मेरे, हाथ-पाँव तेरे तोरतो।
आजु लौं हौं कत नर-नाहन की नाहीं सुनि,
नेह सों निहारि हारि वदन निहोरतो।
चलन न देतो 'देव' चंचल अचल करि,
चाबुक चितावनीन मारि मुँह मोरतो।
भारो प्रेम-पाथर नगारो दै गरे सों बाँधि,
राधावर - विरद के बारिध मैं बोरतो॥

× × ×

कोऊ कहौ कुलटा, कुलीन-अकुलीन कहौ,
कोऊ कहौ रंकिनि कलंकिनि कुनारी हौं।
कैसो परलोक, नरलोक, वर लोकन मैं,
लीन्हीं मैं अलीक लोक-लीकन तें न्यारी हौं।
तन जाहि, मन जाहि, देव गुरुजन जाहि,
जीव किन जाहि, टेक टरति न टारी हौं।
वृन्दावन वारी बनवारी की मुकुट वारी,
पीतपटवारी वाहि मूरति पै वारी हौं॥

× × ×

सुनि कै धुनि चातक मोरनि की चहुँ ओरन कोकिल कूकनि सों।
अनुराग भरे हरि बागन में सखि रागत राग अचूकनि सों।

कवि 'देव' घटा उनई जु नई वन भूमि भई दल दूकनि सों।
रंगराती हरी हहराती लता झुकि जाती समीर की झूकनि सों॥

× × ×

झहरि झहरि झीनी बूँदनि परति मानो,
घहरि घहरि घटा घेरी है गगन में।
आनि कह्यो स्याम मोसों 'चलो झूलिबे कों आजु',
फूली न समानी भई ऐसी हों मगन मैं।
चाहत उठ्योई उठि गई सो निगोड़ी नींद,
सोय गये भाग मेरे जागि वा जगन मैं।
आँखि खोल देखौं तो न घन हैं, न घनस्याम,
छाई वेई बूँदें मेरे आँसू ह्वै दृगन मैं॥

× × ×

कान्हमई वृषभान सुता भई प्रीति नई उनई जिय जैसी।
जानै को देव विकानी सी डोलै लगै गुरु लोगनि देखे अनैसी।
ज्यों-ज्यों सखी वहरावति वातन त्यों-त्यों बकै वह बावरी ऐसी।
राधिका प्यारी हमारी सों तू कहि काल्हि की बेनु बजाई मैं कैसी॥

× × ×

राधिका कान्ह को ध्यान करै तब कान्ह ह्वै राधिका के गुन गावै।
त्यौं अँसुवा बरसै बरसाने को पाती लिखै लिखि राधे को ध्यावै।
'राधे' ह्वै जाय घरीक मैं 'देव' सु प्रेम की पाती लै छाती लगावै।
आपुने आपुही मैं उरझै सुरझै बिरुझै समुझै समुझावै॥

× × ×

लाल बिना बिरहाकुल बाल बियोग की ज्वाल भई झुरि झूरी।
पानी सों पौन सों, प्रेम कहानी सों, पान ज्यों प्रानन पोषत हूरी।
'देव' जू आजु मिलाप की औधि सुबीतत देखि बिसेखि बिसूरी।
हाथ उठायो उड़ाइबे को उड़ि काग करे परीं चारिक चूरी॥

× × ×

फूल से फैलि परे सब अंग दूकूलन मैं दुति दौरि दुरी है।
आँसुन से जल-पूर मैं पैरति साँसन सों सनि लाज लुरी है।
'देव' जू देखिये दौरि दसा ब्रज पौरि बिथा की कथा बिथुरी है।
हेम की बेलि भयी हिम-रासि घरीक में घाम सों जाति घुरी है॥

× × ×

आओ ओट रावटी झरोखे झाँकि देखौ 'देव',
देखिबे को दाउँ फेरि दूजे द्यौस नाहिने।
लहलहे अङ्ग रंगमहल के संगन में,
ठाढ़ी वह वाल लाल पगन उपाहिने।
लोने मुख लचनि, नचनि नैन-कोरनि की,
उरति न और ठौर सुरति सराहिने।
वाम कर वार हार अञ्चल सम्हारो करै,
कैयो छन्द कंदुक उछारै कर दाहिने॥

× × ×

एकै अभिलाख लाख-लाख भाँति लेखियत,
देखियत दूसरों न 'देव' चराचर मै।
जासों मन राँचै तासों तनु मनु राँचै,
रुचि भरि कै उघारि जाँचै साँचै करि कर मैं।
पाँचन के आगे आँच लागे ते न लौटि जाय,
साँच देइ प्यारे की सती लौ बैठि सर मैं।
प्रेम सो कहत कोऊ ठाकुर न ऐंठौ सुनि,
बैठो गड़ि गहिरे तौ पैठो प्रेम घर मैं॥

× × ×

'देव' सबै सुखदायक संपति, संपति कौ सुख दंपति जोरी।
दंपति दीपति, प्रेम-प्रतीति, प्रतीति की रीति सनेह-निचोरी।
प्रीति तहाँ गुन-रीति-विचार, विचार की बानी सुधा रस बोरी।
बानी को सार बखान्यौ सिंगार, सिंगार को सार किसोर-किसोरी॥

× × ×

धाये फिरौ व्रज मे, बधाये नित नंद जू के,
गोपिन सधाये नचौ गोपन की भीर में।
देव मति मूढ़ै तुम्हैं ढूँढ़ै, कहाँ पावै, चढ़े
पारथ के रथ, पैठे जमुना के नीर में।
आँकुस ह्वै दौरि हरनाकुस को फार्‍यौ उर,
साथी न पुकार्‍यौ, हते हाथी तिय तीर में।
विदुर की भाजी, वेर भीलनी के खाय,
विप्र चाउर चवाय, दुरे द्रोपदी के चीर में॥

× × ×

लागत समीर लंक लहकै समूल अंग,
फूल से दुकूलन सुगन्ध विथुरो परै।
इन्दु सो बिदन मंद हाँसी सुधा-बिन्दु,
अरबिन्दु ज्यों मुदित मकरन्दन मुरो परै।
लज़ित लिलार श्रम झलक अलक भार,
मग में धरत पग जावक धुरो परै।
देव मनि नूपुर, पदुम पद दू पर ह्वै,
भू पर अनूप रूप रंग निचुरो परै॥

× × ×

कोयन ज्योति चहैं चपला सुर-चाप सुभू रुचि कज्जल कौंदो।
बुंद वड़े वरसै असुवाँ हिरदै न बसै निरदै पति जादौ।
देव समीर नहीं दुनिये धुनिये सुनिये कलकंठ निनादौ।
तारे खुले न घिरी वरुनी घन नैन भए दोउ सावन भादौ॥

× × ×

आँसुन के सलिल सिरावती न छाती जो,
उसास लागि कामागि भसम ही तो ततो।
केसरि कुसुम हू ते कोरी जो न होत, तौ
किसोरी सों कुसुमसर कौनी भाँति जीततो।
'देव' जू सराहिये हमारो न्याउ ह्याँऊ करि,
नाहित अहित चेत करतो जो चीततो।
कोकिला के टेरत निकरि जातो जीव,
जो तिहारे गुन गनत उघेरत न बीततो॥

× × ×

पीछे तिरीछे कटाछन सों इतवै चितवै री लला ललचौहैं।
चौगुनो रंग चवायनि के चित, चाह चढ़े हैं चवाउ मचौहैं।
जोवन आयो न पाप लग्यो कवि देव रहैं गुरु लोग रिसौहैं।
जी मैं लजैये जु जैये कहूँ, तित पैये कलंक चितैये जु सौहैं॥

× × ×

'देव' जुपै चित चाहिये नाह तौ नेह निबाहिये देह मर्‌यो परै।
त्यों समुझाइ सुझाइये राह अमारग जो पग धोखे धर्‌यो परै।
नीके में फीके ह्वै आँसू भरौ कत ऊँची उसास गरे क्यों भर्‌यो परै।
रावरो रूप पियो अँखियान भर्‌यो सु भर्‌यो उबर्‌यो सु ढर्‌यो परै॥

× × ×

अनुराग के रंगनि रूप तरंगनि अङ्गनि ओप मनो उफनी।
कवि देव हिये सियरानी सबै सियरानी को देखि सुहाग सनी।
वर धामन बाम चढ़ी, बरसैं मुसुकानि सुधा घनसार घनी।
सखियान के आनन इंदुन तें अँखियान की बन्दनवार तनी॥

× × ×

विद्रुम और बँधूक जपा गुललाला गुलाब की आभा लजावति।
देव जू कंज खिले टटके हटके भटके खटके गिरा गावति।
पाँव धरे अलि ठौर जहाँ तेहि ओर ते रंग की धार सी धावति।
मानो मजीठ की माठ ढुरी एक ओर ते चाँदनी बोरति आवति॥

× × ×

खेलत फाग खिलार खरे अनुराग भरे बड़ भाग कन्हाई।
एक ही भौन में दोहुन देखि के 'देव' करी इक चातुरताई।
लाल गुलाल सों लीन्ही मुठी भरि बाल की भाल की ओर चलाई।
वा द्रिग मूँदि उतै चितई इन भेंटी इतै वृषभान की जाई॥

× × ×

देव न देखति हौं दुति दूसरी देखे हैं जा दिन तें ब्रजभूप मैं।
पूरि रही री वहै पुर कानन आनन ध्यानन ओप अनूप मैं।
ये अखियाँ सखियाँ हैं हमारी सो जाइ मिली जलबूँद ज्यों कूप मैं।
कोर करो नहिं पाइयै केहूँ समाइ गयीं ब्रजराज के रूप मैं॥

× × ×

को बचिहै यह बैरी बसंत पै आवत जो वन आगि लगावत।
बौरत ही करि डारत बौरी, भरे विष बैरी रसाल कहावत।
होत करेजन की किरचैं कवि देव जू कोकिल बैन सुनावत।
बीर की सौं बलवीर बिना उड़ि जायँगे प्रान अबीर उड़ावत॥

× × ×

बड़ोई प्रताप, बड़ोई सुहाग, बड़ोई प्रभाव सुभाविक राखैं।
बड़ी गुनमान बड़ीयै सुजान सरूप निधान पुरानन भाखैं।
बड़े बड़े देव अदेवन की घरनी मुख देखन को अभिलाखैं।
बड़ो दिलदार, बड़े बड़े हार, बड़े बड़े बार, बड़ी बड़ी आँखैं॥

आलम

जा थल कीन्हें विहार अनेकन ता थल काँकरी बैठि चुन्यो करैं।
जा रसना सों करी बहु बातन ता रसना सों चरित्र गुन्यो करैं।

आलम जौन से कुंजन में करी केलि तहाँ अब सीस धुन्यो करैं।
नैनन में जो सदा रहते तिनकी अब कान कहानी सुन्यो करैं॥

× × ×

कैधौं मोर सोर तजि गये री अनत भाजि,
कैधौं उत दादुर न बोलत हैं ए दई।
कैधौं पिक चातक महीप काहू मारि डारे,
कैधौं बकपाँति उत अन्तगति ह्वै गई।
'आलम' कहै, हो आली! अजहूँ न आये प्यारे,
कैधौं उत रीति बिपरीत विधि ने ठई।
मदन महीप की दोहाई फिरिबे तें रही,
जूझि गये मेघ कैधौं दामिनी सती भई॥

× × ×

सौरभ सकेलि मेलि केलि ही की वेलि कीन्हीं,
सोभा की सहेली सु अकेली करतार की।
जित ढरकैं हो कान्ह तितही ढरकि जाय,
साँचे ही सुढारी सब अंगनि सुढार की।
तपनि हरति कवि आलम परस सीरो,
अति ही रसिक रीति जानैं रस-चार की।
ससि हूँ को रसु सानि सोने को सरूप लै के,
अति ही सरस सों सँवारी घनसार की॥

× × ×

अंग नई जोति लै वरंगना विचित्र एक,
आंगन मै अंगना अनंग की सी ठाढ़ी है।
उजरई की उज्यारी गोरे तन सेत सारी,
मोतिन की जोति सौ जुन्हैया मानो वाढ़ी है।
'आलम' सुआली बनमाली देखि चलि दुति,
सुगढ़ कनक की सी रूप गुन गाढ़ी है।
देह की बनक वाके चीर में चमक छाई,
छीरनिधि मथि किधौं चाँद चीरि काढ़ी है॥

× × ×

ससि तें सरस मुख सारस से राजैं नैन,
जोन्ह तें उजारो रूप रवनि रसाल सी।
रति हू तें नीकी प्यारी प्यारे कान्ह जाके पाछे,
वेनी की बनक जेलैं मानो अलि आलसी।

सारी सेत सोहे कवि 'आलम' बिहारी संग,
चलति बिसद गति आतुर उताल सी।
फूल ही के भार भरि सीसफूल फूलि रहे,
फूली सांझ, फूली आवे फूलन की माल सी॥

× × ×

ताती होति छाती छिनु जूड़ियौ ह्वै जाति कछू,
ताती सीरी राती पीरी बूझि न परति है।
'आलम' कहै हो कान्ह कौन बिथा जानों वाकी,
मौन भई काहू की न कानि हू करति है।
आगि सी झँवाति है जू ओरे सी बिलाति है जू,
छिन हू न देखे सुधि बुधि बिसरति है।
अँसुवनि भीजै औ पसीजै त्यौं त्यौं छीजै बाल,
सोने ऐसी लोनी देह लोन ज्यो गरति है॥

× × ×

चंद को चकोर देखै निसि दिन को न लेखै,
चंद बिन दिन छबि लागति अँध्यारी है।
'आलम' कहै हो आली अलि फूल हेत चले,
काँटे सी कँटीली बेलि ऐसी प्रीति प्यारी है।
कारो कान्ह कहत गँवारी ऐसी लागति है,
मोहि वाकी स्यामताई लागति उज्यारी है।
मन की अटक तहाँ रूप को बिचारु कहाँ,
रीझिबे को पैड़ो तहाँ बूझि कछू न्यारी है॥

× × ×

कंचन में आँच गई चूनो चिनगारी भई,
भूषन भये हैं सब दूषन उतारि लै।
बालम बिदेस ऐसी बैस मैन आगि लागै,
जागि जागि उठै हियो बिरह बयारि लै।
अब कत पर घर माँगन है जाति आगि,
आँगन में चौंदु चिनगारो चारि झारि लै।
साँझ भई मौन सँझबाती क्यों न देति है री,
छाती सों छुवाय दियाबाती आनि बारि लै॥

× × ×

प्रेम रंग पगे जगमगे जगे जामिनि के,
जोवन की जोति जागि जोर उमगत हैं।

मदन के माते मतवारे ऐसे घूमत हैं,
झूमत हैं झुकि झुकि झँपि उघरत हैं।
'आलम' सो नवल निकाई इन नैनन की,
पाँखुरी पदुम पै भँवर थिरकत हैं।
चाहत हैं उड़िवे को देखत मयंक मुख,
जानत हैं रैनि ताते ताहि में रहत हैं॥

× × ×

गोरे आँक थोरे लाँक थोरी वैस भोरी मति,
घरी घरी और छवि अंग अंग में जगै।
कहि कवि 'आलम' छलक नैन मैन मई,
मोहनो सुनत बैन मन मोहनै ठगै।
तेरोई मुखारबिंद निंदै अरविन्दै प्यारी,
उपमा को कहै ऐसी कौन जिय में लगै।
चपि गई चन्द्रिकाऊ छपि गई छवि देखि,
भोर को सो चाँद भयो फीको चाँदनी लगै॥

× × ×

तुम विनु कान्ह व्रजनारि मार मारी सुतो,
विरह बिथा अपार छाती क्यों सिराती है।
तरनि सो तमीपति ताही सों तलप तवै,
हेरति ज्यों निसा परी दसौ दिसा ताती है।
कानन में जाय नेकु आनन उघारि देत,
ताकी झार फूली डार दूरि ते सुखाती हैं।
वारि में जो बोरयो तनु लागति ज्यौं चुरै मीन,
वारिज की बेलैं ते विलोके बरी जाती है॥

शेख

रात के उनींदे अलसाते मदमाते राते,
अति कजरारे दृग तेरे यों सुहात हैं।
तीखी तीखी कोरनि करोरि लेत काढ़े जीउ,
केते भये घायल औ केते तलफात हैं।
ज्यों ज्यों लै सलिल चख 'सेख' धोवैं बार बार,
त्यों त्यों बल बुंदन के बार झुकि जात हैं।

कैवर के भाले कैधौं नाहर नहनवाले,
लोहू के पियासे कहूँ पानी तें अघात हैं ॥

× × ×

रति रन विषे जे रहे हैं पति सनमुख,
तिन्है बकसीस बकसी है बिहँसि कै।
करन कों कंकन उरोजन को चन्द्रहार,
कटि माहि किंकिनी रही है अति लसि कै।
सेख कहै आदर सो आनन को दीन्हों पान,
नैनन में काजर बिराजै मन बसि कै।
एरे बैरी बार ये रहे हैं पीठ पाछे,
ताते बार बार बाँधति हौं बार बार कसि कै ॥

× × ×

पैड़ों सम सूधौ बैड़ों कठिन किंवार द्वार,
द्वारपाल नहीं तहाँ सबल भगति है।
'सेख' भनि तहाँ मेरे त्रिभुवन राय हैं जु,
दीनबन्धु स्वामी सुरपतिन को पति है।
बैरी को न बैरु, बरियाई को न परवेस,
हीने को हटक नाहीं छीने को सकति है।
हाथी की हँकार पल पाछे पहुँच न पावै,
चींटी की चिंघार पहिले ही पहुँचति है ॥

× × ×

सघन अखंड पूरि पंकज पराग पत्र,
अच्छर मधुप, शब्द घण्टा झहनातु है।
बिरमि चलत, फूली बेलनि की बासि रस,
मुख के सँदेसे लेत सबनि सुहातु है।
'सेख' कहि सीर सरवरनि के तीर तीर,
पीवत न नीर परसे ते सियरातु है।
आवत बसन्त मन भावन घने जतन,
पावन परेवा मानो पाती लीने जातु है ॥

× × ×

जब सुधि आवै तब तन बिनु सुधि हो,
बन सुधि आए मन होत पात-पात है।
'सेख' कहै सरत सहेठ के वे गीत सुनि,
बाँसुरी भी धुनि नटसाल गात-गात है।

तुम कह्यो मानौ, उपदेश हम नाहीं कह्यो,
जैसो एक नाहीं तैसो नाहीं सौक सात।
प्रेम से विरूधौ जनि, हाहा हियौ रूँधौ जनि,
ऊधौ लाख बातनि की सूधि एक बात है॥

× × ×

पसुन में बैठनु, परोसो भये पच्छिनि के,
झारन के डार घर वार करि रहि हैं।
खेल भूमि असिहैं कि विस-बेलि वसिहैं कि,
कुस हैं कि काँसि हैं कौसल्या काहि कहि हैं।
वन, गिरि, बेरनि करेरे दुख कैसे करि,
काँवरे कुमार सुकुमार मेरे सहि हैं।
मैले तन का ए कसैले छाल रूखन के,
वन फल फोर छोलि छाल खाइ रहि हैं॥

घनानन्द

रूपनिधान सुजान सखी जव तें इन नैननि नेकु निहारे।
दीठि थकी अनुराग छकी मति लाज के साज समाज बिसारे।
एक अचंभो भयौ घनआनंद हैं नित ही पल पाट उघारे।
टारैं टरैं नहीं तारे कहूँ सु लगे मनमोहन मोह के तारे॥

× × ×

मीत सुजान अनीति करौ जिन हाहा न हूजिये मोहि अलोही।
दीठि कौं और कहूँ नहिं ठौर फिरी दृग रावरे रूप की दोही।
एक विसास की टेक गहें लगि आस रहे बसि प्रान वटोही।
हौ घनआनंद जीवनमूल दई कत प्यासनि मारत मोही॥

× × ×

प्रेम को महोदधि अपार हेरि कै विचारि,
वापुरो हहरि वार ही तें फिरि आयो है।
ताही एकरस ह्वै विबस अवगाहें दोऊ,
नेही हेरि राधा जिन्हें देखें सरसायौ है।
ताकी कोऊ तरल तरंग संग छूट्यो कन,
पूरि लोकलोकनि उमगि उफनायौ है।

सोई घनआनंद सुजान लागि हेत होत,
ऐसे मथि मन पै सरूप ठहरायौ है॥

× × ×

जे दृग सिराये घनआनंद दरस रस,
ते अब अमोही दुख ज्वाल जारियत है।
नोखे हित-पोखे नित जेई प्रान राखि साथ,
तेई कै अनाथ यों अकेले मारियत है।
कौन कौन बात को परेखो उर आनियै हो,
जान प्यारे कैसें विधि अंक टारियत है।
थाती लौं तिहारी प्रीति छाती पै बिराजि रही,
हेरि हेरि आँसुन समूह ढारियत है॥

× × ×

गोकुल नरेस नंद वंस को प्रसंस वंदि,
सोभा सुखकंद प्रेम अमिय निवास है।
जो नित चकोर चोप तो हित भर्यौ ही रहे,
सुनियै सुजान कौन माधुरी विलास है।
उदित जुन्हाई ऐसे मेरे मन आई,
जैसे बाढ्यौ घनआनंद सुदृष्टि झर आस है।
जगत में जोति एक कीरति की होति है पै,
राधिका तो कीरति के कुल को प्रकास है॥

× × ×

पीरी पीरी देह छीनी राजत सनेह भीनी,
कीनी है अनंग अंग अंग रंग बोरी सी।
नैन पिचकारी ज्यौं चल्यौई करैं दिनरैन,
बगराये बारनि फिरति झकझोरी सी।
कहाँ लौं बखानौं घनआनंद दुहेली दसा,
फागमई भई जान प्यारे वह भोरी सी।
तिहारे निहारे बिन प्राननि करत हीरा,
विरह अंगार निमगारि हिय होरी सी॥

× × ×

चातिक चुहल चहुँ ओर चाहै स्वाति ही कों,
सूरे पन पूरे जिन्हैं विष सम अमी है;

प्रफुलित होत भान के उदोत कंज पुंज,
ता बिन बिचारनि ही ज्योति जाल तमी है।
चाहौ अनचाहौ जान प्यारे पै आनंदघन,
प्रीति रीति विषम सु रोम रोम रमी है।
मोहिं तुम एक, तुम्हें मो सम अनेक आहिं,
कहा कछू चंदहिं चकोरन की कमी है॥

× × ×

डगमगी डगनि धरनि छवि ही के भार,
ढरनि छबीले उर आछी बनमाल की।
सुंदर वदन पर कोटिक मदन वारौं,
चित चुभी चितवनि लोचन विसाल की।
काल्हि इहि गली अली निकस्यौ अचानक ह्वैं,
कहा कहौं अटक भटक तिहि काल की।
भिजई हौं रोम रोम आनंद के घन छाय,
बसी मेरी आँखिन में आवनि गुपाल की॥

× × ×

स्याम की घटा लपटी थिर बीज कि सोहै अमावस अंक उज्यारी।
धूम के पुंज मैं ज्वाल की माल सी पै दृग सीतलता सुख कारी।
कै छबि छायौ सिंगार निहारि सुजान तिया तन दीपति प्यारी।
कैसी फबी घनआनंद चोपनि सों पहिरी चुनि साँवरी सारी॥

× × ×

एरे वीर पौन! तेरो सबै ओर गौन बीरी,
तो सो और कौन, मनै ढरकोहीं बानि दै।
जगत के प्रान, ओछे बड़े सों समान घन,
आनन्द निधान, सुखदान दुखियानि दै।
जान उजियारे गुन भारे अन्त मोही प्यारे,
अब ह्वै अमोही बैठे, पीठि पहचानि दै।
विरहा विथा की मूरि, आँखिन में राखौ पूरि,
धूरि तिनि पायनि की हहा नैकु आनि दै।

× × ×

कारी कूर कोकिला! कहाँ क बैर काढ़ति री,
कूकि कूकि अब ही करेज़ो किन कोरि लै।

पैड़े परे पापी ये कलापी निसद्यौस ज्यौं ही,
चातक ! घातक त्यौं ही तु हू कान फोरि लै ।
आनंद के घन प्रानजीवन सुजान बिना,
जानि कै अकेली सब घेरो दल जोरि लै ।
जो लौ करैं आवन बिनोद बरसावन वे,
तौ लौ रे डरारे बजमारे घन घोरि लै ॥

× × ×

परकाजहि देह को धारि फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ ।
निधि नीर सुधा के समान करौ सब ही विधि सज्जनता सरसौ ।
घनआनंद जीवन दायक हौ कछू मेरियौ पीर हिये परसौ ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन मो अँसुवानहि लै बरसौ ॥

× × ×

अंतर ही किधौं अन्त रहौ, दृग फारि फिरौं कि अभागिन भीरौं ।
आगि जरौं अकि पानि परौं अब कैसी करौं हिय का विधि धीरौं ।
जी घनआनद ऐसी रुचि, तौ कहा बस है अहो प्राननि पीरौं ।
पाऊँ कहाँ हरि हाय तुम्हे, धरनी मैं धँसो कि अकासहि चीरौं ॥

× × ×

संग लगे फिरौ, हौ अलगे रहौ माहुवै गैल लगावत क्यौं नही ।
नीरस राचनि ही सरसौ रस मूरति प्रीति पगावत क्यों नही ।
ढीलो पर्‌यौ तुमते घनआनंद हौ गुनरासि खगावत क्यौं नही ।
जागत सोवत से हौ कहा कहौ सोवत मोहि जगावत क्यौं नहीं ॥

× × ×

कान्ह परे बहुतायत मे, इकलैन की वेदन जानौ कहा तुम ।
हौ मन-मोहन, मोहे कहूँ न, विथा विमनैन की मानौ कहा तुम ।
बौरे वियोगिन्ह आप सुजान ह्वै, हाय कछू उर आनौ कहा तुम ।
आरतिवंत पपीहन को घनआनंद जू पहिचानौ कहा तुम ॥

× × ×

पूरन प्रेम को मन्त्र महा पन जा मधि सोधि सुधारि है लेख्यो ।
ताही के चारु चरित्र विचित्रनि यों पचि कै रचि राखि विसेख्यो ।
ऐसो हियो हित-पत्र पवित्र जो आन कथा न कहूँ अवरेख्यो ।
सो घनआनंद जान अजान लौं टूक कियो, पर बाचि न देख्यो ॥

× × ×

अति सूधो सनेह को मारग है जहँ नैकु सयानप बाँक नहीं।
तहँ साँचे चलैं तजि आपन पौ, झिझकै कपटी जे निसाँक नहीं।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ इत एक ते दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन सी पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं॥

× × ×

मेरोई जीव जौ मारत मोहिं तौ प्यारे कहा तुम सों कहनो है।
आँखिन हूँ पहिचानि तजी कछु ऐसेई भागनि को लहनो है।
आस तिहारियै हौं घनआनंद कैसे उदास भए दहनो है।
जान है होत इते पै अजान जौ तौ बिन पावक ही दहनो है॥

× × ×

देखि धौं आरसी लै वलि नेकु लसी है गुराई में कैसी ललाई।
मानौ उदोत दिवाकर की दुति पूरन चंदहि भेंटन आई।
फूलत कंज कुमोद लखें घनआनंद 'रूप अनूप निकाई'।
तो मुख लाल गुलालहि लाय कै सौतिन के हिय होरी लगाई॥

× × ×

रूप के भारन होति है सौंहीं लजौंहियै दीठि सुजान यो फूली।
लागियै जाति, न लागी कहूँ निसि, पागी तहीं पलकी गति भूली।
बैठिये जू हिय पैठत आजु कहा उपमा कहियै समतूली।
आए हो भोर भएँ घनआनंद आँखिन माँझ तौ साँझ सी फूली॥

× × ×

तब तौ छबि पीवत जीवत हे अब सोचन लोचन जात जरे।
हित-पोष के तोष सु प्रान पले बिललात महादुख दोष भरे।
घनआनंद मीत सुजान बिना सब ही सुख-साज-समाज टरे।
तब हार पहार से लागत हे अब आनि कै बीच पहार परे॥

× × ×

चाह बढ़्यौ चित चाक चढ़्यौ सो फिरै तित ही इतने कुन धीजै।
नैन थके छबि-पान छकै घनआनंद लाज त्यौं रीझनि भीजै।
मोह में आवरी है बुधि बावरी सीख सुनै न दसा-दुख छीजै।
देह दहे न रहै सुधि गेह की भूलि हू नेह को नाँव न लीजै॥

× × ×

पहले अपनाय सुजान सनेह सौं क्यों फिरि तेह कै तोरियै जू।
निरधार अधार दै धार-मँझार दई! गहि बाँह न बोरियै जू।

घनआनंद अपने चातिक को गुन बाँधि लै मोह न छोरियै जू।
रस प्याय कै ज्याय बढ़ाय कै आस बिसास मै यों विष घोरियै जू॥

× × ×

जोरि कै कोरिक प्राननि भावते संग लिए अँखियान मैं आवत।
भीजे कटाछन सों घनआनंद छाय महारस को बरसावत।
ओट-भएँ फिरि या जिय की गति जानत जीवनि ह्वै जु जनावत।
मीत सुजान अनूठियै रीति जिवाय कै मारत मारि जियावत॥

× × ×

साँच के सान-धरे सुर-बान पै छूटैं बिना ही कमान सी जोटैं।
दीसैं जहीं के तहीं सु चलैं अति घूमति है मति या चल चोटैं।
घाव को चाव बढ़ैं घनआनँद चाड़नि लै उर आड़नि ओटैं।
प्रान सुजान के गान बिंधे घट लोटैं परे लगि तान कचोटैं॥

× × ×

जान सजीवन प्रान लखैं बिन आतुर आँखिन आवत आधे।
लोग चवाई सबै निदरै अति बान से बैन अयान सौं साधे।
को समुझै मन की घनआनंद बौरई वेदन बौरई नाधे।
नीर भर्‌यौ जिय धीर धरै नहिं कैसे रहै जल जाल सो बाँधे॥

× × ×

सावन आवन हेरि सखी! मन भावन आवन चोप बिसेखी।
छाए कहूँ घनआनंद जान सम्हारि की ठौर लै भूलनि लेखी।
बूँदैं लगैं सब अंग दगैं उलटी गति आपने पापिनी पेखी।
पौन सौं जागति आनि सुनी ही पै पानी तें लागति आँखिन देखी॥

× × ×

नेह सों भोय सँजोय धरी हिय दीप दसा जु भरी अति आरति।
रूप उज्यारे अजू ब्रजमोहन सौंहनि आवनि ओर निहारति।
रावरी आरति बावरी लौं घनआँनद भूलि वियोग निवारति।
भावना थार हुलास के हाथनि यो हित मूरति हेरि उतारति॥

× × ×

रूप निकाई अनूप कहा कहौं अँगनि जोति सुरंगनि जागति।
है घन आँनद जीवनमूल पपीहा किये पिय लोचनि पागति।
और सिंगारनि की सब ही रह्यौ याहि विचारति ही मति रागति।
पायन तेरे रची मिंहदी लखि सौतिन के तरवानि तें लागति॥

× × ×

क्यों हरि हेरि हर्यो हियरा--अरु क्यों चितचोर के चाह बढ़ाई।
काहे को बोलि सुधासने बैननि चैननि मैन निसैन चढ़ाई।
सो सुधि मो हिय ते घन आँनद सालति क्यों हूँ कढ़ै न कढ़ाई।
मीत सुजान अनीति की पाटी इतै पै न जानिए कौने पढ़ाई॥

रसलीन

चन्द्रमुखी जूरो चितै चित लीन्हो पहचानि।
सीस उठायो है तिमिर ससि को पीछे जानि॥
ऐंठे ही उतरत धनुष यह अचरज की बान।
ज्यों ज्यों ऐंठति भो-धनुष त्यों त्यों चढ़त निदान॥
सब जग पेरत तिलन को, को न थके इहि हेरि।
तुव कपोल के एक तिल डार्यो सब जग पेरि॥
जो भा अधरन तरुनि के, सो भा धरत न कोय।
याही विधि इनके पर्यो नाम अधर विधि जोय॥
दसन झलक में अरुनता लखि आवत मन माँह।
परी रदन पर आय के अधर रंग की छाँह॥
दरपन से वा कण्ठ सम कंचन दुति किमि होत।
दुलरी जाके लगत ही जोति चौलरी होत॥
कित दिखाइ कामिनि दई दामिनि को यह बाँह।
तरफरात सी तन फिरै फरफरात घन माँह॥
व्रज बानी सीखन रची यह रस लीन रसाल।
गुन सुवरन नग अरथ लहि हिय धरियो ज्यों माल॥
अंग अंग को रूप सब यामें परत लखाय।
नाम अंग-दर्पन धर्यो याही गुन तें ल्याय॥
तन सुवरन के कसन को, लसत पूतरी स्याम।
मनो नगीना फटिक में, जरी कसौटी काम॥
को है माली चतुर जो, सरस सींचि रस-जाल।
या कंचन की बेल में, मुक्ति लगाये लाल॥
पिय कुंडल को चिन्ह जो, पर्यो बाल की बाँह।
खिन चूमत खिन लखि रहत, खिन लावत उर माँह॥
पिय मूरति मेरी सदा राखत दृगन बसाइ।
डरियन गोरी देह यह, मति कारी है जाइ॥

सखिन संग नवला गई, पिय को मिलन निकेत ।
अरुन कमल सो मुख भयो, दिन हिम संक समेत ॥
अली मान-अहि के डसे, झारयो हरि करि नेह ।
तऊ क्रोध-विष ना छुट्यो, अब छूटत है देह ॥
रक्त बूँद काजर भरे, यों रोवति दुरि बाल ।
मनो निसानी वा दृगन, दई गुंज की माल ॥
पिय बिछुरन खिन यों तिया, चख अँसुवा गर आइ ।
मनु मधुकर मकरन्द को, उगलि गयो फिरि खाइ ॥
गवन समैं पिय के कहति, यौं नैनन सों तीय ।
रोवन के दिन बहुत हैं, निरखि लेहु खिन पीय ॥
करी देह जो चीकनी, हरि नित लाइ सनेह ।
विरह अग्नि जरि छिनक मैं, होनि चहत अब खेह ॥
पिय आये आनंद जो भयो तिया उर आइ ।
घट मधि दीपक जोति लौं, कछु मुख तें दरसाइ ॥
आई वह पानिप भरी, रमनी आजु अन्हान ।
जिहि बूड़ति निकसति लखै, निकसत बूड़ै प्रान ॥
पिय चितवत तिय मुरि गई, कुल हित पट मुख लाइ ।
अमी चकोरन के पियत, धन लीनी ससि छाइ ॥
पिय लपि यौं तिय, दृगन दै अंजन आँसू डारि ।
ज्यौं ससि निरखि चकोर वै बुझी चिनगिनी डारि ॥
सखी री विछुरन सिसिर की, ह्वै लहलही तुरन्त ।
वेलि रूप प्रफुलित भई, लहि वसन्त को कन्त ॥
पिय विनु तिय दृग जल निकसि, यों पुतरीन बिलात ।
ज्यौं कमलन ते रस झरत, मधुकर पीवत जात ॥
पिय छीटत यौं तियन कर लहि जल केलि अनंद ।
मनो कमल चहुँ ओर ते मुकतनि छोरत छंद ॥

मान

सम्वत प्रसिद्ध दस सत्तमास । वत्सर सु पंच दस जिट्ठ मास ॥
सजि सेक राण श्री राज सीह । असुरेश धरा सज्जन अबीह ॥
निर्घोष घुरिय नीसान नद्द । सहनोई भेरि जंगी सु सद्द ॥
अति बद्दन वदन बड्डी अवाज़ । सब मिले भूपि सजि अप्प साज ॥

किय सेन अग्ग करि सेल काय । पिलन्त रूप पर दल पुलाय ॥
गुंजंत मधुप मद झरत गच्छ । चरपी चलन्त तिन अग्ग पच्छ ॥
सोभन्त चौर सिन्दूर शीश । रस रंग चंग अति भरिय रीस ॥
सो झाल घटा मनु मेघ श्याम । टनकन्त घंट तिन कंठ ठाम ॥
उनमत्त करत अगगगू अग्राज । वहु वेग जान पावै न बाज ॥
उलकन्त पुट्ठि उज्जल सढाल । वर विविध वर्ण नेजा विसाल ॥
बोलन्त चलत वन्दी विरुद् । दीपन्त धवल रुचि शुचि विरद्द ॥
गुरु गाढ गेंद गिरिवर गुमान । पढ़ि धत्त धत्त मुख पीलवान ॥
एराक आरबी अश्व ऐन । सोभन्त श्रवन सुन्दर सुनैन ॥
काश्मीर देश कांबोज कच्छि । पय पन्थ पौन पथ रूप लच्छि ॥
बंगाल जात से वाजिराज । काविल सु केक हय भूप काज ॥
खंधार उतन केहि खुरासान । वपु ऊँच तेज वर विविध बान ॥
हय हीस करत के जाति हंस । कविले सुकि हाड़े भोर बंस ॥
किरडीए खुरहडे केमु रत्त । पीलडे केकली लेप वित्त ॥
चंञ्चल सुवेग रहवाल चाल । थेइ थेइ तान नञ्चन्त थाल ॥
गुन्थिय सुजान कर केस बाल । बनि कंध वक्र सोभा विसाल ॥
साकति सुवर्ण साजे समुख । लीने सु सत्थ हय एक लख ॥
रवि रथ तुरंग सम ते सरूप । भनि विपुल पुठि तिन चढ़े भूप ॥
पयदल सु सज्जि पोरष प्रधान । जंघालु जग जीतन जवान ॥
भट विकट भीम भारत भुजाल । साधर्म्मि सूर निज शत्रु साल ॥
निलवट सनूर रत्ते सु नैन । गय थाट घाट अप घट गिनैन ॥
धमक्कमि धरनि चल्लत धमक्क । धर हरत कोट निज सवर धक्क ॥
वंकी सु पाघ वर भृकुटि बंक । निर्भय निरोध नाहर निसंक ॥
शिर टोप सज्जि तनु त्रान संच । प्रगटे सु बंधि हथियार पंच ॥
कमनीय कुंत कर तौन पुनि । मारंत शद्द सुनि सवल मुट्ठि ॥
गल्हर करत गुञ्जत गैन । बोलंत बंदि बहु विरुद बैन ॥
मुररंत मुंछ गुरु भरिय मान । गिनि कोन कहै पायक सु गान ॥
वहु भूप थट्ट दल मध्य वीर । सुरपति समान शोभा सरीर ॥
श्री राजसिंह राणा सरूप । गजराज ढाल आसन अनूप ॥
शीशे सु छत्र बाजंत सार । चामर ढलंत उजल स चारु ॥
घन सजल सरिस दल घाघरट्ट । भाषंत विरुद वर वन्दि भट्ट ॥
कालंकि राय केदार कत्थ । अस कत्ति राय थप्पत समच्छ ॥
हिन्दू सु राय राखन सुहद्द । मुगलौंन राय मोरन मरद्द ॥
कविलान राय कट्टन सुकन्द । द्युतिबंत राय हिन्दू दिनेद ॥
अरि विकट राय जाड़ा उपाड़ । बलवन्त रास वैरी विभाड ॥

अन पुट्ठि राय पुट्ठिय पलान । भल हलत रूप मध्यान भान ॥
रायाधिराय राजेस रान । जगतेश नन्द जय जय सुजान ॥
बाजीनि चरन खुरतार बग्ग । मह अनड कट्टि कीजंत मग्ग ॥
झलझलिय उदधि सलसलिय सेस । कलकलिय पिट्ठिकच्छप असेस ॥
रजथान सजल जलथान रेनु । धुन्धरिग भान रज चढ़ि गगेनु ॥
अति देश देश सु बढ़ी अवाज । नट्टे सु यवन करते निवाज ॥
हलहलिय असुर घर परि हलक । षलभलिय नैर पर पुर षलक ॥
थरहरैं दुर्ग मेवास थान । रचि सेन सबल राजेश रान ॥
सुलतान मान मन्नो ससंक । बलवंत हिन्दुपति वीर बंक ॥
आयौ सुलेन अवनी अभंग । आलम सु भयौ मुनि गात भंग ॥

× × ×

कचलि गयो अग्गरो दंद मच्यौ अति दिल्लिय ।
हाजीपुर परि हक्क डहकि लाहौर सु डुलिय ।
थरस लयौ रिनथम्भ धसकि अजमेर सु धुज्जिय ।
सूनौ भयौ सिरोज भगग भै लसा सु भज्जिय ।
अहमदाबाद उज्जैनि जन थाल मूंग ज्यों थरहरिय ।
राजेस राण सु पयान सुनि पिशुन नगर खरभर परिय ।

× × ×

चतुरंग चमूं सिंधुर चंचल बंक बिरुद्दरु दान बहैं ।
अवधूत अजेज तुरंग उतंगह रंगहि जे रिपु कट्टि रहैं ॥
अवगाढ़ सु आयुध युद्ध अजीत सु पायक सत्थ लिए प्रचुरं ।
चित्रकोट धनी सजि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥
अति बट्टि अवाज भगी दिसि उत्तर पंथ पुरंपुर शैरि परी ।
त्रह कंत सु त्रंबक नूर त्रहं त्रह षंग महा पिति बज्जि पुरी ॥
उडि अम्बर रेनु वहूदल उम्मडि सोषि नदी दह मग्ग सरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राज सी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥
दल बिंटिव माल पुरा सु चहौं दिसि उपम चंदन जान अही ।
तहँ कीन मुकाम घुरंत सु त्रंबक सोच पर्‌यो सुलतान सही ॥
नर नाथ रहे तह सत्त अहा निसि सोवन मारस धीर धरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राज सी राण यु मारि उजारिय माल पुरं ॥
धक धूनिय धास सु कोट धकाइय गौपरु पौरि गिराइ दिए ।
दम ढेर करी हट श्रेणि ढुढारिय कंकर कंकर दूर किए ॥

पतिसाह सु दज्झन नैर प्रजारिय अंबर पावक झार अरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राज सी राण यु मारि उजारिय माल पुरं ॥
तहाँ श्रीफरु पुंगिय लौंग तमारुह हिंगुल केसरि जायफलं ।
घन सार मृगंमद लीलि अफीमि अँबार जरन्त सु झारझलं ॥
उडि अग्गि दमग्ग सु दिल्लिय उप्पर जाय परैं सु डरे असुरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥
धर पूरिय धोम धराधर धुंधरि धाम भरे धन धाम धपैं ।
रवि बिम्बति हौं दिन गोप रह्यो लुटि लच्छि अनन्त सु कोन लपैं ॥
सिकलात पटम्बर सूफ सु अम्बर ईंधन ज्यों प्रजरैं अगरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राज सी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥
अति रोसहिं कीन इलातर उप्पर कञ्चन रूप निधान कड़े ।
भरि ईभप जान सुखच्चर सूभर वित्तहिं मूल्य अनेक वड़े ॥
जस वाद भयौ गिरि मेरु जितौ हरषे सुर आसुर नूर हरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राज सी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥
निज जीति करी रिपु गाढ़ नसाइय आए देत निसान खरे ।
पयसार सु कीन सिंगार उदयपुर आइ अनेक उछाह करे ॥
कवि मान दिए हय हत्थिय कंचन वुट्टिय जान कि वार धरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राणा यु मारि उजारिय मालपुरं ॥

गोरेलाल

सावर तैं आई लगन, मिले बोल बंधान ।
दवादवे बीरा दियो, अब हितु भयो निदान ॥

जब निकट व्याह के आये । मंगल गीत दुहूँ दिस गाये ॥
तब दल बलदाऊ संग राखे । लागे करन काज अभिलाषे ॥
छरी बरात व्याह कौ साजी । तीस सवार बंब अरु बाजी ॥
दूलह छत्रसाल छवि छाये । करन व्याह सावरहि सिधाये ॥
तहँ बिधि सौ आगौनो कीनी । बाँध्यौ मौर इन्द्रछवि लीनी ॥
लागी परन भाँउरैं ज्यौंही । परी फौज तहवर की त्यौंही ॥
अनी बनी दोई बनि आई । दोऊ बरी करी मन भाई ॥
इतहिं भाँउरैं सजी सुहाई । उत तुरकनि सौं मची लराई ॥

रन रुपि तहवर खान कौ, मुह मुरकायौ मारि ।
पूरन वेद विधान सौ, लइ भाँउरै पारि ।।

× × ×

मारी फौज तुरक मुरकाये । तहँ सब धाये बजे बधाये ।।
ब्याही वरी जीति अरि लीनौ । कंकन छोड़ि तुरंगम दीनौ ।।
धामौनी दौरन झकझोरी । फिरि पछौरि सब लरी पिछौरी ।।
वारी वार मवासी कूटें । गाँउ कलींजर के सब लूटें ।।
रामनगर मार्यौ करि डेरा । कालिंजर कौं पार्यौ घेरा ।।
रोज अठारह गढ़ सौं लागे । चौकनि तहाँ द्यौस निसि जागे ।।
बाहिर कढ़न न पावै कोई । रहे संक सकराइ गढ़ोई ।।
लई रोकि चारिउ दिस गैलैं । गढ़ पर परै रैन दिन ऐलै ।।

चिंतामनि सुर की तहाँ, कीनौं आइ सुदेस ।
अति आदर सौं लैं चले, न्योतौ करि निज देस ।।

× × ×

न्यौतौ करि कीनी महिमानी । धन्य घरी सबही वह मानी ।।
तातैं तुरी तिलक में दीनौ । उर आनन्द परस्पर लीनौ ।।
हाँ तै कूच विदा ह्वै कीनौ । कालिंजरहिं दाहिनौ दीनौ ।।
लरैं उमड़ि तहँ सुभट अन्यारे । घाटी रोकि बीर गढवारे ।।
छत्रसाल त्यौं हल्ला बोल्यो । खगगन खेल बुंदेलन खोल्यो ।।
समर भूमि अरि-लोथिन पाटी । रोकी रुकै कौन की घाटी ।।
वारि वनहरी लूट मचाई । धामौनी सौं लई लराई ।।
पटना अरु पारौलि उजारै । तहवरखाँ पै परी पकारै ।।

फौज जोर तहवर तहाँ, ठने जूझ के ठान ।
गौने में छत्रसाल के, दल कौ पर्यौ मिलान ।।

× × ×

पर्यौ मिलान जाइ जब गौने । करकैं तंबू तने सलौने ।।
दहिनी दिसि उतरे बलदाऊ । जहँ गोली पहुँचे पहुँचाऊ ।।
थम्हे अपनी अपनी पाली । परयौ पहार पीठ तन खाली ।।
ऊपर सिखर चौपरा जान्यौ । सो देखन छत्ता उर आन्यौ ।।
छरी भीर कौतुक मन बाढ़े । चढ़ि करि भये शिखर पर ठाढ़े ।।
ज्यौं यह खबर जसूसन दीनी । त्यौं तहवरखाँ वागै लीनी ।।
बखतरपोस सहस दस धाये । प्रलै मेघ से उमड़त आये ।।
निकट आइ धौंसा घहराने । हयखुरधार छटा छहराने ।।

बड़ी फौज उमड़ी निरखि, रच्यौ छता घमसान ।
चढ़ि सनमुख रनमुख तहाँ, वरषन लाग्यौ बान ।।

× × ×

वरषन लाग्यौ वान बुंदेला । कियौ तुरक दै ढाल ढकेला ।।
वखतर पोस वान सों फूटे । नल से छतज छांछ के छूटे ।।
कौतुक देखि जोगिनी गाई । खप्पर जटनि माजती धाई ।।
बिसुनदास तहँ मार मचाई । ओप कटेरहि भली चढ़ाई ।।
गह्यो पहार बुंदेला गाढ़े । त्यौं पठान पैठे मन बाढ़े ।।
चंड लेहु दुहूँ दिसि ठहराने । सूरज गगन मध्य ठहिराने ।।
सोर सिंहनादन के माचे । भूत विताल ताल दै नाचे ।।
डेरन खवर जूझ की पाई । सुभट भीर त्यौं उमड़त आई ।।

चड़े रंग सफजंग के, हिन्दू तुरक अमान ।
उमड़ि उमड़ि दुहुँ दिसि लगे, कौरन लोहौ खान ।।

× × ×

कौरन लोह खान भट लागे । दुहूँ ओर रन में रस पागे ।।
सुरतनाल हथनालै छूटी । गरजि गरजि गाजै सी टूटी ।।
गोलिन तोरन की झर लाई । माची सेल्ह समसेरन धाई ।।
त्यौं लच्छे रावत प्रभु आगै । सेल्हन मार करी रिस पागै ।।
प्रबल पठान मारि कै साऊ । कढ्यो मिश्र हरिकृष्ण अगाऊ ।।
उमड़ि लोह लपटन मन दीनौ । तनके होम स्वामि हितु कीनौ ।।
वावराज परिहार पचारयौ । सार पैर रवि-मंडल फारयौ ।।
जूझयौ नन्दन छिपी सभागौ । ब्योतन लग्यो इन्द्र कौ बागौ ।।

कृपा राम सिरदार त्यौं, कढ्यौ धँधेरौ धीर ।
बैठ्यो जाइ बिमान चढ़ि, भानु भेदि वह बीर ।।

× × ×

उतहि पठान चढ़त गिरि आवैं । इत छत्रसाल बाल बरसावै ।।
इक इक वान दुद्वै भट फूटै । झुक झुक तऊ झपट रन जूटै ।।
बान बेग जगतेस हंकारयौ । त्यौं करवान झरप झुक झारयौ ।।
घाउ ओड़ि भुज ऊपर लीनै । उमड़ि पाँउ रन सनमुख दीनै ।।
गिरे पठान डील त्यौं भारे । गोलनि सेल्ह सरनि के मारे ।।
जंघा घाउ छतारे ओढ्यौ । भुजडंडन रन सिन्धु बिलोड्यौ ।।
पिले तुरक जे वखतरवारे । ते रन गिरे छता के मारे ।।
बढ़े गिरिन स्रोनित के नाले । धर धमकन धरतीतल हाले ।।

कहर जूझ द्वै पहर भौ, झरयौ सार सो सारु ।
तेज अरिन कौ त्यौं घट्यौ, लोथन पट्यौ पहारु ॥

× × ×

बारह बीर खेत इत आये । सत्ताइस घाइल छवि छाये ॥
तुरक तीन सै खेत खपाये । घाइल द्वै सै वीस गनाये ॥
मारि तुरक कौ मुंह मुरकायौ । रन में विजै बुंदेला पायौ ॥
मुरके तुरक खग्ग फिरि खोल्यो । बल दिवान पर हल्ला बोल्यो ॥
बजे नगारे फेर जुझाऊ । रन में रूप्यौ उमड़ि बलदाऊ ॥
पहर राति भर मार मचाई । मुरक्यो तुरक उहाँ खम खाई ॥
ओड़ि अरिन के ढाल ढकेला । भलौ लरयौ बलकरन बुंदेला ॥
खभरि खेत तहवर बिचलायौ । सूबन के उर साल सलायौ ॥

सले सात सूबानि के, धक्कनि हले पठान ।
दियो भाल छत्रसाल कैं, राजतिलक भगवान ॥

श्रीधर (मुरलीधर)

दुहूँ ओर साजे महा मत्त दन्ती ।
सजे पक्खरों लक्खकी पूर पन्ती ॥
गड़ादार घेरे सिरी कट्ट बन्टा ।
गर्जे मेघ मानो वजे घोर घन्टा ॥
घटा श्याम सी दीह तो विंधिमा पै ।
परी पक्खरें झालरा झूल झांपै ॥
सजे पक्खरो भक्खरों लक्ख घोरे ।
मनो भानुजू के रथी जोर जोरे ॥
चले चाइ सों चंचले चाल बाँकी ।
दरयोइ तुरुक्की तजीले इराँकी ॥
करैं पौन सी पौन की पायदारी ।
अरब्बी गरब्बी खुरीले खंभारी ॥
नचै नाटकों से पटी के चन्हावी ।
कछी पीठ पूठौ पले नीर रावी ॥
सजे संदलो और समुंदे सुरंगे ।
कबूतो बने फूलवारी सुअंगे ॥

सजे ओज संजाफ नीले हरीले ।
मुसुक्की सजे पञ्च कल्यान पीले ॥
बड़े ढील के कान छोटे नवीने ।
सुचौरी खुरी चाकरी जासु सीने ॥
बड़े चंन्दलें नैन के, सुक्ख साँचे ।
खुरी पाल झूमै घनी दोप बाँचे ॥
सजे साजियों चारिहूँ ओर योधा ।
सजे साज लोहा वँटो क्रुत्त क्रोधा ॥
पिले चारिहूँ ओर सूबे गरूरी ।
जिन्हों बार कै शत्रु की फौज चूरी ।
कहाँ लौं कहौं फौज में सूर राजे ।
कितेको वली लै बन्दूखैं गराजे ॥
सबै सूरवां वीर बाँके बनैतै ।
सजे साज बाजी चड़े हाँक दै ते ॥
कढ़े फौज सों डाँकि घोरें धपावै ।
कितै कूह कै कै सु भाले फिरावै ॥
लख्यो दूसरी ओर गाढ़ो अनी को ।
चढ़ो कोपि के पूत दिल्ली धनी को ॥
दुहूँ ओर ठाढ़ी चमू वाहि रोकै ।
दुहूँ ओर की फौज ठाढ़ी विलोकै ॥
सुफरु कसियर शाहि के जोर सूवे ।
पिले चारिहूँ ओर साजे अजूबे ॥
वजी दीह धौंसनि आवाज अच्छी ।
चहूँधा लखीजै बरच्छी वरच्छी ॥
छुटैं त्यों अरावे उठी धूरि भारी ।
धुवाँ की उटी धुंधुरारी अँध्यारी ॥
बढ़े रोशनी ऊपरी बान छूटे ।
मनो आसमानी महा लूक टूटे ॥
पिले चांटि को खेट के चारि फेरे ।
मिले ओपची तोपची यो घनेरे ॥
अहूँ फौज की वीरता की लड़ाई ।
चमूँ शत्रु की चूर कै कै हटाई ॥

वली उत्तरी फौज के गर्व ऐंठे।
महा मोरचा भीड़ि के पेलि पैठे॥
लख्यो एजुर्दा वार छूटो दुवारो।
परी भाग भाग्यो तकै कोह नारो॥
सँभारे न घोरे रथी हेम हाथी।
सँभारे न कोऊ कछू संग साथी॥
किहूँ छाँड़ि घोरैनि डार्यो हथ्यारो।
किहूँ भाग सो आगेही पत्थ धारो॥
करै कोऊ हाहा परै कोऊ पैयाँ।
चले रामरे गाँव झैझा बकैयाँ॥
घुसे वीहरो भाग केते निकामी।
किते को करे बन्दि नामी निनामी॥
किते को गुमानी गरूरे निछाए।
वड़े हौंसिला के तिया संग लाए॥
तिन्हे छोड़ि भागे छुटी चाल बाँकी।
गये फूटि तामे फटी हौंस नाकी॥
सु रोवै असीले फसीले सहेली।
पुकारे खुदा आय दै कौन मेली॥
गरोढ़ा वरो झाकि झाँके सुरोसैं।
सबै मौंजदी कों भरे नैन कोसैं॥
कहूँ बैदरा को बड़ी धूम धाई।
चहूँ बुञ्च लुञ्चानि ले आग लाई॥
वरें छावनी छाँह डेरा सुभारी।
महाभीम फैली धुवाँ की अँध्यारी॥
कहूँ आँच के तेज सो लाल फूटै।
कहूँ बैदरा वीर बाजार लूटै॥
कहूँ बाँस की गाँठ फूटै पटक्कै।
चटापट्ट पाषान भारी पटक्कै॥
लुटै केसरौ दाख दारयो छुहारो।
लुटे चारु कस्तूरिका धन्न सारो॥
कहूँ होत मोती बरे चूर चूना।
कहूँ लै लुटेरे करें मोट दूना॥

जरैं चार आचर जूरी चिरौंजी।
कहूँ कौलगट्टे कसेरू करौंजी॥
जरैं औ लुटैं चीर चीरा जरी के।
परे भोट के मोट लूटैं परी के॥
भये नैदरां जौहरी लूटि लूटैं।
छिटे ज्वारि लौं मोट मुक्तानि छूटैं॥
किती तो जरैं हाय हा रट्ट लागी।
किती कामिनी दामिनी रूप भागी॥

× × ×

आयो मौजदीन इततैं फरुकसाहि,
दुहूँ ओर सोर ललकारैं बीर बीर की।
भरा भरी गोलनि की भरा भरी तेग की,
कटारिन की कराकरी तरातरी तीर की।
श्रीधर बिलायो दौरि बीरन की भीर रुंड,
मंडन को मेरु श्रोन सलिता गँभीर की।
वाह वाह करै पातसाह रु सिपाह सब,
देखो रे दिलेरी यारो मुशरफ मीर की॥

× × ×

कोऊ ढूंढ़ौ कोऊ वारो काहू मैं न गुन भारो,
कोऊ वारनारी वस मन में न आयो है।
सुन्दर सुजान सुजा सीलवंतु ओजवान,
दान पूरो एकै तोहि विधि ने बनायो है।
श्रीधर भनत सानी जलालदीं अकबर,
फरुकसियर पातसाह बर पायो है।
बाल पातसाहति सोयंवर कर करति,
तोहि देखि रीझि जयमाल पहिरायो है॥

× × ×

गेड़ी सो अरावो टारि भेड़ी सो बिदारि दल,
खलदल खूंदि कीनो छीन एजदीन को।
धावा करि पूरब में डावा डारि फौजनि को,
मीन सो पकरि लीनो शाहि मौजदीन को।
श्रीधर भनत पातसाहिन को पातसाह,
फरुकसियर भो पनाह दुहूँ दीन को।

मुलुक मुलुक दौरि फरदै फतूहनि को,
काँप्यो डरि गवर हरख बाढ्यो दीन को ॥

× × ×

साजि दल फरुकसियर पातसाह-पति,
श्रीधर बढ़त जब सहज सिकार है।
धूमरु सुभासा में अराम इसफा कित,
सुनि जलधर धुनि धौंसा की धुकार है।
हबसाने हहल खँधारिन के खलभल,
बलक बदक सान जान न रुका रहे।
तारा दे केवारा दे केवारा देके वारा देहि,
पौरि पौरि लंकपुर परत पुकार है॥

× × ×

दक्खिन दहेलि पेलि पच्छिम उदीची जीति,
पूरब अपूरब हठीलो हाथु लायो है।
श्रीधर शहनशाहि फरुकसियर नर,
सातो दीप सरहद्द हिन्द की मिलायो है।
दिन दिन बाढ़ति है बाढ़िहइ दिन दिन,
दिन दिन दूनी पातशाहति बढ़ायो है।
और पातशाह पातशाही पायो जब पाए,
तोसों पातशाह पातशाही जेब पायो है॥

× × ×

शादी शादियाने के उछाह आतपत्रनि के,
अङ्ग अङ्ग बाढ़े रङ्ग बाढ़े हैं रखत के।
तेरी पातशाही, पातशाही पायी जेब फल,
ठाढ़े नभ सुमन प्रसून बरखत के।
श्रीधर भनत पातशाहन को पातशाह,
फरुकसियर नर जबर नखत के।
तिनके बखत जे वै लखत तखत तोहिं,
बैठत तखत बढे बखत तखत के॥

भिखारीदास

अँखियाँ हमारी दई मारी सुधि बुधि हारी,
मोहू तें जु न्यारी दास रहैं सब काल में।

कौन गनै शानैं, काहि सौंपत सयाने, कौन
लोक ओक जानैं, ये नहीं हैं निज हाल में।
प्रेम पगि रही, महा मोह में उमगि रही,
ठीक ठगि रही, लगि रही बनमाल में।
लाज को अँचै कै, कुल धरम पचै कै वृथा,
बंधन सँचै कै भई मगन गोपाल में॥

× × ×

नैनन को तरसै ए कहा लौं, कहा लौं हियो विरहागि में तैए।
एक घरी न कहू कल पैए, कहाँ लगि प्रानन को कलपैए।
आवै यही अब जी में विचारि सखी चलि सौतिहुँ के घर जैए।
मान घटे ते कहा घटिहै जु पै प्रान पियारे को देखन पैए॥

× × ×

वाही घरी ते न सान रहै, न गुमान रहै, न रहै सुघराई।
दास न लाज को साज रहै न रहै तनकौ घर काज की घाई।
ह्वाँ दिख साध निवारे रहौ तब ही लौं भटू सब भाँति भलाई।
देखत कान्हैं न चेत रहै, नहिं चित्त रहै, न रहै चतुराई॥

× × ×

ऊधौ ! तहाँ ई चलौ लै हमें जहँ कूबरि कान्ह बसै एक ठौरी।
देखिए दास अघाय अघाय तिहारे प्रसाद मनोहर जौरी।
कूबरी सों कछु पाइए मंत्र लगाइए कान्ह सों प्रीति की डौरी।
कूबरि भक्ति बढ़ाइए बंदि, चढ़ाइए चन्दन बन्दन रौरी॥

× × ×

जाति में होति सुजाति कुजाति न काननि फोरि करी अब सोंसी।
केवल कान्ह की आस जियों जग दास करो किन कोटिन हाँसी।
नारि कुलीन कुलीननि सैं रमै मैं उनमें चह्यो एकन आँसी।
गोकुल नाथ के हाथ विकानी वे हैं कुलहीन तौ हौं कुल नासी॥

× × ×

दीपक जोति मलीनी भई मनि भूपन जोति की आतुरियाँ है।
दास न कौल कल विकसी निज, मेरी गई मिलि आँगुरियाँ है।
सीरी लगै मुकतावलि तेऊ कपूर की धूरिन सो पुरियाँ है।
पौढ़े रहौ पट ओढ़े इतो निसि बोलै नहीं चिरियाँ, चुरियाँ है॥

× × ×

सोभा सुकेसी की केसन में है तिलोत्तमा की तिल बीच निसानी।
उर्वसी ही में बसी मुख की अनुहारि सो इन्दिरा में पहिचानी।
जानु को रंभा सुजान सुजान है दास जू बानी में बानी समानी।
एती छबीलिन सों छबि छीनि कै एक रची विधि राधिका रानी॥

× × ×

कौन सिंगार है मोरपखा यह लाल छुटे कच कांति की जोटी।
गुंज के माल कहा यह तो अनुराग गरे पर्‍यो लै निज खोटी।
दास बड़ी बड़ी बातें कहा करौ आपने अंग की देखो करोटी।
जानों नहीं यह कंचन से तिय के तन के कसिबे की कसोटी॥

× × ×

आनन हैं अरविन्द न फूले अलीगन भूले कहा मड़रात हौ।
कीर तुम्हें कहा बाय लगी भ्रम बिम्ब के ओठन को ललचात हौ।
दास जू ब्याली न बेनी बनाव है पापी कलापी कहा इतरात हौ।
बोलती बाल न बाजती बीन कहा सिगरे मृग घेरत जात हौ॥

× × ×

अरविन्द प्रफुल्लित देखि कै भौंर अचानक जाइ अरैं पै अरैं।
वनमाल थली लखि के मृग सावक दौरि विहार करैं पै करैं।
सरसी ढिग पाइ कै ब्याकुल मीन हुलास सो कूदि परैं पै परैं।
अवलोकि गुपाल को दास जू ये अँखिआँ तजि लाज ढरैं पै ढरैं॥

× × ×

आली दौरि दरस दरस लेहि लेरी री इन्दु-
वदनी अटर में नँद नन्द भूमि थल मैं।
देखा देखी होत ही सकुच छूटी दुहुन की,
दोऊ दुहू हाथनि विकाने एक पल मैं।
दुहूँ हिय दास खरी अरी मैन सर गाँसी,
परी दिढ़ प्रेम फाँसी दुहुन के गल मैं।
राधे नैन तैरत गोविन्द तन पानिप मैं,
पैरत गोविन्द नैन राधे रूप जल मैं॥

× × ×

प्रेम तिहारे तें प्रानपिया सब चेत की बात अचेत ह्वै मेटति।
पायो तिहारो लिख्यो कछु सो छिनही छिन बाँचत खोलि लपेटति।
छैल जू सैल तिहारी सुने तेहि गैल की धूरि लै नैन धुरेटति।
रावरे अंग को रंग विचारि तमाल की डार भुजा भरि भेंटति॥

× × ×

न्यारो न होत बफारो ज्यों धूम में धूम ज्यों जात घने घन में हिलि।
दास उसास रलै जिमि पौन में पौन ज्यों पैठत आँधिन में पिलि।
कौन जुदो करै लौन ज्यों नीर में नीर ज्यों छीर में जात खरो खिलि।
त्यों मति मेरी मिली मन मेरे में गो मन गो मनमोहन सों मिलि॥

× × ×

कंज संकोचि गड़े रहैं कीच में, मीनन बोरि दियो दह नीरनि।
दास कहै मृग हू को उदास कै, वास दियो है अरण्य गँभीरनि।
आपुस में उपमा उपमेय ह्वै, नैन ए निन्दत हैं कवि बीरनि।
खंजन हू को उड़ाइ दियो हलुके करि डारे अनंग के तीरनि॥

× × ×

चैत की चाँदनी चीरनि सों दिगमंडल मानों पखारन लागी।
तापर सीरो बयारी कपूर की धूरि सी लैलै बगारन लागी।
भौंरन की अवली करि गान पियूष सी कान में डारन लागी।
भावती भावते ओर चितै सहजै ही में भूमि निहारन लागी॥

× × ×

आहट पाय गोपाल को बाल सनेह के गाँसनि सो गँसि जाती।
दौरि दरीची के सामुहे ह्वै दृग जोरि सो भौंहन में हँसि जाती।
दास जू जानत कोऊ कहूँ तन में मन में छवि में बसि जाती।
प्यारे की तारे कसौटिन में अपनी छवि कंचन सी कसि जाती॥

× × ×

बाग के बगर अनुराग रली देखति ही,
सुखमा सलोनी सुमनावलि अछेह की।
द्वार लगि जाती फेरि ऐंठि ठहराती बोलै,
औरनि रिसाती माती आसव अदेह की।
दास अब नीके ऊभि भरति उसाँसु री सु,
बाँसुरी की धुनि प्रति पाँसुरी में बेह की।
गाँसी गाँसी नेह की बिसानी भर मेह की,
रही न सुधि तेह की न देह की न गेह की॥

× × ×

कहि कहि प्यारी अवै चढ़ती अटारिन पै,
काहि अवलोक्यो यह कैसो भयो ढंग है।

औरै ओर तकति चकति उचकति दास,
खरी सखि पास पै न जाने कोउ संग है।
थकि रही दीठि पग परत धरनि नीठि,
रोमनि उमग भो बदलि गयो रंग है।
नैन छलकोहैं वर बैन वलकोहैं औ,
कपोल फलकोहैं झलकोहैं भये अंग हैं॥

× × ×

क्यों चलि फेरि बचायो न क्योंहूँ कहा बलि बैठे बिचारो बिचारनि।
धीर न कोऊ धरै बलवीर चढ्यो बृजनीर पहार पगारनि।
दास जू राख्यो बड़े बरखा जिहि छाँह में गोकुल गाइ गुआरनि।
छैल जू सैल सो बूड़यो चहै अब भावती के अँसुआन के धारनि॥

× × ×

आरसी को आँगन सुहायो मन भायो,
नहरन में भरायो जल उज्ज्वल सुमन माल।
चाँदनी विचित्र लखि चाँदनी बिछौने पर,
दूरि कै सहेलिन को विलसै अकेली बाल।
दास आसपास बहु भाँमिन विराजैं धरे,
पन्ना पुखराज मोती मानिक पदिक लाल।
चन्द्र प्रतिबिम्ब तें न न्यारो होत मुख, औ
न तारे प्रतिबिम्बन तें न्यारो होत नगजाल॥

× × ×

बातैं स्यामा स्याम की न कैसी अब आली,
स्यामस्यामा तकि भाजैं स्यामा स्याम सो जकी रहै।
अब तो लखोई करैं स्यामा को बदन स्याम,
स्याम के बदन लागी स्यामा की टकी रहै।
दास अब स्यामा के सुभाय मद छकै स्याम,
स्यामा स्याम सोभन के आसव छकी रहै।
स्यामा के बिलोचन के हैं री स्याम तारे अरु,
स्यामा स्याम लोचन की लोहित लकी रहै॥

× × ×

काहू कह्यो आइ कंसराय के मिलाइवे को,
लेन आयो कान्ह कोऊ मथुरा अलंग तें।

त्यों ही कर्यो आली मैं तौ मानी न . अब,
देत मिलै हम रस रंगो मृदु बिन ढंग तें।
दास कहै ता समै सोहागिन की मद भरी,
नवलावलिन कुच आनन प्रसंग तें।
अधिक दरकि गई निरख की श्यामता तें,
अधिक तरकि गई आनन्द उमंग तें॥

× × ×

आजु वहि गोपी की न गोपी रही हाल कछु,
डाल बनमाल के हिंडोर मन झूलिगो।
अँखिया मुखाम्बुज में भौंर ह्वै समानी भई,
बानी गद्गद कंठ कदम सों फूलिगो।
जा मग सिधारे नंदनंद ब्रज त्यागी दास,
जिनकी गुलामी मकरध्वज कबूलि गो।
वाही मग लाग्यो नेह घट मे गंभीर भारी,
नीर भरिबे को घट घाटहि में भूलिगो॥

× × ×

दास के ईस जबै जग रावरो गावती देववधू मृदु तानन।
जानो कलंक मयंक को मूँदि औ भाम नें काहू सतावती भानन।
सीरी लगै सुनि चौंकि चितै दिगदन्ति तकै तिरछो दृग आनन।
सेत सरोज लगै कै सुभाय बुमाय कै सूँड़ मलै दुहुँ कानन॥

× × ×

जूगनू भानु के आगे भली विधि आपनी जोतिन्ह को गुन गैहै।
माखियो जाइ खगाधिप सों उड़िबे की बड़ी बड़ी बात चलैहै।
दास जबै तुक जोरनहार कविन्द उदारन की सरि पैहै।
तौ करतारहु सों औ कुम्हार सों एक दिना झगरो बनि ऐहै॥

× × ×

कल कंचन सो वह अंग कहाँ औ कहाँ यह मेचक सो तनु कारो।
कहाँ कौल कली बिकसी वह होइ कहाँ तुम सोइ रहो गहि डारो।
नित दास जू ल्यावहि ल्याउ कहै कछु आपनो वाको न बीच बिचारो।
वह कोमल गोरी किसोरी कहाँ औ कहाँ गिरिधारन पानि तिहारो॥

× × ×

जेहि मोहिबे काज सिंगार सज्यो तेहि देखत मोह में आय गई।
न चितौनि चलाय सकी, उनही की चितौनि के घाय अघाय गई।
वृषभानलली की दसा यह दास जू देत ठगौरी ठगाय गई।
बरसाने गई दधि बेचन को तहँ आपुही आपु बिकाय गई॥

पदमाकर

आई खेलि होरी घर नवलकिसोरी कहूँ,
बोरी गई रंग में सुगंधिनि झकोरै है।
कहै पदमाकर इकंत चलि चौकी चढ़ि,
हारन के बारन तें फंद बंद छोरै है।
घाँघरे की घूमनि सु ऊरुन दुबीचे दाबि,
आँगी हू उतारि सुकुमारि मुख मोरै है।
दंतनि अधर दाबि दूनरि भई सी चापि,
चौवर पचौवर के चूनरि निचोरै है॥

× × ×

सोभित स्वकीया गन गुन गनती में तहाँ,
तेरे नाम ही की एक रेखा रेखियतु है।
कहै पदमाकर पगी यों पति प्रेम ही में,
पदुमिनि तो सी तिया तू ही पेखियतु है।
सुबरन रूप जैसो तैसो सील सौरभ है,
याही तैं तिहारो तन धन्य लेखियतु है।
सोने में सुगंध न सुगंध में सुन्यो री सोनो,
सोनो औ सुगंध तो मैं दोनो देखियतु है॥

× × ×

खेद को भेद न कोऊ कहै ब्रत आँखिन हूँ अँसुवान को धारो।
त्यों पदमाकर देखती हौ तनको तन कंप न जात सँभारो।
है धौं कहा को कहा गयो यों दिन द्वैक ही तें कछु ख्याल हमारो।
कानन में बसी बाँसुरी की धुनि प्रानन मे बस्यो बाँसुरीवारो॥

× × ×

पीतम के संग ही उमगि उड़ि जैबे कों,
न एती अंग-अंगनि परंद पखियाँ दई।
कहै पदमाकर जे आरती उतारैं चौंर ढारैं,
श्रम हारैं पै न ऐसी सखियाँ दई।
देखि दृग द्वै ही सों न नेक हू अघैये,
इन ऐसे झुकाझुक में झपाक झखियाँ दई।
कीजै कहा राम स्याम-आनन विलोकिबे कों,
विरचि विरंचि न अनंत अँखियाँ दई॥

× × ×

भाल पै लाल गुलाल गुलाल सों गेरि गरे गजरा अलबेलो।
यों वनि वानिक सों पदमाकर आये जु खेलन फाग तौ खेलौ।
पै इक या छवि देखिबे के लिये मो बिनती कै न झोरिन झेलौ।
रावरे रंग-रँगी अँखियान में ए बलबीर अबीर न मेलौ॥

× × ×

गोकुल के कुल के, गली के गोप गाँवन के,
जौ लगि कछू को कछू भारत भनैं नहीं।
कहै पदमाकर परोस पिछवारन तैं,
द्वारन तैं दौरि गुन-औगुन गनैं नहीं।
तौ लौं चलि चातुर सहेली आइ कोऊ कहूँ,
नीके कै निचोरै ताहि करत मनै नहीं।
हौं तो स्याम-रंग में चुराइ चित चोराचोरी,
बोरत तौ बोर्‌यो पै निचोरत बनै नहीं॥

× × ×

जब लौं घर को धनी आवै घरै तब लौं तौ कहूँ चित देवौ करौ।
पदमाकर ये बछरा अपने बछरान के संग चरैबौ करौ।
अरु औरन के घर तें हम सों तुम दूनी दुहावनी लेवौ करौ।
नित साँझ-सवेरे हमारी हहा हरि! गैया भला दुहि जैवौ करौ॥

× × ×

आरस सों आरत सँभारत न सीस-पट,
गजब गुजारत गरीबन की धार पर।
कहै पदमाकर सुगन्ध सरसावै सुचि,
विथुर विराजैं बार हीरन के हार पर।

छाजति छबीली छिति छहरि छरा की छोर,
भोर उठि आई केलि मन्दिर के द्वार पर।
एक पग भीतर सु एक देहरी पै धरे,
एक कर कंज एक कर है किवार पर॥

× × ×

हौं अलि आज बड़े तरके भरि कै घट गोरस कौ पग धारी।
त्यों कब को धौं खरयो री हुती पदमाकर मो हित मोहनिवारी।
साँकरी खोरि मैं काँकरी की करि चोट चलो फिर लौटि निहारी।
ता खिन तें इन आँखिन तें न कढ़यो वह माखन चाखनहारी॥

× × ×

है नहिं माइको मेरी भटू यह सासुरो है सब को सहिबो करौ।
त्यों पदमाकर पाइ सोहाग सदा सखियान हु को चहिबो करौ।
नेह-भरी बतियाँ कहि कै निन सौतिन की छतियों दहिबो करौ।
चंदमुखी कहें होती दुखी तौ न कोऊ कहैगो सुखी रहिबो करौ॥

× × ×

राधिका सों कहि आई जु तू सखि साँवरे की मृदु मूरति जैसी।
ता छिन ते पदमाकर ताहि सुहात कछू न बिसूरति वैसी।
मानहु नीर-भरी घन की घटा आँखिन में रही आनि उनै-सी।
ऐसी भई सुनि कान्ह-कथा जु बिलोकहिगी तब होइगी कैसी॥

× × ×

ऐहै न फेरि गई जो निसा तनु यौवन है घन की परछाहीं।
त्यों पदमाकर क्यों न मिलै उठि यों निबहैगो न नेह सदा ही।
कौन सयान जो कान्ह सुजान सों ठानि गुमान रही मन माहीं।
एक जु कंज-कली न खिली तौ कहा कहूँ भौर कों ठौर है नाहीं॥

× × ×

कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में,
क्यारिन में कलिन-कलीन किलकंत है।
कहै पदमाकर परागन में पौन हूँ में,
पानन में पिक में पलासन पगंत है।
द्वार में दिसान में दुनी में देस देसन में,
देखौ दीप-दीपन में दीपत दिगंत है।

वीथिन में ब्रज में नवेलिन में वेलिन में,
बनन में बागन में बगरो वसंत है ॥

× × ×

और भाँति कुंजन में गुंजरत भौंर भीर,
औंर डौर झौरन में बौरन के ह्वै गये।
कहै पदमाकर सु औरै भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल औरै छबि छ्वै गये।
औरै भाँति विहंग समाज में आवाज होति,
ऐसे ऋतुराज के न आज दिन द्वै गये।
औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग,
औरै तन औरै मन औरै बन ह्वै गये ॥

× × ×

पात विन कीन्हे ऐसी भाँति गन वेलिन के,
परत न चीन्हे जे ये लरजत लुंज हैं।
कहै पदमाकर बिसासी या वसंत के,
सु ऐसे उतपात गात गोपिन के भुंज हैं।
ऊधो यह सूधो सो संदेसो कहि दीजो भले,
हरि सों, हमारे ह्याँ न फूले बन कुंज हैं।
किंसुक गुलाब कचनार औ अनारन की,
डारन पै डोलत अंगारन के पुंज हैं ॥

× × ×

मल्लिकन मंजुल मलिंद मतवारे मिले,
मंद-मंद मारुत मुहीम मनसा की है।
कहै पदमाकर त्यों नदन नदीन नित,
नागर नवेलिन की नजर नसा की है।
दौरत दरेरौ देत दादुर सु दुंदे दीह,
दामिनी दमकत दिसान में दसा की है।
बहलनि बुंदनि विलोकौ बगुलान बाग,
बंगलान वेलिन वहार बरसा की है ॥

× × ×

चंचला चमाकैं चहूँ ओरन ते चाह भरी,
चरजि गई तो फेरि चरजन लागी री।

कहै पद्माकर लवंगन की लोनी लता,
लरजि गई तो फेरि लरजन लागी री।
कैसे धरौं धीर वीर त्रिविध समीर तन,
तरजि गई तो फेरि तरजन लागी री।
घुमड़ि घमंड घटा घन की घनेरी अवै,
गरजि गई तो फेरि गरजन लागी री।।

× × ×

या अनुराग की फाग लखौं जहँ राँगती राग किसोर किसोरी।
त्यों पदमाकर घाली घली फिरि लाल ही लाल गुलाल की झोरी।
जैसी कि तैसी रही पिचकी कर काहू न केसरि रंग में बोरी।
गोरिन के रँग भीजिगो साँवरो साँवरे के रंग भीजिगै गोरी।।

× × ×

प्रानन के प्यारे तन-ताप के हरनहारे,
नंद के दुलारे व्रजवारे उमहत हैं।
कहै पदमाकर उरूजे उर अन्तर यों,
अन्तर चहैं हूँ जे न अन्तर चहत हैं।
नैननि वसे हैं अंग-अंग हुलसे हैं रोम-
रोमनि रसे हैं निकसे हैं को कहत हैं।
ऊधो वै गोविन्द कोऊ और मथुरा में यहाँ,
मेरे तो गोविन्द मोहि-मोहि मैं रहत हैं।।

× × ×

ए हो नन्दलाल ऐसी व्याकुल परी है बाल,
हाल ही चलौ तो चलौ जोरी जुरि जायगी।
कहै पदमाकर नहीं तौ ये झकोरे लगैं,
ओरे लौं अचाक विन घोरे घुरि जायगी।
सीरे उपचारन घनेरे घनसारन को,
देखत ही देखौ दामिनी लौं दुरि जायगी।
तौ ही लग चैन जौ लौं चेती है न चंदमुखी,
चेतैगी कहूँ तौ चाँदनी में चुरि जायगी।।

× × ×

वकसि वितुंड दये झुंडन के झुंड रिपु-
मुंडन की मालिका दई ज्यों त्रिपुरारी को।

कहै पदमाकर करोरन को कोप दये,
पोड़स हूँ दीन्हें महादान अधिकारी को।
ग्राम दये धाम दये अमित अराम दये,
अन्न-जल दीन्हे जगती के जीवधारी को।
दाता जयसिंह दोय बात तौ न दीनी कहूँ,
बैरिन को पीठि और डीठि परनारी को॥

× × ×

संपति सुमेर की कुवेर की जु पावै, ताहि
तुरत लुटावत विलंब उर धारै ना।
कहै पदमाकर सुहेममय हाथिन के,
हलके हजारन के वितरि विचारै ना।
गंज-गज - वकस महीप रघुनाथराव,
याहि गज धोखे कहूँ काहू देइ डारै ना।
याही डर गिरिजा गजानन को गोइ रही,
गिरि ते गरें ते निज गोद ते उतारै ना॥

× × ×

बछुरै खरी प्यावै गऊ तिहि को पदमाकर को मन लावत है।
तिय जानि गिरैयाँ गही वनमाल सु ऐंचे लला इँच्यो आवत है।
उलटी करि दोहनी मोहनी की अँगुरी थन जानि के दावत है।
दुहिबो औ दुहाइवो दोउन की सखि देखत ही वनि आवत है॥

× × ×

फाग के भीर अभीरन में गहि गोविन्द लै गई भीतर गोरी।
भाई करी मन की पदमाकर ऊपर नाइ अबीर की झोरी।
छीन पितंमर कंमर तें सु विदा दई मीड़ि कपोलन रोरी।
नैन नचाइ कही मुसकाइ लला फिरि आइयौ खेलन होरी॥

× × ×

मोहि लखि सोवत विथोरि गो सुबेनी बनी,
तोरि गो हिये को हरा छोरि गो सुगैया को।
कहै पदमाकर त्यों घोरि गो घनेरो दुख,
बोरि गो बिसासी आज लाज ही की नैया को।
अहित अनैसो ऐसो कौन उपहास यहै,
सोचत खरी मैं परी जोवत जुन्हैया को।

बूझैंगी चवैया तव केहौं कहा दैया, इत
पारि गो को मैया मेरी सेज पै कन्हैया को ॥

× × ×

दूर ही ते देखत विथा मैं वा वियोगिनि की,
आई भले भाजि ह्याँ इलाज मढ़ि आवैगी।
कहै पदमाकर सुनो हो घनस्याम, जाहि
चेतत कहूँ जो एक आहि कढ़ि आवैगी।
सर सरितान कों न सूखत लगैगी देर,
एती कछू जुलमिनि ज्वाला वढ़ि आवैगी।
ता के तन-ताप की कहौं मैं कहा वात, मेरे
गातहि छुवौ तौ तुम्हें ताप चढ़ि आवैगी ॥

× × ×

चितै-चितै चारों ओर चौंकि-चौंकि परै, त्यों ही
जहाँ-तहाँ जब-तब खटकत पात हैं।
भाजन-सो चाहत, गँवार ग्वालिनी के कछू,
डारनि डराने से उठाने रोम गात हैं।
कहै पदमाकर सु देखि दसा मोहन की,
सेष हु महेस हु सुरेस हु सिहात हैं।
एक पाय भीत एक पाय मीत-काँधे धरे,
एक हाथ छीको एक हाथ दधि खात हैं ॥

× × ×

कूरम पै कोल कोल हू पै सेष-कुंडली है,
कुंडली पै फवी फैल सुफन हजार की।
कहै पदमाकर त्यों फन पै फवी है भूमि,
भूमि पै फवी है छिति रजत-पहार की।
रजत-पहार पर संभु सुरनायक हैं,
संभु पर ज्योति जटाजूट है अपार की।
संभु जटाजूटन पै चंद की छुटी है छटा,
चंद की छटान पै छटा है गंग धार की ॥

× × ×

करम को मूल तन तन मूल जीव जग,
जीवन को मूल अति आनन्द की धरिवो।

कहै पदमाकर त्यों आनन्द को मूल राज,
राज मूल केवल प्रजा को भौन भरिवो।
प्रजा मूल अन्न सब अन्नन को मूल मेघ,
मेघन को मूल एक जज्ञ अनुसरिवो।
जज्ञन को मूल धन, धन-मूल धर्म, अरु
धर्म-मूल गंगाजल विन्दु पान करिवो॥

× × ×

हौं तो पंचभूत तजिवे को तक्यौ तोहि पर,
तैं तो कर्‌यो मोहिं भलो भूतन को पति है।
कहै पदमाकर सु एक तन तारिवे में,
कीन्हें तन ग्यारह कहौ सो कौनि गति है।
मेरे भाग गंग वहै लिखी भागीरथी तुम्हें,
कहिए कछुक तौ कितेक मेरी मति है।
एक भवसूल आयौं मेटिवे को तेरे कूल,
तोहि तौ त्रिसूल देत वार न लगति है॥

× × ×

लोचन असम अंग भसम चिता को लाइ,
तीनों लोक नायक सो कैसे के ठहरतो।
कहै पदमाकर त्रिलोकि इमि ढंग जाके,
वेद हूँ पुरान गान कैसे अनुसरतो।
बाँधे जटाजूट बैठि परवत कूट माहिं,
महाकालकूट कहौ कैसे के ठहरतो।
पीवै नित भंगै रहै प्रेतन के संगै, ऐसे,
पूछतो को नंगै जो न गंगै सीस धरतो॥

× × ×

लाइ भूमिलोक तें जसूस जबरई जाई,
जाहिर खबर करी पापिन के मित्र की।
कहै पदमाकर बिलोकि जम कहि के,
बिचारौ तौ करम गति ऐसे अपवित्र की।
जौं लौं लगे कागद विचारन कछुक तौ लौं,
ता के कान परी धुनि गंगा के चरित्र की।
वा के सीस ही तैं ऐसी गंगाधार वही जामें,
बही-बही फिरी बही चित्र औ गुपित्र की॥

× × ×

धारत ही बन्यो ये ही मतो गुरु-लोगन को डर डारत ही बन्यो।
हारत ही बन्यो हेरि हियो, पदमाकर प्रेम पसारत ही बन्यो।
वारत ही बन्यो काज सबै अब यों मुखचंद उघारत ही बन्यो।
टारत ही बन्यो घूँघट को पट नंदकुमार निहारत ही बन्यो॥

× × ×

देखु पदमाकर गोविन्द की अमित छवि,
संकर समेत विधि आनंद सों बाढ़ो है।
झिझिकत झूमत मुदित मुसुकात, गहि
अंचल को छोर दोऊ हाथन सों आढ़ो है।
पटकत पाँव होत पैंजनी झुनुक रंच,
नेक नेक नैनन ते नीर कन काढ़ो है।
आगे नंदरानी के तनिक पय पीये काज,
तीनि लोक ठाकुर सो ठुनुकत ठाढ़ो है॥

× × ×

कैधौं रूप रासि में सिंगार रस अंकुरित,
कंकुरित कैधौं तम जड़ित जुन्हाई में।
कहै पदमाकर किधौं यों काम कारीगर,
नुकता दियो है हिम फरद सुहाई में।
कैधों अरविन्द में मलिंदसुत सोयो आनि,
कैधों तिल सोहत कपोल की लुनाई में।
कैधौं पर्यो इंदु में कलिंदी जल बिंदु कैधौं,
गरक गुविंद भयो गोरी की गुराई में॥

× × ×

ऐसी न देखी सुनी सजनी घनी बाढ़ति है जो वियोग की बाधा।
त्यों पदमाकर मोहन को तबते कल है न कहूँ पल आधा।
लाल गुलाल घलाघल मैं दृग ठोकर दै गई रूप अगाधा।
कै गई कैगई चेटक सो मन लैगई लैगई लैगई राधा॥

× × ×

आवत उसासी, दुख लगै और हाँसी सुनि,
दासी उर लाय कहौ को नहि दहा कियो।
कहै पदमाकर हमारे जान ऊधौ उन,
तात को न मात को न भ्रात को कहा कियो।

कंकालिनि कूवरी कलंकिनि कुरूप तैसी,
चेटकन चेरी ताके चित्त को चहा कियो।
राधे की कहनि कहि दीजो तुम मोहन सों,
रसिक सिरोमणि कहाय ये कहा कियो॥

× × ×

ये इत घूँघट घालि चलैं उत वे जब बाँसुरी की धुनि खोलैं।
त्यों पदमाकर ये इतै गोरस लै निकसैं व चुकावत मोलैं।
प्रेम के फंदे सु प्रीति की पैठ में पैठत ही है दशा यह जो लैं।
राधामई भई श्याम की सूरत श्याममई भई राधिका डोलैं॥

× × ×

वाही के रँगी है रँग वाही के पगी है मग,
वाही के लगी है सँग आनँद अगाधा को।
कहै पदमाकर न चाह तजि नेकु दृग,
तारन ते न्यारो कियो एक पल आधा को।
ताहू पै गोपाल कछु ऐसे ख्याल खेलत हैं,
मान मोरिबो की देखिबे की करि साधा को।
काहू पै चलाय चख प्रथम रिझावै,
फेरि बाँसुरी बजाय के रिझाय लेत राधा को॥

× × ×

साहस हुँ न कहूँ दुख आपनो भाखे बनै न बनै बिनु भाखैं।
त्यों पदमाकर यों मग मैं रँग देखति हौं कब की रुख राखैं।
वा विधि साँवरे रावरे की न मिलै मरजी न मजा न मजाखैं।
बोलनि बानि विलोकनि प्रीति की वे मन वे न रही अब आँखैं॥

× × ×

गोकुल के कुल को तजि के भजि के बन वीथिन में बढ़ि जैये।
त्यों पदमाकर कुंज कछार विहार पहारन में चढ़ि जैये।
हैं नँदनंद गोविंद जहाँ तहाँ नंद के मंदिर में मढ़ि जैये।
यों चित चाहत एरी भटू मन मोहनै लैके कहूँ कढ़ि जैये॥

× × ×

ब्रजमंडली देखि सबै पदमाकर ह्वै रही यो चुपचाप री है।
मनमोहन की बहियाँ मैं छुटी उलटी यह बेनी दिखा परी है।

मकराकृत कुंडल की झलकैं इतहूँ भुजमूल मैं छाप री है।
इनकी उनतें जो लगीं अँखियाँ कहिये कछू तौ हमैं का परी है॥

× × ×

मो बिन माई न खाय कछू पदमाकर त्यों भई भाभी अचेत है।
बीरन आये लिवाइबे कों तिनकी मृदु बानिहू मानि न लेत है।
पीतम कों समुझावती क्यों नही ये सखी तू जु पै राखत हेत है।
और तो मोहि सबै सुख री दुख री यह मायके जान न देत है॥

× × ×

हौं अलि आजु बड़े तरके भरिके घट गोरस को पग धारो।
त्यों कबको धौं खरोइ हुतो पदमाकर मोहत मोहनी वारो।
साँकरी खोरि में काँकरि की करि चोट चल्यो फिरि लौटि निहारो।
ता खन ते इन आँखिन ते न टर्‌यो वह माखन चाखन हारो॥'

× × ×

खेलिये फाग निसंक ह्वै आज मयंकमुखी कहै भाग हमारो।
लेहु गुलाल दुहूँ कर मैं पिचकारिन रंग हिये मँह मारो।
भावै तुमै सो करो मोहिं लाल पै पाँय परौं जिन घूँघट टारो।
बीर की सौं हम देखिहैं कैसे अबीर तौ आँखैं बचाय के डारो॥

× × ×

चंदकला चुनि चूनरी चारु, दई पहिराइ लगाइ सु रोरी।
वेंदी बिसाखा रची पदमाकर, अञ्जन आँजि समाज करोरी।
लागी जबै ललिना पैहराँमन, स्याम कौं कंचुकी केसरि-बोरी।
हेरि हरे मुसिकाइ रही, अँचरा मुख दै वृषभान किसोरी॥

× × ×

घर ना सुहात ना सुहात बन बाहर हूँ,
बाग ना सुहात जे खुशाल खुशबोही सों।
कहै पदमाकर घनेरे घन धाम त्यो ही,
चंद न सुहात चाँदनी हूँ जोग जोही सों।
साँझ ना सुहात ना सुहात दिन माँझ कछू,
व्यापी यह बात सो बखानत हौं तो ही सों।
राति ना सुहात ना सुहात परभात आली,
जब मन लागि जात काहू निरमोही सों॥

× × ×

मोहि तजि मोहने मिल्यो है मन मेरो दौरि,
नैन हू मिले हैं देखि देखि सांवरो शरीर।
कहै पदमाकर त्यों कानमय कान भये,
हौं तो रही जकि थकि भूली सी भ्रमी सी बीर।
ये तौ निरदई दई इनको दया न दई,
ऐसी दशा भई मेरी कैसे धरौं तन धीर।
हो तो मन हूँ के मन नैनन के नैन जो पै,
प्रानन के प्रान तो पै जानते पराई पीर॥

× × ×

ईश की दुहाई शीशफूल तें लटकि लट,
लट तें लटकि लट कंध पै ठहरिगो।
कहै पदमाकर सुमंद चलि कंध हूँ तें,
भूमि भ्रमि भाँई-सी भुजा में त्यों भभरिगो।
भाँई सी भुजा तें भ्रमि आयो गोरी गोरी बाँह,
गोरी बाँह हूँ तें चापि चूरिन में अरिगो।
हेरे हरैं हरैं हरी चूरिन तें चाहौं जौ लौं,
तौ लौं मन मेरो दौहि तेरे हाथ परिगो॥

× × ×

'बोलति न काहे' एरी, 'पूछे बिन बोलौं कहा',
पूछति हौं 'कहा भई भेद अधिकाई है'।
कहै पदमाकर 'सुमारग के गये आये',
'साँची कहू मों सो कहाँ आजु गई-आई है'।
'गई-आई हौं तो साँवरे के पास' 'कौन काज',
'तेरे काज ल्यावन सु तेरी ही दुहाई है'।
'काहे ते न ल्याई फिरि मोहन बिहारी जू कौं',
'कैसे वाको ल्याऊँ' 'जैसे वाको मन ल्याई है'॥

× × ×

लागत बसंत के सु पाती लिखी प्रीतम कौं,
प्यारी परवीन है हमारी सुधि आनवी।
कहै पदमाकर इहाँ को यो हवाल,
बिरहानल को ज्वाल सो दवानल ते मानवी।

अब को उसासन को पूरो परगास सो तौ,
निपट उसास पौन हू ते पहिचानवी।
नैनन को ढंग सो अनंग पिचकारिन तैं,
गातन को रंग पीरे पातन तें जानवी॥

ग्वाल

आए पास कौन के हो, भूले कौन भौंन के हो,
डगमग गौन के हो, देह मौज-माँची है।
पाग-पेच ढीले भये, दृग उनमीले भये,
तऊ न लजीले भये, पाठी भली बाँची है।
'ग्वाल कवि' और न उपाय ब्रजराज अब,
जाउ-जाउ जहाँ चाउ, मैं तो यह जाँची है।
घर को जो मिसरी सो फीकी सी लगन लागै,
मीठी गुड़ चोरी कौ, कहन यह साँची है॥

× × ×

मेरे मन-भावन न आये सखि! सावन में,
तावन लगी है लता लरजि लरजि कै।
बूँदैं कबौ रूँदैं, कबौ धारैं हिय फारैं दैया!
बीजरी हू बारैं, हारी बरजि बरजि कै।
'ग्वाल कवि' चातकी परम पातकी सों मिलि,
मोर हू करत सोर तरजि तरजि कै।
गरजि गये जे घन, गरजि गये हैं भला,
फेर ए कसाई आये गरजि गरजि कै॥

× × ×

गावैं गुन नारद, न पावैं पार सनकादि,
बंदीजन हारे, हरी मेधा मंजु सेस की।
दरस किये ते अति हरस सरस होत,
परमपुनीत होत पदवी सुरेस की।
'ग्वाल कवि' महिमा कही न परै काहू विधि,
बैठे रहि महिमा दसा है यों गनेस की।
जारक जमेस की, बिदारक कलेस की है,
तारक हमेस की है तनया दिनेस की॥

× × ×

अवेधि सुरापी घोर तापी नीच पापी-मुख,
रविजा तिहारी बूंद लघु अति ह्वै गई।
ताहो छिन पल में अमल भल रूप भयो,
कुटिल कुढंग ताकी रेख-लेख ध्वै गई।
'ग्वाल कवि' कीरति सुचीरति दिसान जाति,
दूतन की चित्र की चलाँकी-चित खवै गई।
चार मुख चन्द्रधर चाहत चितौत ताहि,
चारन के देखत ही चार भुज ह्वै गई॥

× × ×

ख्याल जमुना के लखि नाके भये चित्रगुप्त,
बैन करुना के बोलि मेरी मति खवै गई।
कौन गहै कर मै कलम कौन काम करै,
रोस की दवाइति सों रोसनाई ध्वै गई।
'ग्वाल कवि' काहे ते न कान दे जमेस सुनौ,
नौकरी चुकाय कहाँ तेरी आँख स्वै गई।
लेखो भयो ड्योढ़ो रोजनामा को सरेखो भयो,
खाता भयो खतम फरद रद ह्वै गई॥

× × ×

आन भरी अधिक कृसान भरी पापिन को,
दान भरी दीरघ प्रमान मान कमुना।
तेज भरी मंजुल मजेज भरी रीझभरी,
खीझ भरी दूतन को दाहै दौरि समुना।
'ग्वाल कवि' सुखद प्रतीति भरी रीति भरी,
परम पुनीत भरी मीत भरी अमुना।
जंग भरो जमते, उमंग भरी तारिवे को,
रंग भरी तरल तरंग तेरी जमुना॥

× × ×

ग्रीषम की गजब धुकी है धूप धाम धाम,
गरमी झुकी है जाम जाम अति तापिनी।
भीजे खस बीजन झलेहू ना सुखात स्वेद,
गात न सुहात, बात दावा सी डरापिनी।
'ग्वाल कवि' कहै कोरे कुम्भन ते कूपन ते,
लै लै जलधार बार बार मुख थापिनी।

जब पियो तब पियो, अब पियो फेरि अब,
पीवत हूँ पीवत बुझै न प्यास पापिनी ॥

× × ×

मोरन के सोरन की नेकौ न मरोर रही,
घोरहूँ रही न घन घने या फरद की।
अम्बर अमल, सर सरिता बिमल भल,
पंक को न अंक और न उड़नि गरद की।
'ग्वाल कवि' चित मैं चकोरन के चैन भये,
पंथिन की दूर भई दूखन दरद की।
जल पर थल पर महल अचल पर,
चाँदी सी चमक रही चाँदनी सरद की ॥

× × ×

जेठ को न त्रास जाके पास ये विलास होय,
खस के मवास पै गुलाब उछर्यो करै।
बिही के मुरब्बे डब्बे चाँदी के वरक भरे,
पेठे पाग केवरे में बरफ पर्यो करै।
'ग्वाल कवि' चन्दन चहल मैं कपूर चूर,
चंदन अतर तर बसन खर्यो करै।
कंजमुखी कंजनैनी कंज के बिछौनन पै,
कंजन की पंखी करकंज तें कर्यो करै ॥

× × ×

तुम कैसी आई, मैं तौ दधि वेचि आवति ही,
नाहर निकसि आयौ बन बजमारे तें।
वा ने मैं न देखी, मैं अचक भजी चपकी सी,
धँसी मैं करीर की कुटी मैं डर भारे तें।
'ग्वाल कवि' बेंदी गई छूरा फँस्यौ, आँगी चली,
छिदे ये कपोल, देखो अति उरझारे तें।
आस ही न जीवन की, राम ने बचाय राखी,
मरु कै बची हों सास! धरम तिहारे तें।

× × ×

राति है अँधेरी, फेरि द्वारन किंवार देया,
हेरी बहुतेरी, वह राह अति बंक री।

सास ! तू पठावै लैन जामन सितावै अब,
जाएँ बनि आवै, पर कांपत है अंक री।
'ग्वाल कवि' गैयन की भीर माँहि जैवो-ऐवो,
दौरिके उटैवो पग, लागत है संकरी।
अँगियाँ मसकि जैहै, बिंदुली खसकि जैहै,
तव तू दुखैहै पैहै नाहक कलंक री॥

× × ×

वारिधि तात, बड़े विधि ते सुत, सोम से बंधु सहोदर ओई।
रंभा रमा जिनकी भगिनी, मघवा मधुसूदन से बहनोई।
तुच्छ तुसार, इतौ परिवार, भयो न सहाय कृपानिधि कोई।
सूखि सरोज गयो जल में, सुख सम्पति में सब को बस कोई॥

× × ×

प्रीति कुलीनन सौं निवहै अकुलीन की प्रीति मैं अन्त उदासी।
खेलत खेल गयो अबहीं हमैं योग पठाय बन्यो अविनासी।
त्यों 'कवि ग्वाल' विरंचि विचारि कै जोड़ी जुड़ाइ दई अति खासी।
जैसोई नंद को पालक कान्ह सो तैसियै कूबरी कंस की दासी॥

× × ×

लै गयो है जब ते अकरूर अरी तब ते बहुरंगी भयो।
प्रीति तजी सब गोपिन ते इकलो कुविजा को इकंगी भयो।
यों कवि ग्वाल ही भाल लिखी, हुतो मीत सही पै कुढंगी भयो।
माय न बाप को अंगी भयो सो हमारो कहौ कब संगी भयो॥

× × ×

रास कियो औ विलास कियो रहे पास हुलास की रास लै लूटी।
जा दिन ते अकरूर लेवायेगो ता दिन ते गति और ही जूटी।
त्यों कवि ग्वाल कलंकिनी कूबरी कान लगे ते सबै मति फूटी।
वाह रे वाह ! गोविन्द छली ! भली योग की भेजि दई विष-बूटी॥

× × ×

आई एक ओर तें अलीन लै किशोरी गोरी,
आयो एक ओर ते किशोर वाम हाल पै।
भाजि चल्यौ छैल छरी छोड़ पै, छबीलन ने,
छरी को उठाय, धाय मारो उर माल पै।

'ग्वाल कवि' हो हो कहि, चोरि कहि चेरो कहि,
बीच मैं नचायो थेई तत् थेई ताल पै।
ताल पै तमाल पै गुलाल उड़ि छायो ऐसो,
भयो एक और नंदलाल नंदलाल पै॥

ठाकुर

बैर प्रीति करिवे की मन में न राखै संक,
राजा राव देखि कै न छाती धकधाकरी।
अपनी उमंग को निवाहिवे की चाह जिन्हें,
एक सो दिखात तिन्हें बाघ और बाकरी।
ठाकुर कहत मैं विचार कै विचार देखो,
यहै मरदानन की टेक बात आकरी।
गही जौन गही जौन छोड़ी तौन छोड़ दई,
करी तौन करी बात ना करी सो ना करी॥

× × ×

सामिल में पीर में शरीर में न भेद राखै,
हिम्मत कपाट को उघारै तौ उघरि जाय।
ऐसो ठान ठानै तौ बिनाहू जन्त्र मन्त्र किये,
साँप के जहर को उतारै तौ उतरि जाय।
ठाकुर कहत कछु कठिन न जानौ अब,
हिम्मत किये तें कहो कहा न सुधरि जाय।
चारि जने चारिहू दिसा तें चारो कोन गहि,
मेरु को हिलाय कै उखारैं तौ उखरि जाय॥

× × ×

अन्तर निरन्तर के कपट कपाट खोलि,
प्रेम को झलाझल हिये में छाइयतु हैं।
लटी भई आप सो भई है करतूत जौन,
विरह विथा की कथा को सुनाइयतु हैं।
ठाकुर कहत वाहि परम सनेही जान,
दुख सुख आपने विधि सों गाइयतु हैं।
कैसो उतसाह होत कहत मते की वात,
जब कोऊ सुघर सुनैया पाइयतु हैं॥

× × ×

जौलों कोऊ पारखीसों होन नहिं पाई भेंट,
तब ही लों तनक गरीब लों सरीरा हैं।
पारखीसों भेंट होत मोल बढ़े लाखन को,
गुनन के आगर सुबुद्धि के गँभीरा हैं।
ठाकुर कहत नहिं निन्दौ गुनवारन को,
देखिबे को दीन ये सपूत सूर बीरा हैं।
ईश्वर के आनस तें होत ऐसे मानस जे,
मानस सहूर वारे धूर भरे हीरा हैं॥

× × ×

सुकवि सिपाही हम उन रजपूतन के,
दान युद्ध बीरता में नेकहू न मुरके।
जस के करैया हैं मही के महिपालन के,
हिये के विशुद्ध हैं सनेही साँचे उरके।
ठाकुर कहत हम बैरी बेवकूफन के,
जालिम दमाद हैं अदेनियाँ ससुर के।
चोजन के चोजी महा मौजिन के महाराज,
हम कविराज हैं पै चाकर चतुर के॥

× × ×

हिलमिलि लीजिये प्रवीनन तें आठो जाम,
कीजिये आराम जासों जिय को आराम है।
दीजिये दरस जाको देखिबे को हौंस होय,
कीजिये न काम जासों नाम बदनाम है।
ठाकुर कहत यह मन में विचारि देखो,
जस अपजस को करैया सब राम है।
रूप से रतन पाय चातुरी से धन पाय,
नाहक गँवाइबो गँवारन को काम है॥

× × ×

कोमलता कंज तें गुलाब तें सुगन्ध लैकै,
चन्द तें प्रकाश कियो उदित उजेरो है।
रूप रति आनन ते चातुरी सुजानन ते,
नीर लै निवानन तें कौतुक निवेरो है।
ठाकुर कहत यों मसालौ विधि कारीगर,
रचना निहारि जन होत चित चेरो है।

कंचन को रंग लै सवाद लै सुधा को,
बसुधा को सुख लूटि कै बनायौ मुख तेरो है ॥

× × ×

ग्वारन को यार है सिंगार सुख सोभन को,
साँचो सरदार तीन लोक रजधानी को।
गाइन के संग देख आपनो बखत लेख,
आनँद विशेष रूप अकह कहानी को।
ठाकुर कहत साँचो प्रेम को प्रसंगवारो,
जा लख अनंग रंग दंग दधिदानी को।
पुण्य नंद जू को अनुराग ब्रजवासिन को,
भाग यसुमति को सुहाग राधारानी को ॥

× × ×

आपने बनाइबे को और को बिगारिबे को,
सावधान ह्वै के सीखे द्रोह से हुनर है।
भूल गये करुनानिधान स्याम मेरे जान,
जिनको बनायो यह विश्व को वितर है।
ठाकुर कहत पगे सबै मोह माया मध्य,
जानत या जीवन को अजय अमर है।
हाय! इन लोगन को कौन सो उपाय जिन्हें,
लोक को न डर परलोक को न डर है ॥

× × ×

लगी अंतर में करै बाहिर को बिन जाहिर कोऊ न मानतु है।
दुख औ सुख हानि औ लाभ सबै घर की कोउ बाहर भानतु है।
कवि ठाकुर आपनी चातुरी सो सबही सब भाँति बखानतु है।
पर बीर मिलै बिछुरैकी विथा मिलिकै बिछुरै सोई जानतु है ॥

× × ×

वा निरमोहिनी रूप को रासि जौ ऊपर के उर आनत ह्वै है।
बार हू बार बिलोकि घरी घरी सूरति तौ पहचानति ह्वै है।
ठाकुर या मन को परतीति है जो पै सनेह न मानति ह्वै है।
आवत हैं नित मेरे लिये इतनों तो विसेसहू जानति ह्वै है ॥

× × ×

यह प्रेम कथा कहिये किहिसों सौ कहेसों कहा कोऊ मानत हैं।
पर ऊपरी धीर बँधायो चहैं तन रोग न वा पहिचानत हैं।

कहि ठाकुर जाहि लगी करकै सु तो को कसकै उर आनत है।
बिन आपने पाय बेवाय गये कोऊ पीर पराई न जानत है॥

× × ×

ये जे कहैं ते भले कहिबो करैं मान सही सी सबै सहि लीजे।
ते बकि आपुहि ते चुप होयँगी काहे को काहुबे उत्तर दीजे।
ठाकुर मेरे मते की यहै धनि मान कै जोबन रूप पतीजे।
या जग में जनमें को जिये को यहै फल है हरि सों हित कीजे॥

× × ×

एक ही सों चित चाहिये और लौं बीच दगा को परै नहिं टाँको।
मानिक सों चित बेंचि कै जू अब फेरि कहाँ परखावनो ताको।
ठाकुर काम नहीं सब को इक लाखन में परवीन है जाको।
प्रीति कहा करिबे में लगै करिकै इक ओर निवाहनो वाको॥

× × ×

वह कंजसों कोमल अंग गुपाल को सोऊ सबै पुनि जानती हौ।
बलि नेक रुखाई धरे कुम्हलात इतौऊ नहीं पहिचानती हौ।
कवि ठाकुर या करि जोरि कह्यो इतने पै बने नहिं मानती हौ।
दृग बान ये भौंह कमान कहौ अब कानलौं कौन पै तानती हौ॥

सूदन

बाप विष चाखै भैया खटमुख राखै देखि,
आसन में राखै बसवास जाकौ अचलै।
भूतनु के छैया आस पास के रखैया,
और काली के नथैया हू के ध्यानहू ते न चलै।
बैल बाघ बाहन बसन कौं गयन्द-खाल,
भाँग कौं धतूरे कौं पसार देतु अचलै।
घर को हवालु यहै संकर की बाल कहै,
लाज रहै कैसे पूत मोदक कों मचलै॥

× × ×

बहुत दिना बीते निज देसहिं। तबहीं दूत कह्यौ संदेसहिं।
दिल्लीपति बकसी इहि देसहिं। आवत तुम सौं करन कलेसहि।
सहस तीस असवार संग गनि। पैदल पील फील बहुतै भनि।
जोरें तुरक सहस दस बीसहिं। आवत तुम सों करि मन रीसहिं।

अलीकुली, रुस्तमखाँ संगहि । हकीमखाँ कुवरा हित जंगहि ।
फतेअली औरो बहु मीरन । राजा राउ लयें संग धीरन ।
इन्द्रनगर दच्छिन दिस कढ़िढय । निपट गरूर पूर हिय चढ़िढय ।
कछू दिननु आवै मेवातहिं । करिहँ तहाँ अधिक उतपातहिं ।
यातें वेगि करौ कछु घातहिं । जातें वाकौ होइ निपातहिं ।
अब जो नीक होइ सो कीजहि । याहि मारि जग में जस लीजहि ।
यौं कहि दूत नाइ निज सीसहिं । सूरज आइ कह्यो ब्रज-ईसहिं ।
तुरक सहस जोरे दस बीसहिं । दिल्ली ते निकस्यौ धरि रीसहिं ।
हम सौं जुद्ध करन मन राखतु । महाराज मैं हूँ अभिलाषतु ।
आइस ईस तुम्हारौ पाइय । तौ याकौं कछु हाथ लगाइय ।
तब ब्रजेश सुनि कै यह भाषिय । तात मतौ मो मन यह राखिय ।

× × ×

दिल्ली ते कढ़ि दूरि, जब आवै मैदान भुव ।
एक झपट करि सूर, याकौ दूरि गरूर करि ॥

मतौ मानि वदनेस कौ, सूरज उदित प्रतापु ।
आइसु लै असवार ह्वै, करि हरदेव सुजापु ॥

× × ×

जब चढ़्यो सिंह सूरज अमान । बज्जे निसान घन के समान ।
पीरे निसान सोभित दिसान । अरि गहत दहन मानहुँ कृसान ।
सुंडाल चलत सुंडनि उठाइ । जिनकैं जँजीर झनझनत पाइ ।
घनघनत घंट अरु घुघुर-माल । भनभनत भवर मद पर रसाल ।
छनछनत तुरगंम तरह दार । फनफनत वदन उच्छलत वार ।
सनसनत सिमिट जब करत दौर । गुनगिनत सु तिनके कविनु-मौर ।
सोहैं अनेक गजगाह वंत । चमकंत चारु कलगी अनंत ।
झलकंत जिरह बखतर नवीन । तमकंत बीररस भट प्रवीन ।
टमकंत तबल टामक विहद्द । ठमकंत टाप विनु भुव गरद्द ।
ढमकंत ढोल ढफला अगार । धमकंत धरनि धौंसा धुँकार ।
खमकंत वीर करि करि सुघोष । लमकंत तुरंगम पाइ पोष ।
हमकंत चले पाइक अनेक । इक जंग रंग जानत विवेक ।
कोदंड चंड कर कटि निषंग । इक चंड भुसंडी लै तुफंग ।
इक सेल साँग समसेर चर्म । रनभूमि भेद जानत सुपर्म ।
सब चढ़े बढ़े उच्छाह पूरि । छपि गयो गगन रवि उड़िय धूरि ।
चतुरंग चमू सत रंग रूप । सजि चढ्यौ सूर सूरज अनूप ।

कूँच कियौ डेरा दियौ, नौगाएँ मेवात ।
तरन तनेने तेह सौं, जुद्ध हेत ललचात ॥

× × ×

सूरज चारि उपाय प्रवीन सुचित्तई ।
साम दाम अरु भेद दंड धरि नित्तई ॥
खल के मन की लैन वात करि सीज़ की ।
विदा कर समुझाइ प्रवीन वकील की ॥
देस-काल वाल-ज्ञान लोभ करि हीन है ।
स्वामि-काम मैं लीन सुसील कुलीन है ॥
बहु विधि वरनै वानि हिये नहि भय रहै ।
पर-उर करै उदेग दूत तासौं लहै ॥
खान सलावत पास वकील सुजाइ के ।
करी सलाम कवाद अदाव वजाइ के ॥
नैननु लई सलाम सलावतुखान ने ।
कह्यौ कहा कहि वेग सुतोहि सुजान ने ॥

× × ×

कुँवर वहादुर ने प्रथम, तुमको कह्यौ सलाम ।
फेरि कही कि नवाव इत, आये हैं किहि काम ॥
करत चाकरी साह की, हम पाया यह देस ।
ताहि उजारत आप क्यौं, तुमकौं कह्यौ सँदेस ॥
जो कछु तुम्हें दिलीस नै, कह्यौ ताहि कहि देउ ।
ता माफिक हम सौं अवै, आप चाकरी लेउ ॥

× × ×

दुहूँ गयंदन पै चढ़ैं, धनुप वान गहि हत्थ ।
जम-किंकर जिमि कोह कै, नरनु करत लथ पथ्थ ॥

तिनके जुद्धहिं देखि वहुत चरवीचर आइय ।
जुग्गिनि जोरि जमाति जहाँ जाहर जमुहाइय ॥

काली करत कलोल खलखलैं तहँ खवीस गन ।
भैरव भभरयौ फिरत पिता के हार हेत रन ॥

जहँ ईस दूत जगदीस के, गीरवान गनिका उमगि ।
जहँ रुस्तमखाँ सुहकीमखाँ, स्वामिकाम हित रहिये पगि ॥

× × ×

रन तैं न पाइ चलाइयै । धनुवान लै समुहाइयै ।
वलु आपनौ सब संग लै । विफरे सुवी उमंग लै ।
तिहिं देखि जट्ट झपट्टिए । पल ए कमाहिं दपट्टिए ।
तहँ गौर गोकुलराम ने । वहु रंग जंग मचावने ।
करि क्रुद्ध जुद्धहिं पिल्लियौ । गहि सेल साँगनु भिल्लियौ ।
तिहिं भ्रात सूरतिराम हैं । बहु सूरता कौ धाम हैं ।
बलिराम विक्रम आगरौ । गहि तेग जुट्टि उजागरौ ।
हरताप कूरम केहरी । वरसाइ बाननु की झरी ।
सिवसिंह सार सम्हारिकै । मिलि गयौ फौजहि फारिकै ।
अरु मीर वीर विहंडनौ । वहु रीति जुद्धहि मंडनौ ।
लगि तेग तीरन जुट्टियौ । पर भूमि तै नहिं छुट्टियौ ।
सर स्यामसिंह सम्हारि कै । अरि मारियै ललकारि कै ।
व्रजसिंह बीर महावली । जिनि लै अनी अरि की दली ।
पखरैत पाखरमल्ल हैं । करि धयो पारतु हल्ल हैं ।
अरु किसनसिंह दरेर दै । गहि दई साँग करेर दै ।
वलवंड सिंभू को तनै । जिहिं नाम हरि नाराइनै ।
अरु औरहूँ वहु सूर हैं । पर प्रान पीवन पूर हैं ।
इतमें इते वलवान हैं । उत सेख मुगल पठान हैं ।
तिन में मच्यो घमसान है । सर सेल साँग कृपान हैं ।
दुहुँ दट्टि दट्टि दवट्टहीं । अरि नाम लै लै रट्टहीं ।
इक देत घाइ झटक्किकै । इक एक परत लटक्किकै ।
सुहकीमखाँ भुजदण्ड तैं । अरु रुस्तमाँ, वलवण्ड तैं ।
ज्यौं कुपित सेही अंग तैं । त्यौं छुटत वान निषंग तैं ।
तिहि देखि सिंभू को बली । रिस ज्वाल अन्तर उच्छली ।
फटकार सेलहिं हत्थ मैं । हय हंकियौ अरि गत्थ मैं ।
सुहकीमखाँ लखि आवतौ । जो हुतो चाप नचावतो ।
तिहिं कान लौं कसि वान कौं । तकि दियौ ताकि भुजान कौं ।
सर सो लग्यो उर आइ कै । छत करयौ श्रोन वहाइ कै ।
वह बीर तीरहिं कढ्ढि कै । रस रुद्र रंगहिं वढ्ढि कै ।
हय हंकियौ गजदन्त पै । मनु राखि कै अरि अन्त पै ।
ज्यौं सिंह गज मदमन्त पै । हय लस्यौं यौं करि-दन्त पै ।
फटकारि सेलहिं उद्ध कौ । तकि आपुनी अरि सुद्धि कौं ।
वह सेल गजग्रह भेद कै । सुहकीम खाँ तनु छेद कै ।
तवही सुतीरन वुट्ठियौ । सुहकीमखाँ रन रुट्ठियौ ।
इक दयौ सरकटि तक्कि कै । वह लग्यौ हिरनहिं धक्कि कै ।

तब ही सुसिंभू पूत ने। गहि तेग बल मजबूत ने।
गज कुम्भ दट्टय करक्कि के। मनु परिय विज्जु तरक्कि के।
फिरि धाइ गज गद्दी दली। कसना विदारिय भुजबली।
सुहकीमखाँ भुव पारियौ। गज पट्टि तें गहि टारियौ।
इमि गिरत लोग निहारियौ। मनु कान्ह कंस पछारियौ।
तबही सु सेल अरु साँग की। बरषा भई चहुँ आँग की।
तबही सु औरन दौरि कै। लिए रुस्तमाँ झकझोरि कै।
करि एक एकहिं चोट सौं। राख्यौ हकीमहि जोट सौं।
तबही सु तिनके साथ के। करि एक एकहिं हाथ के।
सरदार जूझत खेत मैं। भजि गए बहुत अचेत मैं।
तजि कै हथ्यारनु पिट्टि दै। धस गए लसकर निट्टि दै।
ब्रज वीरहू तिन संगही। चलि गए कटक उमंगही।

× × ×

तब ही बकसी के कटक, खल भल परी अपार।
आए आए सब कहैं, सूरज सुभट उदार॥

घरी चारि डेरा लुटे, बुटे तुरक बेहाल।
जट्ट जट्ट कहते फिरैं, सब ने जान्यो काल॥

फेरि बगद ब्रज-वीर सौं, आए ताही खेत।
जहाँ परे रुस्तम वली, अरु हकीमखाँ रेत॥

जोधराज

मै पहलै पतिसाह सों, करी बात अब टेक।
सो अब चौरै साहि सो, करो जंग अब एक॥

चढ़िए करि कोप हमीर मनं।
करि दिढढ सगढ्ढ सम्हारि पनं।
बहु तोप सुसिद्ध संवारि धरी।
बुरजैं बुरजैं धर धूम परी।
बहु कंगुर कंगुर बीर अरे।
सब द्वारन द्वारन धीर धरे।
सब ठौरन ठौरन राखि भरं।
चढ़िए गजिपै चहुवान नरं।

बहु वीर हमीर सु संग चढ़े।
गजराजन उप्पर द्वन्द वढ़े।
करि डंवर अंवर सीस लगे।
मनु सोवत धीर सवीर जगे।
बहु चंचल वाजि करत्त खुरी।
तिन उप्पर पष्वर सौंज परी।
जर जान जवान लसैं दल मैं।
रन मैं उनमत्त लसैं वल मैं।
वहु दुंदुभि वज्जत घोर घनं।
निकसे तब राव करन्न रनं।
वहु बारन बारन वीर कड़े।
गज बाजि सु सिंदन जान चढ़े।
लखि साह सनम्मुख कोप कियं।
रणथम्भ चहूँ दिसि घेरि लियं।
मिलि राव हमीर सु साहि दलं।
विफरे वर वीर करंत हलं।
सर छुट्टत फुट्टत पार गजं।
सु मनो अहि पच्छय मध्य रजं।
तरवार वहैं कर पानि बलं।
धर मध्य धरैं धर हक्क खलं।
मुख अग्ग बढ़ै रणधीर लरैं।
तिनसों पतिसाह के वीर अरैं।
अजमंत मुहम्मद इस्क अली।
तिन संग असीसु सहस्स चली।
तिहि द्वन्द अमंद विलंद कियो।
रणधीर महा रण झेलि लियो।
करि कोप तवै रणधीर मनं
वर वैन कहै पन धारि घनं।
महिमंद अली मुख आय जुर्यो।
दुहुँ वीर तहाँ तव जुद्ध कर्यो।
अजमंत कमान लई कर मैं।
रणवीर कै तीर कढ्यो उर मैं।
रणवीर सुकोपि कै सांगि लई।
अजमंत कै फूटि के पार गई।

परियो अजमंत सु खेत जबै।
महमंद अली फिरि आय तबै।
रणधीर सु कोपि के बैन कहै।
कर देखि अबै मति भुल्लि रहै।
किरवान सु धीर के अंग दई।
कटि टोप कछू सिर मांझ भई।
तब कोप कियो रणधीर मनं।
किरवान दई महमंद तनं।
परियो महमंद अमंद बली।
तब साहि कि सैन सबै जु हली।
लुथि लुत्थि परै बहु बीर अरै।
बहु खंजर पंजर पार करै।
धर सीस परे करि रीस मनं।
कर पाँव कटै बहु कौन पनं।
यहि भाँति भिरे चहुवान बली।
मुरि साह की सेनि सु भग्गि चली।
बलखी जु परे जू हजार असी।
लखि कालिय अट्ठ सु हास हँसी।
चहुवान परे इक जो सहसं।
सुरलोक सबै वर वीर बसं।

× × ×

असी सहस बलखी परे, महमद अजमत खान।
तहाँ राव रणधीर के, परे सहस इक ज्वान॥
भजी फौज सब साह की, परे मीर दोइ बीर।
करे याद पतिसाह तब, गज्जनि गढ़ के पीर॥

× × ×

भज्जिय फौज साह की जबही,
फिरो फिरो बानी कह सबहीं।
तहाँ साह करि कोन सु बुल्लिव,
समर भुम्मि अब छंडि सुचल्लिव।
सरबसु खाय भोग करि नाना,
अबै परम प्रिय लागत प्राना।
समर विमुख तें जानव जोई,
हनूं आप कर तजों न सोई।

सुने साह के कोपि सु वैनं,
फिरी सैन इम मंत्र सु एनं।
वखतर पक्खर टोप सु सज्जिय,
जुरे जंग वहु मीर सु गज्जिय।

× × ×

करि कोप वादितखाँ जुरे जंग,
मनो प्रले पावक उठे अंग।
गुंजत निसान फहरात धुज्ज,
जुटि जिरह टोप तन नैन सज्ज।
किए हुक्म साह तन मैं रिसाइ,
किन्हों सु जंग फिर वीर आइ।
छूटत तोप मनु वज्रपात,
जल सुक्कि धरा छुटि गर्भजात।
वहु वान चलत दोउ ओर घोर,
अररात अमित मच्यो सु सोर।
भए अंध धुंधसु सुज्झै न हथ्थ,
वीर चहुवान तहं करि अकथ्थ।
रणधीर उतै वाधत्ति खान,
वजराग अंग जुट्ट सु पान।
हजार वीस वादित्य साथ,
सव जुरे आय रणधीर हाथ।
बज्जंत सार गज्जंत अभ्भ,
रणधीर सथ्थ आए स सब्भ।
करि क्रोध जोध वाहंत सार,
टूटंत अंग फूटंत पार।
करि खेल सेल दोउ ओर वीर,
वाहंत वीर किरवान धीर।
हजार वीस बद्धत्त साह,
धर परे वीर करि अकथ साह।
रणधीर मीर दोउ भिरे आइ,
वाधत्त गाहि तव रोस वाइ।
लग्गी सुढाल भू टूटि ताम,
फिर दई सीस किरवान जाम।

लग्गी सु सीस धर परयौ जाय,
दुई टूक होय भुमि अद्ध काय ।

× × ×

भयो सोच जिय साह कै, जीतिय जंग हमीर ।
चादित खाँ से रन परे, बीस हजार सुबीर ॥
महरम खाँ करि जोरि कै, करै अर्ज तिहि बार ।
लै कर शेख हमीर अब, किमि मिल्यो यहि बार ॥
गही तेग तुम सों अबै, हठ नहि तजै हमीर ।
सेख देय मिल्लै नहीं, पन सच्ची वर वीर ॥

चन्द्रशेखर

हाथ जोरि हम्मीर कहँ, महिमा गही कमान ।
अर्धचन्द सर साधि कै, तानी कान प्रमान ॥
बज्र सरिस छोरयो विषम, मीर तीर परचंड ।
पातसाह सिरछत्र को, दंड कियो द्वै खंड ॥
एक तीर सों काटि कै, छत्र दियो महि डारि ।
तब हमीर हरहुर हँसे, सनमुख मीर निहारि ॥

× × ×

खंड ह्वै टुटूक परयो लूक सो लपकि छत्र,
हूकसी समानी हियैं साह सोक सों भरे ।
जोहत जके से चौंकि चलत थके से सबै,
सुकुर मनावत अमीर अतिहीं डरे ।
आनि धरयो आगें बान सहित उटाइ हेम,
हीरन रचित गजमुकता लखैं जरे ।
मानो आसमान तें नछत्रन समेत परयो,
भूमि मैं कलाधर सपूरन कला धरे ॥

× × ×

छत्र के परत सबही की छबि छीन भई,
दीन भयो बदन अलाउदीन साह को ।
पीर उठी उर मैं अचानक अमीरन के,
धीरज धरै को धार धूजत सिपाह को ।

सहमि गये रे सबै सोचत ससंक कहँ,
खैर करी खालिक खुदाय सदराह को।
भयो थ्यो दिल्ली को पति देखत पनाह आज,
दाह मिटि गयो थ्यो हमीर नरनाह को॥

× × ×

पीर अमीरन के उठी, धीर तज्यो सुलतान।
तुरत मंगायो आप ढिग, छत्र सहित रिपुबान॥
सर में बांध्यो साह तब, गहो बलो कर अत्र।
तिय बदले तेरो कियो, मीर भंग सिर छत्र॥
महिमाँ मीर मंगोल मैं, कर वर गही कमान।
है दुरलभ अब आप को, जियत राखिबो प्रान॥

× × ×

मौन भये मन ही मन मैं, सुलतान विचारत बात अनेकौ।
जो लरिये मरिये इत तौ, गढ़ की चढ़ि पैयत घात न एकौ।
नाहक जात मरे सिगरे भट, आवत हाथ लखात न एकौ।
लौटि चलो अपने घर कों, जो भई सो भई कहि जात न एकौ।

× × ×

दीरघ सोच दिलीपति के दल, छीन भयो बलहीन मलीनो।
सान दई अपमान अंगै निज, प्रान बचे सोइ उद्यम कीनो।
हार लई अपने सिर मान, निदान यहै करि आयस दीनो।
लै अपनो दल संग सबै उठि, भाजि चल्यो सहसा भय भीनो।

× × ×

मारे गढ़ चक्कवै हमीर चहुआन चक्र,
डारे गोल गरद मिलाइ मद मानी के।
लोटै रेत खेत एकै पोटैं लेत देत एकै,
चोटनि समेत लड़े लाड़िले पटानी के।
हारे डरमारे राह बासन हथ्यार डारे,
बाहन सँभारै कौन भरे परेसानी के।
भाजे जात दिल्ली के अलाउदीन वारे दल,
जैसे मीन जाल तें परत दिसि पानी के॥

× × ×

भागे मीरजादे पीरजादे औ अमीरजादे,
भागे खानजादे प्रान मरत बचाइ कै।

भाजि गजबाजी रथ पथ न संभरैं परैं,
गोलन पै गोल सूर सहमि सकाइ कै।
भाग्यो सुलतान जान बचत न जान वेगि,
वलित वितुंड पैं विराज बिलखाइ कै।
जैसे लगें जंगल मैं ग्रीषम की आगि चलै,
भागि मृग महिष बराह बिललाइ कै॥

× × ×

भाजे जात रंक से ससंकित अमीर परे,
भीरन पै भीर धरैं धीर न रहैं थिरे।
जंगल की जार मैं पहार मैं पराइ परे,
एकै वारि धार में उछार मारि के परे।
कंपित करी पैं साह साहब अलाउदीन,
दीन दिल बदन मलीन मन मैं खिरे।
प्रबल प्रचंड पौन पच्छिमी हमीर मारे,
बादल समान मुगल-दल उड़े फिरे॥

× × ×

भग्यो प्रबल दल संग लै, दिल्ली को सुलतान।
हरष्यो राय हमीर उर, गढ़ पर बजे निसान॥
आइ अरज मंत्रिन करी, सुनिए राय हमीर।
हिन्दु धनी हद आपकी, पत राखी रघुबीर॥
गयो साह दिसि आपनी, रह्यो हमारो खेत।
ऐसे सुजस सुपंथ मैं, ईश्वर सब को देत॥

अर्जुनदेव

आपे पेडु विसथारी साप। अपनी पेती आपे राष॥
जत कत पेपउ एकै ओही। घट घट अंतरि आपे सोइ॥
आपे सूरु किरणि विसथारु। सोई गुपतु सोई आकारु॥
सरगुण निरगुण थापै नाउ। दुह मिलि एक कीनो ठाउ॥
कहु नानक गुरि भ्रमु भउ पोइआ। अनद रूपु सभु नैन अलोइआ॥

× × ×

सगल बनसपति महि बैसंतरु, सगल दूधु महि घीआ।
ऊँच नीच महि जोति समाणी, घटि घटि माधउ जीआ॥

संतहु घटि घटि रहिया समाहिउ ।
पूरन पूरि रहिउ सरब महि, जलथल रमईआ आहिउ ॥
गुणनिधान नानकु जसु गावै, सतिगुरि भरमु चुकाइउ ।
सरब निवासी सदा अलेपा, सभि महि रहिआ समाइउ ॥

× × ×

एक रूप सगलो पासारा । आपे बनजु आपि बिउहारा ॥
ऐसो गिआनु बिरलोई पाए । जत जत जाईए, तत तत द्रिसटाए ॥
अनिक रंग निरगुन इकरंगा । आपे जलु आपही तरंगा ॥
आपही मंदरु आपही सेवा । आपही पूजारी आपही देवा ॥
आपही जोग आपही जुगता । नानक के प्रभु सदही मुकता ॥

× × ×

तू जलनिधि हम मीन तुमारे । तेरा नामु बूँद हम चात्रिक तिषहारे ।
तुमरी आस पिआसा तुमरी, तुमही संगि मनु लीना जीउ ॥
जिउ बारिकु पी षीरु अघावै । जिउ निधनु धनु देखि सुपु पावै ।
त्रिपावंत जलु पीवत ठंडा, तिउ हरि संगि इहु मनु भीना जीउ ॥
जिउ अंधिआरै दीपक परगासा । भरता चित्रतत पूरन आसा ।
मिलि प्रीतम जिउ होत अनंदा, तिउ हरि रंगि मनु रंगीना जीउ ॥
संतन मोकउ हरि मारगि पाइआ । साध क्रिपालि हरि संगि गिझाइआ ।
हरि हमारा हम हरि के दासे, नानक सबदु गुरु सचु दीना जीउ ॥

× × ×

तूं पेडु साप तेरी फूली । तू सूषमु हो असथूली ।
तूं जलनिधि तूं फेनु बुदबुदा, तुधु बिनु अवरु न भालीऐ जीउ ।
तूं सूत मणीए भी तूं है । तूं गंठी मेरु सिरि तूं है ।
आदि मधि अंति प्रभु सोई, अवरु न कोइ दिषलीऐ जीउ ॥
तूं निरगुण सरगुण सुपदाता । तूं निरबाणु रसीआ रंगिराता ।
अपणे करतब आपे जाणहि, आपे तुधु समालीऐ जीउ ॥
तूं ठाकुरु सेवकु फुनि आपे । तूं गुपतु परगटु प्रभ आपे ।
नानक दासु सदा गुण गावै, इक भोरी नदरि निहालीऐ जीउ ॥

× × ×

प्रभ जी तू मेरे प्रान अधारै ।
नमसकार डंडउति बंदना, अनिक बार जाउ वारै ॥
उठत बैठत सोवत जागत, इहु मनु तुझहि चितारै ।
सूष दूष इसु मन की बिरथा, तुझही आगे सारै ॥

तू मेरी ओट बल बुधि धन तुमही तुमहि मेरै परवारै।
जो तुम करहु सोई भल हमरै, पेषि नानक सुख चरनावै ॥

× × ×

मैं नाही प्रभ सभ किछु तेरा।
ईघै निरगुन ऊघै सरगुन, केल करत बिचि सुआमी मेरा।
नगर महि आपि बाहरि फुनि आपन, प्रभ मेरे को सगल बसेरा।
आपे ही राजन आपे ही राइआ, कह कह ठाकुरु कह कह चेरा ॥
काकउ दुराइ कासिउ बल बंका, जह जह पेखउ तह तह नेरा।
साध मूरति गुरु भेटिउ नानक, मिलि सागर बूंद नही अनहेरा ॥

× × ×

तेरी कुदरत तूहै जाणहि, अवरु न दूजा जाणै।
जिसनो क्रिपा करहि मेरे पिआरे, सोई तुझै पछाणै ॥
तेरिआ भगता कउ बलिहारा।
थान सुहावा सदा प्रभ तेरा, रंग तेरे आपारा ॥
तेरी सेवा तुझते होवै, अवरु नहीं दूजा करता।
भगतु तेरा सोई तुधु भावै, जिसनो तू रंगु धरता ॥
तूं वड़ दाता तू वड़ दाना, अउरु नहीं को दूजा।
तू समरथु सुआमी मेरा, हउ किआ जाणा तेरी पूजा ॥
तेरा महलु अगोचरु मेरे पिआरे, विषमु तेरा है भाणा।
कहु नानक ढहि पइआ दुआरे, रखि लेवहु मुगध अजाणा ॥

× × ×

प्रभु मेरो इत-उत सदा सहाई।
मन मोहनु मेरे जीअ को पिआरो, कवनु कहा गुन गाई ॥
खेलि खिलाइ लाड़ लाड़ावै, सदा सदा अनदाई।
प्रतिपालै बारिक की निआई, जैसे मात पिताई ॥
तिसु बिनु निमख नहीं रहि सकीऐ, विसरि न कबहू जाई।
कहु नानक मिलि संत संगति ते, मगन भए लिव लाई ॥

× × ×

कवन रूपु तेरा आराधउ। कवन जोगु काइआ ले साधउ ॥
कवन गुनु जो तुझलै गावउ। कवन खेल पारब्रह्म रिझावउ ॥
कवन सु पूजा तेरी करउ। कवन सु बिधि जितु भवजल तरउ ॥
कवन तप जितु तपीआ होइ। कवनु सुनामु हउमै मलु खोइ ॥

गुण पूजा गिश्रान धिश्रान नानक सगल घाल ।
जिसु करि किरपा सतिगुरु मिलै दइश्राल ॥
तिसही गुनु तिनही प्रभु जाता । जिसकी मानि लेइ सुपदाता ॥

× × ×

भुज बल बीर ब्रह्म सुप सागर । गरत परत गहि लेहु श्रंगुरीश्रा ॥
स्रवनि न सुरति नैन सुंदर नही । श्रारत दुश्रारि रटत पिंगुरीश्रा ॥
दीनानाथ श्रनाथ करुणामै, साजन मीत पिता महतरीश्रा ।
चरन कवल हिरदै गहि नानक, भौसागर संत पारि उतरीश्रा ॥

× × ×

श्रैसी प्रीति गोबिंद सिउ लागी । मोलि लए पूरन वड़ भागी ॥
भरता पेपि बिगसै जिउ नारी । तिउ हरिजनु जीवै नामु चितारी ॥
पूत पेपि जिउ जीवत माता । श्रोति पोति जनु हरि सिउ राता ॥
लोभी श्रनदु करै पेपि धना । जन चरन कमल सिउ लागो मना ॥
विसरु नही इकु तिलु दातार । नानक के प्रभ प्रान श्रधार ॥

× × ×

विसरत नाहि मन ते हरी ।
श्रब इह प्रीति महा प्रबल भई, श्रान बिपै जरी ॥
बूंद कहा तिश्रागि चात्रिक, मीन रहत न घरी ।
गुन गोपाल उचरु रसना, टेव एही परी ॥
महानाद कुरंक मोहिउ, बेधि तीपन सरी ।
प्रभ चरन कमल रसाल नानक, गाँठि बाँधि धरी ॥

× × ×

मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई । बिलप करे चात्रिक की निश्राई ॥
त्रिपा न उतरै सांति न श्रावै, बिनु दरसन संत पिश्रारे जीउ ॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई, गुर दरसन संत पिश्रारे जीउ ॥
तेरा मुपु सुहावा जीउ सहज धुनि वाणी । चिरु होश्रा देपे सारिंगपाणी ॥
धनु सुदेसु जहाँ वसिया, मेरा सजणा मीत मुरारे जीउ ॥
हउ घोली हउ घोलि घुमाई, गुर सजणा मीत मुरारे जीउ ॥
इक घड़ी न मिलते ता कलि जुगु होता । हुणि कदि मिलीश्रै प्रिश्रतुधु भगवंता ।
मोहि रैणि न विहारै नींद न श्रावै, बिन देपै गुर दरवारे जीउ ॥
हउ घोली जिउ घोलि घुमाई, तिसु सचे गुर दरवारे जीउ ॥
भागु होश्रा गुरि संत मिलाइश्रा । प्रभु श्रबिनासी घर महि पाइश्रा ।

सेव करी पलु चसा न विछुड़ा, जन नानक दास तुमारे जीउ ॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई, जन नानक दास तुम्हारे जीउ ॥

× × ×

सतगुर मूरति कउ बलि जाउ ।
अंतरि पिआस चात्रिक जिउ जल की, सफल दरसनु कदि पांउ ॥
अनाथा को नाथु सरब प्रतिपालकु, भगति वछलु हरि नांउ ।
जाकउ कोइ न राखै प्राणी, तिसु तू देहि असराउ ॥
निधरिआ धरनि गति आगति, निथाविआ तू थाउ ।
दहदिसि जांउ तहाँ तू संगे, तेरी कीरति करम कमाउ ॥
एकसु ते लाख लाख ते एका, तेरी गति मिति कहि न सकाउ ।
तू बेअंतु तेरी मिति नहीं पाईऐ, सभु तेरो खेलु दिखाउ ॥
साधन का संगु साध सिउ गोसटि, हरि साधन सिउ लिव लाउ ।
जन नानक पाइआ है गुर मति, हरि देहु दरसु मनि चाउ ॥

× × ×

सभ किछु घर महि बाहरि नाही । बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ।
गुर परसादी जिनी अंतरि पाइआ, सो अंतरि बाहरि सुहेला जीउ ॥
झिमि झिमि वरसै अंम्रित धारा । मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा ।
अनद विनोद करै दिन राती, सदा सदा हरिकेला जीउ ॥
जनम जनम का विछुड़िआ मिलिआ, साध क्रिपाते सूका हरिआ ।
सुमति पाए नाम धिआए, गुरमुखि होए मेला जीउ ॥
जल तरंग जिउ जलहि समाइआ । तिउ जोती संगि जोति मिलाइआ ।
कहु नानक भ्रम कटे किवाड़ा, बहुड़ि न होइऐ जउला जीउ ॥

× × ×

अब मोरो नाचनो रहो ।
लाल रंगीला सहजे पाइउ, सतगुर बचनि लहो ॥
कुंआर कंनिआ जैसे संगि सहेरी, प्रिआ बचन उपहास कहो ।
जउ सुरिजनु ग्रिह भीतरि आइउ, तब मुखु काजि लजो ॥
जिउ कनिको कोठरी चड़िउ, कबरो होत फिरो ।
जबते सुध भए है बारहिं, तबते थान थिरो ॥
जउ दिनु रैनि तऊ लउ बजिउ, मूरत घरी पलो ।
बजावनहारो उठि सिधारिउ, तब फिरि बाजु न भइउ ॥
जैसे कुंभ उदक पूरिआनिउ, तब उहु भिन द्रिसटो ।
कहु नानक कुंभु जलै महि डारिउ, अंभै अंभ मिलो ॥

× × ×

गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ ।
दीन दइआल भए किरपाला, अपणा नामु आपि जपाइआ ॥
संत संगति मिलि भइआ प्रगास । हरि हरि जपत पूरन भई आस ॥
सरब कलिआण सूख मनि वूठे । हरि गुण गाए गुर नानक तूठे ॥

× × ×

उदमु करत होवै मनु निरमलु, नाचै आपु निवारे ।
पंच जना ले वसगति राखै, मन महि एकंकारे ॥
तेरा जनु निरति करे गुन आवै ।
रबाबु पखावज ताल घुँघरू, अनहद सबद बजावै ॥
प्रथमे मनु परबोधै अपना, पाछै अवर रीझावै ।
राम नाम जपु हिरदै जापै, मुख ते सगल सुनावै ॥
कर संगि साधू चरन पखारै, संत धूरि तनि लावै ।
मनु तनु अरपि धरे गुर आगै, सति पदारथु पावै ॥
जो जो सुनै पेखै लाइ सरधा, ताका जनम मरण दुखु भागै ।
ऐसी निरति नरक निवारै, नानक गुरमुखि जागै ॥

× × ×

बिसरि गई सभ ताति पराई । जबते साध संगति मोहि पाई ॥
ना को वैरी नहीं बिगाना, सगल संगि हम कउ बनिआई ॥
जो प्रभ कीनो सो भल मानिउ, एह सुमति साधू ते पाई ॥
सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै, पेखि पेखि नानक बिगसाई ॥

× × ×

अनदो अनदु घणा मै सो प्रभु डीठा राम ।
चाखिअड़ा चाखिअड़ा मै हरिरसु मीठा राम ॥
हरि रस मीठा मन महि वूठा सतिगुरु तूठ सहजु भइआ ।
ग्रिहु वसि आइआ मंगलु गाइआ, पंच दुसह उइ भागि गइआ ॥
सीतल आघाणे अंम्रित बाणे साजन संत बसीठा ।
कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ, सो प्रभु नैणी डीठा ॥
सो हियड़े सो हियड़े मेरे बंक दुआरै राम ।
पाहुनड़े पाहुनड़े मेरे संत पिआरे राम ॥
संत पिआरे कारज सारे नमसकार करि लगे सेवा ।
आपे जांई आपे मांई आपि सुआमी आपि देवा ॥
अपणा कारजु आपि सवारे आपे धारन धारे ।
कहु नानक सहु घर महि बैठा सोहे बंक दुआरे ॥

नवनिधेन उनिधे मेरे घर आई राम ।
सभु किछु मैं सभु किछु पाइआ नामु धिआई राम ।
नामु धिआई सदा सपाई सहज सुभाई गोविंदा ।
गणत मिटाई चूकी पाई कदे न विआपे मन चिंदा ।
गोविंद गाजे अनहद वाजे, अचरज सोभ बणाई ।
कहु नानक पिरु मेरे संगे, ताभे नवनिधि पाई ।।
सर सिअड़े सर मिअड़े मेरे भाई सभ मीता राम ।
विपमो विपमु अपाड़ा मैं, गुर मिलि जीता राम ।
गुर मिलि जीता हरि हरि कीता, तूटी भीता भरमगड़ा ।
पाइआ पजाना बहुतु निधाना, साणथ मेरी आपि पड़ा ।
सोई सुगिआना सो परधाना, जो प्रभि अपना कीता ।
कहु नानक जाबलि सुआमी, ता सरसे भाई मीता ।।

संत बपनाजी

हिरदो वडो रे कटोर कोटि किया भीजे नहीं, ऐसो पाहण नाही ओर ।।
गंगा न गोदावरी न्हायो, कासी पुहकर माहि रे ।।
कर्म कापडै मैण को, तार्थे रोम भीगो नाहि रे ।।
वेद न भागोत सुनिया, कथा सुणी अनेक रे ।।
कर्म पापर सारिषा, तार्थे वाण न लागे एक रे ।।
औंधा कलसा ऊपरैं, जल बूठो अपंडधार ।।
तत वेला निहालियो, तो पाणी नहीं लगार ।।
ब्रह्म अगनि पाषाण जाल्या, चूना कीया सलेस रे ।।
वषना भिजोया रामरस, म्हारा सतगुर ने आदेस रे ।।

× × ×

विचालै अंतरो रे, हरि हम भागो नांहि ।।
को जाणै कद भाजसी, म्हारे पछतावो मन मांहि ।।
आडा डूंगर वन घणो, नदियां वहै अनंत ।।
सो पपंडिया पंजर नहीं, हौं मिल मिल आऊ नित ।।
चरणा पावैं चालिवोरे, धरती पावैं वाट ।।
परवत पावैं लंघणा, विषमो औघट घाट ।।
जातां जातां छोहड़ा, म्हारे मन पछितावो होइ ।।
जीवत मेलो है सषी, मूंवा न मिलिसी कोइ ।।
हरि दरसन कारणि हे सषी, म्हारा नैन रह्या जल पूरि ।।

सो साजन अलगा हुवा, भ्वै भारी घर दूरि ॥
पाती प्यारा पीव की, हूँ क्यों वाचों का लेइ ॥
विरह महाघन ऊनड्यो, म्हारो नैन बाचण देइ ॥
वटाऊ उहि बाट का, म्हारो संदेसो तिहिं हाथि ॥
आली नाहीं रहूँ, काहू साधू जनके साथि ॥
ज्यूं वनके कारणि हस्ती भुरै, चकवी पैलै पारि ॥
यों वषना झूरै रामकूँ, ज्यूँ उलगाँणा की नारि ॥

× × ×

बीछड्या राम सनेही रे, म्हारै मन पछतावो येही रे ॥
बीछड़िया वन दहिया रे, म्हारै हिवडै करवत वहिया रे ॥
विलषी सषी सहेली रे, ज्यूं जल बिन नागरवेली रे ॥
वा मुलकनि की छिवि छांही रे, म्हारे रहि गई हिरदै माहीं रे ॥
को उणिहारे नांहीं रे, हो ढूंढ रही जगमाहीं रे ॥
सब फीको म्हारै भाई रे, मंडली को मंडल नाही रे ॥
कोंण सभा में सोहे रे, जाकी निर्मल वांणी मोहे रे ॥
भरि भरि प्रेम पिलावे रे, कोई दादू आण मिलावे रे ॥
वषना बहुत विसूरे रे, दरसण कै कारण झूरे रे ॥

× × ×

थारो रे गुण गोव्यंदा, म्हारो ओगुणियो कान कीजै ॥
हों तो थाहरो थांई रह्यो रे, गोंने रामभगति दिढ़ दीजै रे ॥
तुम्ह बिना डहकायोथो रे, थारै संग्य न जागी रे ॥
आगे ही चोरासी भरम्यो, लषी न लागी रे ॥
भूल्यो रे मै भेद न जाण्यो, ताहरी भगति न साधी रे ॥
तूँ मिलिवानैं रूड़ो थो, म्हारो मन न मिल्यो अपराधी रे ॥
तूँ समरथ में सरणै आयो, तूं म्हारी पति राषी रे ॥
वषना सो नीकै निरवहिये, मैं तुझ ऊपर नाषी रे ॥

× × ×

ढूंढै दीप पतंग नै, तौ वषनां बिरद लजाइ ॥
दीपक माँहैं जोति है, तौ घणां मिलैगा आइ ॥
भरया न फूटै चिराग न छूटै, जरणां कहिये ताहि ॥
बषना कहैं समाई तिहि मैं, सो बोलि विगूचै नाहिं ॥
अटसटि पांणी धोइये, अटसठि तीरथ न्हाइ ।
कहु बषनां मन मच्छ की, अजों कौलाधि न जाइ ॥

जिहि बरियां यहु सब हुवा, सो रग किया विचार ॥
चपनां बरियां गुणां की, करता सिरजन हार ॥
अणदीठे ओलूँ करै रे, मो मन वारंवार ॥
ऊभल फूटा क्यार ज्यूं, म्हारै नैण न पंडै धार ॥

बावरी साहिबा

बावरी रावरी का कहिये, मन ह्वै के पतंग भरे नित भौंवरी ।
भौंवरी जानहिं संत सुजान, जिन्हे हरिरूप हिये दरसावरी ॥
साँवरी सूरत मोहनी मूरत, देकरि ज्ञान अनन्त लखावरी ।
खाँवरी सौंह तेहारी प्रभू, गति रावरी देखि भई मति बावरी ॥

× × ×

अजपा जाप सकल घट बरतै, जो जानै सोइ पेखा ।
गुरुगम जोति अगम घर वासा, जो पाया सोइ देखा ॥
मैं बन्दी हौं परम तत्व की, जग जानत कि भोरी ।
कहत बावरी सुनो हो बीरू, सुरति कमल पर डोरी ॥

बीरू साहब

हंसा रे बाभन मोर याहि घरां, करवों मैं कवनि उपाय ।
मोतिया चुगन हंसा आयल हो, सो तो रहल भुलाय ॥
झीलर को बकुला भयो है, कर्म कीट धरि खाय ।
सतगुरु सत्य दया कियो, भव बन्धन ते लियो छोड़ाय ॥
यह संसार सकल है अंधा, मोह मया लपटाय ।
बीरू भक्ति भयो हंसा सुख, सागर चल्यो है नहाय ॥

× × ×

त्रिकुटी के नीर तीर बाँसुरी बजावै लाल,
भाल लाल से सनै सुरंग रूप चातुरी ।
यमुना ते और गंग अनहद सुर तान संग,
फेरि देखु जगमग को छोड़ देवै कादरी ।
वायू प्रचंड चंड बंकनाल मेरुदंड,
अनहद को छोड़ि दे आगे चलु बावरी ।

ऊँकार धार बास इनहूँ का है विनास,
खसम को साथ करु चीन्ह ले तू नाहरो।
जन विरू सतगुरु शब्द रकाब धरु,
चल शूर जीत मैदान घर आवरी॥

गरीबदास जी (दादूपंथी)

प्रीति न तूटै जीव की, जो अंतर होइ।
तन मन हरिके रंग रंग्यो, जानैं जन कोइ॥
लप जोजन देही रहै, चित सनमुख राषै।
ताको काज न ऊजरै, जौ हरिगुन भाषै॥
कंवल रहै जल अंतरै, रवि बसै आकास।
संपट तबही विगसि है, जब जोति प्रकास॥
यह संसार असार है, मन मानै नाहिं।
'गरीवदास' नहि वीसरै, चित तुमही माँहि॥
× × ×

तन खोजे तब पावै रे।
उलटी चाल चले जे प्राणी, सो सहजे घर आवे रे॥
बारह मारग बहता रोकै, तेरह ताली लावे रे॥
चन्द सूर सहजे सत राखै, अणहद वेण बजावे रे॥
तीन्यू गुण चौथे घर राखै, पाँच पचीस समावे रे॥
नऊ निरत सूं और बहत्तर, रोम रोम धुनि धावे रे॥
मैल निर्मल करे ग्यान सौ, सतगुरु कहि समझावे रे॥
'गरीवदास' अनभै घर उपजै, तब जाइ जोति लखावे रे॥
× × ×

जब मन निरभे घर को पावे।
तजै आस अनियास जगत की, आदि पुरुष की गहि गावे॥
नाना रूप भाँति बहु माया, गुरु मुष द्रष्टि पिछाणै॥
देषत जाइ नहीं सो अस्थिर, नाहिन हिरदे आणै॥
जे पहुँचे ते कहैं साषि सब, उपजै विनसै माया॥
केवल ब्रह्म आदि द्रढ अस्थिर, जोनी कष्ट न आया॥
सोच विचार पुरुष करि ठावा, तासों निज अँग परसै॥
'गरीबदास' वर सोई वरिये जु, दोइ गुण भाव न दरसै॥
× × ×

भाई रे ! बिरष अनूपम पाया ।
ताकी सरण आय हम सीतल, तीन्यू ताप भुलाया ॥
धर आधार नहीं सो तरवर, साषा पत्र न होई ॥
कूंपल फली पहुप पर नाही, फल रूपी सब सोई ॥
ताकी छाया सब जग बरते, बिन जाणें सुष दूरी ॥
सरवर दादर कँवल बसेरा, क्यूं पावै गति करी ॥
पूरैं भाग भँवर अनभै बरि, आक पलास न भूलें ॥
'गरीबदास' स्वांति तनि हूई, अपैं सरोवर भूले ॥

× × ×

पार पाऊँ कैसे ।
माया सरिता तरुन तरंगनि, जल जोबन को वैसे ॥
नैननि रूप नासिका परिमल, जिभ्या स्वाद श्रवण सुनिबे को ॥
मन मारे मोहे ऐसे ॥
पंचो इन्द्री चंचल चहुँ दिसि, अस्थिर होहि करहु तुम तैसे ॥
'गरीबदास' कहै नाँव नाव दो, खेट उतारो जैसे ॥

× × ×

सुकृत मारग चालता, बिघन बन्है संसार ।
दुष कलेश छूटैं सबै, जे कोइ चलै विचार ॥
जानि चलैं तो अधिक सुख, अणजाणें जे जाइ ।
लोहा पारस पर सिलैं, सो सब कनक कहाइ ॥
भंजन भाव समान जल, भरि दै सागर पीव ।
जैसो उपजै तन त्रिपा, तेतो पावै पीव ॥
सब अपने उनमान की, साषि कहै पद काबि ।
जिहिं लागै पर अरलौं, सो अपने कर ढाबि ॥
वे साधू करि जानिये, दरसन सब सुष होइ ।
जिहिं परसै लोहा कनक, पारस कहिये सोइ ॥
दोइ हूँणी सब देषिया, तीन त्रिगुण सब सोधि ।
नो हूँणा तजि एक भजि, आतम को परमोधि ॥

हरिदास निरंजनी

अवधू आसण बैसण झूठा,
जब लग मन विसराम न पावे । पख तजि फिरै न पूठा ॥

ज्ञान गुफा जाणें नहिं जोगी, अगम अरथ कहा बूझे।
पांच अगनि में पडि पडि दाझे, वा सीतल ठौर न सूझे॥
विविध विकार बालि अरि इंधण, धूंई ध्यान न धारे।
ब्रह्म अगनि आकास न भेदे, तौ पारा क्यूं मारे॥
निगम अगम तहाँ लगे आसन, गरव नाद नित बाजै।
नगरी माँहिं मुगति वसि भूखा, जहाँ तहाँ उठि भाजै॥
मन गहि पवन अटकि ले उलटा, परम जोग उर धारे।
जन हरिदास निरवास भरम तजि, निरगुण जस निसतारे॥

× × ×

बाबा एह गरीबी झूठी,
मन अरु पवन दोऊए फूटा। मनसा फिरै न पूठी॥
त्रिविध ताप की कन्था पहरी, मनो टोप सिर जाके।
रागद्वेष की कानों मुद्रा, कहा गरीबी जाके॥
परया भेख रेख ज्यूं की त्यूं, मोह मढी वसि जीवै।
तन के भेख राम नहीं रीझे, विष अमृत करि पीवै॥
पाँच चोर परदेश पहूंता, मिलि खेलै ता माही।
मना जोर मुखि कहे गरीबी, असलि गरीबी नाही॥
जन हरिदास आन तजि अनरथ, राम नाम व्रत धारे।
राग द्वेष काहू सूं नाही, असलि गरीबी तारे॥

× × ×

अब मैं हरि बिन और न जाचूँ, भजि भगवंत मगन ह्वै नाचूं॥
हरि मेरा करता हूँ हरिकीया, मै मेरा मन हरि कूं दीया॥
ज्ञान ध्यान प्रेम हम पाया, जब पाया तब आप गमाया॥
राम नाम व्रत हिरदे धारूँ, परम उदार निमख न विसारूँ॥
गाय गाय गावेथा गाया, मन भया मगन गगन मठ छाया॥
जन हरिदास आस तजि पासा, हरि निरगुण निज पुरी निवासा॥

× × ×

रूप न रेख धर्यूं नहिं थोड़ो, धरणी गगन फुनि नाही रे।
अकल सकल संगि रहै निरंतरि, ज्यूं चन्दा जल माही रे॥
अगम अथाह थाह नहि कोई, थाह न कोई पावे रे।
जैसा भजन तिसा सब कोई, मन उनमना बतावे रे॥
सागर में कुंभ कुंभ में जल है, निराकार निज ऐसा रे।
सकल लोक ऐसे हरि मांहीं, रूप कहो धूं कैसा रे॥

अचल अघट सब सुख को सागर, घट घट सबरा मांही रे।
जन हरिदास अविनाशी ऐसा, कहे तिसा हरि नांही रे॥

× × ×

सखी हो मास वसन्त विराजे,
गोपी ग्वाल घेरि गोकुल में, वेणु मधुर धुनि बाजे॥
धागे सुरति पाच नग गूथ्या, मन मोती मधि आया।
विगसत कमल परमनिधि परगट, हरि कूं हार चढ़ाया॥
गरब गुलाब चरण तलि चूर्या, अगर अबीर खिड़ाया।
परमल प्रीति परसी पर पूरण, पिव में प्राण समाया॥
वंक नालि निहचल नौ निरभै, ऐ कौतूहल भारी।
जन हरिदास आनन्द निज नगरी, खेलै फाग मुरारी॥

× × ×

जाति को भेद पणि सकल ऊपरि भयो,
राम रंगि रंग्यो रंग भले रात्यो।
दास कब्बीर जमलोक जावै नहीं,
अलख रस पिवै मस्तानि मातो॥
चोट सूं चोट खिसि खेत चाल्यो नहीं,
पाँच परवल पिसुन मारि लीया।
अकल की चोट जम चोट लागे नहीं,
उलट का पुलट रस भला पीया॥
साध की चाल सुणि सकल संशय मिट्यो,
कह्यो त्यूं रह्यो कछु संक नाहीं।
आन की आस विसवास बाधों नहीं,
रह्यो पणि रह्यो रमि राम माहीं॥
जल में कँवल पणि नीर भेदे नहीं,
जगत मे भक्त यूं रहे जूवा।
जन हरिदास हरि समद मे बूंद कबीर,
समद में बूंद मिलि एक हूवा॥

× × ×

आठ पहर की उनमनी, आठ पहर की प्रीति।
आठ पहर सनमुख सदा, यह साधू की रीति॥
यह साधू की रीति, एक रस लागा जीवै।
अगम पियाला हाथि राम रस पावै पीवै॥

जन हरिदास गोविंद भजि आन असुर अरि जीति।
आठ पहर की उनमनो आठ पहर की प्रीति॥

कहा दिखावै और कूं उलटि आप कूं देख।
लेखणि मसि कागद कहा लिखिए तहाँ अलेख॥

लिखिए तहाँ अलेख सुतौ निर्मल करि लीजै।
दिल कागद करि पाक सुतौ लिखि लिखि ठीक दीजै॥

हरीदास हरि सुमरतां संचर रहे न सेख।
कहा दिखावै और कूं उलटि आप कूं देख॥

जागौ रे सोवो कहा अवधि घटै घटि वीर।
कहो कहाँ लो राखिये फूटे भांडे नीर॥

फूटे भांड़े नीर गरकि गाफिल नर सोवै।
भजै नहीं भगवंत, वहोड़ि मलसू मल धोवै॥

हरीदास सुर नर असुर सब मछली जम कीर।
जागौ रे सोवो कहा, अवधि घटै घटि वीर॥

सब को सरबस देत है, अपणी अपणी प्रीति।
साहिब कूं सरवस दिया, या कछु उलटी रीति॥

या कछु उलटी रीति जीति गुण गोविंद गावै।
सुन मंडल में बैसि साँच सूं सुरति लगावै॥

हरीदास आनंद भया, छूटी सबै अनीति।
सबको सरवस देत है अपणी अपणी प्रीति॥

× × ×

अविनाशी आठों पहर, अपणें हिरदै धारि।
हरीदास निरभै मतै, निरभै बस्त विचारि॥

नाँव निरंजन निर्मला, भजतां होय सो होय।
हरीदास जन यूं कहै, भूलि पड़ै मति कोय॥

हरीदास कासूं कहूँ, अपणां घर की लाय।
ज्यूं जाल्या त्यूंहीं जल्या, जलि वलि रह्या समाय॥

हरीदास अंतरि अगह दीपक एक अनूप।
जोति उजालै खेलिये, जहँ छांहडी न धूप॥

काया माया झूठ है, साँच न जाणो वीर।
कहि काकी भागी तृषा, मृगतृष्णा को नीर॥

जंह आपा तंह आंतरो, करुणा सागर दूरि।
हरीदास आपा मिटया, है हरि सदा हजूरि॥
नहि देवल सूं बैरता, नहिं देवलसूं प्रीति।
कृतम तजि गोविन्द भजै, या साधो की रीति॥
लोक दिखावो मति करै, हरि देखे त्यूं देख।
हरीदास हरि अगम है, पूरण ब्रह्म अलेख॥
जहं ज्वाला तहं जल नहीं, हरि तहं मैं तैं नाहिं।
हरीदास केहरि कुरंग, एकै बनि न बसाहिं॥
शीतल दृष्टि चकोर की, चन्द बसै ता माहिं।
हरीदास ज्वाला चुगै, देखो दाजै नाहिं॥

आनंदघन

आतम-अनुभव फूल की नवली कोऊ रीत।
नाक न पकरै वासना, कान गहै परतीत॥
अनुभव नाथ कुँ क्यों न जगावै।
ममता-संग सो पाय अजागल-थन तें दूध दुहावैं॥
मेरे कहे ते खीज न कीजे, तूँ ऐसिही सिखावै।
वहोत कहे ते लागत ऐसी, अँगुली सरप दिखावै॥
औरन के सँग राते चेतन, चेतन आप बतावै।
आनंदघन की सुमति अनंदा, सिद्ध सरूप कहावै॥

× × ×

आतम-अनुभव रीति वही री।
मौर बनाय निज रूप अनूपम, तिच्छन रुचि कर तेग धरी री।
टोप सनाह सूर को वानो, एकतारी चोरी पहिरी री।
सत्ता थल में मोह विदारत, ए ए सुरजन मुह निसरी री।
केवल कवला अपछर सुन्दर, गान करे रसरंग-भरी री।
जीत-निसान बजाइ विराजे, आनंदघन सर्वंग धरी री॥

× × ×

साधु भाइ अपना रूप जब देखा।
करता कौन कौन फुनि करनी, कौन माँगेगी लेखा।
साधु संगति अरु गुरु की कृपा तें, मिट गइ कुल की रेखा।
आनंदघन प्रभु परचो पायो, उतर गयो दिल भेखा॥

× × ×

मेरे घट ज्ञान-भानु भयो भोर।
चेतन चकवा चेतना चकवी, भागो विरह की सोर।
फैली चहुँ दिस चतुर-भाव-रुचि, मिट्यो भरम तम जोर।
आपकी चोरी आपही जानत, और कहत ना चोर।
अमल कमल विकच भये भूतल, मंद विषय-ससि-कोर।
आनंदघन एक वल्लभ लागत, और न लाख किरोर॥

× × ×

रिसानी आप मनावो रे प्यारे, विच्च वसीठ न फेर।
सौदा अगम है प्रेम कारे, परखत बूझै कोय।
ले दे वाही गम पड़े प्यारे, और दलाल न होय॥
दो वातां जियकी करोरे, मेटो मन की आँट।
तन की तपत बुझाइये, प्यारे, वचन सुधा रस छाँट॥
नेक नजर निहारिये रे, उजर न कीजे नाथ।
तनक नजर मुजरे मिले प्यारे, अजर अमर सुख साथ॥
निसि अँधियारी घन घटा रे, पाऊँ न वाट को फंद।
करुणा करो तो निरखहुँ प्यारे, देखूं तुम मुख चंद॥
प्रेम जहाँ दुविधा नहीं रे, नहि ठकुराइत रेज।
आनंदघन प्रभु आइ विराजे, आपहि ममता सेज॥

× × ×

देखो एक अपूरव खेला।
आपही बाजी आपही बाजीगर, आप गुरू आप चेला।
लोक अलोक बिच आप विराजित, ज्ञान प्रकाश अकेला।
बाजी छाँडि तहाँ चढ़ बैठे, जहाँ सिंधु का मेला।
वागवाद खट नाद सहू में, किसके किसके बोला।
पाहाण को भार काँही उठावत, एक तारे का चोला।
षटपद पद के जोग सिरीखस, क्यो कर गज पद तोला।
आनंदघन प्रभु आय मिलो तुम, मिट जाय मनका झोला॥

× × ×

निसानी कहा बताऊँ रे, तेरो वचन अगोचर रूप।
रूपी कहूँ तो कछू नाहीं रे, कैसे बंधै अरूप।
रूपा रूपी जो कहूँ प्यारे, ऐसे न सिद्ध अनूप॥
सिद्ध सरूपी को कहूँ रे, बंधन मोक्ष बिचार।
न घटे संसारी दसा प्यारे, पुन्य पाप अवतार॥

सिद्ध सनातन जो कहूँ रे, उपजै बिणसै कौण।
उपजै बिणसै जो कहूँ रे, नित्य अबाधित गौन॥
सर्वांगी सबनय धणी रे, माने सब परवान।
नयवादी पल्लोग्रही प्यारे, करै लराई टान॥
अनुभव-गोचर वस्तु को रे, जाणवो यह ईलाज।
कहन सुनन को कछू नहिं प्यारे, आनँदघन महाराज॥

× × ×

अवधू नाम हमारा राखै, सोई परम महारस चाखै।
ना पुरुष नहीं हम नारी, वरन न भाँति हमारी।
जाति न पाँति न साधन साधक, ना हम लघु नहिं भारी॥
ना हम ताते ना हम सीरे, ना हम दीर्घ न छोटा।
ना हम भाई ना हम भगिनी, ना हम बाप न घोटा॥
ना हम मनसा ना हम सब्दा, ना हम तन की धरणी।
ना हम भेख भेखधर नाहीं, ना हम करता करणी॥
ना हम दरसन ना हम परसन, रसन गंध कछु नाहीं।
आनंदघन चेतनमय मूरति, सेवक जन बलि जाहीं॥

× × ×

अब मेरे पति गति देव निरंजन।
भटकूँ कहा कहा सिर पटकूँ, कहा करूँ जन रंजन।
खंजन-दृगन दृग न लगाऊँ, चाहूँ न चितवन अंजन।
संजन घट अंतर परमातम, सकल दुरित भय-भंजन।
एह काम-गवि एह काम घट, एही सुधारस-मंजन।
आनँदघन प्रभु घट वन-केहरि, काम-मतंग-गज-गंजन॥

भीषनजी (दादूपंथी)

वह अविगति गति अमित अगम अनभेव अपंडित।
अविहर अमर अनूप अरुचि आरूप अमंडित॥
निर्मल निगह निरंग निगम निहसंग निरनन।
निज निरबन्ध निरसंध निधर निरमोह निचिन्तन॥
जगजीवन जगदीश जपि नारायन रंजन सकल।
भुव-धारन भव दुख-हरन भजु जन भीष अनंतबल॥

× × ×

आहि पुहुप जिमि बास प्रगट तिमि वसै निरंतर।
ज्यों तिलयिन में तेल मेल यों नाहिन अंतर॥
ज्यूं पय घृत संजोग सकल यों है सम्पूरन।
काष्ठ अगनि प्रसंग प्रगट कीये कहुँ दूरन॥
ज्यूं दर्पण प्रतिविम्ब मैं होत जाहि विश्राम है।
सकल वियापी भीषजन ऐसे घटि घटि राम है॥

× × ×

इक सरवर तजि मीन कैसे सुष पावत।
वायस वोहिथ छाड़ि फिरत फिर तासुहि आवत॥
सवै भीति की दौर ठौर विन कहाँ समावत।
उडै पंष विन आहि सु तौ धरती फिर आवत॥
पात सींचियत पड़े विन पोय नहिं द्रुम ताहि कौ।
ऐसे हरि बिन भीषजन भजै सु दूजा काहि कौं॥

× × ×

दग्ध वृत्त नहिं नवै नवै सु आहि सु फलतर।
नाहि कसौटी काच साच कै सहै हेमवर॥
विद्रुम पात न चोट पात सो हीर चोट अति।
पाहन भिदै न नीर भिदै सैंधव कोमल मति॥
अल्प कुम्भ वोलै अधिक संपूरन वोलै नहीं।
त्यूं सठसंग सु भीपजन साध सिद्ध मति है वही॥

× × ×

रवि आकरपै नीर विमल मल देत न जानत।
हंस छीर निज पान सूप तजि तुस कन आनत॥
मधु माषी संग्रहै ताहि नहिं कूकस काजै।
वाजीगर मणि लेत नाहि विप देत विराजै॥
ज्यूं अहीरी काढि घृत तक्र हेत है डारि कै।
यूं गुन ग्रहै सु भीपजन औगुन तजै विचारि कै॥

मुवारक

परी मुवारक तिय वदन अलक ओप अति होय।
मनो चन्द की गोद में रही निसा सी सोय॥
चिबुक कूप में मन परयो छवि जल तृपा विचारि।
कढ़ति मुवारक ताहि तिय अलक डोरि सी डारि॥

चिबुक कूप रसरी अलक तिल सु चरस दृग वैल ।
बारी वैस सिंगार की सींचत मनमथ छैल ॥

× × ×

सब जग पेरत तिलन को, थक्यो चित्त यह हेरि ।
तव अपोल को एक तिल, सब जग डार्‌यो पेरि ॥
मन जोगी आसन कियो, चिबुक गुफा में जाय ।
रह्यो समाधि लगाय कै, तिल मिल द्वारे लाय ॥
चिबुक सरूप समुद्र मे, मन जान्यो तिल नाव ।
तरन गयो बूड्यो तहाँ, रूप कहर दरियाव ॥
गोरी के मुख एक तिल, सो मोहि खरो सुहाय ।
मानहु पंकज की कली, भँवर विलम्ब्यो आय ॥

× × ×

अलक मुबारक तिय वदन, लटकि परी यों साफ़ ।
खुस नवीस मुनसी मदन, लिख्यो काँच पर क़ाफ़ ॥
अलक डोर मुख छवि नदी, बेसरि बंसी लाइ ।
दै चारा मुकतानि को, मो चित चली फँदाइ ॥
लगि दृग अंजन ढिग अलक, देत मुबारक मोद ।
जनु साँपिन सुत आपनो, मेटति भरि भरि गोद ॥

× × ×

पानिप के पुंज सुघराई के सदन सुख,
सोभा के समूह और सावधान मौज के ।
लाजन के बोहित प्रमोहित प्रमोदन के,
नेह के नकीब चक्रवर्ती चित चोज के ।
दया के दिवान पतिव्रता के प्रधान,
पूरे नैन ये मुबारक विधान नवरोज के ।
सफर के सिरताज मृगन के महाराज,
साहब सरोज के मुसाहब मनोज के ॥

× × ×

कनक बरन बाल नगन लसत माल,
मोतिन के माल उर सोहैं भली भाँति है ।
चन्दन चढ़ाइ चारु चन्द्रमुखी मोहिनी सी,
प्रात ही नहाइ पगु धारे मुसकाति है ।

चूनरी विचित्र स्याम सजि कै मुवारक जू,
ढाँकि नख सिख ते निपटि सकुचाति है।
चन्द्रमै लपेटि के समेटि के नखत मानो,
दिन को प्रणाम किये राति चली जाति है॥

× × ×

कान्ह की बाँकी चितौनि चुभी झुकि,
काल्हि ही झाँकी है ग्वाल गवाछनि।
देखी है नोखी सी चोखी सी कोरनि,
ओछे फिरै उभरै चित जा छिन।
मार्‌यो सँभारि हिये में मुवारक,
यै सहजै कजरारे मृगाछनि।
सींक लै काजर देरी गँवारिनि,
आँगुरी तेरी कटैगी कटाछनि॥

जसवंत सिंह

मुख शशि वा शशि सों अधिक, उदित ज्योति दिन राति।
सागर ते उपजी न यह, कमला अपर सोहाति।
नैन कमल ये ऐन हैं, और कमल पे हि काम।
गमन करत नीकी लगै, कनक लता यह वाम।
परजस्ता गुन और को, और विषे आरोप।
होय सुधाधर नाहिं यह, बदन सुधाधर ओप।

× × ×

अलंकार अत्युक्ति यह बरनत अतिसय रूप।
जाचक तेरे दान ते भये कल्पतरु भूप॥
पर्यस्त जु गुन एक को और विषय आरोप।
होइ सुधाधर नाहि यह बदन सुधाधर ओप॥

कुलपति मिश्र

डर वेधत पानिप हरत, मुक्ता जनि बिलखाय।
नाक वास लहि है गुनी, दे अधरन सिर पाय॥

× × ×

दान विन धनी सनमान विन गुनी,
ऐसे विष विन फनी अनी सूर न गहत हैं।
मंत्र बिन भूप ऐसे जल विन कूप जैसे,
लाज विन कामिनि के गुननि कहत हैं।
वेद विन यश जप जोग मन वश विन,
ज्ञान विन योगी मन ऐसे निवहत हैं।
चंद विन निशा प्राणप्यारी अनुराग विन,
नील विन लोचन ज्यों सोभा को लहत हैं।

× × ×

दिसि पूरि प्रभा करिके दसहू गुन कोकन के अति मोद लहै।
रँगि राखी रसा रँग कुंकुम के अलि गुंजत ते जस पुंज कहै।
निसि एक ह्वै पंकज की पतनीन के वाके हिये अनुराग रहै।
मनो याही ते सूरज प्रात समै नित आवत है अरुनाई लहै।

× × ×

नीति विना न विराजत राज न राजत नीति जु धर्म विना है।
फीको लगै बिन साहस रूपक लाज विना कुल की अवला है।
सूर के हाथ विना हथियार गयंद विना दरवार न भा है।
मान विना कविता की न ओप है दान विना जस पावै कहा है।

बेनी

छहरै सिर पै छवि मोरपखा उनकी नथ के मुकुता थहरैं।
फहरै पियरो पट वेनी इतै उनकी चुनरी के भवा भहरैं।
रसरंग भिरे अभिरे हैं तमाल दोऊ रस ख्याल चहै लहरैं।
नित ऐसे सनेह सों राधिका स्याम हमारे हिए में सदा बिहरैं॥

× × ×

कारीगर कोऊ करामत कै बनाय लायो,
लीनी दाम थोरो जान नई सुघरई है।
रायजू को रायजू रजाई दीनी राजी ह्वै के,
सहर मे ठौर ठौर सोहरत भई है।
वेनी कवि पाय के अघाय रहे घरी द्वैक,
कहत न बने कछु ऐसी मति ठई है।

साँस ले उड़िगो उपल्ला और भितल्ला सबै,
दिन द्वै के बाती हेत रुई रह गई है ॥

× × ×

कवि बेनी नई उनई है घटा, मोरवा वन बोलत कूकन री।
लहरै बिजुरी छिति मंडल छ्वै, लहरै मन मैन - भभूकन री।
पहिरौ चुनरी चुनिकै दुलही, सँग लाल के झूलहु झूकन री।
ऋतु पावस योंही ही वितावति हौ, मरिहौं फिर बावरि ! हूकन री ॥

× × ×

हाव भाव विविध दिखावे भाँति भाँतिन सों,
मिलत न रति दान जागे संग जामिनी।
सुवरन भूषन सँवारे ते विफल होत,
जाहिर किये ते हँसे नर गज गामिनी।
रहे मन मारे लाज लागत उघारे बात,
मन पछतात न कहत कहूँ भामिनी।
बेनी कवि कहै बड़े पापन ते होत दोऊ,
सूम को सुकवि औ नपुंसक को कामिनी ॥

× × ×

करि की चुराई चाल सिंह को चुरायो लंक,
शशि को चुरायो मुख नासा चोरी कीर की।
पिक को चुरायो बैन मृग को चुरायो नैन,
दसन अनार हाँसी बीजरी गम्भीर की।
कहै कवि बेनी बेनी व्याल की चुराइ लीनी,
रती रती शोभा सब रति के शरीर की।
अब तो कन्हैया जू को चितहू चुराइ लीन्ही,
छोरटी है गोरटी या चोरटी अहीर की ॥

× × ×

पृथु नल जनक जजाति मानधाता ऐसे,
केते भये भूप यश छिति पर छाइगे।
काल चक्र परे सक्र सैकरन होत जात,
कहाँ लौ गनावो विधि बासर बिताइगे।
बेनी साज सम्मत समाज साज सेना कहाँ,
पायन पसारि हाथ खोले मुख बाइगे।

छुद्र छितिपालन की गिनती गनावै कौन,
रावन से वली तेऊ वुल्ला से विलाइगे ॥

× × ×

वेद मत सोधि सोधि देखि कै पुरान सबै,
सन्तन असन्तन को भेद को वतावतो।
कपटी कपूत कूर कलि के कुचाली लोग,
कौन राम नाम हू की चरचा चलावतो।
वेनी कवि कहै मानो मानो रे प्रमान यही,
पाहन से हिए में कौन प्रेम उमगावतो।
भारी भवसागर में कैसे जीव होते पार,
जौ पै रामायण ना तुलसी वनावतो ॥

× × ×

मानव वनाये देव दानव वनाये यच्छ,
किन्नर बनाये पशु पच्छी नाग कारे हैं।
दुरद वनाये लघु दीरघ वनाये केते,
सागर उजागर वनाये नदी नारे हैं।
रचना सकल लोक लोकन वनाये ऐसी,
जुगति में वेनी परवीनन के प्यारे हैं।
राधे को वनाये विधि धोयो हाथ जाग्यो रंग,
ताको भये चन्द कर झारे भये तारे हैं ॥

सुखदेव मिश्र

ननद निनारी सासु माइके सिधारी,
अहै रैन अँधियारी भरी सूझत न करु है।
पीतम को गौन कविराज न सुहात भौन,
दारुन वहत पौन लाग्यो मेघ झरु है।
संग ना सहेली वैस नवल अकेली,
तन परी तल वेली महा लायो मैन सरु है।
भई अधरात मेरो जियरा डेरात,
जागु जागु रे वटोही यहाँ चोरन को डरु है ॥

× × ×

यों कछु कीन्हीं अचानक चोट जु ओट सखीन सकी कै दुकूल है।
देह कँपै मुँह पीरी परी सो कह्यो नहीं जो है गयो हित सूल है।

माँझ उरोज में आनि लग्यो अँगिरात जही उचक्यो भुजमूल है।
कौन है ख्याल ? खेलार अनोखे ! निसंक ह्वै ऐसे चलैयत फूल है ॥

× × ×

जोहँ जहाँ मगु नंदकुमार तहाँ चली चन्दमुखी सुकुमार है।
मोतिन ही को कियो गहनो सब फूलि रही जनु कुन्द की डार है।
भीतर ही जो लखी सु लखी अब बाहिर जाहिर होति न दार है।
जोन्ह सी जोन्हे गई मिलि यों मिलि जाति ज्यों दूध में दूध की धार है ॥

कालिदास त्रिवेदी

चूमों कर कंज मंजु अमल अनूप तेरो,
रूप के निधान कान्ह मो तन निहारि दे।
कालिदास कहैं मेरे पास हरि हेरि हेरि,
माथे धरि मुकुट लकुट कर डारि दे।
कुँवर कन्हैया मुख चंद की जुन्हैया,
चारु लोचन चकोरन की प्यासन निवारि दे।
मेरे कर मेहँदी लगी है नंदलाल,
प्यारे लट उरझी है नकबेसर सम्भारि दे ॥

× × ×

प्रथम समागम के औसर नवेली बाल,
सकल कलानि पिय प्यारे को रिझायो है।
देखि चतुराई मन सोच भयो प्रीतम के,
लखि परनारि मन संभ्रम भुलायो है।
कालिदास ताही समै निपट प्रवीन तिया,
काजर लै भीतिहूँ मैं चित्रक बनायो है।
व्यात लिखी सिंहिनी निकट गजराज लिख्यो,
योनि ते निकसि छौना मस्तक पै आयो है ॥

× × ×

गढ़न गढ़ी से गढ़ी महल मढ़ी से मढ़ि,
बीजापुर ओप्यो दलमलि सुघराई में।
कालिदास कोप्यो बीर औलिया अलमगीर,
तीर तरवारि गही पुहमी पराई में।
बूँद तें निकसि महिमंडल घमंड मची,
लोहू की लहरि हिमगिरि को तराई मे।

गाढ़ि के मुभंडा आड़ कीनी वादसाही तातें,
ढकरी चमुंडा गोलकुंडा की लराई में ॥

× × ×

हाथ हँसि दीन्हों भीति अन्तर परसि प्यारी,
देखत ही छकी मति कान्हर प्रवीन की।
निकस्यो झरोखे माँझ विगस्यो कमल सम,
ललित अँगूठी तामें चमक चुनीन की।
कालिदास तैसी लाल मेहँदी के बुंदन की,
चारु नख-चंदन की लाल-अँगुरीन की।
कैसी छवि छाजति है छाप और छलान की सु,
कंकन चुरीन की जड़ाऊ पहुँचीन की ॥

नेवाज

देखि हमैं सव आपुस में जो कछू मन भावै सोई कहती हैं।
ये घरहाई लुगाई सवै निसि द्यौस नेवाज हमैं दहती मैं।
वातैं चवाव भरी सुनि कै रिस आवति पै चुप ह्वै रहती हैं।
कान्ह पियारे तिहारे लिए सिगरे व्रज को हँसिवो सहती हैं ॥

× × ×

आगे तौ कीन्ही लगालगी लोयन, कैसे छिपे अजहूँ जो छिपावति।
तू अनुराग को सोध कियो, वृज की वनिता सव यों ठहरावति।
कौन संकोच रह्यो है नेवाज, जो तू तरसै उनहू तरसावति।
वावरी ! जो पै कलंक लग्यो तौ निसंक है क्यों नहिं अंक लगावति ॥

× × ×

पीठि दै पौढ़ि दुराय कपोल को मानै न कोटि पिया उत पोढ़त।
बाँहन वीच हिए कुच दोऊ गहे रसना मन ही मन सोचत।
सोवत जानि निवाज पिया करसों कर दै निज ओर करोटत।
नीवी विमोचत चौंकि परी मृगछौना सी वाल विछौना पै लोटत ॥

वृन्द

नीकी पै फीकी लगै बिन अवसर की वात।
जैसे वरनत युद्ध में रस सिंगार न सुहात ॥

फीकी पै नीकी लगै, कहिए समै विचारि ।
सबको मन हर्षित करै, ज्यों विवाह में गारि ॥

गुनहो तऊ मँगाइये, जो जीवन सुख भौन ।
आग जरावत नगर तऊ, आग न आनत कौन ॥

कैसे निबहैं निबल जन, कर सबलन सो गैर ।
जैसे बस सागर विषे, करत मगर सों वैर ॥

अपनी पहुँच विचारि कै, करतव करिए दौर ।
तेते पाँव पसारिए, जेती लामी सौर ॥

विद्या धन उद्यम बिना, कहौ जु पावै कौन ।
बिना डुलाये ना मिले, ज्यों पंखा से पौन ॥

रहे समीप बड़ेन के, होत बड़ो हित मेल ।
सबही जानत बढ़त है, वृक्ष बराबर बेल ॥

होय बड़ेर न हूजिए, कठिन मलिन मुख रंग ।
मर्दन बंधन छत सहत, कुच इन गुनन प्रसंग ॥

नयना देत बताय सब, हिय को हेत अहेत ।
जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत ॥

अति परिचय ते होत है, अरुचि अनादर भाय ।
मलयागिर की भीलनी, चंदन देत जराय ॥

निष्फल श्रोता मूढ़ पै, कविता बचन विलास ।
हाव भाव ज्यो तीय के, पति अंधे के पास ॥

दुष्ट न छाँड़े दुष्टता, कैसे हू सुख देत ।
धोये हूँ सौ वेर के, काजर होत न सेत ॥

जाको जैसो उचित तिहि, करिए सोइ विचारि ।
गीदर कैसे ल्याइ है, गज मुक्ता गज मारि ॥

जैसे बंधन प्रेम को, तैसे बंध न और ।
काठहि भेदे कमल को, छेद न निकरै भौर ॥

मूरख गुन समझै नहीं, तौ न गुनी में चूक ।
कहा घट्यो दिन को विभौ, देखे जो न उलूक ॥

कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर ।
समय पाय तरुवर फलै, केतक सींचो नीर ॥

कुल सपूत जान्यो परै, लखि शुभ लच्छण गात ।
होन हार विरवान के, होत चीकने पात ॥

कछु कहि नीच न छेड़िए, भलो न वाको संग ।
पाथर डारे कीच में, उछरि बिगारै अंग ।।

जूवा खेले होत है, सुख संपति को नास ।
राज काज नल ते छुट्यो, पाँडव किय वनवास ।।

सरस्वति के भंडार की, बड़ी अपूरब बात ।
ज्यों खरचै त्यों त्यों बढ़ै, बिन खरचे घटि जात ।।

जो जाको गुन जानही, सो तिहिं आदर देत ।
कोकिल अंबहि लेत है, काग निवौरी हेत ।।

जाही ते कछु पाइये, करिये ताकी आस ।
रीते सरवर पै गये, कैसे बुझत पियास ।।

रस अनरस समझै न कछु, पढ़ै प्रेम की गाथ ।
बीछू मन्त्र न जानहीं, साँप पिटारे हाथ ।।

दीवो अवसर को भलो, जासों सुधरै काम ।
खेती सूखे बरसिबो, घन को कौने काम ।।

पिसुन छल्यो नर सुजन सों, करत बिसास न चूकि ।
जैसे दाध्यो दूध को, पीवत छाँछहि फूँकि ।।

ओछे नर की प्रीति की, दीनी रीति बताय ।
जैसे छीलर ताल जल, घटत घटत घट जाय ।।

बुरे लगत सिख के वचन, हिये विचारो आप ।
करुई भेषज बिन पिये, मिटै न तन की की ताप ।।

गुरुता लघुता पुरुष की, आश्रय वशतें होय ।
करी वृन्द में विन्ध्य सों, दर्पन में लघु सोय ।।

कहूँ जाहु नाहिंन मिटत, जो विधि लिख्यो लिलार ।
अंकुश भय करि कुंभ कुच, भये तहाँ नख मार ।।

फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजे व्यौपार ।
जैसे हाँडी काठ की, चढ़ै न दूजी बार ।।

करिये सुख को होत दुख, यह कहो कौन सयान ।
वा सोने को जारिये, जासों टूटे कान ।।

भले बुरे सब एक सों, जौं लौं बोलत नाहि ।
जानि परतु हैं काक पिक, ऋतु वसंत के माहि ।।

हितहू की कहियै न तिहिं, जो नर होय अबोध ।
ज्यों नकटे को आरसी, होत दिखाये क्रोध ।।

सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहिं देत बुझाय॥

कछु बसाय नहिं सबल सों, करै निबल पर जोर।
चले त अचल उखार तरु, डारत पवन झकोर॥

रोष मिटे कैसे कहत, रिस उपजावन बात।
ईंधन डारे आगमों, कैसे आग बुझात॥

जो जेहि भावे सो भलौ, गुन को कछु न विचार।
तज गज मुकता भीलनी, पहिरति गुंजा हार॥

कहुँ अवगुण सोइ होत गुण, कहुँ गुण अवगुण होत।
कुच कठोर त्यों हैं भले, कोमल बुरे उदोत॥

जे चेतन ते क्यों तजैं, जाको जासों मोह।
चुंबक के पीछे लग्यो, फिरत अचेतन लोह॥

जिहि प्रसंग दूषन लगे, तजिये ताको साथ।
मदिरा मानत है जगत, दूध कलाली हाथ॥

जाके सँग दूषण दुरै, करिये तिहि पहिचानि।
जैसे समझे दूध सब, सुरा अहीरी पानि॥

करै बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोइ।
रोपै बिरवा आक को, आम कहाँ ते होइ॥

बहुत निबल मिल बल करैं, करैं जु चाहैं सोय।
तिनकन की रसरी करी, करी निबन्धन होय॥

साँच झूँठ निर्णय करै, नीति निपुण जो होय।
राजहंस बिन को करै, छीर नीर को दोय॥

दोषहिं को उमहै गहै, गुण न गहै खललोक।
पियै रुधिर पय ना पियै, लागि पयोधर जोंक॥

क्यों कीजै ऐसो जतन, जाते काज न होय।
परवत पर खोदै कुँआ, कैसे निकसै तोय॥

वीर पराक्रम ना करे, तासों डरत न कोइ।
बालकहू को चित्र को, बाघ खिलौना होइ॥

उत्तम जन सों मिलत ही, अवगुण सो गुण होय।
घनसँग खारो उदधि मिलि, बरसै मीठो तोय॥

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात तें, सिल पर परत निसान॥

छोटे मन में आय हैं, कैसे मोटी बात।
छेरी के मुँह में दियौ, ज्यों पेठा न समात॥

होत निवाह न आपनो, लीने फिरे समाज।
चूहा बिल न समात है, पूँछ बाँधिये छाज॥

अपनी प्रभुता को सवै, बोलत झूँठ बनाय।
वेश्या बरस घटावहीं, योगी बरस बढ़ाय॥

ऊपर दरसै सुमिल सी, अंतर अनमिल आँक।
कपटी जन की प्रीति है, खीरा की सी फाँक॥

सबसों आगे होय कै, कबहुँ न करिये बात।
सुधरे काज समाज फल, बिगरे गारी खात॥

बुरौ तऊ लागत भलौ, भली ठौर पर लीन।
तिय नैननि नीकौ लगै, काजर जदपि मलीन॥

गुरुमुख पढ़्यो न कहतु है, पोथी अर्थ विचारि।
सो शोभा पावै नहीं, जार गर्भयुत नारि॥

क्षमा खड्ग लीने रहै, खल को कहा बसाय।
अगिन परी तृन रहित थल, आपहि ते बुझि जाय॥

ओछे नर के पेट में, रहै न मोटी बात।
आध सेर के पात्र में, कैसे सेर समात॥

बचन रचन का पुरुष के, कहे न छिन ठहराय।
ज्यों कर पद मुख कछुप के, निकसि निकसि दुरजाय॥

बिरह पीर व्याकुल भए, आयो पीतम गेह।
जैसे आवत भाग ते, आग लगे पर मेह॥

भले वंश को पुरुष सो, निहुरै बहु धन पाय।
नवै धनुष सदबंस को, जिहिं द्वै कोटि दिखाय॥

लोकन के अपवाद को, डर करिये दिन रैन।
रघुपति सीता परिहरी, सुनत रजक के बैन॥

कहा कहौं विधि को अविधि, भूले परे प्रवीन।
मूरख को संपति दई, पंडित संपति हीन॥

वह संपति केहि काम की, जिन काहू पै होउ।
नित्य कमावै कष्ट करि, बिलसै औरहि कोउ॥

तृनहूँ ते अरु तूलते, हरुवो याचक आहि।
जानतु है कछु माँगि है, पवन उड़ावत नाहिं॥

गिरिधर कविराय

शुकने कह्यो सँदेह, सेमर के पग लागिहौ ।
पग न परै वहि देस, जव सुधि आवै फलन की ॥

× × ×

साईं वेटा वाप के, विगरे भयो अकाज ।
हरनाकस्यप कंस को, गयउ दुहुन को राज ॥
गयउ दुहुन को राज, वाप वेटा में विगरी ।
दुस्मन दावागीर, हँसै महि मण्डल नगरी ॥
कह गिरिधर कविराय, युगन याही चलि आई ।
पिता पुत्र के वैर, नफ़ा कहु कौने पाई ॥

× × ×

वेटा विगरे वाप सों, करि तिरियन को नेहु ।
लटापटी होने लगी, मोहिं जुदा करि देहु ॥
मोहिं जुदा करि देहु, घरीमा माया मेरी ।
लेहौं घर अरु द्वार, करौं मैं फजिहत तेरी ॥
कह गिरिधर कविराय, सुनों गदहा के लेटा ।
समय पर्यो है आय, वाप से झगरत वेटा ॥

× × ×

साईं ऐसे पुत्र से, बाँझ रहे बरु नारि ।
विगरी वेटे वाप से, जाय रहे ससुरारि ॥
जाय रहे ससुरारि, नारि के नाम बिकाने ।
कुल के धर्म नसाँय, और परिवार नसाने ॥
कह गिरिधर कविराय, मातु झंखै वहि ठाईं ।
असि पुत्रनि नहिं होय, बाँझ रहतिउँ बरु साईं ॥

× × ×

काची रोटी कुचकुची, परती माछी वार ।
फूहर वही सराहिये, परसत टपकै लार ॥
परसत टपकै लार, झपटि लरिका सौंचावै ।
चूतर पोंछै हाथ, दोउ कर सिर खजुवावै ॥
कह गिरिधर कविराय, फुहर के याही धैना ।
कजरौटा बरु होइ, लुकाठन आँजै नैना ॥

× × ×

साँई बैर न कीजिये, गुरु पंडित कवि यार।
बेटा वनिता पँवरिया, यश करावन हार॥
यश करावनहार, राज मन्त्री जो होई।
विप्र परोसी वैद्य, आप को तपै रसोई॥
कह गिरिधर कविराय, युगन ते यहि चलि आई।
इन तेरह सों तरह, दिये बनि आवै साँई॥

× × ×

सोना लादन पिय गये, सूना करि गये देश।
सोना मिले न पिय मिले, रूपा ह्वै गये केश॥
रूपा ह्वै गये केश, रोय रँग रूप गँवावा।
सेजन को विसराम, पिया बिन कबहुँ न पावा॥
कह गिरिधर कविराय, लोन बिन सबै अलोना।
बहुरि पिया घर आव, कहा करिहौं लै सोना॥

× × ×

जाकी धन धरती हरी, ताहि न कीजै संग।
जो चाहै लेतो बनै, तो करि डारु निपंग॥
तो करि डारु निपंग, भूलि परतीत न कीजै।
सौ सौगन्दैं खाय, चित्त में एक न दीजै॥
कह गिरिधर कविराय, खटक जैहै नहि ताकी।
अरि समान परिहरिय, हरी धन धरती जाकी॥

× × ×

दौलत पाय न कीजिये, सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारिको, ठाउ न रहत निदान॥
ठाँउ न रहत निदान, जियत जगमें यश लीजै।
मीठे बचन सुनाय, विनय सबही की कीजै॥
कह गिरिधर कविराय, अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निशिदिन चारि, रहत सबही के दौलत॥

× × ×

गुन के गाहक सहसनर, बिनु गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय॥
शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को एक रंग, काग सब भये अपावन॥
कह गिरिधर कविराय, सुनो हो ठाकुर मनके।
बिन गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुनके॥

× × ×

साँई सब संसार में, मतलब का व्यवहार।
जब लग पैसा गाँठ में, तब लग ताको यार॥
तब लग ताको यार, यार सँगही सँग डोलैं।
पैसा रहा न पास, यार मुखसे नहिं बोलैं॥
कह गिरिधर कविराय, जगत यहि लेखा भाई।
करत बेगरजी प्रीति, यार विरला कोई साँई॥

× × ×

रहिये लटपट काटि दिन, बरु घामे माँ सोय।
छाँह न वाकी बैठिये, जो तरु पतरो होय॥
जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा देहै।
जा दिन बहै बयारि, टूटि तब जरसे जैहै॥
कह गिरिधर कविराय, छाँह मोटे की गहिये।
पाता सब झरिजाय, तऊ छाया में रहिये॥

× × ×

साँई घोड़े आछतहि, गदहन पायो राज।
कौआ लीजै हाथ में, दूरि कीजिये बाज॥
दूरि कीजिये बाज, राज पुनि ऐसो आयो।
सिंह कीजिये कैद, स्यार गजराज चढ़ायो॥
कह गिरिधर कविराय, जहाँ यह बूझि बधाई।
तहाँ न कीजै भोर, साँझ उठि चलिये साँई॥

× × ×

साईं अवसर के पड़े, को न सहै दुख द्वन्द।
जाय बिकाने डोम घर, वै राजा हरिचन्द्र॥
वै राजा हरिचन्द, करैं मरघट रखवारी।
धरे तपस्वी वेष, फिरे अर्जुन बलधारी॥
कह गिरिधर कविराय, तपै वह भीम रसोई।
को न करै घटि काम, परे अवसर के साईं॥

× × ×

साईं ये न विरोधिये, छोट बड़े सब भाय।
ऐसे भारी वृच्छ को, कुल्हरी देत गिराय॥
कुल्हरी देत गिराय, मारके जमीं गिराई।
टूक टूक कै काटि, समुद में देत वहाई॥

कह गिरिधर कविराय, फूट जेहि के घर आई ।
हिरणाकश्यप कंस, गये बलि रावण भाई ॥

× × ×

लाठी में गुण बहुत हैं, सदा राखिये संग ।
गहिर नदी नारा जहाँ, तहाँ बचावै अंग ॥
तहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता कहँ मारै ।
दुश्मन दावागीर, होयँ तिनहूँ को झारै ॥
कह गिरिधर कविराय, सुनो हो धूर के बाटी ।
सब हथियारन छाँड़ि, हाथ महँ लीजै लाठी ॥

× × ×

कमरी थोरे दाम की, आवै बहुतै काम ।
खासा मलमल बाफता, उनकर राखै मान ॥
उनकर राखै मान, बुन्द जहँ आड़े आवै ।
बकुचा बाँधै मोट, रात को झारि बिछावै ॥
कह गिरिधर कविराय, मिलत है थोरे दमरी ।
सब दिन राखै साथ, बड़ी मर्यादा कमरी ॥

× × ×

बिना विचारे जो करै, सो पीछे पछिताय ।
काम बिगारै आपनो, जग में होत हँसाय ॥
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पावै ।
खान पान सन्मान, राग रँग मनहिं न भावै ॥
कह गिरिधर कविराय, दुःख कछु टरत न टारे ।
खटकत है जिय माँहि, कियो जो बिना विचारे ॥

× × ×

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित देइ ॥
ताही में चित देइ, बात जोई बनि आवै ।
दुर्जन हँसै न कोइ, चित्त में खता न पावै ॥
कह गिरिधर कविराय, यहै करु मन परतीती ।
आगे को सुख समुझि, होइ बीती सो बीती ॥

× × ×

साईं अपने चित्त की, भूलि न कहिये कोइ ।
तबलग मनमें राखिये, जब लग कारज होइ ॥

जबलग कारज होइ, भूलि कबहूँ नहि कहिये ।
दुरजन हँसै न कोय, आप सियरे ह्वै रहिये ।।
कह गिरिधर कविराय, वात चतुरन के ताईं ।
करतूती कहि देत, आप कहिये नहिं साँईं ।।

× × ×

साँईं अपने भ्रात को, कबहुँ न दीजै त्रास ।
पलक दूर नहिं कीजिये, सदा राखिये पास ।।
सदा राखिये पास, त्रास कबहूँ नहि दीजै ।
त्रास दियो लंकेश, ताहि की गति सुनि लीजै ।।
कह गिरिधर कविराय, रामसो मिलियो जाई ।
पाय विभीषण राज, लंकपति वाज्यो साँईं ।।

× × ×

साँईं समय न चूकिये, यथाशक्ति सन्मान ।
को जाने को आइ है, तेरी पौरि प्रमान ।।
तेरो पौरि प्रमान, समय असमय तकि आवै ।
ताको तू मन खोलि, अंक भरि हृदय लगावै ।।
कह गिरिधर कविराय, सबै यामै सधि आई ।
शीतल जल फल फूल, समय जनि चूको साँईं ।।

× × ×

पानी वाढ़ो नाव में, घर में वाढ़ो दाम ।
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम ।।
यही सयानो काम, राम को सुमिरन कीजै ।
परस्वारथ के काज, शीश आगे धरि दीजै ।।
कह गिरिधर कविराय, वड़ेन की याही वानी ।
चलिये चाल सुचाल, राखिये अपनो पानी ।।

× × ×

राजा के दरवार में, जैये समया पाय ।
साँईं तहाँ न वैठिये, जहँ कोउ देय उठाय ।।
जहँ कोउ देय उठाय, वोल अनवोले रहिये ।
हँसिये नहीं हहाय, वात पूछे ते कहिये ।।
कह गिरिधर कविराय, समय सों कीजै काजा ।
अति चतुर नहिं होय, बहुरि अनखैहैं राजा ।।

× × ×

कृतघन कबहुँ न मानहीं, कोटि करै जो कोय ।
सर्बस आगे राखिये, तऊ न अपनो होय ।।
तऊ न अपनो होय, भले की भली न मानै ।
काम काढ़ि चुप रहै, फेरि तिहि नहिं पहिचानै ।।
कह गिरिधर कविराय, रहत नितही निर्भय मन ।
मित्र शत्रु सब एक, दाम के लालच कृतघन ।।

संत वाजिदजी

गाफिल रहिवा वीर कहो क्यूं बनत है ।
रे मानस का श्वास जुरा नित गनत है ।
जाग लागि हरिनाम कहाँ लगि सोइ है ।
हरि हाँ, चाके के मुखधरे सु मैदा होइ है ।।
टेढ़ी पगड़ी बाँध झरोखां झाँकते ।
ताता तुरग पिलाए चहूँटे डाकते ।
लारे चढ़ती फौज नगारा बाजते ।
वाजिन्द वे नर गये बिलाय सिंह ज्यूँ गाजते ।।
शिर पर लम्बा केश चले गज चालसी ।
हाथ गह्या शमसेर ढलकती ढालसी ।।
एता यह अभिमान कहाँ ठहरायेंगे ।
हरि हाँ, वाजिन्द ज्यूँ तीतर कूँ बाज झपट ले जायेंगे ।।
काल फिरत है हाल रैंण दिन लोइ रे ।
हनै राव अरु रंक गिणे नहिं कोइ रे ।।
यह दुनिया वाजिन्द वाट की दूब है ।
हरि हाँ, पाणी पहिले पाल बँधे तू खूब है ।।
आवेंगे किहि काम पराई पौर के ।
मोती जर बरजाहु न लीजे और के ।।
परिहरि ये वाजिन्द न छूवे माथ को ।
हरि हाँ, पाहन नीको बीर ! नाथ के हाथ को ।।
दरगह बड़ो दिवान न आवे छेह जी ।
जे शिर करवत वहे तो कीजे नेह जी ।।
हरितें दूर न होय दुःख कूँ हेरि के ।
हरि हाँ, वाजिन्द जानराय जगदीश निवाजै फेरि के ।।

भगत जगत में वीर जानिये ऐन रे।
श्वास सरद मुख जरद निर्मले नैन रे॥
दुरमति गइ सब दूर निकट नहिं आवहीं।
हरि हाँ, साध रहे मुख मौन कि गोविन्द गावहीं॥
बड़ा भया तो कहा बरस सो साठ का।
घणा पढ्या तो कहा चतुर्विध पाठ का॥
छापा तिलक बनाय कमंडल काठ का।
हरि हाँ, वाजिन्द एक न आया हाथ पंसेरी आठ का॥
कहे वाजिन्द पुकार सीष एक सुंन रे।
आडो वांको वार आदहै पुंन रे॥
अपनो पेट पसार बड़ो क्यूँ कीजिये।
हरि हाँ, सारी मैं तै कौर और क्यूँ दीजिये॥
भूखो दुर्बल देख मुंह नहिं मोड़िये।
जो हरि सारी देय तो आधी तोड़िये॥
भी आधी की आध आध की कोर रे।
हरि हाँ, अन्न सरीखा पुण्य नहीं कोइ और रे॥
खैर सरीखी और न दूजी बसत रे।
मेल्हे वासण मांहि कहा मुंह कसत है॥
तूं जन जाने जाप रहेगो ठाम रे।
हरि हाँ, माया दे वाजिन्द धणी के काम रे॥

तेग़ बहादुर

प्रानीकउ हरिजसु मनि नहीं आवै।
अहिनिसि मगनु रहै माइआ मैं, कहु कैसे गुन गावै।
पूत मीत माइआ ममता सिउ, इहविधि आपु बंधावै।
म्रिगत्रिसना जिउ झूठो इह जग, देपि तासि उठि धावै।
भुगति मुकति का कारनु सुआमी, मूढ ताहि बिसरावै।
जन नानक कोटन मैं कोऊ, भजनु राम को पावै॥

× × ×

साधो इहु जगु भरमु भुलाना।
राम नाम का सिमरनु छोड़िआ, माइआ हाथि बिकाना।

मात पिता भाई सुत वनिता, ताकै रस लपटाना।
जोवनु धनु वनिता प्रभुता कै मदमैं, अहिनिसि रहै दिवाना।
दीन दइआल सदा दुख भंजन, तासिउ मन न लगाना।
जन नानक कोटन मैं किनहू, गुरमुखि होइ पछाना॥

× × ×

बिरथा कहउ कउन सिउ मनकी।
लोभि ग्रसिउ दसहू दिस धावत, आसा लागिउ धनकी।
सुखकै हेत बहुत दुखु पावत, सेव करत जन जनकी।
दुआरहि दुआर सुआन जिउ डोलत, नहिं सुध राम भजन की।
मानस जनमु अकारथ खोवत, लाजन लोक हसन की।
नानक हरि जसु किउ नहिं गावत, कुमति बिनासै तनकी॥

× × ×

यह मनु नेकु न कहिउ करै।
सीख सिखाइ रहिउ अपनी सी, दुरमति ते न टरै।
मदि माइआकै भइउ बावरो, हरि जसु नहिं उचरै।
करि परपंचु जगत कउ डहकै, अपनो उदरु भरै।
सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो, कहिउ न कान धरै।
कहु नानक भजु राम नाम नित, जाते काजु सरै॥

× × ×

भूलिउ मनु माइआ उरझाइउ।
जो जो करम कीउ लालच लगि, तिह तिह आपु बँधाइउ।
समझ न परी बिखै रस रचिउ, जसु हरि को बिसराइउ।
संगि सुआमी सो जानिउ नाहिन, बनु खोजन को धाइउ।
रतनु रामु घटही के भीतरि, ताको गिआनु न पाइउ।
जन नानक भगवंत भजन बिन, बिरथा जनमु गँवाइउ॥

× × ×

साधो रचना राम बनाई।
इकि बिनसै इक असथिरु मानै, अचरजु लखिउ न जाई।
कामु क्रोधु मोह बसि प्रानी, हरि मूरति बिसराई।
झूठा तनु साचा करि मानिउ, जिउ सुपनारै नाई।
जो दीसै सो सगल बिनासै, जिउ बादर की छाई।
जन नानक जग जानिउ मिथिआ, रहिउ राम सरनाई॥

× × ×

सभ किछु जीवत को बिवहार ।
मात पिता भाई सुत बंधव, अरु फुनि ग्रिह की नारि ।
तन ते प्रान होत जब निआरे, टेरत प्रेति पुकारि ।
आध घरी कोऊ नहिं रापै, घरि ते देत निकारि ।
म्रिग त्रिसना जिउ जग रचना यह, देषहु रिदै विचारि ।
कहु नानक भजु राम नाम नित, जाते होत उधार ॥

× × ×

जगत मैं झूठी देषी प्रीति ।
अपने ही सुप सिउ सभ लागे, किआ दारा किआ मीत ।
मेरउ मेरउ सभै कहत हैं, हित सिउ बाँधिउ चीत ।
अंति कालि संगी नह कोऊ, इह अचरज है रीत ।
मन मूरप अजहूँ नह समझत, सिपदै हारिउ नीत ।
नानक भउ जल पारि परै जउ, गावै प्रभु के गीत ॥

× × ×

मनकी मनही माहि रही ।
ना हरि भजे न तीरथ सेवे, चोटी काल गही ।
दारा मीत पूत रथ सम्पति, धन पूरन सभ मही ।
अवर सगल मिथिआ ए जानहु, भजनु राम को सही ।
फिरत फिरत बहुते जुग हारिउ, मानस देह लही ।
नानक कहत मिलन की बरीआ, सिमरत कहा नही ॥

× × ×

माई मनु मेरो बस नाहि ।
निस बासुर बिपिअन कउ धावत, किहि विधि रोकउ ताहि ।
वेद पुरान सिम्रित के मति सुनि, निमष नहीं ए बसावै ।
परधन परदारा सिउ रचिउ, बिरथा जनमु सिरावै ।
मदि माइआ के भइउ बावरो, सूझत नह कछु गिआना ।
घटहीं भीतरि बसत निरंजन, ताको मरमु न जाना ।
जबही सरन साध की आइउ, दुरमति सगल बिनासी ।
तब नानक चेतिउ चिंतामनि, काटी जम की फाँसी ॥

× × ×

साधो मन का मानु तिआगउ ।
कामु क्रोधु संगति दुरजन की, ताते अहिनिसि भागउ ।
सुपु दुपु दोनो सम करि जानै, अउरु मान अपमाना ।
हरप सोगते रहै अतीता, तिनि जगि ततु पछाना ।

उसतति निन्दा दोऊ तिआगै, पोजै पद्ध निरवाना।
जन नानक इहु पेलु कठिनु है, किनहू गुरमुपि जाना ॥

× × ×

साधो राम सरनि बिसरामा।
वेद पुरान पढ़े को इह गुन, सिमरे हरि को नामा।
लोभ मोह माइआ ममता फुनि, अउ बिपअन की सेवा।
हरप सोग परसै जिन नाहिन, सो मूरति है देवा।
सुरग नरक अम्रित बिषु ए सभ, तिउ कंचन अरु पैसा।
उसतति निन्दा ए सभ जाके, लोभु मोहु फुनि तैसा।
दुषु सुषु ए बाधे जिह नाहनि, तिह तुम जानहु गिआनी।
नानक मुकति ताहि तुम मानहु, इह विधि को जो प्रानी ॥

× × ×

तिह जोगी कउ जुगति न जानउ।
लोभ मोह माइया ममता फुनि, जिह घटि माहि पछानउ।
पर निन्दा उसतति नह जाके, कंचन लोह समानो।
हरप सोग ते रहे अतीता, जोगी ताहि बपानो।
चंचल मन दहदिसि कउ धावत, अचल जाहि ठहरानौ।
कहु नानक इह बिधि को जो नरु, मुकति ताहि तुम मानौ ॥

× × ×

जोर नर दुपु मै दुषु नही मानै।
सुष सनेहु अरु भै नहि जाकै, कंचन माटी मानै।
नह निंदिआ नह उसतति जाकै, लोभु मोहु अभिमाना।
हरष सोग ते रहे निआरउ, नाहि मान अपमाना।
आसा मनसा सगल तिआगै, जगते रहै निरासा।
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि, तिह घट ब्रह्म निवासा।
गुर किरपा जिह नर कउ कीनी, तिह इह जुगति पछानी।
नानक लीन भइउ गोबिंद सिउ, जिउ पानी सिउ पानी ॥

× × ×

रे नर इह साची जीआ धारि।
सगल जगतु है जैसे सुपना, बिनसत लगत न वार।
बारू भीति बनाई रचि रचि, रहत नहीं दिन चारि।
तैसे ही इह सुप माइआ के, उरझिओ कहा गँवार।

अजहु समझि कछु बिगरिउ नाहिनि, भजि ले नाम मुरारि।
कहु नानक निज मतु साधन कउ, भाषिउ तोहि पुकारि॥

× × ×

काहे रे बन षोजन जाई।
सरब निवासी सदा अलेपा, तोही संगि समाई।
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है, मुकर माहि जैसे छाई।
तैसे ही हरि बसे निरंतरि, घट ही षोजहु भाई।
बाहरि भीतरि एको जानहु, इहु गुर गिआनु बताई।
जन नानक बिनु आपा चीन्है, मिटै न भ्रम की काई॥

× × ×

प्रानी नाराइनि सुधि लेह।
छिनु छिनु अउध घटै निस बासुर, बृथा जातु है देह।
तरनापो बिषिअन सिउ षोइउ, बालापनु अगिआना।
बिरध भइउ अजहू नहिं समझै, कउनु कुमति उरझाना।
मानस जनम दीउ जिह ठाकुर, सो तै किउ बिसराइउ।
मुकति होत नर जाके सिमरे, निमष न ताको गाइउ।
माइआ को मदु कहा करतु है, संगि न काहू जाई।
नानक कहत चेति चिंतामनि, होइहै अंति सहाई॥

× × ×

जामै भजनु राम को नाही।
तिह नर जनमु अकारथ षोइआ, यह राषहु मन माही।
तीरथ करै बरत फुनि राषै, नह मनुआ बस जाको।
निहफल धरम ताहि तुम मानो, साचु कहत मैं याकउ।
जैसे पाहनि जल महि राषिउ, भेदै नाहि तिहि पानी।
तैसे ही तुम ताहि पछानो, भगति हीन जो प्रानी।
कलमै मुकति नाम ते पावत, गुरु यह भेदु बतावै।
कहु नानक सोई नरु गरुआ, जो प्रभ के गुन गावै॥

× × ×

हरि को नामु सदा सुषदाई।
जाकउ सिमिर अजामिलु उधरिउ, गनकाहू गति पाई।
पंचाली कउ राज सभा मै, राम नाम सुधि आई।
ताको दुषु हरिउ करुणामै, अपनी पैज बढ़ाई।

जिह नर जसु किरपा निधि गाइउ, ताकउ भइउ सहाई।
कहु नानक मैं इहीं भरोसै, गही आन सरनाई॥

× × ×

माई मै धनु पाइउ हरि नामु।
मनु मेरो धावन ते छूटिउ, करि बैठो बिसरामु।
माइआ ममता तनते भागी, उपजिउ निरमल गिआनु।
लोभ मोह एह परसि न साकै, गही भगति भगवान।
जनम जनम का संसा चूका, रतनु नामु जब पाइआ।
त्रिसना सकल बिनासी मनते, निज सुष माहि समाइआ।
जाकउ होत दइआलु किरपानिधि, सो गोविंद गुन गावै।
कहु नानक इह बिधि की सम्पै, कोऊ गुरमुषि पावै॥

× × ×

गुन गोबिंद गाइउ नहीं, जनमु अकारथ कीन।
कहु नानक हरि भजु मना, जिहि बिधि जलकै मीन॥
सुषु दुषु जिहि परसै नहीं, लोभ मोह अभिमानु।
कहु नानक सुन रे मना, सो मूरत भगवान॥
भै काहू कउ देत नहि, नहि भै मानत आनि।
कहु नानक सुनि रे मना, गिआनी ताहि बषानि॥
जिहि माइआ ममता तजी, सभते भइउ उदास।
कहु नानक सुन रे मना, तिह घटि ब्रह्म निवासु॥
जो प्रानी निसि दिनि भजे, रूप राम तिह जानु।
हरि जन हरि अंतरु नहीं, नानक साची जानु॥
नर चाहत कछु अउर, अउरै की अउरै भई।
चितवत रहिउ ठगउर, नानक फाँसी गलि परी॥
सुआमी को ग्रिह जिउ सदा, सुआन तजत नही नित।
नानक इह बिधि हरि भजउ, इक मन हुइ इक चिति॥
तरनापो इउही गइउ, लीउ जरा तनु जीति।
कहु नानक भज हरि मना, अउध जातु है बीति॥
पतित उधारन भै हरन, हरि अनाथ के नाथ।
कहु नानक तिह जानिऐ, सदा बसतु तुम साथ॥
जिहि बिषिआ सगली तजी, लीउ भेष बैराग।
कहु नानक सुन रे मना, तिह नर माथै भाग॥

जो प्रानी ममता तजै, लोभ मोह अहंकार।
कहु नानक आपन तरै, अउरन लेत उधार॥
जतनु मैं करि रहिउ, मिटिउ न मन को मानु।
दुरमति सिउ नानक फधिउ, राखि लेहु भगवानि॥
एक भगति भगवान, जिह प्रानी के नाहि मन।
जैसे सूकर सुआन, नानक मानो ताहि तन॥
तीरथ वरत अरु दान करि, मनमै धरै गुमानु।
नानक निरफल जात तिह, जिउ कुंचर असनानु॥
सिरु कंपिउ पग डगमगे, नैन जोति ते हीन।
कहु नानक इह विधि भई, तऊ न हरिरस लीन॥
संग सखा सभ तजि गए, कोउ न निबहिउ साथ।
कहु नानक इह विपत मै, टेक एक रघुनाथ॥

सीतल

कारन कारज ले न्याय कहै जोतिस मत रवि गुरु ससी कहा।
ज़ाहिद ने हक़्क़ हुसन यूसुफ अरहंत जैन छवि वसी कहा।
रतराज रूप रस प्रेम इश्क जानी छवि शोभा लसी कहा।
लाला हम तुमको वह जाना जो ब्रह्म तत्त्व त्वम असी कहा॥

× × ×

मुख सरद वदन पर ठहर गया जानी के बुन्द पसीने का।
या कुन्दन कमल कली ऊपर झमकाहट रक्खा मीने का।
देखे से होश कहाँ रहवै जो पिदर बू अली सीने का।
या लाल वदख़्शां पर खींचा चौथा इल्मास नगीने का॥

× × ×

हम खूब तरह से जान गए जैसा आनँद का कन्द किया।
सब रूप सील गुन तेज पुन्ज तेरे ही तन में बन्द किया।
तुझ हुस्न प्रभा की बाकी ले फिर विधि ने यह फरफन्द किया।
चम्पक दल सोनजुही नरगिस चामीकर चपला चन्द किया॥

× × ×

मुख सरद चन्द्र पर श्रम-सीकर जगमगै नखत गन जोती से।
कै दल गुलाब पर शबनम के हैं उनके रूप उदोती से।
हीरे की कनियाँ मन्द लगै हैं सुधा किरन की गोती से।
आया है मदन आरती को धर कनक थार में मोती से॥

श्रीपति

घूँघट उदय गिरिवर ते निकसि रूप,
सुधा सों कलित छवि कीरति बगारो है।
हरिन डिठौना स्याम सुख सील बरषत,
करषत सोक, अति तिमिर वदारो है।
श्रीपति विलोकि सौति वारिज मलिन होत,
हरषि कुमुद फूलै नंद को दुलारो है।
रंजन मदन, तन गंजन विरह, विवि,
खंजन सहित चन्द बदन तिहारो है॥

× × ×

सारस के नादन को वाद ना सुनात कहूँ,
नाहक ही बकवाद दादुर महा करै।
श्रीपति सुकवि जहाँ ओज ना सरोजन की,
फूल ना फुलत जाहि चित दै चहा करै।
वकन की बानी की विराजति है राजधानी,
काई सो कलित पानी फेरत हहा करै।
घोंघन के जाल जामे, नरई सेवाल ब्याल,
ऐसे पापी ताल को मराल लै कहा करै॥

× × ×

जल भरे झूमैं मानौ भूमैं परसत आय,
दसहु दिसान घूमैं दामिनि लए लए।
धूरि धार धूमरे से धूम धुधारे कारे,
धुरवान धारे धावै छवि सों छए छए।
श्रीपति सुकवि कहै घेरि घहराय,
तकत अनत तन नाव में तए तए।
लाल बिन कैसे लाल चादर रहैगी आज,
कादर करत मोहि वादर नए नए॥

× × ×

उर्द के पचाइवे को हींग अरु सोंठ,
जैसे केरा के पचाइवे को घिव निराधार है।
गोरस पचाइवे को सरसो प्रबल दण्ड,
आम के पचाइवे को नीबू को अचार है।

श्रीपति कहत पर धन के पचाइवे को,
कानन छुआय हाथ कहिवो न कार है।
आज के जमाने बीच राजा राव जानै सबै,
रीभि के पचाइवे को वाहवा डकार है॥

तोपनिधि

श्रीहरि की छवि देखिवे को अँखियाँ प्रति रोमहि में करि देतो।
बैनन के सुनिवे हित स्रौन जितै तित सो करतै करि हेतो।
मो ढिग छोड़ि न काम कहूँ रहे तोप कहै लिखितो विधि एतो।
तौ करतार इती करनी करिकै कलि में कल कीरति लेतो॥

× × ×

तौ तन में रवि को प्रतिविम्ब परे किरनै सोधनी सरसाती।
भीतर हू रहि जात नहीं अँखियाँ चकि चौंध ह्वै जाति हैं राती।
बैठि रहौ, वलि कोठरी में कह तोप करौ विनती बहु भाँती।
सारसी नैनि लै आरसी सो अँग काम कला कढ़ि घाम में जाती॥

× × ×

भूपन भूपित दूपन हीन प्रबीन महा रस में छवि छाई।
पूरी अनेक पदारथ ते जेहि ते परमारथ स्वारथ पाई।
औ उकतैं मुकतैं उलही कवि तोप अनोष धरी चतुराई।
होत सबै सुख की जनिता वनि आवत जौ वनिता कविताई॥

× × ×

एक कहैं हँसि ऊधव जू! वृज की जुवती तजि चन्द्र प्रभासी।
जाय कियो कहँ तोष प्रभू! एक प्रान प्रिया लहि कंस की दासी।
जो हुते कान्ह प्रवीन महा सो हहा! मथुरा में कहा मति नासी।
जीव नहीं उवियात जबै ढिग पौढ़ति है कुबजा कछु हासी॥

रघुनाथ

फूलि उठे कमल से अमल हितू के नैन,
कहैं रघुनाथ भरे चैन रस सियरे।
दौरि आये भौंर से करत गुनी गुन गान,
सिद्ध से सुजान सुख सागर सो नियरे।

सुरभी सी खुलन सुकवि की सुमति लागी,
चिरिया सी जागी चिन्ता जनक के जियरे।
धनुष पै ठाढ़े राम रवि से लसत आज,
भोर कैसे नखत नरिन्द भए पियरे॥

× × ×

आप दरियाव, पास नदियों के जाना नहीं,
दरियाव पास नदी होयगी सो धावैगी।
दरखत बेलि आसरे को कभी राखता न,
दरखत ही के आसरे को बेल पावैगी।
मेरे लायक जो था कहना सो कहा मैंने,
रघुनाथ मेरी मति न्याय ही को गावैगी।
वह मुहताज आपकी है, आप उसके न,
आप क्यों चलोगे ? वह आप पास आवैगी॥

× × ×

सुधरे सिलाह राखै वायु वेग वाह राखै,
रसद की राह राखे राखे रहे बैन को।
चोर को समाज राखै बजा औ नजर राखै,
खबरि के काज बहु रूपी हरफन को।
आगम भखैया राखै सगुन लवैया राखै,
कहै रघुनाथ औ विचारि बीच मन को।
बाजी हारै कबहूँ न औसर के परे जौन,
ताजी राखै प्रजन को राजी सुभटन को॥

× × ×

कैधो सेस देस ते निकसि पुहुमी पै आय,
बदन उचाय बानी जस अपसंद की।
कैधों छिति चँवरी उसीर की दिखावति है,
ऐसी सोहै उज्ज्वल किरन जैसे चंद की।
जानि दिन पाल श्री नृपाल नंदलाल जू को,
कहै रघुनाथ पाय सुघरी अनंद की।
छूटत फुहारे कैधो फूल्यो है कमल तासो,
अमल अमंद कढ़े धार मकरंद की॥

× × ×

ग्वाल संग जैबो ब्रज गायन चरैबो ऐबो,
अब कहा ये दाहिने नैन फरकत हैं।
मोतिन की माल वारि डारों गुन्ज माल,
पर कुन्जन की सुधि आए हिए धरकत हैं।
गोवर को गारो रघुनाथ कछू याते भारो,
कहा भयो पहलन मनि मरकत हैं।
मंदिर है मंदर ते ऊँचे मेरे द्वारका के,
बृज के खरिक तऊ हिए खरकत हे ॥

× × ×

देखिवे को दुति पूनो के चन्द की हे रघुनाथ श्री राधिका रानी।
आइ बुलाइ के चौतरा ऊपर ठाढ़ी भई सुख सौरभ सानी।
ऐसी गयी मिलि जोन्ह की जोत में रूप की रासि न जात बखानी।
बारन ते कुछ भौंहन ते कुछ नैनन की छवि से पहिचानी ॥

× × ×

सूखति जाति सूनी जब सो कछु खात न पीवति कैसे धौं रैहै।
जाकी है ऐसी दसा अवही रघुनाथ सौ औधि अधार क्यो पैहै।
ताते न कीजिए गौन वलाइ ल्यों गौन करै यह सीस बिसैहै।
जानति हौं दृग ओट भये तिय प्रान उसासहि के संग जैहै ॥

सोमनाथ

प्रीति नई नित कीजति है सब सो छल की वतरानि परी है।
सीखी ढिठाई कहाँ ससि नाथ, हमै दिन द्वैक ते जानि परी है।
और कहा लहिए सजनी! कठिनाई जरै अति आनि परी हैं।
मानत हैं वरज्यो न कछू अब ऐसी सुजानहिं वान परी हैं ॥

× × ×

झमकतु बदन मतंग कुम्भ उत्तंग अंग वर।
बंदन वलित भुसुंड कुंडलित सुंड सिद्धिधर।
कंचन मनिमय मुकुट जगमगे सुघर सीस पर।
लोचन तीनि विसाल चार भुज ध्यावत सुर नर।
ससि नाथ नंद स्वच्छन्द निति कोटि विघन छरछंद हर।
जय बुद्धि विलन्द अमंद दुति इंदु भाल आनंद कर ॥

नागरीदास

नागर वेद पुरान पढ़्यो सब नादि कै कीन्ही कई मति पाँगुरी।
गंग और गोमती न्हात फिर्यो अति सीत में प्रीत सों हाथ लै काँगुरी।
गल्यका न्हाय गोदावरी न्हायो सु त्यागि दो अन्न 'रुखावत सागुरी।
और हूँ न्हायो सु मैं न वदी जुपै नेह नदी में न दी पग आँगुरी॥

× × ×

सुत - पित - पति तिय मोह महादुख मूल है।
जग - मृग तृस्ना देखि रह्यो क्यों भूल है॥
स्वप्न - राज - सुख पाय न मन ललचाइए।
ब्रज नागर नँदलाल सु निसि दिन गाइए॥

× × ×

कलह कल्पना काम कलेस निवारनौ।
परनिन्दा परद्रोह न कबहुँ विचारनौ॥
जाग प्रपंच चटसार न चित्त पढ़ाइए।
ब्रज-नागर नँदलाल सु निसि दिन गाइए॥

× × ×

अन्तर कुटिल कठोर भरे अभिमान सों।
तिनके गृह नहिं रहैं संत सनमान सों॥
उनकी संगति भूलि न कबहूँ जाइए।
ब्रज - नागर नन्दलाल सु निस दिन गाइए॥

× × ×

चरचा करी कैसे जाय।
बात जानत कछुक हमसों, कहत जिय थहराय॥
कथा अकथ सनेह की, उर नाहि आवत और।
वेद सुंमृति-उपनिषद को, रही नाहिन ठौर॥
मनहिं में है कहनि ताकी, सुनत स्रोता नैन।
सोऽब नागर लोग बूझत, कहि न आवत बैन॥

× × ×

कहाँ वे सुत नाती हय हाथी।
चले निसान बजाय अकेले, तहँ कोउ सँग न साथी॥
रहे दास दासी मुख जोवत, कर मीड़ै सब लोग।
काल रह्यो तब सबही छाड़्यो, धरे रहे सब भोग॥

जहाँ तहाँ निसि दिन विक्रम को भट्ट कहत विरदत्त ।
सो सब बिसरि गये एकै रत, 'राम नाम कहँ सत्त' ॥
बैठन देत हुते नहिं माखी, चहुँ दिसि चॅवर सचाल ।
लिए हाथ में लट्ठा ताको, कूटत मित्र कपाल ॥
सौंधे भीगो गात जारिकै, करि आये वन डेरी ।
घर आये ते भूलि गये सब, धनि माया हरि तेरी ॥
नागरिदास बिसारिए नाही, यह गति अति असुहाती ।
काल-व्याल कौ कष्ट-निवारन, भजि हरि जनम सँगाती ॥

× × ×

जमुना तट निसि चाँदनी, सुभग पुलिन में जाय ।
कब एकाकी होयहौं, मौन वदन उर चाय ॥
जुगुल रूप - आसव छक्यो, परे रीझ के पान ।
ऐसे संतन की कृपा, मोपै दंपति जान ॥
कुंडल झलक कपोल पर, राजति नाना भांति ।
कब इन नैननि देखिहौं, वदन चंद की कांति ॥

× × ×

मति मारै सर तानिकै, नाती इतो विचारि ।
तीन लोक सँग गाइये, बंसी अरु ब्रजनारि ॥
सब को मन ले हाथ में, पकरि नचाई हाथ ।
एक हाथ की मुरलिया, लगि पिय अधरनि साथ ॥
तो कारन गृह-सुख तजे, सह्यो जगत को थैर ।
हमसों तोसों मुरलिया, कौन जनम को बैर ॥
ऐ अभिमानी मुरलिया, करी सुहागिन स्याम ।
अरी चलाये सवनि पै, भले चाम के दाम ॥
कियौ न करिहै कौन नहिं, पिय सुहाग कौ राज ।
अरी बावरी बाँसुरी, मुख लागी मति गाज ॥

× × ×

इश्क उसी की झलक है, ज्यों सूरज की धूप ।
जहाँ इश्क तहँ आप है, कादिर नादिर रूप ॥
सीस काटि कै भू धरै, ऊपर राखै पाँव ।
इश्क चमन के बीच में, ऐसा हो तो आव ॥
अरे पियारे क्या करौं, जाहि रहौ है लाग ।
क्यो करि दिल बारूद में, छिपै इश्क की आग ॥

कोई पहुँचा वहाँ तक, आशिक नाम अनेक।
इश्क - चमन के बीच में, आया मजनू एक ॥

× × ×

वृन्दावन-कानन में भीर है विमानन की,
देव वधू देखि देखि भई है मनचला।
वंसी कल गान के वितान धुनि वायु बँध्यो,
रमा लोक लोभित ह्वै भूली उर अंचला।
द्वै द्वै बिच गोपिन के ललित त्रिभंग लाल,
नागरिया पदन्यास बजै छन छंछला।
रास-रंग-मंडल अखंड रस भेद हाय,
संग ह्यो भमत मानों मेघ चक्र चंचला ॥

संत बाबालाल

जाके अन्तर ब्रह्म प्रतीत। धरे मौन भावे गावे गीत ॥
निसदिन उन्मन रहित खुमार। शब्द सुरत जुड़ एको तार ॥
ना गृह गहे न बनको जाय। लाल दयालु सुख आतम पाय ॥

× × ×

आशा विषय विकार की, बाध्या जग संसार।
लख चौरासी फेर में, भरमत बारंबार ॥
जिह की आशा कछु नहीं, आतम राखै शून्य।
तिहकी नहिं कछु भर्मणा, लागै पाप न पुण्य ॥
देहा भीतर श्वास है, श्वासा भीतर जीव।
जीवे भीतर वासना, किस विध पाइये पीव ॥
जाके अन्तर वासना, बाहर धारे ध्यान।
तिह को गोविन्द ना मिले, अंत होत है हान ॥

तुरसीदास निरंजनी

सार सार मत स्रवण सुनि, सुनि राषै रिद माहिं।
ताहीको सुतिवौ सुफल, तुरसी तपति सिराहि ॥
तुरसी ब्रह्म भावना यहै, नाव कहावै सोय।
यह सुमिरन संतन कह्या, सार भूत संजोय ॥

तुरसी तेज पुंज के चरन वे, हाड़ चाम के नाहि।
वेद पुराननि वरनिए, रिदा कंवल के माहि॥
तुरसिदास तिहुँ लोक मैं, प्रितमा (प्रतिमा) ॐकार।
वाचक निर्गुन ब्रह्म कौ, वेदनि वरन्यो सार॥
गुरु गोविंद संतनि विषै, अभिन भाव उपजाय।
मंगलसूं वंदन करै, तौ पायन रहई काम॥
तुरसी बनै न दासकूं, आलस एक खगार।
हरिगुरु साधू सेव मैं, लगा रहै यकतार॥
बराबरी को भाव न जानै, गुन औगुन ताको कछू न आनै।
अपनो मित जानिवो राम, ताहि समरपै अपना धाम॥
तुरसी तन मन आतमा, करहु समरपन राम।
जाकी ताहि दे उरन होहु, छाड़िहु सकल सकाम॥
तुरसी यस साधन भगति, तरलौं सींची सोय।
तिन प्रेमा फल पाइआ, प्रेम मुक्ति फल जोय॥
वहरा गुभि वानी सुनै, सुरता सुनै न कोय।
तुरसी सो बानी अवर्न, मुख विन उपजै सोय॥
विन पग उठि तरवर चढ़ै, सपगे चढ्या न जाय।
तुरसी जोती जगमगै, अंधे कूं दरसाय॥
मूरति में अमूरति वसै, अमल आतमा राम।
तुरसी भ्रम विसरायकै, ताही कौ लै नाम॥
जनम नीच कहिये नहीं, जौ करनी उत्तम होय।
तुरसी नीच करम करै, नीच कहावै सोय॥
तुरसी त्रिभुवन नाथ कौ, सुहत सुभाव जु एह।
जेनि केनि ज्यूं भज्यौ जिनि, तैंसेहि उधरे तेह॥

रज्जबजी

औधू अकल अनूप अकेला।
महापुरुष माहैं अरु बाहर, माया मधि न मेला॥
सब गुन रहित रमे घट भीतरि, नादविंद मे न्यारा।
परम पवित्र परमगति खेलै, पूरण ब्रह्म पियारा॥
अंजन माहि निरंजन निर्मल, गुण अतीत गुण माहीं।
सदा समीप सकल बिधि समरथ, मिले सुमिलि नहि जाहीं॥

सर्वंगी समसरि सव ठाहर, काहू लिपित न होई।
जन रज्जन जगपति की लीला, बूझै विरला कोई॥

× × ×

सतगुरु सो जो चाहि विन, चेला विन कीया।
यूं परि दोष न दीजिये, मिलि अमृतरस पीया॥
ज्यूं ससिकै सरधा नहीं, कोइ कमल विगासै।
मुदित कुमोदिनी आपसों, वांधी उसपासै॥
ज्यूं दीपक कै दिल नहीं, को पड़ै पतंगा।
तन मन होमै आपसों, मोड़ै नहिं अंगा॥
कमल कोष आपै खुलै, मन मधुकर नाहीं।
भँवर भुलाना आपसों, वींधा यूं माहीं॥
ज्यूं चंदन चाहै नहीं, कोइ विषधर आवै।
जन रज्जव अहि आवसों, सो सोधिर पावै॥

× × ×

मन की प्यास प्रचंड न जाई।
माया वहुत वहुत विधि विलसै, तृप्ति नहीं निरताई॥
ज्यूँ जलधार असंख्य अवनि थल, परत न सो ठहराई।
तैसैं यहु मन भरया भूख सों, देखि परखि सुधि पाई॥
असन वसन वहु होमि अगनि सुख, नहिं संतोष मिलाई।
ऐसी विधि या मन की क्षुधा है, बुझती नाहिं बुझाई॥
भूख पियास संग ले सूता, सो सपने न अघाई।
इहै सुभाव रहै मन माहैं, तृष्णा तरुन वधाई॥
मन माया सों कदे न धापै, सतगुरु साखि वताई।
जन रज्जव याकी यहु औषधि, राम भजन करि भाई॥

× × ×

गुरु प्रसाद अगम गति पावै, पलटै जीव व्रह्म ह्वै जावै।
हरि भृंगी गुरु डंक समान, मारत तन में भयेजु प्राण।
चंदन राम गुरू गति वास, भेदै भेद नहिं वना दास।
व्रह्म सूर गुरु किरण प्रकाश, रज्जव जीव जल परसि अकास।

× × ×

संतो मन मोहन मिलि नावै।
[illegible]नै बघूला आंधी मांहीं, निकसि न भरण पावै॥

ज्यूं वृक्ष बीज परसि वपु छहनो, वसुधा मांहिं समावै ।
उदै अंकूर कौन विधि ताको, कैसे अंग दिखावै ।
स्वाति बूंद जो सीप समानी, सो फिरि गगन न आवै ।
अलि चलि कमल केतको, वीधै, अन्य पहुप नहिं धावै ।
अम्मलवेत सुई जो पैठी, सो वागि न सिवावै ।
रज्जव रहै रामसौं मन यूं, समरथ ठौर सुभावै ॥

× × ×

संतो मगन भया मन मेरा ।
अहनिशि सदा एकरस लागा, दिया दरीवै डेरा ।
कुल मर्याद मेड सब भारी, वैठा भाठी नेरा ।
जाति पांति कछु समझौं नाहीं, किसकूँ करैं परेरा ।
रसकी प्यास आस नहिं औरा, इहि मन किया वसेरा ।
ल्याव ल्याव याही लय लागी, पीवैं फूल घनेरा ।
सो रस मांग्या मिलै न काहू, सिरसाटै वहुतेरा ।
जन रज्जव तन मन दै लीया, होय धणी का चेरा ॥

× × ×

ऐसो गुरु संसार यह, सुण समझि विचारा ।
जे चाहै उपदेश को, तो पूछ पसारा ॥
चौरासी लख जीव का, लछिन लै मांही ।
माया मिली मरदिं गये, पर मेले नांही ॥
अवल मता उर लीजिये, गिरि तरवर ताकीं ।
जहँ रोपे तहँ रहि गये, सुन सतगुर साखी ॥
चंद सूर पाणी पवन, धरणी आकसा ।
रज्जब समिता पूछले, षट् दर्शन पासा ॥

× × ×

जन रज्जव गुरु की दया, दृष्टि परापति होय ।
परगट ।गुपत पिछानिये, जिसहि न दीखै कोय ॥
माया पानी दूध मन, मिलै सु मुहकम वंधि ।
जन रज्जब वलि हंस गुरु, सोधि लही सो संधि ॥
घटा गुरू आशोज की, स्वाति बूंद सत वैन ।
सीप सुरति सरधा सहित, तहँ मुकता मन ऐन ॥
जन रज्जब गुरु ज्ञान जल, सींचे सिख वनराय ।
लघु दीरघ अरु स्वादविध, है अंकूर स्वभाव ॥

सेवक कुंभ कुँभार गुरु, घड़ि घड़ि काढ़ै खोट।
रज्जब मांहि सहाय करि, तब बाहिर दे चोट॥
चंद सूर पाणी पवन, धरती अरु आकास।
ये सांई के कहे में, त्यूं रज्जब गुरुदास॥

× × ×

तनमन ओले ज्यूं गलहिं, विरह सूर की ताप।
रज्जब निपजै देखतूं, यों आपा गलि आप॥
घट दीपक बाती पवन, ज्ञान जोति सु उजास।
रज्जब सींचे तेल लै, प्रभुता पुष्टि प्रकास॥

× × ×

दरपन सब देखिये, गहिवेकूँ कछु नाहिं।
त्यूं रज्जब साधू जुदे, माया काया मांहि॥
साधू सदनि पधारतै, सकल होहिं कल्यान।
रज्जब अघ उडुगन दुरहि, पुनि प्रगटे ज्यों भान॥
सृष्टि सहित सांई लिया, साधू ने उर माहिं।
उभै सामने दास दिलि, तौ सेवक सम कोउ नाहिं॥

× × ×

नान्हौ सौ नान्हें हुए, बारिकहूँ बारीक।
सो रज्जब रामहिं मिले, जो चाले लघु लीक॥

× × ×

रज्जब अज्जब राम है, कहे सुने में नाहिं।
यहु अशुद्ध अंतःकरण, वह देखै दिल माहिं॥

× × ×

रज्जब आया चूकता, सदा चूकही जाहिं।
पै प्रभु तुम चूकहु सु क्यों, मुझहि उधारो नाहिं॥
नदिया नर मैले वहैं, भरि जोवन मैमंत।
रज्जब रज देखै नहीं, ईसो उदधि अनंत॥

× × ×

पल पल अंतर होत है, पगि पगि पडिये दूरि।
वचन वचन बीचै पड़ै, रज्जब कहाँ हजूरि॥
रज्जब की अरदास यह, और कहैं कछु नाहिं।
मो मन लीजै हेरि हरि, मिलै न माया माहिं॥

× × ×

अमिल मिल्या सब ठौर है, अकल सकल सब मांहिं।
रज्जब अज्जब अगह गति, काहू न्यारा नाहिं॥
प्यंड प्राण दोन्यूं तपहिं, जथा कड़ाही तेल।
रज्जब हरि शशि ज्यूं रहै, अगनि मध्य नहि गेल॥
सब घट घटा समानि है, ब्रह्म बिज्जुली माहिं।
रज्जब चिमकै कौन में, सो समुझै कोइ नाहिं॥

× × ×

अंतरि लांघे लोक सब, अंतरि औघट घाट।
अंतरजामी कूं मिलै, जन रज्जब उर वाट॥
रज्जब बूंद समंद की, कित सरकै कहँ जाय।
साभा सकल समंद सो, त्यूं आतम राम समाय॥

× × ×

जब लग जीव जाण्या कहै, तब लग कछू न जाण।
जब रज्जब जाण्या तबै, जाणिर भये अजाण॥
आतम जे कछु उच्चरै, सब अपणां उनमान।
रज्जब अज्जब अकल गति, सो किनहूँ नहिं जान॥
माया माहैं ब्रह्म पाइये, ब्रह्म मध्यतैं माया।
फलै सु मनकी कामना, रज्जब भेद सु पाया॥

× × ×

पतिव्रता कै पीव बिनु, पुरुष न जनम्यां कोइ।
त्यूं रज्जब रामहिं रचै, तिनके दिल नहिं दोइ॥
बैकुन्ठहिं बींदे नहीं, सो बिपिया क्यूं लेहि।
रज्जब राते राम सौं, औरहि उर क्यूं देहि॥
सूरज देखे सकल दिशि, चलिवेकूँ दिशि येक।
त्यूं रज्जब ही राम सौं, यहु गति बरत बमेक॥
हरि दरिया में मीन मन, पीवै प्रेम अगाध।
महा मगन रस में रहै, जन रज्जब सो साध॥
प्रेम प्रीति हित नेह कूँ, रज्जब दुविधा नाहिं।
सेवक स्वामी एक है, आये इस घर मांहिं॥
जेहि रचना में शीश दे, सोई काम अडोल।
जन रज्जब जुगि जुगि रहै, सूरसती सत बोल॥

× × ×

एक शब्द माया मई, एक ब्रह्म उनहार।
रज्जब उभै पिछाणि उर, करहु बैन ब्यौहार॥
मुख फानूस रसन है वाती, वही बैन जोति तहँ राती।
काजर कपट उजास विचार, चतुर भाँति दीपक ब्यौहार।
साच माहिं सतयुग बसै, कलियुग कपट मंझार।
मनसा वाचा कर्मना, रज्जब कही विचार॥

× × ×

जलचर जाणैं जलचरा, शशि देख्या जलमांहि।
तैसे रज्जब साधु गति, मूरख समझै नाहि॥

× × ×

मिनखा देही दिन उदै, जन रज्जब भजि तात।
चौरासी लखि जीव की, देही दीरघ रात॥
जैसे मन माया मिलैं, जीव ब्रह्म यूं मेलि।
रज्जब बहुरि न पाइये, यहु औसर यूं खेलि॥
दशों दिशा मन फेरि करि, जहाँ उठै तहाँ राखि।
जन रज्जब जगपति मिलै, सतगुरु साधू साखि॥
जैसे छाया कूप की, फिरि घिरि निकसै नाहिं।
जन रज्जन यूं राखिये, मन मनसा हरि माहि॥
साध सबूरी स्वान की, लीजै करि सु विवेक।
वे घर बैठा एक के, तू घर घर फिरहि अनेक॥
साबुण सुमिरण जल सतसंग, सुकृत कृत करि निर्मल अंग॥
रज्जब रज उतरै इहि रूप, आतम अंबर होइ अनूप॥

× × ×

शून्य सजीवनि उरि अमर, रसना रहते माहिं।
जन रज्जब आख्यूं अखिल, प्राणी मरै सु नाहि॥
अडग सुरति आठों पहर, अस्थिर संगि अडोल।
सो रज्जब रहसी सदा, साखी साधू बोल॥
नर निर्भय हरि नाम में, यहु गढ़ अगम अगाध।
रज्जब रिपु लागै नहीं, सदा सुखी तहाँ साध॥
पातशाह पहरै भया, तब देशहु डर नाहिं।
रज्जब चोर कहा करै, जै राजा चेतनि माहि॥

× × ×

रजब जीव ब्रह्म अंतर इता, जिता जिता अज्ञान ।
है नाहीं निर्णय भया, परदे का परवान ॥

× × ×

कीडी कण अवनी अहि मांथै, वल उनमान उठावहि बोझ ।
त्योंही भाव भगति भगता जन, जन रजब पाया निज सोझ ॥
काष्ठ लोह पाखान को, अगनि उजागर एक ।
त्यूं रजब रामहि भजै, सो नहिं भिन्न बिवेक ॥
नारायण अरु नगर कूँ, रजब पंथ अनेक ।
कोई आओ कहीं दिशि, आगे अस्थल एक ॥

× × ×

नर निरवैरी होत ही, सब जग वाका दास ।
रजब दुबिधा दूर गई, उर आये इकलास ॥
औगुण ढाके और के, अपने औगुण नाहिं ।
रजब अजब आतमा, निरवैरी जगमाहिं ॥

× × ×

साईं सेवै सबनि कूँ, साईं को कोइ नाहिं ।
मनसा बाचा कर्मना, मैं देख्या मनमाहिं ॥

× × ×

जन रजब गढ़ ज्ञान कै, दीसै द्वै दरबार ।
एकै सुमिरत संचरै, एक पुण्य व्यवहार ॥
औपध बिन पथ्य का करे, पथ्य बिन औपधि वादि ।
यूँ सुमिरण सुकृत अमिल, उफै न पावहिं दादि ॥
शील रहै सुमिरण गहै, सत्य संतोषण नेह ।
रजब प्रत्यक्ष रामजी, प्रकट भये तेहि देह ॥

× × ×

स्वामी सेवक होरह्या, यहि सारे संसार ।
रे रज्जबै विश्वास गहि, मूरख हिया न हार ॥
जै हिरदै विश्वास है, तौ हरि हिरदा माहि ।
जन रज्जब विश्वास बिन, बाहरि भीतरि नाहिं ॥

× × ×

पसरथूं पगपग मार है, सिमट्यूं सों नहिं कोय ।
जन रज्जब दृष्टांत कूँ, मन कच्छप दिशि जोय ॥

संकट मधि संतोष है, विपति बीच विश्वास।
दुख विन सुख लहिये नहीं, समझि सनेही दास॥

× × ×

मैं आये माया भई, मैं नाहीं तब नाहिं।
रज्जब मुकता मैं विन, बंधन मैं ही माहिं॥
अपना पड़दा आपही, मूरख समझै नाहिं।
रज्जब रामहि क्यूं मिले, यहु अंतर इस मांहि॥

× × ×

कहे सुणे कछु है नहीं, जै कछु किया न जाय।
रज्जब करणी सत्य है, नर देखो निरताय॥
करणी कठिन सु बंदगी, कहणी सब आसान।
जन रज्जब रहणी विना, कहाँ मिले रहिमान॥
तन मन आतम रामसूं, ये जोड़े नहिं जाहिं।
तौ रज्जब क्या पाइये, शब्दों जोड़े माहिं॥

× × ×

ज्यूं सुन्दरि सर न्हावतां, अभरण धरै उतारि।
त्यूं रज्जब रमि राम जल, स्वांग शरीरहि डारि॥
श्रृंगार सहित अथवा रहित, पति परसे सुत होय।
रज्जब भामिनि भेषवल, फल पावै नहिं कोय॥

× × ×

साधू सीप सरोसगति, सकति सलिल में वास।
प्यंड पुष्ट है और दिशि, प्राण और दिशि आस॥

× × ×

सकल पसारा शब्द का, शब्द सकल घट माहिं।
रज्जब रचना राम की, शब्द सुन्यारी नाहिं॥
षट दर्शन खालिक खलक, सत्य शब्द के माहिं।
जन रज्जब श्रीपति सहित, वाहरि दीसै नाहिं॥
साधु शब्द डूंगर भये, भाव गुपत विच धात।
रज्जब टांकी ज्ञान बिन, कोई तहाँ न जात॥

× × ×

बीज रूप कछु और था, वृक्ष रूप भया और।
त्यों प्राकृतें संस्कृत, रज्जब समझा व्यौर॥

वेद सुवाणीं कूप जल, दुखसूं प्रापति होय।
शब्द साखी सरवर सलिल, सुख पीवै सब कोय॥

× × ×

मन हस्ती मैला भया, आप वाहि सिर धूरि।
रज्जब रज क्यूँ ऊतरै, हरि सागर जल दूरि॥
जब मनकूँ माया मिली, तन मन अन्धा होय।
रज्जब माया चलि गई, सब कछु देखै सोय॥
यहु मन मृतक देखि करि, धीजि न कीजै नेह।
रज्जब जीवै पलक में, ज्यूं मींडक जल मेह॥
तन में मन चंचल सदा, ज्यूं मोती मधि थाल।
जन रज्जब क्यूं राखिये, यहु अन्तर गति साल॥
यहु मन भांड भंडार में, राखै रंग अनेक।
रज्जब काढै समै सिरि, जुदी जुदी रंग रेख॥
थकित होत पाका सुमन, ज्यूं कण हांडी माहिं।
काचा कूदे ऊछलै, निहचल बैठे नाहिं॥

× × ×

रज्जब मन में मोज उठि, मन की काया होय।
यूं शरीर पल पल धरै, बूझै विरला कोय॥
काया में काया धरै, मन सूक्षम अस्थूल।
रज्जब यहु जामण मरण, चौरासी का मूल॥
चौरासी जामण मरण, मनसु मनोरथ होय।
बीज बिना ऊगै नहीं, जानत है सब कोय॥

× × ×

ब्रह्मंड पिंड गति एक है, काम लहरि तप होय।
रज्जब नख सख बलि उठै, वरसण लागै सोय॥
रज्जब जगि जोड़े जड़े, चौरासी लख जंत।
एकाएकी एकसूं, सो कोइ बिरला संत॥
मदन महावत देह द्विपि, गृह सागर ले जाय।
तहाँ ग्राह गृहिणी ग्रहै, कौण छुड़ावै आय॥
पीसण कोई पेट सम, अरि न उदर सौं और।
चौरासी चेरे भये, चाहि चून की ठौर॥
पाँचू इन्द्री पाँडु हैं, देह द्रौपदी जान।
ये रज्जब तोऊं धरैं, जे गलैं हिमालय शान॥

× × ×

निहकामी सेवा करै, ज्यूं धरती आकास।
चंद सूर पाणी पवन, त्यूं रज्जब निजदास॥

× × ×

पाप पुण्य का मूल है, तामें फेर न सार।
धर्म कर्म करि ऊपजै, रज्जब समझि विचार॥
जे जड़ बैठे जिमी में, अंकुर जाय अकास।
त्यूं पाप पुण्य का मूल है, सुनहु विवेकी दास॥

× × ×

रामनांव निज नाव गति, खेवट ज्ञान विचार।
जन रज्जब दोन्यू मिलै, तबै पहुँचै पार॥

× × ×

रज्जब देखो मीन सुत, तिरन सिखावै कौन।
ऐसे उपजण आपसों, गहै ज्ञान मग गौन॥

× × ×

बेहद भजि बेहद मतै, हदका हेत उठाय।
रज्जब रमिये रामसों, अतिगति लावै भाय॥
मन माया धापै नही, क्षुधा जो बँधती जाय।
यूंही रज्जब रामकूं, भजिये लावै भाय॥

× × ×

धीरै धर्मसु ऊपजै, धीरैं ज्ञान विचार।
धीरै बंधन सब खुलैं, धीरैं हरि दीदार॥

सुंदरदास (छोटे)

ज्ञान तहाँ जहाँ द्वंद्व न कोई।
वाद विवाद नहीं काहू सौं, गरक ज्ञान मैं ज्ञानी सोई।
भेदाभेद दृष्टि नहि जाकै, हर्ष शोक उपजै नहिं दोई।
समता भाव भयौ उर अंतर, सार लियौ सब ग्रंथ बिलोई।
स्वर्ग नरक संशय कछु नाहीं, मन की सकल वासना धोई।
वाही कै तुम अनुभव जानौ, सुन्दर उहै ब्रह्ममय होई॥

× × ×

मुक्ति तौ धोपै की नीसानी ।
सो कहहूँ नहिं ठौर ठिकाना, जहाँ मुक्ति ठहरानी ॥
को कहै मुक्ति व्योम के ऊपर, को पाताल के मांही ।
को कहै मुक्ति रहै पृथवी पर, ढूंढ़ै तौ कहुँ नाही ॥
बचन विचार न कीया किनहूँ, सुनि सुनि कै उठि धाये ।
गोदंडा ज्यों मारग चाले, आगे पोज बिलाये ॥
जीवत कष्ट करै बहुतेरे, मुये मुक्ति कहँ जाई ।
धोपैही धोपै सब भूले, आगे ऊवा बाई ॥
निज स्वरूप कौं जानि अखंडित, ज्यौं का त्यौंही रहिये ।
सुन्दर कछू अहै नहिं त्यागै, वहै मुक्ति पद कहिये ॥

× × ×

देषौ भाई ब्रह्माकाश समान ।
परब्रह्म चैतन्य व्योम जड़, यह विशेपता जान ॥
दोऊ व्यापक अकल अपरिमिति, दोऊ सदा अखंड ।
दोऊ लिपैं छिपैं कहुँ नाही, पूरन सब ब्रह्मण्ड ॥
ब्रह्म माहिं यह जगत देपियत, व्योम माहिं घन यौंही ।
जगत अभ्र उपजै अरु विनसै, वै हैं ज्यौं के त्यौंही ॥
दोऊ अच्छय अरु अविनाशी, दृष्टि मुष्टि नहिं आवैं ।
दोऊ नित्य निरंतर कहिये, यह उपमान बतावैं ॥
यह तौ येक दिपाई है रुप, भ्रम मति भूलहु कोई ।
सुन्दर कंचन तुलै लोह संग, तौ कहा सरभरि होई ॥

× × ×

प्रीति सहित जे हरि भजैं, तब हरि होहि प्रसन्न ।
सुन्दर स्वाद न प्रीति विन, भूष विना ज्यौं अन्न ॥
जौ यह उसक ह्वै रहै, तौ वह इसका होय ।
सुन्दर बातौं ना मिले, जब लग आप न षोय ॥
अपणा सारा कछु नही, डोरी हरिकैं हाथ ।
सुन्दर डोलै बादरा, बाजीगर कै साथ ॥
सुन्दर बंधै देह सौं, तौ यह देह निषिद्धि ।
जौ याकी ममता तजै, तौ याही मै सिद्धि ॥
पाप पुण्य यह मै कियौ, स्वर्ग नरक हूँ जाउँ ।
सुन्दर सब कछु मानिले, ताही तें मन नाउँ ॥
जब मन देपै जगत कौ, जगत रूप ह्वै जाइ ।
सुन्दर देषै ब्रह्म कौं, तब मन ब्रह्म अवाइ ॥

उहै ब्रह्म गुरु संत उह, वस्तु विराजत येक।
वचन विलास विभाग श्रम, वन्दन भाव विवेक॥
तमगुण रजगुण सत्वगुण, तिनकौ उचित शरीर।
नित्य मुक्त यह आतमा, भ्रमते मानत सीर॥
तीन गुननि की वृत्ति मंहि, है थिर चंचल अंग।
ज्यौं प्रतिविंबहि देषिये, हालत जल के संग॥
शुद्ध हृदय जाकौ भयौ, उहै कृतारथ जान।
सोई जीवन मुक्त है, सुन्दर कहत वषान॥

× × ×

ज्यौं कपरा दरजी गहि ब्यौंतत, काष्ठहिकौं वढ़ई कसि आनैं।
कंचनकौं जु सुनार कसै पुनि, लोहकौ घाट लुहारहि जानैं।
पाहन कौं कसिलेत सिलावट, पात्र कुम्हार कै हाथ निपानैं।
तैसैहिं शिष्य कसै गुरुदेव जु, सुन्दरदास तवै मन मानैं॥

× × ×

तूं ठगिकै धन और कौ ल्यावत, तेरेउ तौ घर औरइ फोरै।
आगि लगै सबहीं जरि जाइ सु, तूं दमरी दमरी करि जोरै।
हाकिम कौ डर नाहिंन सूझत, सुन्दर एकहि वार निचोरै।
तूं षरचै नहिं आपु न षाइ सु, तेरीहि चातुरी तोहि लै बोरै॥

× × ×

जौ मन नारिकी वोर निहारत, तौ मन होत है ताहिकै रूपा।
जौ मन काहूसौ क्रोध करै जब, क्रोधमई होइ जात तद्रूपा।
जौ मन मायाहि माया रटै नित, तौ मन बूड़त माया के कूपा।
सुन्दर जौ मन ब्रह्म विचारत, तौ मन होत है ब्रह्म स्वरूपा॥

× × ×

जो उपजै विनसै गुन धारत, सो यह जानहु अंजन माया।
आवै न जाइ मरै नहिं जीवत, अच्युत एक निरंजन राया।
ज्यौं तरु तत्व रहै रस एकहि, आवत जात फिरै यह छाया।
सो परब्रह्म सदा सिर ऊपर, सुन्दर ता प्रभुसौं मन लाया॥

× × ×

जा घट की उनहार है जैसीहि, ता घट चेतनि तैसोहि दीसै।
हाथी की देह मैं हाथी सौ मानत, चीटी की देह मैं चीटी की रीसै।

सिंघ की देह मैं सिंघ सौ मानत, कीस की देह मैं मानत कीसै ।
जैसी उपाधि भई जहाँ सुन्दर, तैसोहि होइ रह्यो नखसीसै ।।

× × ×

एकहि कूप के नीर तैं सींचत, ईख्न अफीमहि अंब अनारा ।
होत उहै जल स्वाद अनेकनि, मिष्ट कटूक पटा अरु षारा ।
त्यौंहि उपाधि संयोग तैं आतम, दीसत आहि मिल्यौ सौ बिकारा ।
काढ़ि लिये जु विचार विवस्वत, सुन्दर शुद्ध स्वरूप है न्यारा ।।

× × ×

ज्यौं कोउ कूपमैं झांकि अलापत, वैसीहि भाँति सुकूप अलापै ।
ज्यौ जल हालत है लगि पौन, कहै भ्रमतैं प्रतिबिंबहि कापै ।
देहके प्रानके जे मनके कृत, मानत है सब मोहि कौं व्यापै ।
सुन्दर पेच पर्‌यौ अतिसै करि, भूलि गयौ भ्रमतैं भ्रमि आपै ।।

× × ×

ज्यौं नर पावक लोह तपावत, पावक लोह मिले सु दिपांही ।
चोट अनेक परै घनकी सिर, लोह वधै कछु पावक नांही ।
पावक लीन भयौ अपनै घर, शीतल लोह भयौ तब तांही ।
त्यौं यह आतम देह निरंतर, सुन्दर भिन्न रहै मिलि मांही ।।

× × ×

जासौं कहूँ सबमैं वह एक तौ, सो कहै कैसौ है आंपि दिपइये ।
जौ कहूँ रूप न देप तिसै कछु, तौ सब झूठ के माने कहइये ।
जौ कहूँ सुन्दर नैननिं मांझि तौ, नैनहूँ बैन गये पुनि हइये ।
क्या कहिये, कहते न बनै कछु, जो कहिये, कहतें ही लजइये ।।

× × ×

होत विनोद जु तौ अभिअंतर, सो सुख आपु मैं आपुही पइये ।
वाहिर कौं उपायो पुनि आवत, कंठते सुन्दर फेरि पठइये ।
स्वाद निवेरैं निवेर्‌यो न जात, मनौं गुर गूंगेहि ज्यौं नित पइये ।
क्या कहिये कहते न बनैं कछु, जो कहिये कहतेहिं लजइये ।।

× × ×

एक कहूँ तौ अनेक सौ दीसत, एक अनेक नहीं कछु ऐसो ।
आदि कहूँ तिहि अंतहू आवत, आदि न अंत न मध्य सु कैसो ।
गोपि कहूँ तौ अगोपि कहा यह, गोपि अगोपि न, ऊभौ न वैसो ।
जोइ कहूँ सोइ है नहिं सुन्दर, है तौ सही परि जैसे कौ तैसो ।।

× × ×

बैठे तो बैठे चले तौ चले पुनि, पीछे तौ पीछेहि आगे तौ आगे।
बौले तो बोले न बोले तो मौनहि, सोवैं तौ सोवैं अरु जागे तौ जागे।
पाइ तौ पाइ नहीं तौ नहीं जु, ग्रहे तौ ग्रहै अरु त्यागे तौ त्यागे
सुन्दर ज्ञानी की ऐसी दसा यह, जानैं नहीं कछु राग विरागे।

× × ×

द्वंद्व विना विचरै वसुधा परि, जा घट आतम ज्ञान अपारौ।
काम न क्रोध न लोभ न मोह, न राग न द्वेष न म्हारौ न थारौ।
योग न भोग न त्याग न संग्रह, देह दशा न ढक्यौ न उघारौ।
सुन्दर कोउ न जानि सकै यह, गोकुल गाँव कौ पैंडौ हि न्यारौ॥

× × ×

एकहि ब्रह्म रह्यौ भरिपूरि तौ, दूसर कौंन वतावनि हारौ
जो कोउ जीव करै जु प्रमांन तौ, जीव कहा कछु ब्रह्म तैं न्यारौ।
जो कहै जीव भयौ जगदीसतैं, तो रवि मांहि कहाँ कौ अंधारौ।
सुन्दर मौन गही यह जानिकै, कौंनहूँ भाँति न होत निधारौ॥

× × ×

मेरौ देह मेरौ गेह मेरौ परिवार सब,
मेरौ धन माल मैं तौं बहुविधि भारौ हौं।
मेरौ सब सेवक हुकम कोउ मेटे नाहिं,
मेरी जुवतीकौ मैं तौ अधिक पयारौ हौं।
मेरौ वंश ऊंचौ मेरे वाप दादा ऐसै भये,
करत बड़ाई मैं तौ जगत उज्यारौ हौं
सुन्दर कहत मेरौ मेरौ करि जानै सठ,
ऐसी नहीं जाने मैं तौ काल ही कौ चेरौ हौं।

× × ×

जा शरीर मांहि तूं अनेक सुख मानि रह्यो,
ताही तूं विचारि यामैं कौन वात भली है
मेद मज्जा मांस रग रगनि मांहि रकत,
पेट हू पिटारी सी मैं ठौर ठौर मली है
हाड़निसौं सुख भरयौ हाड़ ही कै नैन नांक,
हाथ पाँव सोऊ सब हाड़ ही की नली है
सुन्दर कहत याहि देषि जिनि भूलै कोइ,
भीतरि भंगार भरि ऊपर तैं कली है॥

× × ×

जैसैं आरसी कौ मैल काटत सिकल करि,
मुख मैं न फेर कोउ वहै वाकौ पोत है।
जैसे वैद नैन मैं सलाका मेलि शुद्ध करै,
तटल गये ते तहाँ ज्यौं की त्यौंही जोत है।
जैसैं वायु बादर वखेरि कैं उड़ाइ देत,
रवि तौ अकाश माहि सदाई उदोत है।
सुन्दर कहत भ्रम छिन मैं विलाइ जात,
'साधु ही के संगतें स्वरूप ज्ञान होत है' ॥

× × ×

जीवत ही देवलोक जीवत ही इन्द्रलोक,
जीवत ही जन तप सत्यलोक आयौ है।
जीवत ही निधि लोक जीवत ही शिवलोक,
जीवत वैकुण्ठ लोक जो अकुंड गायौ है।
जीवत ही मोक्ष शिला जीवत ही भिस्ति माहि,
जीवत ही निकट परमपद पायौ है।
आतम कौं अनुभव जिनि कौं जीवत भयौ,
सुन्दर कहत तिनि संसय मिटायौ है॥

× × ×

कामी है न जती है न सूम है न सती है न,
राजा है न रंक है न तन है न मन है।
सोवै है न जागै है न पीछै है न आगै है न,
ग्रहै है न त्यागै है न घर है न बन है।
थिर है न डोलै है न मौन है न बोलै है न,
बंधै है न खोलै है न स्वामी है न जन है।
वैसौ कोऊ होइ जब वाकौ गति जानै तब,
सुन्दर कहत ज्ञानी शुद्ध ज्ञानघन है॥

संत यारी साहब

विरहिनी मंदिर दियना वार।
बिन बाती बिन तेल जुगति सों, बिन दीपक उजियार।
प्रान पिया मेरे गृह आयो, रचि पचि सेज सँवार।

सुखमन सेज परमतत रहिया, पिय निर्गुन निरकार।
गावहु री मिलि आनंद मंगल, यारी मिलि के यार॥

× × ×

हमारे एक अलह पिय प्यारा है।
घट घट नूर मुहम्मद साहब, जाका सकल पसारा है।
चौदह तबक जाकी रुसनाई, झिलमिलि जोति सितारा है।
बे नमून बेचून अकेला, हिन्दु तुरुक से न्यारा है।
सोइ दरवेस दरस निज पायो, सोइ मुसलम सारा है।
आवै न जाय मरै नहिं जीवै, यारी यार हमारा है॥

× × ×

झिलमिल झिलमिल बरसै नूरा, नूर जहूर सदा भरपूरा॥
रुनझुन रुनझुन अनहद बाजै, भँवर गुंजार गगन चढ़ि गाजै॥
रिमझिम रिमझिम बरसै मोती, भयो प्रकाश निरंतर जोती॥
निरमल निरमल निरमल नामा, कह यारी तहँ लियो बिस्रामा॥

× × ×

जोगी जुगति जोग कमाव।
सुखमना पर बैठि आसन, सहज ध्यान लगाव।
दृष्टि समकरि सुन्न सोओ, आपा मेटि उड़ाव।
प्रगट जोति अकार अनुभव, सब्द सोहं गाव।
छोड़ि मठ को चलहु जोगी, बिना पर उड़ि जाव।
यारी कहै यह मत बिहंगम, अगम चढ़ि फल खाव॥

× × ×

उड़ु उड़ु रे बिहंगम चढ़ु अकास।
जहं नहि चंद सूर निस बासर, सदा अगमपुर अगम बास।
देखै उरध अगाध निरंतर, हरष सोक नहि जम कै त्रास।
कह यारी उँह बधिक फाँस नहिं, फल पायो जगमग प्रकास॥

× × ×

देखु बिचारि हिये अपने नर, देह धरो तो कहा बिगरो है।
मिट्टी को खेल खिलौना बनो, एक भाजन नाम अनंत धरो है।
नेक प्रतीत हिये नहिं आवत, मर्म भुलो नर अवर करो है।
भूषन ताहिं गँवाइ के देखु, यारी कंचक ऐनको ऐन खरो है॥

बाबा धरनीदास

प्रभुजी अब जनि मोहि बिसारो।
असरन-सरन अधम-जन-तारन, जुग जुग बिरद तिहारो।
जहँ जहँ जनम करम बसि पायो, तहँ अरुझे रस खारो।
पाँचहु के परपंच भुलानो, धरेउ न ध्यान अधारो।
अंधगर्भ दस मास निरंतर, नखसिख सुरति सँभारो।
मंजा मुत्र अग्नि मल कुम जहँ, सहजै तहँ प्रतिपारो।
दीजै दरस दयाल दया करि, ऐगुन गुन न बिचारो।
धरनी भजि आयो सरनागति, तजि लज्जा कुल गारो॥

× × ×

भइ कंत दरस बिनु बावरी।
मो तन व्यापे पीर प्रीतम की, मूरख जानै आवरी।
पसरि गयो तरु प्रेम साखा सखि, बिसरि गयो चित चावरी।
भोजन भवन सिंगार न भावै, कुल करतूति अभावरी।
खिन खिन उठि उठि पंथ निहारों, वार वार पछितांवरी।
नैनन अंजन नींद न लागै, लागै दिवस विभावरी।
देह दसा कछु कहत न आवै, जस जल ओछे नावरी।
धरनी धनी अजहुँ पिय पाओं, तो सहजै अनंद बधावरी॥

× × ×

अजहुँ मिलो मेरे प्रान पियारे।
दीन दयाल कृपाल कृपानिधि, करहु छिमा अपराध हमारे।
कल न परत अति बिकल सकल तन, नैन सकल जनु बहत पनारे।
माँस पचो अरु रक्त रहित भे, हाड़ दिनहुँ दिन होत उघारे।
नासा नैन स्रवन रसना रस, इंद्री स्वाद जुआ जनु हारे।
दिवस दसों दिसि पंथ निहारति, राति बिहात गनत जस तारे।
जो दुख सहत कहत न बनत मुख, अंतरगत के हौ जाननहारे।
धरनी जिन झलमलित दीप ज्यों, होत अंधार करो उजियारे॥

× × ×

मन तुम कसन करहु रजपूती।
गगन नगारा बाजु गहागहि, काहे रहो तुम सूती।
पाँच पचीस तीन दल ठाढो, इन सँग सेन बहूती।
अब तोहि घेरी मारन चाहत, जस पिंजरा महँ तूती।

पइहो राज समाज अमर पद, है रहु विमल विभूती।
धरनी दास विचारि कहतु है, दूसर नाहिं सपूती॥

× × ×

मैं निरगुनियाँ गुन नहिं जाना।
एक धनी के हाथ बिकाना॥
सोइ प्रभु पक्का मैं अति कच्चा।
मैं झूठा मेरा साहब सच्चा॥
मैं ओछा मेरा साहब पूरा।
मैं कायर मेरा साहब सूरा॥
मैं मूरख मेरा प्रभु ज्ञाता।
मैं किरपिन मेरा साहब दाता॥
धरनी मन मानो इक ठाउँ।
सो प्रभु जीवो मैं मरिजाउँ॥

× × ×

बहुत दिनन पिय बसल बिदेसा।
आजु सुनल निज श्रवन संदेसा॥
चित चितसरिया मैं लिहलों लिखाई।
हृदय कमल धइलों दियना लेसाई॥
प्रेम पलँग तहँ धइलों बिछाई।
नखसिख सहज सिंगार बनाई॥
मन हित अगुमन दिहल चलाई।
नयन धइल दोउ दुअरा बैसाई॥
धरनी धनि पलपल अकुलाई।
बिनु पिया जिवन अकारथ जाई॥

× × ×

हरिजन वा मद के मतवारे।
जो मद बिना काठि बिनु भाठी, बिनु अगिनिहि उदगारे।
बास अकास घराघर भीतर, बूंद झरै झलकारे।
चमकत चंद अनंद बढ़ो जिव, सब्द सघन निरुवारे।
बिनु कर धरे बिना मुख चाखे, बिनहि पियाले ढारे।
ताखन स्यार सिंह को पौरुष, जुत्थ गजंद बिडारे।
कोटि उपाय करे जो कोई, अमल न होत उतारे।
धरनी जो अलमस्त दिवाने, सोइ सिरताज हमारे॥

× × ×

सुमिरो हरि नामहि बौरे ।
चकहूँ चाहि चलै चित चंचल, मूलमता गहि निस्चल कौरे ।
पांचहु ते परिचै करु प्रानी, काहे के परत पचीस के भौरे ।
जौ लगि निरगुन पंथ न सूझै, काज कहा महि मंडल बौरे ।
सब्द अनाहद लखि नहिं आवै, चारो पन चलि ऐसहि गौरे ।
ज्यों तेली को बैल बेचारा, घरहिं में कोस पचासक भौरे ।
दया धरम नहि साधु की सेवा, काहे के सो जनमे घर चौरे ।
धरनीदास तासु बलिहारी, झूठ तज्यो जिन सांचहि धौरे ॥

संत बूला साहब

या विधि करहु आपुहिं पार ।
मीन जल की प्रीति जानै, देखु आपु बिचार ।
सीप रहत समुद्र मांही, गहत नांहिन बार ।
वाकी सुरत आकास लागी, स्वाती बुंद अधार ॥
चकोर चाँद सों दृष्टि लावै, अहार करत अँगार ।
दहत नाहिंन पान कीन्हैं, अधिक होत उजार ॥
कीट भृंग की रहनि जानो, जाति पांति गंवाय ।
बरन अवरन एक मिलि भे, निरंकार समाय ॥
दास बुल्ला आस निरखहिं, राम चरन अपार ।
देहु दरसन मुक्ति परसन, आवागवन निवार ॥

× × ×

भाई इक सांई जग न्यारा है ।
सो मुझमें मै वाही मांही, ज्यों जल मध्ये तारा है ।
वाके रूप-रेख काया नहिं, नहिं माया निस्तारा है ।
अगम अपार अमर अविनासी, सो संतन का प्यारा है ।
अनंत कला जाके लहरि उठतु है, परम तत्त निरकारा है ।
जन बुल्ला ब्रह्म ज्ञान बोलतु है, सतगुरु शब्द अधारा है ॥

× × ×

ओढ़ो चूनरी ततसार ।
अचल अमर अपार अँगिया, खाडे की ज्यो धार ।
नाहिं मारै मरै विनसै, ऐसो है ब्रह्मसार ।
उमगि सोहं अधर चढ़िया, बहुरि नहिं औतार ।

एका येकी होत अविगति, साधु यह व्योहार।
दास बूला मांडो बाजी, जानै क्या संसार॥

× × ×

प्रीति की रीति सों जीति मैदां लिया,
पवन के घोरा सों जोरा जाय किया है।
पाँच अरु तीन पच्चीस को वसि किया,
साहव को ध्यान धरि ज्ञान रस पिया है।
भूख औ प्यास नहिं आस औ वास नहि,
एक साहव सों ब्रह्म जा थिया है।
दास बूला कहै अगम गति तौ लहै,
तोरि कै कुफुर तब गगन गढ़ लिया है॥

× × ×

आंधरे ने देखो हाथी साथी सब भूलि गयो,
फूलो ब्रह्म जैसे रवि ससि सोहाई है।
सोई मूल सोई थूल सोई फूल फूलि रह्यो,
सोई जुगजुग देखो आपु रूप वोई है।
आदि मध्य अंत वोई नीके करि देखो जोई,
सोई त्रिभुवन नाथ बूझै गति कोई है।
गुरु गम होय बोले नेकु नाहीं चित डोलै,
जन बूला निज घर सहज समोई है॥

गुरु गोविन्दसिंह

प्रभुजी तोकह लाज हमारी।
नीलकंठ नरहरि नाराइण, नील वसन वनवारी।
परम पुरख परमेस्वर स्वामी, पावन पउन अहारी।
माधव महाजोति मध-मरदन, मान मुकंद मुरारी।
निर्विकार निरजुर निद्राविन, निर्विख नरक निवारी।
कृपा सिंधु कालत्रैदरसी, कुकृत - प्रसासन-कारी।
धनुर वान-धृत मान धराधर, अनिविकार असिधारी।
हौं मतिमंद चरन सरनागत, करन गहि लेहु उवारी॥

× × ×

कोऊ भयो मुंडिया संन्यासी, कोऊ जोगी भयो,
कोऊ ब्रह्मचारी, कोऊ जतियन मानबो।

हिन्दू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी,
मानस की जात सबै एकै पहचानबो।
करता करीम सोई राजक रहीम ओई,
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो।
एक ही की सेव सबही को गुरुदेव एक,
एक ही सरूप सबै, एकै जोत जानबो॥

× × ×

जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठे,
न्यारे न्यारे ह्वै कै फेरि आगमै मिलाहिंगे।
जैसे एक धूरते अनेक धूर धूरत हैं,
धूरके कनूका फेर धूरही समाहिंगे।
जैसे एक नदते तरंग कोट उपजत हैं,
पानके तरंग सब पानही कहाहिंगे।
तैसे विस्वरूप ते अभूत भूत प्रगट होइ,
ताही ते उपज सबै ताही मैं समाहिंगे॥

× × ×

दीनन की प्रतिपाल करै नित, संत उबार गनीमन गारै।
पच्छी पसू, नगनाग, नराधिप, सर्व सभै सबको प्रतिपारै।
पोषत है जलमें थलमें, पलमें, कलके नहिं कर्म बिचारै।
दीन दयाल दयानिधि दोषन देखत है पर देत न हारै॥

× × ×

काह भयो दोउ लोचन मूंदकै, बैठि रह्यो बकध्यान लगायो।
न्हात फिर्‌यो लिच सात समुंद्रन, लोक गयो परलोक गँवयो।
बासु कियो विखिआन सों बैठकै, ऐसे ही ऐस सुबैस बितायो।
साचु कहौं सुनि लेहु सबै, जिन प्रेम कियो तिनही प्रभु पायो॥

× × ×

धन्य जीओ तिह को जगमै, मुखते हरि चित्त में जुद्ध विचारै।
देह अनित्य न नित्य रहै जस नाव चढ़ै भवसागर तारै।
धीरज धाम बनाइ इहै तन, बुद्धि सुदीपक जिउँ उजियारै।
ज्ञानहि की बढ़ती मनु हाथ लै, कातरता कुतवार बुहारै॥

× × ×

आज्ञा भई अकाल की, तभी चलायो पंथ।
सब सिक्खन को हुकम है, गुरू मानियहु ग्रंथ॥
गुरू ग्रंथ जी मानियहु, प्रगट गुरों की देह।
जाका हिरदा शुद्ध है, खोज शब्द में लेह॥

संत बुल्लेशाह

टुक बूझ कौन छुप आया है ।
कइ नुकते में जो फेर पड़ा, तब ऐन गैन का नाम धरा ।
जब मुरसिद नुकता दूर कियो, बत ऐनो ऐन कहाया है ।
तुसीं इल्म किताबां पढ़देहो, केहे उलटे माने करदे हो ।
वे मूजब ऐवें लड़दे हो, केहा उलटा वेद पढ़ाया है ।
दुइ दूर करो कोइ सोर नही, हिन्दु तुरक कोइ होर नहीं ।
सब साधु लखो कोइ चोर नहीं, घट घट में आप समाया है ।
ना मै मुल्ला ना मै काजी, ना मैं सुन्नी ना मैं हाजी ।
बुल्लेशाह नाल. जाई बाली, अनहद सबद न जाया है ।।

× × ×

अब तूं जाग मुसाफिर प्यारे ।
रैन घटी लटके सब तारे ।
आवागमन सराई डेरे ।
साथ तयार मुसाफिर तेरे ।
अजे न सुनदा कूच नकारे ।
करले आज करन दी वेला ।
बहुरि न होसी आवन तेरा ।
साथ तेरा चल चल्ल पुकारे ।
आपो अपने लाहे दौड़ी ।
क्या सरधन क्या निरधन बौरी ।
लाहा नाम तू लेहु संभारे ।
बुल्ले सहुदी पैरी परिये ।
गफलत छोड़ हीला कुछ करिये ।
मिरग जतन बिन खेत उजारे ।।

संत गुलाल साहब

राम मोर पुंजिया राम मोर धना,
निस बासर लागल रहु मना ।
आठ पहर तहँ सुरति निहारी,
जस बालक पालै महतारी ।

धन सुत लछमी रह्यो लोभाय,
गर्व मूल सब चल्यो गँवाय।
बहुत जतन भेष रचो बनाय,
बिन हरि भजन इँदोरन पाय।
हिन्दू तुरुक सब गयल बहाय,
चौरासी में रहि लिपटाय।
कहै गुलाल सतगुरु बलिहारी,
जाति पाँति अब छुटल हमारी॥

× × ×

मन तुम कपट दूर अड़ाव।
भटक को तुम पंथ छोड़ो, सुरत सब्द समाव।
करत चाल कचाल चाल, मकर मेल सुभाव।
तीन तिरगुन तपत दिनकर, कैसहू बुझलाव।
अति अधीन मलीन माया, मोह में चितलाव।
अगम घर की खबरि नाहीं, मूढ़ तासच पाव।
सुन्न सिखर सरोज फूलो, वंक नालहि जाव।
कह गुलाल अतीत पूरन, आपु में घर पाव॥

× × ×

रसना राम नाम लव लाई।
अंतरगते प्रेम जो उपजै, सहज परमपद पाई।
सतगुरु बचन समीर थीर धरि, भावसो दंद लगाई।
ऊड़े हंस गगन चढ़ि धावै, फाटि जाय भ्रम काई।
जोग यज्ञ तप दान नेम व्रत, यह मोही नहीं आई।
संतन को चरनोदक लै लै, गिरा जूठ मैं पाई।
कहा कहौं कछु कहल न लागै, नाहक जग बौराई।
कहै गुलाल नाम नहिं जानत, खुझि है हमरी बलाई॥

× × ×

जो पै कोइ प्रेम गाहक होई।
त्याग करै जो मन कि कामना, सीस दान दे सोई।
और अमल की दर जो छोड़ै, आपु अपन गति जोई।
हरदम हाजिर प्रेम पियाला, पुलिक पुलिक रस लेई।
जीव पीव महँ पीव जीव महँ, बानी बोलत सोई।
सोई सभन महँ हम सबहन महँ, बूझत बिरला कोई।

वाकी गती कहा कोइ जानै, जो जिय साँचा होई।
कह गुलाल वे राम सामने, मत भूले नर लोई॥

× × ×

प्रभुजी बरषा प्रेम निहारो।
ऊठत बैठत छिन नहिं बीतत, याही रीत तुम्हारो।
समय होय भा असमय होवै, भरत न लागत वारो।
जैसे प्रीत किसान खेत सों, तैसो है जन प्यारो।
भक्त बछल है बान तिहारो, गुन औगुन न निहारो।
जहँ जहँ जांव नाम गुन गावत, जम को सोच निवारो।
सोवत जागत सरन धरम यह, पुलकित मनहिं विचारो।
कह गुलाल तुम ऐसो साहब, देखत नेरे न्यारो॥

× × ×

हे मन धोवहु तनकी मैली।
यह संसार नाहिं सूझत घट, खोजत निसु दिन गैली।
नहीं नाव नहिं केवट बेड़ा, फिरत फिरत दिन ऐली।
पाँच पचीस तीन घट भीतर, कठिन कलुख जिम मैली।
गुरु परताप साध की संगति, प्रान गगन चढि गैली।
कहैं गुलाल राम भयो मेला, जन्म सुफल तव कैली॥

× × ×

अवधू निर्मल ज्ञान विचारो।
ब्रह्म स्वरूप अखंडित पूरन, चौथे पद सो न्यारो॥
ना वह उपजै ना वह विनसै, ना भरमै चौरासी।
है सतगुरु सत पुरुष अकेला, अजर अमर अविनासी॥
ना वाके वाप नहीं वाके माता, वाके मोह माया।
ना वाके भोग जोग वाके नांही, ना कहीं जाय न आया॥
अद्भुत रूप अपार विराजै, सदा रहै भर पूरा।
कहैं गुलाल सोई जन जानै, जाहि मिलै गुरु पूरा॥

× × ×

संतो कठिन अपरवल नारी।
सब ही वरलहि भोग कियो है, अजहूँ कन्या क्वारी॥
जननी ह्वै के सब जग पाला, बहु विधि दूध पियाई।
सुन्दर रूप सरूप सलोना, जोय होइ जग खाई॥

मोह जाल सों सबहि, बझायो, जहँ तक हैं तनधारी।
काल सरूप प्रगट है नारी, इन कहँ चलहु विचारी ॥
ज्ञान ध्यान सब ही हरि लीन्हो, काहु न आपु सँभारी।
कहैं गुलाल कोऊ कोउ उबरै, सतगुरु की बलिहारी ॥

× × ×

आजु झरि बरखत बूंद सोहावन।
पिय कै रीति प्रीति छबि निरखत, पुलकि पुलकि मन भावन।
सुखमने सेज जे सुरति सँवारहि, झिलमिल झलक देखावन।
गरजत गगन अनंत सब्द धुनि, पिया पपीहा गावन।
उमग्यो सागर सलिल नीर भरो, चहुँदिसि लगत सोहावन।
उपज्यो सुख सनमुख तिरपित भयो, सुधिबुधि सब बिसरावन।
काम क्रोध मद लोभ छुट्यो सब, अपने साहब भावन।
कहै गुलाल जंजाल गयो तब, हरदम भादो सावन ॥

संत जगजीवन दास (सत्तनामी)

प्रभुजी का वसि अहै हमारी।
जब चाहत तब भजन करावत, चाहत देत बिसारी।
चाहत पल छिन छूटत नाहीं, बहुत होत हितकारी।
चाहत डोरि सूखि पल डारत, डारि देत संसारी।
कहँ लगि विनय सुनावौं तुमते, मैं तो अहौं अनारी।
जगजीवन दास पास रहै चरनन, कबहूँ करहु न न्यारी ॥

× × ×

प्रभुजी तुम जानत गति मेरी।
तुमते छिपा नहीं आहै कछु, कहा कहौं मैं टेरी।
जहँ जहँ गाढ़ पर्‍यो संतन कां, तहँ तहँ कीन्हो फेरी।
गाढ़ मिटाय तुरंतहि डार्‍यो, दीन्हो सुक्ख घनेरी।
जुग जुग होत ऐस चलि आवा, सो अब सांझ सवेरी।
दियो जनाय सोई तस जाने, वास मनहिं तेहि केरी।
कर औ सीस दियो चरनन महै, नहिं अब पाछे हेरी।
जगजीवन के सतगुर साहब, आदि अंत तेहि केही ॥

× × ×

तेरा नाम सुमिरि ना जाय।
नहीं बस कछु मोर आहै, करहुँ कौन उपाय।
जबहि चाहत हितू करिकै, लेत चरनन लाय।
बिसरि जब मन जात आहै, देत सब बिसराय।
अजब ख्याल अपार लीला, अंत काहु न पाय।
जीव जंत पतंग जगमहँ, काहु ना बिलगाय।
करौं बिनती जोरि दुहूँ कर, कहत अहौं सुनाय॥
जगजीवन गुरु चरन सरन, है तुम्हार कहाय॥

× × ×

सांई मैं नहिं आपुक जाना।
को मैं आहुँ कहाँ ते आयों, फिरत हौं कहाँ भुलाना।
काया कंचन लोक बनायो, तेहि का अंत न जाना।
बूझौं कहँ अस्थान कौन है, सर्व अंग ठहराना।
देखत हौं काहू नहिं न्यारा, समुझत आहौं शाना।
कौन जुक्ति जग बंध निकरिये, कैसे है मस्ताना।
मैं जानौं मन तुमहीं साहब, ताते मन बिलगाना।
तेहिका रूप अनूप अमूरति, गगन मंडल अस्थाना।
तेहिते सूरति फूटी तेहिमों, गुरू अलख करि माना।
चेला है कै करूँ बंदगी, सीस करहुँ कुरबाना।
तुमते मैं संतुष्टा है हौं, अहहु मूर्ति निर्बाना।
जगजीवन पर दया कीन्हो, तबते अब पहिचाना॥

× × ×

भाई रे कहा न मानै कोई।
जिहि समुझायकै राह बतावौं, मन परतीत न होई।
कपट रीति कै करहिं बंदगी, सुमति न व्यापै सोई।
भये नर हीन कुमारग परिकै, डारिन सर्वस खोई।
गे भरुहाय तनिक सुख पाये, मैं तैं रहे समोई।
फिर पछिताने कष्ट भये पर, रहे मनहिं मन रोई।
देखि परत नैनन से वैसे, कठिन जीव है वोई।
जगजीवन अंतर महँ सुमिरै, जस होई तस होई॥

× × ×

तुम्हरी गति कछु जानि न पायो।
जेइ जस बूझा तेइ तस सूझा, ते तैसइ गुन गायो।

करौं ढिठाई कहाँ विनय करि, मोहि जस रास बतायो।
जस मैं गहा लहा लै लागी, चरन सरन तब पायो।
भटकत रहेंउ अनेक जनम लहि, वह सुधि सो बिसरायो।
दाया कीन्ह दास करि जानेहु, बड़े भाग तें आयो।
दियो बताइ दिखाइ आपुकहँ, चरनन सीस नवायो।
जगजीवन कह आपन जानेहु, अघ कर्म भर्म मिटायो॥

× × ×

साधो रसनि रटनि मन सोई।
लागत लागत लागि गई जब, अन्त न पावै कोई।
कहत रकार मकारहि माते, मिलि रहे ताहि समोई।
मधुर मधुर ऊँचे को धायो, तहाँ अवर रस होई।
दुइ कै एक रूप करि बैठे, जोति झलमली होई।
तेहिकाँ नाम भयो सतगुरु का, लीह्यो नीर निकोई।
पाइ मंत्र गुरु सुखी भये तब, अमर भये हहिं वोई।
जगजीवन दुइ करतें चरन गहि, सीस नाइ रहे सोई॥

× × ×

ए सखि अब मैं काह करौं।
भूलि परिउँ मैं आइके नगरी, केहि बिधि धीर धरौं।
अंत नहीं यहि नगरक पावौं, केतो विचार करौं।
चहत जो अहौं मिलौं मैं पिय कहँ, भ्रम की गैल परौं।
हित मोर पाँच होत अनहितई, बहुतक खैंच करौं।
केतो प्रबोधि के बोध करौं मैं, ई कहै धरौं धरौं।
तीस पचीस सहेली मिलि संग, ई गहै कैसे बरौं।
पाँय पकरि कै बिनती करौ मैं, लै चलु गगन परौं।
निरत निरखि छवि मोहि कहौ अब, गहि रहुँ नाहिं टरौं।
जगजीवन सत दरस करौं सखि, काहेक भटक फिरौं॥

× × ×

यहि नगरी महँ परिउँ भुलाई।
का तकसीर भई धौं मोहिते, डारे मोर पिय सुधि बिसराई।
अब तो चेत भयो मोहि सजनी, ढुंढत फिरहुँ मैं गइउँ हिराई।
भसम लाय मैं भइउँ जोगनियाँ, अब उन बिनु मोहि कछु न सुहाई।
पाँच पचीस की कानि मोहि है, तातें रहौं मैं लाज लजाई।
सुरति सयानप अहै इहै मत, सब इक बसिकरि मिलि रहु जाई।

प्रेम नगर में दृग वया, नोखे प्रकटे आय।
दो मन को करि एक मन, भाव देन ठहराय॥
न्यारो पैंड़ो प्रेम कौ, सहसा धरौं न पाव।
सिर के पैंड़े भावते, चलौ जाय तौ जाव॥
अद्भुत गति यह प्रेम की, लखौ सनेही आइ।
जुरे कहूँ टूटे कहूँ, कहूँ गाँठ परि जाइ॥
अद्भुत बात सनेह की, सुनौ सनेही आइ।
जाकी सुध आवे हिए, सबही सुध बुध जाइ॥
कहनावत में यह सुनी, पोषत तनु को नेह।
नेह लगाये अब लगी, सूखत सिगरी देह॥
यह बूझन को नैन ये, लग लग कानन जात।
काहू के मुख तुम सुनो, पिय आवन की बात॥
लेहु न मजनू गोर ढिग, कोऊ लैला नाम।
दरदवंत को नेकु तौ, लेन देहु विसराम॥
चतुर चितेरे तुव सवी, लिखत न हिय ठहराय।
कलम छुवत कर आँगुरी, कटी कटाछन जाय॥

अलबेली अलि

लाल तेरे लोभी लोलुप नैन।
केहि रस छकनि छके हौ छबीले मानत नाहिन चैन।
नींद नैन घुरि घुरि आवत अति छोरि रही कछु नैन।
अलबेली अलि रस के रसिया कत बिसरत ये बैन॥

× × ×

वने नवल प्रिय प्यारी।
सरद नैन उँजियारी॥
सरद रैन सुख देन मैनमय जमुना तीर सुहायो।
सकल कला पूरन ससि सीतल महि मंडल पर आयो।
अतिसय सरस सुगन्ध मंद गति बहत पवन रुचिकारी।
नव नव रूप नवल तन जोबन बने नवल पिय प्यारी॥

× × ×

लीनो वृन्दावन बसि लाह्यो।
सेवा टहल महल को निसि दिन यह जिय नेक निबाह्यो।

अद्भुत प्रेम विहार चारु रस रसिकनि बिनु किनु चाह्यो।
अलवेली अलि सफल कियो सब जिन यह रस अवगाह्यो ।।

× × ×

देखु सखी इनकी नव नेह ।
उमड़ि ढेर घन रूप के मानो, वरसत रस कौ मेह।
खान-पान वसनन कल भूपन, भूले सब सुधि देह ।
अलवेली नहिं जानति निसि दिन परे प्रेम के गेह ।।

× × ×

गुंजन मधुपन सुनन अली री।
उमगी मनों प्रेम की सरिता, रूप के सिन्धु चली री।
विहँसत वदन हँसत विगसत सी, जनु अनुराग कली री।
रूप अनूप लखै अलवेली, आई वारि भली री ।।

× × ×

लता तू अनोखे ख्याल परयो है।
अति ही नींदर नैन उनींदे, आरस रंग भरयो है।
अति आसक्ति भरयो नहिं जानत, पुहुम प्रभाव करयो है।
अलवेली अलि तृपित न मानत, किहि रस रंग ढरयो है ।।

× × ×

श्री वंसी अलि की बलि जाऊँ।
जाको चरन सरन किरपा तें, बृन्दावन धन पाऊँ।
नव नागरि अलि कुल चूड़ामणि, रहसि रहसि दुलराऊँ।
अलवेली अलि हिय कौ गहिनौ, प्रेम जराइ जराउँ ।।

× × ×

श्री वंसी अलि प्रान हमारे।
हृदय कमल संपुट करि राखूँ, अँखियन के वर तारे।
चरन सरोज सुगति मति मोरी, निरधन धन अनुसारे।
अलवेली अलि, अलिगन मधुकर है, पीवत रस सुखसारे ।।

× × ×

कुमुद विगसत मोद दिन-दिन किरिन कृपा पसारहीं।
द्वन्द कलिमल मिटत तम सब जोन्ह हम संचारहीं।
झलके सुवैनन माधुरी विवि रसिक मनि वर राजहीं।
जाके सुहृदय प्रकास है यह कलप तरु वड़ साजहीं ।।

× × ×

वृन्दावन वास यह [illegible] लीजै।
सात समय की टहल महल बिनु, इक छन जान न दीजै।
परम प्रेम रस रास रसिक जे, तिनही को सँग कीजै।
निविड़ निकुंज विहार चारु अति, सुरस सुधा-दिन पीजै।
और भजन साधन में मिथ्या, कबहूँ काल न छीजै।
दिन दुलराइ लड़ाइ दुहुन को, अलबेली अलि जीजै॥

बख्शी हंसराज

दमकति दीपति देह दामिनि सी चमकत चंचल नैना।
घूँघट बिच खेलत खंजन से उड़ि उड़ि दीठि लगै ना।
लटकटि ललित पीठ पर चोटी बिच बिच सुमन सँवारी।
देखे ताहि मैर सो आवत मानहु भुजंगिनि कारी॥

× × ×

इत से चली राधिका गोरी सौंपन अपनी गैया।
उत ते अति आतुर आनँद सों आए कुँअर कन्हैया॥
कसि भौंहे हँसि कुँअरि राधिका कान्ह कुँअर सों बोली।
अँग अँग उमगि भरे आनँद दरकति छिन छिन चोली॥

× × ×

कोऊ कहूँ आय बन बीथिन या लीला लखि जैहै।
कहि कहि कुटिल कठिन कुटिलन सों सिगरे वृज बगरैहै॥
जो तुम्हरी इनकी ये बातें सुनिहै कीरति रानी।
तौ कैसे पटिहै पाटे ते घटिहै कुल को पानी॥

× × ×

ऐरे मुकुट वार चरवाहे! गाय हमारी लीजौ।
जाय न कहूँ तुरत की ब्यानी सौंपि खरक कें दीजौ॥
होहु चरावन हार गाय के बाँधन हार छुरैया।
कर दीजौ तुम आय दोहनी पावै दूध लुरैया॥

दूलह

धारी जब बाही तब करी तुम 'नाहीं',
पायँ दियौ पलकाही 'नाहीं नाहीं' कै सुहाई हौ।

बोलत में नाहीं, पट खोलत में नाहीं,
कवि दूलह उछाही लाख भाँतिन लहाई हौ।
चुम्बन में नाहीं, परिरम्भन में नाहीं,
सब आसन विलासन में नाहीं ठीक ठाई हौ।
मेलि गलबाही, केलि कीन्हीं चितवाही यह,
हाँ से भली 'नाहीं' सो कहाँ से सीख आई हौ ॥

× × ×

सारी की सरोंट सब सारी में मिलाय दीनी,
भूषन की जेब जैसे जेव जहियतु है।
कहै कवि दूलह छिपाये रद छद मुख,
नेह देखे सौतिन की देह दहियतु है।
बाला चित्र साला ते निकसि गुरुजन आगे,
कीन्हीं चतुराई सो लखाई लहियतु है।
सारिका पुकारे हम नाहीं, हम नाहीं,
ए जू! राम-राम कहो नाहीं-नाहीं कहियतु है ॥

× × ×

उरज उरज धँसै, बसे उर आड़े लसे,
बिन गुन माल गरे धरे छवि छाये हौ।
नैन कवि दूलह के राते, तुतराते बैन,
देखे सुने सुख के समूह सरसाये हौ।
जावक सों लाल भाल पलकन पीक लीकी,
प्यारे वृज चन्द सुचि सूरज सुहाये हौ।
होत अरुनोद यदि कोद मति बसी आज,
कौन घर बसी घर बसी करि आये हौ ॥

× × ×

माने सनमाने तेइ माने सनमाने सन,
माने सनमाने सनमान पाइयतु है।
कहै कवि दूलह अजाने अपमाने,
अपमान सो सदन तिनही को छाइयतु है।
जानत है जेऊ तेऊ जात हैं बिराने द्वार,
जान बूझ भूले तिनको सुनाइतु है।
काम बस परे कोऊ गहत गरूर तौ वा,
अपनी जरूर जाजरूर जाइतु है ॥

बृजवासी दास

ठाढ़ी अजिर जसोदा रानी, गोदी लिए श्याम सुखदानी।
उदै भयौ ससि सरद सुहावन, लागी सुत को मात दिखावत।
देखहु श्याम चन्द यह आवत, अति सीतल दृग ताप नसावत।
चितै रहे हरि इक टक ताही, कर ते निकट बुलावत ताही।
मैया यह मीठो है खारो, देखत लगत मोहि यह प्यारो।
देहि मँगाय निकट मैं लैहों, लागी भूख चन्द मैं खैहों।
देहि वेगि मैं बहुत भुखानो, माँगत ही माँगत विरुझानो।
जसुमति हँसत करत पछतायो, काहे को मैं चन्द दिखायो।
रोवत हैं हरि विनही जाने, अब धौं कैसे करिके माने।
विविध भाँति करि हरिहि भुलावै, आन बतावै आन दिखावै।

× × ×

यही देत नित माखन मोको, छिन छिन देत तात मैं तोको।
जो तुम श्याम चन्द को खैहो, बहुरो फिर माखन कहँ पैहो।
देखत रहौ खिलौना चन्दा, हठ नहिं कीजै बाल गोविन्दा।
मधु मेवा पकवान मिठाई, जो भावै सो लेहु कन्हाई।
पालागो हठ अधिक न कीजै, मैं बलि रिसही रिसतन छीजै।
खस खस कान्ह परत कनिया ते, दै ससि कहत नन्द रनिया ते।
जसुमत कहत कहा धौ कीजै, माँगत चन्द कहाँ ते दीजै।
तब जसुमत एक जल पुट लीनो, कर में लेइ तेहि ऊँचा कीनो।
ऐसे करि स्यामहि बँहकावै, आव चन्द तोहि लाल बुलावै।
याही ते तू तन धरि आवै, तोहि देखि लालन सुख पावै।
हाथ लिए तोहि खेलत रहिए, नेक नहीं धरनी पर धरिए।
जल पुट आनि धरन पर राख्यो, गहि आनहु सखि जननी भाख्यो।

× × ×

ताहि देखि मुसकाय मनोहर, बार बार डारत दोऊ कर।
चन्दा पकरत जल के माँही, आवत कछू हाथ में नाही।
तब जल पुट के नीचे देखे, तहँ चन्दा प्रतिबिम्बन पेखे।
देखत हँसी सकल वृज नारी, मगन बाल छवि लखि महतारी।

बोधा (बुद्धिसेन)

अति छीन मृनाल के तारहु ते तेहि ऊपर पाँव दै आवनो है।
सुई वेह ते द्वार सकीन तहाँ परतीति को ताड़ो लगावनो है।

कवि बोधा अनी घनी नेजहुँ ते चढ़ि तापै न चित्त डरावनो है।
यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवार की धार पै धावनो है॥

× × ×

यह प्रेम को पंथ हलाहल है सु तौ वेद पुरानऊँ गावत है।
पुनि आँखिन देखो सरोजन लै नर संभु के सीस चढ़ावत है।
बरही पर माथे चढ़ै हरि के फल जोग ने एते न पावत है।
तुम्हें नीकी लगै ना लगै तौ भले हम जान अजान जनावत है॥

× × ×

रितु पावस स्याम घटा उनई लखि कै मन धीर धिरातो नहीं।
पुनि दादुर मोर पपीहन की सुनि कै धुनि चित्त थिरातो नहीं।
जब ते बिछुरे कवि बोधा हितू तब ते उर दाह सिरातो नहीं।
हम कौन सों पीर कहैं अपनी दिलदार तो कोऊ दिखातो नहीं॥

× × ×

निसि वासर नींद औ भूख नहीं जब ते हिय में यह आनि बसी।
मिलतै न बनै जग की भय ते बरजी न रहै हिय की हुलसी।
कवि बोधा सुनै हे सुभान हितू उर अन्तर प्रेम की गाँस गसी।
तिन को कल कैसे परै निरदै जिनकी है कुसाँगरे आँख कसी॥

× × ×

देव दुआरे निहारि अड़ी मृगनैनी करै रवि की छवि छोटी।
हाथ में मालती माल लिए चली भीतरै ताहि गोसाईं अँगोटी।
पाहन ते सिख लो लखि कै कवि बोधा मजा बरनी यक छोटी।
भाल में रोरी की बेंदी लसी है ससी में लसी मनो बीरबहूटी॥

× × ×

जब ते बृजराज को रूप लख्यो तबते उर और न आनतु है।
निसि वासर संग रहै उनके हमको धौं कबै पहिचानतु है।
कवि बोधा भयो अलमस्त महा कहूँ काहू की सीख न मानतु है।
तुम ऐसहीं मोहि लटी करती मन मेरो कही नहीं मानतु है॥

× × ×

मुख चारि भुजा पुनि चारि सुने हद बाँधन वेद पुरानन की।
तिनकी कछु रीति कही न परै यह रूप औ कोकिल तानन की।
कवि बोधा सुजान वियोग कियो छवि सोइ कलानिधि आनन की।
हम तो तबही पहिचान गई चतुराई सबै चतुरानन की॥

× × ×

पच्छिन को विरछो है घने विरछान को पच्छियो हैं बड़े चाहक ।
मोरन को है पहार घने औ पहारन मोर रहैं मिलि नाहक ।
बोधा महीपन को मुकुता औ घने मुकतानि के होहि वेसाहक ।
जौ धन है तो गुनी बहुतै अरु जो गुन है तो अनेक हैं गाहक ॥

× × ×

सेवती जासों जुही कचनार अनार करील कनैर निहारी ।
पौंड़र मौलसिरी मचकुन्द कदम्ब लौ बोधा लखी फुलवारी ।
केतकी केवरो कुन्द नेवारि सो देखि लता यह चाड़ निवारी ।
मालती एक बिना भ्रमरी इतै कोऊ न जानत पीर हमारी ॥

× × ×

बोधा बिसू सो कहा कहिए सो बिथा सुनि पूरि रहै अरगाइके ।
याते भले मुख मौन धरैं उपचार करैं कहूँ औसर पाइके ।
ऐसो न कोऊ मिल्यो कबहूँ जो कहै कछु रंच दया उर लाइके ।
आवत है मुख लौ बढ़ि के फिर पीर रहै या सरीर समाइके ॥

गुमान मिश्र

दिग्गज दबत दबकत दिगपाल भूरि,
धूरि की धुँधेरी सो अँधेरी आभा भान की ।
धाम औ धरा को माल बाल अबला को अरि,
तजत परान राह चाहत परान की ।
सैयद समर्थ भूप अली अकबर-दल,
चलत बजाय मारू दुंदुभी धुकान की ।
फिरि फिरि फननि फनीस उलटतु ऐसे,
चोली खोलि ढोली ज्यों तमोली पाके पान की ॥

× × ×

न्हाती वहाँ सुनयना नित बावली में,
छूटे उरोजतल कुंकुम नीर ही में ।
श्रीखंड चित्र दृग - अंजन संग साजै,
मानौ त्रिबेनि नित ही घर ही बिराजै ॥

× × ×

हाटक हंस चल्यो उड़िकै नभ में, दुगनी तन ज्योति भई ।
लीक सी खैंच गयो छन में, छहराय रही छवि सोनमई ।

नैनन सों निरख्यो न बनायकै, कै उपमा मन माहिं लई।
स्यामल चीर मनौ पसरयो, तेहि पै कल कंचन वेलि नई।

× × ×

नल के यश तेज विराजत हैं।
शशि भानु वृथा छवि छाजत हैं॥
जबहीं जब यों विधि चित्त धरै।
तब छेकन को परिवेश करै॥
विधि भाल दरिद्र लिख्यो जेहि के।
नहिं कीजत अंक वृथा तेहि के।
नल येतिकु ताहि तुरन्त दियो।
जिमि टारि दरिद्र को दूर कियो॥

कवीन्द्र (उदयनाथ)

कुन्जन ते मग आवत गावत राग बनावत देव गिरी को।
सो सुनि कै वृषभानु सुता तलफै जिमि पंजर जीव चिरी को।
तार थकै नहिं नैनन तें सजनी अँसुआन की छार झिरी को।
मार मनोहर नन्द कुमार के हार हिए लखि मौलसिरी को॥

× × ×

कैसी ही लगन जामे लगन लगाई तुम,
प्रेम की पगनि के परेखे हिए कसके।
केतिको छपाय उपाय उपजाय प्यारे,
तुमते मिलाप के बढ़ाए चोप चस के।
भनत कविन्द हमें कुन्ज में बुलाय कर,
बसे कित जाय दुख देकर अवस के।
पगनि में छाले परे नाँघिवे को नाले परे,
तऊ लाल लाले परे रावरे दरस के॥

× × ×

शहर मँझार हो परत एक लागि जैहैं,
छोरे पै नगर के सराय है उतारे की।
कहत कविन्द मग माँझ ही परैगी साँझ,
खबर उड़ानी है बटोही द्वैक मारे की।
घर के हमारे परदेस को सिधारे,
या तें दया कै बिचारी हम रीति राहबारे की।

उतरी नदी के तीर वर के तरे ही तुम,
चौंको जनि चौकी तहाँ पाहरु हमारे की ॥

× × ×

राजै रस में री तैसी बरषा समै री चढ़ी,
चंचला नचै री चकचौंधा कौंधा वारैं री।
व्रती व्रत हारै हिये परत फुहारैं,
कछू छोरैं कछू धारैं जलधर जल धारैं री।
भनत कविन्द्र कुन्ज भौन पौन सौरभ सों,
काके न कँपाय प्रान परहथ पारैं री।
काम कंदुका से फूल डोलि डोलि डारैं मन,
औरै किए डारैं ये कदंबन की डारैं री ॥

हरिनाथ

बलि बोई कीरति लता, कर्ण करी द्वै पात।
सींची मान महीपते, जब देखी कुम्हिलात ॥
जाति जाति ते गुन अधिक, सुन्यो न कबहूँ कान।
सेतु बाँधि रघुबर तरे, हेला दे नृप मान ॥

× × ×

आज लौं तोसों औ मोसों विपत्ति,
बढ़ी रही प्रीति की रीति सहेली।
तो हित झार पहार मझाय कै,
आय के देखो है भूमि बघेली।
श्री हरिनाथ सो मान करै मति मेरी,
कही यह मानिलै हेली।
भेंटत हौं राजा राम नरेसहिं,
भेंटि लै री फिर भेंट दुहेली ॥

× × ×

बाजपेयी बाज सम पांडे पच्छिराज सम,
हंस से त्रिवेदी और सोहै बड़े गाथ के।
कुही सम सुकुल मयूर से तिवारी भारी,
गुर्रा सम मिसिर नवैया नहीं माथ के।

नीलकंठ दीच्छित अवस्थी हैं चकोर चारु,
चक्रवाक दुवे गुरु सुख शुभ साथ के।
एते द्विज जाने रंग रंग के मैं आने,
देस देस में बखाने चिरी खाने हरिनाथ के॥

संत दूलनदास

कोइ बिरला यहि विधि नाम कहै।
मंत्र अमोल नाम दुइ अच्छर, विनु रसना रट लागि रहै।
होंठ न डोलै जीभ न बोलै, सूरत धरति दिढाइ गहै।
दिन औ राति रहै सुधि लागी, यह माला यह सुमिरन है।
जन दूलन सत गुरुन वतायो, ताकी नाव पार निवहै॥

× × ×

मन वहि नाम की धुनि लाउ।
रटु निरंतर नाम केवल, अवर सब विसराउ।
साधि सूरत आपनी, करि सुवा सिखर चढ़ाउ।
पोषि प्रेम प्रतीत तें, कहि राम नाम पढ़ाउ।
नाम ही अनुरागु निसु दिन, नाम के गुन गाउ।
वनी तो का अवहिं आगे, और वनी वनाउ।
जगजीवन सत गुरु वचन साचे, साच मन में लाउ।
करु वास दूलनदास सतमां, फिरि न यहि जग आउ॥

× × ×

देख आयों मैं तो सांई की सेजरिया।
सांई को सेजरिया सतगुरु की डगरिया॥
सवदहिं ताला सवदहिं कुंजी, सवद की लगी है जॅजिरिया।
सवद ओढ़ना सवद बिछौना, सवद की चटक चुनरिया।
सवद सरूपी स्वामी आप विराजे, सीस चरन मे धरिया।
दूलनदास भजु सांई जगजीवन, अगिन से अहॅग उजरिया॥

× × ×

जो कोइ भक्ति किया चहे भाई।
करि वैराग भसम करि गोला, सो तन मनहिं चढ़ाई।
ओढ़ के बैठ अधिनता चादर, तज अभिमान वड़ाई।
प्रेम प्रतीत धरै इक तागा, सो रहै सुरत लगाई।

गगन मंडल बिच अभरन झलकत, क्यों न सुरत मनलाई।
सेस सहस मुख निसु दिन बरनत, वेद कोटि गुन गाई।
सिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, ढूंढ़त थाह न पाई।
नानक नाम कबीर मता है, सो मोहि प्रगट जनाई।
ध्रुव प्रहलाद यही रस मातें, सिव रहै ताड़ी लाई।
गुरु की सेवा साध की संगत, निसुदिन बढ़त सवाई।
दूलनदास नाम भज बंदे, टाढ़ काल पछिताई॥

× × ×

सांई तेरे कारन नैना भये बैरागी।
तेरा सत दरसन चहौं, कछु और न मांगी।
निसु बासर तेरे नामकी, अंतर धुनि जागी।
फेरत हौं माला मनौं, अँसुवनि झरि लागी।
पलक तजी इत उक्तितें, मन माया त्यागी।
दृष्टि सदा सत सनमुखी, दरसन अनुरागी।
मतमाते राते मनौं, दाधे बिरहागी।
मिलु प्रभु दूलनदास के, करु परम सुभागी॥

× × ×

सांई भजन ना करि जाइ।
पाँच तसकर संग लागे, मोहि हटकत धाइ।
चहत मन सतसंग करनो, अधर बैठि न पाइ।
चढ़त उतरत रहत छिन छिन, नाहिं तहँ ठहराइ।
कठिन फाँसी अहै जग की, लियो सबहिं बझाइ।
पास मन मनि नैन निकटहिं, सत्य गयो भुलाइ।
जगजीवन सतगुरु करहु दाया, चरन मन लपटाइ।
दास दूलन वास सतमां, सुरत नहिं अलगाइ॥

× × ×

राम तोरी माया नाचु नचावै।
निसु बासर मेरो मनुवां व्याकुल, सुमिरन सुधि नहिं आवै।
जोरत तूरै नेह सूत मेरो, निरवारत अरुझावै।
केहि बिधि भजन करौं मोरे साहिब, बरबस मोहि सतावै।
सत सनमुख थिर रहै न पावै, इत-उत चितहि डुलावै।
आरत पंवरि पुकारौं साहिब, जन फिरि यादहि पावै।
थाकेउ जन्म जन्म के नाचत, अब मोहि नाच न भावै।
दूलनदास के गुरु दयाल तुम, किरपहिं ते बनि आवै॥

संत दरिया साहब

आदि अनादि मेरा सांई।
इष्ट न गुष्ट है अगम अगोचर।
यह सब उनकी माई॥
जो बनमाली सींचे मूल, सहजै पिवै डाल फल फूल॥
जो नरपति को गिरह बुलावै, सेना सकल सहज ही पावै॥
जो कोई कर भान प्रकासै, तौ निसतारा सहजहि नासै॥
गरुड़ पंख जो घर में लावै, सर्प जाति रहने नहिं पावै॥
दरिया सुमिरै एकहि राम, एक राम सारै सब काम॥

× × ×

आदि अंत मेरा है राम, उन बिन और सकल बेकाम॥
कहा करूँ तेरा वेद पुराना, जिन हैं सकल जगत भरमाना॥
कहा करूँ तेरी अनुभै बानी, जिनमें तेरी सुद्धि भुलानी॥
कहा करूँ ये मान बड़ाई, राम बिना सबही दुखदाई॥
कहा करूँ तेरा सांख व जोग, राम बिना सब बंधन रोग॥
कहा करूँ इंद्रिन का सुक्ख, राम बिना देवा सब दुक्ख॥
दरिया कहै राम गुरु मुखिया, हरि बिनु दुखी राम सँग सुखिया॥

× × ×

राम बिन भाव करम नहिं छूटै।
साध संग औ राम भजन बिन, काल निरंतर लूटै।
मल सेती जो मल को धोवै, सो मल कैसे छूटै।
प्रेम का साबुन नाम का पानी, दोय मिल ताँता टूटै।
भेद अभेद भरम का भांडा, चौड़े पड़ पड़ फूटै।
गुरु मुख सब्द गहै उर अंतर, सकल भरम से छूटै।
राम का ध्यान तू धर रे प्रानी, अमृत का मेंह बूटै।
जन दरियाव अरप दे आपा, जरामरन तब टूटै॥

× × ×

संतो कहा गृहस्त कहा त्यागी।
जहि देखूं तेहि बाहर भीतर, घट घट माया लागी॥
माटी की भीत पवन का थंबा, गुन औगुन में छाया।
पाँच तत्त आकार मिलाकर, सहजां गिरह बनाया॥

मन भयो पिता मनसा भई माई, दुख सुख दोनों भाई।
आसा तृस्ना वहिनें मिल कर, गृह की सौंज वनाई॥
मोह भयो पुरुष कुवुधि भइ घरनी, पाँचो लड़का जाया।
प्रकृति अनंत कुटुम्बी मिलकर, कलहल वहुत उपाया॥
लड़कों के संग लड़की जाई, ताका नाम अधीरी।
वनमें वैठी घर घर डोलै, स्वारथ संग खपीरी॥
पाप पुन्न दोउ पाड़ पड़ोसी, अनंत वासना नाती।
राग द्वेष का वंधन लागा, गिरह वना उतपाती॥
कोइ गृह मांड गिरह में वैठा, वैरागी वन वासा।
जन दरिया इक राम भजन विन, घट घट में घर नासा॥

× × ×

दरिया दरवारा खुल गया अजर किनारा।
चमकी वीज चली ज्यों धारा, ज्यों विजली विच तारा।
खुल गया चन्द वन्द वदरी का, घोर मिटा अँधियारा।
लौ लगी जाय लगन के लारा, चाँदनी चौक निहारा।
सूरत सैल करै नभ ऊपर, वंक नाल पट फारा।
चढ़ गई चाँप चली ज्यों धारा, ज्यों मकड़ी मकतारा।
मैं मिली जाय पाय पिउ प्यारा, ज्यों सरिता जल धारा।
देखा रूप अरूप अलेखा, ताका वार न पारा।
दरिया दिल दरवेस भये सव, उतरे भौजल पारा॥

× × ×

सकल ग्रंथ का अर्थ है, सकल वात की वात।
दरिया सुमिरन राम का, कर लीजै दिन रात॥
दरिया हरि किरपा करी, विरहा दिया पठाय।
यह विरहा मेरे साथ को, सोता लिया जगाय॥
दरिया वान गुरुदेव का, वेधै भरम विकार।
वाहर घाव दिखै नहीं, भीतर भया सिमार॥
दरिया सतगुरु सब्दसौं, मिट गइ खैंचा तान।
भरम अँधेरा मिट गया, परसा पद निरवान॥
पान वेल से वीछुड़ै, परदेसां रस देत।
जन दरिया हरिया रहै, (उस) हरी वेल के हेत॥
अलल वसै आकास में, नीची सुरत निवास।
ऐसे साधू जगत में, सुरत सिखर पिउ पास॥

दरिया नाम है निरमला, पूरन ब्रह्म अगाध।
कहे सुने सुख ना लहै, सुमिरे पावै स्वाद॥

दरिया सूरज ऊगिया, चहुँ दिसि भया उजास।
नाम प्रकासै देह मे, तौ सकल भरम का नास॥

संत गरीबदास

सेस सहस मुख गावै साधो, सेस सहस मुख गावै।
ब्रह्मा विस्नु महेसर थाके, नारद नाद बजावै।
सनक सनंदन ध्यान धरत हैं, दृष्ट मुष्ट नहिं आवै।
लघु दीरघ कछु कहा न जाई, जो पावै सो पावै।
जी जूनी कूं कैसे दरसै, गौरज सीस चढ़ावै।
ब्रह्म रंध्र का घाट जहाँ है, उलट खेचरी लावै।
सहस कमल दल झिलमिल रंगा, चोखा फूल चुवावै।
गंगा जमन मद्ध सरसुती, चरन कमल से आवै।
परवी कोटि परम पद माहीं, सुख के सागर न्हावै।
सुरत निरत मन पौन पदारथ, चारो तत्त मिलावै।
आकासै उड़ चलै विहंगम, गगन मँडल कूं धावै।
मोर मुकुट पीताम्बर राजै, कोटि कला छबि छावै।
अबरन बरन तासु के नांही, विचरत है निरदावै।
विनही चरनौ चलै चिदानंद, विन मुख बैन सुनावै।
गरीबदास यह अकथ कहानी, ज्यूँ गूँगा गुड़ खावै॥

× × ×

सोई साध अगाध है, आपा न सरावै।
पर निन्दा नहिं संचरै, चुगली नहिं खावै॥
काल क्रोध त्रिस्ना नहीं, आसा नहि राखै।
साचे सूं परचा भया, जब कूड़ न भाखै॥
एकै नजर निरंजना, सब ही घट देखै।
नीच ऊँच अन्तर नहीं, सब एकै पेखै॥
सोई साध सिरोमनी, जप तप उपकारी।
भूले कूं उपदेस दे, दुर्लभ संसारी॥
अकल यकीन पढ़ाय दै, भूले कूं चेतै।
सो साधू संसार में, हम विरले भेटै॥

सूरत खोवै सत कहै, सांचे सूं लावै ।
सो साधू संसार में, हम विरले पावै ॥
निरख निरख पद धरत हैं, जिव हिंसा नाहीं ।
चौरासी तारन तरन, आये जग माहीं ॥
इस सौदे कूं ऊतरे, सौदागर सोई ।
भरे जहाज उतार दे, भौ सागर लोई ॥
भेष धरे भागे फिरैं, बहु साखी सीखैं ।
जानैं नहीं विवेक कूं, खर के ज्यूं रीकैं ॥
उनमुन में तारी लगी, जहँ अजप जयंता ।
सुन्न महल अस्थान है, जहँ इस्थिर डेरा ।
दास गरीब सुभान है, सत साहब मेरा ॥

× × ×

दमदा नहीं भरोसा साधो, अब तूं कर चलने का सोच ॥
मुए पुरुष संग सती जरत है, परी भरम की भूल ॥
पीठ मनूका दाख लदी है, करहा खात बबूल ॥
मेंड़ी मंदिर बाग बगीची, रहसी डाल न मूल ॥
जिंदा पुरुष अचल अविनासी, बिना पिंड अस्थूल ॥
नैनों आगे झुकझुक आवै, रतन अमोली फूल ॥
गरीबदास यह अलल ध्यान है, सुरत हिंडोले झूल ॥

× × ×

आध घड़ी की अध घड़ी, आध घड़ी की आध ।
साधू सेती गोसटी, जो कीजै सो लाभ ॥
आदि समय चेता नहीं, अन्त समय अँधियार ।
मद्ध समय माया रते, पाकर लिये गँवार ॥
ऐसा अंजन आँजिये, सूझै त्रिभुवन राय ।
कामधेनु अरु कलप बृछ, घटही मांहि लखाय ॥
पंछी उड़े अकास कूं, कितकूं कीन्हा गौन ।
यह मन ऐसा जात है, जैसे बुदबुद पौन ॥
ऐसे लाहा लीजिए, संत समागम सेव ।
सतगुरु साहब एक है, तीनो अलख अभेव ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला, सुरत सिन्धु के माँह ।
सब्द सरूपो अंग है, पिंड मिला नहिं छाँह ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला, सुरत सिन्धु के नाल ।
गमन किया परलोक से, अलल पच्छ की चाल ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला, तेज पुंज के अंग ।
झिलमिल नूर जहूर है, रूप रेख नहिं रंग ॥

साहब से सतगुरु भये, सतगुरु से भये साध ।
ये तीनों अंग एक हैं, गति कछु अगम अगाध ॥

सतगुरु पूरन ब्रह्म है, सतगुरु आप अलेख ।
सतगुरु रमता राम है, यामें मीन न मेख ॥

अलल पंख अनुराग है, सुन्न मंडल रह थीर ।
दास गरीब उधारिया, सतगुरु मिले कबीर ॥

अल्लह अविगत राम है, बेचगून चित माहि ।
सब्द अतीत अगाध है, निरगुन सरगुन नाहिं ॥

साहब साहब क्या करे, साहब है परतीत ।
भैंस सींग साहब भया, पांडे गावैं गीत ॥

फूल सही सरगुन कहा, निरगुन गंध सुगंध ।
मन माली के बाग में, भँवर रहा कहँ बंध ॥

नाम जपा तो क्या भया, उरमें नहीं यकीन ।
चोर मुसै घर लूटहीं, पाँच पचीसो तीन ॥

सुमिरन तबही जानिये, जब रोम रोम धुनि होय ।
कुंज कमल में बैठ कर, माला फेरै सोय ॥

सुरत निरत मन पवन कूं, करो एकत्तर चार ।
द्वादस उलट समोय ले, दिल अन्दर दीदार ॥

चार पदारथ महल में, सुरत निरत मन पौन ।
सिव द्वारा खुलिहै जबै, दरसै चौदह भौन ॥

जित सेतीं दम ऊचरै, सुरत तहाई लाय ।
नाभी कुंडल नाद है, त्रिकुटी कमल समाय ॥

सनकादिक सेवन करै, सुकदे बोले साख ।
कोटि ग्रंथ का अरथ है, सुरत ठिकाने राख ॥

जल का महल बनाइया, धन समरथ सांई ।
कारीगर कुरवान जां, कुछ क़ीमत नांई ॥

वैराग नाम है त्याग का, पाँच पचीसौ संग ।
ऊपर से केंचल तजी, अन्तर विषय भुअंग ॥

नित ही जामै नित मरै, संसय माहि सरीर।
जिनका संसा मिट गया, सो पीरन सिर पीर॥
लै लागी तब जानिये, हरदम नाम उचार।
एकै मन एकै दिसा, सांई के दरबार॥
ज्ञान विचार विवेक बिन, क्यों दम तोरै स्वांस।
कहा होत हरि नाम सू, जो दिल ना बिस्वास॥
ऐसी जरना चाहिए, ज्यों अगिन तत्त में होय।
जो कछु परै सो सब जरै, बुरा न वांचै कोय॥
ऐसी जरना चाहिए, ज्यों चंदन के अंग।
मुख से कछु न कहत है, तनकूं खात भुअंग॥
सांई सरीखे संत हैं, यामें मीन न मेख।
परदा अंग अनादि है, बाहर भीतर एक॥
सांई सरीखे साध है, इन सम तुल नहिं और।
संत करै सोइ होत है, साहब अपनी ठौर॥
साध समुंदर कमल गति, माहे सांई गंध।
जिसमें दूजी भिन्न क्या, सो साधू निरबंध॥

संत दरियादास

अवधू कहे सुने का होई।
जो कोइ सब्द अनाहद बूझै, गुरु ज्ञानी है सोई॥
थाके बाट, चलत ना थाके, थाके मुनिवर लोई।
प्यास वाला के मिले न पानी, अन प्यासे जल बोही॥
पहले बीज फूल फल लागा, फूल देखि बीज नसाई।
जहाँ वास तहाँ भौंरा नाहीं, अनवासे लपटाई॥
जहाँ गगन तहँ तारा नाहीं, चन्द सूरका मेला।
जहाँ सुरत तहाँ पवन न पानी, येहि विधि अविगति खेला॥
जब सरूप तब रूप न देखे, जहाँ छाँह तहाँ धूपा।
बिनु जल नदिया मोंछ बियानी, इक बकता इक चूपा॥
वृच्छ एक तैतिस तन लागा, अमृत फल बिनु पीया।
कहै दरिया कोइ संत विवेकी, मूवत उठिके जीया॥

× × ×

साधो ऐसा ज्ञान प्रकासी।
आतम राम जहाँ लगि कहिये, सबै पुरुष की दासी।
यह सब जोति पुरुष है निर्मल, नहिं तह काल निवासी।
हंस वंस जो है निरदागा, जाम मिले अविनासी।
सदा अमर है मरे न कबहीं, नहिं वह सक्ति उपासी।
आवै जाय खपै सो दूजा, सो तन कालै नासी।
तेजे स्वर्ग नर्क कै आसा, या तन वे विस्वासी।
है छपलोक सभनिते न्यारा, नाहिं तहँ भूख पियासी।
केता कहै कवि कहे न जानै, वाके रूप न रासी।
वह गुन-रहित तो यह गुन कैसे, ढूंढत फिरै उदासी।
सांचै कहा झूठ जिनि जानहु, सांच कहै दुरि जासी।
कहै दरिया दिल दगा दूरि करु, काटि दिहैं जम फाँसी॥

× × ×

हरिजन प्रेम जुगुति ललचाना।
सतगुरु सब्द हिये जब दीसे, सेत धुजा फहराना।
हृदे कँवल अनुराग उठे जब, गरजि घुमरि घहराना।
अमृत बुन्द विमल तहँ झलकै, रिमझिम सघन सोहाना।
बिगसित कँवल सहसदल तहँवाँ, मन मधुकर लपटाना।
बिलगि बिहरि फिर रहत एकरस, गगन मधे ठहराना।
उछरत सिन्धु असंख तरंग लहि, लहरि अनेक समाना।
लाल जवाहिर मोती तामें, किमि करि करत बखाना।
विवरन बिलगि हंस गुन राजित, मानसरोवर जाना।
मंजन मैलि भई तन निर्मल, बहुरि न मैल समाना।
एक से अनँत अनँत से एक है, एक में अनँत समाना।
कहैं दरिया दिल चसमाँ करिलै, रतन झरोखे जाना॥

× × ×

जाके हिये गगन झरि लागी।
बिना घटा घन बरिसन लागी, सुरति सुखमना जागी।
अजपा जाप जपै निस बासर, रहै जगत से बागी।
मूल अकह में गम्मि विचारै, सोइ सदा जन भागी।
अठदल कँवल झरोखा तहवाँ, नाम विमल रस पागी।
तिल भरि चौकी दना दरवाजा, ताहि खोजु बैरागी।
जोरे जारे सब्द बनावैं, राग गावै सो रागी।

अलख लखे कोइ पलक विचारे, सोइ संत अनुरागी।
थकित भये मन गीत कवित्तन, भौ विषया के त्यागी।
सब्द सजीवन पारस परसेउ, सीतल भो मन आगी।
इत उत कहे काम नहिं आवै, सारहिं लेवै माँगी।
कहै दरिया सतगुरु की महिमा, मेटे करम के दागी॥

× × ×

है मगु साफ़ बराबरे, मंदा लोचन माहिं।
कवन दोष मगु भान कहँ, आपे सूझत नाहिं॥
पहिले गुड़ सक्कर हुआ, चीनी मिसरी कीन्हि।
मिसरी से कन्दा भयो, यही सोहागिनि चीन्हि॥
दरिया तन से नहिं जुदा, सब किछु तन के माहिं।
जोग जुगत सों पाइये, बिना जुगत किछु नाहिं॥
तीनि लोक के ऊपरे, अभय लोक विस्तार।
सत्त सुकृत परवाना पावै, पहुँचे जाय करार॥
एकै सो अनंत भौ, फूटि डारि बिस्तार।
अंतेहू फिरि एक है, ताहि खोजु निज सार॥
माला टोपी भेष नहिं, नहिं सोना सिंगार।
सदा भाव सतसंग है, जो कोइ गहै करार॥

संत चरणदास

राखो जी लाज गरीब निवाज।
तुम बिन हमरे कौन सँवारे, सबहीं बिगरैं काज॥
भक्त बछल हरि नाम कहावो, पतित उधारन हार।
करो मनोरथ पूरन जनको, सीतल दृष्टि निहार॥
तुम जहाज मैं काग तिहारो, तुम तजि अंत न जाउँ।
जो तुम हरिजू मारि निकासो, और ठौर नहि पाउँ॥
चरनदास प्रभु सरन तिहारी, जानत सब संसार।
मेरी हँसी सो हँसी तिहारी, तुमहूँ देखि बिचार॥

× × ×

हरिको सकल निरंतर पाया।
माटी भाँडे खाँड खिलौने, ज्यो तरवर में छाया॥

ज्यों कंचन में भूषण राजै, सूरत दर्पण मांहीं।
पुतली खंभ खंभ में पुतली, दुतिया तौ कछु नाहीं॥
ज्यों लोहे में जौहर परगट, सूतहिं तानै बानै।
ऐसे राम सकल घट माहीं, बिन सतगुरु नहिं जानै॥
मेहँदी में रंग गंध फूलन में, ऐसे ब्रह्म माया।
जल में पाला पाले में जल, चरनदास दरसाया॥

× × ×

जबते एक एक करि माना।
कौन कथे को सुनने हारा, कोहै किन पहिचाना।
तब को ज्ञानी ज्ञान कहाँ है, ज्ञेय कहाँ ठहराना।
ध्यानी ध्येय जहाँ लगि पइये, तहाँ न पइये ध्याना।
जब कहाँ बंध मुक्त भुगतइया, काको आवन जाना।
को सेवक अरु कौन सहायक, कहाँ लाभ कित हाना।
जबको उपजै कौन मरत है, कौन करै पछिताना।
को है जगत जगत को कर्त्ता, त्रैगुण को अस्थाना।
तू तू तू अरु मैं मैं नाहीं, सब ही दे बिसराना।
चरनदास शुकदेव कहा है, जो है सो भगवाना॥

× × ×

जग में दो तारण को नीका।
एक तौ ध्यान गुरू का कीजै, दूजै मान धनीका॥
कोटि भाँति करि निश्चय कीयो, संशय रहा न कोई।
शास्त्र वेद औ पुराण टटोले, जिनमें निकसा सोई॥
इनहीं के पीछे सब जानौं, योग यज्ञ तप दाना।
नौविधि नौधा नेम प्रेम सब, भक्ति भाव अरु ज्ञाना॥
और सबै मत ऐसे मानो, अन्न बिना भुस जैसे।
कूटत कूटत बहुतै कूटा, भूख गई नहिं तैसे॥
थोथा धर्म वही पहिचानो, तामे ये दो नाहीं।
चरनदास शुकदेव कहत हैं, समझि देखि मन माहीं॥

× × ×

भाई रे अवधि बीती जात।
अंजुली जल घटत जैसे, तारे ज्यों परभात॥
स्वाँस पूंजी गाँठि तेरे, सो घटत दिन रात।
साधु संगति पैंठ लागी, ले लगे सोइ हाथ॥

बड़ो सौदा हरि सँभारो, सुमिरि लीजै प्रात।
काम क्रोध दलाल ठगिया, मत बनिज इन हाथ॥
लोभ मोह बजाज छलिया, लगे हैं तेरि घात।
शब्द गुरु को राखि हिरदय, तौ दगा नहिं खात॥
अपनी चतुराइ बुधि पर, मति फिरै इतरात।
चरनदास शुकदेव चरनन, परस तजि कुल जात॥

× × ×

साधो जो पकरी सो पकरी।
अवती टेक गही सुमिरन की, ज्यों हारिल की लकरी।
ज्यों सूरा ने सस्तर लीन्हो, ज्यों बनिये ने तखरी।
ज्यों सतवंती लियो सिंधौरा, तार गह्यो ज्यों मकरी।
ज्यों कामी को तिरिया प्यारी, ज्यूँ किरपिन कूँ दमरी।
ऐसे हमकूँ राम पियारे, ज्यों बालक कूँ ममरी।
ज्यों दीपक कूँ तेल पियारो, ज्यों पावक कूँ समरी।
ज्यूँ मछली कूँ नीर पियारो, बिछुरे देखै जमरी।
साधो के संग हरिगुण गाऊँ, ताते जीवन हमरी।
चरनदास शुकदेव दृढ़ायो, और छुटी सब गमरी॥

× × ×

सो गुरुगम मगन भया मन मेरा।
गगन मँडल में निज घर कीन्हो, पंच विषय नहिं घेरा॥
प्यास छुधा निद्रा नहिं व्यापी, अमृत अंचवन कीन्हा।
छूटी आस बास नहिं कोई, जग में चित नहिं दीन्हा॥
दरसी जोति परम सुख पायो, सबही कर्म जलावै।
पाप पुण्य दोऊ भय नाहीं, जन्म मरन बिसरावै॥
अनहद आनंद अति उपजावै, कहि न सकूँ गति सारी।
अति ललचावै फिरि नहिं आवै, लगी अलख सूँ यारी॥
हंस कमल दल सतगुरु राजै, रुचि-रुचि दरसन पाऊँ।
कहि शुकदेव चरनही दासा, सब विधि तोहि बताऊँ॥

× × ×

जो नर इतके भये न उतके।
उतको प्रेम भक्ति नहिं उपजी, इत नहिं नारी सुतके॥
घर सूँ निकसि कहा उन कीन्हा, घर घर भिक्षा माँगी।
बाना सिंह चाल भेड़न की, साध भये अकि स्वाँगी॥

तन मूँड़ा पै मन नहिं मूँड़ा, अनहद चित्त न दीन्हा।
इन्द्री स्वाद मिले विषयन सों, वकवक वकवक कीन्हा ॥
माला कर में सुरति न हरिमें, यह सुमिरन कहु कैसा।
वाहर भेख धारिके बैठा, अन्तर पैसा पैसा ॥
हिंसा अकस कुवुधि नहिं छोड़ी, हिरदय साँच न आया।
चरनदास शुकदेव कहत हैं, बाना पहिरि लजाया ॥

× × ×

आदिहुँ आनँद, अंतहुँ आनँद, मध्यहुँ आनँद ऐसेहिं जानो।
बंधहु आनँद, मुक्तहुँ आनँद, आनँद ज्ञान अज्ञान पिछानो।
लेटेहु आनँद बैठेहुँ आनँद, डोलत आनँद, आनँद आनो।
चरनदास विचारि सबै कछु, आनँद छाड़िकै दुक्ख न ठानो ॥

× × ×

आदिहु चेतन अंतहु चेतन, मध्यहुँ चेतन माया न देखी।
ब्रह्म अद्वैत अखंड निरालभ, और न दूसरो आनँद ऐसी।
सिन्धु अथाह अपार विराजत, रूप न रंग नहीं कछु देखी।
चरनदास नहीं, शुकदेव नहीं, तहँना कोइ मारग ना कोइ भेखी ॥

× × ×

श्वास उसास चलै जव आपहि, है जु अखंड टरै नहिं टारो।
भीतर बाहर है भरपूर सो ढूंढौ कहाँ नहिं नाहिन न्यारो।
चरनदास कहैं गुरु भेद दियो, भ्रम दूरि भयो जु हुतो अतिभारो।
दृष्टि अदृष्टि जु रामको, देखत, राम भयो पुनि देखन हारो ॥

× × ×

सतगुरु सब्दी लागिया, नावक का सा तीर।
कसकत है निकसत नहीं, होत प्रेम की पीर ॥
ऐसा सतगुरु कीजिए, जीवत डारै मारि।
जन्म जन्म की वासना, ताकूँ देवै जारि ॥
प्रेम छुटावै जक्त सूं, प्रेम मिलावै राम।
प्रेम करै गति औरही, लै पहुँचै हरि धाम ॥
पीव चहौ कै मत चहौ, वह तौ पी की दास।
पिय के रंग राती रहै, जग सूं होय उदास ॥
रंग होय तौ पीव को, आन पुरुष विष रूप।
छाँह बुरी पर घरन की, अपनी भली जु धूप ॥

हद्द कहूँ तौ है नहीं, वेहद कहूँ तौ नाहिं।
ध्यान स्वरूपी कहत हौं, बैन सैन के माहिं॥
मम हिरदय में आय के, तुमही कियो प्रकास।
जो कछु कहौ सो तुम कहौ, मेरे मुख सों भास॥
तप के वरस हजारहू, सत संगत घड़ि एक।
तौहू सरवरि ना करै, सुकदेव किया विवेक॥
अपने घर का दुख भला, परघर का सुख छार।
ऐसे जानै कुलवधू, सो सतवंती नार॥
जग माहँ ऐसे रहो, ज्यों अम्बुज सर माहिं।
रहै नीर के आसरे, पै जल छूवत नाहिं॥
शील न उपजै खेत में, शील न हाट विकाय।
जो हो पूरा टेक का, लेवै अंग उपजाय॥
शील कसैला आँवला, और बड़ों का बोल।
पाछे देवै स्वाद वै, चरनदास कहि खोल॥
लाख यही उपदेस है, एक शील कूं राख।
जन्म सुधारौ, हरि मिलौ, चरनदास की राख॥
खावै वस्तु बिचारि कै, बैठे टौर विचार।
जो कछु करै विचारि करि, किरिया यही अचार॥
जैसे सुपना रैन का, मुख दर्पण के माहिं।
भासै है पर है नहीं, ज्यों बरवर की छाहिं॥
इन्द्रिन कूं मन वस करै, मनकूं वस करै पौन।
अनहद वस कर वायु कूं, अनहद कूं ले तौन॥
इन्द्रो पलटै मन विषै, मन पलटै बुधि माहिं।
वुधि पलटै हरि ध्यान में, फेरि होय लै जाहिं॥
द्रव्य माहिं दुख तीन हैं, यह तूं निश्चय जान।
आवत दुख राखत दुखी, जात प्राण की हान॥
मूरख त्याग न करि सकै, ज्ञानवन्त तजि देह।
चौंकायल मृग ज्यों रहै, कहीं न साजै गेह॥
लाज तौंक गल में पड़ा, ममता वेरी पाँय।
रसरी मूरख नेह की, लीन्हे हाथ बँधाय॥
ज्यों तिरिया पीहर वसै, सुरति पिया के माहिं।
ऐसे जन जग में रहै, हरिकूं भूलै नाहिं॥

निराकार निर्लिप्त तूं, देही जान अकार।
आपन देही मान मत, यही ज्ञान ततसार॥
काहू ते उपजौ नहीं, बातें भयो न कोय।
वह न मरै मारै नहीं, राम कहावै सोय॥
जैसे कछुआ सिमिटि कै, आपुहि माहिं समाय।
तैसे ज्ञानी श्वास में, रहै सुरति लौ लाय॥
आप ब्रह्म मूरति भयो, ज्यों बुदबुद जल माहिं।
सूरति विनसै नाम संग, जल विनसत है नाहिं॥
जल थल पावक राम है, राम रमो सब माहिं।
हरि सब में सब राम में, और दूसरो नाहिं॥

सहजोबाई

जग में, कहा कियो तुम आय।
स्वान जैसे पेट भरि कै, सोयो जन्म गँवाय॥
पहर पहिले नाहिं जाग्यो, कियो न सुभ कर्म।
आन मारग जाय लाग्यो, कियो ना गुरु धर्म॥
जप न कियो तप न साध्यौ, दियौ ना तैं दान।
बहुक उरझे मोह मद में, आपु काया मान॥
बहुक उरझे मोह कारे, आन काढ़ै तोहि।
एक दिन नहिं रहन पावै, कहा कैसो होय॥
रैन दिन आराम ना, काटै जो तेरी आव।
चरनदास कहै सुन सहजिया, करो भजन उपाव॥

× × ×

बाबा काया-नगर बसावौ।
ज्ञान दृष्टि सूँ घट में देखौ, सुरति निरति लौ लावौ॥
पाँच मारि मन बस कर अपने, तीनो आप नसावौ।
सत सन्तोष गहौ दृढ़ सेती, दुर्जन मारि भगावौ॥
सील छिमा धीरज कूँ धारौ, अनहद बम्ब बजावै।
पाप बानिया रहन न दीजै, धरम बजार लगावै॥
सुबह बास होवै जब नगरी, बैरी रहै न कोई।
चरनदास गुरु अमल बतायौ, सहजो सँभलो सोई॥

× × ×

प्रेम दिवाने जो भये, पलट गयो सब रूप ।
सहजो दृष्टि न आवई, कहाँ रंक कहाँ भूप ॥
नया पुराना होय ना, घुन नहिं लागै जासु ।
सहजो मारा ना मरै, भय नहिं व्यापै तासु ॥

× × ×

नाम नहीं अरु नाम सब, रूप नहीं सब रूप ।
सहजो सब कुछ ब्रह्म है, हरि परगट हरि गूप ॥
है अखंड व्यापक सकल, सहज रहा भरपूर ।
ज्ञानी पावैं निकट ही, मूरख जाने दूर ॥

× × ×

सहजो जा घट नाम है, सो घट मंगल रूप ।
राम बिना धिक्कार है, सुन्दर धनवंत भूप ॥
मन मैला तन छीन ह्वै, हरि सो लगै न नेह ।
दुखी रहै सहजो कहै, मोह बसै जा देह ॥

× × ×

सहजो गुरु दीपक दियो, नैना भये अनंत ।
आदि, अन्त, मधि एक ही, सूझि परै भगवन्त ॥
चिउँटी जहाँ न चढ़ि सकै, सरसों न ठहराय ।
सहजो कूवाँ देश में, सतगुरु दई बसाय ॥

× × ×

सेत रोम सब ह्वै गये, सूख गई सब देह ।
सहजो वह मुख ना रहा, उड़ने लागी खेह ॥
सहजो लोक परलोक की, नहीं वासना ताहि ।
सो वह ब्रह्म स्वरूप हैं, सागर लहर समाहि ॥

× × ×

सहजो जीवत सब सगे, मुए निकट नहिं जायँ ।
रोवै स्वारथ आपने, सपने देख डरायँ ॥
जैसे सँड़सी लोह की, छिन पानी छिन आग ।
ऐसे दुख सुख जगत के, सहजो तू मत पाग ॥

× × ×

निसचै यह मन डूबता, लोभ मोह की धार ।
चरनदास सतगुरु मिले, सहजो दियो उबार ॥

जब चेतै तबही भला, मोह नींद सूँ जाग।
साधू की संगत मिलै, सहजो ऊँचे भाग॥

× × ×

साधु वृक्ष बानी कली, चर्चा फूले फूल।
सहजो संगत बाग में, नाना फल रहे झूल॥
सीस, कान, मुख, नासिका, ऊँचे ऊँचे नाँव।
सहजो नीचे कारने, सब कोउ पूजै पाँव॥

दयाबाई

ताप हरन दुख हरन, दया करत परनाम।
चरनदास गुरुदेव जू, ब्रह्म देव सुख धाम॥
तीन लोक नव खंड के लिए जीव सब हेर।
दया काल पर चन्ड है मारे सब को घेर॥

× × ×

वही एक व्यापत सकल, ज्यों मनिका में डोर।
थिर चर कीट पतंग में, दया न दूजो ओर॥
काम क्रोध मद लोभ नहिं, षट विकार करिहीन।
पंथ कुपंथ न जानही, ब्रह्म भाव रसलीन॥

× × ×

रे मन तू निकसत नहीं, है तू बड़ा कठोर।
सुन्दर स्याम सरूप बिन, क्यों जीवत निस भोर॥
छिन उट्ठू छिन गिर परूँ, राम दुखी मन मोर।
बौरी है चिंतवत फिरूँ, हरि आवत केहि ओर॥

× × ×

दया दान अरु दीनता, दीना नाथ दयाल।
हिरदै सीतल दृष्टि सम, निरखत करै निहाल॥
दया दया करिके कह्यो, सतगुरु मो सो माख।
नासा आगे दृष्टि करि, स्वांसा में मन लाग॥

× × ×

प्रेम पंथ है अटपटो, कोई न जानत वीर।
कै मन जानत आपनो, कै लागी जेहि पीर॥

छाँड़ो विषय विकार को, राम नाम चित लाव ।
दया कुँवरि यहि जगत में, ऐसे काल विनाव ।।

× × ×

जैसे मोती ओस को, तैसो यह संसार ।
विनस जाय छिन एक में, दया प्रभू उर धार ।।
त्रिभुवन की संपति दया, तृन सम जानत साध ।
हरि रस माते जे रहैं, तिनको मतो अगाध ।।

× × ×

साधू सिंह समान है, गरजत अनुभव ज्ञान ।
करम धरम सब भजि गये, दया दुरयो अज्ञान ।।
साधु एग महिमा अधिक, गावत सेष महेश ।
ये जग में दाता बड़े, देत दान उपदेश ।।

× × ×

प्रथम पैठि पाताल में, धमकि चढ़ै आकास ।
दया सुरति नटनी भई, बाछि परत निज स्वाँस ।।
वही एक व्यापत सकल, ज्यों मनिका में डोर ।
थिर चर कीट पतंग में, दया न दूजो ओर ।।

× × ×

प्रेम पुंज प्रकटै जहाँ, तहाँ प्रगट हरि होय ।
दया दया करि देत है, श्री हरि दर्शन सोय ।।
दया कुँवरि या जगत में, नहीं रह्यो थिर कोय ।
जैसो वास सराय को, तैसो यह जग होय ।।

× × ×

ताप मात तुम्हरे गये, तुम भी भये तयार ।
आज काल में तुम चलौ, दया होहु हुसयार ।।
बड़ो पेट हैं काल को, नेक न कहूँ अघाय ।
राजा राना छत्रपति, सब कूँ लीले जाय ।।

संत शिवनारायण

अंजन आँजिए निज सोइ ।
जेहि अंजन से तिमिर नासे, दृष्टि निरमल होइ ।

वैद सोइ जो पीर मिटावे, बहुरि पीर न होइ।
धेनु सोइ जो आपु स्रवै, दूहिए बिनु नोइ।
अम्बु सोइ जो प्यास मेटे, बहुरि प्यास न होइ।
सरस साबुन सुरति धोविन, मैलि डारे धोइ।
गुरू सोइ जो भ्रम टारै, द्वैत डारै धोइ।
आवागमन के सोच मेटै, सब्द सरूपी होइ।
शिव नारायण एक दरसे, एक तार जो होइ॥

× × ×

तनि एक मनुआँ धरा तू धीर।
पाँच सखी आइल मेरो अँगना, पाँचों का हथवा में पाँच-पाँच तीर।
खइँचब गुन तब छाड़ब तीर, मुदाये मरन कर करो तदबीर।
शिव नारायन चीन्हल वीर, जनम जनम कर मेटल पीर॥

× × ×

सिपाही मन दूर खेलन मत जैये।
घट ही में गंगा घट ही में जमुना, तेहि विच पैठि नहैये।
अछेहो विरिछ की शीतल जुड़छहिया, तेहि तरे बैठि नहैये।
मात पिता तेरे घट ही में, निति उठि दरसन पैये।
शिव नारायन कहि समुझावे, गुरु के सबद हिये कैये॥

× × ×

गुनवा एको नहीं, कैसे मनबो सैया।
गहरी नदिया नाव पुरानी, भइ गइले साँझ समइया।
संग की सखी सब पार उतरि गईं, मैं बपुरिन एहि ठइंया।
शिव नारायन विनती करत है, पार लगा दो मेरी नइया॥

× × ×

प्रेम मंगल आलि सब मिलि गाई।
घर घर कोहबर रुचिर बनाई, जहाँ बैठे दुलहिन दुलहा सोहाई।
सब सखिया मिलि मन मत लाई, दुलहा के रूप देखि कछु न सोहाई।
दुख हरन गुरु सब सुधि पाई, देस चंद्रवार में सुरति लगाई॥

× × ×

वृन्दावन कान्हा मुरली बजाई।
जो जैसहि तैसहि उठि धाई, कुल की लाज गँवाई।
जो न गई सोतो भई है बावरी, समुझि समुझि पछिताई।
गौवन के मुख त्रेन बसत है, बछवा पियत न गाई।
शिव नारायन श्रवण सबद सुनि, पवन रहत अलसाई॥

क़ासिम शाह

मुहमदसाह दिल्ली सुलतानू। का मन गुन ओहि केर बखानू॥
छाजै पाट छत्र सिर ताजू। नावहिं सीस जगत के राजू॥
रूपवंत दरसन मुँह राता। भागवंत ओहि कीन्ह विधाता॥
दरबवंत धरम महँ पूरा। ज्ञानवंत खड़ग महँ सूरा॥

× × ×

दरियावाद माँझ मम ठाउँ। अमानुल्ला पिता कर नाउँ॥
तहवाँ मोहि जनम विधि दीन्हा। कासिम नाँव जाति कर हीना॥
तेहूँ बीच विधि कीन्ह कमीना। ऊँच सभा बैठे चित दीना॥
ऊँच संग ऊँच मन भावा। तब भा ऊँच ज्ञान-बुधि पावा॥
ऊँचा पंथ प्रेम का होई। तेहि महँ ऊँच भए सब कोई।

× × ×

कथा जो एक गुपुत महँ रहा। सो परगट उघारि मैं कहा॥
हंस जवाहिर विधि औतारा। निरमल रूप सो दई सँवारा॥
बलख नगर बुरहान सुलतानू। तेहि घर हंस भए जस भानू॥
आलमशाह चीनपति भारी। तेहि घर जनमी जवाहिर बारी॥
तेहि कारन वह भएउ वियोगी। गएउ सो छांड़ि देस होइ जोगी॥
अंत जवाहिर हंस घर आनी। सो जग महं यह गयउ बखानी॥
सो सुनि ज्ञान-कथा मैं कीन्हा। लिखेउँ सो प्रेम, रहै जग चीन्हा॥

नूरमुहम्मद

नगर एक मूरतिपुर नाऊँ। राजा जीव रहै तेहि ठाऊँ॥
का बरनौं वह नगर सुहावन। नगर सुहावन सब मन भावन॥

इहै सरीर सुहावन मूरतिपूर।
इहै जीव राजा, जिव जाहु न दूर॥

तनुज एक राजा के रहा। अंतःकरन नाम सब कहा॥
सौम्यसील सुकुमार सयाना। सो सावित्री स्वांत समाना॥
सरल सरनि जौ सो पग धरै। नगर लोग सूधे पग परै॥
वक्र पंथ जो राखै पाऊँ। वहै अध्व सब होइ बटाऊ॥

रहे संघाती ताके पत्तन ठावँ।
एक संकल्प, विकल्प सो दूसर नावँ॥

बुद्धि चित्त दुइ सखा सरेखै। जगत बीच गुन अवगुन देखै।
अंतःकरन पास नित आवैं। दरसन देखि महासुख पावै॥

अहंकार तेहि तीसर सखा निरत्र।
रहेउ चारि के अंतर नैसुक अंत्र॥

× × ×

अंतःकरन सदन एक रानी। महामोहनी नाम सयानी॥
बरनि न पारौ सुन्दरताई। सकल सुन्दरी देखि लजाई॥
सर्वमंगला देखि असीसै। चाहै लोचन मध्य बईसै॥
कुंतल झारत फाँदा डारै। चख चितवन सों चपला मारै॥
अपने मंजु रूप वह दारा। रूप गर्विता जगत मँझारा॥
प्रीतम-प्रेम पाइ वह नारी। प्रेम-गर्विता भई पियारी॥

सदा न रूप रहत है अंत नसाइ।
प्रेम, रूप के नासहि तें घटि जाइ॥

× × ×

यह बाँसुरी सुनै सो कोई। हिरदय-स्रोत खुला जेहि होई॥
निसरत नाद वारुनी साथा। सुनि सुधि-चेत रहै केहि हाथा॥
सुनतै जौ यह सवद मनोहर। होत अचेत कृष्ण मुरलीधर॥
यह मुहम्मदी जन की बोली। जामैं कंद नबातैं घोली॥
बहुत देवता को चित हरै। बहु मूरति औंधी होइ परै॥
बहुत देवहरा ढाहि गिरावै। संखनाद की रीति मिटावै॥

जहँ इसलामी मुख सो निसरी बात।
तहाँ सकल सुख मंगल, कष्ट नसात॥

चाचा हित वृन्दावनदास

प्रीतम तुम मो दृगनि बसत हौ।
कहा भरोसो ह्वै पूछत हौ, कै चतुराई करि जु हँसत हौ॥
लीजै परखि स्वरूप आपनो, पुतरिन मे तुमही तौ लसत हौ।
वृन्दावन हित रूप-रसिक तुम, कुन्ज लड़ावत हिय हुलसत हौ॥

× × ×

सोभा केहि विधि बरनि सुनाऊँ।
इक रसना सोऊ लोचन हानी, कहो पार क्यों पाऊँ।
अंग अंग लावन्य माधुरी, बुधि बल किती बताऊँ।
अतुलित सुनत कहि गये क्यों दृग पल रजि धरि जो उचाऊँ।
नव वय संधि दुहुनि नित उलहत जब देखी तब औरे।
यह कौतुक सुन मेरी सजनी चित न रहत इक ठौरे।
लोक न सुनी दृगन नहिं देखी ऐसी रूप निकाई।
मेरी तेरी कहा चली, खग-मृग मति प्रेम विकाई।
कबहूँ गौर स्याम तन, कबहूँ लोचन प्यासे धावै।
कह घटि जात सिह को पंछी जो चोंचन भरि लावै।
सुन्दरता की हद मुरलीधर, बेहद छबि श्रीराधा।
गावै वपु अनंत धरि सारद, तऊ न पूजै साधा।
न्याइ काम करवट ह्वै निकसत, पिय अरु रूप गुमानी।
बृन्दावन हितरूप कियो बस, सो कानन की रानी।

× × ×

भजन भावना होय न परसी, प्रेम नहीं उर कपटी।
कुओं परयो आकाश उड़त खग, ताको करत जु झपटी।
रसिक कहावै कोई जिनके जुगल मिलन की चटपटी।
बृन्दावन हित रूप कहाँ लगि, बरनौं सृष्टि अटपटी।

× × ×

मिठन बोलनी नवल मनिहारी।
भौंहे गोल गरूर है, याके नयन चुटीले भारी।
चूरी लखि मुख ते कहैं, घूँघट में मुसकाति।
ससि मनु बदरी ओट तें, दुरि दरसत यहि भाँति।
चूरो बड़ो है मोल को, नगर न गाहक कोय।
मो फेरी खाली परी, आई सब घर टोय।

श्रीहठी जी

कलपलता के किधौं पल्लव नवीन दोऊ,
हरन मंजुता के कंजताके बनता के हैं।
पावन पतित गुन गावै मुनि ताके छबि,
छलै सविता के जनता के गुरुता के हैं।

नवौ निधिताके सिद्धता के आदि आलै हठी,
तीनौं लोक ताके प्रभुता के प्रभु ताके हैं।
कहै पाप ताकै बढ़ै पुन्य के पताके जिन,
ऐसे पद ताके वृषभानु की सुता के हैं॥

× × ×

कोमल बिमल मंजु कंज से अरुन सोहै,
लच्छन समेत सुभ सुद्ध कंदनी के हैं।
हरी के मनालय निरालय निकारन के,
भक्ति बरदायक बखानै छन्द दीके हैं।
ध्यावत सुरेस संभु सेस औ गनेस, खुले,
भाग अवनी के जहाँ मंद परै नीके हैं।
कटै जन फंद नीय द्वन्दनीय हरि-हर,
वंदनीय चरन वृषभानु नन्दनी के हैं॥

× × ×

कोऊ उमाराज, रमाराज, जमाराज कोऊ,
कोऊ रामचन्द सुख कंद नाम नाथे मैं।
कोऊ ध्यावै गनपति, फनपति, सुरपति कोऊ,
देव ध्याय फल लेत पल आधे मैं।
हठी की अधार निराधार की अधार तू ही,
जप तप जोग जग्य कछुवै न साधे मैं।
कटै कोटि बाधे मुनि धरत समाधे, ऐसे
राधे पद रावरे सदा ही अवराधे मैं॥

× × ×

मोरपखा गर गूँज की माल, किये नव भेष बड़ी छबि छाई।
पीतपटी दुपटी कटि में, लपटी लकुटी 'हठी' मो मन भाई।
छूटी लटैं, डुलैं कुण्डल कान, बजै मुरली-धुनि मंद सुहाई।
कोटिन काम गुलाम भये, जब कान्ह ह्वै भानु-लली बनि आई॥

× × ×

चन्द सो आनन, कंचन सो तन, हौं लखिकैं बिन मोल बिकानी।
औ अरबिन्द सी आँखिन को हठी देखत मेरियै आँखि सिरानी।
राजति है मनमोहन के सँग वारौ मैं कोटि रमा रति वानी।
जोवनमूरि सबै ब्रज की ठकुरानी हमारी है राधिका रानी॥

× × ×

नवनीत गुलाव ते कोमल हैं 'हठी' कंज की मंजुलता इनमें।
गुल लाला गुलाव प्रवाल जपा छवि ऐसी न देखि ललाइनमें।
मुनि - मानस - मंदिर मध्य बसैं, बस होत हैं सूधे सुभाइनमें।
रहु रे मन, तू चित-चाइन सों, वृषभानु - कुमार के पाइनमें॥

× × ×

जाकी कृपा सुक ग्यानी भये, अति दानी औ ध्यानी भये त्रिपुरारी।
जाकी कृपा विधि वेद रचे, भये व्यास पुरानन के अधिकारी।
जाकी कृपा ते त्रिलोकी धनी, सु कहावत श्री व्रज चंद विहारी।
लोक घटा ते हठी को वचाउ, कृपा करि श्री वृषभानु दुलारी॥

× × ×

चन्दन लिपायो चौक, चाँदनी चंदोवे तामें,
चाँदनी विछौना फैली लहर सुगन्ध की।
चाँदनी की साज नीकी चन्द-सम चमकन,
चारयो ओर चन्दमुखी चन्द जोति मंद की।
चाँदनी सों चार चारु चाँदनी सी फैली हठी,
चाँदनी सी हाँसी, कै मिठाई सुधा कंद की।
चन्दन की चौवी वैठी चंदन लगाय भाल,
चन्द से बदन राधे रानी व्रज चन्द की॥

× × ×

हीन हौं अधीन हौं, तिहारो व्रज साहिबिनी,
हिय में मलीन करुना की कोर ढरिए।
भारी भवसागर ते वोरत बचायो मोहि,
काम क्रोध लोभ मोह लागे सव अरिए।
बुरो भलो जैसो तेरे द्वार परयो हौ तौं,
मेरे गुन अवगुन तू मन में न धरिए।
कीरति किसोरी, वृषभानु की दुहाई तोहिं,
लच्छ-लच्छ-लच्छ-भाँति सों हठी को पच्छ करिए॥

× × ×

गिरि कीजै गोधन मयूर कुंजन कौ मोहि,
पसु कीजै महाराज नंद के वगर को।
नर कौन! तौन, जौन राधे राधे नाम रटै,
तट कीजै वर कूल कालिन्दी कगर को।

इतने पै जोई कुछ कीजिए कुँवर कान्ह,
राखिए न आन फेर हठी के झगर को।
गोपी - पद-पंकज - राग कीजै महाराज,
तृन कीजै रावरेई गोकुल नगर को॥

संत भीखा साहब

मन तोहि कहत कहत सठ हारे।
ऊपर और अंतर कछु औरे, नहिं विस्वास तिहारे।
आदिहि एक अन्त पुनि एकै, मद्धवहु एक विचारे।
लवज लवज एहवर ओहवर करि, करम दुइत करि डारे।
विषयारत परपंच अपरवल, पाप पुन्न परचारे।
काम क्रोध मद लोभ मोह कव, चोर चहत उजियारे।
कपटी कुटिल कुमति त्रिभिचारी, हो वाको अधिकारे।
महा निलज कछु लाज न तोको, दिन दिन प्रति मोहि जारे।
पाँच पचीस तीन मिलि चाह्यो, वनलिउ बात विगारे।
सदा करेहु बैपार कपट को, भरम बजार पसारे।
हम मन ब्रह्म जीव तुम आतम, चेतन मिलि तन धारे।
सकल दोस हमको काहे दइ, होन चहत हौ न्यारे।
खोलि कहौ तौरंग नहिं फेर्यो, यह आपुहि महिमारे।
विन फेरे कछु भयो न ह्वै है, हम का करहि विचारे।
हमरी रुचि जग खेल खेलौना, वालक साझ सवारे।
पिता अनादि अरख नहि मानहि, राखत रहहि दुलारे।
जप तप भजन सकल है विरथा, व्यापक जवहि विसारे।
भीखा लखहु आपु आतम कहँ, गुनना तजहु खमारे॥

× × ×

मन तू राम सो लौ लाव।
त्यागि के परपंच माया, सकल जग को चाव।
साँच की तू चाल गहिले, झूठ कपट बहाव।
रहनिसों लवलीन ह्वै, गुरु ज्ञान ध्यान जगाव।
जोग की यह सहज जुक्ति, विचारि कै ठहराव।
प्रेम प्रीति सो लागि के, घट सहज ही सुख पाव।
दृष्टितें आदृष्टि देखो, सुरति निरति वसाव।
आतमा निर्धार निर्भौ वानि, अनुभव गाव।

अचल अस्थिर ब्रह्म सेवो, भाव चित अरुझाव ।
भीखा फेरि न कबहुँ पैहौ, बहुरि ऐसो दाव ॥

× × ×

मोहि डाहतु है मन माया ।
एकै सब्द ब्रह्म फिरि एकै, फिरि एकै जग छाया ।
आतम जीव करम अरुझाना, जड़ चेतन बिलमाया ।
परमारथ को पीठ दियो है, स्वारथ सनमुख धाया ।
नाम नित्य तजि अनितै भावै, तजि अमृत बिष खाया ।
सतगुरु कृपा कोऊ कोउ बाँचै, जो सोधै निज काया ।
भीखा यह जग रतो कनक पर, कामिनि हाथ बिकाया ॥

× × ×

मनुवा नाम भजत सुख लीया ।
जनम जनम के उरझनि पुरझनि, समुझत करकत हीया ।
यह तौ माया फाँस कठिन है, का धन सुत वित तीया ।
सत्त सब्द तन सागर माही, रतन अमोलक पीया ।
आपा तेजि धँसै सो पावै, लै निकसै मरजीया ।
सुरति निरति लौलीन भयो जब, दृष्टि रूप मिलि थीया ।
ज्ञान उदित कल्पद्रुम को तरु, जुक्ति जमावो बीया ।
सतगुरु भये दयाल ततच्छिन, करना था सो कीया ।
कहै भीखा परकासी कहिये, घर अरु बाहर दीया ॥

× × ×

प्रीति की यह रीति बखानौ ।
कितनौ दुख सुख परै देह पर, चरन कमल कर ध्यानौ ।
हो चैतन्य बिचारि तजो भ्रम, खांड धूरि जनि सानौ ।
जैसे चात्रिक स्वाति बूंद बिनु, प्रान समर्पन ठानौ ।
भीखा जेहि तन राम भजन नहिं, काल रूप तेहि जानौ ॥

× × ×

कहा कोउ प्रेम बिसाहन जाय ।
महँग बड़ा गथ काम न आवै, सिरके मोल बिकाय ।
तन मन धन पहिले अरपन करि, जग के सुख न सोहाय ।
तजि आपा आपुहिं ह्वै जावै, निज अनन्य सुखदाय ।
यह केवल साधन को मत है, ज्यों गूंगे गुड़ खाय ।
जानहि भले कहै सो कासों, दिल की दिलहिं रहाय ।

बिनु पग नाच नैन बिनु देखै, बिनु करताल बजाय।
बिनु सरवन धुनि सुनै विविध विधि, बिन रसना गुन गाय।
निरगुन में गुन क्योंकर कहियत, व्यापकता समुदाय।
जहाँ नाहिं तहँ सब कछु दिखियत, अँधरन की कठिनाय।
अजपा जाप अकथ को कथनों, अलख लखन किन पाय।
भीखा अविगति की गति न्यारी, मन बुधि चित न समाय॥

संत रामचरन

रमइया मोरि पलक न लागै हो।
दरस तुम्हारे कारणै, निसिबासर जागै हो।
दसूं दिशा जातर करूँ, तेरो पंथ निहारूँ हो।
राम राम की टेर दे, दिन रैण पुकारूँ हो।
नैन दुखी दीदार बिन, रसना रस आशै हो।
हिरदो हुलसै हेतकूं, हरि कब परकाशै हो।
स्वाति बूंद चातक रटै, जल और न पीवै हो।
घन आशा पूरै नहीं, तो कैसे जीवै हो।
दास की या अरदास सुण, पिया दरसन दीजै हो।
राम चरण विरहिन कहै, अब विलम न कीजै हो॥

× × ×

निस्प्रेही, निरवैरता, निराकार, निरधार।
सकल सृष्टि में रमि रह्यो, ताको सुमिरन सार॥
ताको सुमिरन सार, राम सो ताहि भणीजै।
दृष्टि मुष्टि आकार रूप माया ज गिणीजै॥
रामचरण व्यापक व्योम ज्यों, ताको सुमिरन सार।
निस्प्रेही, निरवैरता, निराकार, निरधार॥

× × ×

जिज्ञासू जरणाँ लिया, संजम राखै मन्न।
धर्म माँहि धारा सदा, तन को नाहिं जतन्न॥
तन को नाहिं जतन्न, अन्न जल संजम लेवै।
राम भजन में निरत, नित्य निर्मल जल सेवै॥
राम चरण में धारणा, कहा ग्रेही कहा वन्न।
जिज्ञासू जरणाँ लिया, संजम राखै मन्न॥

× × ×

इतना चाहिये साधु कों, छाजन भोजन नीर।
राम चरण एता अधिक, ले सो नहीं फकीर॥
ले सो नहीं फकीर, भार काहे सिर धरिये।
आतम भाड़ा देय, राम का सुमिरण करिये॥
जगत छाँड़ि ऐसी करी, ज्यां परस्या पूरा पीर।
इतना चाहिये साधु कों, छाजन भोजन नीर॥

× × ×

साधू सुमिरे राम, काम माया से नांही।
छाजन भोजन हेतु बसै, नहिं दुनिया मांही।
पर इच्छा की भीख, पाय बरते निज देहा।
अपणा निज घर छाँड़ि, करै नहिं पर घर नेहा॥
आशा बांध्या ना फिरै, विचरै सहज सुभाय।
राम चरण ऐसा जती, राम कृपा से पाय॥

× × ×

आनँदघन सुखराशि, चिदानंद कहिये स्वामी।
निरालंब निरलेप, अकल हरि अन्तरयामी॥
वार पार मधि नाहिं, कूंन विधि करिये सेवा।
नहिं निराकार आकार, अजन्मा अवगत देवा॥
राम चरण वन्दन करै, अलह अखंडित नूर।
सूक्ष्म स्थूल खाली नहीं, रह्यो सकल भरपूर॥

× × ×

राम राम मुख गाय, ब्रह्म का पद कूं पायो।
जैसे सरिता नीर धाय, धुरि समंत समायो॥
जल की उत्पति लोण, उलटि अपणो पद पायो।
पालो पाणीं महिं गल्या, नाहिं दूजा दरसायो॥
ज्यों जलकेरा बुदबुदा, जल से न्यारा नाहिं।
राम चरण दरियाव को, लहरयां दरियां माहिं॥

× × ×

विरह घटा घरात नैंण नीझर झरै।
चित्त चमंके बीज कि हिरदो ओल्हरै॥
विरहिन है बेहाल दया कर न्हालियो।
परिहां, राम चरण कूँ राम वेग सम्हालियो॥

विरहा कर ले करद कलेजा काटिहै।
पीव न सुणै पुकार कि हिवरा फाटिहै॥
सबै बटाऊ लोग न पूछै पीडरे।
परिहां, राम चरण बिन राम करै कुण भीडरे॥
बिरह सपीड़ा सास वहै उर करद रे।
घाव गयो है फाटि बध्यो अति दरद रे॥
निस दिन करे पुकार वैद्य हरि आवही।
परिहां, राम चरण विन राम भरै नहिं पावही॥
सूई कर निज सार सूर हित कीजिये।
अपना हाथां आप घाव सी लीजिये॥
अब नहिं कीजै ढील घाव अति विस्तरे।
परिहां, राम चरण वेहाल विरहनी दुखभरे॥
गुरां बताया निकट दूर कैसे भया।
मोहा माया की बाड आसरे होय रह्या॥
मैं निर्बल निरधार न टूटे वाड़ जी।
परिहां, तुम समर्थ बल जोर की पड़दा फाड़ जी॥

संत रामरहस दास

प्रभुजी तुम बिन कौन छुड़ावै।
महा कठिन यम जाल फाँस है, तासों कौन बचावै।
नाना फाँस फँसाय जीव को, अपनो रूप छिपावै।
पंच कोश है परगट आसे, तेहि को कौन लखावै।
आपुहि एक अनेक कहावै, त्रिविध सरूप बनावै।
सन्निपात होय दुष्ट सो, परलय अन्त दिखावै।
विषय विकार जगत अरुझावै, जहाँ तहाँ भटकावै।
योग ध्यान विगुर्चन भारी, ताहि सुरति अटकावै।
आस नाम नौका बैठावै, भव की धार बहावै।
तत्वमसी कहि ताहि डुबावै, अन्त कोइ नहिं पावै।
चारि मुक्ति जोइनि चौरासी, तेहि मिलि हेत बढ़ावै।
नेम धर्म पूजा औ संजम, बहुबिधि लागि लगावै।
भेष अलेख करे को पावै, जीवहि चैन न आवै।
चार वेद षट अष्ट दसों लौं, शून्यहि शन्य समावै।

काल चक्र वसि उत्पति परलय, जीव दुसह दुख पावै ।
साहेब दया कीन्ह परखाये, राम रहस गुण गावै ।।

× × ×

द्वन्द्वज सत्य असत्य को, जहाँ नहीं कुछ लेश ।
सो प्रकाश के गुरु परख है, मेटत सकल कलेश ।।
प्रथमहि शब्द सुधारिके, टारे त्रयविध जाल ।
झांई मेटत संधिको, ऐसो शरण दयाल ।।
राम रहस साहब शरण, अभय अशंक उदोत ।
आवागमन की गम नहीं, भोर साँझ नहिं होत ।।

संत पलटू साहब

गगन कि धुनि जो आनई, सोई गुरु मेरा ।
वह मेरा सिरताज है, मैं वाका चेरा ।।
सुन में नगर वसावई, सूतत में जागै ।
जल में अगिन छुपावई, संग्रह में त्यागै ।।
जंत्र विना जंत्री बजै, रसना विनु गावै ।
सोहे सब्द अलापि कै, मन को समुझावै ।।
सुरति डोर अमृत भरै, जहँ, कूप अरध-मुख ।
उलटै कमलहिं गगन में, तब मिलै परम सुख ।।
भजन अखंडित लागई, जस तेल कि धारा ।
पलटू दास दंडौत करि, तेहि बारम्बारा ।।

× × ×

ऐसी कुदरति तेरी साहिब, ऐसी कुदरति तेरी है ।
धरती नभ दुइ भीत उठाया, तिसमें घर इक छाया है ।
तिस घर भीतर हाट लगाया, लोग तमासे आया है ।
तीन लोक फुलवारी तेरी, फूलि रही विनु माली है ।
घट घट बैठा आपै सींचै, तिल भर कहीं न खाली है ।
चारि खान औ भुवन चतुरदस, लख चौरासी वासा है ।
आलम तोहि तोहि में आलम, ऐसा अजब तमासा है ।
नटवा होइ कै बाजी लाया, आपुइ देखन हारा है ।
पलटू दास कहौं मैं कासे, ऐसा यार हमारा है ।।

× × ×

प्रेम वान जोगी मारल हो, कसकै हिया मोर।
जोगिया कै लालि लालि अँखिया हो, जस कमल के फूल।
हमारी सुरुख चुनरिया हों, दूनो भये समतूल ॥
जोगिया के लेउ मिर्गछलवा हो, आपन पट चीर।
दूनों के सियब गुदरिया हो, होइ जाव फकीर ॥
गगना में सिंगिया बजाइन्हि हो, ताकिन्हि मोरी ओर।
चितवनि में मन हरि लियो हो, जोगिया बड़ चोर ॥
गंग जमुन के बिचवां हो, बहै झिरहिर नीर।
तेहि ठैयाँ जोरल सनेहिया हो, हरि लै गयो पीर ॥
जोगिया अमर मरै नहिं हो, पुजवल मोरी आस।
करम लिखा वर पावल हो, गावै पलटू दास ॥

× × ×

हम भजनीक में नाहीं अवधू, आँखि मूँदि नहिं जाहीं।
इक भजनीक भजन है इकठो, तब वह भजन में जावै।
भजनी भजन एक भा दूनो, वाके भजन न आवै ॥
खसम की मजा परी है जिनको, सो क्या नैहर आवै।
हुमा पच्छी रहै गगन में, वाके जगत न भावै ॥
बुंद परा सागर के माँही, वह ना बुंद कहावै।
लोन की डेरी पानी में, कहवाँ से फिर पावै ॥
तेल की धार लगी निसि वासर, जोति में जोति समानी।
पलटू दास जो आवै जावै, सो चौथाई ज्ञानी ॥

× × ×

कौन करै बनियाई मेरी, कौन करै बनियाई।
त्रिकुटी में न भरती मेरी, सुखमन में है गादी।
दसयें द्वारे कोठी मेरी, बैठा पुरुष अनादी ॥
इँगला पिंगला पलरा दूनौं, लागि सुरति की जोती।
सत्त सब्द की डांडी पकरौं, तौलौं भरि भरि मोती ॥
चाँद सुरुज दोउ करैं रखवारी, लागी तत्त की ढेरी।
तुरिया चढ़ि के बेचन लागे, ऐसी साहिबी मेरी ॥
सतगुरु साहब किहा सिपारस, मिली राम मोदियाई।
पलटू के घर नौबत बाजै, निति उठि होत सवाई ॥

× × ×

साहिब साहिब क्या करै साहिब तेरे पास ।
साहिब तेरे पास याद करु होवै हाजिर ।
अन्दर धँसिकै देखु मिलेगा साहिब नादिर ॥
मान मनी हो फना नूर तब नजर में आवै ।
बुरका डारै टारि खुदा बाखुद दिखरावै ॥
रूह करे मेराज कुफर का खोलि कुलावा ।
तीसौ रोजा रहै अन्दर में सात रिकावा ॥
लामकान में रब्ब को पावै पलटू दास ।
साहिब साहिब क्या करै साहिब तेरे पास ॥

× × ×

लहना है सतनाम का जो चाहै सो लेय ।
जो चाहै सो लेय जायगी छूट ओराई ।
तुमका लुटिहौ यार गाँव जब दहिहैं लाई ॥
ताकै कहा गँवार मोट भर बाँध सितावी ।
लूट में देरी करै ताहिं की होय खराबी ॥
बहुरि न ऐसा दाव नहीं फिर मानुष होना ।
क्या ताकै तू ठाढ़ हाथ से जाता सोना ॥
पलटू मैं उतृन भया मोर दोस जिन देय ।
लहना है सतनाम का जो चाहै सो लेय ॥

× × ×

रन का चढ़ना सहज है मुसकिल करना योग ।
मुसकिल करना योग चित्त को उलटि लगावै ।
विषय वासना तजै प्रान ब्रह्मांड चढ़ावै ॥
साधै वायू प्रान कुण्डली करै उथपना ।
अष्ट कँवल दल उलटि कँवल दल द्वादस लखना ॥
इँगला पिंगला सोधि बंक के नाल चढ़ावै ।
चार कला को तोड़ि चक्र षट जाय बिंधावै ॥
पलटू जो संजम करै करै रूप से भोग ।
रन का चढ़ना सहज है मुसकिल करना योग ॥

× × ×

आठ पहर निरखत रहै जैसे चन्द चकोर ।
जैसे चन्द चकोर पलक से टारत नाहीं ।
चुगै विरह से आग रहै मन चन्दै माहीं ॥

फिरै जेही दिसि चन्द तेही दिसि को मुख फेरै।
चन्दा जाय छिपाय आग के भीतर हेरै॥
मधुकर तजै न पदम जान से जाइ बँधावै।
दीपक में ज्यों पतँग प्रेम से प्रान गँवावै॥
पलटू ऐसी प्रीति कर परधन चाहै चोर।
आठ पहर निरखत रहै जैसे चन्द चकोर॥

× × ×

आसिक का घर दूर है पहुँचै विरला कोय।
पहुँचै विरला कोय होय जो पूरा जोगी।
बिंद करै जो छार नाद के घर में भोगी॥
जीते जी मरि जाय मुए पर फिरि उठि जागै।
ऐसा जो कोइ होय सोइ इन बातन लागै॥
पुरजै पुरजै उड़ै अन्न बिनु बस्तर पानी।
ऐसे पै ठहराय सोई महबूब बखानी॥
पलटू आपु लुटावही काला मुँह जब होय।
आसिक का घर दूर है पहुँचै विरला कोय॥

× × ×

धुबिया फिर मर जायगा चादर लीजै धोय।
चादर लीजै धोय मैल है बहुत समानी।
चल सतगुर के घाट भरा जहँ निर्मल पानी॥
चादर भई पुरानि दिनो दिन बार न कीजै।
सत संगत में सौंद ज्ञान का साबुन दीजै॥
छूटै कलमल दाग नाम का कलप लगावै।
चलिये चादर ओढ़ि बहुरि नहिं भौजल आवै॥
पलटू ऐसा कीजिए मन नहिं मैला होय।
धुबिया फिर मर जायगा चादर लीजै धोय॥

× × ×

साहिब वही फकीर है जो कोइ पहुँचा होय।
जो कोइ पहुँचा होय नूर का छत्र विराजै।
सब्र तख्त पर बैठि तूर अठपहरा बाजै॥
तम्बू है असमान जमी का फर्श बिछाया।
छिमा किया छिड़काव खुशी का मुस्क लगाया॥
नाम खजाना भरा जिकिर का नेजा चलता।
साहिब चौकीदार देखि इबलीसहु डरता॥

पलटू दुनिया दीन में उनसे वड़ा न कोय।
साहिब वही फकीर है जो कोइ पहुँचा होय॥

× × ×

फाका जिकिर किनात ये तीनो वात जगीर।
तीनो वात जगीर खुशी की कफनी डारै।
दिल को करै कुसाद आई भी रोजी टारै॥
इवादत दिन रात याद में अपनी रहना।
खुदी खूव की खोय जनाजा जियतै करना॥
सीकन्दर औ गदा दोऊ को एकै जानै।
तव पावै टुक नसा फना का प्याला छानै॥
पलटू मस्त जो हाल में तिसका नाम फकीर।
फाका जिकिर किनान ये तीनो वात जगीर॥

× × ×

उलटा कूवा गगन में तिसमें जरै चिराग।
तिसमें जरै चिराग विना रोगन विन वाती।
छः रितु बारह मास रहत जरतै दिन राती॥
सतगुरु मिला जो होय ताहि की नजरि में आवै।
विन सतगुरु कोउ होय नही वाको दरसावै॥
निकसै एक अवाज चिराग की जोतिहि माहीं।
ज्ञान समाधी और कोउ सुनता नाहीं॥
पलटू जो कोऊ सुनै ताके पूरे भाग।
उलटा कूवा गगन में तिसमें जरै चिराग॥

× × ×

बंसी वाजी गगन में मगन भया मन मोर।
मगन भया मन मोर महल अठवें पर बैठा।
जहँ उठै सोहंगम सब्द सब्द के भीतर पैठा॥
नाना उठै तरंग रंग कछु कहा न जाई।
चाँद सुरज छिपि गये सुषमना सेज बिछाई॥
छूटि गया तन येह नेह उनहीं से लागी।
दसवाँ द्वारा फोड़ि जोति वाहर ह्वै जागी॥
पलटू धारा तेल की मेलत ह्वै गया भोर।
बंसी वाजी गगन में मगन भया मन मोर॥

× × ×

खसम मुवा तो भल भया सिर की गई बलाय।
सिर की गई बलाय बहुत सुख हमने माना।
लागे मंगल होन बजन लागे सदियाना॥
दीपक बरे अकास महल पर सेज बिछाया।
सूतों महीं अकेल खबर जब मुए की पाया।
सूतौं पाँय पसारि भरम की डोरी टूटी।
मने कौन अब करे खसम बिनु दुविधा छूटी॥
पलटू सोइ सुहागिनी जियतै पिय को खाय।
खसम मुवा तो भल भया सिर की गई बलाय॥

× × ×

पिय को खोजन मैं चली आपुइ गई हिराय।
आपुइ गई हिराय कवन अब कहे सँदेसा।
जेकर पिय में ध्यान भई वह पिया के भेसा॥
आगि माँहि जो परै सोऊ अग्नी ह्वै जावै।
भृङ्गी कीट को भेंटि आपु सम लेइ बनावै॥
सरिता बहि के गई सिन्धु में रही समाई।
सिव सक्तीं के मिले नहीं फिर सक्ती आई॥
पलटू दीवाल कहकहा मत कोउ झाँकन जाय।
पिय को खोजन मैं चली आपुहि गई हिराय॥

× × ×

अपनी ओर निभाइये हारि परै की जीति।
हारि परै की जीति ताहि की लाज न कीजै।
कोटिन बहै बयारि कदम आगे को दीजै॥
तिल तिल लागै घाव खेत से टरना नाहीं।
गिरि गिरि उठै सम्हारि सोई है मरद सिपाही॥
लरि लीजै भरि पेट कानि कुल अपनी न लावै।
उनकी उनके हाथ बड़न से सब बनि आवै॥
पलटू सतगुरु नाम से साँची कीजै प्रीति।
अपनी ओर निभाइये हारि परै की जीति॥

× × ×

पलटू ऐसी प्रीति करु, ज्यों मजीठ को रंग।
टूक टूक कपड़ा उड़ै, रंग न छोड़ै संग॥
लगा जिकिर का बान है, फिकिर भई छयकार।
पुरजे पुरजे उड़ि गया, पलटू जीति हमार॥

बखतर पहिरे प्रेम का, घोड़ा है गुरु ज्ञान।
पलटू सुरति कमान ले, जीति चलै मैदान ॥
आठ पहर लागी रहै, भजन तेल की धार।
पलटू ऐसे दास को, कोउ न पावै पार ॥
जैसे काठ में अगिन है, फूल में है ज्यों बास।
हरिजन में हरि रहत है, ऐसे पलटू दास ॥
साध परखिये रहनि में, चोर परखिये रात।
पलटू सोना कसे में, झूठ परखिये बात ॥
पलटू तीरथ को चला, बीचे मिलिगे संत।
एक मुक्ति के खोजते, मिलि गइ मुक्ति अनंत ॥
पलटू गुनना छोड़िदे, लहै जो आतम सुक्ख।
संसय सोइ संसार है, जरा मरन को दुक्ख ॥
मरने वाला मरि गया, रोवै सो मरि जाय।
समझावै सोभी मरै, पलटू को पछिताय ॥
चारि बरन को मेटि कै, भक्ति चलाया मूल।
गुरु गोविन्द के बाग में, पलटू फूला फूल ॥

संत तुलसी साहब

बरसे रस धारा गगन घटा ॥
उमँड़ि घुमँड़ि बदरी घन गरजै, बीज कडक मानो अगिनि अटा ॥
मै तो खड़ी पिय पौर किवारी, महल लखन मन मगन नटा ॥
गिरत परत गइ अधर अटारी, चढ़ि विष नागिनि लगन लटा ॥
झँझरी परखि हरखि पिउ प्यारी, निरखि परखि पद पग न हटा ॥
सुख मनि सुन्न जोति त्रिकुटी में, तुलसि दरद दिल दगन मिटा ॥

× × ×

सुरति मतवाली करत कलोल।
पलँगा साजि सजी पिउ प्यारी, पिय रस गाँठ दई सब खोल ॥
गहिगहि बाँह गले बिच डाली, धार धरनि कोर कीन्हि अडोल ॥
झमक चढ़ी हिये हेर अटारी, न्यारी निरखि सुना इक बोल ॥
पछिम दिसा दिस खोलि किवारी, पिय पद परसत भई री अमोल ॥
तुलसी जगत जाल सब जारी, डारी डगर बेदन की पोल ॥

× × ×

एरी सिखर पर सुरत समानी, संत लखन पद पार री ।।
जोगी जोति होत लखि जानै, पाँचोइ तत्त पसार री ।।
पासे सार संत गति न्यारी, पारे परखि निहार री ।।
तुलसी तोल बोल जब पावे, करैं कृपा निरधार री ।।

× × ×

बिन डगर मियाँ कहँ जाते हो ।
खलक खुदी संग भूलि परे, परदेसी देस न पाते हो ।।
धक धक होता अन्दर में दिल, सुभा भरम भय खाते हो ।।
कुछ खोज खबर नहिं रखते हो, नित नई नियामत चखते हो ।।
मियाँ ज़ेर ज़बर तक धीर धरो, दिल पाक बदन होय होस करो ।।
भव भटकि भटकि दुख पाते हो ।।
कुछ इलम इबादत कूँ जानो, ये सरा समझ को पहिचानो ।
मियाँ आप खुदी खुद खूब नहीं, यह मुरसिद फिर नाचीज़ कहाँ ।
बद बेवफ़ा चित चहाते हो ।।
हर वख्त तबाही सहते हो, हुरमत लज्जा सब खोते होते ।
कर होस अदल बिच जागोगे, जब कुफर कूर से भागोगे ।
इक इसम बिना लौ लाते हो ।।
तुलसी तवक्को करलेरे, यह जुलमी काफिर कर जेरे ।
पिउ अदल मुरीदी लाओगे, वे मझब हकीकत गाते हो ।।

× × ×

अरे किताब कुरान को खोजले ।
अलह अल्लाह खुद खुदा भाई ।।
कौन मक्कान महजीत मस्सीत में ।
जिमी असमान बिच कौन ठाँई ।।
हर वख्त रोजा निमाज और बाँग दे ।
खुदा दीदार नहिं खोज पाई ।।
खोजते खोजते खलक सब खप गया ।
टेक ही टेक खुद खुदी खाई ।।
दास तुलसी कहै खुदा खुद आप है ।
रूह से निरख दिल देख जाई ।।

× × ×

अगम इक चौज में मौज न्यारी लखो ।
अंड बिच निरख ब्रह्माण्ड सारा ।।

सुरति की सैल नित महल में बस रही।
निकरि पट खोल गई गगन पारा ॥
अकल औ सकल लख लोक न्यारी भई।
गई घर अधर पर सुरति लारा ॥
आद औ अंत घर संत पहिचानिया।
दास तुलसी अज अमर न्यारा ॥

× × ×

सब्द सब्द सब कहत हैं, सब्द सुन्न के पार।
सब्द सुन्न के पार, सार सोइ सब्द कहावै।
पच्छिम द्वार के पार, पार के पार समावै ॥
दो दल कँवल मँझार, मद्ध के मधि में आवै।
संतन दिया लखाय, सार सोइ सब्द कहावै ॥
तुलसी सत सत लोक से, कहुँ कुछ भेद निनार।
सब्द सब्द सब कहत हैं, सब्द सुन्न के पार ॥

× × ×

यह जग विरले बूझियाँ, चौथे पद मतसार।
चौथे पद मतसार, लार संतन के पावै।
कोटिन करे उपाव, लखन में कबहुं न आवै ॥
लख अलक्ख औ खलक, खोज कोइ चिन्ह न आवै।
सतगुरु मिलैं दयाल, भेद छिन में दरसावैं ॥
तुलसी अगम अपार जो, को लखि पावै पार।
यह गत विरले बूझियाँ, चौथे पद मत सार ॥

× × ×

अन्दर की आँखी नहीं, बाहर की गइ फूटि।
बिन सत गुरु औघट बहै, कभी न बंधन छूटि ॥
उत्तम औ चाडाल घर, जहँ दीपक उजियार।
तुलसी मते पतंग के, सभी जोत इक सार ॥
मकरी उतरै तार से, पुनि गहि चढ़त जो तार।
जाका जांसो मन रम्यो, पहुँचत लगै न बार ॥
सूरज बसै आकास में, किरन भूमि पर बास।
जो अकास उलटे चढ़ै, सो सत गुरु का दास ॥
जल मिसरी कोइ ना कहै, सर्बत नाम कहाय।
यों घुल के सत संग करै, काहे भर्म समाय ॥
सुरत सिखर अन्दर खड़ी, चढ़ी जो दीपक बार।
आतम रूप अकास का, देखै विमल बहार ॥

तुलसी मैं तू जो तजै, भजै दीन गति होय।
गुरु नवै जो सिष्य को, साध कहावै सोय॥
मन तरंग तन में चलै, आठो पहर उपाव।
थाह कधी पावै नहीं, छिन छिन छल परभाव॥
जल ओला गोला भयो, फिर घुलि पानी होय।
संत चरन गुरु ध्यान से, मन घुलि जावै सोय॥
सूप ज्ञान सज्जन गहै, फूकर देत निकार।
सार हिये अन्दर धरै, पल पल करत विचार॥

बेनी प्रवीन

कालिह ही गूँधी बबा की सौं मैं गजमोतिन की पहिरी अति आला।
आई कहाँ ते यहाँ पुखराज की, संग एई जमुना तट बाला।
न्हात उतारी हौं वेनी प्रबीन, हँसै सुनि बैनन नैन रसाला।
जानति ना अँग को बदली सब सो बदली बदली कहै माला॥

× × ×

जान्यो न मैं ललिता अलि ताहि जो सोवत माँहि गई करि हाँसी।
लाए हिए नख केहरि के सम, मेरी तऊ नहिं नींद विनासी।
लै गई अम्बर वेनी प्रवीन ओढ़ाय लटी दुपटी दुखरासी।
तोरि तनी तन छोरि अभूषन भूलि गयी गर देन को फाँसी॥

× × ×

भोरि ही न्योत गई थी तुम्हें वह गोकुल गाँव की ग्वालिन गोरी।
आधिक राति लौं वेनी प्रवीन कहा ढिग राखि करी बरजोरी।
आवै हँसी मोहि देखत लालन, भाल मे दीन्हीं महावर घोरी।
एते बड़े ब्रजमंडल में न मिली कहुँ माँगेहु रंचक रोरी॥

× × ×

घनसार पटीर मिलै मिलै नीर चहै तन लावै न लावै चहै।
न बुझै विरहागिन झार झरी हू चहै घन लावै न लावै चहै।
दम टेरि सुनावती वेनी प्रवीन चहै मन लावै न लावै चहै।
अब आव विदेस से प्रीतम गेह, चहै धन लावै न लावै चहै॥

रसिक गोविन्द

चकित भूप बानी सुनत गुरु वशिष्ठ समुझाय।
दिए पुत्र तब, ताड़का मग में मारी जाय॥

छाँड़त सर मारिच उड़्यो पुनि प्रभु हत्यो सुबाह ।
सुनि मख पूरन सुमन सुर बरसत अधिक उछाह ॥

× × ×

मुकलित पल्लव फूल सुगन्ध परागहि झारत ।
जुग मुख निरख विपिन जनु राई लोन उतारत ॥
फूल फलन के भार डार झुकि यों छवि छाजे ।
मनु पसारि दइ भुजा देन फल पथिकन काजे ॥
मधु मकरन्द पराग लुब्ध अलि मुदित मत्त मन ।
विरद पढ़त ऋतुराज नृपति के गुन वन्दीजन ॥

प्रतापसाहि

सीख सिखाई न मानति है, बर ही बस संग सखीन के आवै ।
खेलत खेल नए जल में, बिना काम वृथा कत जाम वितावै ।
छोड़ि कै साथ सहेलिन को, रहि कै कहि कौन सवादहि पावै ।
कौन परी यह बानि, अरी ! नित नीर भरी गगरी ढरकावै ॥

× × ×

चंचलता अपनी तजि के रस ही रस सों रस सुन्दर पीजियो ।
कोऊ कितेक कहै तुमसो तिनकी कही बातन को न पतीजियो ।
चोज चवाइन के सुनियो न, यही इक मेरी कही नित कीजियो ।
मंजुल मंजरी पैहौ मलिन्द ! विचारि कै भार सम्भारि कै दीजियो ॥

× × ×

कानि करै गुरु लोगिन की, न सखीन की सीखन ही मन लावति ।
ऐंड़ भरी अँगराति खरी, कत घूँघट में नए नैन नचावति ।
मंजन कै दृग अंजन आँजति, अंग अनंग उमंग बढ़ावति ।
कौन सुभाव री तेरो पर्‌यो, खिन आँगन में, खिन पौरि में आवति ॥

× × ×

तड़पै तड़िता चहुँ ओरन तें, छिति छाई समीरन की लहरैं ।
मदमाते महागिरि शृंगन पै, गन मंजु मयूरन की कहरैं ।
इनकी करनी बरनी न परै, मगरूर गुमानन सो गहरैं ।
घन ये नभ मंडल में छहरैं, घहरैं कहुँ जाय कहूँ ठहरैं ॥

बैताल

मरै बैल गरियार, मरै वह अड़ियल टट्टू।
मरै करकसा नारि, मरै वह खसम निखट्टू॥
बाँभन सो मरि जाय, हाथ लै मदिरा प्यावै।
पूत वही मरि जाय, जो कुल में दाग लगावै॥
अरु बेनियाव राज मरै, तबै नींद भर सोइए।
बैताल कहै विक्रम सुनो, एते मरे न रोइए॥

× × ×

टका करै कुल हूल, टका मिरदंग बजावै।
टका चढ़ै सुखपाल, टका सिर छत्र धरावै॥
टका माय अरु बाप, टका भैयन को भैया।
टका सास अरु ससुर, टका सिर लाड़ लड़ैया॥
अब एक टके बिनु टकटका, रहत लगाये रात दिन।
बैताल कहै विक्रम सुनो, धिक जीवन एक टके बिन॥

× × ×

चोर चुप्प ह्वै रहै, रैन अँधिकारी पाये।
संत चुप्प ह्वै रहै, मढ़ी में ध्यान लगाये॥
बधिक चुप्प ह्वै रहै, फाँस पंछी लै आवै।
छैल चुप्प ह्वै रहै, सेज पर तिरिया पावै॥
वर पिपर पात हस्ती श्रवन, कोइ कोइ कवि कुछ कुछ कहैं।
बैताल कहै विक्रम सुनो, चतुर चुप्प कैसे रहैं॥

× × ×

ससि बिन सूनी रैन ज्ञान बिन हिरदै सूनो।
कुल सूनो बिनु पुत्र पत्र बिन तरुवर सूनो॥
गज सूनो इक दन्त ललित बिन सायर सूनो।
विप्र सून बिन वेद और बिन पुहुप बिहूनो॥
हरिनाम भजन बिन संत अरु घटा सून बिन दामिनी।
बैताल कहै विक्रम सुनो पति बिन सूनी कामिनी॥

× × ×

जीभि जोग अरु भोग, जीभि बहु रोग बढ़ावै।
जीभि करै उद्योग, जीभि लै कैद करावै॥

जीभि स्वर्ग लै जाय, जीभि सब नरक दिखावै।
जीभि मिलावै राम, जीभि सब देह धरावै॥
निज जीभि ओट एकग्र करि बॉट सहारे तोलिये।
बैताल कहै विक्रम सुनो जीभि सँभारे बोलिये॥

× × ×

राजा चंचल होय मुलुक को सर करि लावे।
पंडित चंचल होय सभा उत्तर दै आवै॥
हाथी चंचल होय समर में सूँड़ि उठावै।
घोड़ा चंचल होय झपटि मैदान देखावै॥
हैं ये चारों चंचल भले राजा पंडित गज तुरी।
बैताल कहै विक्रम सुनो तिरिया चंचल अति बुरी॥

× × ×

दया चट्ट ह्वै गई धरम धँसि गयो धरन में।
पुन्य गयो पाताल पाप भो बरन बरन में॥
राजा करै न न्याय प्रजा की होत खुवारी।
घर घर में पेपीर दुखित भे सब नर नारी॥
अब उलटि दान गजपति मँगै सील सँतोष किंतै गयो।
बैताल कहै बिक्रम सुनो यह कलजुग परगट भयो॥

× × ×

मर्द सीस पर नवै मर्द बोली पहिचानै।
मर्द खिलावै खाय मर्द चिन्ता नहिं मानै॥
मर्द देय औ लेय मर्द को मर्द बचावै।
गाढ़े सँकरे काम मर्द के मर्दै आवै॥
पुनि मर्द उनहि को जानिये दुख सुख साथी दर्द के।
बैताल कहै विक्रम सुनो लच्छन हैं ये मर्द के॥

गुणमंजरीदास

हमारे धन स्यामा जू को नाम।
जाकौ रटत निरंतर मोहन, नंद नँदन घन स्याम॥
प्रति दिन नव-नव महामाधुरी, बरसति आठौ जाम।
गुनमंजरी नवकुन्ज मिलावैं, श्री वृन्दावन धाम॥

× × ×

पिय प्यारी खेलत होरी।
श्री वृन्दावन कुन्ज भजव में श्री जमुना जो ओरी।
नँद - नंदन रसिकेस रसीले श्री वृषभान किसोरी।
भरे हिय भाव कमोरी।
तरल कटाच्छ मंजु पिचकारी छूटत तन मन बोरी।
लगत है नयो नयो री।
हसन अबीर हीर दुति सुन्दर उजलत परम उजेरी।
गौर स्याम छवि मिलि कै चोवा अंग अंग चरचो री।
सुगन्धन चित्तनि चोरी।
गोल कपोल कुमकुमा दोऊ धारत है मुख सों री।
कंकन ताल किंकिनी ढप रव बाजत है सुर सो री।
मधुर बंसी धुनि थोरी।
श्री ललितादिक सखी सहेली, यह आनंद लहोरी।
गुणमंजरि राधा माधव पर वारत है तृन तोरी।
सिरावति नैन हियो री।।

× × ×

प्यारी चरनन में नव वसंत। दस नख ससि किरननि नित लसंत।
अरुनित अँगुरी है नव प्रवाल। बिछुवा घुँघुरु मुकलित रसाल।
मेंहदी दुति केसू कौ प्रकास। जावक नव वेली कर विलास।
छिप बोलत स्यामल गुन सुरूप। कोकिल कुहुकत है अति अनूप।
दामन लालन मलया समीर। सुरभित चहुँ दिसि मिलि हरत धीर।
केसर उर की प्रिय सगी आय। गुनगुन गुनमंजरी मधुप धाय।

नारायणस्वामी

देखु सखी नव छैल छबीलौ, प्रात समय इततें को आवै।
कमल समान बड़े दृग जाके, स्याम सलोनो मृदु मुसकावै।
जाकी सुन्दरता जग बरनत, मुख सोभा लखि चंद लजावै।
नारायण यह किधौं वही है, जो जसुमति कौ कुँवर कहावै।।

× × ×

आजु सखी प्रात काल दृग मीड़त जगे लाल,
रूप के बिसाल सिन्धु गुनन के जहाज।

कुन्डल सो उरझि माल मुख पै अलकन की जाल,
भई मैं निहाल निरखि सोभा की समाज।
आलस-वस झुकत ग्रीव कबहूँ अँगड़ाइ लेत,
उपमा सम देत मोहिं आवत है लाज।
नारायण जसुमति ढिग हौं तौ गई बात कहन,
यामे भये री एक पंथ दोउ काज।।

× × ×

वे दरदी तोहि दरद न आवै।
चितवन मे चित बस करि मेरो।
अब काहे को आँखि चुरावै।
कब सों परी द्वार पै तेरे।
बिन देखे जियरा घबरावै।
नारायण महबूब साँवरे।
घायल करि फिर गैल बतावै।

× × ×

या साँवरे सो मैं प्रीत लगाई।
कुल कलंक से नाहिं डरौंगी, अब तौ करौं अपनी मन भाई।
बीच बजार पुकार कहौं, मैं चाहै करौ तुम कोटि बुराई।
लाज मजाद मिली औरन को, मृदु मुस्कान मेरे बँट आई।
बिन देखे मनमोहन कौ मुख, मोहि लगत त्रिभुवन दुखदाई।
नारायण तिनकों सब फीको, जिन चाही यह रूप-मिठाई।।

× × ×

रूप - रसिक मनोज - मन - हरन सकल गुन - गरबीले।
छैल छबीले चपल लोचन - चकोर चित चटकीले।।
रतन-जटित सिर मुकुट लटक रहि, सिमट स्याम लट घुँघरवारी।
बाल विहारी कन्हैया लाल, चतुर तेरी बलिहारी।।
लोलक मोती काम कपोलनि, झलक बनी निर्मल प्यारी।
ज्योति उज्यारी हमै हरबार दरस दे गिरिधारी।।
अंगुली छीन जरी पट कछनी, स्याम गात सुहात मले।
चाल निराली चरन कोमल पंकज के पात भले।।
हाथ जोर कर करै बीनती नारायण दिल दरदीले।
छैल छबीले चपल लोचन चकोर चित चटकीले।।

× × ×

मन मोहन जाकी दृष्टि परत ताकी गति होत है और और।
न सुहात भवन तन असन बसन वनही को धावत दौर दौर।
नहिं धरत धीर, हिय विरह पीर, व्याकुल ह्वै भटकत ठौर ठौर।
कब अँसुवन भरि नारायण मन, झाँकत डोलत है पौर पौर।।

× × ×

जाहि लगन लगी घनस्याम की।
धरत कहूँ पग परत है कितहूँ, भूलि जाय सुधि धाम की।
छवि निहार नहि रहत सार कछु धरि पल निसि दिन जाम की।
जित मुँह तितैहीं धावै सुरति न छाया धाम की।
अस्तुति निन्दा करौ भलै ही मेड़ तजी कुल ग्राम की।
नारायण बौरी भई डौलै रही न कोई काम की।।

× × ×

नंद नँदन के ऐसे नैन।
अति छबि भरे नाग के छौना, डरत डसै करि सैन।
इन सम सावर मंत्र न होई, जादू जंत्र तंत्र नहि कोई।
एक दृष्टि में मन हरि लेवैं, करि देवैं बेचैन।
चितवन में घायल करि डारैं, इनमें कोटि वान लै वारै।
अति पैने तिरछे हिय कसकै, स्वाँस न देवै लैन।
चंचल चपल मनोहर कारे, खंजन मीन लजावनि हारे।
नारायण सुन्दर मतवारे, अनियारे दुख दैन।।

× × ×

आजु सखी, प्रीतम जो पाऊँ, तौ अपने बड़ भाग मनाऊँ।
साँवरि मूरति नैन विसाला, चंद बदन गर मोतियन माला।
रूप मनोहर चाल मराला, सुन्दरता पर बलि बलि जाऊँ।
जो प्यारे इन गलियन आवै, मो विरहिन को दरस दिखावै।
बैठि निकट मृदु बचन सुनावै, मैं उनको हँसि कंठ लगाऊँ।
नारायण जीवन गिरधारी, कब लेंगे सुधि आय हमारी।
जब मोसों कहैंगे प्यारी, तब मैं फूली अँग न समाऊँ।।

सहचरिशरण

गज मोतिन की मंजुल माला, सीस जरकसी चीरा।
चन्द्रचारु बारौं पुनि तापर, कलित कलंगी हीरा।

नगवर जड़े कड़े कर सुन्दर, खड़े फेंट पट पीरा।
सहचरि सरन लियो बिन मोलन, मृदु बोलन मुख बीरा॥

× × ×

कट किंकिनि सिर मोर मुकुट वर उर वनमाल परी है।
करि मुसिक्यान चकाचौंधी चित चितवनि रंग भरी है।
सहचरि सरन सुविस्व-विमोहनी मुरली अधर धरी है।
ललित त्रिभंगी सहज मेघतनु मूरति मंजु खरी है॥

× × ×

मलयज तिलक ललाट पटल, पट अटल सनेह सटक सो।
मदन विजय जनु करत पुरट मय, तट किंकिनी कटक सो।
सहचरि सरन तरनि-तनया-तट, नटवर मुकुट लटक सो।
चित चुरली मुरली धुनि गावत, आवत चटक मटक सो॥

× × ×

मय अमलादि पिया न पिया, सुख प्रेम पियूष पियारे।
नाम अनेक लिया न लिया, रति स्यामा स्याम लियारे।
आन सुदान दिया न दिया, वर आनँद हुलसि दियारे।
जप जग्यादि किया न किया, हिय पर उपकार किया रे॥

दीनदयाल गिरि

भौंरा अंत बसंत के, है गुलाव इहि रागि।
फिर मिलाप अति कठिन है, या वन लगे दवागि॥
या वन लगे दवागि नहीं, यह फूल लहैगो।
ठौरहि ठौर अमात वड़ो, दुख तात सहैगो॥
बरनै दीनदयाल किते, दिन फिरिहै दौरा।
पछितैहै कर दये गये, ऋतु पीछे भौंरा॥

× × ×

नाहीं भूलि गुलाव तू गुन मधुकर गुंजार।
यह वहार दिन चारि की बहुरि कटीली डार॥
बहुरि कटीली डार होहिगी ग्रीषम आये।
लुवै चलेंगी संग अंग सब जैहैं ताये॥
बरनै दीनदयाल फूल जौलों तो पाहीं।
रहे घेरि चहुँ फेरि फेरि अलि ऐहैं नाहीं॥

× × ×

भारी भार भर्यो बनिक तरिबो सिंधु अपार।
तरी जरजरी फँसि परी खेवनहार गँवार ॥
खेवन हार गँवार ताहि पर पवन झकोरै।
रुकी भँवर में आय उपाय चलै न करोरै ॥
बरनै दीनदयाल सुमिर तू अब गिरधारी।
आरत जन के काज कला जिन निज संभारी ॥

× × ×

सोई देस विचारि कै चलिये पथी सुचेत।
जाके जस आनन्द की कविवर उपमा देत ॥
कविवर उपमा देत रंक भूपति सम जाये।
आवागवन न होय रहै मुद मंगल ताये ॥
बरनै दीनदयाल जहाँ दुख सोक न होई।
ए हो पथी प्रवीन देस को जैयो सोई ॥

× × ×

हारे भूली गैल में गे अति पाय पिराय।
सुनो पथी अब तो रह्यो थोरो सो दिन आय ॥
थोरो सो दिन आय रहे हैं संग न साथी।
या वन है चहुँ ओर घोर मतवारे हाथी ॥
बरनै दीनदयाल ग्राम सामीप तिहारे।
सूधे पथ को जाहु भूलि भरमो कित हारे ॥

× × ×

चारो दिसि सूझै नहीं यह नद धार अपार।
नाव जर्जरी भार वहु खेवनहार गँवार ॥
खेवनहार गँवार ताहि पर है मतवारो।
लिये भौंर में जाय जहाँ जल जंतु अखारो ॥
बरनै दीनदयाल पथी वहु पौन प्रचारो।
पाहि पाहि रघुवीर नाम धरि धीर उचारो ॥

× × ×

चल चकई तेहि सर विषै जहँ नहिं रैन विछोह।
रहत एक रस दिवस ही सुहृद हंस संदोह ॥
सुहृद हंस संदोह कोह अरु द्रोह न जाको।
भोगत सुख अंबोह मोह दुख होय न ताको ॥

बरनै दीनदयाल भाग बिन जाय न सकई।
पिय-मिलाप नित रहै ताहि सर चल तू चकई॥

× × ×

कोमल मनोहर मधुर सुरताल सने,
नूपुर निनादनि सों कौन दिन बोलिहैं।
नीके मन ही के वृंद वृन्दन सुमोतिन को,
जेहि के कृपा की अब चोंचन सों तोलिहैं।
नेम धरि छेम सों प्रमुद होय दीनदयाल,
प्रेम को नद बीच कब धौं कलोलिहैं।
चरन तिहारे जदुवंस राज हंस! कब,
मेरे मन मानस में मंद मंद डोलिहैं॥

× × ×

चरन कमल राजे, मंजु मंजीर बाजैं।
गमन लखि लजावे, हंसऊ नाहिं पावैं॥
सुखद कमल छाहीं, कीड़ते कुंज माहीं।
लखि लखि हरि सोभा, चित्त काको न लोभा॥

पजनेस

नवला सरूप रूप रावरे रुचिर रूप,
रचना विरंचि कीनी सकुच न लागी है।
भन पजनेस लोलि लोयन को लौको गोल,
गुलफ गोराई लाज सकुचन लागी है।
सुन्दर सुजान सुखजान प्रति प्रीतम की,
एको ना परेख अब सकुचन लागी है।
औचक उचन लागी कंचुकी रुचन लागी,
सकुचन लागी आली सकुचन लागी है॥

× × ×

कवि पजनेस केलि मधुप निकेत नव,
दर मुख दिव्य घरी घटिका लटीकी है।
विधु पर वेष चक्र चक्र रविरथ चक्र,
गोमती के चक्र चक्रताकृत घटीकी है।

नीवी तट त्रिवली वली पै द्युति कोसतुण्ड,
कुण्डली कलित लोमलतिका बुटीकी है।
उपटी की टीकी प्रभाटी की बधूटी की,
नामिटी की धुर्जटी की औकुटी की संपुटी की है॥

ललितकिशोरी

कमल मुख खोलौ आज पियारे।
विकसित कमल कुमोदिनि मुकलित, अलिगन मत्त गुँजारे।
प्राची दिसि रविथार आरती, लिये ठनी निवछारे।
ललितकिसोरी सुनि यह वानी, कुरकुट बिसद पुकारे।
रजनी राज बिदा माँगै बलि, निरखौ पलक उघारे॥

× × ×

केकी कीर कोकिला कोयल सामुहिं करै जुहार।
परसन दृगन कंज हित बोलैं भृँगी जै-जैकार॥
मूंदौ रंध्र वेगि प्राची दिसि इत अव कहत पुकार।
ललितकिसोरी निरख्यौ चाहत रवि नव कुंज-बिहार॥

× × ×

हम मौजी हैं अपने मन के, मनचाहै तहँ जावैं हैं।
बैठि इकंत ध्यान धरि दिलवर कंद-मूल फल खावैं हैं।
बसैं कंदरा बन में डोलैं, मानुष पास न आवैं हैं।
ललितकिसोरी भजन - अहारी, भीर-भार घवरावैं हैं॥

× × ×

अब बिलंब जिनि करौं लाड़िले, कृपा दृष्टि टुक हेरो।
जमुना-पुलिन, गलिन गहवर की विचरूँ साँझ सवेरो।
निसि दिन निरखौं जगुल-माधुरी, रसिकन तें भटभेरो।
ललितकिसोरी तन-मन आकुल, श्रीवन चहत वसेरो॥

× × ×

राधारमन मनोहर सुन्दर तिनके सँग नित रहते हैं।
थके रहत छवि ललित माधुरी और नहीं कुछ चहते हैं।
चितवन हँसन चोट मोहन की निस दिन हिय पर सहते हैं।
ललितकिसोरी करै न ओटै, फरी नहीं कर सकते हैं॥

× × ×

मन पछतैहो भजन बिन कीने।
धन दौलत कछु काम न आवै, कमल नयन गुन चित छिन दीने।
देखत कों यह जगत सँगाती, तात मात अपने सुख भीने।
ललितकिसोरी द्वन्द मिटै ना, आनँद कंद बिना हरि चीने॥

× × ×

लाभ कहा कंचन तन पाये।
भजे न मृदुल कमल दल लोचन, दुख मोचन हरि हरखि न ध्याये।
तन मन धन अरपन ना कीन्हें, प्रान प्रानपति गुनन न गाये।
जोवन धन कल धौत धाम सब, मिथ्या आयु गँवाय गँवाये।
गुरुजन गर्व, विमुख रँग राते, डोलत सुख सम्पति बिसराये।
ललितकिसोरी मिटै ताप ना, विन दृढ़ चिन्तामनि उर लाये॥

× × ×

सुमन वाटिका विपिन में ह्वैहों कब मैं फूल।
कोमल कर दोउ भावते धरिहैं बीन दुकूल॥
मिलिहै कब अँग छार ह्वै, श्री वन वीथिन धूरि।
परिहै पद में पंकज जुगुल, मेरी जीवन मूरि॥
स्यामा पद दृढ़ सखी, मिलिहै निहचै स्याम।
ना माने दृग देखि लै, स्यामा पद बिच स्याम॥
ललित हरित अवनी सुखद, ललित लता नव कुंज।
ललित विहंगम बोलही, ललित मधुर अलि गुंज॥
ललित मृदुल बहु पुलिन रज, ललित निकुंज कुटीर।
ललित हिलौरनि रवि सुता, ललित सुत्रिविध समीर॥

× × ×

मैं तेरे सँग मुरली स्याम बजाऊँ।
ऐसेई पिय सब छेदनि पै, अँगुरी चपल चलाऊँ।
पंचम रिषभ निषाद सुरनि लौं, सँग सँग टीप लगाऊँ।
ललितकिसोरी ईमन काफी, सोरठ गाय सुनाऊँ॥

× × ×

लटकि लटकि मनमोहन आवनि।
भूमि-भूमि पग धरत भूमि पर, गति मातंग लजावनि।
गोखुर रेनु अंग-अँग मंडित, उपमा दृग सकुचावनि।
नव घन पै मनु-मनु झीन बदरिया, सोभा रस बरसावनि।
बिगसनि मुख लौं कांति दामिनी, दसनावलि दमकावनि।
बीच बीच घनघोर माधुरी, मधुरी वेनु बजावनि।

मुक्त माल उर लसी छबीली, मनु बग पाँति सुहावनि ।
बिन्दु गुलाल गुपाल कपोलनि, इन्द्र वधू छबि छावनि ।
रुनन भनन किंकिन धुनि मानों, हंसनि की चुहचावनि ।
विलुलित अलक धूरि धूसर तन, गमन लोट विभु आवनि ।
जँघिया लसनि कनक कछनी पै, पटुका ऐंचि बँधावनि ।
पीताम्बर फहरानि मुकुट छवि, नटवर बसे बनावनि ।
हलनि बुलाक अधर तिरछौंही, बीरी सुरंग रचावनि ।
ललितकिसोरी फूल भरनि या मधुर-मधुर बतरावनि ॥

ललितमाधुरी

हाय कहा विपरीत भई ।
जुगलचन्द मुखचन्द विलोकन, डसीं भुजंगिनि विन रदई ।
ललितमाधुरी विरह विथित अति, कढ़त न प्रानहु कठिन दई ।
मो अभाग के उदै भये कोउ, दंपति प्रीति की रीति नई ॥

× × ×

मोहन चोर पकरि कैसे पाऊँ ।
देखत हौं दृग भरि भरि सजनी परसन को रहि रहि ललचाऊँ ।
दस्यौ निकुंज लता वन वीथिन निपट निकट मैं तोहि बताऊँ ।
ललितमाधुरी ही में जी सँग चित्त चोरैं हौ आनि मिलाऊँ ॥

× × ×

बाँकी अदा पै मैं बलिहारी ।
बाँकी पाग केस लट बाँकी बाँकि मुकुट छबि प्यारी ।
बाँकी चाल बाँकि ही चितवनि बाँकी मुरलिया धारी ।
कहँ लौ ललितमाधुरी बरनौ आपुहिं बाँके बिहारी ॥

द्विजदेव

सोधे समीरन को सरदार मलिन्दन को मनसा फल दायक ।
किंशुक जालन को कलपद्रुम मानिनी बालनहूँ को मनायक ।
कन्त अनन्त अनन्त कलीन को दीनन के मन को सुख दायक ।
साँचे मनोभव राज को साज सु आवत आज इतै ऋतुनायक ॥

× × ×

मिलि माधवी आदिक फूल के ब्याज विनोद लवा बरसायो करैं।
रचि नाच लतागन तान वितान सबै विधि चित्त चुरायो करैं।
द्विजदेव जू देखि अनोखी प्रभा अलि-चारन कीरति गायो करैं।
चिरजीवो, वसंत! सदा द्विजदेव प्रसूनन की झरि लायो करैं॥

× × ×

कारो नभ कारी निसि कारियै डरारी घटा,
झूकन बहत पौन आनँद को कंद री।
द्विजदेव साँवरी सलोनी सजी स्याम जू पै,
कीन्हे अभिसार लखि पावस अनंद री।
नागरी गुनागरी सु कैसे डरै रैन डर,
जाके संग सोहत सहायक अमंद री।
वाहन मनोरथ उमाहैं संगवारी सखी,
मैन मद सुभट, मसाल मुखचंद री॥

× × ×

डारे कहूँ मथनि बिसारे कहूँ घी को भाँड़ो,
विकल विगारै कहूँ माखन मठा मही।
भ्रमि भ्रमि आवत चहूँधा ते जू याही ओर,
प्रेम पयपूर के प्रवाहन मनौ बही।
झुरसि गई धौं कहूँ काहू की वियोग झार,
वार वार बिकल बिसूरति जही तही।
एहो ब्रजराज एक ग्वालिनी कहूँ की आज,
भोर ही ते द्वार पै पुकारत दही दही॥

× × ×

वृन्दावन कुंजन में बंसीवट छाँह असि,
कौतुक अनोखो एक आज लखि आई मैं।
लागो हुतो हाट एक मदन धनी को तहाँ,
गोपिन को वृन्द रहो घूमि चहुँ घाई मैं।
द्विजदेव सौदा की न रीति कछु भाखो जाय,
है रही जु नैन उनमद की देखाई मैं।
लै लै कछु रूप मनमोहन सों वीर वै,
अहीरनै गँवारी देहि हीरन बटाई मैं॥

× × ×

उमड़ि घुमड़ि घन छाँड़त अखंड धार,
अति ही प्रचंड पौन झूकन वहतु है।
द्विजदेव संध्या को कोलाहल चहुँधा नभ,
शैल ते जलाहल को जोग उमहतु है।
बुद्धि वल थाको सोई प्रबल निशा को मेघ,
देखि ब्रज सूनो वैर आपनो गहतु है।
एहो गिरिधारी राखो सरन तिहारी,
अब फेरि यहि बारी ब्रज बूड़न चहतु है॥

× × ×

अब मति दैरी कान कान्ह की बसीठिन पै,
झूठे झूठे प्रेम के पतौवन को फेरि दे।
उरझि रही री जो अनेक पुरवातैं सोऊ,
नाते की गिरह मूँदि नैनन निवेरि दे।
मरन चहत काहू छैल पै छबीली कोऊ,
हाथन उठाय ब्रज बीथिन बरजि दे।
नेह री कहाँ को, जरि खेहरी भई तो अब,
देह री उठाय वाकी देहरी पै गेरि दे॥

× × ×

घहरि घहरि घन सघन चहूँधा घेरि,
छहरि छहरि विष बूँद वरसावै ना।
द्विजदेव की सौं अब चूक मत दाँव, एरे,
पातकी पपीहा! तू पिया की धुनि गावै ना।
फेरि ऐसो औसर न ऐहै तेरे हाथ, एरे,
मटकि मटकि मोर सोर तू मचावै ना।
हौं तौ बिन प्रान, प्रान चहत तजोई अब,
कत नभ चंद तू अकास चढ़ि धावै ना॥

× × ×

आजु सुभायनं ही गई बाग, विलोकि प्रसून की पाँति रही पगि।
ताहि समै तहँ आए गोपाल, तिन्है लखि औरौ गयो हियरो ठगि।
ये द्विजदेव न जानि पर्‌यो धौं कहा तेहिकाल, परे अँसुवा जगि।
तू जो कही, सखि! लोनो सरूप सो मो अँखियान कौ लोनी गई लगि॥

× × ×

लखि ठोढ़ी रसाल रसालन को फर पोरो परो लरको तो कहा।
द्विजदेव जू आछे कटाछ चितै छन जोन्ह हियो थरको तो कहा।
द्युति दंतन की यक वार लखे उर दाड़िम को दरको तो कहा।
अंग अंग की ऐसी प्रभा अवलोकि अनंग फिरै फरको तो कहा।

गिरिधरदास

जाहि विवाहि दियो पितु-मातु नै पावक साखि सबै जग जानो।
साहब से गिरधारन जू भगवान समान कहै मुनि ज्ञानी।
तू जो कहै वह दच्छिन है तौ हमैं कहा वाम हैं, वाम अजानी।
भागन सों पति ऐसो मिले सबहीन को दच्छिन जो सुखदानी॥

× × ×

जगह जड़ाऊ जामे जड़े हैं जवाहिरात,
जगमग जोति जाकी जग में जमति है।
जामे जदुजानि जान प्यारी जात रूप ऐसी,
जगमुख ज्वाल ऐसो जोन्ह सी जगति है।
'गिरिधरदास' जोर जबर जवानी को है,
जोहि जोहि जलजा हू जीव में जकति है।
जगत के जीवन के जिय को चुराये जोय,
जोए जोषिता जो जेठ जरनि जरति है॥

× × ×

वातनि क्यो समुझावति हौ मोहि मैं तुमरो गुन जानति राधे।
प्रीति नई गिरिधारन सों भई कुंज में रीति के कारन साधे।
घूँघट नैन दुरावन चाहति दौरति सो दुरि ओट ह्वै आधे।
नेह न गोयो रहै सखि लाज सों कैसे रहै जल जाल के बाँधे॥

× × ×

धिक नरेस विनु देस देस धिक जहँ न धरम रुचि।
रुचि धिक सत्य विहीन सत्य धिक विनु विचार सुचि॥
धिक विचार विनु समय समय धिक विना भजन के।
भजनहु धिक विनु लगन लगन धिक लालच मन के॥
मन धिक सुन्दर बुद्धि विनु बुद्धि सुधिक विनु ज्ञान गति।
धिक ज्ञान भगति विनु भगति धिक नहिं गिरिधर पर प्रेम अति॥

× × ×

सब के सब केसव के सब के हित के गज सोहते शोभा अपार हैं।
जब सैलन सैलन सैलन ही फिरैं सैलन सैलहिं सीस प्रहार हैं।
गिरिधारन सों पद कंज लै धारन लै बसुधारन धारन फार हैं।
अरि गारन वारन बारन पै सुर वारन वारन वारन वार हैं॥

× × ×

गुरुन को शिष्यन सुपात्र भूमिदेवन को,
मान देहु ज्ञान देहु दान देहु धन सों।
सुत को सन्यासिन को वर जिजमानन को,
सिच्छा देहु भिच्छा देहु दिच्छा देहु मन सों।
सत्रुन को मित्रन को पित्रन को जग बीच,
तीर देहु छीर देहु नीर देहु पन सों।
गिरिधरदास दासै स्वामी को अघी को, आसु
रुख देहु सुख देहु दुख देहु तन सों॥

× × ×

जाग गया तब सोना क्या रे।
जो नर तन देवन को दुर्लभ सो पाया अब रोना क्या रे।
ठाकुर से कर नेह आपना इंद्रिन के सुख होना क्या रे।
जब वैराग्य ज्ञान उर आया तब चाँदी औ सोना क्या रे।
दारा सुवन सदन में पड़ के भार सबो का ढोना क्या रे।
हीरा हाथ अमोलक पाया काँच भाव में खोना क्या रे।
दाता जो मुख माँगा देवे तब कौड़ी भर दोना क्या रे।
गिरिधरदास उदर पूरे पर मीठा और सलोना क्या रे॥

× × ×

लोभ न कबहूँ कीजिए, यामैं विपति अपार।
लोभी को विस्वास नहिं, करे कोऊ संसार॥
लोभ सरिस अवगुन नहीं, तप नहिं सत्य समान।
तीरथ नहिं मन शुद्धि सम, विद्या सम धन आन॥

× × ×

सकल वस्तु संग्रह करे, आवै कोउ दिन काम।
वखत परे पर ना मिलै, माटी खरचै दाम॥
पुन्य करिय सो नहि कहिय, पाप करिय परकास।
कहिबे से दोऊ घटत हैं, बरनत गिरिधरदास॥

× × ×

रूपवती लज्जावती सीलवती मृदु बैन।
तिय कुलीन उत्तम सोई गरिमाधर गुन ऐन॥
पति देवत कहि नारि कहँ और आसरो नाहिं।
सर्ग सिद्धी जानहु यही वेद पुरान कहाहिं॥
अति चंचल नित कलह रुचि पति सो नाहिं मिलाप।
सो अधमा तिय जानिये, पाइय पूरन पाप॥

× × ×

उद्यम कीजै जगत मैं मिलै भाग्य अनुसार।
मोती मिलै कि संख कर सागर गोता मार॥
बिनु उद्यम नहिं पाइये कर्म लिख्यो हू जौन।
बिनु जल पान न जाय है प्यास गंग तट भौन॥
उद्यम में निद्रा नहीं नहिं सुख दारिद माहिं।
लोभी उर संतोष नहिं धीर अबुध में नाहिं॥

× × ×

सुख मैं सँग मिलि सुख करै दुख मैं पाछो होय।
निज स्वारथ की मित्रता मित्र अधम है सोय॥
आप करै उपकार अति प्रति उपकार न चाह।
हियरो कोमल संत सम सुहृद सोइ नर नाह॥
मन सों जग को भल चहै हिय छल रहै न नेक।
सो सज्जन संसार में जाको विमल विवेक॥